विवेक कोष ।

श्री युत बाबा बैजूदास रचित

जिस में

अकारादि क्रम से संस्कृत, प्राकृत, तथा हिन्दी भाषा आदि शब्दों का आशय अपूर्व रीति से दिखलाया गया है बालक तथा पण्डित सब के लिये लाभकारी ।

अलभ्य

होने के कारण बड़े यत्न से परिपूर्ण कर के

बाबू शीतल प्रसाद सिंह ने

जीर्णोद्धार किया ।

VIVEK KOSH

BY

BABA BAIJUDAS.

पटना—"खड्गविलास प्रेस" बांकीपुर ।
साहबप्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया ।

भूमिका ।

—*—

जितने कोष हिन्दीभाषा में प्रकाशित हो चुके हैं उन में ऐसे बहुत ही कम निकलैंगे कि जिन से पूरी सहायता मिल सकै। भाषा के तत्व जानने के लिये कोष का होना आवश्यक है, मैं इसी शोच विचार में था कि बाबा बैजूदास जी महात्मा का बनाया हुआ विवेक नामक एक अपूर्व कोष महात्मा ज्ञानी दास महंथ स्थान फतुहा (ज़िला पटना) से मेरे हाथ लगा और देखने से सब भांति उपकारी जान पड़ा। मैं उस को सर्वसाधारण के लाभ के लिये प्रकाशित करता हूं। आशा है कि लोगों का उस से उपकार होगा। इस स्थान पर यह कहना अनुचित न होगा कि विवेक कोष में मैंने अनेक पुस्तकों के कठिन शब्दों को भी जोड़ दिया है।

उदाहरण में ऐसे २ दोहे दिये गये हैं कि जिन से एक शब्द के अनेक नाम मालूम होते हैं। जैसे पंकज लिख कर कमल के सब नाम लिख दिये गये हैं। अनेकार्थ वाले शब्द भी रक्खे गये हैं। रामचरितमानस के प्रायः सब शब्द इस में आगये हैं। दोहा, चौपाई, छंद इत्यादि उदाहरण में लिख कर उन का अर्थ भी लिखा है।

इस कोष में चमत्कार यह है कि साहित्य जाननेवालों के सिवाय वैद्य, कवि, वैयाकरणी इत्यादि को भी लाभ पहुंच सकता है क्योंकि औषधि तथा रोगों के नाम, पिंगल के छन्द, जातिवाचक शब्दों के भेद और यौगिक शब्द इत्यादि बनाने की रीति उत्तम प्रकार से लिखी गई है। इस की उत्त-

मता के विषय में मेरे कहने की आवश्यकता नहीं पाठकगण आप ही अनुभव कर लेंगे।

मेरा यह कहना तो अभिमान समझा जायगा कि विवेक कोष के सदृश कोई दूसरा कोष ही नहीं छपा परन्तु इस कहने का मैं साहस कर सकता हूं कि अनेक शब्द जो इस कोष में आये हैं आजतक हिन्दी के किसी कोष में पाये नहीं जाते। मैं इस बात को भी भली भांति जानता हूं कि यह कोष दोष रहित नहीं बल्कि अनेक दूषणों से परिपूरित होगा। परन्तु यदि इस से लोगों को कुछ भी सहायता मिलैगी तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूंगा।

इस कोष के संकेतवाले अक्षरों का अर्थ नीचे लिखा जाता है।

स = संस्कृत
प = प्राकृत
फ़ = फ़ारसी
द = देशी भाषा
क = कहावत
मु = मुहाविरा
गु = गुणवाचक
स्त्री = स्त्रीलिंग
पु = पुल्लिंग

तारनपुर
संवत् १९४७
रामनौमी रविवार।

शीतल प्रसाद सिंह.

मङ्गलाचरण।

दोहा।

नमो प्रथम श्री गुरुचरन, जिन ते भयो बिबेक।
जनम जनम की अज्ञता, मिटी सकल छन एक ॥१॥
दूजे सन्त समाज पुनि, जाते चित खर सान।
बन्दों सादर कर जुगल, लहत सकल कल्यान ॥२॥
रामायन शब्दार्थ कृत, श्री तुलसी परवीन।
और ग्रंथ के शब्द कछु, कंठहि लहत कठीन ॥३॥
नव स्वर चौतिस अच्छरहि, आदि नाम परबन्ध।
नाम रूप - कठोरता, एक जाइ निरबन्ध ॥४॥
जब जाको जहि नाम का, अर्थ समुझि नहिं जात।
अच्छर आदि बिचारि ते, सहज होत सख्यात ॥५॥
संस्कृत प्राकृत फ़ारसी, बिबिध देस के बोल।
सबहिं बूझि सुनि यथामति, रञ्चित कोष अलोल ॥६॥
पङ्क्ति सब के मध्य में, अच्छर चारि प्रकार।
संस्कृत बाणि सकार ते, प्राकृत बोल पकार ॥७॥
फ़ारस बोल फ़कार ते, बानी देस दकार।
या प्रकार ते जानियै, चारहुं वर्ण बिचार ॥८॥
पण्डित ताहि सराहियै, सुनि परवानी तूक।
बिगरी बात सुधारिहैं, नहिं धरि राखैं चूक ॥९॥
राम चंद निधि अत्रिसुत, सम्बत अगहन मास।
कोस बिबेक प्रचार किय, श्रीजुत बैजू दास ॥१०॥

सोरठा।

सदा रहहिं सुख रूप, अधिकारी सब याहि के।
राखैं छोह अनूप, दास बिबेक अति बिनवइ ॥१॥
मुन्दीचक जो ग्राम, भागलपुर महं जानिये।
तहां जपत गुरुनाम, सिद्ध हेत मानस बिमल ॥२॥

विवेक-कोष ।

अ· (स) विष्णु संज्ञा, विष्णु का नाम, निषेधार्थ। वर्णमाला का पहिला अक्षर, निषेध वाचक अव्यय जैसे अधर्म, और जब यही अ ऐसे शब्द के पहिले आवे कि जिसका पहिला अक्षर स्वर हो तो अ को अन् हो जाता है जैसे अनंत, अनादि, अनेक इत्यादि।

अकथ· अकथ्य, कहने के योग्य नहीं।

अकथनीय· जो न कहा सके, अकथ, जो कहने के योग्य नहीं।

अकारोत् (स) किया।

अं· (स) चलन, फिरना।

अंकुर· (स) उत्पत्ति, आरंभ, पहले का निकला पत्ता, रुधिर, बाल, जल अनंत, असंख, अंकुरी, फुनगी।

अंखुआ। [आयुध।

अंकुश· (स) हाथि के प्रेरणा का

अंश· (स) कंधा, खंड, भाग, हिस्सा किस्मत, टुकड़ा।

अंशु· (स) किरण, किटक।

अंशुमत्फला· (स) रिव कला।

अंशुमती· सरिवन।

अंशूद· अंशूदक (द) सूर्य्य चंद्रमा के किर्णं लगी पानी।

अंशुमान· (स) नामराजा सगर पौत्र अर्थात् असमंजसपुत्र, सूर्य्य, दिवाकर।

अंशुक· (स) पत्ता, वस्त्र, कंपड़ा बहुवचन अंशुकानि।

अंह· (स) पाप, अपराध।

अंघ्रि (स) चरण, पग, अङ्घ्रि ।

अकंटक, (स) कंटक बिना, निर्भय, बेखटका, शत्रुबिना निरुपद्रव बेखट के ।

अकनि (स) कनयाई के, सुनि के, सुनि कर के ।

अकरण अकारण, बिना कारण । [प्रजापति ।

अकम्पन (स) नाम राक्षस के

अकर्दौं (स) उज्वल, निर्म्मल ।

अकल (स) हाथ पांव अंगहीन, हाथ पांव आदि अंग के बिना, लोथ, कल्पनाहीन, कलारहित ।

अकसर (फ) बारम्बार, पुनः-पुनः, अकेला, केवल ।

अकस्मात (स) दैवात्, यकायक, अचानक, दूतफाकन ।

अकारण, (स) बिन प्रयोजन, व्यर्थ, बिनाकारण ।

अकाल (स) दुर्भिक्ष, कुहत, असमय, कुसमय, बिना ऋतु के ।

अकाय (स) शरीर रहित ।

अकाल के (ट) ऋतुबिना ।

अकालकी, (स) बिज्जली, दामिनी । [मरन ।

अकाजैउ अकाज किया, मरना,

अकाम, कामनाहीन, जिस को कुछ इच्छा नहीं ।

अकाश की कुसुम (स) केतुतारा, जाके उदयविघ्नहोत ।

अकाश, (स) आकाश, स्वर्ग ।

छंद मनहंस—नभ व्योम तारापथ गगन खं पुष्करं । आकाश नाक अनंत वियतं अंबरं । सुरवर्त्म अभ्र बिहाय हरिपद द्योदिवं । पुनि अंतरिक्ष बिहायसो नामं इवं ॥ दोहा । उन्निस नामन वर धरै, होय अमर नलिनीश । मोम वात खग नखत घन, छंद कला इकबीस ॥ १ ॥

अकिंचन (स) कृपिण, दरिद्र, दीन, जिस के पास कुछ नहीं, दरिद्री कंगाल उद्यम रहित ।

अकिल्बिष (स) निष्पाप, बेगुनाह। [मो।

अकीर्ति (स) अपयश, बदनामी।

अकिन, (प) आज्ञागामी, सुनिके, कनयाएके।

अक्षौहिनी (स) सेना विशेष जिसमें २१८७०, रथ और २१८७० हाथी ६५६१० घोड़ों के सवार १०८३५० पैदल योधा हों। [हीन।

अकुल (स) कुल रहित, कुल

अकुलाना, घबराना। दुखी होना।

अकीर्ण (स) समूह, समस्त।

अकुण्ठ (स) निर्नाशक, अक्षय, तीक्षण, नाशरहित, चोखा, अखंड लाभ।

अकुंठा (द०) खुलाहुआ।

अक्रूर (स) वसुदेव भ्राता श्रीकृष्णका कका, खोटाईहीन

अक्षय अक्षय, जिस का क्षय नहीं, नाश रहित। जिस का नाश न हो।

अक्षेया (स) सुगंधवाला।

अङ्कोट (स) अंकोल।

अंङ्कोटक (स) अंकोल।

अङ्कोल (स) ढेला।

अखण्ड (स) संपूर्ण, सारा, पूर्ण, सर्वत्र, एक रस, खण्ड रहित, जिस का नाश न हो, जिसका टुकड़ा न होय, बिनटूटा।

अखंडित (स) जिस का खंड न हो सके। [आंगन।

अखाड़ा, (प) मल्लयुद्ध, भूमि

अखारा (प) नाच, लड़ने की जगह, गुसांई का स्थान गोसांईके रहनेकी जगह।

अखिल,, (स) पूर्ण, संपूर्ण समूह, निश्चय, अंधकार, समस्त, सकल, सर्व, सब। पूरा, सारा।

अखेट, (स) भाला, हथियार, निर्भय, शिकार।

अग, (स) स्थावर, पर्व्वत, पहाड़, अचल, वृक्ष।

अगनित (द०) अगणित, गिनती बिना, अनगिनत,

अगजग, (स) जड़, चैतन्य स्थावर जंगम ।

अगजगनाथ (स) ईश्वर ।

अगद (स) भेषज औषध, निरोग ।

अगम, (स) गमरहित, दुर्गम, कठिन, आगमशास्त्र, अगम्य, जहां गम नहीं, जहां गति न हो ।

अगमन, (ह) आगे, सामने ।

अगम्य, (स) नहिंगमनेके योग्य

अगरू, (हि) आगे, पर ।

अगव, अगवनिहार } (हि) तुच्छ, कुत्सित, सहन सहनहार ।

अगवान, (ह) अगुवा' बराती लोग, दूत ।

अगसत्याहा (स) अगस्तमुनि का नाम जैतना होय सो सब अगस्त दरखत का नाम होगा मुनि ऋषि आदि ।

अगस्ति, अगस्त्य (स) वृक्ष विशेष, अगस्त दरख़्त, तारा, मुनिविशेष ।

अगस्तिकुसुम, (स) अगस्त, का फूल ।

अगाड़ू (ह) आगे चलना । आगे, समीप ।

अगस्त्य (स) मुनि विशेष, कुंभजमुनि, ताराभेद अगस्ति दरख़्त ।

अगाध (स) अपरिमान, अथाह गंभीर अतलस्पर्श, अतिगहीर ।

अगार (स) घर, भवन, ।

अगुण, (स) ब्रह्म, भगवान, निर्गुण, गुणहीन, अवगुण, गुणरहित ।

अगुरु, अगरु, अगर (स) सुगन्धकाष्ठविशेष, हलका, अगरस्याह, एक प्रकार का सुगंध ।

अगोचर (स) अदृश्य, अलक्ष, अविषय जो ज्ञान से परे, इंद्रियों से परे ।

अग्र (स) आगे, अगला भाग, चोटी, [मुड़ियो, प्रधान, मुख्य । पहले, मुखिया ।

अग्रणी (स) मुख्य, प्रथम, प्रधान, श्रेष्ठ, सेनापति।

अग्रभूमि (स) आंगन।

अग्राह्य (स) जो ग्रहण करने के योग्य नहीं।

अग्नि (स) आग, वैश्वानर, चीता औषधि, त्रिसंज्ञा संख्या वाचक है। दिशाकोण विशेष। छंद विशेष।

अग्निक (स) भिला।

अग्निमथ (स) गनियारा।

अग्निमुखी (स) भिला।

अग्निशिखा (स) कलिहारी।

अग्निसम (स) ब्रह्मा, विप्र।

अग्निसमा (स) ब्राह्मणी, विरचिनी। [मयी।

अग्निसमाज (स) होम सा

अघ (स) पाप, दुःख।

अघभंजन (स) पाप के तोड़ने वाला दुःख के छोड़ाने हारा।

अघटित (स) अगम अयोग्यता, जो नहीं हुआ। अनुचित-अतुल्य।

अघात (स) निर्नाश, अतिचोट, चोटहीन, निडंका।

अघारि अघारी (स) पाप का शत्रु। [राजा।

अघीस (स) प्राणियों का

अघखोमा (स) पाप नाशक।

अघाती (स) तृपित, बिनुघाव, तृपितहरैला अघाता, घाव बिना महाअनर्थ करने वाला।

अङ्क (स) चिन्ह, अंकित, चिन्हित। रेखा, अक्षर, गिनती, टे तक, गोदी, गोद।

अङ्कग्रीस (स) डोरीदधिमथना

अङ्कित अङ्कित (स) चिन्हयुत, अङ्कयुक्त।

अङ्ग (स) शरीर, देह, मित्र, प्रिय, पञ्जरा।

अंगीकार (स) स्वीकार, कबूल, मान लेना।

अङ्गद (स्) अगन्द वालि पुत्र, बानर, बिहूठा भूषण, बिजायठ। पहले, मुखिया।

अंगुष्ठ (स) अंगूठा ।

अंगदादि (स) अंग आदि, बानर. बिजायठ आदिभूषण ।

अंगुरि, अंगुरी, अंगुली (स) हाथ पाओं की उंगलियं । [प्रियङ्गु ।

अङ्गना (स) स्त्री, मेहरी, नारी.

अङ्गनाप्रिया (स) प्रियंगु ।

अङ्गवनि अंगवनिहारा (द) सहना, क्षमा. अंगीकार-हार, साहसी ।

अङ्गारक (स) मङ्गलवार, अग्नि, भंगराज रवि ।

अङ्गार कर्कटी (स) लिट्टी गोहं आदि अन्न के पिसान का जो होता है । [करजनी ।

अङ्गारवल्ली (स) बभनेटी, लाल

अङ्गार वृक्ष (स) ईंगुन, दरखत ।

आङ्गिरा (स) बृहस्पति, तारा नक्षत्र ।

अङ्गिरी आङ्गरी (द) कुरती, बगतर, बकतर । [ङ्घ्रि ।

अङ्घ्रि (स) चरण, पग, पैर अं-

अचकरी अचगरी (द) चपलता, रिन्दगी, मसखरी, ठठोली, लम्पटता, खेलाड़पन, दुष्टता, बद्दई ।

अचवत (स) पान करत ।

अचम्भा (स) अचरज, आश्चर्य ।

अचल (स) विष्णु, पर्वत, पहाड़ आदि स्थिर, थिर, अटल ।

अचर (स) जो न चल सके ।

अचला (स) लक्ष्मी, पृथ्वी आदि स्थिरा, अटला ।

अच्युत (स) क्षरण रहित, स्थिर परमात्मा ।

अचंचल (स) स्थिर, शांत ।

अछत, (स) वर्त्तमान, रहते, छांते. सब प्रकारकी कुशलता ।

अज (स) छिरेवा, बकरा, योवन, अल्प, जन्महीन, जन्मरहित, ईश्वर, जो जन्मता नहीं, ब्रह्म ब्रह्मा, आजु, अब, जीव, प्रकृति, राजा दशरथ के पिता का नाम ।

अजक (स) सुपेद बर्बरी ।

अजकर्ण (स) सलैया ।

अजगन्धा (स) अजवाइन।
अजगन्धाहा· (स) अजवाइन।
अजगन्धिका· (स) बर्ब्बरी।
अजघ्ना· (स) कवाछ।
अजमोदा· (स) अजमोदा।
अजमोदिका· (स) अजवाइन।
अजशृङ्गिका· (स) मेढ़ासिंगी।
अजशृङ्गी· (स) बकरासिंगी।
अजगव· (स) शिवधनुष।
अजगर. (स) विशालसर्पभेद।
अजग, (स) शिव, शंकर, महादेव।
अजर· (स) अवृद्ध, जरारहित, बुढ़ौती बिना, बिना बुढ़ापा, अमर, युवा।
अजै (ह०) अजय, अजै।
अजा· (स) ब्रह्माणी, लक्ष्मी, पार्व्वती, छेरी, बकरी, माया।
अजादधि·(स)बकरी का दही।
अजादुग्ध·(स) बकरीका दूध।
अजामिल (स) एक पापी ब्राह्मण का नाम। [गया।
अजित (स) जो जीता नहीं

अजातरिपु· (स) राजायुधिष्ठिर।
अजाचक(स) जो फिर जांचना से रहीत होजाय।
अजान· अजानु· (स) अज्ञान, जांघपर्य्यन्तलम्बा।
अजिन· (स) बकछाला, हिरिन की खाल मृग छाला, मृगचर्म, चमड़ा, जो पूजाकाल में प्रसिद्ध चर्म्म।
अजिर· (स) आंगना, चौक।
अजिह्मग· (स) बाण, तोमर।
अजीर्ण· (स) अोगुण, नवीन, अपच।
अज्ञ· (स) मूर्ख, बेवकूफ़ विद्याहीन, अजान, अज्ञानी अज्ञान, बिनाजाने।
अज्ञता· (स) मूढ़ता, मूर्खता, बेवकूफ़ी, अजानता।
अज्ञात· (स) बिनाजाने, न जाना हुआ, नामालूम, अनजान, अबूझ, अबोध, असमझ। [ता।
अज्ञान· (स) ज्ञानाभाव, मूर्ख-

अञ्जन (स) कज्जल, स्याह सुरमा, माया अविद्या ।

अञ्जनकेशी (स) नलुका इत्तर देश में मशहूर ।

अञ्जनी (स) हनुमान की माता, टिक ।

अञ्जम (स) बेग, तरङ्ग ।

अञ्जलि (स) अंजुली, हाथ का संपुट ।

अच्छि (स) बिमल, उज्ज्वल ।

अटन (स) अटारी, धूपखाना, घूमना, चलना, भ्रमर ।

अटपट (प) बांका, टेढ़ा, टेरो, जो नहीं पटे ।

अटपटे (ह) अतिग्रहभक्षणि ।

अटवी (स) बन, जंगल, राह, गहन ।

अटरूष (स) बाकस, एकवृक्ष ।

अटारी (प) कोठा, छत ।

अट्टहास अट्टाहास (स) ठमक युक्त हंसी, गर्ज्ज, ठट्ठाय के हंसना, बड़ेशब्द से हंसना ।

अणिमा (स) सिद्धिविशेष ।

अणिमादिक (स) आठसिद्धि ।

अणु (स) सूक्ष्म, सूक्ष्म परिमाण वाला द्रव्य, पतील, पतला कणिका, प्रतिअणु परमाणु ।

अण्ड (स) अण्डा, बीज, अरण्ड वृक्ष, ब्रह्माण्ड, १० पर-माण से संख्यावाचक ।

अण्डकटाह (स) ब्रह्माण्ड, बिश्वगोल । [ह ।

अण्डकोष (स) मुष्कथैली, आं-

अण्डज अण्डभव (स) मछली, पक्षीआदि अंडा सों जो उपजय, जगत, अंडे से उ-त्पन्न होनेवाले पक्षी सब, कस्तूरी आदि ।

अतएव (स) इसलिये, इसका-रण, इसवास्ते ।

अतन अतनु (स) मनसि-ज, कामदेव, तनरहित तनहीन, शरीर बिना ।

अतर्क्य अतर्क्य (स) तर्कनारहित जो जाननेयोग नहीं, जो तर्क के योग्य नहीं ।

अतसी (स) तीसी अन्नवाचक, शण, पाट ।

अतसीतैल (स) तीसी का तेल।

अतान (स) लता, लत।

अति } (स) विस्तार, अत्यन्त,
अती }

नीच, आधिक्य, प्रशंसा, उत्कर्ष, पूजन। सारदस्तों को बीमारी।

अतिकेशर (स) कुबजक।

अतिचरा (स) गुलाब।

अतिसृष्ठ (स) दियाहुआ प्रेरित किया हुआ। स्त्री।

अतितंपस्विनी (स) बड़ी भुइ

अतिमुक्त (स) माधवीफूल।

अतियव: (स) यव जिस में मूंग कम होवे।

अति: (स) व्यतित, नाश।

अतिक्रान्त (स) बीतना, साध्य करना।

अतिकाय (स) बड़ाशरीर, नाम राचसमेना पति।

अतिथि (स) पाहुन, संन्यासी याची, अभ्यागत, जो कोई महात्मा तिथि नियम रहित किसी के घर आवे।

अतिदुर अतिपार्श्व (स) निकट, समीप।

अतिरूढा (स) रोहिणी।

अतिलुम्बो (स) सौंफ सोआ।

अतिबला (स) कंगहिया।

अतिबिषा (स) अतीस।

अतिरिक्त (स) अधिक, भिन्न, शून्य, श्रेष्ठ, सिवाय।

अतिवेल (स) अधिक विस्तार।

अतिभार (स) पाषाण, पत्थर।

अतिशय (स) विस्तार, विशाल, अत्यन्त, बड़ा, बहुत।

अतिशौरभ (स) आम।

अतिसघन, (स) विस्तार, पीपर वृक्ष।

अतीत (स) गत, व्यतीत, भूत, गुज़रा हुआ, रहित, अलग, संन्यासी, बितित काल, बीता, चुका, निघट।

अतिक्रम (स) क्रमका डाकना।

अतीत काल (स) भूतकाल, गुज़रा हुआ, जमाना।

अतीव अतीवा (स) बिस्तार, अत्यन्त बहुत बड़ा।

अतुलित· } (स) विशेष, निस्तु-
अतुल }
लित, जो तौला नहीं गया, बड़ा, तौलने से रहित ।

अतीव· (स) याते, इसकारणते, इससबबते । [तीव ।

अत्यन्त· (स) अधिक, बहुत, अ·

अत्यम्लक· (स) घना नोन ।

अत्र· (स) इहाँविषे, एतस्मिन् इसठौर, इहां, यहां, इसमें ।

अत्रि· (स) मुनिविशेष जाको तीनि पुत्र दत्तात्रेय विष्णु अंश, शशी ब्रह्मा अंश, दुर्वासा शिवअंश ।

अत्रिप्रिया (स) अनुसूइया, अनुसूया, अत्रिऋषि की स्त्री का नाम ।

अतिभाव (स) बड़ाउद्दंड ।

अथ· (स) अनन्तर, आरम्भ, उपरान्त ।

अथई· (द) स्थ, डूबने, गरूब ।

अथर्व (स) बहुत बूढ़ा, चतुर्थ वेद । [व, स्थ ।

अथय· अथव· (द) डूबने, गरू-

अथवा· (स) किम्बा, विकल्प, वा, या, फिर, प्रकारान्तर, पश्चातर ।

अथाई· अथैया· (द) बैठक, बैठकी, चबुतरा, सभा, समूह, चौपाड़ ।

अद· अदन· (स) भक्षण, भोजन, जेवनार खाना ।

अदभ्र· (स) विस्तार, पूर्ण, आदि, अन्त मध्य रहित, बहुत, अतुट ।

अदिती· (स) देवतावों की माता देवतों की माता ।

अदिन·(स)कुदिन, बुरे दिन ।

अदृश्य· (स) अदेख, अलक्षित, जो देखने के योग्य नहीं, छिपा, छिपना । [अदेख

अदृष्ट· (स) अगोचर, अलक्ष्य,

अदाया (स) दायारहित ।

अदेन· अदेय· (स) दानयोग्य नहीं, देनयोग्य नहीं, जो देने के योग्यनहीं ।

अदैन्य· (स) सुख, हर्ष, नहीं दीन, योग्य ।

अद्भुत (स) अनेक, विचित्र, अनोखा, आश्चर्य्य, अनोखा, अपूर्व, अचरज, आश्चर्य्य युत आश्चर्यित।

अद्वैत (स) एक, भेद रहित, जिस के समान दूसरा नहीं, शंकराचार्य्य का मत जो ब्रह्मजीव को एक तो मानते हैं।

अद्वितीय (स) जिसके सदृश दूसरा न हो, परमात्मा।

अद्य (स) इदानी, अवहि, आज, अब। [कभी।

अद्यापि (स) अद्यपर्य्यंत अबतक

अद्रि, (स) पर्व्वत, अचल, पहाड़।

अद्रिजात (स) शिलाजीत।

अद्र (द) पहाड़।

अट्टहास (स) ठनक हंसी, खिलखिलहंसी।

अध (स) नीच, नीचे, तरे, हेठ, तल, आधा नरक।

अधगो (स) गूहेन्द्रिय, नीच इन्द्री।

अधःशल्य (स) चिरचिरी।

अधम, (स) पापी, नीच, चण्डाल।

अधमाई (द) पापिष्टता।

अधर (स) बीच, मध्य, होठ, ओठ नीचे का लघु, छोटा जीव।

अधरात (स) आधीरात्रि।

अधवरा (स) भेद। इसके अभाव में सतावर।

अधर्म (स) पाप, अन्धेर, अन्याय धर्म्म विरुध।

अधर्ष, (स) लाभ, प्राप्ति।

अधस्त (स) नीचयोनि।

अधि (स) उपसर्ग, प्राप्ति, लाभ।

अधिक (स) विस्तार, बहुत, ज्यादह।

अधिकता (स) बहुतायत, ज्यादती।

अधिकार (स) अध्यक्षता, प्रतिष्ठा, अखतियार।

अधिकारी (स) अधिकार के योग्य, अधिकार सहित।

अधिराज (स) स्वामी, राजा, महाराज। शाहनशाह।

अधिप (स) श्रेष्ठ, कुबेर, सुरभंडारी, राजा, बड़ा पालन कर्त्ता।

अधिपति (स) राजा, भूप, स्वामी, प्रभु, हाकिम, मालिक।

अधिवास (स) निवास, बसने की जगह, शुभ को पहिली क्रिया।

अधिभूत (स) निमित्त कारण, महाभूत, महातत्त्व।

अधिष्ठाता (स) रक्षक, पालनहार।

अधिष्ठान (स) व्यवहार, ठाँव।

अधीश (स) अधिश्रेष्ठ, राजा, स्वामि, महाराज, शाहनशाह।

अधीश्वर (स) राजा, महाराज, शाहनशाह।

अधीर (स) धीररहित।

अनअहिवात (द) विधवापन।

अधुना (स) इदानीं, अबहिं, सम्प्रति, अद्य, इसी समय, अब।

अध्यक्ष (स) स्वामी, अधिकारी, अफ़सर।

अध्ययन (स) पढ़न, पढ़ना।

अध्यवसाय (स) उद्यम, उत्साह, परिश्रम।

अध्यशन (स) बारंबार भोजन।

अध्यापक (स) पाठक, पढ़ाने वाला।

अध्यापन (स) पाठन, पढ़ाना।

अध्वा (स) पथ, बाट, सीढ़ी।

अध्यास (स) भूल, चूक, भ्रम, अभिमान। [स्थान।

अध्वर (स) यज्ञ, योग, होम,

अब्धिकफ: (स) समुद्रफेन।

अनइस (द) बुरा, नकारा।

अनक (स) मृदंग, नकारा, नीच, छोटा।

अनख (स) बैर, द्वेष, बुराई, क्रोध, इर्षा, डाह।

अनघ (स) पापरहित, धर्म्मात्मा, निष्पाप, निर्मल, मनोहर, सुंदर, पाक, खूबसूरत।

अनङ्ग (स) कामदेव, अंगहीन, अवंग, नष्ट अंग।

अनङ्गाराति· (स) शिव, कामदेवनाशक।

अनट· (स) (द·) विपरीत, अन्याय, गांठ, गिरह, ऐंठ, छल, कोकई का बरदान।

अनड्वान· (स) बैल।

अनत· (प) अलते, बिलग, और ठांव, अन्यत्र, और जगह।

अनतिप्रौढवंशप्रकाशः (बि· म· शि·) नये बांस के समान कान्तीमान्।

अनन्त· (स) विष्णु, शेषनाग, आकाश, एक, अनेक, मगन, असीम, जिस का अंत न हो, लाइन्तहा, अंतरहित ईश्वर, लक्ष्मण।

अनन्तर· (स) समीप, पश्चात्, नज़दीक, पीछे।

अनन्तमूल· (स) कपूरी जड़ी।

अनन्ता / अनंत· (स) अपार, जिसका अंत नहीं, बेहद, शेषजी, शेषनाग, जिनके एक फनपर हिन्दू-लोग पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, चौदह गांठ का एक धागा जिस को भादों सुदि १४ अर्थात् अनंत चौदस के दिन पूज कर के हिन्दूलोग अपने दहने हाथ पर बांधते हैं, विष्णु का नाम। दुरालभा, जवासा, नीला दूभ, सरिहारी।

अनन्ति· ( ) भलु वा बुरा।

अनर्थ· (स) अर्थरहित, वृथा काम। [जोड़ी।

अनजोरी· (द·) घटी, बढ़ी

अनन्ता· (स) लक्ष्मी, पृथ्वी।

अनन्य· (स) दूसरी गति नहीं, एक ही, जिस को दूसरे का भरोसा नहीं। दूसरी गति रहित। [भरोस।

अनन्यगति· (स) नहिं दूसरा

अन्यथा· (स) सत्य, सांच।

अनपाय· (स) / अनपायन· (स) अचल, अक्षय, निर्नाशक।

अनपायिनी· अनपाइनी, (स) बिनापावनी, नहिं प्राप्ति भाव होय और विषें जिन

ते सां अनपायिनी, एकां-
गी, अथवा नाशरहित,
नित्य ।

अनभव (द) अन्तसका ज्ञान ।

अनपावनी (स) जेहिते पवित्र
दूसरा नहीं, अधिक ।

अनपेक्ष्य ध्यान न देकर, अपेक्षा
न करके ।

अनवद्य (स) निर्दोष, निर्वि-
कार, निर्नाश, अक्षय,
दोष बिना ।

अनभवति (द) जानती ।

अनभिज्ञ अजान, अज्ञान, न
जानने वाला ।

अनमनी (द) ओछो, बावरा,
भावित ।

अनय (स) अनीति, कुचाल ।

अनयास } (स) सहज, बे
अनायास } मेहनत, बिना
यत्न ।

अनरोध (स) रोक, बैरत्व,
विरोध, अविचार ।

अनल (स) अग्नि, आग, यज्ञ
संज्ञा एक चीता ।

अनवस्थ (स) व्याकुल, चंचल ।

अनल्प (स) बहुत ।

अनचर (स) मूर्ख, अज्ञानी ।

अनहित शत्रु, बैरी, बुरा ।

अनभल (द) उदास ।

अनाथ (स) बेमालिक, रचक
रहित, स्वामीरहित, जिस
का कोई मददगार और
मालिक न हो ।

अनादि (स) जिस का आदि
नहीं, जन्मरहित, आदिर-
हित, उत्पत्ति रहित,
ईश्वर, जीव, प्रकृति ।

अनादर (स) निरादर, अप-
मान, तिरस्कार ।

अनाम (स) नामरहित, वा
जिस के नाम अर्थहीन ।

अनामय (स) निर्विकार,
आरोग्य, कुशल, रहित,
रोग रहित, भला, चंगा ।

अनायास (स) निक्लेश,
निर्दुःख ।

अनारम्भ (स) अनुपक्रम, अनुद्-
य, उद्यमरहित ।

अनार्भेय (स) बिनासमय की चीज़।

अनार्थिक (स) अगरखाह।

अनमनि } (ट) उदास,
अनिमनो } चित्त विरोध।

अनिभृत (ट) ढीठ, निर्लज्ज।

अनिभृतकरेपू (स) (वि प्रियपू ढोठ हैं हाथ जिन के।

अनिंदिता (स) निंदा योग्य नहीं।

अनिप (स) सेनापति।

अनिमिष (स) समय, काल।

अनिर्व्वाच्य (स) अकथन योग्य, जो कहने के योग्य नहीं।

अनिल (स) } पवन वायु, बतास,
(प) } बयार।

अनिश (स) विस्तार, दिवा-रात्रि, बारम्बार।

अनी अनीका (स) तीखा, पैना, नोक, सेना, युद्ध, समूह नाम, राक्षस, सेनापति।

अनीक (स) सेना, समूह, भीड़ युद्ध, अवली।

अनिकेत (स) बिनाघर।

अनिपु (स) सेनापति।

अनिर्वाच्य (स) कहनेसे बाहर।

अनीकप अनीप, (स) सेनाप-ति, दलपति। [अन्याय।

अनीति अनीती (स) कुचाल,

अनीयाङ्क (स) सेनाका चिन्ह।

अनीश (स) जीव, ईश नहीं। माया।

अनीह (स) इच्छा चेष्टा रहित, विनु तृष्णा, तृष्णा रहित ब्रह्म, कर्म्म रहित।

अनु (स) उपसर्ग, पीछे, पीछे पोछे, पश्चात्, आगे थोड़ा, छोटा। [के समीप।

अनुकच्छम् कनखल, कनखल

अनुकथन (स) बारम्बारकथन, बारंबार कहना, पीछे का वर्णन, कहतव्य।

अनुकम्पा (स) कृपा, अनुग्रह, दया, करुणा।

अनुकूल (स) सहायक, सह-कारी, हितकारी: प्रसन्न, अनुसार, हित चाहने-वाला, साथी, मुवाफ़िक,

अपने अनुसार। [ना।
अनुक्रति (स) छोड, बिलम्ब-
अनुक्रम (स) परिपाटी, रीति, भांति।
अनुक्रोश (स) कृपा, दया, दयालुता, निन्दा चेमा।
अनुग (स) पौगुन, व्रजा, दूत, दास, सेवक, पीछे चलनेवाला।
अनुग्रह (स) दया, कृपा, मेहर्बानी, सदा दया, प्रसन्नता।
अनुगामी अनुचर, (स) पछुलगुवा, दास, सेवक, दूत, आज्ञाकारी, नौकर, चाकर, पीछे चलनेवाला, टहलुवा, साथी।
अनुचरी (स) दासी, टहलिनी, लौंडी, बांदी।
अनुचित (स) अयोग्य, जो मोनासिब नहीं, अजोग, ठीक नहीं।
अनुज (सं) पीछे से जन्मा हुआ, लघुभ्राता, छोटा भाई।
अनुजा (स) छोटी बहिनी, लघुता भगिनी, बहिन।
अनुदिन (स) सदा, प्रतिदिन, दिन पीछे, हरएक दिन, दिनदिन। [सम्बन्ध।
अनुबन्ध (स) मित्र, सुहृद,
अनुवाद (स) बारम्बारकथन, बारबार कहना, पीछे कहना। [वशीभूत।
अनुव्रती (स) पिछलगुवा,
अनुभव (स) अदृष्ट, जो कोउ वास्तव में आप सों जाना जाय वा सुना जाय, ज्ञान, यथार्थबोध, अनुमान, विचार, यथार्थज्ञान, सोचना, समझना, बूझना।
अनुपायनी ( ) बिना गांड़ के अचल।
अनुभवही (द) अंतसमय सुख पावना जो वचन से न कहा जाय।
अनभवति (द) जानति।
अनुताप (स) काम करके पछतावा।

अनुभाउ (द) महिमा।

अनुभावती (स) अंत समय।

अनुमति (स) आज्ञा, सम्मति, सलाह, राय, हुक्म, विचार।

अनुमान (स) अन्दाज़, अटकरा, क्यास, विचार, विचारांश, अनुसार, प्रमाण, अटकल।

अनुमानी (स) नैयायिक विचार किया।

अनुभवगम्य (स) अनुभवती गमने में जो आवै।

अनुमोदन (स) प्रशंसा, सराहना पर सुख देखि के सन्तोष।

अनुराग (स) स्नेह, लौ, प्रीति, ममता, अत्यन्तचाई, अति प्रीति, बहुत मुहब्बत मोह, छोह, सनेह, प्यार।

अनुरागी (द) प्रीतिकरनेवाला।

अनुरूप (स) सदृश, लायक, तुल्य, योग्य, बराबर, अनुसार, समान, एकसा, अपने योग्य, अनुकूल, जैसा भावे।

अनुपम (स) उपमारहित, अनूप, उत्तम।

अनुरोध / अनुरोधू (स) रोक, रोकना, अनुसार, उपकार, अपेक्षा।

अनुविद्ध (स) जड़ा हुआ।

अनुशासन (स) आज्ञा, हुक्म अनुमति, वश करना, शिक्षा, सीख।

अनुदिन (स) सदा।

अनुसन्धान (स) सामना, मानस, अन्वेषण, खोजना, तलाश, खोज पता।

अनुसर (द) चलना।

अनुसरण (द) बीच में पड़ना।

अनुसारी (स) गम, विचार, जासूस, समान, अचल, सदृश, तुल्य, मुआफ़िक, लायक, योग्य।

अनुसारी (स) कहीं, अनुकूल।

अनुसूया (स) अत्रिमुनि की पत्नी।

अनुसरहीं (द) स्वकर्म को कहते हैं। [सर्व्वमय।

अनुस्यूत (सं) सर्व्वं व्यापक,

अनुहर (स) अनुसार, योग्य,

अनुहार, एक ही अनुसार या नायक, वा योग्य, लायक, वर्द्धित, मानित, गुह्रानित।

अनुहरत· (स) शोभित, रुचिरा, मान्य, योग्य, भलाई।

अनुहार· (स) योग्य, विचार, तुल्य, मौआफ़िक़।

अनूप· अनूपम· (स) उपमारहित, अपूरब, जिस की बराबरी न होसके। उत्तम, श्रेष्ठ, जिस देश में पानी बहुत रहे।

अनृत· (स) मिथ्या, अयथार्थ, झूंठा, असत्य, झूंठ, कृषि, खेती।

अनेक· (स) बहुरूप, ढेर, कई एक, एक नहीं। बहुत एक से अधिक।

अनेसे· (द) कुदृष्टि से, बुरे शब्द काम करनेवाला।

अनंगा (द) शरीर बिना, कामदेव का नाम।

अनैम· (स) कुदृष्ट, वाम।

अनेहा· (स) समय, काल।

अनै· (प) अवज्ञा, अनादर।

अनैक्य· (स) अमेल, विरोध, असंयोग।

अनोकह· (स) वृक्ष, पेड़।

अनोघ· (स) अति उत्तम।

अन्· (स) निषेधार्थ, नहीं।

अनहित· (द) द्वेषी, बुरा करनी वाला, शत्रु, बैरी, बुरा।

अंत· (स) नाश, मृत्यु, पश्चात्, निश्चय। [दिल।

अंतःकरण· (स) हृदय, मन,

अन्तक· (स) धर्म्मराज, नाशक, समीप।

अन्तर· (स) बीच, परदा, ओट, दुजा, भीतर।

अन्तरात्मा· (स) हृदय, मन।

अन्तर्भवन· (स) भीतर का घर।

अन्तर्वाष्प· (वि· अनुचरः) हृदय में है आंसू जिस के।

अन्तर्यामिन· (स) जीवों को उन के पूर्व कर्मानुसार शुभाशुभ कर्म में प्रेरण करने वाला, परमात्मा।

अन्तरशुद्धि· (स) हृदय की शुद्धता। [शुत।

अन्तरीक्ष· (स) आकाश, शून्य,

अन्तःशुद्ध· (स) भीतर से शुद्ध।

अन्तावरी· (स) आंत समूह।

अन्तस्ताप· हृदय का दुःख।

अन्तर्यामी· (स) मन की बात बूझनहारा।

अन्तष्करण· (स) मन, बुद्धि, चित्, अहंकार।

अन्तस्तोयम् ⎫ (वि· त्वम्) भीतर
अन्तस्सारम् ⎭ है जल जिसके।

अन्त्रा· अन्त्रावलि· (स) आंत, नाड़ी, अंतड़ी की पंक्ति।

अन्धः (स) तुमुल १ भात २।

अन्न· (स) अनाज आदि भक्षण, आहार, भोजन, खाने का सब वस्तु, नाज, भात।

अन्द्रानन्दी· (स) जल, निहारा।

अन्य· (स) बेगा, पराया, और पर दूसरा।

अन्यक्षीतक· (स) जेठीमध।

अन्यत्· (स) पराया, और।

अन्यत्र· (स) और कहीं।

अनन्त अनन्ता· ( ) अन्तरहित, वा लक्षण।

अन्यथा· (स) मिथ्या, झूंठ, अन्य प्रकार, और प्रकार से, और भांति, और तरह से, नहीं तो, उलटा।

अन्यपलास· (स) पलाशपीपल।

अंध· (स) अंधेरा, अंधा, जल।

अंधकार· (स) प्रकाश रहित, अंधेरा।

अन्याय· (स) न्यायरहित, अनीति, अयोग्य, जुल्म।

अन्वह· (स) क्रोधरहित।

अन्वह· (स) निरन्तर, दिनो-दिन, नित्योनित्य, सर्वदा, लगातार।

अन्वित· (स) संयुक्त, मिलित।

अन्वेषण· (स) अनुसंधान, खोज, तलाश, खोज, तह-कीकात। [वना।

अन्हवाना· (प) स्नानक· धोला-

अन्हान· (प) स्नान, धोवन।

अन्होना· (प) असाध्य, असम्भव, अचरज।

अप् (स) पानी।

अप (स) जल, लोड़ा, नीच, नष्ट, बुरा, परे, दूर।

अपकर्ष (स) भागना।

अपकीर्ति (स) अपयश, बदनामी। [दाई।

अपकारी (स) नष्टकारी, दुःख

अपगति (स) दुर्गति, अपनी गति। [जाना।

अपगम (स) चला जाना, मिट

अपगा (स) नदी, सरिता।

अपचय (स) चूक। [प्रतिष्ठा।

अपत्य (स) पापी या बिना

अपडर (स) मिथ्याडर, आपु और से भय, कुमार्ग, झूठ, डर, निजडर, निज और से डर।

अपति } अपत्य } अपत (स) पापी, बिनु प्रतिष्ठा, अनादर। [डर, झूठा डर।

अपभय (स) भय, डर, अपनी

अपथ (स) राह रहित।

अपत्य (स) पुत्र, सन्तान, कन्या।

अपटुर (स) मूर्ख, जड़।

अपपति (स) समुद्र।

अपहु: (स) तिनिस।

अपनयन मिटाना।

अपवर्ग (स) मुक्ति, कल्याण, मोक्ष। [अपजस।

अपवाद (स) निन्दा, दोष,

अपभ्रंश (स) भाषावचन, अपशब्द, नाश, बिगड़ा हुआ, अशुद्ध शब्द, ग्रामभाषा।

अपमुख (स) मीन मत्स्य।

अपच: (स) करीश।

अपमान (स) अनादर, तिरस्कार, प्रतिष्ठका भंगहोना, मानरहित, बेइज्जती।

अपयशस् (स) अपकीर्त्ति, बदनामी।

अपर (स) पीछ, न्यारा, और भिन्न, दूसरा, और एक, और दूसरा कोई।

अपरंच (स) अन्यदपि, और भी।

अपराजिता (स) दोनों विष्णुक्रान्ता। [इपड़वा।

अपरापुनर्नवा (स) लाल गद-

अपवर्ग· (स) मोक्ष।

अपेक्षा· (स) इच्छा, दृष्टि।

अपराध· (स) नष्ट आराधन, अधर्म्म, पाप, दोष, कसूर।

अपरिगणयनम्· न गिनता हुआ, न विचारताहुआ।

अपरिमित· (स) असंख्यात, अनन्त।

अपरोक्षवृक: (स) लाल रेंड़।

अपल· (स) अचल।

अपश्लोक· (स) अयश, दोष, निन्दा, अपश्लोक, अपयस।

अपशब्द· (स) भाषा, प्राकृत, वायु त्याग, अशुद्धशब्द, नष्टबाणी।

अपसन्दना· (स) समझार। नाश।

अपसर्थ्य· (स) निर्गत, अलग,

अपहं· (स) नाशकम्। [लेना।

अपहरही· (ह) चोरावरी हर

अपहरत· (स) नाशत, दूर करत।

अपहार· (स) नाश, घात।

अपहरना· दूर करना।

अपहारी· (स) नाशक, घातक, नाश करनेवाला, नाशकर्त्ता अपहरण करनेवाला।

अपक्ष· (स) पंखहीन, असहाय।

अपक्षीयत· (स) जैते जैते दिन दिनित है सो क्षीण होत।

अपधान· (स) आगभा।

अपाङ्ग· (स) आंख का बाहर वाला कोया, आंख की नोक। [ख्री चितवन।

अपाङ्गप्रसर· (स) कटाक्ष, तिर·

अपान· (स) (प) } अशुचि, आपा, चेत, अपना अपने को।

अपामार्ग· (स) चिरचिरी।

अपामार्गफल· (स) चिरचिरी का बीज।

अपाय· अपायन· (स) आगामी, क्षय, नाश, हानि, दूर होना, मिटना।

अपार· } (स) पार रहित,
अपारा· } समुद्र, अगम।

अपि· (स) निश्चय, भी।

अपुनर्भव· (स) निर्ज्जन्म, मुक्ति।

अपूर्व्व· (स) आश्चर्य्य, उत्तम, अनूप। [काच।

अपिस्त· (प) अदृश्य अदृष्ट, अ·

अपितराचसी· (स) दोनों तुलसी।

अपेय· (प) पीनेयोग्य नहीं।

अपेल· (प) अचल, अटल।

अपेचा· (स) आशा, भरोसा, इच्छा, दृष्टि, चाह।

अप्· (स) नष्टवाचक, जल।

अप्रतिहत· (स) जिस का रोक नहीं, अव्याहत, रोक रहित।

अर्पी· (द) दिया दे दिया।

अपर्णा· (स) दुर्गा।

अपवाद· अवलोक· (स) नष्टवाद, झूठ वाद, नाश करने की इच्छा, अपयश।

अप्रतिहतगति· (स) रोकनाही गमन आकाशादिक जहां चाहे तहां जाए।

अप्रतीकार· (स) न रोकना।

अप्सरा· (स) स्वर्ग वेश्या, आकाश पतुरिया।

अब· (स) } पालन, रच्छा, दू- (प) } दार्गी, अभी।

अवकलित· (स) निश्चित, नवीन।

अवकाश· (स) प्रकाश, ज्योति, सुविहिता, पसार, औसर।

अवगति· (स) ज्ञान, ईश्वर, दूसरी गति नहीं।

अवगाह· (स) अथाह, लाग, कठिन, डुबकी।

अवगाह्य· (द) अथाह।

अवगुण· (स) अपराध, घटी, दोष, तौनिउ गुणरहित।

अवघट· (प) अड़बड़, ऊबटपुलट। [कामदेव।

अवङ्ग· (स) नष्ट अङ्ग, अनङ्ग,

अवघट· (स) औचक, अचानक।

अवज्ञा· (स) नष्टयज्ञा, अनादर, अपमान।

अवध· (अ) नक्श।

अवडेरि· (प) छल, तूफान, फन्द, त्यागि।

अवतरेउ· (स) अवतार लिया।

अवडेरी· (प) छली, तूफानी, त्यागी, त्याग करना।

अवढर· (प) नीच दर ढरे।

अवतंश· (स) शिरीभूषण, कर्णभूषण।

अवदात (स) उज्ज्वल, निर्म्मल।

अगदात (स) सामज्ञ।

अवद्य (स) दोष, विकार, निर्व्वाणी, अकथ्य।

अवध (स) अयोध्यापुरी।

अवधपति (स) अवधका राजा।

अवधि (स) आवँल, समय, अर्ज्जुन पाण्डव, करार, सियाह, हद।

अवनि (स) पृथ्वी।

अवधिवैराग्य (स) तीनिहुंलोक विषय सम त्याग।

अवधूत (स) योगी, संन्यासी।

अवधेश (स) अवध का राजा।

अवभृथ (स) स्नान, मज्जन।

अवराध (स) सेवा, टहल।

अवराधक (स) सेवक, टहलू, पूजक।

अवरेव (स) खिचाहुआ, डाह, जरन्त, बिगार। [रचना।

अवरेसु (द) और परदोष

अवरोध अवरोधन (स) रणिवास, रोक, अटक,।

अवरोहण (स) सीढ़ी, सोपान,

अवरी (प) } खण्डान्वय अक्षर
अवरेव (स) } अर्थ जो उलटि के अर्थ लगावना वा तोड़ि तोड़ि अर्थ लगावना। काड़ि कि अर्थ लगाने का लक्षण है, एक खण्डान्वय, जो उलटि के, तोड़ि ताड़ि के, दूजी दण्डान्वय, जो सीधो अर्थ लगावना और जाना चाहिये को अर्थ लगाने का लक्षण तीनि भांति धुनि, १॥ अवरी, २॥ कवित्त गुण, ३॥

अवर्त्त (स) जलघुमर, भौंर।

अबल (स) निर्बल, दुबरा, क्षग, अबल, दुबल।

अवलम्ब (स) आश्रय, थंभन, आधार, आसा पकड़ के रहना।

अवला (स) स्त्री, बलहीना, नारी, मेहराऊ।

आवली (स) पंक्ति, सतर, श्रेणी, पांती, लकीर। [षत।

अवलोकत (स) तकत, वा दे-

अवलोक्य (स) देखने योग्य, देखहु। [हिके।
अवलोकि (स) तकिके, निगा
अवशेष (स) संपूर्ण।
अवसर (स) समय।
अवसाना (द) अंत। [चिन्ता।
अवसेर (द) सोच,बाटनिहारण,
अवसेरी (द) देरी, चिन्ता, उत्कंठा,सोची, अति देर।
अवहित (स) नष्टहित, दुष्ट।
अवाध अवाधा (स) सांच, सुखरूप, निर्दोष, सच, बाधारहित, बेरोक, दुख बिना, बाधारहित।
अवाधी (स) सुखरूपी, सांची, निर्दोषी, बाधारहित।
अवार अवारी (द) दुकान, पंक्ति, अबेर, बिलम्ब।
अवासु (स) निवास, स्थान, मन्दिल।
अवि (स) भेड़, मेष, सविता, रक्षक, दो० अवि पर्व्वत अवि मेष पुनि अवि सवि-ता को नाम। अवि रच्छक सम जगत में, एकै सुंदर श्याम ५५॥ [विकाररहित
अविकारी (स) जन्मदिकः,
अविचल (स) थिर।
अविछीन (स) हानि रहित।
अविवेक (स) अज्ञान।
अविवेकी (स) अज्ञानी।
अवित (स) अपराध, घटी।
अविद्या (स) जीव, माया, अज्ञानता।
अविनय (स) ढिठाई, खोटी, अनम्रता, ढिठाई।
अविनाशी (स) मृत्युरहित।
अविद्या (स) अज्ञान।
अविद्यापंच (स) अविद्यादि-पांच क्लेश। [चल।
अविरल (स) निरन्तर, अ-
अविरोध (स) सुख, चैन, मिलाप।
अविरोधी (स) मिलापी, धीर, शान्त, बिरोधरहित।
अविसरी (स) अबेर, उत्कण्ठा।
अविहित (स) अशास्त्र,शास्त्र, रहित।

अविच्छिन्न (स) निरन्तर, अचल।
अबुध (स) मूढ़, अज्ञानी।
अब्ज (स) कमल, चन्द्रमा, शंख इत्यादि, जल में जो जन्मे।
अब्धि (स) जलसमुद्र, नीरसागर।
अव्यक्त (स) निरूप, ब्रह्म, मूल प्रकृति, अप्रगट, निर्दोष, गुप्त वा ईश्वर। [ढिंढ़ा।
अव्यथा (स) पीड़ारहित, हर।
अव्यय (स) अविनाशी, निर्नाश, सूम, नाशरहित, व्यय रहित। [कृपा।
अव्यया (स) माया, बन्धन।
अव्याहत (स) रोकरहित।
अभक्त (स) सठ, भक्तिहीन।
अभय (स) निडर, निर्भय, बिनाडर।
अभयश्रवा (स) सञ्जीवनी।
अभया (स) हरड़ेहल, हरें, खस।
अभाव (स) न होना।
अभाषण (स) चुप।
अभि (स) उपसर्ग, सब ओर से, चौफेरा, आगे।
अभिकरण (स) प्रकाश, शोभा, भूषण।
अभिख्या (स) शोभा।
अभिगम (स) मिलाप।
अभिअंतर (स) भीतर, अंतसकी वासना। [आदिकर्म।
अभिचार (स) मारण, उचाटन,
अभिघाती (स) शत्रु।
अभिज्ञ (स) प्रवीण। [न।
अभिजात (स) कुलीन, विद्वा
अभित (स) समीप।
अभिनव (स) नया।
अभिजित (स) मुहूर्त विशेष, नक्षत्र विशेष।
अभिज्ञान (स) चिन्ह, पता।
अभिधा (स) नाम, पदवी।
अभिधान (स) भण्डार, कोष, नाम, संज्ञा।
अभिनन्दन (स) प्रकाशना, प्रशंसा, अभिलाष, परहमा।
अभिप्राय (स) आशय, मनोरथ, मनोविचार, प्रयोजन, मतलब।

अभिवादन (स) नमस्कार, प्रणाम।

अभिभव (स) पराजय, हार।

अभिभूत (स) पराजित, हारा।

अभिमतरसाम् (बि. द्दालम्) मन में भया है स्वाद जिस का।

अभिमत (स) वांछित, सम्मत, इष्ट, चाहागया, अंतःकरण का संकल्प प्यारा, मनभाया। [गरूर।

अभिमान (स) गर्व्व, अहङ्कार,

अभिमुख (स) सम्मुख, आगे सामने। [नुग्रह करहु।

अभिरक्षय (स) रक्षाकरहु, अ

अभिराम (स) सुन्दर, शोभा, शोभायमान, सुखद, प्रिय आनन्ददाता, सुखदाई, सुख। [मनोरथ।

अभिलाष (स) इच्छा कामना,

अभिलाषी (द) चाहनेवाला।

अभिलीन (स) छाया हुआ, मिला हुआ।

अभिलुलित (स) हिलता हुआ।

अभिषिक (स) तिलक, जलछिरक, शान्ति, स्नान, पूजा, राज्यगद्दी, जलछिरकना, वा स्नानकरना।

अभिसार (स) स्त्री का अपने पति वा प्रीतम से मिलने को जाना।

अभिसारिका (स) नष्टास्त्री, भ्रष्टानारी। [थित।

अभिहित (स) कथित, प्रका-

अभीष्ट अभिमित (स) इच्छा, मनोरथ, कल्याण, वांछित, चाहागया। [टूटे।

अभेद (स) भेदबिना, जो न

अभंगू (द) जो न टूटे, जो कभी न टूटे। [म्बार।

अभीक्ष्ण (स) पुनः, पुनः, बार-

अभूत (स) हुआ।

अभूतरिपु (स) शत्रुहीन, जाकोरिपु उपजा नहीं है, शत्रुरहित। [नहीं।

अभोग्य (स) भोगने के योग्य

अभ्यषिञ्चत् (स) छिड़कता हुआ।

अभ्यसूय· [स]कुपित, क्रोधित ।

अभ्यागत· (स) पाहुन, अतिथी, मेहमान ।

अभ्यास· (स) निकट, अप्राप्ति, असाधन, अविच्छिन्न, रखत ।

अभ्युद्यत· (स) उपस्थित, उद्योग, करने वाला । [हुआ ।

अभ्युपेत· (स) स्वीकार किया

अभ्युपेतार्थकृत्या· (स) स्वीकार की है प्रार्थना जिन्होंने ।

अभ्येति· (स) सामने आता है ।

अभ्यन्तर· (स) भीतर की वासना, भीतर ।

अभ्यागम· (स) युद्ध । [न

अभ्र· (स) मेघ, आकाश, बाद-

अभ्र: (स) अबरख चार रंग का ।

अभ्रक: (स) अबरख ४ रंग का ।

अभ्रपुष्प· (स) बेतवृक्ष, बेत ।

अभ्रंलिह· बादल, चाटनेवाला, अर्थात् बहुत ऊंचा ।

अभ्रंलिहाग्राः (वि· प्रसादाः) बादल चाटने वाली हैं शिखा जिनकी ।

अभेद· (स) भेदरहित ।

अम्भोद्भवा· (स) अबरख ४रंगका ।

अमर· (स) त्रिदेवा, निर्जीवक, नित्य, श्रेष्ठ, प्रवीण, मृत्यु, रहित, देवता ।

अमरता· (स) मधुर, मीठा, न· मरना ।

अमरबेली· (स) लता विशेष ।

अमर मिथुनप्रेक्षणीयाम्· (वि· अवस्थाम्) देवताओं के देखने योग्य ।

अमरवल्ली· (स) अमरलता ।

अमराई· अम्बराई· (प) आम वाटिका, आम का बगीचा वा स्वर्ग ।

अमरावती· (स) देवपुरी, इन्द्र· लोक, स्वर्ग, इन्द्रपुरी ।

अमल· (स) मलरहित ।

अमलक· (स) आंवला ।

अमानो· अमान, (स) मानरहित, प्रमाण से परे, मान ।

अमर्ष· (स) तामस, जरन्त, कोप ।

अमाई· (द) समाई, पूरा, घटावना ।

अमानुष· (स) ईश्वर जो मनुष्य से न हो सके। [कर्म।

अमानुषी कर्म· (स) ईश्वरी

अमाया· (स) मायारहित, कामनारहित, छलरहित।

अमित· (स) अनेक, बहुत, अप्रमाण, जिसका अंत नहीं।

अमी· (स) अमृत, यह सब, प्राणी, आसव।

अमीकर· (द) चन्द्रमा, चान्द।

अमीय· अमिय (द) अमृतयोग्य, सुधा, विमल, संजीवनी।

अमीयमूरि· } (द) सजीवन
अमियमूरि· } जड़ी।

अमंगल· (स) अशुभ।

अमुम· उस को, उस को।

अमू· (स) एह दिखायो।

अमुक· (स) कोई, यह, वह, फलां। [मज्ज २।

अमृणाल· (स) खसखस १ ला·

अमृता· (स) सुधा, जल, पानी, अमर, मुक्ति, विष, निर्विष, मधुर, गुरिच।

अमृतफल· (स) नाशपाती।

अमृतवल्ली· (स) गुरिच १ पाई· माग २। [र्द्दे, भौंरा।

अमृता· (स) हरडिब्बा, गुरीच,

अमृतेश· (स) देवता, निर्ज्जर।

अमेध्य· (स) अशुद्ध, अपवित्र, मल।

अमेय· (स) अनूपमायोग्य।

अमोघ· (स) सत्य, अथाह, फल-दाता, अचुक, आदि, अन्त, मध्य, जिसको वेद नहीं जानता, सफल जो निष्फल न हो।

अमोघा· (स) बाभिरंग।

अम्ब· (स) हैमातु, हैमाता।

अम्बऋषि· (द) } राजावि-
अम्बर्षि· (स) } शेष।

अम्बक· (स) नेत्र, नयन।

अम्बशसी· (स) राजवेलीपुष्प।

अम्बष्ठी· (स) सहनाक्षीधादि।

अम्बर· (स) वस्त्र, आकाश, अ-मृत, पीत, मेघ। [कर।

अम्बरमणि· (स) सूर्य्य, दिवा·

अम्बा· (स) माता, जननी, माचिका। [माचिका।

अम्बिका· (स) देवी, भवानी,

अम्बु· अम्भस· (स) जल, नीर, पानी, अप्।

अम्बुगरुड़ाभी· (स) गाड़रदूब।

अम्बुज· (स इज्जर।

अम्बुद· (स) मोंथा। [रिष।

अम्बु शरोषिका· (स) जलशि·

अम्बुज· (स) कमल, पद्म।

अम्बुद· अम्बुधर· (स) मेघ, घटा, वर्षा। [सागर।

अम्बुधि· (स) समुद्र, अर्णव,

अम्बुपति· (स) वरुणदेवता, जलदेवता।

अम्बुवाह· (स) बादल।

अम्भ:· (स) पानी।

अम्भोज· (स) कमलादि, कंज।

अम्भोद· (स) मेघ, झड़, बादल।

अम्भोनिधि· (स) जलसमुद्र।

अम्भोरुह· (स) कमल।

अम्भोविन्दुग्रहणारम्भसान्· (वि· चातकान) पानी की बुन्दें लेने में तत्पर।

अम्मा· (प) माता, जननी।

अम्बु· (स) पानी।

अम्बुद· (स) सुगन्धबाला।

अम्बुनामा· (स) सुगन्धवाला।

अम्बुसार· (स) केला।

अम्लदधि· (स) खट्टा दही।

अम्लचक्र· (स) तित्ती डोक।

अम्लवेतस· (स) अम्लवेत।

अम्ला· (स) इमली।

अम्लाटन· (स) बाणपुष्प गौड़-देश में प्रसिद्ध।

अम्लातक· (स) मालदही आम।

अम्लिका· (स) इमली।

अम्लिकाप्रपाणक· (स) इमली का पन्ना।

अम्लि· (स) का बटक इमली का भिगाया बरा।

अम्ली· (स) इमली।

अम्बष्टकी· (स) पाढ़ी।

अम्बष्टा· (स) पाढ़ी १ जही-फूल २ मोनीयांसाग ३ माचिका ४।

अम्रात· (स) बाणपुष्प, गौड़देश में प्रसिद्ध १ अमड़ाफल २।

अम्लातक (स) अमड़ाफल।
अय: (स) गति, प्राप्ति, वज्र लोहतपत, लोहा।
अयत (स) शोभित, प्राप्ति, विशाल, चौड़ा, लम्बा, धूप।
अयन (स) व्यूह प्रवेशकी मार्ग, सूर्यकी गति, घर, स्थान।
अयम् (स) यह एक, यह।
अयमित (स) बिना कटा हुआ, बिना बना हुआ।
अयमितनखेन (वि० करेण) बिना बेनु नुह हैं जिसके।
अयश (स) अकीर्त्ति, कलङ्क, निन्दा।
अयस् (स) वज्र, लोहा। [मूर्ख
अयान अयाना (प) झूठ,
अयुत (स) सकल, बिस्तार, दशहजार, १०००० दशसहस्र। [हथियार।
अयुध (स) सामान्य शस्त्र,
अर्क (स) मदार वृत्त वा सूर्य।
अरगाई }
अरगानो } चुप।
अर्धजल मरन समय जल देना
अरगाना (द) अलग होना, चूप।
अरग्वध (स) अमलतास।
अरनी आग मथनेकी लकड़ी।
अरणि (स) भाग्री लोहारक, काष्ठविशेष।
अरणी अरनी (स) यज्ञ में अग्नि निकाले का काष्ठ, मथी के आग निकालने की लकड़ी।
अरण्ड (स) रेड़वृत्त, अण्डी।
अरण्य (स) बनहलदी।
अरण्य (स) बन, जङ्गल, कानन।
अर्णव (स) समुद्र।
अरविन्द (स) कमल, उत्पल।
अरध (द) अर्ध, आधा।
अरलु: (स) सोनपत्ता। [रना।
अरझ (द) तिउरी, देह फि-
अराति (स) कण्टक, शत्रु, बैरी।
अरि (स) दुष्ट, बैरी, शत्रु, दुश्मन।
अरिमर्द (स) कसौंदी।
अरिष्ट (स) दारु १ लहसुन

२ नीम ३ रीठा ४।

अरुण (स) रक्तवर्ण, सूर्य्य सारथी, लाल, सूर्य लाल रंग।

अरुण चूड़ अरुण शिखा, (स) अरुणचूड़। } मुरगा पक्षी।

अरुनारि (द) लाल।

अरुणाई (प) लालीमा, भोर।

अरुण (स) अतीस १ घोड़ हुल फूल २ मजीठ ३।

अरुणोदय (स) प्रातः काल, बिहान।

अरुन्धती (स) वशिष्ठ मुनि की पत्नी, वशिष्ठ की स्त्री।

अरुष्कर अरुष्क } (स) भेलावा।

अरोह (स) छेवा, चेर।

अरोक (स) रोकरहित।

अर्क अर्क (स) सूर्य्य, आक, मन्दा, वृक्ष।

अर्कपर्णी (स) तामाजड़ी १ लाल अकवन २।

अर्कपुष्पी (स) कुटुम्बिनी वृक्ष।

अर्गवध (स) अमलतास।

अर्क फल (स) सूर्य्य कोहड़ा, आक फल।

अर्घ (स) सूर्य्यादि पूजानिमित्त जल नीचे गिराना, आदर निमित्त सामग्री, मोल।

अर्घ्य (स) अर्घ के योग्य।

अरङ्क (स) धनी।

अर्चक (स) पूजारी, सेवक।

अचारी (स) दुकान, पंगति।

अर्चा (स) पूजा, सेवा।

अर्चिस (स) लोई।

अर्ज्जव (स) करुणा, दया, सरल, कोमल, नरम।

अर्ज्जुन (स) द्रुम, उज्ज्वल, सहसा, तीसरा पांडव।

अर्ज्जुनाह्वा (स) कहुआ।

अरधंग अर्धांग, आधा शरीर, आधा अंग।

अर्ण (स) जल, नीर, पानी।

अर्पा (द) दिया।

अर्णव (स) समुद्र, सागर।

अर्थ साधन (स) रीठा।

अर्हीस (स) नैवेद्य लगाना, स्तुति।

अर्थ (स) प्रयोजन, वस्तु, याचना,

द्रव्य शब्दार्थ।

अर्थम् निमित्त, लिये।

अर्थित्व अर्थीपन, मङ्गतापन।

अरनव (द) अर्णव, समुद्र।

अर्द्ध (स) आधा, मध्य।

अर्द्धघाटिका (स) द्विशीघ्रतावर।

अर्द्धचन्द्रा (स) पनिरस।

अर्द्धतिक्ता: (स) नैपाली चिरैता।

अर्द्धरुढ़म्, आधा निकला हुआ (जैसे फूल का कर्मा)

अर्द्धजल मरतीवार, मरन समय में जल देना।

अर्द्धरात्रि (स) आधीरात्रि, महानिशा।

अर्द्धेन्दुमौलि: शिव, महादेव, (आधा चन्द्रमा है मुकुट जिस का)।

अर्व्व (स) घोड़ा, गिर्धिविशेष, संख्याविशेष, दशकोटि।

अर्भक (स) बालक, शिशु, पुत्र, लड़का। [यम।

अर्य्यमा (स) आदित्य, सूर्य्य,

अर्गघ्न: (स) भोल।

अर्हसो तुम्हें योग है।

अरंड (द) रेंडवृक्ष।

अलं (स) अव्यय, व्यर्थ, समर्थ, पूर्ण। दो०। अलसमर्थ अलवरण पुनि, अल पूरणके नाम। अल अभरण अल अलस तजि, भजुमनमोहनश्याम॥ २८॥

अलं (स) (अव्यय) व्यर्थ, समर्थ पूरण, आभरण, अलस्य, सबर।

अलक (स) केश, घूंगर, चटिया, बाल, बालों की जूट।

अलक्ता (स) लाही।

अलकत्व (स) लटका, धर्म्म।

अलका (स) पुरी विशेष, कूबेर नल पिता पुत्र स्थान, कुबेर की पुरी यक्षों की पुरी का नाम।

अलकान्त (स) लट का सिरा।

अलङ्कृति अलंकृत (स) शोभित, सुन्दर। [गहना।

अलंकार (स) शोभा भूषणयुक्त,

अलङ्घ्य (स) जो उलांघ न जा सकै।

अलम् बस, सामर्थ।

अलम्पट· (स) रहित, अलग, अकामी, सांचा, जितेंद्रिय।

अल्प· (स) किंचित्, थोड़ा।

अलम्बुषा· (स)लजौनी खेत की।

अलर्क· (स) सुपेद फूल का आकवन। [जाय।

अलषित· (स) जो लखा न

अलस· (स) आलस, सिथिलता। [सोना।

अलसी· (स) अन्न तीसी, म

अलच· (स) दलिद्र, दीन, अदृष्टि, असुभ।

अलखित· (स) अलचित, जो लखा नहीं जाय।

अलात· (स) अङ्गार· अंगार।

अलान· (प) बेड़ी गजबन्धी, कारण, गजबन्ध, जंजीर, हाथी की बेड़ी।

आलाबू (स) कदुआ गोल वो लागा। [दरिद्र।

अलक्ष्मि· (स) अलच्मी, धनहीन,

अलि· (स) भौंर कृमि, समूह। भ्रमर, भौंरा, सखी।

अलिक· (स) ललाट, मस्तक।

अलीकप्रलापी· (स) मिथ्यावादी।

अलिनी} (स) भंवरी कृमि
अलिनि· } भ्रमरी, भौंरी।

अलिवल्लभा (स) पांडर।

अलिपर्णी· [स] पिठवन्।

अली· (स) सखी, मदिरा, भंवर समूह।

अलीक· अलीका· (स) मिथ्या, असार, झूठ, अप्रिय, प्रलापी, मिथ्यावादी।

अलीक (स) रिकवंच या तरघा तरकारी बेसन लपेटकर घीव में तला जाय।

अलीन· (स) अशुद्धि, मलीन।

अलीहा· (प) मिथ्या, अप्रमाण, झूठ, उद्यम रहित।

अलुझि· (द) अलुझ करके उरझ के, लग कर के, उलझना।

अलूक· (द) प्रगट।

अलोला· (स) थिर।

अलोक· (द) लोक के परे, लोक में।

अलोल· (स) खेल, कूद, थिर, अटल।

अलौकिक· (स) अदृष्टि, अप रज, जो लोक में नहीं, जैसा दूसरा नहीं, लोक में जैसा दूसरा नहीं, लीला, प्रकृतिरहित।

अल्पाल्प· (स) थोड़ा थोड़ा।

अल्पाल्पभासम्· (वि· दृष्टिम्) थोड़ी थोड़ी है चमक जिस में।

अल्पमारिष· (स) चौराई साग।

अल्पास्थि: (स) फालसा।

अल्पिका· (स) अमीलता।

अल्पिकासहा· (स) वन मूंग।

अव· (द) आवा कुंभार का।

अवकलित· (स) निश्चित।

अवगति· (स) अज्ञान।

अवगाह· (स) अथाह, स्नान, नहाना।

अवघट· (द) अड़बड़।

अवघट· (स) औचक, कुठांव।

अवज्ञा· (स) अपमान, अनादर, तिरस्कार।

अवडेरि· (स) त्याग कर के पीछ में कस के।

अवढर· (स) जो नीच पर भी ढरता, अर्थात् नीचो पर ढेर दया करता।

अवध· (स) अयोध्या।

अवधि· (स) सीमा, अंत, सिवाना, प्रतिज्ञा, पण, मर्यादा, हद, करार।

अवनि· (स्त्री) भूमि, पृथ्वी, माता। [जलघुमर।

अवर्त्त· (स) आवर्त्त, भंवर,

अवराधक· (स) सेवक।

अवराधना· (द) सेवना।

अवराधि· (द) सेये।

अवरेखी· (द) लिखी।

अवरेव· (स) उलट के पद पद को जोड़ना, कुपेच।

अवलोकय· } [स] देखो।
अवलोक्य· }

अवकाश· (स) अवसर, फुरसत,

अवसि· (स) अवश्य, जरूर।

अवसेरी· (स) देरी, उत्कंठा।

अवाधी· (स) सुखरूप।

अविहत (स) बिना रोका हुआ।
अविकल (स) सम्पूर्ण।
अविधवा (स) सुहागिनि, सौ-
भाग्यवती। [तार।
अविरल (स) निरन्तर, लगा-
अविरतोत्कण्ठम् (वि॰ अङ्गम्)
निरन्तर है चाव जिस में।
अविर्विंशा (स) भेड़ा, चारपाया।
अविद्यापाँच (स) अविद्या आदि
पांच क्लेश।
अविनय (स) ढिठाई। [नहीं।
अविनाशी (स) जिस का नाश
अविरोध (स) बिना विरोध।
अविवेक (स) अज्ञान, विवेक
रहित।
अव्याहत (स) अरोक, जिस
का रोक नहीं।
अव्यथा (स) हर्रे १ बड़ी
भुंड़ली २ गुलाब ३।
अव्यापन्न (स) जीता हुआ।
अविकारी [स] विकाररहित,
जन्म आदि विकारहीन।
अविगत [स] व्यापक।
अविज्ञा [स] अज्ञान।

अविचल (स) थिर।
अवच्छीन [स] निरंतर।
अविद्या [स] अज्ञान।
अवनत (स) झुका हुआ।
अवनिशयनाम [वि॰ साधीम्]
पृथ्वी है शय्या जिस की।
अवनीप (स) राजा, भूप, नृप,
ढिठाई, पृथ्वी पति।
अवच्छिन्न [स] भिन्न।
अवतीर्ण (स) अवतार मानों
ऊंच मण्डल से नीके उतरि
आवना उतरा हुआ।
अवधूत (स) हिलाया हुआ।
अवनी अवनि (स) धरती,
पृथ्वी, भूमि, माता।
अवनीकुमारी (स) जानकी,
सीता, भूकन्या।
अवकीर्ण (स) फैला हुआ।
अवल्गुज: (स) बकुची।
अवतंस (स) मटुक, शोभा, क-
रनफूल, माथे का गहना।
अवतरेय (द) अवतार लिया।
अवकाश (स) अवसर फुरसत,
आवकाश, औकाश।

अवनीश (स) राजा, नृप, भूपति।
अवन्ती (स) उज्जयन नगरी।
अवन्तिका (स) उजेन नगरी।
अवयव (स) अङ्ग, देह, शरीर, आदि अन्त।
अवलम्ब (स) लटकाव, आधार।
अवलम्बे धारण करता हूं मैं।
अवलेप (स) घमंड।
अवलेह (स) शहतादि मिला हुआ पतला चाटने लायक जैसे चटनी।
अवशिष्ट (स) अवशेष, बाकी।
अविश्वासिन् (स) जिस को भरोसा न हो।
अवशेष (स) अन्त, सूक्ष्म, थकित बचन, शेषबचा, संकष्ट, क्लेश।
अवासू (स) मन्दिर।
अवशेषित अवशेषा (स) अवशेषयुत, अन्तयुत, क्लेशित, बचा, बाकी। [जरूर।
अवश्य (स) निश्चय करके,
अवसान (स) अन्त, शेष, समाप्ति, नाश अवासू।
अवसर (स) अवकाश समय।
अवस्था (स) दशा, वर्ष वयस, द्विन, बाल, कुमार, यौवन, वृद्ध, देह की दशा, हालत, उम्र।
अवहित (स) ध्यान लगाए हुए, एकाग्र चित।
अविजन्या (स) किसमिश।
अव्यक्त (स) शरीर रहित, निराकार, परमात्मा, प्रकृति, गुप्त। [रहित।
अव्यय (स) नाश रहित, व्यय
अशक्त (स) बलहीन, असमर्थ।
अशन (स) भोजन, आहार, खाना।
अशनि (स) वज्र, कुलिश।
अशरण (स) बिना आसरे, निराधार।
अशस्त्र (स) बिना हथ्यार।
अशंका (स) शंका रहित।
अशिकारक: (स) तेंदुवृक्ष।
अशिशिर (स) तता।
अशिव (स) अमङ्गल, अशुभ,

अकल्याण ।
अशुग (स) बाण, इषु ।
अंशु (स) किरिण ।
अंशुक (स) वस्त्र ।
अशुभ (स) अकल्यान ।
अशुचि } (स) अपवित्र, अशुद्ध,
अशौच } अशौच । [जल ।
अश्र, अश्रु (स) आंसू आंखजल।
अशेष (स) सम्पूर्ण, समस्त ।
अश्रद्धतम (वि अङ्कम) आंसुओं से भींगा हुआ ।
अशेव (द) अपवित्र । [विशेष ।
अशोक (स) शोकादित, वृक्ष
अश्म (स) पाषाण, पत्थर ।
अश्व (स) घोड़ा, अर्व्व, वाजी, हय ।
अशोकः (स) अशोक वृक्ष, वृक्ष विशेष, शोक रहित ।
अशोका (स) कुटकी ।
अश्मघ्न (स) } हत्था जोड़ी ।
अश्मभेद (स) }
अश्लेषान्तकः (स) बहुभार ।
अश्वकर्णः (स) साले वृक्ष ।
अश्वकर्णिकः (स) साले वृक्ष ।
अश्वगन्धा (स) असगन्ध ।
अश्वत्थ (स) पीपर [वृक्ष, पीपल का वृक्ष, जगत् ।
अश्वभाक्तः (स) सुपेद कनइल ।
अश्वस्थः (स) पीपल वृक्ष ।
अश्वस्थफला (स) बड़ा को उबेर ।
अश्वस्थभेद (स) बेलिया पीपर ।
अश्वात्त (स) अजमोदा ।
अश्विनी (स) घोड़ी, प्रथम नक्षत्र ।
अश्विनी कुमार (स) नामदेव वैद्य रवि पुत्र एकहिं नाम का दो भ्राता जो अश्विनी के गर्भते उत्पत्ति जौंवा ।
अष्टम (स) आठवां ।
अष्टवर्ग (स) मेदा, महामेदा, काकोली, क्षिरकाकोली, ऋद्धि वृद्धि जिह्वक ऋषभक, एइ आठ द्रव्य अष्ट वर्ग हैं ।
अष्टदिशा वर्णन (स) पश्चिम, पूर्व, उत्तर, दक्षिण, वायुकोन, ईशानकोन, अग्नि-

कोश, नीवित कोन।

अष्टसिद्धि विशेषण (स) अणिमा, महिमा, गरीमता, लघिमा, प्राप्ति, काम, वशीकरण, ईशता। श्लोक। अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा। ईशित्वंच, वशित्वंच तथा कामाव-सायिना॥ १॥

अष्टादश (स) अठारह। [मैं।

अष्टाङ्ग (स) आठ है अङ्ग जिस

अष्टादशभार (स) वनस्पति १८ भार।

अष्टापद (स) सोना, द्रव्य, स्वर्ण।

अस (स) आसन, कवित्त, गुण, लक्षण, हार, ऐसा।

असत् (स) अशिव, श्रद्धारहित तप, होम, दान आदिक।

असभ्य (स) जो सभा के योग न हो, धूर्त, दुष्ट, नालायक।

असंभव (स) सभंवरहित ग़ैर-मुमकिन।

असंख्य (स) बेतादाद, बेशुमार।

असज्जन (स) खल।

असकृत (स) थोड़ा सा।

असकलव्यक्ति (स) (वि) मुकम्मल कुछ एक दीखता हुआ।

असकृत् (स) बारबार।

असि (स) तलवार, खड्ग।

असिनिहूंके (स) तलवारके।

असन् (स) भोजन।

असन्त (स) असुर, दैत्य।

असम (स) अनङ्ग, कामदेव।

असमञ्जस }
असमंजस } (स) द्विविधा, सन्देह, नामराजा, सगरपुत्र अंशुमान का पिता, दुबधा।

असमय [स] विपत्ति काल, अकाल, कुसमय, बिना ऋतु।

असमशर }
असमसर } (स) कामदेव, कामदेव शर।

असम्भावना (स) अनिश्चय, शोच, अथवा उचित समुझ कही सम्भावना, नहीं, नित्य के अनित्य अरु अनित्य को नित्य जानना।

असहन (स) जो सह न सके।

असहाई· (द) बिनासहायक।
असरि· (स) सर्वांगरहित।
असाधी· (स) असाध्य, जो दूर न हो। [न हो।
असाध, असाधि (स) जो दूर
असि· (स) तलवार, खड्ग, खांड़ है ऐसी, तू।
असित· (स) वक्र, बांका, देव ऋषि विशेष, काला, (जो खेत न हो) [बाका।
असितनयन· (स) काली आंख·
असितसारक: (स) तेंदुलस।
असिता· (स) मोड़हुत।
असिन· (स) तलवार, खड्ग।
असिपत्र: (स) केतारी।
असी· (स) आत्मा, ब्रह्म।
असिव· (द) असंगल।
असुखिन्· (स) जो सुखी न हो अर्थात दुखी।
असुर· (स) राक्षस, रात्रिचर, धर्म्मविरोधी, दैत्य, दानव।
असूया· (स) निंदा, किसी के गुण में दोष लगाना।
असुरपुरोहित· (स) शुक्र, उशना। [तीर्थ।
असुरसेन· (स) दैत्यसेना, मथा
असंमत· (स) प्रतिकूल।
अस्मिमान·
अस्मिमात्र· } (स) हाड़म्बर।
असृक· (स) रुधिर, रक्त, लोहू।
असृक्· (स) सृक्का।
असौ· (स) यह एक प्राणी, एह वर्ष वह।
अस्त· (स) छिपाव, लुकाव, अन्तर्द्धान, नीचे गया हुआ, छुपा हुआ।
अस्तकोप: (वि॰ धनेश:) जिस का कोप दूर हो गया है।
अस्तम्· (स) छुपा हुआ, नीचे] गया हुआ।
अस्त्र· [स] रक्त। [वाल्मीक।
अस्तव्यस्त· [स] छिन्नभिन्न,
अस्ताचल· [स] पर्व्वत विशेष।
अस्ति· (स) है, वह।
अस्तु· (स) होय, आज्ञावाचक।
अस्तुति· (द) बड़ाई।
अस्त्र· (स) शस्त्रखड्गादि विशेष, खड्ग मन्त्र युक्तशस्त्र, वा

कर छोड़ि जो आयुध चलै
तीर आदि हथयार।

अस्थिसमूह }(स) हाड़ का
अस्तिसमूह } ढेर। [बाहर।

अस्थान (ह) अपनी जगह से

अस्थि अस्ति (स) हाड़, शरीर
का पञ्जर, हड्डी।

अस्थिशृङ्खला }
अस्थिसङ्घार } [स]हड़कड़ंकी
अस्थिसङ्घारक }

अस्फोता (स) लाल फूल का
अकवन १ दोनों विष्णु
क्रांता।

अस्वश्वन् (स) न कुत्ता कुत्ता।

अस्मदीय (स) मेरा।

अस्मरण (स भूल, विस्मृति।

अस्मसर (स) कामदेव।

अस्मात् (स) इसलिये।

अस्मि (स) मैं हूं।

अस्मिन् (स) इस विषै इसमें।

अस्मर्थ: (स) शिलाजीत।

अस्त्र (स) कोण, एकदेश, नोक।

अस्रप (स) राचस, दैत्य।

अस्व (स) निर्धनी, कङ्गाल,
दरिद्र। [अहंकार, खेद।

अह: (स) आश्चर्य, दिन कष्ट,

अहङ्कार [स] गर्व्व, दम्भ, अभि
मान, ग़रूर।

अहन् (स) दिन। [अहंकार।

अहमिति (स) मौज, चैन,

अहम्मति (स) अहमेव, मन
मौज, गर्व्वी। [दिन।

अहरह (स) दिनोदिन, प्रति-

अहर्निश (स) दिन रात, दिन
रात्रि। [सवेरा, भोर।

अहर्मुख (स) प्रात:काल,

अहह (स) बहुकष्ट, कूथना,
कहरना, हाय, बड़ा
कष्ट है।

अहि (स) } सर्प्प, नाग, आस्ति
(प) } वाचक। दो॰ अहि-
} वासर अहिराजु
पुनि, अहि एक दानव
नाम। अहि भुजंग काली
दमन, बनमाली घनश्याम
॥ १३६ ॥

अहित (स) शत्रु। [अघात।

अहिंसा (स) दया, अनपकार,

अहिनाद (स) शेषनाग, अहौश। [नी।

अहिनी (स) नागिनी, सांपि

अहिफेन (स) }
अहिफेनक: } अफीम।

अहिवल्ली (स) नागवेल्ली, पान की। [नाग।

अहिराज अहिराजा (स) शेष

अहिवात (स) सुहाग, सौभाग्य।

अहिवेलि (स) पर्णविशेष पान संज्ञा।

अहिभची (स) मोरपक्षी, मयूर। [पत्नी।

अहिल्या (स) गौतममुनि की

अहीन्द्र: (स) कपूर, काफूर।

अहीश (स) शेषनाग, नाग पति। [मृगया।

अहेर (प) शिकार, आखेट,

अहेरी (प) शिकारी, बहेलिया।

अह्वेन: (स) देसी शतावर।

अहो अहोवत (स) अव्यय, आश्चर्य, कठिन, अवस्था, अचरज, भाग्य, दुःख, हर्ष, धन।

अहोरात्र (स) दिनरात।

अहं (स) मैं। [उच्चारण।

अह्वन अह्वान (स) पुकार,

अक्ष (स) बहेड़ा वृक्ष, पाशा, जूवा, नेत्र।

अक्ष: (स) एक पैसा भर वजन।

अक्षफल: (स) बहेरा। [वृक्ष।

अक्षयवट (स) प्रयाग का वट

अक्षर (स) वर्ण, जीव, मोक्ष, और ककारादि वर्ण।

अक्षि (स) नयन, नेत्र।

अक्षि: (स) सुनगा।

अक्षीव: (स) बकाइन।

अक्षोट: (स) अखरोट।

अक्षोभ (स) निर्मोह, अमोह, निस्सन्देह, अरोक।

अक्षौहिणी (स) सेनापूर्ण, तिस के विवरण, श्लोक। "नवनाग सहस्राणि नागाच्छत गुणान् रथान। रथाच्छत गुणान अश्वानश्वाच्छत गुणनानरान्॥१॥ दशलक्षदन्ती त्रिगुणोरथगंनवकोटियोध्यादशकोटिवाजी," इति

मुनयोवदन्ति ॥१०॥ स्कन्ध भागवत ४८ अध्याय प्रमाण।

अज्ञ· (स) अज्ञानी।

अज्ञात· (स) बिना जाने।

अज्ञता· (स) मूढ़ता।

आ

आं· (स) उपसर्ग इति, आसमन्ताभाव, आदि, पूर्व, इत्यतदाद।

आ: (प) कष्ट सूचक शब्द।

आ· (स) पर्यन्त, तक (जैसे यहां तक, वहां तक)

आंक· (द) निश्चय।

आंकुरे· (द) अंखुआ।

आइ· (स) जीवन, उमिर।

आकर· (स) रत्नादि स्थान, खानि, ज्योति, शहर, जहां, से रत्न धातु आदि निकलते हैं, कान, (खानि)।

आकार· (स) आकृति·मूरत।

आकर्ण्य· (स) सुनि के, सुत्वा।

आकर्षण· (स) घसावट, बल से खींचलावना, मंत्र विशेष, खेंचना, कशिश।

आकाश· (स) अकाश, शून्य, खाली।

आकाशवल्ली· (स) अमरलती।

आकाङ्क्षन्· (स) चाहता हुआ।

आकाश प्रणिहित भुजम्· (विभाम्) आकाश की ओर बांह उठाए हुए को।

आकिञ्चन· (स) अति दरिद्रता, कङ्गाल, कृपण।

आकुञ्चि· (स) तिरछा, टेढ़ा, बाङ्का मोथा। [क,।

आकुण्ठित· (स) लज्जित, अवा-

आकुल· (स) विकल, पूर्ण भरा हुआ व्याकुल, उदास।

आकुलग्रामचैत्या: (व· दशार्णा:) पक्षियों से भरेहुए हैं रथ्या-वृक्ष जिन के।

आकृति· (स) सूरति, छटा, मूर्त्ति, डौल, आकार, स्वरूप, शरीर।

आक्षेप· (स) किसी के लेख वा कथन में दोष निकालना, परखंडन की युक्ति कहना, तर्ककरना, एतराज करना।

आखण्डल (स) इन्द्र, मघवा, इन्द्रदेवता। [ह, समस्त।

आखर (द) अक्षर, हरफ़, समू

आखु (स) चूहा, मूषा, चोर।

आखुकर्णपर्णी (स) } मूसाकानी।
आखुपर्णी (स) }

आखू (स) मूसा। [शिकार।

आखेट (स) अहेर, मृगया,

आख्य (स) संज्ञा, नाम।

आख्या (स) नाम, पद।

आख्यात (स) कहा हुआ।

आख्यान (स) वृत्तान्त, कथा। विवरण।

आख्येय (स) कहने के योग्य।

आगत (स) आया हुआ।

आगम (स) शास्त्र तान्त्र, भविष्यत, आना।

आगमन (स) आवना, संप्राप्ति, आवाई, आना।

आगर (स) प्रवीण, चतुर, मुख्य, श्रेष्ठ, भवन, घर, मुहज़ुबानी।

आगरि (द) झीलम, बखतर।

आगरी (प) { कोठरी, प्रवीणी, नागरी।

आगस (स) अपराध, पाप।

आगामी (स) आवनेहारा, भावी।

आगार (स) घर, स्थान, गृह।

आगिल (द) होनहार।

आघात (स) चोटलगना, धक्का, पीटना, कूटना।

आघ्राय (स) सूंघ कर।

आङ्गिरस (स) वृहस्पति, जीव।

आचरही (द) करते हैं।

आचरन } (स) व्यवहार, चलन,
आचरण } कर्म्म विधिचलन, करतूत, आचार।

आचमन (स) संध्यादिक में मंत्र पढ़ कर तीन बार थोड़ा थोड़ा जल पीना।

आचार (स) पवित्रता वेदोक्त कर्म्मकरना।

आचार्य (स) यज्ञोपवीत करा के वेद पढ़ानेवाला गुरु।

आचरणी (स) करतूती, आचारी, चलनदार।

आचरहिं (स) करहीं। [ना।

आच्छादन (स) आवरण, ढांक-

आक्षि· (ह्) है, सकारनावाचक ।
आजगव· (स) पिनाक, धनुष ।
आजान· (स) जांघपर्य्यन्त, ठेहुना तक विस्तार ।
आज्ञा· (स) अनुमति, आदेश, इरशाद, हुक्म ।
आज्ञापक· (स) आज्ञा करने वाला, हाकिम, मालिक । [ना ।
आज्ञाभंग· (स) आज्ञा न मान-
आज्य· (स) घृत, चिकनाई, सर्पिः, घी, घीव ।
आटरुष: (स) बाकस ।
आढकी· (स) सुरठी माटी १ रहर २ । [नक़ारा ।
आडम्बर· (स) पाखंड युद्ध का
आहन· ओडन· (स) ढाल ।
आढ्य· (स) पूर्ण, संयुक्त, धनी, धनवान् ।
आतङ्क· (स) भय, पीड़ा, डर ।
आत्मगुप्ता· (स) कमाच्छ ।
आततायी· (स) हत्यारा, डांकू चण्डाल ।
आतप· (स) धूप, ताप, घाम ।
आतपत्र· (स) छत्र ।
आतपहर· (स) चन्द्रमा ।
आतुर· (स) व्याकुल, मोहित, जल्दी, दीन, दुःखित रोगी, लाचार, दुखी ।
आत्म· (स) निज, अपना, स्वयं, देह, मन, ईश ।
आत्मज· (स) पुत्र, रुधिर, काम, बेटा बेटी, संतान औलाद, अपघाती· दो० आत्मज कहिये रुधिर को, आत्मज कहिये काम । आत्मज पुत्र सपुत सो, जय जय सुंदर श्याम ॥ ४८ ॥
आत्मता· (स) स्वरूपज्ञान ।
आत्मन· (स) आप । [घाती ।
आत्महन· आत्महा· [स] आत्म-
आत्मा· (स) देह, मन, बुद्धि, चित्त, निज, जीव, ब्रह्म, अहंकार, धर्म्म, ईश्वर ।
आत्माभिलाष· (स) मन की चाह ।
आत्मवादी·[स] ज्ञानी ।
आददानः (स) लेता हुआ ।

आदम· (फ) मानुष, मनुष, आदि पिता। [इज्जत।
आदर· (स) सम्मान, प्रतिष्ठा,
आदर्श· (स) आदर्शन, दर्पण
निदर्श· अश्मघातशी।
आदान (स) ग्रहण, स्वीकार, लेना। · [आकरिके।
आदाय· (स) ग्रहणकरिके, अत्त·
आदि· (स) पूर्व्व, प्रथम, पहिला, पहिल, सिवाय, मुख्य श्रेष्ठ इत्यादि, और भी।
आदिकवि·(स) बाल्मीकिऋषि
आदित्य· (स) सूर्य्य, दिनकर दिवाकर, बटना।
आदेश· (स) आज्ञा, हुक्म, अनुमति, अभाव, अनादर।
आद्रव (स) अपने जन का दुख आपसहना।
आद्य (स) पहला, प्रथम।
आधर्ष· (स) प्राप्ति, लाभ।
आधान· (स) गर्भ· [आहार।
आधार· (स) अवलम्ब, आश्रय,
आधि, (स) हृदय का दुःख, मन की विथा।
आधिपत्य· (स) ऐश्वर्य्य, स्वामित्व।
आधुनिक (स) नवीन, नया।
आनन्द (स) आल्हाद, खुशी।
आनन्दः (स) जामुन वृक्ष।
आन· आना (प) (फ) {हान, पीढ़, शपथ, और प्रतिज्ञा, वेरा, समय, दोहाई, अन्य, और और सोगंद।
आनक· (स) दमामा बाजा।
आनन (स) मुख, वदन, वेरा, समय, मुह।
आनंदद (स) आनंद दाता।
आप्त· (स) राग द्वेष हित भ्रम शून्य यथार्थ जाननेवाला, यथार्थ उपदेश करनेवाला।
आपत्ति (स) दुःख, तकलीफ।
आपन्नार्त्तिप्रशमन फलाः·, (बि· सम्पादः) दुखियों का पीड़ा का मिटानाहीं है फल जिनका।
आनबो· आनू· (द) लिआवना, लाइयो, लाओ।

आनि· (प) चोढ़, लाइके।

आपः (स) } जल, पानी, अपने [इष्ट।
आब (प) }

आपण· [स] दोकान, हाट,

आपद्दा। आपद्काल, [स] विपत्ति काल, वर्षा, दुख विपत्ति। [पुत्रादि।

आपदा· [स] जलदाता, सन्तान

आपन्· [स] शरणागती।

आपन्न· [स] विपत्ति सहित, प्राप्त, शरण्य, विपत्ति में पड़ा, उद्यम रहित।

आपृच्छस्व· (स) पूछले तू, अज्ञा, लेले तू।

आफूकः (स) अफीम।

आवरण· आवर्ण, [स] अच्छादन, ढाल, अपनेअज्ञानतें अपने स्वरूप ढंपि रह्यो।

आवर्त्त· [स] घुमावट;फिरावट।

आयु· (स) आयुस, उमिर।

आबद्ध· (स) बांधाहुआ।

आबद्धमाला· (वि० बलाका:) मालासी बांधेहुए।

आवली· (प) पंक्ति, पङ्क्ति, सतर अवली। [पकाने का।

आवा· [प] पजावामिट्टी के वस्तु

आवाहन· [स] आह्वान, पुकार। आदर से बोलाना, बुलाना,

आविकः (स) आवजोश।

आविदुग्धः (स) भेड़ी का दूध।

आविष्ट· (स) तत्पर, निवेशित, अस्त, लीन।

आवृत· (स) ढांका, घेरा।

आवृत्ति· (स) उद्धरणी, पर्य्याय।

आभरण· (स) भूषण, अलङ्कार, गहना, आभूषण।

आभा· (स) शोभा, चमक।

आभाषण· (स) कथन, सम्भाषण।

आभासपट· } मयूर।
आभासपद्मोहनी· (स) }

आभीर· (स) गोप, अहीर, भील। [ना।

आभूषण· (स) अलङ्कार, गह-

आभोग· (स) अगला शरीर।

आमय· (स) रोग, कारण, विकार, षड्विकार, बीमारी।

आमर्ष· (स) कोप, क्रोध, डाह।

आमलक: (स) औंला, अंवला, फल, आंवरा।

आमण्ड: (स) सुपेद रेंड।

आमक्षीर: (स) कच्चा दूध।

आमात्य: (स) मंत्री वज़ीर।

आमिष: (स) मांसादि भक्ष्य वस्तु, काम, लोभ, मास।

आमोद: (स) सुगन्ध, आनन्द, हर्ष।

आमोक्ष्यन्ति डालेंगी, फेंकेंगी।

आम्नाय: (स) वेद, आदि शास्त्र, परम्परा।

आमन्द्र: (स) कुछ मन्दी ध्वनि।

आम्वलक आम्वला: (स) औंला वृक्ष।

आम्र: / आम्र: (स) एकहिं वस्तु को दि तीनिवार उच्चार करण, नाम वन निकट सरजू नदी तोर, आमफल, आम का वृक्ष, अम्बाफल।

आम्रकूट: (स) एक पहाड़ का नाम है जिस पर आम के वृक्ष बहुत हैं।

आम्रगन्धहरिद्रा: / आम्रगन्धा: / आम्रगन्धि } आमाहल्दी।

आम्रपल्लव: (स) आम का पत्ता।

आम्रपुष्प: (स) बौंर १ आम का फूल २। [पत्ता।

आम्रप्रपाणक: (स) आम का

आम्रबीजम्: (स) आम का कोइला।

आम्रावर्ती: (स) अंमवट।

आयत: (स) चौड़ा, लम्बा, विशाल, धूप, आधीन, बड़ा।

आयतचैत: (स) जिस के आमने सामने का भुजा तुल्य हो और चारी कोने समकोन हो।

आयतन: (स) स्थान, भवन, ओसार, घर।

आयत्त: (स) नम्र, अधीन, वश्य।

आयस: (स) / आयसी } लोहा।

आयसु: (स) आज्ञा, अनुमति।

आयाम: (स) विस्तार, चौड़ा, धैर्य्य, लम्बा। [यत्न।

आयास: (स) क्लेश, वासना,

आयु: (स) आर्बल, आवर्दा, जीवन काल, उम्र।

आयुत· (स) दशसहस्र, विश्राम।

आयुध· (स) सामान्य हथियार खड्गादि, शस्त्र, अस्त्र शस्त्र, हथियार। [तुम।

आयुष्मन्· (स) बड़ी आयुवाले

आयुनिन्दिधा· (स) मेथी।

आयोधन· (स) युद्ध, संग्राम।

आरकूट: (स) पीतल।

आरग्वध: (स) अमलतास।

आरण· (प) नाम राजा दशरथ की आर नाम एक देश था को साध्य किए ताते प्रशंसित नाम आरण भए, असुर, श्रेष्ठ।

आरण्य· (स) बन, विपिन।

आरण्यकुक्कुट· (स) बन मुर्गा।

आरत· (स) दुःखित, दीन, दुखी, आर्त।

आरति· (प) पीड़ा, अति प्रीति, आर्ति दुःखी।

आरतिहर· (स) विष्णु दुःख हरण, क्लेशनाशक।

आररीति: (स) पीतल।

आरनाल: (स) सिर्का अन्न का।

आराती· (स) बैरी, आराति, शत्रु।

आरव· (प) ओट, अन्तर।

आरम्भ· (स) उद्यम, उपक्रम, प्रारंभ, शुरू, उद्योग, नये काम का चलाना।

आरसी· (प) दर्पण, मकुर।

आराति· (स) बैरी, कण्टक।

आराधन· (स) पूजा, भजन, सेवा, उपासना।

आराध्य· (स) पूजकर।

आराम· (स) वाटिका, उपवन, सुखद, चंगा, चैन,
(फ) सुखदाता, बगीचा, बाग़।

आरुह्य· (स) बैठि के, चढ़ि के, चढ़ कर।

आरूढ़· आरूढ़ा· (स) स्थिर, चढ़ा, चढ़ना, चढ़ा हुआ।

आरो· (द) आघट।

आरेवत: (स) अमलतास।

आरोग्य· (स) रोगरहित।

आरोपित· (स) आच्छादित, ढांका, सौंपा।

आरोह· आरोहण· (स) सीढ़ी, चढ़ाव, चढ़ना।

आरग्वध: (स) अमलतास।

आर्य्य: (स) अड़त।

आर्त्ति· (स) पीड़ा, रोग दुःख।

आर्ज्जव·
आर्जव· } (स) सरल, नरम, कोमल, मनवच कर्म्मते समान व्यापार, करुणा, दया, दयालुता, सीधापन, शुशीतलता।

आर्त्त· (स) पीड़ित, दुःखी, दीन। [कटसरैया।

आर्त्तगल: (स) गुलाबी फूल की

आर्त्तिमञ्जुला· (स) सेवती। गुलाब, कोमल।

आर्द्र· (स) गीला, आला।

आर्द्रक:
आर्द्रिका· } (स) अदरख।

आर्य्य· (स) शिव, कल्याण, प्राप्ति, कुलीन, श्रेष्ठ, पिता, पूज्य, वेद की आज्ञा का पालन करनेवाला।

आर्य्यपुत्र· (स) श्रेष्ठ पुत्र, श्वसुर, पति, गुरु, गुरु पुत्र।

आर्य्या· (स) पार्व्वती, गिरजा, श्रेष्ठा।

आरौ· आरव, (ट) आहट।

आर्य्यावर्त्त· (स) पूर्व समुद्र से ले के पश्चिम समुद्र तक और हिमाचल विंध्याचल का मध्य।

आल· (स)
(प) } वृक्ष विशेष, कियारी, स्थान।

आल: (स) हरताल।

आलक: (स) लाही।

आलम्ब· (स) यज्ञ, मेध, बलिदान। [आसरा।

आलम्बन· (स) सहारा, आधार

आलम्भ· (स) बध करना, मारना। [उत्पन्न हुआ।

आलम्भजात· (स) जो बध से

आलय· (स) घर, स्थान, भवन, गृह, मकान।

आलयगी, पावेगा। [री, थाला।

आलवाल· (प) चबूतरा, किया-

आलस्य· (स) सुस्ती।

आलान· (स) गजबन्ध, बेड़ी।

आलाप· (स) भद्दैः रदुवदन,

स्वर मिलाना।
आलिख्य (स) लिख कर।
आलिङ्गन (स) छाती से लगाना। [गाया हुआ।
आलिङ्गित (स) छाती से ल
आली (स) } सखी, सहेली,
(फ) } पंक्ति, लकीर।
आलु (स) युक्त, सहित, स्थान
आलुप्यते (स) धुंधला होना।
आलूक: (स) आलू औ कन्दा।
आलेख्य (स) चित्र।
आलोक (स) दृष्टि, देखना।
आलोक्य (स) देखिके, तकिके
आव (द) आयुस, उमरि, आयुर्बल
आवलि (स) अवली, पंगति।
आवाहन (स) बुलाना। [ढाल।
आवरण (स) आच्छादन, ओट
आवर्ज्य (स) छोड़कर, फिरा कर, लाटा कर।
आवर्त्त }
आवर्त्तका } (स) भंवर।
आवली (स) पंक्ति।
आवाम् (स) हम दोनों।
आविर्भूत (स) प्रगट हुआ।
आविर्भूत प्रथममुकुला:, (वि० कन्दली:)० पहली कली दिखाई दी है जिन की।
आश (स) वासना, इच्छा, भरोसा।
आशक्त (स) मोहित, लीन, बन्धमान, वशी। [बन्धन।
आशक्ति (स) चाह, मोह,
आशङ्का (स) भय, सन्देह।
आशय (स) अभिप्राय, तात्पर्य्य मतलब, मुराद।
आशा (स) दिग, दिशा, भरोसा, तृष्णा, आसरा, कांचा, उम्मेद। [चय।
आशाबन्ध (स) भरोसा, नि-
आशिस् (स) आशीर्वाद।
आशी (स) सर्प, नाग। [दुआ।
आशीर्वाद (स) आसीस देना,
आशु (स) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी।
आश्चर्य्य (स) अपूर्व अद्भुत, तअज्जुब, अजब।
आश्रम (स) ब्रह्मचर्य्यादिक गार्हस्थ, ब्रह्मचर्य्य, वानप्रस्थ, संन्यास ॥४॥ स्थान, ठौर,

जगह। [वाला।
आश्रमस्थ (स) आश्रम में रहने
आश्रमी (स) ब्रह्मचारी आदि चार
आश्रय (स) शरणागति, आश्रय, आधार, रक्षक, पनाह।
आश्रित / आस्रित {(स) शरणागत, अधीन, अवलंबित, आश्रयुक्त।
आश्चर्यित (सं) अपूर्व।
आश्लिष्ट (स) लगा हुआ।
आश्लिष्टसानुम् (वि मेघम्) शिखर पर लगा हुआ।
आश्लेष (स) मिलना। [हुआ।
आश्वसत् (स) ढांड़स देता
आश्वसन्त्यः (स) प्रफुल्लित चित्त को, ढाडस पाईहुई को।
आश्वास्य (स) ढांडस देकर।
आश्विन (स) मास विशेष, कुवार।
आसक्त (स) निविष्ट, अनुरक्त, मग्न, अतिलग्न, तत्पर, मशगूल। [अनुराग।
आसक्ति (स) निशक, स्नेह,
आसन (स) बैठकी, चौकी, पीढ़ा, बैठने की वस्तु, वस्त्र, चटाई।
आसन: (स) आसन वृक्ष।
आसन्न (स) निकट।
आसनविवरण (स) पद्मासन, वीरासन, गरुड़ासन, भद्रासन, स्वस्तिकासन, दृढ़ासन, सोपाश्रयासन, तृणस्कासन, काष्ठासन, मयूरासन, व्याघ्रासन, हाथी आसन, समद्वान, अभयसुख, इच्छासुख, इत्यादि।
आसव आसवमय (स) मदिरा मद, दारू। [हीन।
आसा बसन (स) नंगा, तृष्णा
आसाद्यत् (स) प्राप्त करना।
आसार, (स) मूसल धार मेह।
आसारप्रशमितवनोपप्लवम्, (वि त्वाम्) मूसलधार मेंह से मिटाई है बन की पीड़ा जिसने।
आसीन (स) स्थिर बैठा हुआ।
आसुरः (स) काला नोन।
आस्कन्दन (स) युद्ध, संग्राम।

आश्वि· (स) सत्कारवाचक है।
आस्तिक· (स) ईश्वरवादी, साधु।
आसेवन्ते· (स) सेवन करते हैं।
आस्य· (स) मुख, बदन।
आस्वाद· (स) स्वाद।
आसु· (स) आशु, जल्दी।
आंक· (स) निश्चय, अंक।
आंकुर· (स) अंकुर, अंखुआ।
आह· (स) वह कहता है।
आहत· (स) पीटा हुआ, बजायाहुआ।
आहव· (स) युद्ध, समर।
आहा· (प) खेद सूचक शब्द।
आहार· (स) भोजन, खाना।
आहि· (प) है, खेद युक्त वचन
आहु· (स) वे कहते हैं।
आहुति· (स) आवाक्य, होम की वस्तु। [निन्द।
आह्लाद· (स) हर्ष, उल्लास, आ·
आह्वय· (स) चेम वचन।
आह्वान· (स) पुकार, आवाहन।
आक्षिपत· (स) पकड़ता हुआ, खींचताहुआ जैसे कपड़ेको
आक्षेप· (स) दुर्व्वचन, निन्दा।
आच्छादन· (स) मृगया, शिकार।

इ

इक· (स) स्मरण, एक।
इकअंग· (प) एकपक्षरा, अंग, एक पक्ष।
इङ्ग· इङ्गित· (स) गति, लाभ, भौं फिरने आदि की चेष्टा।
इङ्गुदि· (स) इगुनहचा।
इच्छा· (स) वांछा, ख्वाहिश, चाह, अभिलाषा।
इच्छामि· (स) चाहता हूं मैं।
इच्छित· (स) वांछित, चाहत, चाहा गया।
इज्जत· (स) इज्जर। [भूमि।
इड़ा· (स) सरस्वती, भूदेवता,
इड़े· (स) अस्तुति। [दूर्हा।
इत· (स) स्वर वाचक अव्यय,
इतर· (स) छोटा, लघु, कनिष्ठ, अन्य, अधम, नीच, और भिन्न, कादर।
इतराई· (स) ऐंठ के चलना। इतराना।
इतराज· (द) नाराज़, विमुख्य, नाखुश। [ठत।
इतराति· (प) नितराति, अंह·

इत्वरी (स) भ्रष्ट स्त्री ।

इति (स) समीप बोधक शब्द, एव, षट उपाधि यथा, हेतु, प्रकरण, आदि, समाप्ति, पूर्त्ति, तमाम, इस प्रकार, प्रस्ताव, प्रकाश, समाप्त॥श्लोक॥ अति सृष्टि रथा दृष्टिर्भूष का शान्भा शुका:॥ अत्वा: शव्यास्य गा जान: षड़े तिइतय: स्मृता: ॥ १ ॥　　[देश ।

इतिह (द) परम्परा का उप-

इतिहास (स) कथा, प्राचीन, वृत्तान्त, पूर्ववृत्तान्त, जैसे महाभारत आदि ।

इत्थं (स) ऐसो प्रकार सों, ऐसा, अनभाव विशेष कि ओर को ओरसे उपचार । कारण, नकल, खेल, लीला इस भांति ।

इत्थम्भूत (स) इस भांति हुआ ।

इदं (स) यह सामने, प्रत्यक्ष ।

इदम् (स) यह ।

इदमित्थं (अ) यह अइसो प्रकार, एको हेतु लीला, ऐसे ही यह ऐसा ही है ।

इदानीं (स) अबहिं, एहबेर ।

इन (स) सूर्य्य ।　　[कमला ।

इन्दिरा इन्दी (स) लक्ष्मी,

इन्दीवर (स) लक्ष्मीपति, श्याम, कमल ।　　[वर ।

इन्दीवरी (स) पकृाही, सता-

इन्दु (स) चन्द्रमा, शशी, कपूर ।

इन्दुप्रिया [स] चन्द्रकान्तमणि

इन्दुर (स) मूषा, चूहा ।

इन्दुलग्नेमिहिस्ता [वि० या] चन्द्रमा में लगी हैं तरङ्ग रूपी हाथ जिस के ।

इन्दो: [स] चन्द्रमा का ।

इन्द्र (स) स्वर्गपति, बासव, ईश्वर, तथा, देवताओं का राजा, पूर्वदिशा का स्वामी ।

इन्द्रचाप [स] इन्द्रधनुष ।

इन्द्रताल इन्द्रजाल (स) बाजी

गरी, बाज़ीगर।

इन्द्रदारु· (स) देवदार।

इन्द्रद्रु· (स) कहुआ वृच।

इन्द्रजीत· (स) मेघनाद।

इन्द्री· (स) इन्द्रियां, नेत्रादि।

इन्द्रनील· (स) नीलममणि। नीलम, मणिविशेष।

इन्द्रयव· (स) इंद्रजव।

इन्द्रवारुणी· (स) इंदारुन।

इन्द्राह्वा· (स) इंद्रजव।

इन्द्राव· [स] ऋषभक इस की जगह में विलारू कंद देवें।

इन्द्रियद्वार·(स)नेत्रादि की गोलक।

इन्द्रधनुष· (स) पनघोखा, आकाश उदित।

इन्द्रा· (स) इन्द्राणी, शची।

इन्द्रावरज (स) वामन, विष्णु।

इन्द्रिय· (स) कान, नाक, आंख, जिह्वा, त्वचा, यह पांच ज्ञान इन्द्रिय हैं और लिंग, गुदा, हाथ, पांव, वाणी, यह पांच कर्मेन्द्रिय हैं मन, नेत्रादि, ग्यारवीं इन्द्रिय है।

इन्द्रोयव: (स) इंद्रयव।

इन्द्रियद्वार· (स) नेत्रादि की गोलक।

इन्द्रारि· (स) दैत्य।

इन्द्रियवर (स) काला कमल।

इन्धन· (स) जलावन, लकड़ी, जलाने की लकड़ी, ईन्धन।

इप्सत इप्सु· (स) वांछित, मानसित, लोभी।

इभ· (स) हाथी, गज।

इभदन्त· (स) गणेश, गणपति।

इभ्य· (स) धनवान भूमि वाला।

इम· (स) तुल्य, सादृश्य, यह।

इर· (स) कम्पमानक, मोहितकार। [मद्य,जल।

इरा· (स) मदिरा, वाणी, भाषा

इलशा· (स). मत्स्य विशेष, इलीशा।

इला· [स] तोय, उमा, रसना, कन्या वैवस्वतमनु की जो श्री वशिष्ट जू के वचन ते ऐलपूरुरवा नामे पुत्र रूप भयो। इति ८ स्कन्ध ४ अध्याय भागवत समाप्त।

इल्लिश: } (स) हिलसा
इल्लीश: } मछली।

इव· (स) तुल्य, ऐसा, जैसे, सदृश, बराबर।

इष· (स) क्वार के महीना।

इषु· (स) बाण, इच्छा।

इष्ट· (स) वल्लभ, सज्जन, पूज्य, मानित, चाहा हुआ, मन भाया (बहुवचन इष्टान)

इष्टकापथकम्· [स] लामज्जक।

इष्टा· [स] वल्लभा, प्रिया।

इष्टदेव· [स] पूज्य देवता।

इष्टदेवता· [स] कुलदेवता।

इह· [स] [अव्यय] एही विषे, यह में, यहां, इस लोक में, अत्र, अस्मिन्।

इक्षुः· [स] ऊख, केतारी।

इक्षुगन्धा· [स] तालमखाना १ कांसी २ विदारकंद ३।

इक्षुगन्धिका· [स] हर्चिकार।

इक्षुवालिका· [स] तालमखाना

इक्षुवेष्टन· [स] रमसकी।

इक्षुर· [स] तालमखाना।

इष्यमाण· (स) दीखता हुआ।

इक्षुरस· [स] चीनी आदि के-तारी के रस, कांसी।

इक्ष्वाकु· [स] तितलौका, एक राजा का नाम।

इक्ष्वालिका· [स] कुश।

इटचर· [स] सांढ।

ई

ईड्य· [स] स्तुति योग्य, पूज्य।

ईंढा· [स] स्वांस खींचने की नाड़ी।

ईति· [स] अति वर्षादि उपाधि षट् प्रकार अन्न खेती के विनाश कारक उपद्रव।

ईदृश· [स] ऐसा।

ईन्धन· [स] इन्धन, जलावन, लकड़ी, जलाने की लकड़ी।

ईप्सित· ईप्सु· [स] वांछित, मानसित, चाहा हुआ।

ईयसु· [स] अतिशय, बहुत।

ईर्ष्या· } [स] द्वेष, चोढ़, राग, द्रोह, हिंसका, शत्रुता
ईर्षा· } वेर, पराये ऐश्वर्य का, न देख सकना।

ईरषा· [स] परहंस।

ईरषण· [स] डाह।

ईश· ईश्वर· [स] ऐश्वर्य्य, त्रिदेवा,

प्रभु, स्वामी, राजा, सामर्थ, शिव।

ईशान [स] शिव, ईश्वर, पूर्व उत्तरकोण, महादेव।

ईशिता [स] नामसिद्धि, प्रधानता, महत्व।

ईश्वर [स] परमात्मा, ऐश्वर्यवान, स्वामी, राजा, परमेश्वर, शिव।

ईश्वर स्वरूप [स] ऐश्वर्य, माधुर्य, सौन्दर्य ॥ ३ ॥

ईश्वरी [स] त्रिवेदी, वाणी, लक्ष्मी, पार्वती दुर्गा ॥३॥

ईषण ईषना } [स] लालसा,
ईर्षणा } श्रद्धा, वासना, इच्छा, तीन प्रकार, स्त्री, पुत्र, धन।

ईषत् ईषद् [स] थोड़ा, कमतर, अल्प।

ईषा [स] दण्ड, लाठी।

ईष्ठ [स] अतिशय, बहुत।

ईमत्व [स] ऐश्वर्य।

ईह ईहा [स] इन्द्रिय की चेष्टा, इच्छा, यत्न।

ईक्षण [स] नेत्र, चक्षु, देवता।

उ

उ [स] शिवसंज्ञा, हृदय।

उकठना [प] सूखना। [ठना

उकठि [प] उकठाकाठ, उका-

उकसहि [प] ऊंचेहोहिं, ऊंचे होते हैं, उकसना।

उक्त [स] कथित, कहा, कहागया, कहाहुआ, मज़कूर।

उक्ति [स] वचन, कथन, भाषा, कही, कहना, वाक्य।

उग्र [स] कठोर, चोख, भयानक, तेज़, क्रोधी, करड़ा, तीक्ष्ण, श्रेष्ठ, बड़ा, रुद्र।

उग्रशोक (स) भारी दुःख।

उच्छ्व [स] उभार, निर्वाह, शरण।

उघरे (द) खुले। [शीघ्र।

उचङ्ग [प] उताइल, व्याकुल,

उचाटु } (द) उच्चाटन, उच-
उचाटु } टना।

उचारि [द] कहि।

उच्चटा [स] सुपेद, कर्जनो।

उच्चारण [स] बोलन, कथन, कहन, तलफ़्फ़ुज़।

उचित· (स) योग्य, मुनासिब।

उच्चावच· (स) नाना प्रकार।

उच्च· उच्चै, (स) ऊंचा, बड़ा।

उच्चैर्भुजतरु· (वि॰ बनम्) ऊंचे वृक्ष ही हैं भुजा जिसको।

उच्चैश्रवा· (स) इन्द्र का घोड़ा।

उच्छङ्ग· उछंग· (स) गोदी, कोर, तट, गोदी, उत्सङ्ग।

उछंखला· (स) उदासी, त्यागी।

उच्छिष्ट· (स) खा कर बचा हुआ, जूंठा।

उच्छिलीन्ध्र· (स) कठफुला, कुकरमुत्ता।

उच्छिलीन्ध्रातत्राम्· (वि॰ महीम्) कठफुला है छत्र जिस का।

उच्छून· (स) सूजा हुआ।

उच्छ्राय· (स) उंचाई, चोटी।

उच्छ्वसित· (स) खुलाहुआ, खास लेता हुआ, प्रफुल्लित।

उच्छ्वास· (स) स्वास।

उच्छ्वासित· (स) खास लेते लेते थकाहुआ। [भराहुआ।

उच्छ्वासिन्· (स) ऊंची खासों से

उज्जयनी. उज्जैनी· {(प) उज्जयन नगरी, उज्जयन एक नगर का नाम।

उजरूआ· (द) रोग कुजन, सपेद कोढ़।

उजागर· (स) प्रसिद्ध, उज्ज्वल, यशस्वी, शोभित, नारा।

उज्ज्वल· (स) सफ़ेद।

उडु· (स) बिहङ्ग, ताराबर्त्तक, तारागण, नक्षत्र। [गण।

उडुगण· (स) तारागण, नक्षत्र

उडुप· (स) नौका, चन्द्रमा, गरुड़, बराह।

उडुम्बर· (स) गूलर। [उत्तंग।

उतङ्ग· (स) दीप, दिया, ऊंचा,

उतराई· (द) खेवाई, उतराई।

उताइल· (प) उताइल, जलद।

उत· (स) ऊंचा, ऊपर, वितर्क, वहां, दूर।

उत्कट: (स) तण।

उत्क· (स) चावाभराहुआ (बहुवचन उत्का:)

उत्कण्ठ· उत्कण्ठा· } (स) ऊंचराग, उमंग, अभिलाष, खेद, चाव, प्रेम।

उत्कण्ठित· (स) चाव में दुखी ।

उत्कण्ठाविरचितपदम्· (वि० इदम्) चाव में रचे गए हैं पद जिस के ।

उत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया· (वि० सा) चाव से फूला है हृदय जिस का ।

उत्कर्ष· } (अ) बड़ाई, श्रेष्ठपन,
उत्तकर्ष· } उत्तम, मुख्य ।

उत्कम्प· (स) कांपना ।

उत्कषण· (स) हल से जोतना, उपाड़ना ।

उत्कृष्ट· (स) उत्तम, श्रेष्ठ, उत्कर्ष, विशिष्ट, अतिशय ।

उत्क्रान्त· (स) विजय किया, जीता हुआ ।

उत्खात· (स) खोदा हुआ ।

उत्तंस· (स) मटुक, भूषण, शिरोभूषण ।

उत्तम· (स) श्रेष्ठ, प्रधान, बहुत अच्छा, सुन्दर ।

उत्तमगन्धा· (स) चमेली पुष्प ।

उत्तमांग· (स) मस्तक ।

उत्तम स्त्री सहाया: (वि· यक्ष) सुन्दर स्त्री हैं साथ जिसके ।

उत्तान· (स) (प) { शीघ्र, आशु, चित्त, सन्मुख, ऊंच, उथला ऊंच ।

उत्तर· उत्तराशा· (स) प्रतिवाक्य, जवाब, उदीची दिशा ।

उत्तरायन· (स) मकर की संक्रांति से मिथुन की संक्रांति तक ।

उत्तरोत्तर· (स) प्रति वाक्योत्तर, जवाब का जवाब ।

उत्थाप्य· (स) उठाकर, जगाकर ।

उत्थित· (स) उठाहुआ, जागाहुआ ।

उत्तानपत्रक: (स) लाल रेंड़ ।

उत्तीर्य· (स) उतर कर ।

उत्पत· (स) ऊपर को उठ तू ।

उत्पत्ति· उत्पन्न· (स) जन्म, जनम, अवतार, पैदायश, पैदा हुआ ।

उत्पल· (स) कमल, कांज, कोंई, भूषण, मणि, नीलाकमल ।

उत्पल· उत्पलम्· (स) कमल १ कर्णिकार २ कूट ।

उत्फुल्ल· (स) फुला हुआ।
उतपत· (स) ऊपर को उठ तू।
उत्पश्यामि· (स) सोचता हूं मैं।
उत्पाद्य· (स) उत्पन्न करके।
उत्पीड़· (स) दबा कर निका-
लाहुआ।
उद्योग· (स) युक्त, हर्ष, युक्ति।
उतसङ्ग· (स) गोद, कोख, कोर।
उत्शीसा· (स) शिरहणी, उ-
शीसा।
उत्सङ्ग· (स) गोद।
उत्सर्ग· (स) निकलना।
उत्सर्ग· (स) अर्पण करण।
उत्पात· }
उतपात· } उपद्रव, अकस्मात।
उतअर्जन· (स) दान।
उत्सव· (स) उछाह, यज्ञ, पर्व,
अधीरज, आनन्द, आल्-
हाद जनक, व्यापार, वि
वाहादि, खुशी। [नष्ट।
उत्साद्यन्त· (स) लुप्त, लोप, भ्रष्ट,
उत्साह· उतसाह· (स) उद्योग,
यत्न, हर्ष, आनन्द, उद्यम,
असाध्य के साधन की
वासना।
उत्सुक· (स) चाह भराहुआ।
उत्सेक· (स) बहुतात, बहुलता,
बढ़ती। [और उठाना।
उत्क्षेप· (स) फेंकना, ऊपर को
उत्साहवर्द्धन· (स) वीररस।
उदकी· (स) ऋतुयुक्त स्त्री।
उद· उदक· (स) जल, नीर,
पानी, उत्तरदिशा, सलिल
पाथा।
उदकम· (स) पानी।
उदकीर्य· (स) अरार।
उदगारशोधन· (स) श्याहजीरा।
उदच्छा· (स) बहुत पानी मिला
मठा दही का।
उदघट· उदघाटी· (स) प्रगटता,
ख्यात, मिलाप, वा उद-
याचल की घाटी।
उदङ्मुख· (स) ऊपर और
मुख है जिस का।
उदच्· उदीची· (स) उत्तरदिशा·
उदन्त· (स) संदेशा।
उद्यान· (स) उद्योग। [गर।
उदधि· (स) जलधि, समुद्र, सा-

उदम (स) तत्र।

उद्भव (स) उद्भव, उत्पत्ति।

उदय (स) उठना, वृद्धि, उन्नति, उत्पत्ति।

उदधिश्रवन (स) पांगा नोन।

उदयगिरि (स) उदयाचल।

उदयन (स) नाम है एक राजा का अर्थात् वत्सराज।

उदयनकथाकोविदग्रामवृद्धाम् (वि० अवन्तीम्) उदयन की कथाओं का तत्व जानने वालों के समूह करके बड़ी जो है। [य, अंतस।

उदर (स) पेट, जठर, कुंडी, कुहर-

उदरवृद्धि (स) जलोदर रोग विशेष।

उदस्थान (स) समुद्र, रत्नाकर।

उदस्वी (स) दही, पानी, बराबर मिला मट्ठा।

उदार (स) उज्ज्वल, दाता, निर्मोह, दानी, बड़ा, प्रसन्न, हर्ष, समूह, अति समूह, फय्याज़।

उदाहरण (स) दृष्टान्त, मिसाल

उदाहार (स) दृष्टान्त।

उदान (स) कंठ की वायु।

उद्दाल: (स) बनकोदो।

उदास (स) बेपरवाही।

उदासी उदासीन (स) शत्रु मित्र भावरहित जन, संन्यासी, साधु, सज्जन, न शत्रु न मित्र।

उदित (स) उदय, आविर्भूत।

उदित: (स) कास।

उदीची (स) सुगन्धवाला।

उदपान (स) कूप।

उदुम्बर (स) ऊमर, गूलर, हुच, तामा धातु।

उदुम्बरपर्णी (स) तामाजड़ी।

उद्गातुम् (स) गाने को।

उद्गातुकामा (स) गाने की इच्छा मान स्त्री।

उद्गार (स) ढकार, वमन, उफान, ओकाई, उबाल।

उद्गारिन् (स) उगलताहुआ जैसे पानी को अथवा भाप को।

उद्गीर्ण (स) उगला हुआ।

उद्गृहीत (स) ऊपर को उठा हुआ।

उद्गृहीतालकान्ताः, (वि० ब-निताः) ऊपर को उठाए हैं अलकों के छोर जिन्हों ने।

उद्घट्टन (स) घिसना, रगड़ना।

उद्दाम (स) बेमर्य्याद, खुले बन्धन। [हुआ।

उद्दिष्ट (स) कहा हुआ दिखलाया

उद्धूत (स) हिलाया हुआ, भड़काया हुआ।

उद्धूतपापाः, (वि० मद्द्वानाः) हिल गये हैं अथवा दूर हुए हैं पाप जिन्ह के।

उद्यत (स) तैय्यार, उपस्थित।

उद्दीपन (स) प्रज्वन, प्रकाशन।

उद्रेक (स) बढ़ाइन।

उद्वेग } उचाट, छटपटी, भय
उद्वेग } उत्कण्ठा, क्षोभ।

उद्भव (स) उत्पत्ति, जनम।

उद्भिद्जल (स) जमीन फोड़ कर जो पानी का धारा होय।

उद्भिज (स) वृक्षादिक जो पृथ्वी तोड़ कर उत्पन्न होँ।

उद्यम (स) उद्योग, उपाय, व्यापार। [हेतु।

उद्यान (स) उपवन, बागीचा,

उद्योग (स) यत्न, उपाय, तद्-बीर।

उद्वर्त्तन (स) उछलना।

उद्वह (स) पुत्र।

उद्वेष्टनीय (स) खोलने योग्य।

उद्वाह (स) पाणिग्रहण, बि-वाह, ब्याह। [उत्कंठा।

उद्वेग (स) व्याकुलता, भय,

उन्नत (स) ऊंचा, ऊपर।

उद्धार (स) मुक्ति।

उन्नति (स) वृद्धि, तरक्की।

उन्निद्र (स) जाती रही है नींद जिस की।

उन्मत्त (स) विक्षिप्त, बौराह, मतवाला, पागल, धतूरा।

उन्माद (स) चित्तविभ्रम, पा-गलपन, चित्त का विक्षिप्त, होना। [है जिस का।

उन्मुख (स) ऊपर की ओर मुख

उन्मेष (स) बुद्धि, ज्ञान, पलक, उद्भव, आंख का खोड़ा

चमकना।

उप· उप्· (स) उपसर्ग, समीप, न्यून, बनाया।

उपकण्ठ· (स) तट, तीर।

उपकथा· (स) खबरसबर, कहानी बनाई। झारा।

उपकार· (स) सहाय, मदद, स

उपकारक (स) उपकारी, सहायक, मददगार।

उपकाञ्चिका (स) स्याह जीरा।

उपकुञ्चिका (स) चवघड़ा इलायची १ मगरैला २।

उपकुञ्ची (स) मगरैला।

उपकुल्या (स) पीपर।

उपकर्तुम्, उपकार करने को सहारा देने को।

उपगत, (स) मिलाहुआ, पास पहुंचा हुआ।

उपगम, (स) पास पहुंचना।

उपगूढ़, (स) छातीसे लगाना।

उपचार· (स) प्रभुत, हिम्मत युक्ति, कथन, उपाय सेवा, मन्त्र प्रयोग।

उपचित, (स) इकट्ठा, बढ़ा हुआ, रचा हुआ।

उपचितरसाः, (वि॰ ती) बढ़ी हुई अभिलाषा वाले।

उपचितवलिम्· (वि॰ बरयन्यासम्) की गई है पूजा जिस की। [पङ्कवाला।

उपचितवपुः, (वि॰म) बढ़े हुए

उपजिगमिषु, (स) पास जाने का इच्छा मान।

उपदंश· (स) आतशक रोग।

उपदेश· (स) हित कथन, नसिहत, सिखाना।

उपद्रव· (स) उपाधि, उत्पात, फसाद। [झड़ी।

उपचिता· (स) बड़ा तामा

उपतट, (स) किनारा, तट।

उपाय, (स) सेवा, मन्त्र प्रयोग।

उपधातु (स) समीप धातु, लघु धातु, बनाया धातु, सोना मक्खी, रूपा मक्खी, तुतुहिया, कांसा, पीतल, सेंदुर, शिलाजित, आदि।

उपधान· (स) शिरहनी, तकिया।

उपनिषद्· (स) वेदान्त शास्त्र,

वेद का रहस्य भाग।

उपपातक (स) लघुपाप, महापाप, छोटेपाप।

उपपादन (स) सम्पादन, संग्रह, सञ्चय, बनाया बन।

उपपाद्य (स) किये जाने के योग्य।

उपप्लव (स) दुंःख, पीड़ा।

उपवन (स) समीपबन, लघुबन, वाटिका, मनबिश्राम के निमित्त बन, बिहार करने की वाटिका, बाग़ीचा।

उपबर्ह उपबर्हना (स) शिरहणी, वालिश, राजाविशेष, तकिया, उपधान।

उपवास } (स) उपास, निर-
उपवासा } हार भूखारहना।

उपविष (स) अकवन, मुठरिया सीज, करिहारी, कमइल, धतूरा, आदि उपविष है। [निल।

उपवीत (स) यज्ञोपवीत, ज।

उपभोग (स) विषयों का मुखास्वादन।

उपमा, (स) दृष्टान्त, पटतर।

उपविषा (स) अतीस।

उपमान (स) सादृश्य।

उपमेय (स) उपमा के योग्य।

उपयम उपयमन (स) पाणि ग्रहण, विवाह।

उपयुज्य (स) लेकर, पोकर।

उपरत्न: (स) कांच, फिटकिरिया पत्थर, शीप, शंख, आदि।

उपरति (स) शान्ति, विरती, परमानन्दा, तीसरा षट सम्पति जो अन्तर वाह्य उभय इन्द्रियों का वेग एकरस, थीर रहना।

उपरस: (स) गन्धक, सिंगरिफ, अबरख, हरताल, मयनशिल, सुरमा, सोहागा, चुम्बक, फिटकिरी, खरी, खपरिया, संगजराहत, गेरू, कासीस, कौड़ी, बोल, बालू, कोहवी, मुरठी, मांटी, संख, पिंडोड़ी, यह

उपरस हैं।

उपराग· (स) } सूर्यादि ग्रह-
उपरागा· (प) } ण, अङ्गीकार
उलहना, दू
षण, गहन, चन्द्र निवृत्ति।

उपराजा· (स) उपजाया, उप-
राजना। [त्य. त्याग।

उपराम· (स) परिणाम, बैरा·

उपरि· (स) ऊपर।

उपरोध· (स) सहायता, गौरव।

उपर्णा· (स) एकपट्टा वस्त्र,
अंचला।

उपल· (स) जलवगोरीं, पत्थ-
रमकाशी, शैल, गिरी,
पर्वत, शिलासमान, पत्थर,
पाथर।

उपलब्धि· (स) बुद्धि, ज्ञान।

उपलब्ध· (स) ज्ञान।

उपवन· (स) बगीचा।

उपस्थ· (स) लिङ्गइन्द्री, स्त्री वा
पुरुष चिन्ह।

उपस्थित· (स) मौजूद, हाजिरा

उपस्पर्श· (स) आचमन। [द्रव।

उपसर्ग· (स) अचानक, उप-

उपहार· (स) उपात, भोजन
वस्तु, सत्कार, भेंट, पूजा,
नैवेद्य, नज़र।

उपहास· (स) चहुल, ठट्ठा,
हास्य, परिहास, हंसी।

उपाटो, (प) उखाड़ना, उखा-
ड़ के उपाटना।

उपाद· उपादय· (स) ग्रहण,
संग्रह, अङ्गीकार।

उपादान· (स) कारण, विशेष,
ग्रहण। [प्रेरण।

उपाध· (स) उपद्रव, अन्यास,

उपाध्याय· (स) जो कोई वेद,
और वेदांग को पढ़ावे,
ऐसा गुरु, पढ़ाने वाला।

उपाधि· (स) धर्म्म ध्यान, छल,
पदवी, उद्धारण, समीप
प्राप्ति, कपट, माया, उपद्रव,

उपाधी· (स) अन्यायी, अधर्म्मी,
समीपप्राप्ति, बुद्धि, प्रेरक,
उपद्रवी, उद्धारण, उद्धार-
करण, तारण।

उपानत· उपानह· (स) पनही,
पादुका, जूती।

उपान्त· (स) निकट, तट।

उपाय· (स) यत्न, तद्वीर।

उपायन· (स) भेंटी, नज़राना, उपहार।

उपाया· (स) उपजाया।

उपाये· (स) उत्पन्न किया।

उपारे· (द) उखारि, उपारना।

उपासा· (द) उपवास, भूखा रहना, फांका।

उपासक· (स) उपासना करने वाले, भक्त, पूजाकरने वाला, सेवक। [सेवा।

उपासन· उपासना· (स) भक्ति,

उपेक्ष· उपेक्षा· (स) त्यक्त, त्याग, अनादर, धोखा।

उपेक्षित· (स) त्यागता है।

उपेंद्र· (स) विष्णु।

उपेयु· (स) उदय।

उपोदिका· (स) पाइसाग।

उबटन· उबटि· (द) उगटन, मंजन, बंटना।

उबरे· (स) उबरगया, बचगया।

उबारा· (द) बचाया।

उभ· (स) युग्म, द्वि, दुई।

उभय· (स) } द्वि, दो, दोनों,
उभौ· (स) } परस्पर।

उभयपञ्चमूल· (स) दोनों पंच-मूल। [वृत्त।

उमरि· ऊमरि· (स) गूलरि

उमा· (स) } पार्व्वती, शिव-
उमानी· (प) } पत्नी, शिवमा-
} निता, शुद्ध भा-
रत जिज्ञासु, जीवसंज्ञा, शिव की स्त्री।

उमापति· (स) शिव।

उम्बो· (स) गोहुम यव के बाल का होरहा।

उयेउ· (द) उदयभएउ, प्रगटेउ, उगना, उदयभया।

उर· उरू· (स) हृदय, गोदी, छाती।

उरग· (स) सर्प्प, भुजङ्ग, कीड़ा, सांप, व्याल, हरि, सीसा धातु।

उरगाद· उरगाराति· (स) } गरुड़
उरंगारि· उरगारि· (द) } पक्षी,
} विष्णु-
वाहन।

उरङ्ग· (द) सर्प्प, नाग, भुजङ्ग।

उरण· (द) भेंड़ा।

उरभ्रः (स) भेंड़ा।

उरस्· (स) छाती, कलेजा।

उरस्मण्डन· (स) स्तन, चूंच।

उरालय· (स) हृदयवासी, हृदय रूपी घर।

उरीकृत· (स) अंगीकार।

उरु· (स) महत्व, विशेष, आंव, ऊंचा, अधिक।

उरुवुक· (स) लाल रेंड़।

उरोज· (स) स्तन, चूंच।

उर्ज· (स) कातिक।

उर्कील· (स) बहुकाल, बहुस- मय। [लूता।

उर्णनाभ· (स) मकरीकीट,

उर्व्वशी· (स) अप्सरा, सुरवेश्या, स्वर्गवेश्या। [पृथ्वी।

उर्व्वी· (स) धरती, मेदिनी, भू,

उर्व्वीजा· उर्विजा· (स) सीता, जानकी, जनककी पोस पुत्री जिससे श्री रामचन्द्र का विवाह हुआ।

उर्म्मिला· (स) राजा जनक की जाता पुत्री जासें श्रीलक्ष्मण को बिवाह, सीता की ल- घुता भगिनी।

उलीच· उलीचना· (प) वारिवहिः क्षत, उपछना, फेंकनाजल, उड़ेलना।

उलूक· उल्लूक· (स) उल्लू, पेचा पक्षी, उलुवा, घुघुवा, उलु- वा पक्षी, जो दिन में नहीं देखता।

उलूखलक· (स) गुगुल।

उलपी· (स) मान, मत्स्य, मछ।

उल्का· (स) चिनगारी, पतङ्ग।

उल्काचयितचमरीवालभारः, (वि॰ देवाग्निः) चिनगा- रियों से जला दिये हैं चम- री मृगों की पूछ के बाल जिस में।

उल्लङ्घित· (स) उलांघा हुआ।

उल्लास· (स) हुलास, आनन्द, प्रसन्न।

उल्वण· (स) गर्भावेष्टन, जाली।

उशना· (स) शुक्रदेवता।

उशीर· (स) खसखस।

उशीस · (प) शिरहनी, बालिश।

उषपा· (स) लघुपीपली।

उषर्बुध· (स) अग्नि, अनल।

उष्ट्र (स) ऊंट।

उष्मा (स) तेज, घाम, उग्र, गर्भ, गरमी का मौसम, तत्ता।

उसास (प) उर्द्धश्वास।

उसीसा (प) शिरहनी, तकिया।

उह ऊह (स) वितर्क, तर्क, ऊहा।

उहार (द) ओंहार, परदा।

ऊ

ऊमरि (द) उदुम्बर, गूलर का पेड़।

ऊना (द) ऊन, कमती थोड़ा।

ऊग्रगंधा (स) लहसुन १ कुलंजन २ अजवाइन ३।

ऊग्रगन्धा }
ऊग्रा } (स) बच।

ऊड्रपुष्प (स) ओड़हुल।

ऊण (स) पशम, रोवां।

ऊद्दाल (स) बहुवार।

ऊद्वेग (स) सोपारी।

ऊन (स) पशम, रोवां, लघु, कमती, घाट।

ऊपमा (स) पटतर, प्रमाण।

ऊर्ण (स) पशम, रोवां।

ऊर्णनाभ (स) भृङ्गीकीट।

ऊर्णायुः (स) भेंड़ा।

ऊरु (स) जांघ।

ऊर्द्ध (स) ऊपर को, आगे को।

ऊर्मि }
ऊर्मी } जल की तरंग, लहर।

ऊर्म्मि (स) लहरि, ऊर्ध, ढेऊ, हल्का।

ऊर्द्ध (स) उत्कृष्ट, ऊंचा, ऊपर।

ऊष (स) प्रातःकाल।

ऊषण ऊषणः (स) सोंठ १ पीपल २ गोलमरिच ३ पिपरामूल ४ चाभ ५ चीता ६।

ऊष्ट्र (स) ऊंट।

ऊष्ट्री (स) ऊंटिन।

ऊटू (स) ऊंट।

ऊष्ट्रीदुग्ध (स) ऊंटिन का दूध।

ऊसर (प) मरोभूमि।

ऋ

ऋक् ऋग् (स) वेद, विशेष, प्रथमवेद।

ऋंज (स) कोमल।

ऋजु (स) लम्बा, विस्तार,

शोभा, सरल, सीधा।
ऋण (स) कर्ज, मार, उधार।
ऋतम् (स) सत्य, सांच।
ऋतु (स) बसंत, ग्रीष्म, बर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर, दो दो मास विशेष, स्त्रियों का रजोधर्म, स्त्रीधर्म होना। [वाली स्त्री।
ऋतुमती (स) रजस्वला, हैवा
ऋद्ध (द) बृद्धि।
ऋतुराज (स) बसन्त काल, बसंत ऋतु मीन, मेष, दो मास।
ऋत्विज (स) यज्ञकरनेवाला।
ऋते (स) बिदून, भिन्न, बिना, अलग, सिवाय।
ऋद्धि (स) धन, सम्पत्ति, औषधी, आधार, स्मृद्धि, ऐश्वर्य, धनदौलत, ऋद्धि इसके न मिलने से बिलाइकन्द।
ऋषभ (स) औष्ट।
ऋषभः (स) श्रेष्ठ, बैल।
ऋषभक (स) ऋषभक इस के न मिलने में बिलाइकन्द।
ऋषि (स) मुनि, बेद, आदि शास्त्र बेद का जानने वाला मुनि।
ऋषिक (स) इन्द्री, शङ्करण।
ऋष्टि (स) खड्ग, करवाल, यज्ञ, आचार्य।
ऋष्यमूक (स) नाम पर्वत, सुग्रीव स्थान। [हरिन।
ऋष्यः (स) काला अण्ड का
ऋष्या (स) देसो सतावर १ कांगहिया।
ऋक्ष (स) भालू, राजा, नक्षत्र, रीछ, द्विसंज्ञा संख्या बाचक। २॥
ऋक्षेश (स) जाम्बन्त, भालू, भाल।

ॠ

ॠ (स) देवताओं की माता।
ॠतुहिमादिषट् ॥ ६ ॥ (स) हिम ऋतु अग्रहण पूष। शिशिरऋतु माघ फागुन ॥ बसन्तऋतु चैत

वैशाख ॥ ग्रीषम ऋतु ज्येष्ठ आषाढ ॥ वर्षाऋतु श्रावण भादौ ॥ शरदऋतु आश्विन कार्त्तिक ॥ १ ॥ दो० ॥ आश्विन कार्त्तिक शरद ऋतु, अगहन पुष हिमसाज ॥ माघ फागुन शिशिर कहत, मधु माधव ऋतुराज ॥१॥ ज्येष्ठ अषाढ़हि ग्रीषमहि, वर्षा अन्त हिमास ॥ एक्षो ऋतु प्रसिद्ध है, वेद हि कियो प्रकाश ॥ २ ॥

ऋषि (स) मुनि, तपस्वी, यति।

ए

एक (ह) एकठो, मुख्य, अलग।

एकत्र (स) इकट्ठा, एक जगह।

एकदा (स) एक समय।

एकधा (स) एक प्रकार, एक तरह।

एकरस अट्ठिकाररहित अर्थात् कामादि विकार से रहित षटभाव विकार रहित।

एकतन (स) एकअंगी, दोसरा कोई अन्य हारे दूसरा नहीं

एकदंत (स) गणेश।

एकपत्नी (ह) पतिव्रता।

एकवेणी (स) सब बालों का एक जूड़ा।

एकस्थ (स) एकट्ठा।

एकाकी एकाकिन्ह एकाकिन(स) एकेला, त्यागी, अकेला।

एकाग्र (स) एक चित्त, एक मन, आविष्ट, स्वस्थ, अर्थात् विक्षेपरहित ज्ञान जो और विषयों से हटा कर एक विषय में लगा हो।

एकादश (स) ग्यारह, ११ संख्या।

एकान्त (स) निर्जनस्थान, अलहदह, सुन्य स्थान।

एकान्तः (स) अकेला, निरन्तर।

एकायन (स) सुच, तरु, एकाएक।

एकाष्ठीला (स) पाठ १ बड़ो मोलसरी २। [वाला।

एकाच (स) काणा, एक आंख

एणः एनः (स) हरिण सावज, मृग, कालारंग का हरिण,

स्थिरचित्त।

एड़क (स) दुम्बा भेंड़ा।

एड़गज (स) चकवड़।

एत (स) रवि, दिवाकर, सूर्य्य

एतद् (स) यह।

एतदर्थं (स) इस लिये, इस कारण।

एतादृश (स) इस के तुल्य, इस के सदृश, इसीतरह, ऐसा।

एत्य (स) पहुंचकर, आकर।

एतावत् (स) इतना ही, एय र्य्यन्त, यहां तक।

एध एधन (स) वृद्धि, उवाल।

एनम् (स) इस को उस को, इसी को।

एभिः (स) इन्हीं ने।

एक-एक (स) अटकल। [नाद।

एनस् (स) पाप, अपराध, गु

एरका (स) गोंद, पटेर।

एरङ्क (स) परंगा मकली।

एरण्ड (स) दोनों रेंड़, वृच विशेष, अरंड।

एरण्डतैलम् (स) रेंड़ का तेल।

एर्वारु (स) ककड़ी।

एलवालुकम् (स) इसी नाम से प्रसिद्ध।

एला (स) छोटी बड़ी इला यची, बहुला।

एलापर्णी (स) रासना।

एलालुकम् (स) एलवालुक।

एलासूक्ष्मा (स) छोटीइलायची।

एलास्थूला (स) बड़ीएलाएची।

एल्वालुकम् (स) एलवालुक।

एव एवम् (स) एह, इस प्रकार, निश्चय कर के।

एवमस्तु (स) एह होय, सिद्धि वाचक, ऐसहिं होउ।

एषु (स) इन में।

एष्यति (स) जायगा।

एषिका (स) पनिलर। [भांति।

एहमिस (द) एह बहाने, एहूं

ऐ

ऐकाधिपत्य (स) चक्रवर्त्ति, राजत्व।

ऐक्य (स) समानता, एकता, मेल, एकत्व, एक होना, मिलाप।

ऐट· (स) घटकार।

ऐन्द्री· (स) इनारुण।

ऐरण्डफला· (स) तामाजड़ी।

ऐरावत· (स) हस्ती इन्द्र विशेष, इन्द्र का हाथी।

ऐलपुरुरवा· (स) श्रीवैवस्वतमनु के पुत्र जी के इलाजा में पुत्री सों श्री बशिष्ट जू के सिद्ध बचन ते पुरुरूप।

ऐलेय: (स) एलावालुक।

ऐश्वर्य्य· (स) ईश्वरभाव, विभव, सम्पदा, धनादिक का होना, प्रभुता। [प्रारब्धी।

ऐश्वर्य्यशाली· (स) भाग्यवान्,

ओ

ओक· [स] } स्थान, घर, वोकर,
[प] } समूह।

ओघ· (स) समूह, जलकावेग, झुण्ड, प्रवाह, नदी का बहाव।

ओड़न खांड़े· (द) पटेबाज, ढाल, तलवार।

ओड़िअहि· (स) भाड़।

ओरी· (द) लगी।

ओर· (द) अंत, तरफ़।

ओरे· (द) ओला, अनौरो।

ओहन· (द) ढाल, फरी, अर्धचन्द्र, खांड़ा।

ओहना· (प) रोकना, आड़ना।

ओदन· (स) भातभक्त, रींधा-चाउर, चावल।

ओम· ॐ· (स) प्रणव, ओंकार, बीज, अउम इन तीन अक्षरों से बना हुआ एक अक्षर ईश्वर का वाचक।

ओल:· (स) जिमीकन्दा।

ओरा· (द) तुहिन, पाला।

ओष्ठ· (स) ठोर, अधर, होंठ, बहुधा ऊपर का होठ।

ओष्टोपमफला· (स) कुन्दरू।

ओषधि· (स) }
ओषधी· } दावा।

औ

औगाह· (स) अथाह, गम्भीर, गहीर। [चित्त।

औगुण· (स) तीनिउ गुणर-

औचक· (प) औचट, अचानक।

औतंस· (स) मटुक, शोभा,

भूषण । [चिन्ता।

औत्सुक्य (स) उत्सुकता,

औद्दालक: (स) सहत ।

औदुम्बर (स) गुलरफल १ तांबा धातु २ पैसा भर ३।

औद्भिद: (स) रेह मिट्टी ।

औद्भिदजकम् (स) जमीन फोड़ कर जो पानी का धारा निकले। [युक्त।

औधत्व (स) सुखप्राप्त, हर्ष

औल (स) ओल।

औलाद (फ) सन्तान, पुत्र ।

औसेर (ह) चिन्ता, अभर, खटका, शोच।

औषध (स) दावा ।

अं

अंका (ह) एक आदि, गिन्ती, अक्षर, गोदी। [अंग।

अंगा (स) हस्त आदि, राज्य का।

अंचल (स) आंचर।

अंगरी (स) बखतर।

अंब अम्बा (स) माता, मतारी, महतारी।

अंबक (स) आंख।

अंबर (स) वस्त्र, आकाश।

अंबरीष (स) एक राजा का नाम।

अंबु (स) जल, पानी ।

अंबुधर (स) मेघ, बादर ।

अंबुधि }
अंबुनिधि } समुद्र ।
अंबुपति }

अंबुपति (स) वरुण, वरुन।

अंभोधर (स) बादल।

अंभोज (स) कमल।

अंजन (स) नेत्रभूषण।

अंजि (स) अंजन लगा के, आंज कर के।

अंड (स) ब्रह्मा, अंडा।

अंडकटाह (स) ब्रह्माण्ड।

अंडजराया (स) खग राया।

अंतर (स) भेद, भीतर। [वाला

अंतरजामी (स) मन का जानने

अंतरधान }
अन्तर्हित } अंतर्धान, छिपना।

अंतरहित (स) अंतर्हित, छिपा, गुप्त।

अन्तरजामी (स) मन के जनैया।

अंतावरि· (स) अंतड़ी, आंत, अन्त समूह।

अंब· अंबा· (द) आंबा, माता।

क

क· (स) आत्मासंज्ञा, ब्रह्मसंज्ञा, शिर।

कं· (स) सुख, जल, अनल, शीर्ष, काम, कञ्चन, आकाश।

कः· (स) कौन।

कंस· (स) कृष्ण का मामा, उग्रसेन का बेटा, कांसीधातु।

कांहू· (द) कहीं, कोई जगह, कोईठाम। [कृष्ण।

कंसारि· (स) विष्णु, नारायण,

ककच्छद· (स) केंवड़ा।

ककारु· (स) भूरा कोंहड़ा।

ककुण्ठ· (स) वृक्ष, पेड़, दरखो।

ककुत्स्थ· (स) भागीरथ पुत्र, बैल। [शिखा।

ककुद· (स) राजचिन्ह, पर्व्वत

ककुन्दनी· (स) मालकोनी।

ककुभ· (स) दिग्, ओर, दिशा, वृक्ष विशेष अर्थात् अर्जुन।

ककुभः (स) कहुआ। [बगुला।

कखरी· (प) कांख, कोख,

कङ्क· (स) दलिद्र, बगुला पक्षी, कुरी, पक्षी विशेष, गिद्ध समान। [बाखा।

कङ्कण· (प) कङ्कण, कड़ा,

कङ्कतिका· (स) ककहिया।

कङ्कबन्ध· (स) जल, नीर, अप।

कङ्कु· (स) कुरी, पक्षी।

कङ्कुष्ठः· (स) कोहवो।

कङ्केलि· (स) अशोक।

कङ्कोल· (स) कंकोल।

कङ्गू· (स) मालकोनी।

कङ्गुन· (स)
कङ्गू· (स) } कोनी।

कङ्गूरा· (फ) (प) { पर्व्वत शिखर, मन्दिरादिकटिकोर, बुर्ज, गुंबज।

कच· (स) बाल, केश, रोम, मेघ, बादल।

कचकरजाम (द) बाल का जीव, ढील, केश जन्तु, यूयं।

कश्चित्· (स) कभी।

कचुलि· कचवल्लि· (द) कुचाली, कुपाटी, बाढ़ ।

कच्चट: (स) चवराई साग ।

कच्चूर: (स) कचूर ।

कच्छ· (स) बन, जङ्गल ।

कच्छक· (स) तून वृक्ष ।

कच्छप· कच्छ· (स) (प) { कछुआ, नामनिधि ।

कच्छुरा· (स) जवासा १ दुरालभा ।

कज· (फ) बाङ्का, टेढ़ा ।

कज्जल· कज्जलगिरि· (स) अंजन, काजल, सूरमा पर्वत ।

कञ्चन· (स) सुवर्ण, स्वर्ण, सोना ।

कञ्चित· (प) थोड़ा, कम, अल्प ।

कङ्कड़· (द) केकैयी ।

कञ्चु· (स) शंखबाजा, चोली, अंगिया ।

कञ्ज· (स) कमल, पद्म ।

कट· (स) कमर, कटि, फांड़ ।

कटङ्कटेरी· (स) दारुहल्दी ।

कटफल· (स) कायफल ।

कटभी· [स] मालकोनी, १ करही २ ।

कटभरा· [स] सोनपत्ता, १ गन्धपसारणी २३ करही ।

कटसारिका· [स] सुपेदफल का कटसरैया ।

कट्वङ्ग· [स] सोनपत्ता ।

कटक· कटाच· कटकाई· [स] दल, सेना, बाला, कड़ा, फौज, खडुंआ ।

कटाह· [स] कला, कढ़ाही पात्र, हण्डा, विस्तार, कड़ाह, कोष ।

कटाच· [स] झलकी, तीखी चितवन, वाङ्कानजन, तिरछीनज़र, तिरछी चितवन ।

कटि· [स] फांड, कमर, कट, कडुआ, करिहांव ।

कटिसूत्र· [स] करधनी, कमर की डारी ।

कटिच्छर· [स] श्यामबर्बरी ।

कटिनी· [स] खरी लिखने का ।

कटिल· स] करैला । [ड़वा ।

कटिलक· [स] नाम गदहप·

कटी· [स] एकाङ्गी ।

कट्वी [स] चोपचीनी १ कुटकी२। [कटुवा।
कटु [स] करुवा, तीता, कडुवा
कटुवानी [स] तीतवचन।
कटुतुम्बीर [स] तीतातुम्बा, तीता कदु. जलपात्र।
कटुकस्नेह [स] सरसो का तेल।
कटुका [स] कुटकी।
कटुतिक्त [स] चिरैता।
कटुत्रिक [स] सोंठ, पीपर, मिरीच।
कटुतुम्बी [स] तिता लौका।
कटुभद्र [स] सोंठ, अदरख।
कटुरोहिणी [स] कुटकी।
कडिहार कड़िहार [द] मलाह, मांझी, कर्णधार।
कण्डल [स] पोल।
कण कणी [स] टुकड़ा, चूर्ण, बुकनी, बूंद।
कणा [स] लघुपीपलि, पीपर, कणिका, लेश, मकरा, सुपेदजीरा।
कणिका (स) छोटी बूंद।
कणामूल [स] पिपरलामू।

कण्ट कण्टक [स] शत्रु, बैरी, कांटा।
कण्टकाया (स) कुब्जक १ भिमर वृक्ष। २।
कण्टकारी (स) रेंगनी।
कण्टकारी फल (स) रेंगनी के फल।
कण्टकिनी (स) रेंगनी।
कण्टकी (स) कण्टाई।
कण्टफल (स) कटहल।
कण्टकीफल (स) खीरा टोंगों।
कण्टरूहा (स) कुटकी।
कण्टवी (स) खयरवृक्ष।
कण्टालिका (स) रेंगनी।
कठोर (स) कठिन, दृढ़, पुष्ट, निर्दय. क्रूर, सखत।
कण्ठ (स) गला, 'कण्ठुवा, गरदन।
कण्ठच्छवि:, (वि० त्वम्) गले की सी छवि है जिस में।
कण्ठच्युतभुजलताग्रन्थि (त्रि० उपगूढम्) छुट गई है गले से बांह लता की गांठ जिस में।

कण्ठस्थ· (स) कंठ में प्राप्त, बरज बान।

कण्ठीरव· (स) सिंह, बनचर।

कण्डिक· (स) खेसारी।

कण्डुरा· (स) कमाच।

कण्डु कण्डू· (प) (स) { बौंधा जक-चर, खुजली. खाज।

कण्डुय· (स) खुजली, खाज।

कण्वोकन· (स) बुन्द, कणिका।

कणाद· (स) वैशेषिक शास्त्र का कर्ता ऋषि।

कतम· (स) बहुतों में से कौन।

कतर· (स) दोनों में से कौन।

कत· कति· (स) { केतिक, केतने, कहां. कहि खिस लिये।

कतवार· (ट) तृण।

कति· (स) कितना।

कतिचित्· (स) कितने, एक।

कतिपय· (स) कितने कुछ एक।

कतिपयदिनस्थायिहंस: (वि॰ दशार्णा:) कुछ दिन हंसों के ठेरने योग्य।

कतक· (स) काताजोन १ केवड़ा २ निर्मली।

कत्थिण· (स) रोहित।

कथं } (स) केहि विधि, क्यों

कथम्· } करि, क्योंकर।

कथन· (स) कहतव्य, कहन, वर्णन कहना।

कथञ्चित्· (स) किसी भांति।

कथमपि· (स) किसी भांतिभी, कठिनाई से।

कथयत्· (स) कहता हुआ, बतलाता हुआ।

कथनीय· (स) कहने योग्य।

कथा· (स) वार्ता वृत्तांत, प्रबंध, कल्पना, वर्णन, कहानी।

कथित· (स) उक्त कहा हुआ।

कदन· (स) दुःख, नाशक, वधिक।

कदङ्क: (स) सरसो।

कदम्भा· (स) कुटकी।

कदंब· कदंबक· कदम्ब· (स) कदम का वृक्ष, समूह, वृक्ष विशेष। [हल्दी।

कदम्बपुष्पिका· (स) बड़ी भं-

कदर· (स) पपरिया कत्थ।

कदराई (प) कादर भाव, कादर होना।

कदर्य्य (स) कृपण, धूर्त्त।

कदली (स) केरा, केलाफल विशेष।

कदलिकन्द (स) केला का कन्द।

कदाचित् (स) कभी, कभूं, कभीं।

कदा (स) कब।

कदापि (स) कभी भी।

कद्रु (स) नाग माता।

कद्रुविनता (स) उभयनाम स्त्री, राजा कश्यप ताके इतिहास * है।

कन कनी कनिका (स) कण, घुण, आटा, कन्द।

कनक (स) सोनाद्रव्य, स्वर्ण, धतूरा, धतूरे का वृक्ष।

कनककदलीवेष्टनः, (वि० शैलः) सुनहरी केलों से घिरा हुआ।

कनकनिकषच्छायय (वि० सौदामिन्या) चमकती हुई मानो कसौटी पर सोने की लकीर।

कनकम् (स) सोना।

---

* एक कल्पान्त की कथा है कि जो राजा कश्यप की दो राणी बड़ी कद्रु, छोटी बिनता, कद्रु के पुत्र नाग हैं। बिनता के पुत्र गरुड़ हैं, एक दिन राजा विनता के पुत्र को गोद में लेके खेलाते थे, अरु कद्रु के पुत्र नीचा पड़ा था, कद्रु एह चरित्र देखि के मन में अपने खैंच लाई, राजा को अपनेस्त्री भाव ते ऐसो अपनी वशी किई जो राजा उस रोज सों चित्त को अपने विनता के तरफ़ सों उठालिए, बिनता नें पुत्र समेत उस रोज सों बिमुखी हो के बहु काल दुःखित मानी रही॥

अरु एक कथा कद्रु बिनता की नाककटी की भी है, किन्तु रामायण विषें उसकी कथा आपु विशेष लंकाकाण्ड में लिखा है वर्णन-प्रयोजन नहीं॥

कनकाह्वय· (स) धतूरा।

कनहार· (स) मांझी।

कनकभूधराकार· (स) सुमेर पर्वत के समान।

कनककल्प· (स) वृक्ष विशेष।

कनकावलयरत्नमरिचमकोष्ट:, (विकामी) सोने का भुज-बंद गिर कर सूनी हो गई है बांह जिस की।

कनकबिन्दु· (स) सुवर्ण की टिकुली।

कनकवेली· (स) लता विशेष।

कनकलोचन· (स) हिरण्याक्ष, दैत्य विशय अवतार, पृथ्वी, चोरख्यात।

कनककशिपु· (स) हिरण्यकश्यप एक दैत्य का नाम।

कनकदीप· (स) हिरण्यकश्यप दैत्य जय अवतार।

कनिष्टपञ्चमूल· (स) दिघरौंध १ चकरवंध २ बनभांटा ३ रेंगनी ४ हरचिकार ५ एई पांच।

कनिष्ठ· }
कनिष्ठा } (स) अतिअल्प, छोटा. लघु, छोटी अंगुली, छोटा भाई।

कन्त· (स) पति, पुरुष, स्वामी

कन्तफल· (स) निर्मली।

कन्ता· (स) स्त्री, नारी, पत्नी।

कन्था· (स गुदड़ा, कथड़ी।

कन्द· (स) मूल, जड़, लशुन, रोगविशेष, १ गन्धाबिरोजा २ घोल ३ कंद सब ४।

कन्दन· (ह) }
(स) } उपदेश, गुरुमंत्र।

कन्दर· कन्दरा· (स) बन, गुफा, खोह।

कन्दर्प· (स) कामदेव, अनङ्ग।

कन्दल· (स) लड़ाई, युद्ध, संग्राम।

कन्दला· (स) कन्दरा, गुफा, ढांक, खोह।

कन्दली· (स) फूल विशेष।

कन्दु· (स) कदुवा फल, कड़ी, बेहो। [विशेष।

कन्दुक· (स) गेंद, खिलौना

कन्ध· कन्धर· (स) कांध, गला।

कन्धेली· (स) जीन, खोगीर, गद्दी।

कन्य· कन्यक· (स) सन्तान, पुत्र दश वर्ष का ।

कन्यका· कन्या· (स) पुत्री दश वर्ष की, दश वर्ष तक की लड़की, लड़की। [वार २।

कन्या· (स) फूलखेकसा १ ढेक

कर्णा· (स) कंद, कनिका ।

कपट· (स) दगा, धोखा, छल, भगल, फरेब ।

कपर्द (स) कोड़ी ।

कपट भू· (स) माया भूमि ।

कपाट· (स) किवाड़, पोट, द्वार, उपरौटा, केवाड़ी ।

कपाल· (स) मस्तक, समूह, ललाट, खोपरी, सिर, मुण्ड । [कूई ।

कपास (प) बाड़ा, कपास,

कपि· (स) वानर, शागविशेष के नाम जल, जलनाम सुधा, तासुधा रूपाभक्ति के पि कही पानकर्त्ता अथवा ककार आत्मासंज्ञा है, ता आत्मा को रस जो पान करे सो कपि, नर वाचक, देश वाचक।

कपिश, (स) कपासी रंग ।

कपित्थ (स) कैथ का वृक्ष ।

कपिश (स) वानरों का राजा ।

कपिकच्छु (स) कमाछ ।

कपिकत (स) पलास, पीपर ।

कपिच्छल (स) श्वेततीतिर ।

कपितन (स) पलास, पीपर १ शिरीस वृक्ष २ अमड़ा वृक्ष ३ ।

कपितैल (स) शिलारस ।

कपित्थ· कपत्थ· (स) कैथा ।

कपित्वक् (स) एकवालुक ।

कपिनामा (स) शिलारस ।

कपिपर्य्याय (स) शिलारस ।

कपिपिप्पली (स) लाल चिर-चिरी ।

कपिप्रिय (स) कौथा फल ।

कपिला (स) पीतल धातु १ रेणुका २ ।

कपिस्नेह (स) शिलारस ।

कपिकुंजर· (स) कपिश्रेष्ट, वानर श्रेष्ठ ।

कपिधन· (स) सुग्रीव, सुकंठ,

बालिभ्राता।

कपिध्वज· (स) अर्जुन पाण्डव, हनुमान।

कपिन्द्रा· (स) कपिविशेष कपिश्रेष्ठ, कपिंद्र। बान्दरों का राजा।

कपिल· (स) मुनि विशेष, जिसने सांख्य शास्त्र बनाया।

कपिला, कपिली, (स) गौ विशेष, धेनु पीली।

कपीश· (स) बानर का ईश, बन्दर का राजा।

कपीवल्ली (स) गज पीपल।

कपोतक (स) दारु हलदी।

कपुत्र (स) कपूत, कुपुत्र, अपुत्र।

कपूर· (प) कर्पूर, सुगन्ध द्रव्य विशेष। [शेष।

कपूरी· (स) पान, पत्र विकपोत· कपोतक, (स) कबूतर पक्षी, परावत, परेवा पक्षी।

कपोतचरणा (स) नलुका।

कपोतवङ्का· (स) बरंभी।

कपोताञ्जन (स) स्याहसुर्मा।

कपोल· (स) गाल, गण्डस्थल।

कपोलयान· (स) कन्ध, कांधा।

कफ· (प) श्लेषा, खंखार।

कवन्ध· (स) दैत्यविशेष. नीर, धड़बिनाशिर, रुण्ड, दशसहस्रहाथी, दशलक्षघोड़ा, डेढ़से महारथी. दशकोटिपद्चर कहींपैदर, एतारण मों जूझि के बिना शिर जो नाचे ताको कवंध संज्ञा, दुर्वाशा के शरायते राक्षसभयो अरु इन्द्र के शाप पेंव टेढ होए के कवन्धपर रह्यो। [गुन,

कवारु ,(स) उद्यम, हुनर,

कवि· (स) सामान्य कवीश्वर शुक्र, वाल्मीक मुख्य कवीश्वर, भाट, पंडित ग्रन्थकर्ता. काव्यकर्ता।

कवित्त· (स) काव्य, कहतव्य, कविता।

कवित्तगुण· (स) जो पद दो

तीन अचर का रहै, और वाके लिखे छन्द भ्रष्ट होय तो एक या दो अचर आदि मध्य अन्त का लोप छन्द निमित्त करि लिखो जात परन्तु अर्थ काल कुल अचर लगाय के अर्थ किये जात है॥ यथा रावण बान कुपा नहि आवो॥

कविनाशा· (स) कर्मनाशा नदी।

कबूली· (म)
(फ)
(ट) } कबूल कराई, पचौभेद, पचौ विशेष, वह मरी बलिपशु।

कव्य· (स) पितरभाग, पितरनिमित्तदान, पितृश्राद्ध।

कम· (फ) थोड़ा, किंचित्।

कर्म· (स कार्य्य, काम, शरीर।

कमठ· (स) कछुवा; कूर्म।

कमण्डल· (स कठारी, जलपात्र।

कमण्डलु: (स) पलाशपीपल।

कमनीय· (स सुन्दर, सुथरा, मनोहर, खूबसूरत।

कमल· (स) नामपुष्प, कवंल· फूल, जल, नीरज, सुन्दर।

कमलज· (स) ब्रह्मा, नामपुष्प।

कमलवदन· (स) कमला सा है मुख जिस का।

कमलभव· (स) विरंचि, ब्रह्मा।

कमलसुत· (स) विधि, ब्रह्मा।

कमला· (स) लक्ष्मी, उत्तमा, नारङ्गी, विष्णु की स्त्री।

कमलासन· (स) ब्रह्मा, नाम आसन। [पाटवस्त्र।

कमाच· (स) तरकुसी काचाछ,

कमलनी· (स) कंवल का पंचांग, जड़, डंटी, पत्ता, फल। [विशेष।

कमोदिनी· (स) कुमुद, कमल

कमोड· (स) पपीहा, पची, विशेष, चातक।

कम्प· (स) कांपना, कम्पित, थरथराहट, हिलना (जैसे बिजली हिलती है)

कम्पति· (स) समुद्र, निधि, जलपति। [प्रवाह, धेनु।

कम्बर· (स गोकुलतन, जल-

कम्बल· (स) ऊनवस्त्र, अर्थात्

शाल, बनात, लोई, कम्म-
ल इत्यादि।

कम्बु· (स) रक्तवर्ण, शङ्ख, गज,
इष्ट कण्ठ, गला।

कम्बुक· (स) शंखनाद।

कम्बुकण्ठ· (स) कम्बगा ग्रीवा,
घट का गला।

कयापीत:· (स) तूनद वृक्ष।

करि· (स) हाथी।

कर· (स) (द) हाथ, किरण सूर्य्या-
दि, गजशुण्ड, ढान,
विष, करने वाला,
कर्त्तावाचक, का, मासूल,
मंह।

करका· (स) (प) अनारवृक्ष, पोड़ा।

करका· (द) ओला।

करतूति· (द) करतव्य।

करतार· (द) ब्रह्मा।

करकाम्भ· (स) नारियर, वृक्ष।

करज· (स) करजनी, नख,
अंगुलीहस्त की।

करण· (स) साधन, कारक,
हेतु, इन्द्रो, शरीर।

करणी· (स) कर्म्म, व्यवसाय,
हननो।

करणीय· (स) करणयोग्य,
साधनयोग्य।

करतल· (स) तलहथो, हथे-
लो, हाथपर। [आफ़त।

करघर· (स) विपद्दा, उपाधि,

करवेर· (द) विपत्ति।

करनलगि· (द) कानतक।

करतारा· (द) हाथकी तारी।

करन· (स) इंद्रिय, कान, सा-
धन, कारन, करना।

करनीकर· (स) हाथीका समूह।

करनीया· (द) करणीय, करने
के योग्य।

करमरे· (स) विपद्दा।

करवाल· (स) खड्ग, तलवार।

करक: (स) अनार।

करकाजलम्· (स) आकाश से
पत्थर गिरता सो पानी।

करञ्ज: (स) करंजा।

करञ्जी· (स) अरार।

करञ्जोन्य: (स) करंज।

करत: (स) निर्मली।

करभञ्जिका· (स) अरार।

करमर्द्द: (स)
करमर्द्दिका (स) } करवंदा

करवीर: (स) सुपेद कनइल।

करहाट: (स) कमल का कंद।
मयन फल।

करष करषा (स) वैर, रिस,
खैंचना, वैरत्व, ईर्षा।

करषि (प) खैंचना, खैंच कर
के रगड़, करषना, कर्षणा,
रगड़।

करार (प) करत पक्षी विशेष

करहभ- किरनों का रोकने
वाला। [का मुह।

करहह (स) हाथ की अंगुली

करारा (स)
(द) { भयङ्कर, कठिन
कालदेवी, नदी
की ऊंची तट,
कागभेद, कराल, किनारा

कराल (स) भयंकर, कठोर,
राल, वृक्ष विशेष, पुष्प
फल हीन।

कराला करारा (स) काल
देवी, कागविशेष।

करिन् (स) हाथी।

करिणी (स) हस्तिनी, हथिनी

करी (स) हाथी, सूर्य, चन्द्र,
गोमरी, कसेनी कसाइन।

करुई (द) कटु, कड़ुई।

करुन करुणा, (द) दया।

करुणाकरति (स) गुण कह
कर के बिलाप करती।

करुणावृत्ति (वि० अन्तरात्मा)
कोमल स्वभाव वाला।

करीर: (स) बांस का अंकुरा १
करील वृक्ष २।

करील करीला (प) वृक्षविशेष
पत्रहीन, खारदार।

करुण करुणा (स) दया, रोद-
न, कल्पित, कृपा।

करुणाकर (स) करुणा के बर-
सने वाले।

कर्ण (स) कान, पतवालनायक,
रवि तनय। कोष।

कर्कटा (स) कौड़ी के भीतर का

कर्कटाख्या
कर्कटश्रृंगी } (स)ककरासिंही।
कर्कटाह्वा

कर्कटीहृा (स) ककड़ी १ बन्दाल।

कर्कन्धू (स) बयर फल।

कर्कश: (स) कमलागुरुडी १

कसौंजा २।

कर्कशच्छदः (स) परवर।

कर्कारुः (स) भुरा कोंहड़ा।

कर्कोटी (स) बन्दाल।

कर्कोटकी (स) खेकसा।

कर्चूर (स) कचूर।

कर्णिका (स) गुलाब १ सेवती २ कमल के बीज के रहने का जगह जो पखरियों के भीतर ३।

कर्णिकारः (स) कर्णिकार १ अमलतास २।

कर्त्तकंत (स) निर्मली।

कर्द्दभाण्डः (स) पलास, पीपर।

कर्द्दमकः (स) लाल धान।

कर्द्दरालः (स) पलास, पीपल।

कर्प्परालः (स) अखरोट।

कर्प्पासकी (स) कपास।

कर्प्पासमारः (स) आसन वृक्ष।

कर्प्पासी (स) कपास।

कर्प्पूरः (स) कपूर।

कर्प्पूरनालिका (स) कासनी या पेड़किया।

कर्प्परा (स) आमा हलदी।

कर्प्पूराश्मः (स) फिटकिरिया पत्थर।

कर्म्मरंग (स) कमरख।

कर्म्मारः (स) बांस।

कर्षः (स) १ पैसा भर।

करोति (स) करता है।

कर्कश (स) कठोर, विवेकरहित, कृपण, निर्दय।

कर्णधार (स) मलाह, मांझी, पतवारी। [के योग्य।

करतव्य (स) करतव्य, करने

कर्णानुज (स) युधिष्ठिर, कुरुराव।

कर्तुम (स) करने को। [रतूत।

कर्त्तव्य (स) करै योग्य, काम, क-

कर्द्द (स) मल, मैला। [चला।

कर्द्दम (स) कादो, कीचड़, च-

कर्द्दी (स) मलीन, मैला। [ई।

कर्पास (स) कपास, बांगा, रू-

कर्पूर (स) कपूर, सुगन्ध द्रव्य विशेष, काफूर।

कर्बुर (स) अनेक वर्ण, चितकबरा, राक्षस।

कर्मकार (स) कुम्हार।

कर्म्म· (स) कर्म्मक्रिया, आयु, पार्व्वल जो किया जाय, कार्य्य, काम, शरीर।

कर्म्मकुलिकाल· (स) कर्म्म के कुम्हार, विश्वकर्म्मा।

कर्म्मनाशा· (स) नदी विशेष।

कर्ष· कर्षण· कर्षा· (स) खेंच, हठ, अत्यन्त, दामद्रव्य, रगड़, वैर, ईर्षा, जोतना, संकोच। [फल, भूतवास।

कर्षफल· (स) बहेड़ावृक्ष, बहेरा

कल· (स) (प) {यन्त्र, काल्य, चैन, मधुर, मीठा, मन्दीध्वनि, झूठा, यश, गुण, कल्पना, फूला, विकसित, शोभा, अति सुन्दर, कोइल पक्षी।

कलाग्र: (स) मुर्गा पक्षी।

कलधौत: (स) सोना धातु।

कलध्वनि: (स) चितकाबर पण्डुक।

कलकीरति· (स) सुंदर कीरत।

कलकण्ठ· (स) पपीहा पक्षी, कंठकोकिला, कोइल।

कलङ्क· (स) लीक, चिन्ह, सिहँ, पारा, पाप, दोष।

कलत्र· कलत्री· (स) स्त्री, लोगाई, नतनी, नाती।

कलधौत· (स) सोना। [दमना।

कलपत्र· (स) कल्पवृक्ष, देवतरु,

कलपत्रक: (स) दवना।

कलम: (स) बासमती धान।

कलवल· (स) स्पष्ट नाहीं, तोतरी वचन, तोतरा बोल।

कलभ· (स) हाथी का बच्चा, साधु, उत्ताल, कलुष।

कलमुखर· (स) सुंदर शब्द।

कलमष· (स) पाप।

कलमलसरी· कलिमलसरी· (द) कर्म्मनाशा नदी। [पटाई।

कलमलाई· (स) चौंदाई, छट·

कलमले· (द) चञ्चल भए, चौंदाए, हिले, कलमलाना।

कलम्ब· (स) बाण, हथियार।

कलम्बिका· (स) गरदइया पक्षी।

कलम्बी· (स) करमीभाग।

कलरव· (स) मधुरध्वनि, घुनघुन, परेवा पक्षी।

कलश· कलशा· कलशी· (स) गागर, गगरी, मटुका, घड़ा।

वस्त्र, भिलम, जिरह।
कवचनामा· (स) धनपापर।
कवल· (स) ग्रास, कवरा, कवर।
कवार· (द) व्यवहार, हुनर, नोच।
कांशकः (स) कांसा उपधातु।
कशा· (स) रोहनी भड़ी।
कशिपु· (स) बाल, केश।
कशेरु· (द) कसेरू, जो जमीन में मोथाका बड़ा बैठता है।
कश्मल· (स) प्रत्यवाय, दोष, लोभ, दुःख, मूर्छा, पाप।
कषरी· (स) हिंगुपत्री।
कषरी· (स) बबैरी।
कविका· (स) कवेया मछली।
कश्चित्· (स) कोई।
कश्यप· (स) ऋषि विशेष जाके पुत्र दैत्य देव है।
कष्याण· (स) निर्व्वाह, ट्रिन खेच अर्थ, फल, शिव।
कषाय· (स) कषैलारस, काढ़ा, चित्तविषें विषय भास प्राप्ति लोनगरा, गेरुवावस्त्र, खाकवा वस्त्र, सुगन्धित।
कषाया· (स) दुरालंभा, १ जवासा।
कसेरूकं· (स) कसेरू।
कस्तूरिका· (स)
कस्तूरी· } कस्तूरी।
कष्ट· (स) दुःख, तकलीफ़।
कस्मिन्· (स) कहिविषें, किसमें।
कस्य· (स) किस·का।
कस्याचित्· (स) किसी में।
कह· (द) कहतुहै, कहो।
कहा· (द) क्या, भाखा।
कक्ष· (स) कांख, बग़ल, पहलू, काच, कष्ट।
कक्षा· कक्ष्य· (स) ज्योतिषचक्र, कटिबन्ध, कष्ट, छन्द, विशेष। [कसना।
कसे· (स) कसौटी पर रगड़े,
कहानी· (द) कथा। [ख्वाहिश।
कांचा· (स) वांछा, अभिलाषा,
काप· (प)
काऊ· } कबहूं, कब हीं, कोई। [कास।
काकः (स) काग, कौआपक्षी,
काकलकूटी· (स) खजूर।
काककुष्टः (स) कोहवी।

काकजङ्घा· (स) काग जंघा· जड़ी।

काकतिक्ता· (स) कागजंघा।

काकतुण्डफला· (स) कवा ठोंठी।

काकनन्ती· (स) लाल कर्जनी।

काकनासा· (स) कौवाठोंठी।

काकपर्णी· (स) बनमूंग। [नी।

काकपीलु:· (स) लालकर्ज·

काकपुष्पा· (स) गठिवन।

काकमाची· (स) मकोय या बनभुटका।

काकमुद्गा· (स) बनमूंग।

काकवल्लरी· (स) स्वर्णवल्ली।

काकाङ्गी· (स) कौआठोंठी।

काकादनी· (स) लालकर्जनी।

काकायु:· (स) स्वर्णवल्ली।

काकाह्वा· (स) मकोय या बन भुटका।

काकावहा· (स) कागजंघा।

काकचिञ्ची· (स) गुञ्जा, कर-जनी, लालकर्जनी। [पट्टा।

काकपक्ष· (स) केश जुल्फ़ी,

(प) } व्यङ्गवचन, करुणा·
काकु·(द } वचन, काकी,

स्त्रीविकार, नारी दोष, इत्यमर:।

काकेन्दु:· (स) मकरतेंद।

काकेक्षु:· (स) तालमखाना, १ कास २ कुश ३। [नाग।

काकोदर· (स) सर्प्प, व्याल,

काकोदुम्बर:· (स) कोठाडुम्बर।

काकोलि:· (स) कंकाल।

काग· (द) कौवा, काग, वायस।

कागद· कागर· (द) कागज़, लिखनी पात्र।

काखासोती· } (द) एक पट्टा वस्त्र
काङ्खासोती· } जो दोनों कन्धा से कांखतक, कांख तले सों कन्धापर पिछौड़ा मारि के ओढ़त है ता छवि विशेष।

काचस्थाली· (स) पांडर।

काचाक्ष:· (स) बगुला का जाति बड़ा बगुला सा।

काङ्क्षति· (स) चाहता है।

काङ्क्षी· (स) सुरठी मांटी।

काछे· (प) बनाये, ठने।

काच· } (प) शीशा, कचरा रोग
काच:· } विशेष।

काञ्चन· (स) सोना द्रव्य, स्वर्ण, सुवर्ण, सोना।
काञ्चनम· (स) सोना।
काञ्चनकः (स) लालधान।
काञ्चनाह्वः (स) नाग केसर।
काञ्चनी· (स हरिद्रा, हलदी।
काञ्ची· (स) किङ्किणी भूषण, पुरी, तागड़ी।
काञ्जिकः (स) पानी, राई, नोन, एक साथ जब खट्टा-हो।
काञ्जी·
काञ्जीः} (स) खटाई, खट्टा, मट्ठा, मांड, सिरका, खट्टा पानी राई का।
काञ्जीवटकः (स) कांजी का बरा। [रहित।
काता (स) कादर-अधीर-धैर्य·
काञ्जी (स) दुग्ध का फटौन।
काण्ड· (स) खण्ड, प्रकरण, खेल।
काण्डतिक्तः (स) चिरैता।
काण्डेक्षुः (स) तालमखाना १ केतारी एक तरह का।
काण्डेरः (स) चौराई साग।
कातर· (स) आतुर, मोहित, व्याकुल निरुत्साहि, डरता हुआ, कादर। [भीरुपन।
कातरत्व· (स) निरुत्साहीपन,
कादम्बः (स) परेवा पक्षी, पानी का पेरनेवाला।
कादम्बरी· (स) मदिरा, मद्य, दारू।
कान· (प) कर्ण, श्रवण, लाज।
कानन· (स) बन,जङ्गल, ब्रह्मा का मुख। [संकोच।
कानि· (प) मर्य्याद, शपथ,
कानौ· (प) बैर, लाग, द्वेष हिंसा, संकोच।
कान्त· (स) पुरुष, स्वामी, सुन्दर, मनोहर, शोभायमान।
कान्तलकः (स) तून बृक्ष।
कान्तलौहः (स) कान्ती· लोहा।
कान्तः (स) पति।
कान्ता· (स) स्त्री, पत्नी, सुन्दरी, प्यारी (वियोग करने कठिन।) प्रियङ्गु,

कान्ताविरहगुरुणा· (वि· प्रापि न) स्त्री के ।

कान्तार· कांतार: } (स) वन, जङ्गल, कंतारी, ऊख ।

कान्ति· (स) इच्छा, शोभा, चन्द्र, सौंदर्य, प्रकाश ।

कान्तिमत् (स) शोभायमान ।

कान्तिलौह: (स) कान्तीलोहा । [लोहा ।

कान्तीसार: (स) कान्ती

कान्धा· (प) सुनिके, कनिया के, अंगीकार करके ।

कान्यकुब्ज (स) कनौजदेश ।

कापर· (ह) वस्त्र, कपड़ा ।

कापोत: (स) सज्जी खार ।

काव्य· (स) कविता, शुक्र, पद, छन्द ।

काव्यार्थलक्षण· ४। (स) धुनि, भवरेव, गुण, जाति, ४ ।

काम· (स) (प) (फ) } कन्दर्प· अभिलाष, सिद्धि, काज, भोग, सुराद, सुन्दर, कामना, कामदेव, विषय, धंधा, चाहना, इच्छा ।

कामचारी· (ह) जहां जाने की इच्छा हो वहां जाने की सामर्थ्यवाला । [निज ।

कामतरु· (स) कल्पवृक्ष देव

कामतन्त्री· (स) मेथी ।

कामरूपवाम: (स) मालदह का थाम ।

कामाङ्ग· (स) पामफल । [पास ।

कामाख्या· (स) मालदह का

कामुक: (स) माधवी ।

काम्पल: (स) कमला गुंडी ।

काम्पिल्ल: (स) पीतलधातु ।

काम्बोजी· (स) बन उरिद ।

कामद· (स) कामनादायक, मनोरथदाता, कामको देनेवाले ।

कामदुगाई· (ह) कामधेनु ।

कामधेनु· कामदुगाई· } (स) सुरगी, कामनिकगौविशेष ।

कामना· (स) बासना, अभिरुचि, इच्छा ।

कामपि· (को अपि) किसी एक स्त्री को । [कोसी ।

कामहं· (स) काम के नाश

कामरिपु· (स) शिव, शङ्कर।

कामरूप· (स) इच्छाधारीरूप, कामस्वरूप, इच्छारूप धारन करने वाला।

कामांग· (स) आमवृक्ष।

कामातुर· (स) कामतेव्याकुल कामार्त्त, कामी।

कामानुज· (स) तामस, कोप।

कामारि· (स) शिव, गिरिश, काम के शत्रु, महादेव।

कामिन्· (स) कामी, प्रेमी, स्नेही।

कामिनी· (स) रमणी, प्रेमी स्त्री, काम के शत्रु, महादेव, स्त्री प्रेमवती स्त्री, सुन्दर स्त्री।

कामी· (स) कामातुर, सोने का ढेला। [माशूक।

कामुक· (स) भेव, लम्पट, का·

कामुकत्व· (स) प्रेमीपन, कामीपन। [जिस्म।

काय· (स) काया, शरीर, देह,

कायवचन· (द) शरीर और वचन से। [माग।

कायर· (स) कादर, हीन, भय·

कायस्था· (व) हर्रे।

कायस्थिका· (स) काकोली इस के अभाव में असगंध।

कार· (फ़ा· स) काम, कार्य्य, कर्त्तावाचक।

कारण· (स) हेतु, सबब, प्रयोजन, पिता, निमित्त, प्रकृति। [खानह।

कारागार· (स) बधनालय जेल

कारक· (स) कर्त्ता, करैया, व्याकरण की प्रकरणविशेष। विभक्ति की अर्थ करने वाला।

कारवी· (स) अजमोदा १ मगरैला २ सोआ ३ धनहर ४ सौंफ ५।

कारवीमहः (स) अजमोदा।

कारवेल्लः (स) करैली।

कारवेल्ली· (स) करैली।

कारिष्ठ· (द) कोइला।

कारज· (द) कार्य, पंचभूतादि।

कारणकरण· (अ) महत्तत्वादि के कारण।

कारी· (स) काली।

कारुणिक· कारुणीय· (स) दया·

लु, दयावान शोहनकार, कनैलपुष्प। [सुवर्ण।

कात्तस्वर (स) सोना द्रव्य,

कार्त्तिक (स) महीनाविशेष, कातिक शिव पुत्र, एक महोने का नाम।

कार्पण्य (स) दरिद्रता, दीनता, कादरभाव, कृपणता, कंजूसपन। [रुई।

कार्पास (स) कपास, बांगा,

कार्य्य (स) हेतु प्रयोजन काम।

कार्मुक: (स) धनुष।

कार्मुक (स) धनुष, चाप।

कार्श्य (स) दुवलापन।

कार्षक (स) किसान, कर्षक, हलवाहा।

काल } (स) समय, यम, सर्प
काल: }

चतुरिन, अवस्था, मृत्यु, मरण, मकरतेंदु २ तेंदु ३ वृक्ष, जमानह, मीच, काका, श्याम, नेम।

कालव्याल (स) काला सांप।

कालकाम (स) गोखवा साग।

कालिरात्रि (स) कालिका देवी।

कालकण्ठ } (स) पपीहा
कालकण्ठक: } पक्षी, गरवैया पक्षी २।

कालकूट: (स) विष, हलाहल।

कालकेशी (स) नील। [नाम।

कालज्वर (स) शिव का एक

कालनेमि (स) असुरविशेष, पूर्वगर्व इन्द्र सभा काया देख के हंसने कारण औ दुर्वाशा मुनि के श्राप तें राक्षस होय रावण के मामा भयो, इति पुराण प्रसिद्ध।

कालपीलुक: (स) मकरतेन्दु।

कालभेषिक (स) मंजीठ।

कालमेषिका (स) पनिलर।

कालमेषी (स) बकुची।

कालमेखला (स) दाघ,कुठारा

कालशाक: (स) गोखवा साग।

कालसेय: (स) पीत चंदन।

कालस्थाली (स) पांडर वृक्ष १ पांडर २।

काला· (स) नील १, मजीठ २ काला रंग ३।

कालाजाजी· (स) स्याहजीरा।

कालानुसार्य्यः (स) पीत चन्दन १, तगर २।

कालानुसार्य्यकः (स) छरीला १ पीत चन्दन।

कालायसः (स) लोहा। [हच

कालाख्याली· (स) कठपांडर

कालिङ्ग· (स) इंद्रयव १ कौरैया २।

कालिन्दः (स) तरबूजा।

कालियकः (स) दारुहल्दी।

कालेयकः (स) दारुहल्दी।

कालैका· (प) पनिहर।

कालक्षेप· (स) समयबिताना, गुजारह, निर्बाह करना।

कालसूत्र· (स) नरक विशेष।

कालस्कन्ध· (स) तमाल वृक्ष।

कालि·(स) बितित, गए, गुजरे गति। [हजीरा।

कालिका· (स) देवी,मसी, स्या·

कालिन्दी· (स) यमुना नदी।

कालिन्दीहर· (स) बलभद्र, बलराम।

काली· (स·प) देवी, काजल, श्याम, कलङ्क, कलह।

कालरात्रि· (स) प्रलय की रात।

कालीन्· (स) दिनों, पुराना समय का।

कालीय } (स) सर्प, नाग,
कालीयः } व्याल, पीतचन्दन।

कावर· (प) कांमर, बहंगी।

कांश्यः (स) कांसा उपधातु।

काश्मीर· (स) केशरि पुष्प, देश विशेष। [र वृक्ष।

काश्मरी·काश्मिरी· (स) गंभा·

काश्मीरः (स) पुष्करमूल १, केसर या जाफरान २।

काशी· (स) देश, पूज्यविशेष।

काश्यपी· (स) धरती, मेदिनी।

काष्ट· (स) लकड़ी।

काष्टजशाकः (स) गोबरछाता।

काष्टपाटला· (स) काठपांडर वृक्ष।

काष्टा· (स) दिग, दिशा।

कांचा· (स) बांक्षा अभिलाख-ख्वाहिश।

काष्टालुः (स) } कन्दा का मुंडा।
कष्टालुकः }

कासरः (स) भैंसा चतुःपद।

कासमर्द्दः (स) कसौंजी।

कासमर्द्दच्छदम् (स) कसौंजी का पत्ता।

काससर्व्यः (स) गम्भार वृक्ष।

कासार (स) सरोवर, ताल।

कास (स) खांसी रोग।

कासारी (स) कसौंजी।

कसीसः (स) कासीस।

किं (स) क्या, सेवा, टहल, अथवा।

किंशुक (स) } पलाशवृक्ष ढांक,
किंसक (प) } फूल।
किंसुक }

किस्वित् (द) क्या। [कर, दास।

किङ्कर (स) सेवक, नौकर, चा-

किङ्किराटः (स) } बबूर वृक्ष।
किङ्किरातः (स) }

किंकिरातः (स) किंकिरात।

किङ्करी (स) दासी, चाकरि-
णि, टहलनी।

किंकिनि किङ्किणी (स) कटि
भूषण घुंघुरु, क्षुद्रघंटिका,
करधनी, मेखला।

किञ्चिन (स) कछु, कुछ।

किञ्जल्कः (स) कमल के फल
के पखरियों के भीतर का
केसर।

किञ्चित् किञ्चिन् (स) अल्प,
थोड़ा, कुछएक, थोड़ासा।

किचक (स) बांस।

किम किम्हं (प) कौन, को,
क्रोध, घाव, क्यों नहीं।

किट्टः (स) लोहे का मैल।

किटिसूत (स) रेशम ताग।

किट्टिः (स) लोह, सिहान,
पत्थल।

किपिही (स) चिरचिरी।

कितव (स) छलिया, चोर।

कितवहः (स) धतूरा।

कितवनः (स) भगिटउर।

किन्नर [स] गायन, देवजाति,
कुवेर) सुरभंडारी, वह देव-
ता जो गाते हैं।

किन्नरी (स) किन्नर की स्त्री,
किन्नर एक जातिके देवता।

हैं जो स्वर्ग में जाते हैं।

किमपि· (स) कुछ भी, कुछ थोड़ा सा। [विधि।

किम· किमि· [प] कैसे, कौन

किमिलह· [द] क्योंकर पावे।

किम्पुनर्· (स) फिर क्या कहना है।

किम्वा· [स] क्या अथवा।

किम्शुक· [स] पलाश, ढांक।

किरचि [द] } कणिका, टुकड़ा,
[स] } देशवाचक।

किरण· [स] रश्मि, सूर्य का तेज। [वार।

किरवान· [स] कृपाण, तल-

किरात· [स] व्याधजाति, भिल्ल, निषाद।

किरातः· [स] } चिरैता।
किरातकः· [स] }

किरातिनी } [स] भिल्लनी,
किरातिन } व्याधा स्त्री।

किरिकिरा· [स] रोड़ी, कङ्करी।

किरिच· [द] खपड़, टुकरा।

किरीट· [स] मटुक, श्रीतस, मुकुट, ताज।

किरीटी· [स] कृष्ण, अर्जुन, मटुकधारी। [दृढ़।

किल· [स] निश्चय, निश्चित,

किलक· [स] हंसी, चटक, चमक, कदाचित।

किलिम· [स] देवदार।

किलकिला· (स) वानरों की किलाहट हंसी।

किल्विष· [स] पाप, मल।

किंतु· [स] पश्चातर लेकिन।

किशलय· [स] कोमलपत्र, टुइटुओ, पुट, कोंपल, नयोनपत्ता, नरमपत्ता।

किंशुक· [स] पलाशवृक्ष, ढांक।

किसु· (द) किस का।

किशोर· [स] वयसविशेष, बालकसंज्ञा, बाल और युवा अवस्था का बीच, लड़का।

किष्किन्धा· [स] पुरी विशेष।

किसान· (प) खेतिहर, गृहस्थ, जोतदार।

कीच· [द] चहटा।

कीचक· (द) पोला बांस।

कीट· (स) कीड़ा, कटुकविशेष।

कीवर· तीवर· धीवर· पीवर [स) इति जाति विशेष।

कीर· कीरक· [स] तोतापच्छी, शुक, सुगा, सुआ।

कीरत· [प] } जस, कीर्त्ति।
कीरति· }

कीर्त्तन· [स] यशगान, गुणवर्णन, कथन वर्णन· उच्चारण।

कीर्त्ति· (स) यश, स्तुति, कीरत, प्रशंसा, विस्तार, तारीफ़, नामवरी।

कील· [स] मेख, कीला खूंटी, कांटा, खिरचा, भिन, खरिका।

कीलक· [स] बन्धकारी, रोक।

कीलाट: [स] फटाहुआ दूध।

कीलाल: [स] जल, नीर, मांड भात का पानी।

कीर्त्ती· कीर्त्ति, (द) जस।

[बन्दर।

कीश· कीशुलांगूर· [स] बानर,

कु· (स) बुरा, निन्दा, पृथ्वी, भूमि, नीच, नष्ट।

कुचाड़ (द) बुरा समाचार।

कुक्कुर· (स) कुत्ता।

कुंवर· (प) राजकुमार, राजपुत्र।

कुकाठ· (प) बबूर इत्यादि काष्ट जाको खूटा होत है पुष्ट, अथवा काठ का शनैश्चरग्रह को मूर्त्ति गढि मंत्रित करि जा राज मों दुष्ट गाड़ते हैं वा विध्वंस होत।

कुक्कुर: (स) घुनेर।

कुक्कटशिखा: (स) सिरिआरी।

कुक्कटाण्डकुट्टी· (स) साठी धान।

कुकुन्दर: (स) कुकुरवंधा।

कुकाठु· (द) बहेड़ा।

कुक्कुट, कुक्कुट: (स) मुरगा पच्छी, चरणायुध, मोरपच्छ, सिरिआरी।

कुच्छि· (स) कोख, उदर।

कुखेत· (प) नष्ट खेत, बुरा खेत, वाममार्ग।

कुङ्कुम· (प) केसर पुष्प, गन्ध

द्रव्य विशेष २ केसर या जाफरान।

कुङ्कुमा (स) गुलाल या अबीर रखने का पात्र जो रङ्ग भरा सभा में फेंकत हैं।

कुच (स) स्तन, छाती, थन।

कुचन्दन: (स) पतंग।

कुचाई (स) अशुभ वार्त्ता, अशुद्ध कथा।

कुञ्चित (स) टेढ़ा।

कुज (स) मङ्गल, वृक्ष, द्रुम नाम, भौमासुर।

कुजन्म (स) शनैश्चरी मूर्त्ति, शनि ग्रह। [पृथ्वीजा।

कुजा (स) मङ्गला, देवी,

कुज्योती (स) विषयी, संसारी।

कुञ्चिका: (स) मेथी।

कुञ्ची (स) मगरैला।

कुञ्चित (प) वेशवक्र, कोच-काया, घुंघुआर, घुंघुरारे, टेढ़ा।

कुजोगी कुयोगी (द॰स) विषयी।

कुञ्ज (प) (म) (फ़) कुड़ुकवायो, निकुंज मण्डवा, गोमा, कुरचवायो, कओज्ञ वृक्ष समूह।

कुञ्जर, कुञ्जल (स) हाथी, गज।

कुञ्जनिका (स) दो तरह की राई।

कुञ्जारा (स) वाचा वृक्ष।

कुञ्जरासन: (स) पीपर।

कुट (स) पर्वत शिखर, निश्चय लोह ताड़न।

कुटज: (स) कोरैया।

कुटजबीज: (स) इन्द्रयव।

कुटन्नटा: [स] सोनपत्ता।

कुटन्नट: [स] कैवटी, मोथा।

कुटिल कुटिल: [प स] वक्र, कपटी, नष्ट, भौं, टेढ़ा २ तगर।

कुटुम्ब [स] परीवार, घर के लोग।

कुटी कुटीर [प] भवन, स्थान, झोंपड़ी, २ सूक्ष्म।

कुटेरक: [स] श्यामवर्वरी १ तूनवृक्ष।

कुठारा [स] कुल्हाड़ी, टांगी, परशु, फरसा।

कुठारी [स] कुल्हड़िया, गड़िया, टांगी।

कुठाव [?] बुरी जगह।

कुठाहर·[प] नीचजगह, नष्ट जगह।

कुठिन· कुण्ठित·[स] धारहीन, लज्जित, भोथा, आलसी।

कुण्डकको·[स] सलैया।

कुण्डलनी·[स] जिलेबी, गिर्नी। [स्रोय।

कुण्डली·[स] गुरिच, या गि

कुण्डो·[द] बोहे की टोपी, रथ वस्त्र।

कुत·[स] [अव्यय] कहांते, किधर में, वरको।

कुतस्त्वः·[स] [अव्यय] कहांविमें, कहांपर।

कुतर्क·[स] कुतरक नीचविचार, बुरीतर्क।

कुतूहल·[स] कौतुक, परिहास, खेल, आश्चर्य, विचित्र, सुन्दर।

कुचित्·(स) कहीं, कदुरीं।

कुत्र·[स] कहां।

कुत्सा·[स] निन्दा, घवणा, अपमान। [नीच।

कुत्सित·[स] निन्दित, मलीन,

कुत्सितशाल्मली·[स] शीमर का भेद।

कुथ·[स] प्रातस्नान धारीपुरुष, पीड़ित॥ [बुद्धि।

कुदाव·[स] कुमति से कल्पित

कुद्दाल·[स] कचनार।

कुदृष्टि·[स] नीचदृष्टि, पापदृष्टि, खोटीनिगाह।

कुधर·[स] पर्व्वत, गिरी, पहाड़।

कुधान्य·[स] खोटी अन्न।

कुधात· कुधातु·[द०]नष्टधातु, लोहा।

कुसटी·[स] धनियां।

कुनटी·[स] मयनसिल।

कुनासक·[स] यवासा।

कुन्त·[स] [द] उत्तम, बरछी त्रण, कवाक.बरछी, भालाकुञ्ज,मखाना।

कुन्तर· कुन्तल·[स] कोहड़ाफल, बालों की कटूरी शीमित।

कुन्द,कुन्दः[स] गोलाकार,मित्र, आश्विनमास, पुष्प २ कुन्दफूल, फूलविशेष, श्वेत,

कुमुदिन, समुद्र, कांधा ।

कुन्द्र· [स] सफेदफूल ।

कुन्दरुः· [स] गन्धाबिरोजा ।

कुन्दी· [प] कपड़ों का घोटना ।

कुप· [स] कुआं ।

कुपथ· (स) नीच मार्ग्ग, नीच मग, कुमार्ग, बुरारस्ता, वेदविरुद्ध, पाखण्ड ।

कुपथ्य· (स) बदपरहेजी, नष्ट परहेजी, नष्ट भोजन ।

कुपीलुः· (स) मकरतेन्दु ।

कुब्ज· (स) कुबड़ा ।

कुपित· (ट) रिस भरा हुआ ।

कुवलय· (स) कमल, पद्मवन ।

कुवलम्· (स) वेरफल ।

कुविहग, कुविहङ्ग· (स) बाजपक्षी, नष्टपक्षी ।

कुबेर (प) (स) } सुरभण्डारी । नल पिता, कुमीसर ।

कुबेराक्षी· (स) पांडर दृक्ष ।

कुब्जकः (स) कुब्जक वृक्ष ।

कुभोग· (स) नष्ट भोग, परस्त्री गमनादि ।

कुमार· (स) (प) } बालक, समुद्र, राजपुत्र, विनु बिवाहा, अवस्था विशेष, कामातुर, सनकादि, पिता, सौन्दर्य, अग्नी, कार्त्तिक, थोड़ी अवस्थावाला या बिना व्याहा अरु कोई देश भी सो इहित को भी कहते हैं ।

कुमारकः (स) बरुणवृक्ष ।

कुमारी· (स) (प) } कन्या, पुत्री, बिनाब्याही, कामातुरी ।

कुमुख· (स) राक्षस सेना पति, बुरा मुख ।

कुमुदः (स) कोई पुष्प, बानर विशेष, कमल १ गुगुल २ भेंट स्वेत कमल, कमोद ।

कुमुदकः (स)पंडरिया ।

कुमुदबन्धु· (स) चन्द्रमा, शशी ।

कुमुदिनी· (स) कोईपुष्प, कमलिनी, पद्मिनी ।

कुमुदनी· (स) भेंट का ५ अंश

जड़, पत्ता, डंटी, फूल, फल।

कुमुद्वतीबीजः (स) } बेरी।
कुमुद्वीजः (स) }

कुमुदिका: (स) कायफल।

कुम्भ· (स) घट, कलश,

ह्रस्वविशेष, हाथी का मस्तक, बड़।

कुम्भकर्ण· (स) निशिचर विशेष

रघशूर, रावण भ्राता।

कुम्भकार· (स) कुम्हार, कुलाल

कुम्भज· (स) अगस्त्य मुनि।

कुम्भिक· (स) जलकुम्भी।

कुम्भिका· (स) कायफल।

कुम्भज ऋषि· (स) अगस्त्यमुनि।

कुम्भिनी· [स] बेसरि भूषण।

कुम्भी· [स] हाथी, गज।

कुम्भीर: [स] मगर पानी में का

कुम्भीपाक· [स] नरक विशेष।

कुयन्त्र· [स] मेख, खूटा, अनर्थ

कारीयंत्र।

कुर· [द] टेढ़ा।

कुरङ्ग· [स] मृग, नष्ट रंग हरिण

भात २, तामे का सा रंग

का हरिन याने लाल

रंग का। [कटसरैया।

कुरण्टक: [स] पीला फूल का

कुरण्टक: [स] बाणपुष्प।

कुरर: [स] बड़ाकुल पक्षी।

कुरुबक: [स] लाल फूल का

कटसरैया।

कुरविन्द: [स] } मोथा।
कुरविन्दनामा· [स] }

कुररी· [स] } क्षेमकरणी पक्षी
[द] } प्रसिद्धो, कूंज

नाम पश्चिमख्यात प्रसिद्ध।

कुराई· [द] पशु फन्द, जोगी

बन्ह के चले बीच में पशु

परे पशु का आकार बुची

तदाकार होत है वा बुची

में पशु मनुष्यादिक पशु

फंसि के गिरत है, जाको

फ़ारसी में गवीख्यात है,

रोड़ो, किरी किरा। पांव

फसने का बिल।

कुरोग· [द] मृत्यु कारीरोग।

कुरुक्षेत्र [स] स्थान विशेष।

कुरी· [प] } सवजाति, वर्ण
[स] }

वाचक मालाकार आदि, आश्लाघ भेद।

कुरुचि· [स] नष्टरुचि, नीच वासना, घिना।

कुरुराव [स] युधिष्ठिर पाण्डव

कुंचित· [स] टेढ़ा।

कुरुवत· (स) फूल विशेष।

कुरुवत वृतैः (वि, मराहपस्व) कुरुवक से घिरे हुए का।

कुरुषु· कारियो तू।

कुक्कुट· [स-प] मुरगा पक्षी मूढ़, भाड़न।

कुर्व्वत } करता हुआ।
कुर्व्वन }

कुल· [प] वंश, घर, समूह, समस्त, नदी का तट, एक जाति के पशुओं वो पक्षियों का समूह।

कुलक: स पत्थर १ मकरंद २

कुलत्य: [स] } कुरथी।
कुलत्यिका· [स] }

कुलसहुना·[स] कुसुमकणा।

कुलकाल· [स] समस्त काल, विवाकुया समय।

कुलटा· [स] व्यभिचारिणि।

कुलघातक· [स], कुल के नाश करनेवाला।

कुलकेतु·[स]कुल का पताका।

कुलद्रुह·(स)कुलद्रोही, वंशदोषक

कुलपुत्र· [स] वंश पुत्र।

कुलपुत्री· [स] वंश पुत्री।

कुलाह, कुलाह· [फ] शिरोविष्टन, टोपी।

कुलाल·[स] कुम्हार।

कुलि· [ट] सब।

कुलाहल· [स] कोलाहल, कुतूहल।

कुलिङ्ग· [स] गरवैया पक्षी।

कुलिश· [स] वज्र, पाषाण, हीरा।

कुलिशहद· [स] निशिचर विशेष, सेना पति।

कुली·[स] बनभांटा।

कुलीर: [स] ककरासिंगी।

कुलीन· [स] उत्तम कुल का श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हुआ पुरुष।

कुंवर· [प] राजकुमार, बालक

पिता, सौन्दर्य्य, अग्नी कार्त्तिक, सनकादि ।

कुवलम् [स] बैरफल ।

कुबेराची· [स] पाँड़रवृक्ष ।

कुशक:· [स] कुशकवृक्ष ।

कुवार· [प] आश्विनमास, आसिन ।

कुश: [स] सीतासुत, दर्भ, कांश, मीर, दानव, दर्लि, द्वारका, कुस २ घासविशेष, दाभ ।

कुशकेतु· [स] जनक के भ्राता लघु, जनक के भाई का नाम ।

कुशल· [स] आनन्द, पण्डित, जन, चतुरजन, कल्याण· युक्त, प्रसन्नखैरियत, क्षेम, निपुण ।

कुशलिन्·(स)प्रसन्न, क्षेमसहित ।

कुशली· [स] सुखी, आनन्दी, पण्डिता ।

कुशुम· [स] पुष्पविशेष, सामान्य पुष्प, फूल ।

कुसमऊ [द] अनवसर, बुरा समय । [वृन्दावन ।

कुशुमाकर· [स] वसन्तऋतु,

कुशुमावलि· [स] कामदेव, धनुष्, पुष्प पङ्क्ति, पुष्पमाला ।

कुशुमित· [स] प्रफुल्लित, कुसुमित, फूलाहुआ ।

कुशेशय· [स] कमल, कंज ।

कुष्ठ· [स] कोढ़, महारोग, श्वित्र, कोढ़रोग ।

कुसटी· [स] धनियाँ ।

कुसुम· कुसुम· [स] कुशुमफूल· विशेष, पुष्प, फूल सब फल ।

कुसुम्भ:· कुसुम्भ· [स] कौसुम का बर्रे कसुम ।

कुसुम्भतैल· [स] बर्रे का तैल ।

कुसुम्भबीज:· [स] बर्रे या कुसुम का बीया ।

कुस्त:· [स] गुग्गुल: ।

कुस्तुम्बुरु:· [स] धनियाँ ।

कुस्मित· [स] प्रफुल्लित ।

कुसेसय: (स) कमल ।

कुक्षि· (स) कोख, उदर ।

कुष्माण्ड, कुष्माण्ड:, कुम्हड़, } (प) कोंहड़ा: (स) फल ।

कुष्माण्डवटी (स) कोंहड़ौरी ।

कुष्माण्डी (स) कोंहड़ा ।

कुष्ट: (स) कूठ ।

कुष्टगन्धो (स) घसगन्ध ।

कुष्टघ्नी (स) वकुची ।

कुष्टभेद: (स) पुष्करमूल ।

कुंकुम [ह] केशर, रोरी ।

कुंवर (ह) राजकुमार ।

कूकना (प) शब्द करना गुंगना ।

कूजति (स) कूजते हैं, बोलते हैं कूजना ।

कूजित (स) पक्षियों का बोल

कूट (स) (प) } निर्विकार, बहुत स्थल, पर्व्वत शिखर, पहाड़, ठेर, भर, कपट, दैत्यनाम, पहाड़ की चोटी, निहाई।

कूटस्थ (स) सर्व्वदा एक प्रकार से स्थित, स्थिर निर्विकार परमात्मा ।

कूटज: (स) कोरैया ।

कूटशाल्मली (स) सेमर का भेद ।

कूपमत्स्य:(स) कूआं की मछली,

कूरम् (स) भात ।

कूर्च्चशीर्षक: (स) जीवक रूप भक इसके न मिलने में विकाइकंद: १ नारियर २।

कूटी (स) स्थल वचन ।

कूप (स) कुआं ।

कूपड़ी (ह) (प) } सीशा की टोपी, भङ्ग घोटने का पात्र ।

कूबर, कुबरा (प) टेढ़ा, बाङ्का ।

कूर (ह) (प) } मिथ्या, बाङ्का, निर्दया, क्रूर, कठोर, कपटी, टेढ़ा ।

कूर्दन (स) क्रीड़ा, खेल ।

कूर्म्म (स) कछुआ, वायुविशेष ।

कूल (स) नदी तट, किनारा, कोरा, कगारा ।

कूलेचरा: (स) पानी में के चरने वाले चतु:पद ।

कूढ़ी (स) घोड़े की टोपी ।

कूलद्रुम· (स) नदीतट वृक्ष ।

कृच्छ्र· (स) क्लेश, दुःख ।

कृकवाकुः (स) मुर्गा पक्षी ।

कृत· कृत्य· कृतक· (स) सत्ययुग, आदियुग, बना, रचा, कृतार्थ, कामयाब, क्रिया, करतूति, कर्म कियाहुआ, बनाया हुआ ।

कृतमालः, (स) अमलतास ।

कृतवेधना· (स) झींगी, तर्कारी ।

कृतघ्न· (स) किये हुये को न मानने वाला ।

कृतवसतयः, (वि· हंसा) किया है वास जिन्हों ने ।

कृतज्ञ· (स) यशी, कृतार्थी, उपकार मना, उपकार मानने वाला, गुणवादी, सर्व के कृतज्ञाता, त्रिकालदर्शी ।

कृतनिंदक· (स) कृतघ्न ।

कृताञ्जली (स) अंजलीबन्ध ।

कृतान्त· (स) आगमशास्त्र, सिद्धान्त, यमराज, मृत्यु, काल, विधाता, दैव, यम ।

कृतारण्य· (स) उपवन, वाटिका ।

कृतार्थ· (स) निहाल, सनाथ, कृतकार्य ।

कृतिक· (स) आकार, शरीर ।

कृती· (स) पुण्यात्मा, पण्डित, गुणी ।

कृत्त (स) कटा हुआ ।

कृत्ति, (स) खाल, चर्म ।

कृत्· (स) कर्त्तव्य, रचित, कर्म ।

कृत्कृत्य· } (स) कृतार्थ, निहा-
कृतकृत्य· } ल, कामयाब ।

कृत्य· कृत्या· (स) करणयोग्य, करि के, काम ।

कृत्वा· (स) करि के, कर के ।

कृत्रिम· (स) बनावट, बनावटी, कल्पित, नकली ।

कृत्स्न· (स) समस्त, सकल, संपूर्ण ।

कृपण· (स) शूम, कञ्जूस, अदाता, याचक, कादर ।

कृपा· (स) दया, क्षमा, घृणा, मेहरबानी ।

कृपाण· } (स) नाम हथियार,
कृपानि· } तलवार विशेष हि
} थारा, गराडीग, सूर्य,

लोभी, दीन।

कृपालु· (स) दयालु मिहरबानी

कृपिण·} (पस·) शोम, चित्त म·
कृपिन·} लीन।

कृमि· (स) कीड़ा, कीट, लाग्र, किरौना।

कृमिका· (स) दोनों राई।

कृमिघ्न: (स) बाभिरंग १ हलदी २

कृमिज: (स) स्याह अगर।

कृमिजग्ध: (स) स्याहअगर।

कृमिलघ्न: (स) रेंगनियाँघास।

कृश· कृशित (स) दुर्व्वल, सूक्ष्म, क्षीण, पतला, दुबला, दूबर।

कृशरा· (स) खिचरी।

कृशानु· (स) अग्नि, हुताशन, अनल, आग, चीता औषधि।

कृष· (द) विशेषण, जोतकाश्त, दुबला।

कृषक· कृषाण· (स) किसान, जोतहार।

कृषि· (स) खेती, काश्त, चास।

कृष्ण· कृष्णः, (स) कालावर्ण कृष्णदेव, काला, विष्णु, भगवान, कालारंग २ गोलमिर्च ३

कृष्ण कापोत: [स भैंस चतुः पद।

कृष्णगौ· (स) श्याम गऊ।

कृष्णजीरक: (स) स्याह जीरा।

कृष्णतिल: (स) काला तील।

कृष्णतुलसी· (स) श्यामतुलसी।

कृष्णपक्ष: (स) रांझ मछली को भेद, अंधेरा पख।

कृष्णपाकफल: (स) करवंदा।

कृष्णफला· (स) भूसिम्बा १ बकुची २।

कृष्णभेदा· (स) कुटकी।

कृष्णमुद्ग: (स) काला मूंग।

कृष्णमृत्तिका· (स) स्याहमट्टी।

कृष्णला· (स) सुपेद कमईल।

कृष्णवर्ण: (स) रीठा।

कृष्णवीज: (स) तर्बूना।

कृष्णवृन्ता· (स) गम्भार १ पांडर २ वन उरिद ३।

कृष्णव्रीही· (स) स्याहधान।

कृष्णसर्षप: (स) दो तरह की राई।

कृष्णसार: (स) जंगली शीसम १ आसन २।

कृष्णा· (स) पीपर १ पर्परिया वृक्ष २ सेवती फूल ३ स्याहजीरा ४ गम्भार ५।
कृष्णफला· (स) मिरिच औषध
कृष्णला· (स) गुंजा, काकचिञ्चो।
कृष्णसार, (स) करसायर अर्थात् काला हरिण।
कृष्णा: कृसना, (स. द) कृष्ण पीपलि, केशो, कारी, वसुदेव के पुत्र काला, रंग।
कॢप्त, (स) बनायाहुआ, सजा हुआ।
कॢप्तच्छेदैः, (वि पुष्पैः अथवा नखैः) टुकड़ों से बनाय हुआ।
के, कौन।
केकाः कका· (स) मयूरका शब्द।
केका (द) मोर की कूक।
केयूर· (स) व्यवहार, क्रिया शब्द का बहुवचन, यज्ञादि, प्रीति, आज्ञा।
केकी· (स) मोरपक्षी, मयूर।
केचित्· (स) कौन से के, कोई कोई।
केतक (स) केतकी।
केतकी· (स) पुष्प विशेष।
केतकाधानहेतोः, (वि॰ वाक्य) केतकी के गर्भ का हेतु।
केतु· (स) बाहन, ध्वजा, ग्रह भेद, पताका, झारी ग्रह विशेष।
केतुग्रहवल्लभः (स) वेदूर्य्यमणि।
केतुतारा· (स) पुच्छलतारा, धूमकेतु।
केर· (स) का, सम्बन्धकारक का चिन्ह।
केदारधान्यः (स) क्यारी की धान।
केमुक: (स) कीचपासाग!
केल· केलि (स) खेल क्रीड़ा विहार।
केन्द्र· (स) वृत्तका, मध्यभाग, मरकज़।
केलि· केली· (स) केल· } क्रीड़ा, विहार, खेल, घर।
केवट· (प) मल्लाह, मछुवा, कैवर्त।
केवल· (स) मात्र, एकैकहिं, फकत, सिरिफ़, मुख्य, एक

ख़ाली, समग्र मर्कलातमाम।

केश· (स) बाल, रोम, भाग।

केशनाशक: (स) सुगन्धवाला।

केशपर्णी· (स) लाल चिचिंड़ी।

केशपाश (स) बालों का जूरा।

केशमुष्टी: (स) बकाइन।

केशरञ्जन: (स) } भँगरा।
केशराज: (स) }

केशहन्ती· (स) सभी वृक्ष।

केशर(स)वृक्षविशेष, बकुल, फूल का रुवाँ।

केशरि· (स) पुष्पविशेष।

केशरी· (स) नाम बानर हनुमान के पिता, सिंह।

केशरीनन्द· (स) हनुमान, बज्राङ्ग।

केशव· (स) विष्णु, कृष्ण।

केशिनी· (स) राजा सगर की ज्येष्ठा स्त्री।

केशी· (स) सारिका १ शतावर २

केसर: (स) नागकेसर या नागेसर।

केसरी· (स) सिंह, माता पिता, केशरी, हनुमान के पिता।

केसरीकुमुद· (स) माता पिता कोई का।

केहरी· (स) सिंह, मृगराज, केशरी, हनुमानजीका पिता।

केह· [द] कोई, कश्चित।

कैकयी· [स] राजा केक की पुत्री कश्मीरवासी एक राजा दसरथ की लघु स्त्री।

कैटभ· [स] दैत्यविशेष।

कैतव· [स] कपट, छल, माया।

कैकय· [स] राजा, देश विशेष।

कैपट्र्य: (स) काय फल।

कैतववादिनी· (स) दूती, ठगिनी।

कैथी· (स) मुण्डाक्षर, मुड़िया, नागरी अक्षर।

कैद· [फ़] बन्धमान्. बन्ध।

कैरवचन्द· [स] कुंई के लिये चन्द्रमा।

कैदारजलम· [स] किआरी का पानी।

कैवर्ती· [स] भेंट।

कैवर्त्ती फल: [स] बेरी।

कैरव· (स) श्वेतकुमुदिन।

कैरवइ: (स) भेंट।

कौरवी· (स) मैत्री।

कैरात· (स) चिरैता।

कैलाश· (स) पर्व्वत, विशेष, नामपहाड़।

कैवर· (स) मल्लाह, कोईं।

कैवर्त्त· (स) मल्लाह, धीवर।

कैवर्त्तीमुस्तः (स) केवटी मोथा।

कैर· (स) कोई।

कैवल्य· (स) मुक्ति, कल्याण, मोक्ष, ब्रह्मप्राप्ति-जन्म मरण से रहित होना।

कोक· (स) चकवापक्षी, शास्त्र भेद, कमल।

कोकनदः· (स) लाल, कमल।

कोका· (स) चकईपक्षी, चकवा की भेदी।

कोका· (स) चकवा-चकई एदुनी पक्षी, को पुरुष वाचक, का स्त्रीवाचक, कमल, कंटिया।

कोकिल· (स) कोइल पक्षी, पिक।

कोकिला·(स) कोइल पक्षी।

कोकिलाक्षः (स) ताल· मखाना।

कोकी· (स) सूर्य्यमुखी पुष्प, चकई।

कोकू· (स) लघु कागज।

कोख· (द) कोखा, जरायु, पेट।

कोछ· (द) गोदी, कौर।

कोछि· (द) अंचल, गोदी।

कोट· (स) किला, घेरा, गढ़, दुर्ग।

कोटर· (प) खोढ़रा वृक्ष का, वृक्ष की खोडर।

कोठर· (द) खोढरा।

कोटि· (स) (स)} करोड़ संख्यावाचक, घुंघुरु, पूर्व्व पक्ष, धनुष का कोर।

कोटी· (स) धनुष् की शोभा, अग्रभाग, करोड़ पक्ष, धनुष का कोर।

कोठार·(प) कुलहारी, टांगी।

कोणप· (स) रुधिर, लोहू।

कोतल· (फ) (प)} खाली घोड़ा, बहुतात।

कोथ·(स) (प)} मोथा, कुण्ठित।

कोया· (द) कहां, कहांपर।

कोथी· (स) क्लेश, संकोच।

कोदंड· (स) धनुष, चाप, कमान।

कोदक· (फ) लड़का, बालक।

कोद्रव. (प)} कोदो धान्य,
कोद्रव: (स)} विशेष। [गुम्मड

कोप· (स क्रोध, राग, तामस.
[धाम्य पक्षी।

कोपर· (स) पात्र विशेष,
[थारी विशेष।

कोपश्यार· (द) पानदान,

कोऽपि· (स) कोभी, को
निश्चय।

कोपी· (स) क्रोधी, तामसी,
रागी, कोई।

कोविद· (स) पण्डित, गुणी,
बुद्धिमान·चतुर।

कोमय· (स) कमल, जलज।

कोमल· (स) नरम, पच्ची,
सुकुमार, मृदु नर्म,
नाजुक। [वड़ी।

कोमलवल्कला· (स) इमली

कोमला· (न) सिंदुरिया।

कोय· कोयण· (प)} कोना, गो·
कोये· (द)} या, घांख
का कोण, घांख का संपूर्ण
श्वेत ढेला।

कोर·(प)} किनारा, पक्ष।
(फ)}

कोरि· [स] खोद करके, कोर·
ना, सुरचाना।

कोरङ्गी· [स] चवघड़ा इला·
यची।

कोरदूष: [स] कोदो धान्य।

कोरी·[प]} करोड़, बोस २०·
[द]} संख्यावाचक,
जोलहा जाति विशेष।

कोल·[स]} शूकर, ग्वाल, ग·
[प]} ली, पहाड़िया,
औषध, विशेष बेरफल, सूअर।

कोलकम्· [स] कङ्कोल।

कोलवल्ली· [स] गजपीपर।

कोलवालुकम्· [स] गन्धक।

कोलाग्निमवो· [स] भूमीम।

कोला· (स)} शूकरी, गोटी,
(प)} बगल, गीदड़,
२ पीपर।

कोलाहल· (स) कूदव, रोला,

कलकल, गुलगारे, चिल्ला·
हट, बड़ा शब्द ।

कोली· (प) गली, बेड़ा ।

कोविद· (द) पंडित, बुद्धिमान, चतुर । (खु़रानद ।

कोश· (स) अवलम्ब, आश्रित

कोशकार: (स) स्याह पोर की कतारी । (मांस ।

कोशवकम् (स) शंखादि का

कोशफल: (स) कंकोल ।

कोशस्थ: (स) शंख, घोंघा, कौड़ी, सितुहा आदि ।

कोशाम्र: (स) छोटा ग्राम ।

कोशल· कोशला, कोशलपुरी (स) देश विशेष, अयोध्यापुरी, एक देश का नाम ।

कोशलेश (स अयोध्या के राजा ।

कोष· (स) (प) भण्डार, अभिधान, घर, गासा, कमल का मध्य, खज़ाना ।

कोह· (प) (फ़) कोप, क्रोध, पर्वत ।

कोहबर (द) कौतुक घर

ब्याह का । [कोहाना ।

कोहाव· (प) कल्पना, रूठना,

कोही (फ़) (प) पहाड़िया, कोधी, कोपी ,

कौ· (स) पृथिवी में, भूमिमध्य ।

कौट: (स) कौटज: कोरैया

कौणप· (स) राक्षस, निशाचर ।

कौतुक· (स) लीला, मायावरी, कुतूहल, खेल, आश्चर्य, अचंभा तमाशा ।

कौतुहल· (स) परिहास, तमाशा, अनायास, अचम्भा नई बात जाने की इच्छा ।

कौन्ती (स· रेनुका ।

कौप्य: (स) कूंआं का पानी ।

कौप्यजलम् स) कुंआं का पानी

कौमुदी· (स) चन्द्रिका, चान्दनी ।

कौमोदिका· (स) गदा आयुध

कौरव, (स) कुरु की सन्तान ।

कौल· (स) [फ़] वाममार्गी विश्वासघाती, वचन, क़रार पाखंडी ।

कौलीन [स] कुरीवर्चा ।

कौशल· [स] देशविशेष, प्रवीण, चमता ।

कौशकः [स] छोटा ग्राम ।

कौशिकः [स] गुग्गुल, इन्द्र, उमू, विश्वामित्र, मुनि ।

कौस्तुभ· [स] मणिविशेष, समुद्ररत्न, विष्णुभूषण ।

क्रकच्छदः, क्रकचा [स] केतकीपुष्प ।

कंकन [द] चूरी

कंकय [स] कड़ा, कंकना ।

कंशारुण [स] लाल कमल ।

कण्ठाभ [स] कण्ठ के तुल्य ।

कंदा· [स] कमल आदि की जड़, मेघ समूह ।

कंदावदात· [स] बादरों के समान ।

क्रतु· [स] यज्ञ, याग, पूजा ।

क्रयनकः· [स] भगर ।

क्रव्यः· [स] भगर ।

क्षत· क्षत्र· क्षतज्ञ· [स] कृतार्थ, उपकार के जानने वाला ।

कृपाणी· [स] तरवार ।

कृपायतन· [स] कृपा के घर ।

कृपाल· [स] कृपा के पात्र ।

क्रव्यात्, क्रव्याद· (स) राक्षस, भक्षप ।

क्रम· (स) एकक, रीति, परिपाटी, भांति, तरतीब, सीढ़ी । [भांतित ।

क्रमणा· (स) एककते, भांति

क्रमुक: (स) सुपारी वृक्ष १. पयठानीलोध २, सुपारी ३, तूत ४ ।

क्रशित· [द] दुबला, । [इच्छा ।

क्रान्ति· (स) प्रकाश, शोभा,

क्रिया· (स) काम, व्यवहार, शपथ ।

क्रीड़ा· (स) केलि, खेल, कौतुक, खेल, पति स्त्री का वाग्विलास । [में मग्न ।

क्रीड़ाकौतुक· (वि, ता:) खेल

क्रुध· (स) तामस, राग ।

क्रूकर: (स) करील ।

क्रूकरोपत: (स) करील वृक्ष ।

क्रूर: (स) क्रूर, निर्दया, कठोर क्रोधी, कनद्दल, परद्रोह,

खोटा। [खरीद फ़रोख़्त।

क्रयविक्रय (स) लेना, बेचना,

क्रूरकर्म्मा (स) अर्क पुष्पो।

क्रूरगन्धः (स) गन्धक।

क्रोड़ (स) विपिन, बन, संख्या वाचक, हृदय, छाती।

क्रोड़कः (स) नागरमोथा १ मोथा २।

क्रोड़जः (स)
क्रोड़मेतुकः } मोती।

क्रोड़ी (स) बाराहीकन्द।

क्रोध (स) तामस, राग, कोप, गुस्सा।

क्रोश (स) कोश, भूमिका चार सहस्र हाथमार्ग।

क्रोष्टवित् (स) पिठवन।

क्रोष्टसिता (स) बिलैयाकन्द।

क्रोष्टा {(स) शृकाल, सियार, गीदड़, रोनेवाला।

क्रौञ्च (स) चौथाद्वीप, बक, १ कुररी पच्ची २।

क्रौञ्चरन्ध्र (स) नाम है एक घाटी का जिस में होकर हंस आते जाते हैं।

क्लान्त (स) थका हुआ।

क्लान्त हस्ताः (वि० विशेषाः) थके हैं हाथ।

क्लिष्ट (स) दुःखित, दीन, खिन्न, कठोर, दुःखी, मलीन।

क्लिष्टकान्तेः, (वि, इन्दोः) मलीन है छवि जिसकी।

क्लीतकः (स) जेठीमध।

क्लीतका (स) नील। [समर्थ।

क्लीव (स) नपुंसक, निर्ब्बल, अ-

क्लेद (स) गीलापन, भीजा, पीव। [विलाप।

क्लेश (स) दुःख, कष्ट, पीड़ा

क्लेशिन, (स) दुःख देनेवाला।

क्व (स) कहां, कुतः।

क्वङ्गू (स) कौनी।

क्वचित् (स) कबहिं, कहीं,

क्वक्कु (स) रागकछबी विशेष।

क्वाथ (स) काढ़ा या जोशांदा।

क्वथिता (स) कढ़ी।

क्वाणित (स) बजताहुआ, झनकारताहुआ।

कंधर (स) शिर।

कंधरा (स) गला।

कंध· (स) स्कंध, कांधा, मोटो डार। [डगमगाना।
कंपति· (स) समुद्र, कंपायमान
ख
ख· (स) इन्द्रिय, आकाश, बीयर, सूना, बिंदी, शून्य।
खं· (स) आकाश, गगण, शून्य।
खंसश्वस· (स) पवन, वायु।
खग· (स) रबि, शशी, पवन, अम्बुद, विहङ्ग, पक्षी, चिड़िया, आकाशगामी, तीर, सूर्यादिग्रह, पक्षी सब, देव, हरि, बाण, ग्रह, खचर, आकाश।
खग: (स) पक्षी सब और ऊपर खग शब्द के तुल्य अर्थ जानो।
खगकङ्क· (स) गीधपक्षी।
खगकेतु· } (स) गरुड़पक्षी,
खगकेतु·
खगपति· } बिहङ्गपति।
खगशठ· (स) कौआ।
ख…· (स) गेंड़ा, गैंडा, खड्गी।
खगेश· (स) गरुड़, खगपति।
खगोल· (स) आकाशमंडल।
खदिर: (स) खयर, कत्था।
खचना· खची·(प) } जड़ना
खचित· (स) } मणिआदि, जड़ित वा पक्षी किया हुआ, जहाज, जड़ाहुआ।
खञ्जन· } (प) पक्षीविशेष, खड़
खंड़रिच· } रिच खंडरिच, ममोलापक्षी।
खञ्जरीट:· (स) खड़रिचपक्षी।
खट· (द) सुखकरना, स्थिर होना।
खट्वा· (स) खाट, पलंग।
खटांई· खटाहीं· खटाहि· (द) सुखकरहीं, स्थिरहोहीं, टिकहिं, थिर रहना।
खटिका·(स) } लिखने की
खटी· } खड़ी।
खटीगवर: (स) बिलायती खड़ी लिखने की चिकनी।
खड्ग· } (स) तलवार, हथियार, ढाल।
खड्गा· }
खड्गी· (स) गेंड़ा, बन जन्तु।
खण्ड: (स) टुकड़ा, टुक, क़िता,

दिशा, भाग १ प्रकार, क्षोभ। निकाला, राव २।

खण्डिता (स) वह नायका जिस का प्रीतम दूसरी स्त्री के पास रहकर भोर घर आवे।

खण्डान्वय (स) लक्षण अर्थ लगावे का जो उलटि के अर्थ लगे, वा तोड़िताड़ि कै अर्थ लगावे। [लवनी।

खद्दिरक: (स) पानी में की ल·

खद्योत (स) भगजुगनी, जुगनू, कीड़ा, पटबीजना, जो रात में चमकता है, पटबिजना, सूर्य।

खनि (द) खोदकरके।

खपरिषा (द) संगबसरी।

खभार } (स) शून्यभाव भ्रमित, झंझट, शोच
खभारू } खेद, महा विपत्ति, काल, क्षोभ।

खभार (स) शून्य भाव, भ्रमित, क्लेश, पोच, क्षोभ।

खर (स) } गदहा, गधा, पशु,
(फ) } एक राक्षस, दूषण
(प) } का भाई, तृणा

तीक्ष्ण, घर्म्म, घाम, धूप, खरखराहट, रावण कर अभिमान, कठोर।

खरबूजा (द) खासमी।

खरच्छद: (स) मुंईसह १ भिड़ोहा २। [की।

खरत्वक् (स) लगौनी खेत

खरपर्णी (स) गोभी।

खरपुष्पा (स) बबरी।

खरमञ्जरी (स) चिरचिरी।

खरशाक: (स) बभनेठी।

खरस्कन्ध: (स) चिरंवंजी।

खरस्पर्शा (स) अन्दाल।

खरवृंद (स) गधों का समूह।

खरधारा [स] तेजधार।

खरारि [स] रामचंद्र।

खरतर [स] } खरखराहट अ-
[प] } धिक।

खरभर [द] क्षोभ, हलचल।

खरसान [द] सान, तेज़, चोख।

खरा [स] अजमोदा।

खरी [स] } गदही, गधी, मही
[प] } लिखे की।

खरी [द] तृण।

खर्ज्जूरः [स] रूपाद्रव्य, खजूर, छुहारा ।

खर्ज्जूरी [स] छोहारा ।

खर्ज्जूरीतरुः· [स] छोहारे का वृक्ष । [की ताड़ी ।

खर्ज्जूरीतरुतोयः· [स] खजूर

खर्पर· खप्पर· [स] भग्नखप्पर, खोपरी, भिरखोपड़ी, पीठ ।

खर्व्वूजाः· [स] खर्बूजा ।

खर्ब्बी· [स] अमरलती ।

खर्प्परः· [स] } खपरिया ।
खर्प्परी· [स] }

खर्व्व· खर्व· [स] लघु, छोटा, तुच्छ, संख्यावाचक सौ अर्बुद ।

खल· खलु [स] धूर्त्त, अधम, नीच, तिलकी, खीढौ, निश्चय, निश्चय कर के, निग्रह, खरतल, वामन, दुष्ट, अल्प ।

खलप (त) झाड़ देनेवाला ।

खस· [स] } जातिविशेष, नीच
[द] } ज़ाति नेपाल में
[फ] } प्रसिद्ध, तृणविशेष, खस्खिसा, कीलभिन्न ।

खसी (द) गिरी, बकरा ।

खसिल· (द) गिरा, खसना ।

खात· (द) तालाव । [मी ।

खाखसः· (स) पोस्ता की तुक-

खाखसतिलः· (स) पोस्ता का दाना १ पोस्ता की तुकमी २ । [बुदबुदा ।

खांड़ा· (स) तलवार, विशेष,

खानिक· (द) जो खानि में हुआ ।

खानि· } (द) घर ।
खनि· }

खांगी· (द) कमती, घटती ।

खाज· (स) खुजलीरोग, काछू, चुल ।

खार· (द) राख ।

खानोदक· (स) नारियरवृक्ष ।

ख़ामी· (फ) अज्ञानता, अप-क्कता, कचाई ।

खाल· (पद) गड़हा, नीचे चम-ड़ा, धौकनी, खाड़ी ।

खिचत· (स) जड़ित, वा पची किया हुआ ।

खिन्न· क्षीन·(स) } तुच्छ, शुष्क,
क्षीण· (प) } थकित, दुखी,

दुखिया, दूबर, दुर्बल, थका हुआ, दुःखित, श्रान्त, दुःखिया।

खिन्नविद्युत्कलत्रः (वि० भवान्) थकी है बिजलीरूपी स्त्री जिस की।

खिल· (स) पागल, धर्मील, धरन। [द्विवि।

खिला· (स) आकाश, शून्य,

खीज· खीझ· (ह) रीस, कोप।

खीजन· खीझन· (ह) रीसात, कोपकरण।

खीश· खीस· (ह) क्रोध, कोप, खुनस, मिटित, बितित, नाश।

खीसा· (स) नष्ट होजाना।

खीशा· (ह) थेली, चर्मादि, कहानी, नष्ट हो जाना।

खुवार खुआर· (फ) खराब, बरबाद, नष्ट। [क्रोध।

खुनस· खुनुस· (प) गोसा, कोप,

खुतल्ली· (स) भौं, भ्रुकुटी।

खेचर· (स) ग्रह, पक्षी, विद्या।

धर०, कोटि सबन्ध को नाचे ताको भी खेचर संज्ञा है शास्त्र प्रमाण।

खुरकः· (स) खुरारोगाधातु।

खेटक· [स] अहेर, अस्त्रविशेष।

खेटकी· (स) बधिक, शिकारी, बहेलिया।

खेत· क्षेत्र· [प] जोतीभूमि, अन्न बोने का स्थान, रणभूमि, समरभूमि।

खेड· खेड़े· [स] } टोला, टोलो
खेरे· [ह] } नगर को, पुरा, गांव आठ घर की बस्ती।

खेद· [स] दुःख, कष्ट, शोक, पछिताव, पीड़ा। [वुन्द।

खेदकरण· [स] पसेना, घाम,

खेरज· [स] धूरि, गरदा।

खेल· खेला· [प] क्रीड़ा, विहार।

खेलवार· [प] खेलाड़ी, खेलनिहार।

खेर· [फ] भला, कुशल।

खैरात· [फ] भीष, भिक्षा।

खोर· खोरी· [ह] } दूषण, दोष, गली,
[स] } ढकना, अयश, खोरी,

चन्दन की खोरी। [हीन।

खोरि· [प] लङ्गरे, लङ्ग, पगु

खोडस· } [स] सोरह, सोलह।
षोडस· }

खोह· [प] गली· गुफा।

खोड़· [स] तिलकछबि, त्रिपु·
 ण्ड्रादि चिन्ह।

ख्यात· [स] विदित, प्रतिष्ठित,
 मशहूर, प्रसिद्ध।

ख्याति· [स] प्रसिद्धि।

ग

गईबहोर· [प] जो वस्तु हेरा-
 या वा भ्रष्ट जाते मिलै,
 वा सुधारा जावे वाहीपु·
 रुष।

गगन· गगनः [स] आकाश,
 शून्य, अबरख ४ रंग का।

गगनात्मकः [स] अबरख ४
 रंग का।

गगनगत्यः· [वि॰ ती] आकाशमें
 चलनेवाले अर्थात् देवता।

गङ्गा· [स] नदीविशेष, नाम
 नदी, सन्तनऋषिपत्नी, प·
 वित्री, जानकी संज्ञा।

गङ्गाधर· [स] शिव, त्रिशूल-
 धर।

गङ्गासागर· (स) गंगा और स·
 मुद्र का संगम।

गच्छत्· (स) चलता हुआ।

गच्छन्तीनाम्· (स) चलती
 हुइयों का।

गज· [स } हाथी, करी, दो
गज़· [फ]} हाथ का नाप।

गजकान्‍तः· [स]} हाथीकामी।
गजकर्णी· }

गजकृष्णा· [स] गजपीपर।

गजपादकः· [स] वेशिआपी·
 पर। [ज, सूरमा।

गजपाटल· [स] अंजन, कज्ज·

गजपिप्पली· [स] गजपीपर।

गजमुक्ता· [स] हाथी के मांथे
 का मोती।

गजबदन· गजानन· [स] गणे·
 श, गणपति, गणेशजी का
 नाम दोहा—जयति गजा·
 नन एक रद, विघ्न निधन
 विघ्नेश। मूषक वाहन
 गौरिसुत, पुनि द्वैमातु
 गनेश॥ १॥ बहुरिबिना

यक शूर्पकरन, लंबोदर हेरंब । यह दश नाम बिनोद सत, हरि बिलास आलंब ॥२॥ पुन: नामाला में लिखा है—दो०। लंबोदर हेरंब पुनि, द्वैमातुर एकदंत । मूषकबाहन गजवदन, गनपति शिव सुत संत ॥ २७ ॥ कोटि-बिनायक जो लिखें, माँह से कागद कोट। तो पै तेरे पीय के, गुनहिन आवे टोंट ॥ २८ ॥

गजारि· [स] सिंह, केसरी ।

गजाली· [द] हाथियों का समूह ।

गजासन:· [स] पीपलबृक्ष ।

गञ्जन· [स] नाश, नाशक ।

गंजा· [द] नाशकर दिया २ भांग ।

गडालवण:· [स] साम्भर, नोन ।

गण· [स] देवता, समूह, थोक, जाति, झुण्ड, गिरोह, महादेव के सेवकों का समूह जिनके नायक गणेश जीहैं ।

गणक· [स] दैवज्ञ, ज्योतिषी बिप्र, नजूमी, हिसाब करनेवाला । [हिसाब ।

गणन· [स] संख्या, गिनती,

गणना· (स) गिनती ।

गणित· [स] गिनाहुआ, गणित बिद्या, हिसाब का इल्म ।

गणपति· [स] गणराज· गण-राज· } गणेश, लम्बोदर, शिव, इन्द्रइत्यादि ।

गणरूप:· [स] सुपेद धकवन ।

गणहासक:· [स] भंडोजर ।

गण्डदूर्वा· [स] गांड़रदूब ।

गण्डमूल:· [स] केतारी ।

गण्डारि:· [स] मंजीठ ।

गण्डालि:· [स] गांडरदूब १ शरहंचीसाग २ ।

गण्डस्वेदापनयनरसाक्रान्तकर्णोत्पलानाम्, [वि० सुखानाम्] कपोलों का पसीना पोंछने की पीड़ा से कुम्हला गए हैं कानों के कमल जिन के ।

गणिका [स] जूहीफूल, युही पुष्प, वेश्या, कसबी, कंचनी, पतुरिया।

गण्ड: [स] वेत्तोक्य अर्द्धभाग, गेंड़ा चतुःपद। गाल, कानपटी, कपोल।

गणिकारिका [स] गनियार।

गत [स]° लीन, प्राप्त, विद, गमन, व्यतीत-गुज़राहुआ, नाश, भिन्न, गया, ज्ञात, निकृष्ट, बिना, अप्रिय।

गतःबि [स] सूर्य्य का राश्यन्तर गमन अर्थात् संक्रान्तितिथि। [रहित।

गतगद्माया (स) माया से

गति [स] गमन, नाश, मुक्ति, उपाय, नाम, शरण, रस्ता, चाल, ज्ञान, स्वरूप, दशा, आधार, मार्ग चलना।

गत्वा (स) जाकर, चलकर।

गथ (द) (प) कौड़ी, दाम, मोल, जेतुक, दान।

गद, गध (स) रोग, कारण, भाषण १ कूट २।

गद्गद (स) बोलिनजाई, थकथकाई, हर्षित, आनंद से फूलजाना, आनंदयुक्त।

गदहा (स) (प) रोगनाशक, वैद्य गधा, खर।

गदा (स) (फ) आयुधविशेष, साधु।

गन (द) गण, शिव के प्रमथ आदि, विघ्न, समूह, पिंगल के नियम।

गनक गनिक, गणिक (स०प) ज्योतिषी, विचारक।

गनराज, गणराज (द) गणेश। [कर के।

गनि (द) गन करके, विचार

ग़नी (फ़) (प) तालेवर, धनी, बेपवाहजन, बिचार, गनतीवाला।

गने (द) गिनती के।

गनेश (द) देव, गणेश देवता, आरम्भ, रस।

गन्ध (स) सोना।

गन्धवह (स) पवन, वायु।

गन्धक (स) गन्धक४ रंग का।

गन्धकहि (स) एकांगी।

गन्धकोकिला· (स) सुगंध को-किला।
गन्धनाकुली· (स) नांई।
गन्धपलाशी (स) पंकांशी सुगन्धवाला। [का।
गन्धपाषाण· (स) गन्धक ४ रंग
गन्धपुष्पक:· (स) अशोक।
गन्धप्रियङ्गुका· (स) प्रियंगु।
गन्धफली· (स) चंपाफूल।
गन्धमार्ज्जार:· (स) बनबिलार, जिस्के नाभ में सुगन्ध कस्तूरी सा होता है। [ती।
गन्धमालती· (स) गन्धमाल-
गन्धमूलिका· (स) पकाडी सु-गंधवाला।
गन्धरस:· (स) बोल।
गन्धवती· (स) नाम है एक नदी का। [वाला।
गन्धवधू· (स) पकाडी सुगंध
गन्धमादन· (स) पार्षद विशेष।
गन्धर्व:· (स) घोड़ा।
गन्धर्वहस्तक:· (स) सुपेद रेंड़।
गन्धसार: (स) सुपेद चन्दन।
गन्धमादन (स) पार्षदविशेष।

गन्धर्व्व· (स) सुरगायन, गाने वाले देवता। [खण्ड।
गन्धसार· (स) चन्दन, श्री·
गन्धाढ्या· (स) सेवती।
गन्धाढ्या· (स) गुलाब।
गन्धारिका· (स) सुगंधवाला पकाडी। [का।
गन्धिका· (स) गन्धक ४ रंग
गन्धोत्कट:· (स) दैवनाफूल।
गन्धिन्· (स) सुगंधमान।
गन्धव्य· (स) जाने के योग्य।
गन्ध· (स) बास, बू।
गप· (फ) बनौरीबचन। [भय।
गय·गवाच· (स) बानरविशेष स-
गवने· (द) गये।
गभस्त· (स) दिवाकर, सूर्य्य।
गभस्ति· (स) किरण, अंशु, रश्मि।
गभुवार· गभुवारे· (प) गर्भबाल, बालक के नये बाल, जन्मबाल।
गम· [द] गया हुआ।
गमन· गमु· (स) जाना, रोख-सत, चलन, यात्रा·चलना।
गमय· [स] बिताइयोत्।

गमित· (स) गया हुआ, खोया हुआ, गंवाया हुआ।

गमितमहिमा· (वि॰ वच:) गई है बड़ाई जिस की।

गम्भारी· (स) गम्भार।

गम्भीर· } (स) अथाह, कर्ण, ग
गंभीरु· } हिरा, निगूढ़, भारी, अचंचल, भारी गहरा।

गम्भीरा· [स] नाम है एक नदी का।

गम्य· (स) जानने के योग्य, जाने योग्य, समकरण योग्य, प्राप्य। [पची।

गय· गयन्द· (स) हाथी, गज,

गया (स)· तीर्थ देश विशेष।

गर· गर: (स) विष, रोग, विषहार।

गरह· (द) गृह, गंठिया, वात।

गरक· (स) } रोगी, विषयी,
(फ) } मग्न, डूबना।

गरघ्नी· (स) गरई मछली।

गरदभ· (स) गधा पशु, खर।

गरदपं· (स) सर्प, नाग।

गरनाशिनी· (स) पीलि फूलवा बन्दाल।

गरयी· (स) } अतिश्रेष्ठ भारी,
(प) } एक प्रकार की मछली।

गरल· (स) बिष, माहुर, हलाहल, जहर।

गरला· (स) विष।

गरामरी· (स) बन्दाल। [री।

गरिंस· (स श्रेष्ठपद्की इच्छाका·

गरिमिता· (स) नामसिद्धि।

गरिष्ठ· (स) अतिश्रेष्ठ, भारी।

गरी· (स) } सर्प, विषधर, ना-
(प) } रियर की गुदा।

ग़रीब· (फ कङ्गाल, दुःखित, उत्तम, नादिर। [भारी।

गरीयान· (स) अतिश्रेष्ठ, अति·

गरुता· गरुवा· गरुवाई· (प) भारी, गम्भीर, गरुता, गरुआई, भार।

गरुवायक· (प) गम्भीर, भारी।

गरेष्ठ· गरिष्ठ· (स) अधिकश्रेष्ठ।

गर्जित· (स) बादल की घोर।

गर्दभ· (स) गधा।

गर्व· (स) अहङ्कार, घोड़ावाहन, गरूर।

गर्गर: (स) ये नामगरामछली।

गर्व्वीत गर्वित (स) अभिमानी, अहङ्कारी, मानयुक्त।

गर्भ (स) हमल, कोख का बच्चा

गर्भाधान चमपरिचयम, (वि० भगवत्तम) गर्भधारन करने में समर्थ है दुर्गन जिसका।

गर्द (द) धरि।

गर्भकर: (स) पित्तौंजीफल।

गर्भभेदा (स) सुपेद फूल की रेगनी।

गर्भनुत (स) कचीहारी।

गर्भपातन: [स] रूठा।

गल (प) गला, गरदन, रोग, फांसी।

गलवा [फ] धमधरक।

गलयान [प] कन्ध, कांधा।

गलस्तनी [स] बकरी।

ग्लानि [द] पीड़ा, लज्जा।

ग्लानी [स] अप्रसन्न नफरत।

गलित [स] [फ] नष्ट, पतित, गन्दा, सड़ियल गलगया, नाश, गिराहुआ।

गल्यानि [स] मिथ्या, गप।

गवन [प] गमन, जाना।

गवहिं (द) गंव से।

गवादनी [स] इनारुण।

गवाश [स] [प] कसाई, चमड़ा।
गवास

गवय [स] गौ सदृश, पशु.
गवयः नीलगाय १ काला पांड का हरिन।

गवाक्ष (स) झरोखा, गोखर, नाम वानर।

गवाच, (स) गोख, झरोखा।

गवाची (स) इनारुण।

गवीनम् [स] मक्खन।

गवेधु: [स] गरडुवा। [खगड़ी।

गवेधका [स] गरडुवा १ गुर

गव्य: [स] गाय की दूध, दही, घीव, गोबर सब का नाम है जय से गव्यदुग्ध आदि।

गवड़ (द) पकड़ी।

गहगड़ गहगहे [प] गंभीर, घमसान, नकाराका शब्द, बजे। [शब्द के नकल।

गहगहे (प) बाजे, नानकाराकी

गहन (स) बन, दुर्गम गह्वर दुख, पकड़ना। धारण, भाड़ी, सघन, विकट।

गंजन [स] नाशकरना, मारना

गालव (स) (द) } नामराजा, गाधिदेश, ऋषि विशेष गाको, गंजन, एक ऋषी के नाम, गालवजाई, बकवाद करके विश्वामित्र के शिष्य। [के।

गालवजाई (द) बकवाद कर

गाहमान, [द] डांकताहुआ, जाता हुआ। [मूल।

गाहा. (प) कथा, कहानी, स-

गिर [स] बचन, बोलो, पहाड़।

गिरिजि [स] शिलाजीत, गेरू।

गिरा [स] सरस्वती, कविताई, बचन, बाणी

गिराग्राम [स] जिह्वा, जीभ।

गिरि [स] पर्व्वत, मान्य, पूज्य, पिता, पहाड़। [क्रान्ता।

गिरिकर्णी [स] दोनोविष्णु-

गिरिजा [स] पार्व्वती, शिव पत्नी। [पर्वत।

गिरिंद्र (स) गिरिश, सुमेर,

गिरिजातन्त (स) गणेशादि पुत्र पार्व्वती का।

गिरिजारमण (स) शिव, महादेव। [शिवपत्नी, दुर्गा।

गिरिनन्दनी (स) पार्व्वती,

गिरिनाथ गिरिराज गिरीन्द्र गिरीश (स) { शिव, महादेव, हिमाचल, बड़ा, सुमेरु, सुमेर पर्वत।

गिरिभित् (स) इन्द्रजीरी।

गिरिमल्लिका (स) कोरैया।

गिरिसानुजा (स) चायमान।

गिरिमृद् (स) गेरू। [माचल।

गिरिन्द्र [स] सुमेरपर्व्वत, हि-

गिरिकंदर गिरिगुहा } (द) पहाड़ की खोह। [वन।

गिरिकानन [स] पहाड़ घोर

गिरिवा (द) गला।

गिरिश (स) गरिष्ठ, अतिश्रेष्ठ, गिरिनाथ, महादेव हिमाचल।

गिर (स) बचन, बोल। [जावे

गिलई (प) नीगलजाई, लील-

गीयते (स) गाया जाता है।

गीर्व्वाण (स) देवता, अमर।

गीध (द) पक्षी, जटायू।

गुग्गुल (स) गुग्गुल।

गुच्छकः (स) गेंठिवन।
गुड़ः (स) गूड़। [का।
गुड़पुष्पः (स) महुआ की तरह
गुंजत (प) गुंजारकरत, कलो-
लित, खिलत। [घुंघुची।
गुञ्ज गुञ्जा (स) करजनी, कक्ष
गुटिका (स) गोली-इकट्ठा
किया हुआ।
गुड़फूल (प) महुवावृक्ष।
गुड़ा (स) दाख, छुहारा, मुठ-
रिया सीज।
गुड़ाका (स) निद्रा, तिन्द्र।
गुड़ाकेश (स) अर्जुनपाण्डव।
गुडूची (स) गुरिच।
गुण (स) सत्त्व, रज, तम,
सूत, माला, कमान का
जेह, चरित्र, विद्या, सिफ़-
त, डोरी, लच्छन, सुभाव,
हेतु।
गुनाकर गुणाकार (स॰द) गुणों
का खानि, गुणों का घर।
गुणगोष्ठी } (स) गुणों का
गुणग्रामः } समूह। [वाला।
गुणवत् (स) अच्छे स्वभाव
गुणद (स) गुण देनेवाला।
गुणानिधि (स) गुण का समुद्र।
गुणाभद्र (स) गुण का अभि-
मान।
गुणातीत (स) गुण से परे।
गुणज्ञ (स) गुणज्ञाता, गुण-
विवेकी, गुण का जानने
वाला।
गुणित (स) बढ़ाया हुआ।
गुणी (स) विचारी, ज्ञानी,
गायन, कंपेला।
गुनि (द) विचार करके गुणी।
गुदरत गुदारा (द) जिगर-
जाक, निषेध, जनावत,
उतारा।
गुन (स) पेंच, पईठन, डोरी,
डोरा, ज्ञानादि, रस्सी,
सत्त्व, रज, तम, गुण।
गुनह (द) दोष कसूर।
गुह (स) निषाद। [गुनाह।
गुनहु (द) विचारी, अपराध,
गुनिय (स) विचारना चाहिये।
गुनवती (प) माला, हार।
गुन्द्रः (स) नागरमोथा।

गुन्द्रफला· (स) प्रियंगु ।

गुन्द्रमूला· (स) गोंदपटेर ।

गुन्द्रा· [स] प्रियंगु । [छिपा ।

गुप्त· [स] गुढ़ रक्षित छिपा·

गुरु· [स] आचार्य्य, भारी, अंधकारनाशक, बृहस्पति, उपदेशक, श्रेष्ठ, धर्मका सिखानेवाला, अज्ञान का नाश करनेवाला, बड़ा, बाप ।

गुरुतर· [स] बहुतभारी ।

गुरुजन· [स] बड़ेलोग ।

गुसाईं· [स] स्वामी, सन्यासी ।

गुरुतरगुरुवम् [वि० सखीम्] भारी है विथा जिसकी ।

गुरुता· [स] श्रेष्ठता, भारी ।

गुलिक. [स] मुक्ता, मोती ।

गुवा. [स] सुपारी, पुंगीफल ।

गुवाक· [स] सुपारी का वृक्ष ।

गुवाकः. [स] सोपारी ।

गुहा· [स] गुफा, दरी, कन्दरा, खोह, अन्तष्करण, लिखा है २ सरीवन २ ।

गुहार· [प] रक्षक, सहायक, पुकार । [का ।

गुहारी· [प] रक्षक, सहाय·

गुहाशयः· [स] कन्दरा में रहने वाले जन्तु । [ने के योग्य ।

गुह्य. [स] गुप्त, कठिन, छिपा·

गुह्यक· [स] कुबेर का दूत, यक्ष । [भण्डारी ।

गुह्यकपति. [स] कुबेर, सुर

गुह्यबीज· [स] अगिखर जिसमें कांटा होता ।

गूढ़· गूढ· [स] कठोर, संकेत, गुप्त, सूक्ष्म, निगूढ़, कठिन, छिपा । [सांप ।

गूढ़पात. [स] सर्प्प, नाग,

गूढ़पुरुष. [स] दूत, भेदिया ।

गूहा· [स] नागराजानिषाद, जाति पहरिया ।

गृञ्जनः· [स] गाजरा ।

गृद्ध· गृध्रः [स] गीध, गिद्धपक्षी शकुनि ।

गृद्धराज· [स] जटायू, संपाति ।

गृष्टिः· [स] बाराही कन्द ।

गृह· [स] घर, स्थान, गेह ।

गृहकन्या· [स] ढेकवार ।

गृहकुक्कुटः· (स) विचिपड़ा।
गृहस्थ· (स) द्वितीयश्राश्रम।
गृहबलिभुज्·[स]स्त्री का भोजन खानेवाला अर्थात् बगला वा कव्वा क्योंकि जब ये पक्षी अण्डा सेते हैं इन को स्त्री सुगतांकार इन्हें खिलाती हैं।
गृहणी· (स) स्त्री।
गृहाम्बू· (स) बासी पानी।
गृहागत· (स) आगत, घर आना।
गृही· [स] गृहस्थ, जनकादिक, घरवासी। [ग्राम।
गृहीत· (स) धृत, धरा, पकड़ा,
गृहादि· (स) घरआदि। [गए
गे· (द) गए, गमनकिए चलि·
गेंडुक· (स) उतुशीशा, वालिश।
गेस्तनी· (स) दाख, कुहारा।
गेय· [स]गाने योग्य अर्थात् गीत।
गेह· (स) घर, गृह, वास स्थान।
गेहिनी· [द]घरवाली, स्त्री। [स्त्रिय।
गेहूं· (प) गोहूं, गोधूम, अन्नवि·
गेहूंवा· (प) गेहूं का रङ्ग।
गेव· (फ) शून्य, आकाश, गुप्त।
गेरिकाः· (स) गेरू।
गेरू· (स) गेरू। [का १ गेरू।
गेरेयः· (स) शिलाजीत ४ रंग
गेवी· (फ) शून्यवासी।
गो· गोः· (स) इन्द्री, दिववाक, पशु दिग्, जल, पृथ्वी, इन्द्रिय, प्राण, स्वर्ग, बज्र, बलीवर्द्ध, धरती, तीर, किरण, गौ, बैल, धेनु, गाय, चन्द्र।
गोई· (प) छपी, छपाई, छिपाना, छिपी, छिपाया, गोए, छिपाए।
गोविन्द· (स) वेदगम्य।
गोए· (प) छिपाए, लुकाए।
गोकण्टकः· (स) छचिंकार।
गोकर्णी· [स] चुरनहार।
गोचर विषय· (स) इन्द्रियों का मनोरथ, दृश्य, लक्ष, जो इन्द्रिय से जाना जाय।
गोजिका· (स) गोभी १ गोभी २।
गोती· (स) गोती, सुक्ता, गोत्रज, कुटुम्ब। [स परे।
गोतीत· गोपार· (स) इन्द्रियों

गोत्र· (प) जातिगोत, बंश कुल, नाम, मैल, बन्धु. भग्नि।

गोत्रवृक्षः· (स) धामीनवृक्ष।

गोत्रहरि· (स) पर्व्वत, भूभृत।

गोत्रा· (स) धरती, मेदिनी।

गोदावरी· (स) नदीविशेष।

गोधूली· (स) सूर्य्यास्तसमय।

गोधूम. } गेंहू १ गोहुम २
गोधूमः· } धान का।

गोदावरी· (स) नदीविशेष।

गोधा. (स) पानीमें का गोह १ गोह २।

गोनर्द्दः· (स) केवंटी मोथा।

गोप· [स] गौचरानेवाला।

गोपकन्या· } (स) समलर दुध-
गोपवल्ली· } लर।

गोपवधूः· (स) श्याम समलर।

गोपरसः· (स) बोल।

गोपवेषस्य· (वि॰ विष्णोः) गौचरानेवालों का सा है भेस जिसका।

गोपद·(स) गौ के खूर, गवा, गाय का खूर।

गोपा· (स) समलर दुधलर।

गोप्य· (स) गुप्तयोग्य, गुप्तवस्तु, छिपाने के योग्य, गोपनीय।

गोपी· (स) श्याह समलर।

गोपीश्वरी· (स) फूल खेकसा।

गोपुरः· (स) केंवटी मोथा।

गोबर्द्धन· (स) पर्व्वत विशेष।

गोभी· (स) गोभी।

गोमयः·(स) } गोविष्ठा, गोबर।
गोमय·(स) }

गोमयजः· (स) गोबरछाता।

गोमयप्रियः· (स) अगिआखर, कांटा बाला। [जंगी।

गोमरी· (प) कमैनी, चरडा-

गोमायु· गोमाम्बु· (स) कागपची, गोबराहारी, सियार।

गोमेदः· (स) गोमेदमनी।

गोय· (स) } धरती, अवनी,
(फ) } बेला, गाला।

गोर· (स) } रङ्गविशेष, कबुर।
(फ) }

गोरचकक्कटी· (स) गुरंभी।

गोरोचन· (स) गोलोचन।

गोक्षः· (स) मंथनसिल ।

गोलक· (स) नेचडिम्मा, विधवा से जारजपुत्र, आंख का स्थान, चक्षु, इन्द्रिय का स्थान ।

गोक्षिडः· (स) मोष वृक्ष ।

गोक्षटः· (स) मोष वृक्ष ।

गोलोमी· (स) वच १ सुपेद दूभ ।

गोविदं· (स) वेदलभ्य ।

गोलोक· (स) वैकुण्ठते विशेष उर्द्धलोक ।

गोसाईं· (प) पृथ्वीपति, इन्द्रीपति, त्यागी, तपस्वी, गुरु राजाआदि श्रेष्ठवाचक शब्द ।

गोस्तनी· (स) मोनक्का ।

गोक्षुरः· (स) हरधिकार ।

गोह· (द) घर ।

गौण· (स) अप्रधान, आम ।

गौतम· (स) मुनि विशेष, ऋषि विशेष ।

गौतमनारी· (स) अहिल्या ।

गौतमशाप· (स) सहस्रभग को सहस्रनेत्र ।

गौन· [प] गमन, चलन, जाना । [उल्लत ।

गौरः· (स) गोरा, सुफेद, स्वेत,

गौरः· (स) धावा वृक्ष ।

गौरकः· (स) लावापची ।

गौरवस्तुकः (स) वनवथुआ ।

गौरव· (स) भारी, बड़ापन, आदर, बड़ाई, भारीपन ।

गौरा· (स) हरदी, चटक, चिड़ा, गेगैया, उजला, गौर, शुक्ल ।

गौरी· (स) पार्व्वती, कन्या रागिनी विशेष, गोरोचन, तुलसी श्याम और गौर, शिवा ।

गौरीश· (स) शिव, महादेव ।

गंजन· [स] नाश करना ।

गंजा· [द] नाश किया । एक मादक वस्तु ।

ग्रथित, (स) बंधा हुआ, गूंथा हुआ । [क, पोथी ।

ग्रन्थ· (स) गिरह, गांठो, पुस्त-

ग्रन्थि· [स] गांठ, गिरह ।

ग्रन्थिकः (स) पीपरामूल ।

ग्रन्थिका· (स) गेठिवन ।

ग्रन्थिपर्णः (स) गेठिवन ।

ग्रन्थिमत्फलः (स) बड़हल ।

ग्रन्थिमानः (स) हड़संहार ।

ग्रन्थिलः (स) करील वृक्ष ।

ग्रन्थिनी· (स) केला १ कटाई २

ग्रन्थी· (स) गांठीधारी, पुस्तकी ग्रन्थ बनाने वाला, गिरह गांठ ।

ग्रसन· (स) भक्षण, आहार ।

ग्रह· ग्रह·
ग्रहणी· } (स) सूर्य्यादिक नवग्रह, घर, सप्त दिवस ७ राहु ८ केतु ९ । सूर्य चन्द्रादिक नव ग्रह, अनुग्रह, गंठिया बात ।

ग्रहि· (स) पकड़े सूधे ।

ग्राम· (स) बस्ती विशेष जाति १६ घर अन्त १०० घर का छोय, गंवार, समूह, गांव ।

गंभोर· (स) गहिरा ।

ग्रहण· (स) धारणीं, सूर्य चंद्रमा राहुग्रसित, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, लेलेना, स्वीकार, आदर, पकड़ना ।

ग्रहदशा· (स) सनैश्वरी, सनीचरी ।

ग्रामनी· (स) नीच ।

ग्राम्या· (स) तुलसीश्याम, सुपेद, गांव रहने वाला, चतुःपाद ।

ग्रामीण· (स) गांव का रहने वाला, गंवार । [लग ।

ग्रास· (स) कवल, लुकमह, लो-

ग्राहक· (स) खरीदार ।

ग्राही· (स) संग्रही, ग्रहन करनेवाला, कैथा ।

ग्राह्य· (स) ग्रहणकरनेके योग्य ।

ग्रीव· ग्रीवस्· ग्रीवा· (स) गला, का पृष्टभाग, कंठ ।

ग्रीषम· ग्रीष्म· [प]
[स] } गरमी, चौथऋतु गरमी की ऋतु, जेष्ठ, आसाढ़, ग्रीष्मऋतु, गर्मउष्ण ।

ग्रेह· (स) घर, भवन, कुटी ।

ग्लानि· (स) घृणा, घिन, ग्लानि थकाई, खजानि । दया, हर्षक्षय, नफरत, घिन ।

घ

घट· (स) घड़ा, देह, मन हृदय, चेष्टा। [स्त्य ऋषि।

घटज· (स) कुम्भजऋषि, अग-

घटब· (द) करब।

घटयोनि· घटसम्भव· (स) अग-स्त्यऋषि, कुंभज मुनि।

घटा· (स) समूह, मेघ।

घण्टा· (स) काठपांडर।

घण्टारका· (स) बनसनई।

घण्टिक: (स) घरियाल, जल-जंतु।

घण्टिका· (स) घण्टी।

घटि· (द) घटिया, कमती।

घटित· (स) तुलित, भासित, उचित।

घटिहिं· (द) करैगी, होगा।

घन· (स) बादल, लोह कूटपात मेघ, लोहेका घन, हथोड़ा निहाई, दृढ़, विस्तार, स-घन, घना, अद्भुत, गणित शास्त्र में किसी संख्या को तीन बार गुण करने को घन कहते हैं, जल।

घननाद· (स) मेघनाथ, मेघ-नाद। एक नदीका नाम।

घनदास· (स) आकाश, शून्य।

घनम्· (स) फेनु सा दूध।

घनरस· } (स) जल, पानी,
घनरस: } नीर।

घनसार: (स) कपूर।

घने· (प) घनेरे, बहुतेरे।

घमोई· घमोइ· (द) भड़भांड़, वा पीला विशेष बांस समान बांझबांस बीटा की, भरभंड़, घास।

घ्रान· (द) नासिका।

घरनी· (द) स्त्री, गृहस्थिनी।

घर्म· (स) घाम, धूप। [हुआ।

घर्मलब्ध· (स) घाम में पाया

घवरि· (प) गुच्छा, घौरा।

घाउ· (द) चोट, ठोकर, घाव।

घाट· घाटो· (द) तट, मार्ग, बांट।

घाट मनोहर· ४ (स) प्रथम गोसाईं तुलसीदास की अपनी दीनता, ४१॥ कर्म-

काण्ड॥२॥ सुन्दरकाण्ड॥३॥ भक्तिकाण्ड॥४॥ए चारोघाट मानस की मनोहर है।

घाटा· (द) चढ़ाव, पर्व्वत पथ, घटी। [कना।

घाटारोहः· (द) घाट का रो

घात· (स) दाव, पेच, मार, चोट, मारण- प्रहार घाव, मारना।

घातिनी· (स) नाशकारनेवाली।

घाय· (प) शरपीड़ा, भूमखण्ड।

घायक· (प) बाण, शर।

घावरि. (प) नाश, त्याग, छारि। [करना

घालना· (प) डालना, नाश-

घालक· (द) नाश करनेवाला नाशक।

घालि· (प) घलमारि, छाड़ि, त्यागि, नाशिके, नाशकर के।

घाली· (प) डाली, त्यागी, छाड़ी, डारी, फेंकी, घालना। नाश किया।

घुघुआर· (प) घुमाहुआ, वक्र।

घुघुंची· (द) करजनी, गुंजा।

घुणप्रियः· (स) तामा जड़ी।

घुणवल्लभाः· (स) अतीस।

घुसृणम्· (स) केसर।

घुन· (प) कृमिविशेष, काष्ट ते उत्पत्ति पुनि वाहि को खातु है।

घुनाक्षर· (प) घुनक्षत अक्षर, लकड़ी में न्याय करके प्रसिद्ध है।

घुर्णि· (प) घुमरी, तिरमिरी।

घूर्मि· (द) घूम के गिरना।

घोर· (स) भयानक, बुरा, भयंकर, क्रूर, तीव्र।

घुम्मरहिं. (स) नगारे की आवाज की नकल।

घूमिति· (द) घूमा· घूमकरकै।

घृणा· [द] घिन, ग्लानि, दया, अत्यंत अश्रद्धा नफरत।

घृतः· [स] घीव, चिकनैई,
घृत· घी।

घृतकुमारिका. [स] ढेकुवांर।

घृतपूर्णः [स] करञ्ज वृक्ष।

घोण्ट· [स] सुपारी वृक्ष।

घोटकः [स] घोड़ा, चतुःपद।

घोटकारिः [स] भैंसा चार-पद।

घोटाः [स] बैरफल।

घोटिका· [स] लोनियां बड़ा।

घोरण्टः [स] सोपारी।

घोलः [स] मट्ठा।

घोष· (स) शब्द, शोर।

घोषम्. [स] कांसा उपधातु।

घोषकः [स] } नेनुआं, घि-
घोषफलः } उरा।

घ्न· [स] नाशक, हनन्त।

घ्राण· घ्रान· [स] नाकका धन, गंधग्रहण, सूंघक, नासिका, नाक।

घ्राणदुःखदाः [स] नकछिकनी।

ङ

ङ· स्वाहा ङ· ङ· स्वाहा (स) मन्त्र महा विद्या।

च

च· [स] और, फिर।

चक· [स] चकवापक्षी।

चकित· [स] आश्चर्य, आश्चर्यित, आश्चर्य में आया हुआ, अस्थिर, भीत, दुचित, घबराना, भ्रान्त, भययुक्त, डराहुआ।

चकोर· [प] पक्षीविशेष।

चक्कवय. चक्कवै· [प] चक्रवर्ती राजा, बड़ाधनी, चक्रवर्त्ती।

चक्र· [स] सुदर्शनादि अस्त्रविशेष सुदर्शनचक्र, गाड़ी का पहिया, हथियार, पहिया, गोला, जांता, चक्की।

चक्रवाक (स) चकई चकवा।

चतुरङ्ग (स) चार रंगकी सेना, सेना का चार अंग, अर्थात् हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल।

चक्रकारः [स] नखी वड़ा।

चक्रमर्द्दः [स] चकवंड ।

चक्रवर्त्ती [स] चक्रवर्ती राजा, सर्व्वभौमराजा ।

चक्रवर्त्तनी [स] पपरिया ।

चक्रवाकी (स) चकवी ।

चक्राङ्गी [स] कुटकी ।

चक्राह्वा [स] सुदर्शन ।

चक्षुः [स] भ्रमती ।

चक्रवाक चक्राव [स] चकवा चकईपची । [चकवंड ।

चक्री [स] सर्प्प, नाग, विष्णु.

चक्रुः [स] किया उन्हीं ने ।

चक्रे [स] किया ।

चक्षुस् [स] आंख, नेत्र ।

चक्षुस् [स] नेत्र, आंख ।

चक्षु [स] चक्षु, आंख नेत्र ।

चक्षुचोरि [प] नेत्र सुख, नेत्र विलास, अतिसुन्दर ।

चङ्ग [प] [फ] गुड्डीभेद, गुड्डी पतंग,बाजाभेद ।

चचने [स] कहा ।

चञ्चत् [स] हिलता हुआ ।

चञ्चरीक [प] [द] भ्रमरकीट, भौंर, भंवर ।

चञ्चुः [स] भ्रमती ।

चञ्चू [स] लालरेंड़१भ्रमती२ ।

चञ्चल [स] पाराधातु, वेग, चपल, कम्पाइ ।

चपलता [स] चञ्चलता ।

चपेट [स] तमाचा ।

चञ्चला [स] लक्ष्मी, बिज्जली, बिजली, शतावली ।

चटकः [स] गरवैया पक्षी ।

चटकाशिर [स] पिपरामूल ।

चडल [स] चंचल ।

चणकः [स] बूट अन्न ।

चणकात्मः [स] चना का नोन ।

चणकाम्लकः [स] चना का नोन ।

चण्ड [स] प्रताप, उग्र, तेज, तेजस्वी, कमलागुण्डी, प्रचण्ड, कठोर, तीव्र, नाम राक्षस ।

चण्डा. [स] दुर्गा ।

चण्डान्तः (स) लाल कनइल ।

चण्डिका चण्डी (स) पार्व्वती, देवी, दुर्गा, क्रोधिनी ।

चण्डी [स] अधीरा, कुपित स्त्री, दुर्गा ।

चण्डेश्वर [स] शिव, चण्डाका पति।

चतुःपत्री (स) मिरिचारी।

चतुर चतुर् (स) ज्ञानी, नारदमुख्य चतुर, धूर्त्त, बुद्धिमान, होशयार, चार।

चतुर्गुण (स) चौगुना। [चावश।

चतुर्थं (स) चौथा चारि संख्या

चतुरङ्ग (स) श्याम, रक्त, पीत, हरित, चार रंग की सेना, सेना की चार अङ्ग, अर्थात् हाथी, घोड़ा, रथ, और पैदल, सतरंज।

चतुरङ्गुलः (स) अमलतास।

चतुरङ्गी सेना (स) हाथी, घोड़ा बैल, प्यादा।

चतुरानन (स) ब्रह्मा, अज, कमलज।

चतुरूषण (स) सोंठ, पीपर, मिर्च, पिपराम।

चतुर्दश [स] चौदह १४

चतुर्द्धा (स) चारप्रकार।

चतुर्वर्ग (स) अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।

चतुर्दशलोकविवरण १४ [स] भूर्लोक, भवर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सुरलोक, सत्यलोक ॥ ७॥ इति आकाशलोक ॥ अतल, वितल, सुतल, महातल, तलातल, रसातल, पाताल, ॥ ७॥ इति पाताललोक ॥ १४ ॥

चतुर्बीजः [स] मगरैला, अवाइन, चनसुर, मेथी।

चतुर्व्विंशावतारविवरण कलासहित २४ [स] सनक २ सनन्दन २ सनातन २ सनत्कुमार २ पौरुष १६ वराह १ नारद २ नरनारायण, कही बद्रीनारायण १२ कपिलमुनि ३ इति सत्ययुगे, दत्तात्रे १० यज्ञ २ नाभिक १ पृथु १२ मीन १५ कमठ ५ धान्वन्तर ८ मोहनीरूप ३ नृसिंह ८ बामन ११ परशुराम ६ व्यास १ रामचन्द्र १२ इति त्रेतायाम् ॥

श्रीकृष्ण १६ बौध ॥२॥ इति द्वापरे ॥२४॥

चतुष्टा· [स] अन्तष्करण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार।

चन्दना· [स] सुपेद चन्दन।

चन्द्र· चन्द्रः [स] चान्द, चन्द्रमा, अत्रिमुनिसुतसुधांशु, हीरा मणि।

चन्द्रकान्त· (स) मणिविशेष।

चन्द्रकान्तिः· [स] चांदी।

चन्द्रचूड़· (स) महादेव, [चन्द्रमा है सिर पर जिसके]

चन्द्रद्युतिः· [स] सुपेद, चन्दन।

चन्द्रनामा· [स] कपूर।

चन्द्रपाद· [स] चन्द्रकिरन।

चन्द्रपुष्पा· [स] सुपेद फूल की रैंगनी। [रैंगनी।

चन्द्रभा· [स] सुपेद फूल की

चन्द्रवाला· (स) इलायची फल, एला, बड़ी इलायची।

चन्द्रली, चंद्रमसी· (स) चान्दनी, चन्द्रिका।

चन्द्रमामुनि· (स) निशाकर नाम. अत्रीमुनि के पुत्र का नाम।

चन्द्रमौलि· चन्द्रशेखर· (स) शिव, महादेव।

चन्द्रसूरः· (स) चनसुर।

चन्द्रहास· (स) तलवार, हथियार, नागराजपुत्र, चन्द्रकिरण।

चन्द्रहासा· (स) गुरिच १ सुपेद फूल की रैंगनी।

चन्द्राह्वा· (स) कपूर।

चन्द्रावतंस· (स) शिव, शङ्कर।

चन्द्रिका· (स) चान्दनी, चांदनी, कौमुदी १ चनसुर २।

चन्द्री· (स) सुपेद फूल का अकवन।

चपरि· चप} धपसि, शीघ्र, तुलि· (सप) } रत।

चपलः} (स) चञ्चल, उतावला, तरल, पारा।
चपल· }

चपलता· (स) चंचलता।

चपलपत्रः· (स) पीपल का वृक्ष

चपला· (स) बिज्वली, लघुपीपलि, पीपर।

चपेट· चपेटा· (प) थप्पर, तमाचा, धक्का।

चग्र· (स) तीक्ष्ण, तेज, उग्र।

चवइ· (दू) बहै, भसै, चिवाना।

चमक· (फ) छिटक, किरण, ज्योति। [बादुर।

चमगादुर· (प) चमगुदड़ो,

चमत्कार· (स) अद्भुत, आश्चर्य।

चमर· (स) चंवरभेद, सुरगो· पूंछ, मयूरपक्ष, पंखा।

चमरी· (स) कचनार, १ सोर· की गऊ, एक प्रकार का हरिन है जिस की पूछ का चमर बनता है। उ· रिद का मयदा।

चमू· (स) सेना, दल, सेनामात्र. सेनाविशेष, जिस में ७२८ हाथो, ७२८ रथ २१८७ घोड़े. ३६४५ पैदल हों।

चम्पक:· (स) चम्पा फूल।

चम्वर· चम्मर· (स) चंवर, सुर· छ्य। [चलन।

चर· (स) दूत, प्यादा, भक्षण,

चरज. चरजा (प) (स) तुरङा.की लपची।

चरण· (स) पगु,पाद, पद,पाद, पाव, श्लोकका चौथाभाग।

चरणन्यास· (स) पांवका चिन्ह, चरण चिन्ह। [जल।

चरणोदक· (स) पांव का धोवन

चंद्रिनि· (स) चन्द्र किरिणि, चांदनी।

चरणपिष्ठ· चरणपीठ, [स] खड़ाऊ, पगुरक्षक।

चरणायुध·
चरणायुध: [स] मुरगापक्षी, अरुणचूड़।

चरित (स) चरित्र, हाल।

चरफर· (प) चालाक, देह डोलत।

चरफराहिं (दू) डोलते हैं, चरफराना, तरफराहिं, विकल। [न्य चोर डाड़।

चराचर· [स] चल अचल, चैत·

चरु· चरू· [स] खीर, चाउर दुग्ध संयुक्त, हविष्य होम काल का, दिव्य सुन्दर, बरतन। [पाचरण।

चरित· [स] लीला, स्वभाव,

चरवर· [स] दूत, श्रेष्ठ, महा दोराहा।

चर्म्म चरम [स ढाल, चमड़ा, खाल, चम्त, ८० नदी संख्या विशेष, मृगछाला।

चर्म्मकष: (स) लरही सीज।

चर्म्मकषा (स) रोहिनी।

चर्म्म कारालुक: (स) वाराहि कन्द।

चर्म्मकार (स) चमार मोची।

चर्व्वण (स) चावना, चावने की वस्तु, चबेना।

चर्म्म दादुर (स) चमगादुर, चमगुदड़ी, बादुर।

चर्म्मदल्ली (स) चनसुर।

चर्म्मार: (स) सुपदे सिंगरिफ

चर्म्मी (स) भोजपत्र।

चल [स] चलायमान।

चलकिशलय:, (वि० अशोक: वा केशर:) चलायमान हैं कोंपल जिस की।

चलत्वम् [स] फड़कना। [श्वत्थ

चलदल (स) पीपल वृक्ष, च

चलोचणिक: (स) गुरिच।

चलोर्म्मि (वि० पय:) चलायमान लहर।

चंवर (स) मूरछल, चम्वरविशेष, सुरगी की पूंछ। [ना।

चवड़ (द बड़बड़, चवनाबड़-

चविका }
चव्य: } (स) चाभ।

चहुयुग [प] सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, चारो युग अर्थात्।

चष चषु [प] नेत्र, नयन।

चहेटन (प) चपेटन, तमांचा।

चक्षु चक्षुष (स) नेत्र, नेयन।

चक्षुष्य: [स] कुसुद्रक।

चक्षुश्रवा (स) सर्प्प, नाग, नेत्रद्वारेश्रोता।

चाङ्ग [स] आनन्द।

चाव [द] उछाह, हर्ष।

चापी [द] दबाई। [जांता।

चाका [प] पहिया, चक्की, चक्र,

चाकी [प] बिज्ली, चक्की चकरी, पहिया।

चाकना (द) छापना, बिजुली।

चाष [प] } पक्षीविशेष, नील-
[द] } कंठ, टेंकनस पची।

चाङ्गी [प] किसी वस्तादि का

गांट देना, अभिलाड़ित, गुणवान् राशि गांठदेना।

चाङ्केरी. [स] चोनियां।

चाटु. [स] गण, करी, हाथ लुरखरी, प्यारेवचन।

चाटुकार. [स] वचनचतुर।

चाड [ह] [द] } कोप, अभिलाष, काज, चाह, ओड़, बिजुली। [मुरई।

चाणक्यमूलक. [स] नेवार-

चातक. चाटक. (स) पपीहा पची।

चातुर. (स) बुद्धिमान।

चाप. (स) धनुष. धनुः, कमान सनाह।

चातुर्य्यात: (स) बड़ी इलायची तज, नागीसर, तेजपात एई ४।

चापत. (द) दावत।

चापन (स) पगु चपीवाद, चापना, दावना।

चाम्पेय: (स) कमल के पखरियों के भीतर का केसर सा जः होता है।

चापी. (स) दवाई, चम्पाफूल, नागीसर।

चामर. (स) चर्म्म विशेष, मृग-छाला चंवर, चौंर।

चामीकर:} (स) सोना द्रव्य, चामीकर} सुवर्ण,सोना धातु।

चामुण्डा. (स) योगिनी भेद।

चाम्पेय: (स) नागीसर १ चम्पा फूल।

चाम्य. (स) सामान्य धनुष।

चार. (स) दूत चुगुल, लवार, चिरंजी, संख्यावाचक, ४॥ चार चुगुल, छिपि पर दोष देखत चले औ प्रकाश करे सो चार। चौ०। सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनीधन सुभ गति बिभिचारी॥ लोभी जस चह चार गुनामी। नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी॥ अर्थात् गुनानी गुन समूह। सेवक सुख भिखारी मान व्यसनी अर्थात् जुवाड़ी आदि

अन शुभ गति पर स्त्री गामी लोभी यश चुगुल गुन समूह सो ए प्रानी आकाश दुहि के दूध चाहत है कि बुद्धि से असंभव भाव सेवक को स्वामी बनाय सुख चाहति सो कैसे होयगो। चार गुमानी पाठ भिरजापुर निवासी पं० राम गुलाम द्विवेदी को चार दूत सो गुमान करै।

चारदाना· (स) संगरैला १ अजवाइन २ बनमुर ३ मेथी ४।

चारिअवस्था· (प) जाग्रत, स्वप्न सुषुप्ति, तुरीया।

चारिभांति भोजन· (स) भच्छ्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य।

चाहो· (द) चाह, देखना।

चारिखानि· (प) जरायुज, अण्डज, उद्भिज, स्वेदज ४।

चारिपद· (प) धर्म्म के चारपांव सत्य शौच, दया, दान ४।

चारी· (म) (प) भक्षण, संख्यावाचक ४। चार, चलनेवाला, चुगुली, चारु, सुन्दर।

चारु· (स) सुन्दर, सुहाना मनोहर दिव्य, सौभाग्यमान,। [लाव २।

चारुकेसरा· (स) सेवती १ गु·

चारुतम· चारुतर· (स) अति सुन्दर, अतिसुहाना।

चारुफला· (स) दाख, कुहारा।

चारुक: (स) रामसरका।

चालति· (प) डोलावति, डोलाती, चालना, डोलाना, हिलावति।

चाव· (प) चाह, उत्साह।

चाष· (स) (द) चाहापक्षी, नील कंठ, पक्षी विशेष श्वेतवर्ण शुभकारी पश्चिम देश ख्यात।

चाहि· (द) देख कर के, उस की ओरसे चाहना देखना,।

चिकुर, (स) बाल, केश।

चिचिण्ड· [स] चिचिण्डा।

चिकर· [प] केश बाल, घुंघुर।

चिक्करहिं [प] चिघार करते हैं

चिञ्च: [स] अमली।

चिञ्चा· [स] इमली।

चिञ्चुकी· [स] अमली।

चितव· चितवत· चितवन· [प] तकित, दृष्टि, देखना, देखता है, चितवाना।

चित्त· [स] अन्तःकरण वृत्ति, मन दिल, चेतन, ज्ञान।

चितेरा· [द] चित्रकार, शिल्पी।

चित्· चित्त· [स] मनसंज्ञा, ज्ञान, चैतन्य, बुद्धि, हृदय।

चित्तचेता· चितचेता· [स] सावधान, स्थिर।

चित्र· चित्र: [स] अनेकरङ्ग, मूर्त्ति, छबि, रूप, तसवीर, नकशा, सुपेद रेंड़।

चित्रक:· (स) मुचकुन्दफल १ चीता २।

चित्रकूट· (प) नाम है एक पहाड़ का।

चित्रगो· [स] चितकाबरगऊ।

चित्रतण्डुला· [स] बांभिरंग।

चित्रपच्च:· [स] चितकाबर पंडुका।

चित्रपर्णी· [स] पिठवन।

चित्रवर्तीक:· [स] चनकपक्षी, बटेर की जाति।

चित्रा· [स] बड़ीतामाजड़ी १ इनारुण २।

चित्रकेतु· [स] राजाविशेष जाकेपुत्रविषतें सुआ था वाकी कथा है एक राजा का नाम।

चिदाकाश· [स] चैतन्य आकाश, परमात्मा।

चिदानंद· चेतन्य आनन्द रूप।

चिन्तक· [स] भक्तजन, ध्यानिक, स्मरणिक। [फिक्र।

चिन्ता· [स] सोच, विचार

चिन्ह· [स] पताका, निशान।

चिन्तामणि· [स] परसमणि, विष्णु, कल्पितमणि, विशेष।

चिपिट:· [स] चिउड़ा।

चिपिटिक:· [स] चिउड़ा।

चिबुक· [स] ठुड्डी, ठोंठी, कपोल, डाढ़ी।

चिर· चिराना· चिरान्· [स]

बहुतकाल, बहुकालीन, पुराण, बहुत कालतक।

चिरमिटः [स] गुरुची।

चिरविल्वकः [स] करञ्जा।

चिरिच्छदा [स] पत्तोंको साग।

चिलहः [स]
चिलहकी } चीलहपची।

चिरञ्जीविमुनि [स] मार्कण्डेय मुनि जाको प्रयाग मों श्री विष्णु के माया विषें अति बिकलता भई, इसकी कथा १२ स्कन्ध ८ अध्याय श्री भागवत में विदित हैं, मारकंडियऋषि।

चीता [स] व्याघ्रविशेष, तेंदुवा चाह, बुद्धि, चिन्ता।

चीनाकः [स] चिनियाकपूर, चीना अन्न।

चीर [स] वस्त्र, साड़ीचूनरी, कपड़ा, चीरना।

चीरा [स] पागविशेष बिचित्र।

चुक्रः [स] चक१ तितीड़ीक२

चुक्रा [स] इमली।

चुक्रिका [स] खटपलाकी१ इमली२। [लीत।

चुनौती [प] गालकुवत, बोसा-

चुनि [द] छांटना।

चुनौति [प] चाबक, चेत, सेना को हुलसाई, तिलाक, इर्षा, धिक्कार।

चुम्बकः [स] चुम्बकपत्थल।

चुरू [प] चूल्हाथ का, लप-भरि।

चूमता
चुंबत } [द] चूमता, छूता।

चूड़ा [स] मस्तक, शिर, मौल, चोटी, जूड़ा, प्रथममुण्डन, लाख की चूड़ी।

चूड़ाकरण [स] मुण्डन, मूडन।

चूड़ामणि चूड़ामनि (स द) मस्तक, भूषण, चोटी की मणि।

चूत (स) रसाल, आम्रवृक्ष।

चूरण चूर्ण (स) बुकनी पिसान, पिसाहुआ चूरा, कुमकुम, पिसा हुआ चन्दन।

चूर्णपारदः· (स) सुपेद सिंगरिफ।

चेतकी· (स) हरड़ैवृक्ष, हरैं।

चेतन· (स) आत्मा, ईश्वर, जीव, मनुष्य, पश्वादि, ज्ञान, संपन्न, जागदार। चैतन्य, जीवधारी।

चेत्· (स) यद्, जब, यदि, जो।

चेतस्· (स) चित्त।

चेता· (द) चित्त।

चेतिका· (स) जसिलो। [चैत्र।

चैत्र· (स) एक महीने का नाम

चेर· चेरी· (स) सेवक, सेविकनी, दासी।

चेरा· (द) चाकर, दास।

चेल· (स) वस्त्र, कपड़ा, वसन।

चोप· (द) उत्साह, उत्साह, चतिचाहना, अभावा, चोप, इच्छा, हुलास, हर्ष। [वृक्ष

चैत्य· (स) रख्या, गांव के पूज्य

चेष्टा· (स) कायिक, व्यापार।

चोर· (स) परधनहर्त्ता, चोरीकरनेवाला।

चोथा· (ख) चौथा।

चोखा· (प) अच्छीवस्तु, तेज, जल्दी, पैना।

चौकस· (प) सुचेत, सावधान।

चौगान· (फप) खेलि विशेष, मैदान, गेंदा का खेल।

चौरड़· (स) पर्वत के झरना के पानी का जगह।

चौरड़जल· (स) झरना का पानी।

चौरड़मत्स्यः· [स] चौरड़ के पानी की मछली।

चौतनी· (प द) शिरपेचवस्त्र, चौगोशिया टोपी, वा पगरी अरुण वा पीतवर्ण।

चौथपन· [द] बुढ़ौती।

चौर· (स प) चोरजन, चोट्टा, चामर, चोर, चोरीकरनेवाला

चौपार· (द) बङ्गला मन्दिल, चौगोशा, चोपाड़, पंचायतीघर, कचहरी।

चौहट्ट· चोहट· [प] चौराह, चौक, चौमुहानी, चौराहा, चौरास्ता।

च्युत· [स] पतित, पड़ा, भ्रष्ट,

भ्रान्त, गिरा हुआ।

छ

छई. (प) रोग विशेष।

छठें· (द) छ:। [का।

छछिका. (स) बिना सार दही

छड़ा· छरा· (प) पछेला, कर्ण·
भूषण।

छड़े· (स) छटे। [रुधिर।

छतज· (स) आभा, प्रकाश,

छति· छत्· (प) हानि, विदा·
रण, चत, फोड़ा, घाव।

छत्र· (स) छाता. छतरी।

छत्रक· (द) भुइंफोर।

छत्ता· (स) मधु १ कांटयुत,
अगिया खर।

छत्रिका· (स) सेवक। [नीच।

छत्रबंधु· (स) छत्रिजाति में

छद्· (स) पोठ, पत्र।

छदन. (स) पर्ण, पत्र।

छद· (स हानि, विदारण।

छद्मन्· (स) छल, मिस।

छमई· [स] मयनफर।

छन्द· [स] गायत्री आदि, वेद,
रचना, स्वतंत्र।

छन्दस्· [स] श्रुति, वेद।

छन्न· [स] ढांपा, आवर्ण, छा·
जित, ढका हुआ, छाया
हुआ।

छन्नोपान्त: (वि० अचल:) छाई
हुई है सीमा जिस को।

छमा· [द] चमा, पृथ्वी, सहन।

छमि· [स] छमाकरके।

छम्रा· [स] बौराह, पागल।

छव. [द] डौल, रूप।

छबि.} [स] शोभा, मुख, रूप,
छवि·} छटा, सुन्दरता, खूब·
सूरती।

छबीले· (द) रसिया, रूपमान्,
सुन्दर जिस सेनापति के
साथ अड़तालिस सय
घोड़ा सवार है, ४८००।

छर्दं· (स) वमन।

छयल· (द) बालक, चेगना,
जिस सेनापति के साथ
एकासी सय घोड़ा सवार
है, ८१००।

छरस· ॥६॥ (प) मधुर आदि षट्
रस, मधुर, तीता, कडुआ,

खट्टा, मूनगरा, कपिला।

छरभारू· (द) बड़ाभार।

छरे· (द) घकेला, छरेकटाव, सुन्दर, छटे, जिस सेना पति के साथ सताइस सौ घोड़ा सवार, २७००।

छल· (स) कपट, फरेब।

छलिका· (स) बकरी, चतुःपद।

छली· (स) दूती, ठग। [सम।

छाईं· (द) रोगविशेष, लह-

छाला· (द) चर्म, चमड़ा।

छांछि· छांछी· (प) मट्ठा, दधि, तक्र, दधिपाक का धीयन

छाग· छाग: (स) बकरा मेड़ा, मेढ़ा, बकरी, मेढ़ी।

छागी· (स) बकरी।

छाके· (प) मतवारे, मधुवा, मतवाला, मत्त, बौराह।

छांहीं· (द) परछांही।

छाजत· (प) शोभित, सोहित।

छाजा· (द) सोहा, छाजना, सोहना।

छात्र· [स] } विद्यार्थी, शिष्य,
छात्र: } चेला, मध, मधुव्रत।

छादयत्· [स] छाता हुआ।

छाय:· [स] बकरा।

छारा· [द] लाख। [छांई।

छाया· [प] छांह, अंश, पर-

छायात्मन्· (स) प्रतिबिम्ब।

छायाभिन्न· (स) बटा हुआ है प्रतिबिम्ब जिस का।

छारा· छोड़ा· [स प] चर्म, लाजिनी, राख, पागा।

छोर· चीर· (स) दूध।

छिकनी· [स] } नाकछिकनी।
छिक्किका: }

छिन्नपुष्पक:· [स] तिलपर्णी।

छिन्नरुहा· [स] }
छिन्ना· [स] } गुरिच।
छिन्नोद्भवा· }

छिन्निच्छिटा· [स] पालाभग-छुरी। छुरी, चाकू।

छुरिका· [स] पलांकीभाग,

छिद्र· [स] दोष, छेद, फांक, बिल, रन्ध्र, सूराख, वेणु गीत छिद्र नाम। दोष। स्याम बजावत बांसुरी, सोधि आंगुरी रंध्र। शुभ्र गर्त गह्वर शुषिर, छिद्र

विवर रस संच ॥१॥

छिन्न· (स) नष्ट, फूटाटूटा, कटा हुआ, विश्वासरहित ।

छीना· (द) क्षीण, दूबर ।

छीजना· (प) घटना, कमना ।

छिप्र· (स) जल्दी ।

क्षुद्र· क्षुद्र· (स) नीच, स्वल्प, तुच्छ, मिथ्यावादी, छोटा ।

क्षुद्रा· (स) रोगनी, नायका विशेष, ओछी बुद्धि वाली स्त्री । नाममाला में लिखा है । खादी सदा काम युक्त, सकाल मैथुना चोय । गुड़ा प्रवास सुयो-सना, चाक फका पुनि सोय ॥१॥ यह क्षुद्रा बनि ठांव तर, रंचक पुंछ न चाहिय नहिं जग सीली आलसी, निपट रसीली आहि ॥२॥

छिति· क्षिति· [स] पृथ्वी ।

छीन· (द) दुर्बल, रहित ।

क्षुधित· क्षुधित· (स) भूखा ।

छीने· (द) काटे ।

छीजहिं· (प) घटहिं, घटते, छीजना, घटना, कमहिं ।

छुहे· (प) छाजित, रंगीन, चित्रित ।

छुए· (द) छूरे ।

छेत्र· (स) खेत, भूमि, चित्त ।

छूछ· छूछे· (प) खाली, शून्य ।

छेक· (प) रोक, पटकाव ।

छेका· (द) घेरा, रोका, छेकना ।

छेद· (द) टुकड़ा, तिनका ।

छेम· (स) कल्याण, सुख, क्षेम, दोहा । मंगल छेम सुभद्र पुनि, संसिव शिव कल्या-न । भित डोमति कछु कुसल है, पूछति कुंअरि सुजान ॥१॥

छेदक· [स] बधिक, छेदकर्त्ता, छिन्नकार ।

छेदन· [स] काटना, तोड़ना ।

छेना· [प] फरसा ।

छेदना· [स] बेधन, छिद्रक-प, छेद, छीलना ।

छेमकरी· [स] पक्षी विशेष ।

छेन· [स] बांका ।

छेला [द] अलबेला, बांका।

छोर छोरण [द] किनारा, आगर, भोर।

छोभ [स] डर।

छोनिप छोणिप [प] राजा।

छोभा छोभ (द) घबराहट।

छोह [द] ममता, प्रीति।

छोनि [द] छीलकी, छांटिके।

ज

जग [स] संसार, जंगम।

जगजीवन [स] मेघ, बादल।

जगती जगतीतली [स] धरती, पृथ्वी मेदिनी, लोग।

जगत् [स] पञ्चतत्त्वाकार, पृथ्वी संसार, दुनिया, आपनो देह, देहकी डी माता, पिता, स्त्री, पुत्रादि।

जघन्य [स] अधम, निंदित, अंतिम, नाश।

जगत्प्राण [स] पवन, वायु।

जगदम्बा [स] जगत्माता, जगत की माता।

जगदीश [स] त्रिदेव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राजा, ईश्वर।

जगन्निवास [स] विष्णु, जगयोनि।

जगजोनी } जगयोनि } [द, स] ब्रह्मा, विरंचि।

जङ्गम [स] भेषधारी, विशेष, चलनहार।

जघन (प) जांघ।

जघ्नफला [स] कोटाडुम्बर।

जङ्गाल [स] हरिन सबजातिक नील गाय आदि।

जर्ज्जर [प] जर्जर, चीर, फार।

जंघा (द) जांघ। दोहा। इंद्र नील खंभा यथा, रंभा के आकार। अष्ठीवत जंघा जन्हू, जानु सुरारि॥ १

जटाई (द) गिद्धविशेष।

जटाजूट (द) जटा का समूह।

जटा (स) भुईं अवरा १ वृक्ष का जड़ २।

जटामांसी (स) जटामासी।

जटायुः (स) गृध्रराज, संपाति गीध का भाई।

जटित (स) जड़ित, सटा।

जटिल· (स) जटाधारी, बाल सहित।

जटिला· (स) जटामसी १ बच २

जटी· (स) प्लक्ष नाम, बट, शिव नाम, १ पाकर वृक्ष २।

जठर· (स) उदर, पेट, गर्भ, बूढ़ा।

जठेरो (द) बड़ी, बूढ़ी।

जड़· (स) मूल, मूर्ख, मूढ़, पर्वतादि, निर्जीव, ज्ञान-रहित, वृक्षादिक जड़ पदार्थ पाषाणी, पर्वतादि।

जड़ जन्तु· (द) मूढ़ जीव।

जड़ित· (स) जटित, सटा, जड़ाऊ।

जड़ताई (द) मूढ़ताई।

जत· (द) जितना, यतन, जतन।

जतन· (द) यत्न, रक्षा, उपाय।

जती· यती· (स) सन्यासी।

जथा· यथा· (द, स) जैसे।

जथाथित, यथोस्थित· (द, स) जैसा पहिले जैसा था।

जथोचित· यथाचित· (द, स) यथायोग्य।

जतुक: (स) हींग।

जतुका· (स)
जतुकृष्णा· } पपरिया।

जतुसुख: (स) साठीधान।

जन· (स) पुरुष, भक्त, देश, उत्पन्न, जन्म, सामान्य लोग मानो, मनुष्य।

जनक· (स) पिता, नाम राजा मिथिलेश, सीता के पिता का नाम, राजा विदेह।

जनक सुता· (स) जानकी, सीता।

जनकतनया स्नान पुण्योदकेषु, (वि· आश्रमेषु) जानकी जी के स्नान का पवित्र, जल बहता है जिन में।

जनकौरा (द) जनकपुर वासी जनकसम्बन्धी, जनक-सम्बन्धी।

जननि· (स)
जननी· } माता, मैया, मा १ पपरिया २।

जनपद· (स) देश, जन स्थान, जहां मनुष्य बसते हैं।

जनम· (स) उत्पत्ति, अवतार।

जनयिता· (स) पिता, जयमान् कार।

जनयित्री· (स) जायमान कारिणी, जननी, माता।

जनश्रित· (स) मित्र के सिरे।

जनार्द्दन· (स) परमेश्वर।

जनि· (स) (प) } जन्म, उत्पत्ति, नहिं नहीं, मत।

जनित· (स) जायमान हुआ, उत्पत्ति भया, उत्पन्न, उत्पन्न किया हुआ।

जनी· (स) दासी, स्त्री, बधू, १ पर्परिका २।

जनु· (स) (प) } जनम, मानो, मनाहीवाचक।

जनेत (स) (ट॰) } बरात, फिरती, विवाहयात्री, फिरती, रात, जनता।

जनेश· (स) राजा, नृप, नरेश।

जनेषु· (स) मनुष्यन्हविषें मनुष्यों में। [आनदार।

जन्तु· (स) प्राणी, जीव, देही,

जन्तुघ्नः (स) जन्तुनाशनः } बाभीरंग।

जन्तुफलः (स) गूलर फल।

जन्त्री· (स) मातापिता, बशी करण। [पैदायश।

जन्म· (स) जनम· उद्भव, उत्पत्ति

जन्मन· (स) जन्म, उत्पत्ति।

जन्हु· (स) नाम है एक राजा का और एक ऋषि का भी।

जपति· (स) जपता है, भजता है। [है।

जपन्ति· (स) जपते हैं, भजते

जपा· (स) जपाकुसुमः जपापुष्पः } पोहुहुल।

जपामि· (स) जपता हूं मैं, भजता हूं मैं, मैं जपता हूं।

जवनिका· (स) कनात,कनात आदिका घेरा, डेरा, माया,

जम, यम (स) यमराज, धर्मसादि। [यमी।

जमी· यमी (स) संयम यमी सं·

जमुन (स) यमुना } जमुना नदी, दोना। यमुना कालिंदी यमी, यमभगनी, हरिवाम। श्यामा तपना रविसुता, अंशुमती नव नाम ॥१॥ नाममाला में।

दोहा । कालिंदी रविजा यमी, छाया स्याम न आप । यह जमुना सम समद फनि, आवत तुव प्रताप ॥ १ ॥

जमनः (स) तुर्क जाति, काल-यमन ।

जमनिका (स) काई, कजको, माया, कनात । [मिला ।

जमल, (स) जौंवा, युग्म,

जमलार्जुन, (स) उभय कुबेर पुत्र जो नन्दजू की द्वार गोकुल में श्री नारद जू के शापते वृक्ष जौंवा ह्वै कें पंगुवत भयो पश्चात् द्वापर में श्री कृष्णावतार होय श्रीयशोदा माता के ऊखल में बांधे कालवा वृक्षों को श्री कृष्ण जू धक्का दै शाप अनुग्रह कियो जो वा पुनः दिव्य रूप होनो ह्वो कै पंगुवत् वृत्ति छांडि स्वर्ग को गयो ॥ इतिश्री भागवत १० स्कन्ध प्रमाण ।

जमात (प) } साधु दल, साधु
(फ) } कटक, झुण्ड ।

जमाता (स) } दामाद, जमा-
जमी (द) } ई, पुत्रीपति ।

जम्पति } (द) स्त्री पुरुष संयुक्त,
दम्पत } महापात्र ।

जम्बुक (स) } गीदड़ बनचर,
जम्बकः } सियार, शृगाल ।

जम्बू (स) जामुन जामन, फरिन्दा फल ।

जम्बुकुञ्जगतिहृत्तरयम्, (वि-शेयम्) जामन की कुञ्जों में चक्का है प्रवाह जिसका ।

जम्बूमालि (स) नामनिशिचर रावण वाटिका पालक ।

जम्बूर (स) } जामुनफल,
(फ) } भ्रमरकीट ।

जम्भः (स) }
जम्भीरः } जंभीरो लिम्बू ।
जम्बीर }

जम्भवात जम्भुहात (प) चौंघात अलसात ।

जय जयः (स) कल्याण, मुनि विशेष, द्वारपाल विष्णु जीत फतह, शनिवार २ ।

जजाति ययाति (स) एक राजा का नाम ।

जयजीव (स) कल्याण वाचक, आशीर्वाद वाचक, पर्याप्त

जयराजा, सर्व्व जीव पा· लक, सर्व्वरक्षक।

जयति· (स) जय होतु हैं, जय होता है।

जयन्त· जयन्ता· (स) नाम इन्द्र सुत, इन्द्र के बेटे का नाम।

जयन्ती· (स) गनियार।

जयपाल: (स) जमालगोटा।

जयन्तो· (स) जयकारक।

जयशील· (स) विजयवान, विजयपात्र।

जया· (स) गनियार।

जयेउ· (प) जीतेउ, जीता, जय किया, विजय किया।

जयेति· (स) जय होइ, कल्याण होइ।

जर· (द) ज्वर, ज्वर। [पुराण।

जरठ· जरठ· (स) बूढ़ा, वृद्ध,

जरठो· (स) बूढ़ी, वृद्धा।

जरण: (स) सुपेद जीरा।

जरनी· (प) जहर, ताप, उष्णता। [जन्म, मरण।

जरा· (स) बुढ़ापा, वृद्धावस्था,

जरायुज· (स) पिण्डजप्राणि, मनुष्यादि, मनुष्य, पशु जो जरायु से उत्पन्न हों।

जरि· (द) जड़, मूल।

जरे· (प) जले, भस्मि, क्षयभय।

जर्ज्जर (स) } जीर्ण, इन्द्र का
जर्झर (प) } झण्डा, चीरे,
फाड़े, ढीला, टूटा, पुराना, सुकड़ा हुआ, कटा· हुआ, चलन, झांझर।

जर्ज्जरी· (स) चूना की भट्टी जा में चूना पकाती है, वा तृण विशेष जल परत जरत है जाको जवास नाम ख्यात।

जाय: जल·} (स) नीर, पानी
जल: } धूआं। छंद रामगीतिका। अंबु जल कीलाल जीवन सलिल पुष्कर वार। पाथ उदक कवंध अंबर कमल घन रस वारि॥ तोय पय पहिय भुवन वन ऋतंभर कुश छोर। आप कं पानीय अर्णहु मेघ पुष्पहु नीर॥ सबैतो मुख

अंभयुत सब नाम यह झकतीश । इनहि नाम धकार धारे होत हैं वारीश ॥ शंख कंज मृगांक मुक्ता होय धरहु जकार । धर धरै मीनादि कहिये मेघ धरै दकार ॥२॥ दोहा। जीवन जीवन जीवनं मूल सजीवन जान । राम गीतका छंद ये, चौविश कला प्रमान ॥ १ ॥ नाम माला में । दोहा । कंबु कमल कीलाल जल, पैपुष्कर बन वारि । अमृत अरन जीवन घन रस संबर पापारि ॥ १ ॥ मेघ पुष्प विख सर्वमुख, कं कबंध रस तोय । उदकपाथ संबर सलिल, अपवा पीठ पुनि सोय ॥ २ ॥ पानी नेन पखारि कै, अंजन हाथी लीन । प्रगट भई पिय की सखी, निपट सुसंकित होन ॥ २ ॥

जलवर्त्त· (प) भंवर, जल कीट, जलभौंरा जो जल के प्रवाह सो कबहुं सीधा कबहुं उलटा चलता ।

जलवामुका (स) अर्कपुष्पी ।

जलवारिका (स) पानी में की सकोमी । [पंडुका ।

जलकुक्कड़· (स) पनडूबा पक्षी,

जलकुक्कुट· (स) जल का मुरगा, जलमुर्गा, मुर्गाबी ।

जलचर (स) जलजीव मीनादि मकरो आदि जल में रहने वाले जंतु, मत्स्यादि ।

जलचरईस· (प) }
जलचरेश. (स) } वरुण देवता, जलल-पति ।

जलज· (स) }
जलजः (स) } दो० । "जलज हीन मोती जलज, जलज संख अरु चंद । जलज कमल जिमि फिरत पुनि, लख आवत मद नंद ॥१॥" मीन, मोती, शंख, चन्द्र, कमलादि जलजात, जलबेत । दोनों

महुआ महुआ, बन महु-
आ २ मकरंद ४।

जलजम्बुका (स) कठजामुन।

जलपिप्पली (स) जलपीपल।

जलफला (स) सिंघाड़ा।

जलवेतस: (स) जलवेत।

जलजात, जलजाम (स) कम-
लादि जल सों जो जन्मे।

जलजारुण (स) लाल कमल।

जलद- जलधर (स) मेघ, बा-
दल। [चमक जिस में।

जलदाभ (स) बादल कीसी है

जलधि } (स) समुद्र, सा
जलनिधि } गर।

जलन्धर (स) दैत्यविशेष।

जलपति (स) वरुण देवता।

जलविहङ्ग (स) जलपक्षी।

जलमल (स) फेन आदि।

जल्पित (स) व्यर्थवाद।

जलमाल (स) नदी, सरिता।

जलमुच, } बादल।
जलवमुच }

जलयान (स) } जहाज, नाव,
जलजान (द) } नौका।

जलजात (द) कमल।

जलयोनि [स] कमलादि।

जलराशी जलराशी जलराशि
[स] समुद्र, सागर, नदी।

जलरुह [स] कमलादि।

जलशीकर [स] जलबुन्द, जल-
का छिनका।

जलस्तंभो [स] जलरोध, जल
का रोकना।

जलाधि [स] समुद्र, नदी।

जलालुका: [स] कमलका कन्द।

जलानल [स] यज्ञ होम जात
धूम।

जलालि [स] जलभौंर कीट।

जलासय जलाशय [स,द] सरो-
वर तालाब, दह, सागर,
जल का स्थान समुद्र नदी।

जल्प [स] पद्य, वृथा कथन,
वृथा वाद, अभिलाष, ब-
कना है।

जलंधर [स] दैत्यविशेष।

जल्पक [स] पद्यवादी, गप्पी,
वृथावादी, बोलनेवाला,
बकनेवाला।

जल्पत जल्पित [स] पचकरत, वृथाकथन, बकत मिथ्या, अभिमानकरत, शीघ्र पति आतुर कथन, बकता है।

जल्पना [स] प्रशंसा, बड़ापन। कथनी, भूठ। [बकवादी।

जल्पवादी [स] पचवादी. ब-

जल्पसि [स] कथन करत हौ तुम्ह, तू बकता है जल्पना. व्यर्थ बाद, बकवाद करत हौ तुम्ह।

जल्पहिं [प] कहहिं, कहते हैं जल्पना, बकहिं वृथा।

जल्पेसि [स] कथत, भखत, छुनत।

जवा (स) फूल विशेष।

जवनिका [द] कनात, मैल।

जवास [क] तृणविशेष जो प्र-थम जल वर्षा पाए ते गलमान् होत है अरु शिशिर ऋतु में पलु होत है हिंगुआ।

जस [द] जैसा, यशस, कीर्ति

जसोमति यशोमति [स] य-शोदा, जसोदा।

जहि [द] जेहि, जिस को, त्यागो, छोड़ो।

जक्षपति यक्षपति [स] कुबेर।

जज्ञोपवीत यज्ञोपवीत [स] जनेऊ।

जागी (द) जाहिर, प्रगट।

जाई (द) बेटी, पैदाभई।

जाङ्गलः (स) जंगल।

जाङ्गलचरा (स)
जाङ्गला
} जंगलीजंतु।

जाजी (स) सुपेद जीरा।

जाग (स) यज्ञ।

जातअजमल (स) नामविशेष देवगण, अरु एक कन्यान्ना का नाम, बालि सुग्रीव का है, जो ब्रह्मकन्या द्वारे इन्द्र वीर्य ते भयो।

जातकर्म्म (स) बालक के जन्म समय के नान्दी श्राद्धादि संस्कार विशेष, लड़की के जन्म समय को नान्दी श्राद्ध आदि।

जातना यातना (स) कष्ट,

दुःख, नरककुण्ड, पीड़ा, पीरा, तीव्र वेदना।

जातवेद् (स) अनल, अग्नि।

जातरूप· (स)
जातरूप: } सुवर्ण, सोना।

जातविभ्रमा:, (वि· स्त्रिय:) हुआ है भ्रम जिन को अर्थात् चकित।

जातचतुर्व्विंशा· ४:—(स) ब्राह्मण, चत्री, वैश्य, शूद्र ॥४॥ तात्रे कर्म्म पार्थिव ॥ श्लोक ॥ शमोदमस्तप: शौचं क्षान्ति रार्जवमेवच। ज्ञानविज्ञान मास्तिक्यं ब्रह्मचर्य्यं स्वभावजम् ॥१॥ शौर्य्यतेजो धृति र्दाक्ष्यंयुद्धे चाप्यपलायनम् ॥ दानमीश्वर भावश्च चात्रं कर्म्मस्वभावजम् ॥२॥ कृषि गोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म्म स्वभावजम्। परिचर्य्यात्मकं कर्म्मशूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ ३ ॥.

जाचक· (द) मंगन, याचक।

जाचत· (द) मांगता है।

जाति· (स) सामान्य एक बिरादरी। [मांगना।

जाचा· (द) मांगा, जाचना,

जातिमल्लिका· (स) चमेलीपुष्प,

जातिकोश· (स) जायफल।

जातीपत्र: (स) जावत्री।

जातीफल: (स) जायफल।

जातीफलत्वक्· (स) जावत्री।

जातु· (स) कदाचित्, कबहिं।

जातुधान· (स) राक्षस।

जानपनी· (स) स्वरूप ज्ञान।

जानामि, (स) जानता हूं मैं।

जानिबो· (स) ज्ञातव्य, जानब, जानियेगा। [यान।

जान· (द) प्राण, जीव, सवारी

जानु· (स)
(फ) } जांघ, घेघो, जंघा, घुठना।

जानी· (द) प्राणी, स्त्री।

जापक· (स) जप करैया, जप करनेवाला।

जाबालि· (स) ऋषि विशेष।

जाम याम· (स,द) पहर।

जामातृ· (स)
जामात· } जंवाई, दामाद।

जामिक· यामिक· (स) जामिन,

रचक, सूर्य्यसंज्ञा, पहरु, पाहरू, पहरवा, चौकीदार।

जामिक (द) पाहरू।

जामाता (द) दामाद।

जामिनि यामिनी (म) रात्री, रात।

जाम्बूनद: (स) सोना। [व्यर्थ

जात्र (स) पुत्र, लड़का, लथा,

जान्हवी [स] जन्हु एक राजर्षि का नाम उस की लड़की, गंगा, भागीरथी, जन्हु तनया, कहते हैं कि जब जन्हु राजा जी तप करते थे तब गंगा की धारा से व्याकुल हुए तो गंगा जी महारानी को पीगये फिर देवताओं के कहने से पीछे पेट से निकाल दी, इसी लिये भागीरथी को जन्हु तनया अर्थात जन्हु राजर्षि की बेटी कहते हैं। और कहते हैं कि गंगाजी को राजा भगीरथ तपस्या करके स्वर्ग से पृथ्वी पर लाया इसीलिये इनका नाम भागीरथी पड़ गया। नाम माला में लिखा है। दोहा। विष्णुपदी निर्जर नदी, मंदाकिनि हरि रूप। सुरसरि सुरधुनि जान्हवी, साजन प्रिया अनूप॥ १॥ गंगा जिमि त्रैलोक में, पापहारि सुभकारि। तिमि तुव प्रियकीरति सरित, कर पुनीत नर नारि॥२॥ और गंगोदक छंद। जैति श्री जान्हवी गंग माहेश्वरी देवि विश्वेश्वरी लोक उद्धारनी। विष्णुपादोदकी भीष्म सू शैलजा सर्व पापौघसंतापहृ नाशनी॥ नाक बैकुंठ आरोह भागीरथी विश्व देवध्वनी शोकहर पावनी। अष्ट रथ्गान को छंद गंगोदकं मोदकं द्वादशं नाम मंदा

किनी ॥ १ ॥

जाया॰ [स] स्त्री, अबला, पत्नी, उत्पन्न, जना, मिथ्या।

जार॰ (प) डाल, पर पुरुष, यार, उपपति, धंगड़ा, लगवा, सघन। [समूह।

जारा॰ [द] जलाया, जारना

जारि॰ [द] जलाके। [दुष्टानारी।

जारभुक्ता॰ [स] व्यभिचारिणी,

जाल॰ द] झरोखा, झंझरी, गन, रदभ, मन्द, भगल, फन्द, मानस विद्यालगत, किङ्किणी भूषण, माया, समूह, फन्दा, जाली। पनेकार्थमें लिखा है। दोहा। जाल झरोखा जालगन, जाल दंभ धो मंद। जाल फांस विद्या जगत, निरखिन तजिजिन नंद॥ १॥

जालिनी॰ (स) झींगी।

जालक॰ (स) कली।

जावक॰ यावक॰ [प] महावर जाकी महता नाम लियन वासों मह रंगावति है।

जावाली॰ (स) एक ऋषि का नाम। [जन्मत है।

जावन॰ [स] जोरण जाते दधि

जिआले॰ [द] बाले।

जिज्झिनी॰ [स] जोगनी।

जिङ्गी॰ [स] मजीठा।

जिज्ञासा॰ [स] पूछना, प्रश्न, जानने की इच्छा।

जिज्ञासु॰ [स] पूछनेहार, प्रश्नकर्त्ता, जानने की इच्छा वाला। [के।

जित्वा॰ [स] जीत के, जयकरि

जिनस॰ [फ] जाति।

जिनिस॰ [फ] अन्न वस्तु, चीज़।

जिमि॰ [प] जैसें, जोन तरह।

जिष्णु॰ [स] इन्द्र, भग्नि।

जिह्वा॰ [स] जीभा जीभ, रसना। [कपटी।

जिह्म॰ [स] तगर, पादप, मूढ़,

जिह्मगामी॰ [स] सर्प, व्याल, नाग।

जीर्ण॰ [स] प्राचीन पुराना बूढ़ा। [का साज।

ज़ीन॰ [फ] घोड़े के पीठ पर

जीना· [प] जीता रहना, बचना।

जीव· [स] प्राण, आत्मा, वृहस्पति, चन्द्र, जगजीवन, सजीवनी, राजा, एक नाग राजा दशरथ, रुद्र, जीते रहो, जीवात्मा, अनेकार्थ में लिखा है। दो०। जीव वृहस्पति को कहत, जीव कहावै चंद। जिव आत्मा नित नित जिये, जगजीवन नंदनंद ॥१॥ [पालना।

जियाये· [द] पाले, जिआना,

जीवन· [स] जल, आधार, आजीविका, रोजी, जीना, जल, पानी।

जीवनिमूरि· जीवन्ति· [स] सजीवनि मूरि जातें अमर बना रहैं। [रसना।

जीभ· [स] अग्नि, अनल, जिह्वा,

जीमूत: [स]} मेघ, बादल, १
जीमूत· } बन्दाल २।

जीरक: [स] सुपेद जीरा।

जीरण· [द] पुराणा, बुढ़ा, डोकरा।

जीर्णपर्ण· [स] कदम्ब वृच।

जीवक: [स] जीवक दस के जगह बिलारूकन्द।

जीवत· (स) जीता हुआ।

जीवन: [स] पानी।

जीवनी· [स] जीवन्ती।

जीवनीयगण: [स] अष्टवर्ग, जेठीमध, जीवन्ती, बनमूंग, बनउरिद।

जीवनीय: [स] जीवन्ती। [हर्रे।

जीवन्ती· [स] जीवन्ती, गुरिच,

जीवा· [स] जीवन्ती।

जीवित· (स) जीव, आयु।

जीविका· [स] वृत्ति, निर्वाह, अस्थान, आहार, जीवनोपाय, व्यापार, रोज़गार।

जीह· [स] जिह्वा, जीभ, रसना।

जीर्णपत्न: [स] पयठानी लोध।

जुग· [द] युग, दो सत्ययुगादि।

जुगल· [द] युगल, दो, दो०। जमल जुगल जुग द्वैव है, उभय मिथुन बिबि जीउ। जुगलकिशोर सदा बसो,

नंद दास के होत ॥ १ ॥

जुगविधि· [स] शीत, उष्ण, द्वंविधि का ज्वर।

जुझाऊ· जुझार· जुझारा· [प] लड़ना, जंगी, लड़ाका, लड़वैया, लड़नेवाला।

जुगनी· (प) खद्योत, भगजुगनी, कीट विशेष।

जुटत· [स] लड़त, लड़ते हैं जुटना, लड़ना, इकट्ठा होना।

जुहार· [द] पायलागन, दण्डवत, सलाम। [भये।

जुड़ाने· [द] शीतल भये, ठंढे

जुवती· (द) युवती, जवानस्त्री

जुधिष्ठिर· (द) युधिष्ठिर, पांचों पांडव में प्रथम का नाम होता। करणानुज पजात रिपु, कुरुपति भरतान्वेय। कंक युधिष्ठिर धर्मसुत, राज अजय कौंतेय ॥१॥ नाममाला। दो॰ धर्मराज पाजात रिपु. कौंतेय गुरु राय। नृपति जुधिष्ठिर सम पिया, तेरे पीय सुभाय ॥ १ ॥

जुवराज· युवराज· [द. स] कुंवर. नायब राज्याधिकारी।

जुवा· युवा· (द म) जवान।

जुवान· [द जवान पुरुष।

जुवारा· [द] जुवारी, जुआरी, जूआ। [खरता हुवा।

जुष, (म) मिलाहुवा, धारण

जूझा· [द] लड़ाई, युद्ध।

जूथ· [द] यूथ, समूह।

जूथप· [द] यथप, सेनापति।

जून· [द] पुराना, समय।

जूरी· (स) समूह, जोड़ करके, जूरना, जोड़ना।

जूहा· जूह· (द) यूथ, समूह।

जूथी· (द) } जुत्थिका। दोहा
जूहा· } हरिनी गतिका

जुत्थिका, हेमजुष्पिकाजाय यह जूथी गूथी छबिन, ठाढ़ो सेत बनाय ॥ १ ॥

जैवातृक· (स) चन्द्रमा, चन्द्र।

जैमिनि· (स) } व्यास जी का
} शिष्य पूर्व मीमांसा का बनाने वाला ऋषि।

जीई. (द) भोजनकिया, जीव-नार खाना।

जोज. (द) देखना, जोवना।

जोहा. (द) योग अष्टाङ्ग योग्य, मिलाप, सम्बन्ध, दोनों, जोड़ी।

जंगम. (स) चलनेवाले।

जोगवत. (द) परिश्रम, खबरदारीकरना, जतन करना।

जोजन. (द) योजन, चारकोश।

जोती. (द) ज्योति, प्रकाश, २ सूर्य।

जोनी. (द) योनि, कारण, जाति।

जोवा. (द) देखा, जोवना, दे-[खना।

जोषिता. (द) योषित, स्त्री।

जोहारि. (द) प्रणाम किया, जोहारना, प्रणाम करना।

जोहो. (द) देख कर के, खोज कर के।

जंतु. (स) क्षुद्र जीव।

जंत्रित. (द) यंत्रित, ताला दे दिया।

जंत्री. (द) वश किया ताला दे [दिया।

जंबू. (स) जामुन।

जंबुक. (स) सियार, शृगाल।

ज्याय. (द) पाले, ज्यावना, पालना।

जोइ. जोई. (प, द) जोए. जोइ. — खोज, तलाश, देखो जोवनो।

जोवना. (द) राह देखना, खोजना।

जोवा. (द) देखा, खोजा।

जोहार. जुहार. (द) नमस्कार, भुगड।

ज्ञात. (स) विदित, जाना [हुआ।

ज्ञातव्य. (स) जानने के योग्य।

ज्ञाता. (स) ज्ञानी, बुद्धिमान्, बोधक।

ज्ञातास्वादः (वि० क:) जाना है स्वाद जिसने।

ज्ञाति. (स) जाति के लोग, सपिण्ड।

ज्ञान. (स) शास्त्र से जो हुआ, बुद्धि, समुझ शक्ति, दानिश, अक्किल, अक्ल, सारासार जानना, या आत्मा विस्मरण कर भूलेहुवे को

पुनः जानना, या तीनि प्रकार, वर्णाश्रम ज्ञान, शास्त्र जन्य ज्ञान, अनुभव स्वरूपाकार ज्ञान २। ब्रह्म· प्राप्तिका उपाय, बुद्धि, अक्ल।

ज्ञानरंक· (स) ज्ञान रहित।

ज्ञानी· (स) चतुर, बुद्धिमान्। दोहा। कोर्ति कुशल को· विदन पुनि, छम प्रवीन निस्नाति। पर विदग्ध नागर कोऊ, जानै रस की बात॥ १॥ [ज्ञादि।

ज्ञानेन्द्रिय· (स) मन, बुद्धि, चक्षु

ज्ञापक· (स) प्रचारक, जन.ने हारा, आज्ञा देनेवाला जा· ननेवाला।

ज्ञापन· (स) जनावना, प्रका· शना, जताना, इश्तहार देना।

ज्ञास्यामि· (स) जानिगा तू।

ज्ञेय· (स) जानवेके योग्य ज्यौन विषें।

ज्या· (स) माता, पृथ्वी, धनुष् का चिल्ला, परिच्छा, कमान का रोदा।

ज्येष्ठ· (स) बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान, उत्तम, एक महीने का नाम।

ज्येष्ठबंधु· (स) बड़ाभाई। दो०। अग्रज पूर्वज ज्येष्ठ युत, अग्रे स्याम नृपद्दार। मत्त गयंद निपाति पुनि, कीन्हे दंत उखार॥ १॥

ज्येष्ठा· (स) बड़ी, श्रेष्ठा, उत्तमा, १८वां नक्षत्र, गंगा।

ज्योति· (स) किरण, नक्षत्रगण, नेत्र, अग्नि, ब्रह्म, प्रकाश, ज्योति। दोहा। ज्योति नखत मन ज्योति दुख, ज्योति नैन अरु आग। ज्योति ब्रह्म जो थिर रहै, रहत अगत निहि लाग॥ १॥

ज्योतिर्लेखावलयि, (वि० बहुस) तारों की पंक्ति का चक्र है जिस में।

ज्योतिश्छायाकुसुमरचितानि· (वि० स्त्री०लिंग) तारोंकी छायारूपी फूल जड़े हैं

जिन में ।

ज्योतिगन्धा· (स) मेथी ।

ज्योतिष्का· (स) } मालकौनी । [कृयाक्ष
ज्योतिष्मती· }

ज्योतिष· (स) नक्षत्रगण विचार

ज्योतिस्· (स) तारा, चमक, आग ।

ज्योत्स्ना· (स) चान्द्रांति, च-न्द्रिका, चान्दनी ।

ज्वर· (स) जाड़ा, ताप, उष्णा, पीड़ा, शोक, संताप, क्लेश भय, तुषार ।

ज्वल· ज्वलन· (स) अग्नि, प्रकाश, तपन, जलन ।

जृम्भ· (स) जम्हाना, अनिच्छार्थ में लिखा है दो· । जृम्भ अलस कर वलित नर, जृम्भ करावे मूढ़ । जृम्भ कपट तजि हरि भजो, घटघट अरगट गूढ़ ॥१॥ [जम्हाई ।

जृम्भा· (स) जम्हाई, जाफी ज-

ज्या· (स) जीवा । डोरा । औरौं जीवा गव्व गुण, ज्या शुभ धनुष चढ़ाय । समर धरणी ठाढ़े भये, हरषि लखन रघुराय ॥ १ ॥

झ

झ· (स) वृहस्पति, इन्द्र, शब्द, ध्वनि ।

झँई· (द) झुमरी, तिरमिराना, आंख के आगे, अंधेरा ।

झंखार· झंखाड़· (द) बिना पत्ते के वृक्ष, बिन पत्तों के पेड़ ।

झंकार· (स) झम् ऐसा शब्द का करना अर्थात् झंझना-हट, झनझनाने का शब्द । झिंगूरादि के शब्द ।

झंखना· (द) बड़बड़ाना, चड़च-ड़ाना, टेंटें करना, बकना, पछताना, बिलपना, खिझ-ना ।

झंगा· झगा· (द) अंगा, कुरता, पहिनने का वस्त्र, ऊपर पहनने का कपड़ा ।

झंझट· (द) घबराहट, झगड़ा, रगड़ा । उलझाहट ।

झंझटी· (द) कठिन, झगड़ालू ।

जनजाती। [कृपा।

झंझना (द) चिड़चिड़ा। झ-

झंझनाना (द) संस्कृत में झण-
त्कार, अर्थात ऐसा शब्द,
झन करना, ठनठनाना,
टुनटुनाना, बजना, और
पड़पड़ाना! [झनकार।

झंझनाहट (द) चिड़चिड़ाहट,

झझार (स) जलपात, कुआ,
सुराई, झंझर।

झंझरी (स) जाली, झरोखा।

झंझा (स) झड़ी, आंधी, झड़,
झड़ी समेत आंधी।

झंझावायु (स) प्रचंडपवन,
आंधी।

झंझावात (द) अंधड़, झंकड़।

झंडा (द) निशान, ध्वजा, प-
ताका, फरहरा, केतु।

झंझानिल (द) बड़ी आंधी।

झंप झंप [द] मूर्च्छा।

झंडूला [द] बच्चों के मनौता,
बहुरंगो, पत्तों से घना
वृक्ष, बालों से बनासिर।

झंवाना (द) धूप से जला वर्ण
होना, झांवें से पांवधोना,
मुरझाना । झुरझाना, धूप
से विवर्णता।

झकमारना क्रि० । वृथा काम
करना, निरर्थक काम क-
रना, यह कहनावत दूसरे
की कुता अर्थात् बकवाई
बतलाने के लिये बोला
जाता है।

झकझोरी (द) छीनाछीनी,
झपटा झपटी, खींचाखींची,
लूटपाट, झकझोरना।
लूटपाट, छीनाछीनी।

झकना (द) बकना, बकबक
करना, विलाप करना,
हाय हाय करना।

झकरी (द) दोहनी, धूंना, ट-
कुरी, दूध दुहने की म-
टिया, दुहने का पात्र।

झकाझक (द) झलाझल, ज-
गामग, जगमगा।

झकोरना (द) चलाना, जैसे
आंधी में झड़ी, चलाना,
हिलाना, कंपाना, झकोरना

देना, झोंका देना।

झकोर (द) टोटा, विपत्ति, बौछार, झकोर, विपद।

झकोरा (द) झपाट, बौछार, वायु सहित झड़ी।

झकोलना (द) डुलाना।

झक्कड़ (द) झड़ार, आंधी, बयार, चौवाई, चौबाई, तूफान।

झक्की (द) बिना प्रयोजन, बकवादी, तथा बकवाद करने वाला, झक्की, प्रलापी, बहकी, तरंगी, पागलपने की बोलचाल, उन्मत्त।

झखना (द) झींखना, बड़बड़ाना, बकना।

झगड़ना (द) लड़ना, भिड़ना, लड़ाई करना, बखेड़ा करना, वाद विवाद करना, कलह करना।

झगड़ा (द) लड़ाई, रगड़ा, बखेड़ा, विवाद।

झगड़ालू (द) झगड़ना से बना है, लड़नेवाला, चाड़ाक, लड़ाई खोर, झगड़ैल, झगड़ा करने वाला, लड़ाका।

झगड़ालिन (द) कलहिन, लड़ाकिन, लड़ाकी।

झगड़ाना (द) झगड़ा कराना, लड़ाना।

झगा (द) झंगा, जामा, झंगा।

झझ (द) लंबी दाढ़ी।

झझकारना (द) धमकाना, दबकाना, दबाना।

झझला (द) मिठाई विशेष।

झटिति (स) झटचलाझना, सितावी, तुरंत, शीघ्र।

झट से, झटपट, क्रि॰ शीघ्रता से, उसी दम।

झटक (द) खसोट, धक्का, झटन, झरण।

झटकना (द) खसोटना, निझोटना, दुबला हो जाना, दुबलाना, खेंचलेना, छिनना।

झटका (द) झटके से मारने का शब्द, खिंचाव, खींच।

झटके में मारा हुआ, खसोट, चीरा, जो झटके से मारागया, फाड़ागया।

झटकाना (द) झटका लगाना।

झटपट (द) झटमें, तुरंत, उतावला, शीघ्र।

झटास (द) झड़ाक, बौछार।

झटि (द) झाड़, बूटा, कपड़ा।

झड़ (द) झड़ी, ताला विशेष, ताले की कल, एक तरह का ताला, चांच।

झड़न (द) पतन, बत्ती का फूल, टपकन, जैसे फल पककर गिरते हैं, बत्ती की टेम का फूल।

झड़ना (द) गिरना, टपकना, चूना, जैसे पेड़ से फल अथवा पत्ते, पतन होना, निकलना, छनना, नौबत बजना, बाजना (जैसे नौबत) [जधर।

झड़प (द) कड़ुआहट, झमला,

झड़पना (द) लड़ना, झपटा झपटी करना, झड़पा झड़पी करना, मारामारी करना, पजा करना, धमका करना।

झड़पा झड़पी (द) लड़ाई, झपटाझपटी।

झड़पाना (द) लड़ाना।

झड़ बरना (द) सब का सब झड़ना।

झड़बेर (द) जंगली बेर, बेर का पेड़, बेर की झाड़ी, बदरी बेर, झाड़ झाड़ी।

झड़बेरी (द) जंगली बेर।

झड़वाना (द) झड़ाना।

झड़ाक, झड़ाका (द) उतावली, फुर्ती, हड़बड़ी।

झड़ाझड़ (द) चटपट, धारा प्रवाह।

झड़ाना (द) झाड़ू दिलवाना, झाड़फूक कराना।

झड़ी (द) लगातार वृष्टि और उसकी प्राप्ति, लगातार मेह बरसना [समय।

झड़ीता (द) फसलादि का अंत

झक (द) झिकौर, लहर, क्रोध

घोष, ढोस, बांध।

झगुला (द) }
झगुलो (प) }
झगुलिया }
बालकका कुर्त्ता, झूला, चोलना, चोला, वस्त्र विशेष, लड़कों का कुर्त्ता, बालक के पहनने का कुरता, बालक का कुर्त्ता।

झटिति. झट (स,द) शीघ्र, वेगि, जल्दी, झटित, तुरंत चटी दम, उतावल, द्रुत।

झटिति [स] शीघ्र, जल्दी, तुरत

झंप (प) अकस्मात्, शीघ्र।

झंपित (स) ढंपा, झंपना, ढपना।

झझँरो (स) लहूँ की रोटी।

झपं (द) जल्दि, जहदि।

झलका (द) फोला, पांव का फफोला।

झष. झषः (स) मीन, मत्स्य,

झषा (द) झषका।

झषकेतु (स) कामदेव, मन्मथ, झष मकर मत्स्य केतु झंडा अर्थात् जिस के झंडे पर मकर का चिन्ह है।

झारी (प) सारी, बिलकुल, समूह, झारी समूह या उपमारी कि एक एक को अपने सूरता गर्व से भर्त्सन करत चावत। चौ०। असगुन अमित होहिं भयकारी। गनहिं न मृत्यु विवश सब झारी॥ गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं। देखि कटक भट अति हर्षाहीं॥

झालिः (स) अमझोरा।

झिंझनी [स] झींगिनी।

झिल्ली [स] झींगिनी १ सतपुतिया तोरई।

झिंगुनी [द] सतपुतिया तोरई एक गुच्छे में सात ठो फलता है।

झीन (द) महीन। [दाना।

झांई (द) परछाईं, तिरमि-

झोंझुली }
झुंगली }
(द) बहुरखी, झूला, बालक, लड़के का झूला।

झोटिङ्ग (स) प्रेत विशेष।

झोटी· (प) छोटी मस्तक ।
झोंभाई· (द) घूमके गिरपड़ना ।
झांई· (स) तिरमिराना आंख के आगे अन्धारा ।

ञ

ञंखाड़ा ञंञंखाड़ा· (स) मन्त्र महाविद्या ।

·ट

टका· (द) पलक को रोक के एक सा देखते रहना ।
टङ्कणम्· (स) सोहागा ।
टङ्कारी· (स) टेकारो ।
टङ्कार· टङ्कोर· टकोर· (स) चिल्ले का शब्द, आश्चर्य, ध्वनि, धुनि ।
टपज· [द] क्रिया ।
टीका· (स) अर्थ, व्याख्या, शरह ।
टिटटनी· (स) } जल सिरस ।
टिटटनीका: }
टुण्डुक: [स] सोनपत्ता ।
टेई· [द] चोखा करना, चोखा किया, तीखी किया, टेयना ।
टोलू· [द] समूह ।
टिप्पन· टिप्पनी· [स] टीका, विवरण ।
टिट्टिभ· [स] टिटिहरी पक्षी ।
टेक· [प] विश्वास, पकड़, अवलम्ब, हठ । [थापि ।
टेकी· [द] हठकरके निश्चययुत,
टेर· (प) पुकार, लय, स्वर ।
टेव· [स] आदत, लत, बान ।
टेसू· (द) पलास का फूल १ केसू २ एक प्रकार का खेल । दो· । पीत ओप पुनि वृक्षद्रुम, ए कहि परम पलास । टेसू बिरही जनन को, नाहर नख सुविलास ॥ १ ॥
टेढ़ा· (द) बांका, तिरछा, अकड़ा, बेंड़ा, तिर्छी, बंक, बहादुर, वीर, छैला, अकड़ैत, अकड़बेग, बांकुरा, नासमझ में लिखा है । दो· । बक्र अमित कुंचित कुटिल, टेढ़ो भौंह न ठौर । असन कमल पर प्रात जनु, पंख पसारे भौर ॥ १ ॥

१६ कृमिकर्णक १७ कर्णनाद और १८ प्रतीनाह इस प्रकार कानके रोग अठारह प्रकारके जानने ॥

कर्णपालीरोग ।

कर्णपालीसमुद्भूता रोगाः सप्त इहोदिताः ॥
उत्पातः पालिशोषश्च विदारी दुःखवर्धनः ॥
परिपोटश्च लेही च पिप्पली चेति संस्मृताः ॥ १४३ ॥

अर्थ–कर्णपालिके रोग सात प्रकारके हैं । जैसे १ उत्पात २ पालिशोष ३ विदारी ४ दुःखवर्धन ५ परिपोट ६ लेही और ७ पिप्पली ॥

कर्णमूलरोग ।

कर्णमूलामयाः पंच वातात्पित्तात्कफादपि ॥ १४४ ॥
संनिपाताच्च रक्ताच्च–

अर्थ–कर्णमूलरोगको वात, पित्त, कफ, सन्निपात और रक्त इन भेदोंसे पांच प्रकारका जानना ॥

---

१ जिस समय कानमें कृमि पड जाय, अथवा मक्खी अंडा धरे, तब कृमिके लक्षण होते हैं । इसको कृमिकर्ण कहते हैं । २ वायु कानके छिद्रमें स्थित होनेसे अनेक प्रकारके स्वर तथा भेरी, मृदंग और शंख इनके शब्द सुनाई देवे इस रोगको कर्णनाद कहते हैं । ३ जिस समय कानका मैल पतला होकर मुखमें और नाकमें उतरता है उसको प्रतीनाह रोग कहते हैं । इसमें आधा मस्तक दूखता है । ४ कानमें भारी आभरण (गहना) पहननेसे, चोटके लगनेसे अथवा कानको खींचनेसे रक्तपित्त कुपित होकर कानकी पालीमें हरा, नीला अथवा लाल सूजन होय, उसमें दाह होवे, पीडा होवे और रक्त बहे, इस रोगको उत्पात कहते हैं । ५ वायुके कोपसे कानकी पाली सूख जाय उसको पालीशोष कहते हैं । ६ कानकी लौर फटकर उसमें खुजली चले उसको विदारी कहते हैं । ७ दुष्टरीति करके कानको छेदने तथा बढानेसे, खुजली दाह पीडायुक्त सूजन होय, वह पक जाय, उसको दुःखवर्द्धन कहते हैं । ८ सुकुमार स्त्री अथवा बालकोंके कानोंमें अलंकार (गहने) पहनानेके वास्ते प्रथम छिद्र करके कई दिन उनमें गहने नहीं पहने । फिर किसी कालमें कानमें गहने पहननेका समय आवे तब ये छिद्र मोटे होनेके वास्ते कानमें सींक आदि डालकर बढानेको चाहे, तब उससे काले वर्णकी वा लालवर्णकी सूजन उत्पन्न होवे, उसमें पीडा होवे, वह वादीसे होती है। उसको परिपोट कहते हैं । ९ कफ, रक्त, कृमिसे उत्पन्न भई तथा सर्वत्र विचरनेवाली जो सूजन कानकी पालीमें होय, वह कानकी पालीको खाय जाय अर्थात् उसका मांस झरने लगे उसको परिलेही ऐसे कहते हैं । १० कानको बलपूर्वक पाली (लौर) में वायु कुपित होकर कफको संग लेकर कठिन तथा मंदपडायुक्त सूजनको प्रगट करे, उसमें खुजली चले इस कफवातजन्य विकारको पिप्पली अथवा उन्मंथक कहते हैं। ११ कानके नीचे मूलकी जगहपर गांठके आकार सूजन उत्पन्न हो । उसमें जिस दोषका कोप हुआ हो उसके लक्षण होते हैं। जैसे वायुका कोप होनेसे पीडा होती है, पित्तका कोप होनेसे दाह होता है, कफका कोप

डसाना।

डसि· [द] काट करकै, डसना, काटना। [बना।

डसागा· (द) बिछावना, कटा-

डहकि· (द) ठगा कर कै, डह-कना, ठगना, डाढ़ा, आग। [भेद।

डहरुआ· (द) नाम रोग गूढ़ा

डाढ़ा· (द) आग का लगाना।

डाढ़े· (प) जले, जरे, पके।

डाबर· (प) गड्ढा, चिलमची, गोखा तलाव।

डाबर· (द) गड्ढा।

डासन· (द) आसन वस्त्रादि, बिछौना, दसौना।

डासो· (द) बिछाई कै, ओढ़ाई कै, बिछा करके। [बाजा

डिंडमी. (स) एक प्रकार का

डिंडिर: [स] समुद्रफेन।

डिंडिश: [स] डिंडिमी।

डिमिडिमि· [प] बोली विशेष बाजा, एक प्रकार का बाजा।

डीभा· [ष] पाखंड, मूर्ष, बालक. मूर्ख।

डीठा· [द] देखा, दृष्ट।

डीठी. [द] दृष्टि, देखी।

डेवढ़· [द] डेवढ़ा। [तर।

डूमर· डुमर· [स] उदुम्बर, गूलर

डेरा· [प] निवास स्थान, तम्बू घर, झेंगा। [हिंडोला।

डोल· [द] डोलना, तलाव,

डोडिका· }
डोडी· } [स] करेलुआ।

डोलो· [प] जनानी पालकी, गई, गयी, डोलना।

ढ

ढनमनो· [द] लोट खा गई, लुढ़क गई, ढनमनाना लुढ़कना। [ढाक।

ढक्का· [स] बड़ाढोल, डङ्का,

ढाबर· [द] मैला, गदेला, कीचड़। [नारा, समीप।

ढिग· [द] निकट, नगीच, कि-

ढिडिभ· (द) टटीहरी पक्षी।

ढेक· ढेग· [द] पक्षीविशेष सारस, पक्षी। [पिता, बेटा।

ढोटा· [द] बालक, लड़का,

ढोल· [द] ढोल, एक बाजा।

ढरी· [द] खोजी, ढठोरना, खोलना।

था

थम· [स] [फ़] सिरनमती छखा· था।

थं· खाहा· थं· थं· खाहा [स] मन्त्र महाविद्या।

त

तकिया· [द] सिरहने रखनेका विशेष कपड़ा, सिरहने की वस्तु विशेष। दो०। उप बरहन उपधान पुनि, कांदुक सोई होय। स्टु तकिया सों उठंगि के, बैठो तिय रमनीय॥ १॥

तक्र· [स] मट्ठा।

तक्रकूर्चिका· [स] दहिघोरो।

तक्रपिण्ड: [स] फटा हुआ दूध वो पानी निकला।

तगर: [स] तगर।

तगरद्वय· [स] दोनों तगर।

तज· [स] त्याग, बिलग, वृक्ष विशेष तेजपात।

तजधनी· (द) मनुष्य।

तज्ञ· (स) त्यागी, ज्ञानी, स्वरूप ज्ञान, (तद्·यह, ज्ञ, जानना।)

तट· [स] किनारा, तीर, कछारा, निकट, नद्यादिक का कनारा। दो०। कूल पुलिन उपकंठ तट, अवधी रोधा तीर। सोमा गंगा तकि घनी, सह निषाद रघुबीर॥१॥ करि मज्जन देवधुनी, लखन सिया रघुनाथ। माथ नाय बिनती करत, जोरि सरोरुह हाथ॥२॥

तटनी· [स] नदी, सरिता।

तड़ाग: तड़ाग· (स) सरोबर, तालाब, बड़ा तालाब। दो०। पंपासर सरवर सरसि, ह्रदिका सार तड़ाग। पद्माकर पुष्कर लखत, भयो राम अनुराग॥ १॥

तड़ित· तड़ित· (स) बिज्जली, बिजुली, बिजली, चञ्चला।

तड़िन· [द] बिजुली।

तड़ितपति· [स] मेघ, बादल।

तण्डुल· [स] चाउर, कूटाधान, चावल।

तत् (स) तीन, पौरवाचक, ईश्वरवाचक, वेगि, तर्हि, वह।

तनु· [द] छोटा।

तत्काल· [स] शीघ्र, तुरत, उसी समय, फ़ौरन।

तत्कृपा· [स] तिनकी कृपा, तुम्हारी कृपा।

तत्पर· [स] तन्नत, तदासक्त, संलग्न, मशगूल मन चित्त लगाये हुए। [आदि।

तत्व· [स] सार वस्तु प्रकृति

तत्त्व· [स] विचार, पञ्चतत्व, आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी ॥५॥ सारवस्तु, आत्मा।

तत्वज्ञान· [स] ब्रह्मज्ञान यथार्थ ज्ञान।

तत्वप्रकृति· ॥२५॥ [स] शिर, कंठ, हृदय, उदर, कटि, ॥५॥ इति आकाश। धावन, कूदन, बलन, सङ्कुचन, पसारण ॥ ५ ॥ इतिवायु। भूख, पियास, आक्रान्ति, आलस्य, निद्रा ॥५॥ इति तेज। रेतः पित्तः स्वेद, क्षार, रुधिर ॥५॥ इति जल। अस्थि, मांस, त्वचा, रोम, नाड़ी ॥५॥ इतिपृथ्वी।

तत्र· [स] तहांविषें, तहीं, तस्मिन, वहां, तहां।

तत्क्षण· [स] शीघ्र, तत्काल, तस्मिन, वहां।

तथा· तथैव· [स] तैसहिं, तौन प्रकार, तैसे, तुल्य, पूर्ववत् उसी तरह, ऐसे ही उसी भांति, तैसे ही।

तथापि· [स] तौन प्रकार भी, तौनप्रकार निश्चय, तौभी।

तथ्य· [स] सत्य, साँच।

तज्ञ· (स) स्वरूपज्ञाता· [तद्, वह, ज्ञ, जाननेवाला]

तदङ्घ्रि· तदंघ्रि· [स] तौन चरण।

तदनु· (स) उस के पीछे।

तदपि· [द] तौभी।

तदा· [स] तौन, तस्मिन् समये तिस समय, उसवक़्त।

तदानीम्· [स] तब ।

तदापि· [स] तद्‌निश्चय, तद्भी

तद्· [स] तब, तौन, तिस काल, पीछे, वह ।

तन· [स] [प] {शरीर, देह, और, दो॰ । तन शरीर विस्तारे तन, तन सूक्षम तन तात । तन विरको जीन जगत, सुनै जु हरिहर बात ॥ १ ॥

तनय· [स] पुत्र, बालक, संतान औलाद, बेटा ।

तनकाज· [द] थोरा भी ।

तनया· तनयी· [स] पुत्री, बालिका, बेटी, कन्या ।

तनतोषक· [द] शरीरपालक ।

तनातु· तनोतु· [स] विस्तार करी, विस्तार करना ।

तनु· (स) विस्तार, शरीर, सूक्ष्म, विस्तारन, त्वक थोड़ा, अल्प, दुबला ।

तन्तुजालावलम्बा: (वि॰ चन्द्र कान्ता:) सूत की जाली हैं आधार जिन का अर्थात् जालियों में लटकती हुई ।

तनुत्वक· (स) दालचीनी ।

तनुज· (स) पुत्र, बालक ।

तनुता· (स) दुबलापन ।

तनुजा· (स) पुत्री, बेटी ।

तनुवर्म· (स) काया, शरीर ।

तनुरुह· तनोरुह· (स) रोम, केश, तन में जो जमे ।

तनोतु· (स) विस्तार करो, फैलाओ, विस्तार, करै, फैलावे, विस्तार करना ।

तन्तु· (स) सूत्र, ताग, धागा, वंश, गति, तांत, संतान, तार, सूत ।

तन्तुभ: (स) सरसों ।

तन्तुरस: (स) पपरी ।

तन्तुवाय· (स) जुलाहा, मकड़ी ।

तन्द्रा· (स) आलस्य, थोड़ीनींद ।

तन्त· (स) तार । दो॰ । तंत तार जो तंत सुख, सिद्ध औषधी तंत । तंत कहत संतान कह, हरिरस जानहु तंत ॥ १ ॥

तन्दुल: (स) चावल ।

तन्दुला· (स) बायबिरंग ।

तन्दुलीय: (स) चवराईसाग ।

तन्दुलीबीज: (स) चवराईशाक का बीया ।

तन्दुलेरक: (स) चवराईशाग ।

तन्त्र· (स) वशीमन्त्र, टोटका, शास्त्रविशेष, बाजा ।

तन्त्रिका· (स) गुरिच, ।

तन्त्री· (स) बाजागर, बजन्त्री, वाद्यकार, गायन, बीणा ।

तन्त्रीतरू: (स) धवद्दच ।

तन्मय· (स) तद्रूप अभेद ।

तन्माया· (स) तिसकी माया ।

तन्वी· (स) पतली ।

तप· (स) ताप, लहर, तपस्या ।

तपन· (स) सूर्य्य, लहर, गरमी, ताप ।

तपनीय:} (स) सोना द्रव्य,
तपनीय·} स्वर्ण ।

तपस्विनी· [स] जटामसी ।

तपी· [स] तपस्वी, योगी, अर्जुंका ।

तपोधन· [स] तपस्वी, ब्राह्मण, मुनि, दवना ।

तपोधना· [स] मुंड़ली ।

तपच्छदा· (स) कीला ।

तप्त· [स] तत्ता, तपत, गरम, उष्ण, प्रज्वलित खेदातुर तपाया हुआ, तपा हुआ ।

तपस्विन्· [स] तप करनेवाला तपस्वी ।

तव· [स]} तुम्हारा, तत्काल,
[प]} तौनसमय, तत्क्षण ।

तवहित· [द] तुम्हारा हित ।

तवानन· [स] तुम्हारा मुंह ।

तवा· [प] चिलम भरने की ठीकरी रोटी पकाने की लोहे की पात्र ।

तम्· (स) उस की ।

तम· [स] दो० । "तम तामस पुनि राहु तम, तमज ति· मिर तम क्रोध । तम अ· ज्ञान की हरहु हरि, उर धरि दीप प्रबोध ॥१॥" अन्ध कार, अधिक, गुणतामस, क्रोध, राहु, अज्ञान, अज्ञा· न, अन्धेरा, तमोगुण, अ· त्यन्त ।

तमकि· [प] झपकि, क्रोध है

के, क्रुद्ध के, सरोष होकर के, तमक करके, तमकना ।

तमसरा· [स] अन्धारी रात्रि ।

तमस्, (स) अंधेरा ।

तमस· [स] अंधकार ।

तमसा· [स] नाम नदी ।

तमस्विनी· [स] रात्रि अन्धेरी निशि ।

तमारि· [स] सूर्य्य, अर्क ।

तमाल· [स] वृक्षभेद पश्चिमदेश ख्यात, श्यामवर्ण, चन्दनकी टीका, वृक्षविशेष । दो० । काल कंध तापीछ पुनि, कंचुक मोड़ू तमाल । बैठे रहे जहं काल रह, तू अस मोहन लाल ॥

तमालपत्र· [स] तेजपात ।

तम्बक: [स] केंवड़ा ।

तमिस्र· [स] अन्धकार ।

तमिस्रा· [स] अन्धारी रात्रि, तमसरा ।

तमी· [स] रात्रि, निशि, रात ।

तमीचर· [स] निशिचर, वादुर आदि, राक्षस ।

तर· (स) (प) (फ़) अधिक, बहुत, तले, नीचे, भींजा, गीला, तरे, तल, अत्यन्त ।

तनोरुह· [स] रोम, रोंवा जो शरीरमें हुआ । [क्रि, तर्क ।

तरक· [प] विचार, अनुमानो·

तर्कि· [स] विचारि के ।

तरफ· [द] त्रास । [तड़पना ।

तरफत· (द) तड़पता, तरफैना,

तरफन· [द] डराना, तरजा, कूदा, तरफना, कूदना, झिझकारना । [उंगली ।

तरजनी· [स] अंगूठे के पास की

तरकना· (प) कूदना, विचारना

तरकारी· (स) गनिआर ।

तरके· [द] तरपे, फांदे, भौरे, पहफटे ।

तरकेउ· [द] कूदेउ, फांदेउ, कूदा, तरकना, कूदना ।

तरङ्ग· (स) ठेउ जल का, लहरि, उमङ्ग, लहर । दो० । भंग तरंग कल्लोल पुनि, बीची उरमि सुभाय । लहरो हाथ पसारि जन, जमुना पकरति पांय ॥१॥

और दूसरे स्थान पर लिखा है। दो०। हरि विहार यमुना करत, बीचो लहरि तरंग। उछालका कलोल पुनि, अवली उरमी भंग ॥ १ ॥

तरङ्गिनी· (स) नदी, सरिता।

तरङ्गी· (स) समुद्र, नद, बहुरङ्गी, उछालवाले।

तरण· (सु) जल, आश्रित, उद्धार।

तरणतारण· तरन तारन {(स· द) आश्रित जनकी तरणकर्त्ता या उद्धारक, आपु तरे और को तारे।

तरणि· तरनि· (स, द) सूर्य्य, दिवाकर, किरण, नाव।

तरणी: (स) नाव, नौका, निश्च लिखित बरवे में खेवट या तरणी का नाम लिखा है। कारनधार गुह खेवट धीवर दास। है निषाद केवर्तक आवो पास। लावो बोहित तरणी प्लव जलयान।

उडुप पोत तरि] नौका वेगहि आनु ॥ १ ॥ गंग पार है रघुवर मन अनुराग। भरद्वाज मुनि भेंटे जाय प्रयाग ॥ कीन्ह गमन पुनि आगे रघुकुलचंद। लख द्वादश मुनि, सहं बरवा छंद ॥२॥ [पद।

तरस्तु: (स) कुत्ता, लड़का, चतुः

तरल· (स) चञ्चल, सुन्दर, छिछला, तीक्षण, चोखा, तरङ्गी, माला का सुमेर, मालामध्य का दाना शोभित, चोख, ओछा, अस्थिर अतिप्रबल।

तरव· तरुवर· (स) बड़ावृक्ष, तरु।

तरवार· (प) खड्ग, अस्त्रविशेष, तलवार। दो०। रिसिक सुभेस कृपानि सी संकलपर आरवाल। छल जितो तेतो कहो, खड्ग करत वाल वाल ॥ १ ॥ बरवा ॥ मैसल्डरिष्ट को दीयक अधिकार नाम। चंद्र-

हास करवालहु खड्ग-पान ॥ मंडलाग निस्त्रिंशक अटि मैं राम । हाट्स श्रम अश्वा करवा नाम ॥ १ ॥

तरी· तरीक· (स) नौका, नाव ।

तरु· (स) वृक्ष, पेड़, रूख, तरवर, दरखत ।

तरुवार· (स) नाव, नौका ।

तरुण· (स) } युवा, यौवन, नतरुण: } वीन, जवान, नया जवान स्त्री, सुपैद्रेड़ ।

तरुणाई· (प) जवानी, युवावस्था, तरुण्य ।

तरुणी· (स) युवती, रमणी, १ सेवती २ गुलाब ३ ।

तरेड़· (प) } नदी की धड़ारा, तरेर· (प) } वर्जित, ताड़न ।

तरेरी· (द) बड़ी आंख दिखाके ।

तर्क· (स) } वृक्ष, सशुभ, अनुतर्क } मोमोसि, न्याय ग्रास, अनिश्चय कथन, आकांक्षा, वितर्क, दलील ।

तर्कयामि· (स) विचारताहूं मैं ।

तर्कयेः, विचार करे अथवा चाहिए ।

तर्ज्ज· तर्ज्जत· (प) } काढ़न, फांतरजत· (द) } दत, ताड़त कोप, तड़पत, गर्ज, तड़पता, तरजना, तरपना ।

तर्ज्जन· (प) } ताड़न, तर्पन, तरजन· (द) } कोप, गर्ज्जन, झिझकाल्ना, तरजा, कूदा, तरजना, कूदना ।

तर्ज्जना· (प) (द) {झिझिकारण, धमकाना, गर्ज्जना ।

तर्ज्जनी· } (स) नाम एक अंतर्जनी } की, अङ्गुष्टिका समीप, अंगुष्ट के समीप की अंगुली ।

तर्णपनि· (स) समूह । [धित ।

तर्ज्जी· (स) कूदा, तड़पा, क्रोतर्पहिं· (प) तड़पहि, फांदहिं, कूदहिं, तड़पती हैं ।

तर्हि· (स) तद, तब ।

तलित: (स) भूना अन्न ।

तलांजुल· (द) खराब के नाम तिल समेत जलदेना ।

तलैया· (द) छोटी पोखरी, ताल ।

तल्प· (स) शय्या, सेज, मंच।
तनुच्छद: (स) कीला। [चोर।
तस्कर· (स) चोरजन, डाकू
तस्करी· (स) चोरी, क्रोधिनी, डकेती।
तस्मात्· (स) तिस्से, तिसलिये
तस्मिन्· (स) तहां विषें, तिसमें।
तहं· (द) तहां, उस ठांव।
तक्षक· (स) सर्पराज, बढ़ई।
ताः (स) वेस्त्रियां। [मतलब।
तात्पर्य· (स) अभिप्राय, आशय,
तांत· (स) चर्मरज्जु, तांती का यन्त्र। [रुई धुने की।
तांती· तांतीका· (स) धुनेट,
ताज़ी· (फ़ा) घोड़ाभेद, अश्वभेद।
तागा· (द) डोरा, तागा।
ताटंक· (स) ताटका· (द) {तरकी, वा बिरिया, वा कर्णफूल कर्णभूषण, भूषणभेद अथवा स्त्रीगण, ढेडो, दु:ख।
ताड़क· (स) ताड़नेहार, शासक।
ताड़का· (स) निशिचरीविशेष, सुकेतुसुता।
ताड़ का नाला· (द) बकसर में एक नाला है जिसमें राम चंद्र ने ताड़का को घसीटा था।
ताड़ङ्क· (द) कर्ण भूषणविशेष।
ताड़त· ताड़न· (स) पीटत, डिगावत, झिड़की, पीटना, मारना। [सर्प्यादिक।
तारः (स) भद्र, मान्य, पूज्य,
तात· (स) प्यारा, सखा, प्रिय, मित्र, पिता, भाई, हित, पुत्र, उष्ण, गरम, गुरु, तप्त
तादृश· (स) तुल्य, समान, वैसाही, तैसा ही तिस के समान। [पण्डित।
तान्त्रिक· (स) तान्त्रशास्त्रज्ञ,
ताप· (स) बहरि, गरम, तप, ज्वर, दु:ख, क्लेश, संताप।
तापत्रय मोचन· (स) तीनताप के छुड़ाने वाले।
तापै· (द) तपै, तापना, तपना।
तापस· (स) तपस्वी, योगी।
तापसद्रुम: (स) इंगुन वृक्ष।
तापसेष्ट· (स) चिरंवंणी।
तापसेक्षु: (स) सतपोरका गाम

बीतारी ।

तापहरी· (स) हरिद्रा से परी की खिचरी, ताहरी । [वर्ष ।

तापिञ्छ· (स) तमाल वृक्ष श्याम

तापिञ्ज (स)
ताप्यः } सोनामक्खी ।
[बारबार ।

तावड़तोड़· (प) एक पर एक.

ताम्· (स) इस को (क्लिष्ट)

तामरस· तामर. (स)
तामाभः { कामल, ताम्बा, सोना ।

तामस· (स) क्रोध, तमोगुण. तमः, तमोगुणी, क्रोध नाम । दो०। कोप क्रोध आमर्ष तम. रोष पाप रिसु छोभ. छोभ भरो तिय को निरखि, डरी स-हचरी सोय ॥ १ ॥ पुनः दोहा । रूप विपिन की-न्ही मढी, भ्रुगुपति करि श्रम पैं। क्रोध कोप घट रोष तम, [क्रुद्ध छोभ या-कर्ष ॥ १ ॥ [रिसहा ।

तामसी· (स) अन्धारी, क्रोधी,

तामिस्र· (स) नरक विशेष, भयं कर । श्लोक । परवित्तं परा पत्यं कलत्रं हरतेयः तस्य· पातन्तु तामिस्रे कुर्वन्ति-यम किंकराः ॥ १ ॥ इति रामाश्वमेध पुराण प्रमाण ।

ताम्बा· (स) तामा, तांबा, ताम्र ।

ताम्बुली· (स) नागवेली ।

ताम्बूल· (स)
तांबूलः, { नागरबेल. पान दो०। तांबूली चर्विबर्मिका, द्विजा पान की बेल । स-रस भई तुव दसन तें, बलि रंचक सुख मेल ॥ १ ॥

ताम्बूली· (स) पान का पत्ता, पान ।

ताम्र· (स)
ताम्रः } तामा, ताम्बा ।

ताम्रचूड़· (स) कुकुरबंधा १ मुरग पक्षी ।

ताम्रपल्लवः (स) अशोक वृक्ष ।

ताम्रपुष्पी· (स) पांडरवृक्ष, १ धवईवृक्ष ।

तारः (स) चांदी ।

तारक· (स) पालक, गुरु,

उद्धार कर्त्ता, मत्स्य, दैत्य, आकाश की तारा, या आंखि की तारा, रक्षक, तारनेवाला, सितारा, पुतली तारा, तारागण।

तारण (स) घरई, बेड़ा, उबारना।

तारय (स) तारणयोग्य, उद्धारक, उद्धारकारी।

तारतम्य (स) न्यूनाधिक।

तारा (स) मुनिपुत्री, बालि की स्त्री, का नाम, उडुगण, तरई, दो०। उड नक्षत्र अंतारका, तारा भरुच प्रमान। बहुरि कौमुदी चंद्रिका, ज्योत्स्ना युत जान ॥ १ ॥

तार्क्ष्यं ना: (स) } रसवत।
तार्क्ष्यं शैल: }

ताल (स) } तालाव, ताल जा
ताम: (स) } के तल ते जल

कढ्यो। हरिताल दि भुज। फालन ताड़वृक्ष विशेष सरोवर गान का परिमाण। तालू करताल। ताड़ी बजाना, ताली, (जो कि गाने में ताल दी जाती है) दो०। ताल ताल हरिताल पुनि, द्वीज कर सोताल। ताल वृक्ष फल खाय कर, हती दनुज नंद्लाल ॥१॥

तालक: (स) करताल।

तालमूली (स) मुसलीकन्द।

तालीश: (स) तालीशपत्र।

तालु } (स) ताड़, तालवृक्ष
तालू } (ह) जातारी रस होत है जिह्वा के उपर का अङ्ग।

ताक्षिपत (ह) उसकाहित।

तावत तावद् (स) तबतकि तबतक, तहांतकि, एता।

तासाम (स) उन स्त्रियों का

तिक्त: (स) चिरैता १ परवर।

तिक्तक: (स) नीमवृक्ष।

तिक्त (स) सुगन्धित, रसविशेष, चरचरा, तीक्ष्ण।

तिक्तक: (स) इंगुदवृक्ष।

तिक्तशाक: (स) वरुनावृक्ष ।

तिक्ता (स) कुटकी ।

तिक्तिका (स) चमती ।

तिथी (स) पड़वा, दूज, तीज आदि, पन्द्रह दिन तिथी (चत्जाना) हिन्दी महीनों के दिन, महीनों की तारीख, प्रतिपदादी चंद्र-ह, चंद्रकला की क्रिया से उपलक्षित काल दिन ।

तिथिपत्र (स) पत्रा, यंत्री ।

तिथीदेवता (स) तिथियों के देवता, तिथिदेव का नाम यथा । छंद सरसी । प्रतिपद अग्नि काम तनु को दहै । बिनु घनश्याम प्राण दुख को सहै । कहु द्वितिया विरंच मनभावनी । करत प्रणाम पाद सब कामिनी ॥१॥ तिथि तृतिया भवानि शिरनायके । वरहरि मागती मिलय चाय के । गणपतिचोथ पजत ब्रजांगना । हरि कुवजातजे करहि संगना ॥ २ ॥ कह अहि पंचमी अति क्षपा भवे । दरशन नंदलाल चाहती सबे ॥ षरमुख षष्टि जानि ब्रजसुंदरी । करत सबे बिने रय मिले हरी॥ ३॥ शुभ तिथि सप्तमी भज दिवाकरं । तन मन व्याधि आधि अखिलं हरं । शिवतिथि अष्टमी बिपतिनाशनी । हरिपद प्रीति देहु ब्रजवासिनी ॥ ४ ॥ तिंत नुवमी, शिवा पद समायके । चहत मुरारि संग गल लायके ॥ तिथि दशमी अतीत ब्रजनं हरी । ब्रजवनिता बिने काकु हृदे धरी ॥५॥ शुभ तिथी विश्व देवही एकादशी । अनशनक्षिन्न श्यामहित गोकशी ॥ हरि तिथि द्वादशी गमन सामरो । मन जपती भयो

त्रियन बावरी ॥६॥ द्दइत चियोद्शी तिथि चनंग की। रमन बिछोग दीन अतिभंग को ॥ करत अईश पूजन चतोदंशी। दरश गुपाल हित कवि में बसी ॥ ७ ॥ शशि तिथि पूरणा सुदित में करी। यदुपति को मिलाय क-ज मैड़री । पितरतिथी अमावस पिया हरं। का-रहु मनोथं वेग करणाक-रं॥ ८॥ दुख अन्नमारि उभय कह्यो सबी। मिल-न गुविन्द खास घट गो रह्यो ॥ जगन जगाम गंध अगनंधुआ। कथनमिला-स छंदसरसी सजा ॥ दो॰। अधवहरि बिन पल घड़ी, दिवस पक्ष औ मा-स। अवधि गनत गय घसि गये, वर्ष आस की आस ॥१॥ [म्, श्रानि।

तिथीक्षय (स) तिथी का क्षय-

तिगमंसु· (स) सूर्य दिवाकर।

तिगम· (स) तीक्ष्ण, उष्ण, सु-धार। [ग्मज्वर।

तिग्मारी· (स) कत्तारिया, क-

तितिक्षा· (स) धैर्य, धीरता, क्षमाई, दुःख सुखादि स-हित भाव। क्षमा, शीतोष्ण, मानापमानादिक का सहना।

तित्तिडी (स) इमली।

तित्तिडीका· (स) तित्तिडीक।

तित्तिर: (स) कालातीतरपक्षी।

तितीर्षा· (स) तरण की इच्छा, पार होने की इच्छा।

तिनिस: (स) तिनिस। [तेंदू।

तिन्दुक: (स) तेंदूवृक्ष मकर-

तिमिङ्गिल· (स) मीनविशाल, विशेष जहाज़ ग्रासक।

तिमिर· (स) अन्धकार, अन्धा-र, नेत्ररोग। [कर।

तिमिरहर· (स) सूर्य्य, दिवा-

तिलांजुलि तिलांजुल (स) मृ-तक के नाम तिल समेत जलदेना।

तिग्म· (स) चोखा।

त्रिमुहानी· (प) तीनिमुखवाली, गंगा, यमुना, सरस्वती, ए तीनधार एकही, त्रिमुख, जहां तीन नदी· मिलती है।

तिरहुति· तिर्हुत, तिरहुत (प) देशविशेष, मिथिलापुर, तीरभुक्ति, एक ज़िला का नाम जो सूबे बिहार में है और जिसका मुख्य नगर मुज़फ़्फ़रपुर है अब दो ज़िला हो गया दरभंगा और मुज़फ़्फ़रपुर।

तिरस्कार· (स) अनादर, अपमान, त्याग। [बाङ्का।

तिरीच्छ, तिरच्छा· (प) वक्र,

तिरीटक: (स) लोध।

तिर्मिरा (प)
हट· (द) } फरफराहट।

तिर्मिरी(प) घुमड़ी, भवरी, अतिअंधार अल्पप्रकाश।

तिर्य्यक्, तिर्य्यग्· (स) बङ्का, बाङ्का योनिसर्प्पादि, टेढ़ा, तिरछा, पशु पंछी, टेढ़ा चलने वाला।

तिरोहित· (स) तिरस् छिपा, धा रखना, छिपाहुआ, गुप्त, लुकाहुआ। दो॰ गुप्त तिरोहित अंतरित, गूढ़ दुरह बलीय। लोचन जनु मौलूक सखि, देखौ एहि विधि सोय॥ १५॥

तिर्य्यङ्ग· (स) स्थावरादि।

तिर्य्यञ्च,
तिर्य्यग, } तिरछा |श्रेष्ठ।

तिलक· (स) ललाट में टीका,

तिल: (स) तिल।

तिलक: (स) तिलपुष्पी।

तिलपर्णी· (स) लालचन्दन।

तिष्ठ· (स) टिकना, रहना।

तिष्ठे· (प) रहै, टिकै तिष्ठना, रहना, (सं· स्था)।

तिहुंलोक· (प) स्वर्ग, मर्त्य, पाताल, मृत्युलोक, तीनोंलोक।

तीकट· (स) नितम्ब, पश्चाद्देश।

तीछ· (प) भारी, कड़ुवा।

तीत, तीता· (प) तड़ुवा, तलंख।

तिमिर· (स) तिम् भिगोना वा तम अंधेरा होना, अंधेरा, एक प्रकार का आंख का रोग। दोहा।
अंधकार तम तमस पुनि, ध्वांत तिमिर युत पांच।
इन नामनि पर रिपु धरे, नाम दिवाकर बांच ॥१॥

तीछि· (द) तीक्ष्ण, चोखा, तेज।

तीनिकाल· (प) भूत, भविष्य, वर्त्तमान।

तीनिभेद्राजमेंकण्टक· (प) देवापमान, पितरापमान, गुरुअपमान।

तीय· तिय· (प) स्त्री, नारी, मेहरी, मेहराऊ।

तीर· (स)
(फ)
} तट, पार, कूल, ढिग, किनारा।

तीरोपान्तस्तनितसुभगम्, (विषय:) तीर पर शब्द होने से शोभायमान है जो।

तीर्ण· (स) पारंहुवा, फैला, पसरा, उलांघा हुवा।

तीर्थराज· (स द)
तीर्थपति·
तीरथपति·
} प्रयाग, इलाहाबाद।

तीवर· (प)
तीव्र· (द)
} तीक्ष्ण, नोक, बड़ि·लिया, पखेटकी।

तीव्र· तीव्रक· (स) अत्यन्त, चोखा, कडुवा, तीता, तीक्ष्ण, अचूक, जो चूकेनहि।

तीष· (स) चोख, तीखा।

तीषण· (स) बेंत वृक्ष।

तिक्ष्ण· (स)
तीक्ष्ण· (स)
} चोखा, तेज, क्रोधी, तीखा, १ नकछिकनी २ लोहाधातु ३ नेवार मुरई।

तीक्ष्णगन्धा· (स) दोनोंराई।

तीक्ष्णगन्धिका· (स) सुनगावृक्ष।

तीक्ष्णतण्डुला· (स) पीपल।

तुङ्ग· (स) ऊंचा, लम्बा, उन्नत, बुड्ढा, नारियल।

तुङ्गस्तन्यफला· (स) नारियल।

तुङ्गा· (स) समीवृक्ष, १ बरबरी।

तुङ्गभद्र· (स) नदी विशेष।

तुगाशुभा· (स) वंशलोचन।

तुगाक्षीरी· (स) वंशलोचन।

तुषा· (स) चर्म, छिलका ।

तुच्छ· (स) खीन, शून्य, हीन, अल्प, नीच ।

तुच्छा· (स) नीला १ थथड़ा· इलायची । [रजा ।

तुण्ड· (स) नोकपची का, च·

तुण्डकेरी· }
तुण्डा· } (स) कुंदरू ।

तुत्थ: · (स) तूतिया ।

तुद· (स) तारागण, पीड़ा ।

तुन्न: (स) तूनवृक्ष ।

तुवरी· (स) सोरठी माटी १ रहर अन्न २ सरसों का भेद, तोरी ।

तुभ्यम्.}
तुभ्य· } (स) तुम्हको तुम्हारे लिये ।

तुमुल· (स) युद्ध, रौला, भीड़, हुल्लड़, शोर, किलकिलाहट ।

तुम्ब· (स) तितालौका ।

तुम्बी· (स) मीठा लौका ।

तुम्बुरु· (स) तुम्बुरु ।

तुम्बीर· (स) तुम्बा, तुमरी, कटुजलपात्र ।

तुरई· (प) झिंगातरकारी ।

तुरग }
तुरङ्ग } (स) घोड़ा, अश्व, चित्त, दोहा । बाजी वाहन तुरग हय, सैंधव अश्व गंधर्व ॥ तरल तुरङ्गम जहं बंधे हयसाला वैं सर्व ॥१॥

तुरङ्ग· }
तुरङ्ग: } (स) घोड़ा, गगन, मन, दो० । गगन तुरंग तुरंगी मन, बहुरि तुरंग तुरंग । हरिन कुरंग कुरंग सौं, रंग्यो न हरि हरि रंग ॥ १ ॥

तुरङ्गम· (स) घोड़ा, बाजी, अश्व ।

तुरत· (स) शीघ्र, वेगि, जल्दी ।

तुराई· (प) तुरन्त, वेगि, ताड़न, सीरक, तोशक, रजाई, वेग से, तोड़करके ।

तुरावती· (प) वेगवती ।

तुहिन· (स) पाला ।

तुराषाट्· तुराषाड़ (स) इन्द्र, स्वर्गपति ।

तुरीय· (स) चारिसंख्या वाचक, चौथा अवस्था जीव की, चारवां ।

तुरुष्क: (स) सिलारस ।

तुला· (स) घुंघुच, लग्नभेद, तराजू, बराबरी, समानता, ताखड़ी ।

तुल्य· (स) समान, बराबर ।

·तुष (स) भूसा, धन्यादिक, चोकर, कन्नो, धान, यव की भूसी, शीत या शबनम ।

तुषार· तुसार. तुहिन· (स, प) पाला, शीत, ओस, हिम, सबनम, सरदी, जाड़ ।

दो· । मिहिका हिम प्रालेय पुनि, श्यावश्याय निहार । तुहिन तुषार समेत ये, सप्त नाम उरधार ॥

तुषाराद्रि· (स) हिमांचल पर्व्वत, हिमालय पहाड़ ।

तुलयितुम· (स) होड़ करने को, बराबरी करने को ।

तुलसी· (स) दोनों तुलसी ।

तुष्णी· (स) मौन, चुप, गुम ।

तुर्णी· (स) तूनवृक्ष ।

तूण· तूणीर· } (स.द) तरकश, तूनीर·तूनीरा } निषङ्ग, भाथा ।

तूद:· (स) तूतफल ।

तूर· (स) रूई, निर्व्वीज, बाजा-भेद ।

तूराई· (प) गिलाफ़, खोरक, रजाई. गद्दला, अर्थात् वस्त्र तूर संयुक्त ।

तूरो· [स] धतूरा, तुल्य ।

तूर्ण· (स) शीघ्र, झटपट ।

तूर्णम्, (स) जल्दी ।

तुष्टि· (स) प्रसन्नता, संतोष ।

तूष्णीम्· (स) मौन, चुपचाप ।

तुर्थ्य· (स) चारि संख्यावाचक ।

तूल· (स) रूई, निर्व्वीज, तुल्य, बराबर, तूतफल ।

तूलनी· (स) सीमर वृक्ष ।

तूली· (स) नील ।

तूंबरी· (स) तुमड़ी । [आदि ।

तृणग· (स) तिर्यच, पशु पक्षी

तृण· (स) घास, आंचल, माथा का पट , विधि , लज्जा, तिनका, रोहिस खड़ ।

तृणधान्य· (स) कोनो ।

तृणध्वज· (स) बांस ।

तृणान्न· (स) तिन्नी चावल ।

तृतीय· (स) तीसरा ।

तृषा· (स) प्यास ।

तृष्णा· (स) प्यास, लोभ।

तृणराज· (स) ताड़ का वृक्ष, तालवृक्ष, नारियल।

तृपिति· तृप्ति· (स) संतुष्ट, अघाई, आकांचा, निवृत्ति

तृषित· (स) प्यासा, जलचाहक।

ते· (स) तीन, सब से, वे, तेरा, तुमको।

तैं· (प) वे, तू, तुम्ह।

तेज· (द) वेग, देश भाषा कि बड़ा घोड़ा तेज है।

तेग़· (फ) खड्ग, तलवार।

तेजः (स)
तेज़· (फ) } प्रताप, गर्म, प्राण, आत्मा, चोख, अग्नि वृत्त, पांच, तेजस।

तेजन· (स) रामसर्का।

तेजनी· (स) चुरनहार।

तेजवती· (स)
तेजवी· (स) } तेजबल।

तेजस· (स) तेज, प्रकाश, अग्नि प्राप, खड्ग अस्त्र।

तेति· (द), ते, अति, वे बहुत।

तेल· (स) तैल।

तैलकार· (स) तेली।

तैलपर्णिक. (स) सुपेदचन्दन।

तैलपर्णिका· (स) गठिवन।

तोप· (फ) बन्दूकविशाल, बन्दूकगोलादार।

[शीरनी।

तेजस्विनी· (स) तेजबल १ फीनी

तेजोह्वा· (स) तेजबल।

तोपा· (स) ढांपा, तोपना, छांपना।

तैन· (स) तिसने, तिसकिये।

तोप्य· (प)
तोप्यो } ढाप्यो, झांप्यो।

तोमर· (स) बाण, बरछा, अशुग, छन्दभेद, शस्त्र, विशेष, लोहबंदा। [सलिल।

तोय· (स) जल, पानी, नीर,

तोयनिधि· (द) समुद्र।

तोयद· (स) मेघ, बादल।

तोयमधूलिका· (स) जेठीमध।

तोयोत्सर्गस्तनितमुखरः, (वि० त्वम्) मेह और गरज से।

तोयज· (स) तोय जल ज जन्मा जो जल से उत्पन्न हो।

कमल । दो॰ पूंडरीक पुस्कर जलज, अंज अज अंभोज। पंकज सारस ताम रस, कुवले कंज सरोज ॥१॥ सतपत्री औ सहस दल, पद्म कुसेसयनाम। पंकेरुह अरविंद मुख, लखि मलीन तोहि बाम ॥ २ ॥

तोरण· (स) पुष्प, बन्दनवार यमस्थानशोभित, द्वार की चित्रकारी, बन्धनवार।

तोरावती· (स) वेगवाली, वेगवती, त्वरावती।

तोष· (स) संतोष, तृप्ति, हर्ष।

तोषये· (स) प्रसन्नता निमित्त, प्रसन्नता के लिये।

तौर्य· (स) नव का भेद, नई।

तौषार· (स) शीत या शबनम।

तोषत· (स) बोध करना।

त्यक्त· (सं) त्याग हुआ।

त्यक्तव्य· (स) त्यागने के योग्य।

त्यक्ता· (स) त्यागकरि कै, छाड़ि कै, त्यागा हुआ, छोड़ कर।

त्याग· [स] वर्जन, छोड़ना।

त्याज्य· [स] त्याग योग्य।

त्यज· [स] त्याग, विसर्ग, वर्जन, छोड़।

त्रपा· [स] लज्जा, व्रीड़ा शर्म।

त्रपु· [स] खुरारांगा।

त्रपु [स] खीरा।

त्रयरेखा· [स] तीनिरेखा।

त्रयाङ्ग· [स] सूर्य्य, दिवाकर।

त्रय· [स] तीन।

त्रयी· [स] त्रिवेद, ऋक् यजुष्, साम।

त्रयीगङ्गा· [स] मन्दाकिनी, भागीरथी, भागवती।

त्रयोदश· [स] तेरह।

त्रसरेणु· [स] सूक्ष्मस्थान के भीतर रंध्र के द्वारा सूर्य की प्रभा से जो रज उड़ता दृष्टि आता है वह त्रस रेणु कहाता है।

त्राण· [स] रक्षा, पालन, रक्षक, पालक।

त्रसत्, [स] डरा हुआ।

त्रसित· [स] डरक, भयमान्, डरा, भय युक्त ।

त्राता· [स] तारणकर्त्ता, रक्षक, रक्षाकरनेवाला ।

त्रातु· [स] रक्षा करो, रक्षा करे ।

त्रायन्ती· [स] त्रायमान ।

त्रायमाण· [स] त्रायमान ।

त्रास· [स] } भय, डर, धाक, शङ्का, कष्ट ।

त्रासक [स] भयदाता, कष्ट दाता, भयंकर, डरावनी ।

त्राहि· (स) रक्षा करो ।

त्रिअम्बक· (स) त्रिनेत्रधारी, त्रिनयन, शिव ।

त्रिंश· त्रिंशत· (स) तीसवां, संख्याविशेष, ३०॥ [मिर्च

त्रिकटु· (स) सोंठ, पीपर,

त्रिकण्ट·(स) रेंगनी१ इरिविकार।

त्रिकण्टक (स) इरिविकार ।

त्रिकाण्ड· (स) कर्म, उपासना, ज्ञान, ।

त्रिकाल· (स) तीन काल भूत, भविष्य, वर्त्तमान, प्रात, मध्यान, सायम् ।

त्रिकोणफल· (स) सिंघाड़ा ।

त्रिकालज्ञ· (स) भूत, भविष्यत, वर्तमान, तीनों काल का जानने वाला ।

त्रिगङ्गास्थान विवरण· (स) हरिद्वार, प्राग, गङ्गासागर ।

त्रिगन्ध· (स) इलायची, दालचीनी, तेजपात ।

त्रिगुण· (स) सत्व, रज, तम, तीनिबेर, तीनि फेर ।

त्रिजग· (स) } तीनिजग, तीनिगण, स्वर्ग, मर्त्य, पाताल, देवगण, नरगण, असुरगण, ए तीनो जीव छाड़िके वाको सो त्रिजग अर्थात् वांका योनिसर्पादि ।
त्रिजगत्·(स) }

त्रिदंड· (स) कायिक, वाचिक, मानसिक, तीनदंड ।

त्रिजटा· (स) नाम निशिचरी रावण की दासी, अरु श्री रामचन्द्र जू की चरण अनुरागिनी ।

त्रिजातक· (स) इलायची, दालचीनी, तेजपात।

त्रिणयन·[स]शिव, तीन आंख-वाला।

त्रिणयनवृषोत्त्यातकूटाग· (वि॰ शेखात्) महादेव के मान्दिर ने छोटी है शि-खर जिसको।

त्रिताप विवरण· (स) दै-वी जो बज्रपात, पाषाण वनन इत्यादि, देही, जो ज्वरादिक रोग, वा काम, क्रोध, लोभादि इत्यादि, भवतिक, जो राज दण्ड, चोरदण्ड, सर्प, टिड्डी, मूष इत्यादिक जीवन करि विघ्न, सो भवतिक जानिये॥

त्रिदन्ती. (स) महामेदा तद-भावे शतावर।

त्रिदश. [स] देवता।

त्रिदशवनिता·[स]देवता की स्त्री

त्रिदेव· (स) ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

त्रिदेहजीव· [स] स्थूल, सूक्ष्म, कारण।

त्रिधा· [स] तीनि प्रकार, तीन विधि, तीन तरह।

त्रिनयन· [स] तीनि नयन-धारी, शिव, शङ्कर।

त्रिपताक· [स] ललाट, कपाल, दो॰ ।॰ मस्तक लिलत लिलाट पर, बेंदी लगी जराय। मनों भाल तें भाग्य मनि, बाहेर, प्रगटी आय॥ १॥

त्रिपत्रक [स] पलास।

त्रिपर्णी [स] सरिवन।

त्रिपादिका [स) हंसपादी।

त्रिपादविभूति· [स] संधि-नी, सन्दीपिनी, आह्ला-दिनी,। जीव को परमात्मा को संधि मिलावे सों संधिनी। जीव के अन्तर परब्रह्म को स्वरूप प्रकाश करै सो सन्दीपिनी, जीव ते अन्तर पर-मानन्द परमात्मा को आ-

लहाद करै सो अलहादि-
नीविभूति ।
त्रिपुट (स) खेसारी ।
त्रिपुटा (स) इलायची ।
त्रिपुटी (स) कर्त्ता, कर्म्म, क्रिया,
२ ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय,
ध्याता, ध्यान, ध्येय,
भोक्ता, भोग, भोग्य,
इन्द्री, विषय, देवता,
बिचारा ।
त्रिपुण्ड (स) नाम तिलक
तीनिरेखा का, तीन
रेखा का तिलक ।
त्रिपुर (स) दैत्यविशेष, तीनि
पुर संज्ञा, मन, नाम है
एक दैत्य का, जो राजस
तामस, सात्विक, ए तीनि
पुर का काम ।
त्रिपुरारि (स) शिव, महादेव,
कामनाशक दो० । सिंधु
कूल लखि पूत मधि,
थापन कियो पुरारि । कार
पूजन विनती करत,
लखन समेत खरारि ॥१॥
छंद हरिगीत । श्रीकंठ
वृषभध्वज पिनाकी नील
लोहित ईश्वरं । सर्वज्ञ
सर्वस्थाणु अंधक शत्रु रुद्र
गंगाधरं ॥ पशुपति वि-
रूपाक्षं कपर्दी धूर्ज्जटि
विश्वेश्वरं । शिव चन्द्र शे-
खर चंड शूली खंड परशु
महेश्वरं ॥१॥ कामारि ईश
कृशानु रेता महादेव उ-
मावरं । शिति कंठ प्रथमा-
धिप कपाली वामदेव दि-
गंबरं ॥ भव नीलकंठ
गिरीश त्र्यंबक विश्वरूप
विश्वंभरं ॥ शिव० ॥ २ ॥
भूतेश श्री ईशान शिपिविष्ट
रुद्र त्रिलोचनं । यज्ञारि
शंभु पुरारि भर्ग गजारि
उग्र विरोचनं ॥ गिरिशः
महानट क्रतुध्वंसी अष्ट
मूरति शंकरं । शिव०॥३॥
हर व्योम केश विशाख
दृग शत बास श्री मृत्युंज-
यं । बसुवीस काम हरि-

गीत छंद हरनाम तिरसठ शुभ मयं ॥ कृत. हरिविलास निवास रामानुज पुरी अति सुंदरं । शिव०४ दो० । काम नाम पर शब्द रिपु, उमा नाम पर नाथ । नाम बाम को होत है, तासु तनय पट माथ ॥ १ ॥ पुनः दो० । गंगाधर हर सुरधर, ससिधर शंकर बाम । सर्वेश्वर भव शंभु शिव, भीम काम रिपु नाम ॥२॥ नित्य त्रिरंबक त्रिपुर अरि, ईस उमापति होय । जटिल पिनाकी पसुपति, नीलकंठ सिव सोय ॥ ३ ॥ बामदेव सो देव जेहि, राखत हिय में मोहि । ताको तू कपटी कहति, कहा कहों बलि तोहि ॥४॥

त्रिफला (स) } अंवरा, हरें,
त्रिफली } बहेरा ।

त्रिवर्ग· (स) त्रिफला, त्रिकुट ।

त्रिवली. (स) पेटी, पेट, उदर, तीन पंक्ति । [माया ।

त्रिवस्तुपनादि· (स) ब्रह्म. जीव,

त्रिविक्रम. (स) श्रीविष्णु राजा बलिद्वार दानग्रहण काले अति विराटरूप होय के तीनिलोक तीनि डग किए या रूप को त्रिविक्रम कहते हैं अर्थात् विराट रूप ।

त्रिविध. (स) तीनिप्रकार, सात्विकादि तीन विधि, मन, कर्म, वचन ।

त्रिविधकर्म· [स] सञ्चित, प्रारब्ध, क्रियमान, इच्छा, दैहिक, अनिच्छा, दैविक, परेच्छा, भवतिक, एवा पद्य ।

त्रिविधसमीर· [स] शीतल, मन्द, सुगन्ध ।

त्रिविधेषणा· [स] तीनि प्रकार कामना, धन, पुत्र, नारी ।

त्रिवेणी· (स) त्रिमुहानी,

त्रिसंगम, तीनिनदी, गङ्गा, यमुना, सरस्वती।

त्रिभण्डी· (स) निसोत।

त्रिभुवन· (स) तीनलोक।

त्रिब्रह्म· (स) वर्णात्मक, ध्वन्यात्मक, शब्दात्मक।

त्रिमति· (स) द्वैत, अद्वैत, वशिष्टाद्वैत।

त्रिया· त्रिय, (स) स्त्री, नारी, तिरिया।

त्रियामा· (स) रात्रि, रात, निशा, यमुना, नील, हलदी।

त्रिरात्रि· (स) महारात्रि अर्थात् दशहरा, शिवरात्रि कालरात्रि अर्थात् जन्माष्टमी भादोमास।

त्रिरेख (स) शंख।

त्रिलोक. त्रैलोक्य· (स) स्वर्ग, मर्त्य, पाताल, त्रिभुवन।

त्रिलोन· (स) सेंधा, पांगा, काला।

त्रिलोह (स) सोना, चांदी, तामा।

त्रिवीज (स) सांवाअन्न।

त्रिवृत् (स) }
त्रिवृता } त्रिधारा।

त्रिशङ्कु· (स) नाम-राजा चन्द्रसेन का पुत्र जाको पूर्व्व नाम त्रिबन्ध दोष या तीनिशंका होने ते वाको नाम त्रिशङ्कु भयो एक औ वशिष्ठ जू का शाप, एक गोहत्या, एक औ वशिष्ठजू अरु औ विश्वामित्र जू का आपुस का विरुद्ध भाव नाम, ताको राजमद होते आजुतक आकाश मार्ग्ग में औंधे मुख झूलत है, इतिश्रीभागवतप्रमाण।

त्रिशिरा· (स) नाम खरदूषण के बंधु का निशिचर जाति, तीनमस्तकी। [विशेष।

त्रिशूल· (स) शिव का अस्त्र

त्रिषु. (स) तीनों में।

त्रिषाधा· (स) षोड़हुन।

त्रिष्यफला· (स) अंवरा।

त्रिसन्ध्या· (स) प्रभात, मध्य, सांझ।

त्रिसम· (स) हरैं, सोंठ, गुड़, तीनों सम भाग।

त्रिसुगन्धि· (स) इलायची, दारचीनी, तेजपात।

त्रिस्वरूप प्रारब्ध, (स) इच्छित, सुइच्छित, परिनिच्छित।

त्रिक्षार·(स) यवाखार, सोहागा, सज्जीखार।

त्रुटि. (स) चवचड़ा इलायची।

त्रुटी· (स) टूट, हानि, न्यूनता।

तूण· भोण· (स) तरकश, तीर का खोल।

त्र्यञ्जन· (स) पुथाञ्जन, सुपेद, स्याह, सुरमा।

त्र्यूषण(स) सोंठ, पीपर, मिर्च।

त्रैलोचन· (स) सूर्य, शिव।

त्र्यम्बक, (स) त्रिनयन, शिव।

त्वक् त्वचा· त्वच् (स) चर्म· चमरा· छिलुका· छाल, खाल, वृक्ष का बकला, चमड़ा, बांस, त्वग की स्पर्श की इन्द्री।

त्वक्सार (स) बांस।

त्वक्सारा· (स) वंशलोचन।

त्वक्स्वाद्वी. (स) दारचीनी।

त्वक्सुगन्ध (स) नारंगी।

त्वक्क्षीरी (स) वंशलोचन।

त्वचिसार (स) बांस।

त्वत्तः (स) तुझ से।

त्वत्प्रयाणानुरूपम् (वि·मार्गम) तेरे चलनेके अनुकूल है जो।

त्वद· (स) केतुग्रहवाचक।

त्वदंघ्रि [स] तुम्हारा चरण।

त्वद्गम्भीर ध्वनिषु, (वि·पुष्करेषु) तेरीसी गंभीर है ध्वनि जिन की।

त्वन्निस्यन्दोच्छ्वसितवसुधागन्ध सम्पर्कपुण्यः (विवायुः) तेरे बरसने से पृथ्वी की भाप गन्ध से मिलकर जो सुगन्धित है।

त्वदीय· (स] एतुम्हारी, एउ तुम्हारा, तेरा।

त्वम·(स) जीव, तुम्ह, तू, तुम।

त्वरयति·(स) जल्दी चलाता है।

त्वरित· (स) शीघ्र, जलद।

त्वरितम्. [स] जल्दी से।

त्वादृश, [स] तेरे समान, तुझ सरीखा।

त्वष्टा: [स] तोषमानपुरुष।

त्वाम्· (स) तुझे, तुम्हको, तू।

थ

थकित· [प] गद्गद कंठ-स्वरयुत, थका हुआ।

थनेश्वरी· [स] कुरुक्षेत्र की ब्राह्मण।

थल· [स] पृथिवी, स्थल, स्थान, गड्हा, पानी टिकान को घेरा, भूमि। दो॰ पृथ्वी क्षिति क्षोणी क्षमा, धरनी धात्री गाय। उर्वी गज गति वसुमती, वसुधा सर्व सहाय॥१॥ अपर विपुल सागर धरा, थरा उर्वरा जोय। अचला अवनी कुंभनी, महीमेदनी सोय॥२॥ विश्वंभरा वसुंधरा, थिरा, काश्यपी आदि। रसा अनन्ता भूमिला, विला कहत पुनि आदि॥३॥ सब धर जेहि एक सीस पर, सोभित भिमि कन छोर। क्यों भावत तुव पाँखि तर, ता हलधर के बीर ४॥

थलचर. [स] मनुष्यादि, भूमि के चलने वाले, स्थलचर, थलचारी। [ठिकाना।

थान· थाना· [प] जगह, स्थान

स्थिति· } (प) स्थिरता· पालना,
थिति· } पालन, ठहराव।

थिर· थीरा· (प) अचल· अटल, शान्त, स्थिर।

थूनी· [प] टचका।

द

द (स) देनेवाला, दाता।

दंश· (स) दान्त, डङ्क, डांश।

दंशक· (स) सर्प्प, काटकना।

दंशन· (स) दान्तों से काटना।

दंष्ट्र· (स) दन्त, दान्त, दशन।

दंष्ट्रा· (स) विषाक्त, बड़े दान्त।

दंस· (स) बनमाछी।

दग्ध (स) जला हुआ।

दण्ड· (स) छड़ी, लकड़ी, राजदण्ड, लाठी, शास्ति, सजासत, ६० पल, सजा।

दण्डक· (स) बन विशेष तप स्थान, राजा विशेष राजा सोमदन्त पुत्र गोलकुण्ड· वासी दुर्वाशा ऋषि के शाप ते बन भयो, दण्डक छन्द एक, राजा का नाम विशेष, सुपेद रेंड़।

दण्डधर·(स) धर्म्मराज,यमराज।

दण्डमत्स्य (स) डोरी मछली।

दण्डहस्ती· (स) स्याहतगर।

दण्डहत [स] महाहुआ द्रव्य, महा हुआ दूध आदि।

दण्डय· (स) दण्डयोग्य, ताड़न योग्य।

दण्डान्वय· [स] लक्षणार्थं लगावे का जो सोधे सोधे अर्थ लगै।

दंभ· [स] पाखंड।

दण्डवत· [स] साष्टांग, प्रणाम पृथ्वी में गिर के जो प्रणाम।

दत्तक [स] गोद लिया लड़का, सुतवत्ता।

दत्त· [स] दिया गया· दिया हुवा समर्पित.

दत्तनृत्योपहार:, [वि·त्वम्] दो है नाचरूपी भेट जिस को।

दत्तमार्ग· [स] दिया है मार्ग जिसे अर्थात् छोड़ा है मार्ग जिस के लिये।

दत्तहस्ता· [वि· गोरी] दिया है हाथ जिसे।

दत्वा· [स] देकर।

ददर्श· [स] देखा। [हुआ।

दधान· [स] धारण करता

दद्रुघ्न· (स) चकवड़। [विष्णु अंश।

दत्तात्रेय· [स] अत्रिमुनिसुत दत्तात्रेय, गुरु चतुर्विंश विवरण। २४ [स] पृथवी, वायु, आकाश, जल, अग्नि,

चन्द्रमा, रवि, कपोत, पत्र-
गर, सिंधु, पतङ्ग, कही
पन्नी· मधुव्रत कही मधु-
मच्छी, गग मधुरा कही
मधु, व्याधा, हरिण, मीन,
सर्प्प, पिंगला, कही वेश्या
कुरर, अर्भक, कुमारी, शर
कृत, सर्प, नाभि कही कीट,
पेशकृत् कही भृङ्गी।

दधि. [स] दही, गोरस।

दधिकूपिका· [स] दधिघोरी, शिरनी।

दधिफल [स] कैंत।

दधिमण्ड [स] मट्ठा।

दधित्थ [स] कैंतफल।

दधिमुख· [स] बानर विशेष।

दघ्न [स] } दही।
दध्न:

दध्यौ, [स] ध्यान किया।

दधीच· [स] एक ऋषि का नाम राणा रघुवंशी तप शूर जा के पसलि का साढ़े तीन शस्त्र बन्यो था एक यज्ञि धनुष· पिनाक धनुष् धनञ्जय धनुष् आधा गांडीव, वृत्रासुर के मारण हेतु· जाकी वार्त्ता विषद कै वृत्रासुरकी पंक्ति में ख्यात।

दनुज· [स] राक्षस, भेद निशिचर भेद, असुर, दानव, दैत्य। [कंटक।

दनुजारी. [स] विष्णु। दैत्य,

दन्त· [स] दांत, दशन, दष्ट्र, दमन।

दन्तधावन· [स] दातोन।

दन्तधावन· [स] खयर।

दन्तबीज [स] अनारफल।

दन्तशठ [स] जंभीरी लेम्बू, इमली, फलो, कैंतफल।

दन्तिन्· [स] हाथी।

दन्ती· [स] हाथी, गज, दन्तेल, तामा जड़ो, बड़ो तामा कड़ी, दो०। हस्ती दंति द्विरद द्विप, पद्मी बारन व्याल। इभ कुम्भी कुंजर करी, स्तंबरेम मुंडाल ॥ १ ॥ सिन्धुरनी कपिनाग मद, गज छावज मातंग।

इत गयंद झूमत खरे,
रंजित नाना रंग ॥ २ ॥

दपट· [प] दौड़, धावा, सपँट।

दबको.[पं]घाटी, घात, दाव।

दबङ्ग·[द]कुशील, कुढ़ङ्ग, मूढ़।

दवा· [द] दाँव, घात, दबको।

दम. (स) } बाहर इन्द्रियों
[फ] } की निग्रहण,
नाश, शान्ति, घड़ी, इन्द्रिय निग्रह, इन्द्रियोंका रोकना, इन्द्रियों का जीतना।

दमक· [प] चमक, झलक, दाह, दमकना।

दमन·[स] दाह, नाश, नाशन, दहन, शासन, पुष्प विशेष, सूर्मा।

दमन [स] } दवना।
दमनक (स) }

दमनीय· [स] तोड़नहार, नाशक, शासनयोग्य, तोड़ने वाला, दमन के योग्य, तोड़ने के योग्य।

दमन् [द] नाशकरनेवाला।

ददात् [स] देता है।

दम्पति· [स] स्त्रीपुरुषसंयुक्त, जायापति, महापात्र, हि, स्त्री पुरुष का जोड़ा।

दम्भ. [स] अहङ्कार, घमण्ड, पाखण्ड, कपट, छल, फरेब।

दम्भी· [स] अहङ्कारी, घमण्डी, पाखण्डी।

दया· [स] कृपा, करुणा, दान, मिहरबानी। दोहा। अनु क्रोश करुणा कृपा, घृण अनु कंपहितुज्ञ। माया दाया अनुग्रहं कीन्ह राम सुद-युक्त ॥ १ ॥

दयज· [द] दिया।

दयालु· [स] दयावान, रहीम।

दयाकर· [स दयालु, कृपावन्त।

दयित· [स] वल्लभ, सज्जन, भावता, प्यारा।

दयिता, [स] प्यारी, स्त्री वल्लभा।

दर· [स] } भय, हीरामणि,
[प } भाव, मोल, फांक,
[फ] } शंख, ईषत्, भीतर,
द्वार, डर, छेद। अनेकार्थ में लिखा है। दो० दरजु कहत कवि सङ्ख को, दर ईषत

को नाम। दर हरतें राखी कुंवर, मोहन गिरधर स्याम ॥ १ ॥

दरद (स) सिंरिफ ।

दरभारी· (द) बड़ाडर।

दरबार· [फ] सभा, कचहरी।

दरस· (द) रूपदर्श, दरशन।

दरार· (प) दरक, फटना।

दरी [द] गुफा।

दरी भृत· (स) पर्व्वत, पहार, दो०। अग नग भू भृत दरी भृत, स्रिंगो सिखरी होय। सैल सिलोचै गोत्र कहि, अचल अद्रि पुनि सोय ॥१॥ गिरि गोवरधन नामकर, धरे स्याम अभि-राम। तुम डरते वह धक धकी, वेगि मिटो नहि-बाम ॥ २ ॥

दरिद्र (स) निर्धन मुफलिस।

दरवाह (द) प्रसन्न होना।

दरीमुख· (स) बानर बिशेष।

दर्दुर. (स) बेंग, भेक, दादुर।

दर्प· (स) अहंकार, घमण्ड, आत्मश्लाघा, क्रोध, अभि-मान, गरूर।

दर्पण. (स) मुकुर, मुखदेखने का शीशा, आईनह, आदर्श, मट्टा। दो०। प्रतिबिंबित आदरस पुनि, मुकुर सुकर तिय लेति। पिय मूरति नेनन निरखि, फेर डार तेहि देत ॥ १ ॥

दर्पक· (स) कामदेव, कन्दर्प, अनङ्ग क्रोधिक, काम नाम दो०। मदन मनोभव मन-मथन, पंचसर असमार। मीनकेतु कंदर्प हरि, व्यापक बिरह बिदार ॥१॥ पुष्पचाप पद्मग अतन, मनसिज दारुन काम। पतिसों रति जिमि रुठ रही, इमि देखति तोहि बाम ॥ २ ॥

दर्पी. (स) अहङ्कारी, गर्व्वी, क्रोधी, दर्प, अभिमान।

दर्वी· (स) सर्प्प, नाग।

दर्व्वी· (स) कर्छी, डोई, चमची।

दर्भ (स कुशद्वय, डाभ, काश, कुसा, एक प्रकारका घास, गव्वे ।

दर्भु [द] कोश, कुश ।

दर्भर [स] कावापक्षी ।

दर्भग [स] अप्रिय, असुन्दर ।

दर्भगा [स] अप्रिया, असुन्दरी ।

दर्भी [स] कर्छी, डोई, अमची ।

दरस } [स] रूप, दर्शन,
दर्श } दीदार ।

दर्शन [स] निरीक्षण, नेत्र, छहशास्त्र । [मनोहर ।

दर्शनीय [स] दर्शनयोग्य-

दर्शी } [स] देखनहार,
दरसी } द्रष्टा, देखनेवाला ।

द्रवद्धि [स] प्रसन्न होना ।

दर्शय [स] दिखला तू ।

दल [स] कटक, पत्र, मयूरचन्द, नाश, मजूर, समाज गभीर, पीड़ा, पत्ता, सेना, भाग, अनेकार्थ में लिखा है । दो० । दल कहिये नृपको कटक, दल पतनको नाम । दल बरही के चंद सिर, धरे श्याम अभिराम ॥ १ ॥

दलकि [प] फटना, कम्पित होके, कूद उठना, दरकि, गंभीर पीड़ा । [नाशन ।

दलन [स] नाश, घातक, मर्दन,

दर्शित [स] दिखलाया हुआ ।

दर्शितावर्त्तनाभि: (स) बि॰ नि-विन्ध्याया:) दिखलाई है भंवर रूपी नाभि जिस ने ।

दलि [द] नाशिके, नाशकरके ।

दलमलि [प] मीसडारि, चांपडारि, दल मलना । [टूटा ।

दलित [प] टूटे, हारे, नष्ट,

दलित [स] दास ।

दली [स] वृक्ष, पेड़, मयूर ।

दव [स] } पाप, अग्नि, दौराहा,
[प] } बनधागि, बन की आग ।

दवारी [द] डाढ़ा ।

दवकि [प] छिपकि, हटकि ।

द्वंद [स] दो ।

द्वन्दविपति (स) बड़ी बिपति ।

दवन [स] पाप, अग्नि ।

दवताई (द) प्रकाशिताई, इचोरताई। [भाग।

दवाग्नि-(स) दावानल, बनकी (स) पञ्चपसाबी,

दवारि बनआगि, दवानल, बनढ़ाढ़ा। [चितपद्य।

दश (स) संख्याविशेष, द्विगु

दशा (स) अवस्था, हालत।

दशकण्ठ (स) रावण, दशकंधर।

दशन् (स) दस।

दशन (स) दन्त, दान्त, दाढ़, दो०। रदन दसन द्विज दंत छवि, जो राजत रंग भीन। अनुमव नीरद मध्य मं, सीतल विद्युतबीज॥१॥

दशपुर (स) नाम है एक नगर का।

दशवायु १०॥ (स) प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, किकिरा, कूर्म, नाग, देवदत्त, धनंजय॥ १०॥

दशमुख (स) रावण।

दशमुख भुजोच्छ्वासित प्रश्न संधिः (वि० कैलासस्य) रावण की भुजाओं ने छिलाए हैं जोड़ जिस के।

दशकन्ध, दशमुख (स) रावण।

दशरथ (स) रामचंद्र की पिता का नाम।

दशमूल (स) लघुपञ्चमूल बृह त्पञ्चमूल।

दशांगुल (स) खर्बूजा।

दशार्ण (स) नाम है एक देश का।

दशेन्द्रिय (स) नयन, श्रवण, नासिका, जिह्वा, त्वचा, इति ज्ञानेन्द्रिय। हस्त, पाद, उपस्थ, गुद, वाक, इति कर्मेन्द्रिय॥ समस्त दशेन्द्रिय॥ १०॥

दस्यु (स) शत्रु, वेद विरुद्ध आचर करनेवाला, चोर, माखनचोर लीला-चोर नाम—सोरठा॥ आयोरी दधि चोर, मोषक दस्यु इकायहरि॥ तसकर नन्दकिशोर, प्रति रोधक पुनि गूढचर॥ १॥

दंष्ट्र (स) दन्त, दान्त, दाढ।

दहन (स) अग्नि, भस्मकर्त्ता,

आग, जलानेवाला, ज-
लाना।
दहे· (प) जले, बहे।
दहेहु· (प) जलायेहु, बहायेहु।
दच· (स) राजा, कुशल, वा
दच्छ प्रजा, राजाविशेष,
निपुण, चतुर, बुद्धिमान्,
समर्थ, प्रवीण, शुभ, प्रजा-
पति, ब्रह्मा के पुत्र, पिता
आज्ञा तें दश हजार पुत्र
उत्पन्न करि कै तप को गए,
सुर्गापक्षी।
दचिणआशा· (द) दचिणदिशा।
दचसुत· (स) प्रचेता,
दचिण· [स] उत्तर के सन्मुख
की दिशा, दक्खन दाहिनी
तरफ़।
दचिणायन. [स] कर्क की
संक्रांति से धन की संक्रांति
तक।
दचिणेन.(स) दचिणकी ओर।
दचसुता· (स) सती, पूर्व
शिवपत्नी।•
दा· द, (स) देनवाला, दाता।
दाऊ, (द) ज्येष्ठभ्राता,
पिता।
दाडिम्ब· दाडिम, दाड़िम (स)
अनारवृच, अनार, दो०।
अस्त बीज जानीक कार,
सूक पीक द्रुम मार।
ए दाडिम इमि देख अलि,
काकु तुम्र दसन, कार॥१॥
दाड़िमपुष्पक (स) रोहितक।
दाता· (स) देने वाला,
दातार· (स) दायक, देने
वाला, दाढ़। [नियाय।
दाद· (प फ) दीनाद्रिरोग,
दादुर· दादुल. (स)मेण्डुक,बेंग,
भेक, दर्दुर, मेढुका।
दान· (स) (द) } गजाख्यादिदान
देना, पितरण
अर्पण, भूर, मद्दसूल वनि-
ज, देना, (हाथी का मद)
दो०। दान द्विजन को देत
सो, गज मद कहिये दान।
दान सांवरे लेत वन,
गोपीन प्रेम निधान॥१॥

दानवीररस (स) धन प्राणादि अपना दे के काहू का कष्ट निवारण करि हर्ष आनन्द देना ।

दानव (स) राक्षस, असुरभेद ।

दान्त (स) } अभीष्टदाता, गि-
(प) } मौहदायक, दन्त ।

दाप (प) } ललकार, दपट,
(स) } बल, लहर, ताप, गर्व्व, दुःख जन्म मरण क्रोध, दर्प, अभिमान ।

दापि (द) अति जोर ।

दाम दामन्, (स) } रसी, प-
(प) } गहा, को-
(फ) } ड़ी, मोल राजनीति विशेष, माला, तुल्य, फान्द, पंक्ति, रुपया ।

दामिनी } (स) बिज्जली, कौंधा,
दामिनि } बिजुली, बिद्युत ।

दाय (स) अंश, बिभाग, हिस-सह ।

दायक (स) देन वाला, दाता ।

दायज (स) } दान, दहेज़
(फ) } वस्तु दुलहका ।

दार दारा (स) स्त्री भार्या, जाया, नारि ।

दारक (स) नाशक, घातक ।

दारण (स) } फाड़ना, बिदारण,
दारन } निर्मलीका वृक्ष ।

दारद (स) बिष बिशेष, पारा, हिंगुल ।

दारय (स) नाशकारक, बिदारक, नाशकरी, फाड़ी ।

दारिका (स) कन्या, पुत्री, वेश्या, लकड़ी ।

दारिद्र (स) } दारिद्र, कङ्गाल,
दारिद } दरिद्रता ।

दारु (स) } लकड़ी, काष्ट,
दारू } शीशा, वृक्ष बि-शेष, काठ आमाहलदी ।

दारुक (स) सारथी, रथवान ।

दारुण (स) कठिन, भयानक, घोर, सघन, सागन, भयंकर, तीव्र, कठोर ।

दारुनारि (स) } काष्ठको पुत्री,
दारु नारी } कठपुतली ।
दारुयोषित }

दारुभद्र (स) देवदार ।

दारुसिता (स) दारुचीनी ।

दारुहरिद्रा (स) दारुहलदी ।

दावन· [प) नाश, नाशक।

दाशो· [स] } दास।

दाशेह· } [डाढ़ा।

दावा· (स) अग्नि, जोआला,

दवानल (स) बन की अग्नि।

दार्विक· (स) गोभी।

दार्व्वी· (स) दारुहल्दी,

देवदार। [पक्षो।

दार्व्वीघात· (स) कठखोदा।

दार्व्वीनिशा· (स) दारुहल्दी।

दार्व्वीभेद (स) आमा हल्दी।

दास· (स) सेवक, चेला, किङ्कर, नौकर, गुलाम।

दासपुर· (स) केंवटी मोथा।

दासी· (स) सेवकी, टहलिनी, चेली, कागजंघा लड़ी।

दो॰ भृत्या दासी किंकरी, चेरी भरि जु अंबु। राजति मनिमय अजिर में, जो उरबसी को रंबु ॥१॥ छंदलीलावती। दासीभृत्या किंकरी चेरि दीन्हो बहु सीता संग मातु॥ किंकर अनुचर चर अनुग भृत्य जो पदगपत्ति भृतक पदात॥ पुनि दास अमित दीन्हे बिदेह रघुनाथ साथ सबरी अनंद॥ यह नामधारि पुनि दृत्त बखान बत्तिस कल लीलावती छंद॥ १॥

दास्य· (स) दासता, लौंडी-पन, चेलाई।

दाह· (स) लहर, ताप, जलन, दाहक, जलाना, जरना।

दियासे· (ह) दीपक, चिराग।

दिक्· दिग् (स) दिशा, ओर।

दिक्संसक्तप्रविततघनव्यस्तसूर्य्यातपानि (वि· बासराणि) दिशाओं में लगी हुए बादलों के फैलने से दूर हुआ है सूरजका आतप जिनमें।

दिङ्नाग· (स) दिग्गज।

दिगम्बर· (स) नग्न, नंगटा, बस्त्रहीन, शिव, नंगा।

दिग्गज· (ह) दिशा के हाथी।

दिगभ्रम· (ह) पूर्वादि दिशा

का भूलना।

दिग्त्राता· (स) } दिग्पा-
दिग्पाल· दिग्राज· }
ल, इन्द्र कुबेरादि ॥१०॥
कुबेर, वरुण, वायु, ईश
इन्द्र, अग्नि, यमराज,
नृत्य, चन्द्र, सूर्य्य, ब्रह्मा,
१०॥ भूप, समान्य नृप.
इन्द्र आदि। [क्षय।

दिग्विजय· (स) चारो दिग् का

द्विज·(प) ब्राह्मण, भूसुर,

दिती· (स) दैत्यों की माता,
राणा कश्यपपत्नी।

दितिसुत· (स) } हिरण्यकश्यप,
दितीसुत· } हिरण्याक्ष
दैत्य।

दिनदानी· (द) अतिदानी, दिन
दिन देनेवाला, अतिउदार।

दिन (स) जो नाशकरना अंधेरे
को, दिवस, दिवा, वासर,
वार, रोज़, सूर्य्योदय से
सूर्य्यास्त तक का काल।
दो०। घस् दिवस वासर
अहर, दिन दिव घट
नामानि। इन नामनि प्र
कार धरे, नाम दिवाकर
ज्ञान ॥ १ ॥

दिनकर· (स) } सूर्य्यं, भास्कर,
दिवाकर } रवि, आक का
वृक्ष ॥ छंद शुभगीत। सूर·
भग खद्योत दिनमणि
धामनिधि खग ग्रहपती ॥
अर्यमा आदित्य पूषण अरु-
ण मिहर त्विषांपती ॥
चित्र भानु दिनेश सविता
कर्म साक्षी भास्करं ॥ मा-
र्तंड पतंग पिंगल दंड हंस
दिवाकरं ॥१॥ अर्क माठर
अंशुमाली द्युमणि पंकजि
नीपती ॥ तपनइन हरि
दश्व भी सप्ताश्व भी भास्कर
पती ॥ परिभाश्वतिग्म
पूषा चक्र वाक प्रभाकरं ॥
मार्तंड० ॥२॥ विवस्वत भा-
स्वत गगन मणि ब्रध्न मित्र
विरोचनं ॥ सूर्य तिमिरारी-
विकर्तन तरणि ध्वांत वि-
मोचनं ॥ उष्ण रश्मी जगत
चक्षू सहस्रांशु विभाकरं ॥
मार्तंड० ॥३॥ अहस्कर वसु

चिथी तनु चंडांशु पर है तन रवी ॥ भानु नाम दुष-ष्टिक छब्बीस शुभगीतं छवी ॥ हरि बिलास हुलास दीजै भक्ति हरि करुणा करं ॥ मार्तंड० ॥४॥ दोहा। दिन नामनि पर कर धरै, कामिनि पर पतिधार। पुनि निशितम हिम रिपु कहै, प्रगटे नाम तमारि ॥१॥ किरन नाम को पूर्व मो, धारै उष्ण कलिंद ॥ सुत महिषध्वजशूल धर, सौरि आर्क शनि मंद ॥२॥

दिनकरकन्या (स) यमुना नदी

दिनकरतनय (स) यम, कर्ण कुमार सुग्रीव। [नदी।

दिनकरतनया (स) यमुना

दिनकरपुत्र. (स) यम, कर्ण कुमार, सुग्रीव ।

दिनकरपुत्री (स) यमुना नदी।

दिनकरसुत (स) कर्णकुमार, सुग्रीव, यम। [नदी।

दिनकरसुता (स) यमुना

दिनपात दिनमनि (स) निर्व्वाह, उपजीविका।

दिनमणि दिनराउ. (स)}
दिनमनि (प)}
सूर्य्य, रवि, दिवाकर, दो० देव दिवाकर दिनकर, विभाकर भास्कर हंस। मिहिर तिमिरहर प्रभाकर, विवस्वान तिग्मांस ॥१॥ भानु विभाकर विभावसु, सविता सूर पतंग। अंबर मनि दिनमनि रवि, सूच तनुचय अंग ॥२॥

दिनमणिमंडल (स) सूर्य्य मंडल, दो० मंडल मंडन जो कोउ, कहै मुनि जन जाहि। सो वह नागर नंद को, क्यौं बलि कपटी आहि ॥१॥ [सूर्य्य।

दिनेश (स) दिवाकर, दिनमणि,

दिया से (प)}
दिया ले}
दीपक, बाती, प्रीवहि, तुच्छ, दीप, चिराग।

दिपिन (स) चितकाबर बाघ।

दिप्यक (स) } जवाइन ।
दिप्या (स) }

दिव्यजल (स) धारा, पल्वल, सोत, पाता, इन चारो का पानी ।

दिव्योषधी (स) मैनसिल ।

दिव (स) स्वर्ग, आकाश ।

दिवस } (स) दिन, सूर्य, बा-
दिवस } सर, रोज़ ।

दिवसपति (स) सूर्य, दिन मणि ।

दिवस्पति (स) इन्द्र, वासव ।

दिवा (स) अव्यय, प्रकाश, ज्योति, दिन, ३० दंण्ड, संख्यावाचक ।

दिवाकर, दिवास (स) सूर्य, भास्कर, मृगतृष्णा आक का वृक्ष ।

दिवारात्रि (स) ६० दण्ड संख्या वाचक, ।

दिवि (स) आकाश, व्योम, आकाशविषे । [अमर ।

दिविषद, (स) देवता, विबुध,

दिवी (स) भात ।

दिवीश (स) सूर्य, इन्द्र ।

दिवेश (स) दिवाकर ।

दिव् (स) आकाश, शून्य स्वर्ग ।

दिवोदास (स) काशी के एक राजा के नाम ।

दिव्य [स] उज्वल, विशद, सुन्दर, मनोहर, आकाश का । [ज्ञान ।

दिव्यदृष्टि, (स) अलौकिक,

दिव्या [स] जलबर्ती ।

दिव्यतनु } [स] अपसरा, उ-
दिव्यतन } ज्वल शरीर ।

दिश, दिशा, दिशि [स] ओर, तरफ़ दिक, दिग, पूर्वादिदिक । दो० । दक्षसुता काष्ठा दिशा, ककुभ हरित दिग होय । अष्ट नाम आशा सहित, कहत विबुध सब कोय ॥ १ ॥ प्राची दिगपति देवपति, अग्नि अधिप आग्नेय ॥ दक्षिण पालक दंडधर, नैऋत निरर्र केय ॥ २ ॥

हरित प्रतीचीपति वरुण, वायवपति नभस्वान। ककुभ उदीची हरसखा, हरस्वामी ईशान ॥ २ ॥

दिशिप· (स) इन्द्र कुवेरादि।

दिशिप्राची· (स) पूर्व्व दिशा प्रसिद्ध, सूर्य्यादि उदय स्थान।

दिशिराज·(स) इन्द्र कुवेरादि।

दिश्· (स) दिग्, घोर, दिशा।

दो०। हरित काष्ठा ककुभ दिस गोपासा इहि घोर। कव की चितवत है दई, मोहन नन्दकिसोर ॥ १ ॥

दिश्त्राता· (स, दिग्पाल।

दिग्नाथ· (स) पश्चिम दिशा वरुण ॥ १ ॥ वायव कोन, पवन ॥२॥ उत्तर दिशा, कुवेर ॥३॥ ईशान कोन, शिवा ॥ ४ ॥ सर्वदिशा, इन्द्र ॥ ५ ॥ अग्नि कोन, अग्नि ॥६॥ दक्षिण दिशा, यम ॥७॥ नैरित कोन, पित देवता ॥ ८ ॥

दिशि· (द) दिशा, घोर।

दीर्घकोल· (स) अङ्कोल।

दीर्घगोधूम· (स) बड़गोहुमा।

दीर्घच्छद· (स) केतारी।

दीर्घजीरक· (स) सुपेद जीरा।

दीर्घदण्ड· (स) सुपेद रेंड़।

दीर्घपत्र· (स) कुश १ केतारी बड़ोखा।

दीर्घवञ्चक· (स) मकरतेंद।

दीर्घपत्रा· (स) आमती।

दीर्घपत्रिका· (स सुपेद गदह पूर्णी।

दीर्घपर्णी· (स) सरीवन।

दीर्घपोर (स) केतारी बड़ोखा।

दीर्घफल (स) अमलतास।

दीर्घवर्षाभू (स) सुपेद गदह-पूर्णी।

दीर्घवृन्त· (स) सोनपत्ता।

दीर्घशूक (स) लाल धान।

दीर्घाङ्गी (स) सरीवन।

दीदिवि· (स भात।

दीन· (स) दुःखित, अधीन, कङ्गाल, डरा हुआ।

दीनता· (स) गरीबी, अधीनता।

दीननाथ· (स) दुखितों का स्वामी।

दीप· (स) दीपक, चराग़।

दीपनम्· (स) चना का नोन।

दीपनी· (स) मेथी।

दीपान्तरवचा· (स) चोब चीनी।

दीपिका. (स) अजमोदा।

दीप्त· (स) प्रज्वलित, प्रकाशित।

दीर्घ· (स) बड़ा, लम्बा।

दीर्घयामा, (वि॰ त्रियामा) बड़े हैं पहर जिस के।

दीर्घोच्छ्वासम्. (वि॰ अङ्गम्) लम्बी है स्वास जिस की।

दीर्घस्वास· [स] बड़ास्वास, दो॰। पृथुल प्रानपर नाहि पृथु, आवत स्वास बिसाल। दीर्घ स्वास रमि भरति हो केहि कारन अलि बाल॥१॥

दीक्षा· (स) मन्त्र गुरु शिष्य करण, मंत्रोपदेश।

देशाचाता· दिशिप· (स) दिशा के देवता।

दीसा· (स) देखा, दीखना।

दुः (स) दुःख, कष्ट, पीड़ा।

दुःकाल· (स) अकाल, कुसमय, दुर्भिक्ष।

दुःख· (स) क्लेश, कष्ट, पीड़ा, तकलीफ़। दो॰। कदन बिदुन अकदन तुदा, गहन व्रजन पुनि आहि। दुख जनि दे अब जान दे, कत बैठा अनखाहि॥१॥

दुःखदुःख· (स) दुःख, भारी पीड़ा।

दुःखकर· (स) दुःखदायी, क्लेशदायक।

दुःखविधा· (स) काल करि के, कर्म करि के, गुण करि के॥३॥

दुपहरिया· [द] फूल विशेष दो॰ बंधु जीव बंधूक पुनि, जव कुंकुम पुनि आहि। दुपहरि के जो फल अलि, नित फूले तोहि चाहि॥

दुकूल· (स) वस्त्र, कपड़ा रेशमी, पट। [नग्न।

दुकूलहीन· (स) नङ्गा, नङ्गटा,

दुःखदाथ· (स) दुःखमेटा।

दुखपुंज [स] दुख का समूह।

दुःशील (स) दुष्ट स्वभाव, बद मिज़ाज। [न्याय।

दुःसह [स] पराक्रम जो सहा न

दुग्ध [स] क्षीर, दूध, पयस, गोद या दुग्धनाम हो। अंक उछंगहु क्रोड उर, सुत कोई मग रानि। दुग्ध अमृत पय क्षीर युत, दुग्ध करावत पान॥१॥ जग पालन पालन भुवन, पद अंगुष्ठ मुख देत॥ इंदु कंज जनु बैर तजि, मेटि मेटि रस लेत॥२॥ [श्रीरनी।

दुग्धकूपिका [स] क्षीनावरा,

दुग्धिका [स] दुधिया जड़ी।

दुज (प) ब्राह्मण, भूसुर।

द्युति (स) [प] प्रकाश, दुआ, चमक।

दुनी [प] संसार, जगत्, दुनियां।

दुन्दुभि (स) [द] नगारा, धौसा दैत्य विशेष, एक दैत्य का नाम, मृदंग, नकारा।

दुःप्रधर्षिनी (स) बनभंटा।

दूर्वला [स] जल सिरिस।

दुर्विद [स] नाम बानर सेनापति।

दुम्बक (स) दुम्बा भेड़ा।

दुर [स] कु. कठिन, बुरा, न्यून, नीच।

दुरत [स द] छिपना, लुकना।

दुरतिक्रम (स) दुस्तर कर्म।

दुरना [द] छिपना, लुकना, भागना।

दुरन्त [स] दुष्ट, दुःख अन्त, अपार्यन्त, अन्तहीन, अंतररहित, अन्तबिना, चपल, ढीठ।

दुराइ [प] पलग छिपाई।

दुराचार [स] दुष्टाचार, अधार्मिक।

दुराचारी [स] अन्याई, दुःशील।

दुरात्मा [स] पापी, दुष्ट, अधर्मी दुरात्मन। [पापी।

दुरात्मन [स] दुरात्मा दुष्ट.

दुराधर्ष [स] शत्रु सों जो नहीं दबै, प्रतापी, सर्षों, तोरो,

बाढ़ै, दुरिधारण जाको दुःख से भी न मिलने योग्य।

दुराना· (द) छिपाना, लुकाना।

दुराप· [स] आश्चर्य, अजूबा दुःख करि लाभ।

दुराराध्य· [स] दुःख से आराधन के योग्य, दुःख से सेवने के योग्य। [प्राप्ति होय।

दुराराध्यप· [स] दुःख सों जो

दुराव· [प] कपट, छिपावना, टालना, छिपाना, परदा, कपाट।

दुरारोहा· [स] क्षुद्र, खजूर।

दुरालभा· } [स] जवासा।
दुरालम्भा· }

दुराशा· (स) नीच आशा, दुष्ट आशा। [छिपित।

दुरित· [स] पाप, दुःख, पातक

दुरे· दुरेउ· [स] (द } छपेउ, लुकेउ।

दुर्गन्ध· (स) पिआज, दुष्ट गंध, बदबू।

दुर्गहा· (स) चिरचिरी।

दुर्व्य· (स) जवासा।

दुर्धर्षा· (स) रेंगनी।

दुर्ग· (स } किला, गढ़, दुर्गस्थ अगम, कोट।
दुर्ग· }

दुर्गम· (स) } दुर्गति, औघट, गम्भीर, अगम्य, अजय।
दुर्गम· }

दुर्गा· (स दुर्ग एक राक्षस का नाम उस को मारनेवाली देवी; जैसे दुर्गा पाठ में लिखा है कि "तत्रैव च वधिष्यामि दुर्ग माख्य महासुरम। दुर्गा देवीति विख्याता॥" अर्थ देवी कहती है कि मैं वहां दुर्ग नाम असुर को मारूंगी तब मेरा नाम दुर्गा प्रसिद्ध होगा। देवी, भवानी, काली; भगवती; दुर्गापाठ; दुर्गामाहात्म्य; दुर्गा चरित्र; जिस में दुर्गा की महिमा लिखी है।

दो०। उमा अपर्णा ईश्वरी गौरी गिरिजा होय। मृडा चंडिका अंबिका, भवा भवानी सोय॥१॥ काली हैम सुता पुनि सर्व मंगला नाम। माया जेहि आधार

जग, विलखारिनी बाम ॥२॥ अजा शिवा मेनासुता, सिंहेश्वरि भति कांति ॥ तं सुम पिय परताप तें, रचत विश्व बहु भांति ॥३॥

दुर्घट (स) अगम, कठिन, दुःसाध्य, दुष्कर, औघट।

दुर्ज्जन } (स) शठ, अपकारी,
दुर्जन } दुष्ट, दुष्टमनुष्य खोटा आदमी।

दुर्ज्जिन (स) पाप, दोष।

दुर्गाद (स) राक्षस, असुर, दो• कोनप कक्षप पुन्य जन नीकक सूत दुर्वाद। का-बुर अष्टप निसाचर, जातु धान क्रत बाद ॥१॥ अघ से राक्षस पाप को मैं देखि गति होत। उलटि समानी पिंड मैं, परगट जाकी जोति ॥२॥

दुर्व्वर्ण (स) रूपाद्रव्य।

दुर्व्वा (स) दुवरी तृण, दूब घास।

दुर्बला (स) अर्कासरिश।

दुर्व्वाद } (स) दुर्व्वचन,
दुर्वाद } दुर्व्वाक्य, गाली।

दुर्वचन। [दुबला।

दुर्बल (स) निर्बल, बलरहित

दुर्वचन (स) दुष्टवचन, गाली।

दुर्व्वासा } (स) ऋषि विशेष
दुर्वासा }
दुर्वासस् } अत्रिपुत्र रुद्रअंश, एक ऋषि का नाम।

दुर्भिक्ष (स) अकाल, असमय, कहत।

दुर्मद (स) वीररस के मध्य विमत्त, निर्भय रहना।

दुर्मुख (स) निशिचर वीर विशेष। [अधिभूत।

दूष (द) अध्यात्म, अधि देव।

दुःशील (स) दुष्ट स्वभाव बद-मिजाज। [बड़ा बेटा।

दुर्योधन (स) धृतराष्ट्र का

दुर्लभ (स) जो कठिन से प्राप्त हो, कठिनाई से मिलने वाला।

दुर्लभ प्रार्थनम्, (वि•, चेतः) कठिन है आसा जिसकी।

दुष्कर (स) कठिन, असाध्य,

दुःख दायक ।

दूषण· (स) दोष, कसूर ।

दुष्ट· (स) पापिष्ट अधम-कुकर्मी कलकीअवतार नाम दो० । ह्वै है कलियुग अंत में, हरि कल्की अवतार ॥ सतयुग सम गुण होयगो, यवनवंश संहार ॥ १ ॥

सवैया छंद ॥ शंभर नगर विष्णु जस भूसुर ताके गृह होइ अवतार ॥ श्रावण शुक्ल चतुर्थि निशा-सुत बाहन अश्व पाणि असि धार ॥ दुर्जन खल असाधु जो क्रूरहु, दुष्ट वेस करिहैं संहार ॥ एकतीस कल छंद सवैया षोड़स पर विश्राम विचार ॥ १ ॥

दुश्चरित. (स) वेद विरुद्ध कर्म, पाप, पापी ।

दुष्कर्म· } (स) कुकर्म, नीच
दुष्कर्म· } क्रिया, वेदविरुद्ध कर्म, पापकर्म ।

दुष्काल· (स) अकाल, कुसमय ।

दुष्कृत· (स) पाप, पातक ।

दुष्टजन्तु· (स) सर्पादि जीव ।

दुष्टतर्क· [स] कुविचार ।

दुसह· दुस्सह [स] नहिंसनेह-योग्य, कठिन असह्य-जो सहा न जाय—दुष्प्राप्ति कठिन काम, दुस्सह से भी न सहा जाय ।

दुस्तर· (स) दुःखदायक, अति दुःख, अगम, दुःख से भी न सहा जाना, कठिन कर्म दुःखसे भी नहीं पार मिले ।

दुहाई· [प] द्रोह, सौगन्द, सौगन्ध, पुकार, गोहार, हल्ला, कसम ।

दुहि· [स] कामना, इच्छा ।

दुहित· [स] पुत्र, दो० । आ-त्मज सुअन अपत्य पुनि, तनुज तनय कहि तात । नंदनंदन गोविंद सों, न कछ गर्ब की बात ॥ १ ॥

दुहिता· [स] पुत्री, कन्या, बेटी, ।

दुहिट· [स दुहिता, कन्या,

पुत्री, लड़की।

दूर होना· [मु०] अंतरध्यान होना। दो०। गुप्त तिरोहित अन्तरित, गूढ़ दुरइ बखीय। लोचन अनु मौलूक सखि देखो एहि विधि तीय। छंद अर्धसम व्रत.॥ मन्मथ दर्प विमोचन को पुनि गोपिन गर्व लख्यो भगवान॥ वृषभानुसुता लय संग भये हरि अंतरितं दुर अंतरधान। गुप्त तिरोहित अंतरहित अगोचर कानन मध्य लुकान॥ पहिले तिसरे पद एक गंता दूसरे चतुरंगति एक बखान॥ १॥

दुहितुपति· [स] जामाता, जमाई।

दूत· दुत· { [स] पारसद, सन्देशी हलकारा, हरकारा। पठवनिया कासिद संदेश ले जाने वाला, वसीठ।

दुगना· [ज] दुगुना, द्विगुण [

दूधमुख· [प्र] बालक, बेसमझ, बच्चा, लड़का।

दूषण· [स] दोष, निन्दा, राक्षस विशेष, कसूर; एक राक्षस का नाम।

दूर, (स) जो निकट नहीं है।

दूरज (स) बैदूर्य रत्न।

दूरबन्धु· (वि० बहु०) दूर है प्यारा जिस का।

दूरीभूत, (स) दूर गया हुआ,

दूर्वा / दूर्बा } दूब घास।

दूषित· (स) प्राप्त दोष, जिस को दोष लगा हो।

दूरे (स) अगाड़ी, फरके, छिपे।

दूर्य्या· (स) बैदूर्य रत्न।

दूशक, (स) लालधान।

दृक, दृग (स) नेत्र, नयन, आंख।

दृगञ्चल. (स) पलक, पत्त।

दृव. (स) देव, देवता, मेघ, राजा।

दृढ़· (स) पोढ़ा, अचल, कड़ा, कठोर, पुष्ट, बलवान, स्थिर, मजबूत।

दृढ़फल [स] नारियल।

दृश्य· (स) देखने के योग्य, सुन्दर, पुष्ट, दर्शनीय।

दृषद्. (स) पत्थर।

दृष्ट· (स) नेत्रगोचर, दृष्टिमान्, प्रगट, देखाहुआ।

दृष्टकूट. (स) पहेली, पहेलिका।

दृष्टभक्ति. (वि·त्वर्) देखी है भक्ति जिस की।

दृष्टान्त· (स) उपमा, उदाहरण, मिसाल।

दृष्टि·दृष्टिपात् (स) दर्शन, नयन, आंख, नेत्र, बुद्धि, निगाह, चितवन।

दृष्टोच्छ्राय· (त्रि० त्वम्) देखी है ऊंचाई जिस की।

दृष्ट्वा· (स) देखकर।

देखनअर्थ. (द) देखने के लिये।

देव· (स) देवता इन्द्र सूर्यादि, राजा का उपाधि, वेश्य संज्ञा, ईश्वर, द्योतनात्मक, देश, स्थान, मुल्क, देवनाम दो०। देव अमर निर्जर विबुध, सुर सुमनस त्रिदिवेस। वृन्दारक हू बिमान गति, अग्नि जीव अमृतेस ॥ १ ॥ दिविष देलेषा वन्हिमुख, गीर्वाणक पति पोव। कौन देवता रंक जहं, बनि बैठे सब जीव॥२॥ पुनः छंद रोला। विबुध देवता देव ऋभव पुनि लेखा निर्जर। सुपर्वाण गीर्वाण त्रिदश सुमनस क्रतु भुज सुर॥ पावक सुत अस्वप्न अमर त्रिदिवेश दिवौकस। आदितेय आदित्य अदिति नंदन अमृतांधस॥ वृन्दारक दिविषद दानवारी विमान गति। देवतान आमृत्यु अग्नि जिह्वा अदिति सुत॥ यह चिंमत नामानि शब्द पति सुरपति जानी। पुनि रोला यह छंद कहा चौबीस बखानो।

देवकी· [स] कृष्ण जी की माता।

देवऋषि· [प] नारद, देवल, असित, व्यास, देवऋषि चत्वारीख्यात ।

देवकान्या· [स] फूल खेकसा ।

देवगन्ध· [स] रोहिसघट़ ।

देवता· [स] धतूरा, देव ।

देवताखड़ी· [स] बन्दाल ।

देवतामणि· [स] महामेदा, इसकी अभाव में सतावर बैद्य देते हैं ।

देवदार्वी· [स] देवदार ।

देवदाली· [स] बन्दाल ।

देवदुन्दिभी· [स] दोनों तुलसी ।

देवधूप· [स] धूना १ गुग्गुल २ ।

देवनिर्मिता· [स] गुरिच ।

देवी· [स] चूरनहार १ फूलखे· कसा २ स्पृक्का ३ ।

देवकुसुम· [स] लवंग, लवङ्ग लता, कल्प ।

देवक· [स] देवका ।

देवतरु· [स] कल्पवृक्ष, सुरद्रुम । टो० । हरिचंदन मंदार पुनि, पारजात संतान । कल्पवृक्ष युत देवतरु, पंचम नाम बखान ॥ १ ॥

देवतापञ्चज्ञानइन्द्री· [स] श्रवण का दिशा, त्वचा का पवन, नयन का रवि, जिह्वा का वरुण, नासिका का अश्विनी कुमार ॥५॥ इन्द्री नाम ।

टो० । गांइरपक खंकारन गुन, इन्द्री ज्यों अंसु पाय । त्यों राधा माधव मिलें, परम प्रेम हरखाय ॥ १ ॥

देवानांप्रिय· (स) अज्ञ, मूर्ख, अहमक ।

देश (स) मुल्क । [मुल्क ।

देशान्तर (स) अन्य देश गैर

देशिक [स] उपदेश कर्तागुरु ।

देवतापञ्चबिवरण·५ (स) विष्णु१ शिव २ गणेश ३ सूर्य ४ दुर्गा ५ यादि सभों शाप बशी वृक्ष भयो हैं पंचवटी ख्यात है ।

देवतापञ्चकर्मइन्द्री० (स·) मुख का अग्नि० हाथ का इन्द्र० पग का यज्ञविष्णु० लिंग का दक्ष प्रजा पति,

गुदा का यमराज ॥ ५ ॥
देवदत्त· (स) देवताकादियाहुवा।
देवदारु· (स) नाम है एक वृक्ष
का। [स्त्री।
देवधुनी· (स) गंगा नदी, सुर·
देवपूर्व्वगिरिम्· (स) देव है आगी
जिस पहाड़ के नाम में
अर्थात् देवगिरिम्।
देववल्लभ· (स) केशरीपुष्प।
देवर्षि (स) नारद, देवल,
असित, व्यास ॥ देवऋषि
अवारोख्यात ॥ ४ ॥
देवसर, (स) मान सरोवर,
देवता का स्थान।
देवसरी· देवसरि, (स) गङ्गा,
देवध्वनि, मानस आदि।
देवहूती· (स) राजा स्वायंभु·
मनुपुत्री, ऋषिकर्द्दम की
स्त्री जाकि कथा श्री भागवत
तृतीय चतुर्थ स्कन्ध ३ ॥४॥
प्रमाण कि राजा स्वायंभु·
मनु को द्विपुत्र एक उत्ता-
नपाद बड़े जाके पुत्र श्री
ध्रुव जू महात्मा प्रसिद्ध,
दोसरो प्रियव्रत लघु पुत्र २ ॥
अरु वाही स्वायंभु मनु को
तीनि पुत्री एक देवहूती
कर्द्दम मुनि की स्त्री जाके
गर्भ श्री आदि देव भगवा·
न् अवतार लेके कपिलमुनि
कहाये ॥ १ ॥ दुजी आकूती·
पुत्री रुचप्रजापतिकी स्त्री
जाके गर्भ श्री भगवान् यज्ञा-
वतार लिए ॥ २ ॥ तीसरी
प्रसूती राजादक्ष की स्त्री
जाके गर्भते श्री सती शिव
पत्नी अवतार ॥ ३ ॥
देवी· (स) दिवक्रिड़ा करना खे·
लना, भवानी, दुर्गा, जगद·
म्बा, भगवती, देवताकी स्त्री
राणी, सुरश्वरी, औषधि।
छंद झूलना—देवि विश्वे·
श्वरी मातु माहेश्वरी शंक-
री ईश्वरी शंभु रानी ॥ चंडि-
का अम्बिका आर्य कौमारि-
का भद्रकाली सती श्रीभवा-
नी ॥ माधवी मंगला दिव्य
नारायणी हैमवंती उमा

दाचयानी ॥ गौरि रुद्रानि दुर्गानि चामुंड कात्यानी मा दुर्गा की मृडानी ॥१॥ शंकटा नारसिंही बराही शिवा अंबि ब्रह्मी गदा शूल पानी ॥ योग माया अपर्णा इड़ा पार्वती शैलजा वैष्णवी गो बखानी ॥ वेश दुर्गा हु सर्वाणि ज्वाला-मुखी बिंध्यवासी सदा-नन्द दानी ॥ नाम पंचाश श्यामा कहे भूलना सात रुशान की दीर्घ बानी ॥२॥

देश· (स) मुलुक, पृथ्वी का खंड, लोक, निलय, स्थान।

देश·चाता } दिशा के देवता।
दिग्शिव· }

देह· (स) काया, शरीर, जिस्म, काय। [वाचक।

देहि· [स] दीजिये, याचक

देहिन· [स] जीव सब, बहु-बाचक जीव शब्द।

देही. [स] जीव आत्मा, शरीर।

देहाहिं· (स) दैव को भाग्य की

द्वैत [स] भेद, मैं, तू।

दैव· [स] ईश्वर, भाग्य।

दैवात्· [स] अकस्मात् अचा·नक, इत्तफ़ाकन्।

दौहिच· [स] दोषता।

दैत्य· [स]राक्षस असुर। दो॰ दानव दनुज दैत्यपुनि, सुर रिपु असुर अनंत। माया रूपी रैन दिन, डोलतसूर अनंत ॥ १ ॥

दैत्या· [स] एकांगी।

दैन्य. [स] दुख, दारिद्र योग्य, दीनयोग्य, दीनता, मली·नता। [उत्पात।

दैविक. [स] गाज आदि से

दैहिक [स] ज्वर आदि।

दोला· [स] नील, । हिंडोला, झूलना।

दोष· [स] कलङ्क, दोष।

दोष· [स] दूषण, बिकार अप·राध, काम क्रोधादि। बुराई दो॰ । अघ अंबस छिलन अ-छित, अवगुन ओई पीय। कूपछाह जिमि राखि उर,

थो न भाषिये तीय ॥ १ ॥

दोषक· [स] निन्दक, अपराधी।

दोहद· [स] खेद, लालसा गर्भिणी की, गर्भवती स्त्री के मन की चाह।

द्योतिन्· [स] चमकनेवाला।

द्युति· (स) प्रकाश, शोभित, शोभा, प्रभा, कांति।

द्यूत· (स) जूवा, पाशा खेल, धूर्त्त,प्राणरहित,पाशे आदि से दाव लगाकर खेलना।

द्रवत· (स) पघलत, चलत छीहत।

द्रवन्ती· [स] बड़ा तामाजड़ी।

द्रविड़ी· [स]चवघड़ा इलायची।

द्रविण· [स] द्रव्य, कौड़ी।

द्रवो· द्रवना [प] पघलो, कृपा करो वा कर टेघराना।

द्रव्य· [स] कौड़ी, धन, वस्तु, सार, दौलत। समय वा पंडित या द्रव्य नाम० ॥ छन्दलीलावती— प्रभु तिलक हेतु गुरु कहि बिचार औसर वै बेला समै नन्द॥ अनभिख सामै सा सज्ज काल बैठे सिंहासन रामचन्द्र। ज्ञात धीर कृष्टि प्रग विदुष सूर आचार्य विलक्षण बुद्धिमान॥ विद्वान मनीषी लुब्ध वर्ण अभिरूप सुधी औ संख्यवान ॥ १ ॥ दोषज्ञ विपश्चित दूरदर्शी कवि कोविद पंडित दीर्घदर्शी ॥ बुध वाग्मी प्राज्ञ पचीश नाम सब आय कीन्ह अभिषिक्त हर्षं ॥ नृप वृन्द उपाय न वित्त अर्थ वसु द्रव्य द्रविन धन वस्तु राशि। बत्तिश काल लीलावती छन्द रघुनाथ कीर्ति ज्ञान हरि बिलास ॥२॥ [डारी।

द्रव्याधीश· (स) कुबेर सुर भं-

द्रव्यी· [स]धनीक, कौड़ीवाला।

द्रक्ष्यसि· (स) देखेगा तू।

द्राविड़· [स] काला नोन, १ कपूर। २ ॥

द्राकिलिमक· [स]देवदारु वृक्ष।

द्राक्षा· [स] दाख, छुहारा,

इंगूर, गोस्तनी मुनक्का।

द्रुत· (स) तुरन्त, पिघला हुआ।

द्रुद· [स] शीघ्र, जलदी, वेग।

द्रवी· [स] कृपा करो वा कर, द्रवना, टेवरता। [रखत

द्रुम· [स] वृक्ष, पेड़, रूख तरु, द्र·

द्रुहिण· (स) ब्रह्मा, विरंचि।

द्रोण· [रु] परिमाण विशेष।

द्रोण, द्रोणपुष्पो· (स) } गूमा।

द्रोणकाक· [स] बड़ा कौवा, दांडकाक, दो०। द्रोण काक वायस करट, भात घोष बलभाग। ध्वांच अष्टौपिक पिता, एक दृग इति प्रभु त्याग ॥ १ ॥ सीता लक्ष्मण सहित बन, विचरत करुणाकन्द। अत्रि अगस्तादि, ऋषि, भयो दर्श आनन्द। २ ॥

द्रोही· [स] निन्दक, वैरी।

द्रोह· (स) वैर, द्वेष, लाग, विरोध, अनिष्ट, चिंतन।

द्रोही· (स) द्वेषी, विरोधी, वैरी।

द्वन्द्व· (स) सुख दुःख उपाय युगल, जोड़ा स्त्री पुरुष का जोड़ा, जस काम छूआगे न भया बरु नहि जोयगो, राग द्वेषादि।

द्वय· (स) युगम, जोड़ा।

द्वादश· (स) बारह १२ संख्या विशेष।

द्वादशमास· [स] बारह महीना। छंदहंसी०। अग्रहायनका मारग सहा॥ मार्गशीर्ष दुख जात न कहा॥ सुधि कर चरित चोर हरि हरे॥ दृग प्रवाह जल सागर भरे॥१॥ पौष सहस्र तैष पुनि गयो॥ हरि को ना आलिंगन भयो॥ दुखदा भई सुखद सर्वरी॥ आन अवाधिगनत पत्त घरी॥२॥माघ तपा आगम अब कियो॥ आय बसंत संदेशा दियो॥ चंदकादि देखत पीरई॥कांत विहाग

कांति हरि लई ॥३॥ तपस
फाल्गुणिक फाल्गुण हरी।
कंस चेरि पट रानी करी॥
तासो खेलते लैरंग भरी॥
योग भस्म इमरे कर धरी।४
चैत्र चैत्रिक मधुवन फली।
फूलि फले महाछवि भली।
हरि बिनु तापद कुसुम
बनी। त्रिबिधि समीरस्वास
जिम फनी॥ ५॥ माधव
राधविशाखहु भली॥ वि-
यग हेत तप मारग चली॥
ऊधव आय कृपा करि घनी।
गोपिन बात सबै भव बनी॥
६॥ जेठ शुक्र तप मारुत
बहै॥ बिरहिनवधू धनन्यज
दहै॥ कबहूँ देखे मूरति मन
रुची॥ अधर बेणु यमुना
जल शुची।७॥शुचि आषा-
ढ़ बिकल सब धना॥ गर्जन
लगी घनाघन घना॥ रहि
रहि दमका दामिनि करे॥
हरि बिनु प्राण धीर नहिं
धरै॥ श्रावण श्रवण श्रावण
कन भा॥ सोभित विपिन
धरणि छह प्रभा॥ तड़ित
बिलास मध्य नभ घटा॥
जिम तनु स्याम पीत पट
छटा।८॥ नभ सभाद्रपद
भाद्रहु तथा॥ प्रोष्ट पदहु
गावत हरि कथा। नन्द
नन्दन त्यागो व्रजधरा॥
बसेजात कुबजा के घर॥१०॥
आश्व युंज इष आश्विन ल-
गो॥ व्रजबाला दुख सोभत
जगो॥ कीन्ह रास हरिहे
भुज गले॥ सुमिरत दृगने
पनारे चले॥ ११॥ ऊर्ज
कारतिकिकाकार्तिक गयो॥
आइल बहुल बिरह दुख
भयो॥ स्वाति बिन्दु नहीं
चातिक मिला॥ हंसी
छंद पंचदस कला॥१२॥
सोरठा। ऊधव बिनु घन
स्याम, बिरहागम आरत
सदा॥ पूजत नित व्रज
बाम॥ षोडस तिथि के
देव सब॥ १॥

द्वापर· [स] तीसरा युग, संदेह संशय, सतयुग, से तीसरा युग।

द्वार· (स) देहली, कपाटस्थान, उपाय, दरवाजह, बसीलह।

द्वारदारु· [स] सुंईमह।

द्वारका· [स] तीर्थ स्थानविशेष

द्वारपाल· (स) देवढ़ीवान्, पौरिया॥दो०॥ द्वास्थ द्वास्थित दर्शका, प्रतिहार प्रतिहार। द्वारपाल सेवत सदा रामचंद्र नृप द्वार॥१॥

द्वि· (स) दोसंख्यावाचक।

द्विज· (स) पक्षी, दन्त, पागपच, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अंडज। दो०। द्विजपंक्षी को कहत कवि, द्विज कहिये पुनि दन्त। तीन बरन द्विज तें बड़ो जथ जाने भगवंत॥१॥

द्विजप्रिया· [स] सोमलता।

द्विजराज·} [स] चन्द्रमा,
द्विजराज्·} शशी, श्रेष्ठ ब्राह्मण

दो०। इंदु कलानिधि सुधानिधि जैवात्रिक ससि सोम। अंबुज अमीकर छपाकर, बिधु इमि कहियत सोम॥१॥ बिधि सुधांससुभ्रांस पुनि, औषधीस निसिनाथ। रजनीकर निसिकर, ससी, कुमुदबंधु रह माथ॥ दुजराजी ससधर उदधितनय ससांक मृगांक। नच्छत्रेस कलंक धर, तुव मुख उपमा रांक॥२॥ बिकुरि चांद्रिका चंद्र तजि, रहि क्यों नारी होय। मैं अवलोकत बास तोहि, कहु बलिकारन सोय॥४॥

द्विजा· [स] नागवल्ली, ब्राह्मणी, रेनुका।

द्विजाति· [स] विप्रादितीन, विप्र, क्षत्री, वैश्य, तीनो वर्ण, अंडज, पक्षी।

द्वितीय· (स) दुजा, दूसरा।

द्विधा· [स] दोप्रकार, दोभांति।

द्विप· [स] हस्ती, हाथी, करी।

द्विपद· (स) द्विपशु, दोपांव का, मनुष।

द्विपवत्· [स] नदी, सरिता, दो०। सरिता धुवनी तरंगिनी, तटनी ह्रदनी होय। धुनी अवन्ती, आपगा, नीर कोस कहि सोय॥ सेवलिनी सारस्वती, दीपवती जलमाल। नदी नहीं है बाट में, सोन कहा है बाल ॥२॥

द्विमुख· [स] दुमुंहा द्विमुखी, सर्प विशेष।

द्विरद· [स] गज, दो दान्त वाला अर्थात्, हाथी।

द्विरुक्ति· (स) पुनरुक्ति, आम्रेड़न दोवारा कहना। [लि।

द्विरेफ· (स) भ्रमर, भौंर भ

द्विचार· (स) जवाखार, सज्जी खार।

द्वीप· [स] जंबूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलद्वीप, शाकुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, पुष्करद्वीप, शाकद्वीप, टापू जल वेष्टित भूमि।

द्वेष· (स] बैर अप्रीति, शत्रुता, द्रोह, ईर्षा, हिंसका।

द्वैत (स) द्वितीय, भेद, दोहाई मैं, तूं,। [द्विाकार।

द्वैध· (स) सन्देह, दोखण्ड,

द्वैधीकरण· (स) छेदन, भेद करण। [नन।

द्वैमातुर· (स) गणेश, गणा·

ध

धट· [स] धववृक्ष।

धतूर (स) धतूरा। [धन्य।

धन· (स) द्रव्य, अर्थ पूंजी, माया,

धंधक (स) धंधा, काम।

धनकेलि. (स) कुबेर सुर भण्डारी।

धनंजय. (स) नाम अग्नि, अर्जुन, सूर्य पुत्र, जो राजा पाण्डु के संतति देनेसे भयो, बाकी कथा है, वायु विशेष, हयसंज्ञा,

नाम दो० अग्नि धनंजय आहत कहि, पवन धनंजय आहि। अर्जुन बहुरि धनंजयो, कृष्ण सारथी आहि॥१॥

धनद (स) कुबेर, सुर भंडारी, धन दाता। दो०। मुख्य जनेश्वर धनद यद, पति अलकावलि सोय। गुह्यकपति तंत्रकसखा, राज राज पुनि सोय॥१॥ नरवाहन किन्नरअधिप, द्रव्याधीश कुबेर। हरि पद पंकज परसिकै, पावत नाहि न बेर॥२॥ पुनः कुंडलिया। धनदा औ नरवाहन ऐलि विल्य त्रितेश। गुह्यकेश पौलस्त्य पुनि एक पिंग यक्षेश॥ एक पिंग यक्षेश मनुष धर्मी किन्नरपति। राज राज हरसखा पुण्य जन प्रति यक्षपति॥ श्री कुबेर बैश्रवण नाम षोडस शुभ बरदा॥ दोहा रोला मिलि छंद कुंडलिया धनदा॥१॥

[पाखंडी।

धनधक (द) ढुकनी वाला,

धनधारी (स) लक्ष्मी, सिन्धुसुता, कमला।

धनपति, धनवान्, धनिक, धनी (स) कुबेर, धनराज, जाको धन होवै, धनधारी, धन का स्वामी अर्थात् कुबेर स्वामी, दौलत मंद।

धनहर (स) भसटीजर।

धनुःखण्ड (स) धनुष का एक भाग।

धनुपट [स] चिरंवकी फल।

धनुवृक्ष [स] धामिन वृक्ष।

धनु, धनुष, [स] सारङ्ग विष्णु का, गांडीव अर्जुन का, पिनाक शिव का, ए तीन धनुष रामा। दधीचि के पंजरा का बना था॥१॥ कमान, चाप दो० बाणासन कोदण्ड पुनि, चाप धनुष धनु धर्म। कार्मुक धन्वा कर किये, रामचन्द्र मत मर्म॥१॥

धनिक· [स] धनिया, धनी ।

धनेश, धनेश, धनेश्वर, धने· श· [द· स] } कुबेर, धनराज, धनाधिपति ।

धन्ध· [स] धन्धा, व्यवहार, उद्दीं, वृथा कर्त्तव्य, पाप ।

धन्धक्कु· (द) शकट, गाड़ी, छकड़ा, रथ, ढूंढ़नेवाला, पाखंडो, धंधा, काम ।

धन्धा· [प] काम, कार्य्य, उद्दो, वृथाकर्तव्य, पाप ।

धन्य· [स] प्रशंसनीय, भागवान्, श्लाघ्य ।

धन्या· [स] प्रशंसनीया स्त्री, नदी विशेष । [कितक ।

धन्वन्तरि. [स] देववैद्य, [illegible]

धन्वङ्ग [स] धामिन वृच ।

धन्वयास· [स] जवासा ।

धमन [स] नरकट ।

धमनि. [स] नलुका ।

धन्वन्· (स) धनुष ।

धन्विन: । धन्वी· [स] धनुषधारी ।

धन्वीगुणनाना· [स] नाना प्रकार के धनुष गुण, चौ० देखत बालक काल समा-

ना । परम धीर धन्वी गुन नाना । अर्थात् धन्वी गुन नाना धनुर्धर और नाना गुन हैं वा जितने गुन धन्वी के हैं धैर्य्यादिता करि संपन्न और संहार मोचादि क्रिया तामें पटुतम ॥ धन्वीगुण षोड़श नाम । छन्द भुजंग । नहीं दान धर्म नहीं देव पूजा क्रिया सौच होनें पलं मद्यपानी ॥ स्पृषा वाक्य हिंसा सदा दुष्ट संगी दया शीलहीनं महावज्र वानी ॥ हृदे ईरषा रूप जीवाप्रसंगी [illegible] भिमानी ॥ वर्गे षोड़शं दोष द्रव्यं निशाद्योश यग्गान अष्टं भुजंगं बखानी ॥१॥ दो० धर्म करे जो पाय धन, बहुरि भक्ति भगवान् । विश्व विषे वैराग्य पुनि, पूर्ण कृपा हरि जान ॥१॥

धर· (स) (प) } धारण, देह, भूमि, धड़ ।

धरणी· धरनी· (स द) पृथिवी, धरती।

धरणिधर· धरणीधरण· (स) शेषनाग, पर्ब्बत।

धवन· (स) पति।

धरषि· धरषित· (प) दबाइ कै, चांपि कै, परास्त, दबाकर, धरषना, दबाना।

धरहर· (प) कोठा, बालाखाना।

धरा· (स) पृथिवी, मेदिनी।

धराधर· (स) वृक्ष, पेड़, शेष नाग, पर्व्वत।

धर्म्मज्ञ· [स] धर्म्मात्मा, धर्म्मज्ञा· नी।] [त्मा, पुनीत।

धर्म्मध्वज· [स] पाखंडी, धर्म्मा-

धरासुर· (स) ब्राह्मण, विप्र।

धर्म्मकङ्क· (स) राजा युधिष्ठिर।

धर्मं· (स) वेद विहित कर्म।

धर्मध्वजिन्· (स) धर्मध्वजी, पाखंडी।

धर्म्मपत्तन· (स) मरीच औषध

धर्मधुरंधर· (स) धर्म का बोझ लेने वाला।

धर्म्मपुत्र· (स) राजा युधिष्ठिर

पाण्डव जाकी कथा है।

एक कोई क्रौंच नामे ऋषि अरु वेनी नामे की भार्य्या वा की दोउ तपस्या हेतु बन में थे एक दिनों वेनी भार्य्या दिन अछत पति से अपने कामातुर होय भोग चाहना कियो मुनि ने दिन जानि जो मनुर्षी को दिन को भोग किये राक्षस होना होत है रात्रि के आशा पर वर्ज्जित किये पश्चात् स्त्री विकलता देखि दोनों मृगा मृगिनी रूप धारण करि भोग करण लगो वा समय राजा पण्डु शिकार करत वा देखि शर लगायो मृगिनी वा को शाप दिई कि ऐसा भोग काल में शर लगाए के अपराध ते तुम्ह को भो नारी भोग किए तत्काल मरण होयगो वाही दिनों सों राजा नें भय वशी होय

रानी को छाड़ि अनत अलग दिल्ली मों जाय बेठ रह्यो रानी सब हस्तनापुर मों बिना राजा के रहे लग्यो कोई काल बिते कुन्ती बड़ीरानी कामातुर होय भोग राजा सों माँगि भेजी राजा नें अपनो भय की वार्त्ता कहवाय भेज्यो। पश्चात् रानी पुत्र होनि की कांक्षा जो बिना पुत्र अशुद्धता ख्यात है कहलाइ भेजी तद राजा नें पांच देवता के नाम का पांच मन्त्र एक धर्म्म, वायु इन्द्र, अश्विनी, कुमार, जो यह दोनों जों बांए पांचो दे-वता के नाम लिख भेजि दियो जो याको जाप किये देवतालोग आय के पुत्र दता होहिंगो। वाही प्रकार कुन्ती नें पूर्व तीनि मंत्र एक धर्म्म दूजो वायु तीस-री इन्द्रदेवता को विधिपूर्वक जपन कियो वा तीनों देवता आय मंत्राधीन होय अपनी कृपादृष्टि करि तीनि पुत्र दियो धर्म्म पुत्र नामे युधिष्ठिर वायुते भीम इन्द्रते अर्ज्जुन ए तीनि पुत्र महा-बली प्रतापी तेजस्वी प्रगट जायमान भयो कोई काल बीते राजा पाण्डु ने तीनि पुत्र महाप्रतापी भयो जाय गानसुनि आधपहर दिन बाकी रहे सन्ते दिल्ली ते हस्तनापुर कुन्ती के पास आवत भयो कुन्ती रानी पति हर्षित होय वा की पूजन करि जेव-नार के सामग्री मों तत्पर भई परन्तु राजा सूर्य्यव्रती थे कुबेरा जानि माद्री लघुरानी जो वाके ज्योति ते सूर्य्य का रथ रोक जाता था वा को कोठे के छत पर भेजवानि नग्न होय के राजा की जेवनार वा लतक

सूर्य्य को जानि तें रोक दियो जब राजा भवन लगो तब माद्री उतर आइ सूर्य्य आतुर होय डूब गयो पहर राति हो गई राजा ने आश्चर्य होय रानी ते पूछो रानी नें माद्री कछु रानी की ज्योतिरूप बरणन कियो वाही काल राजा ने अपने शाप को भय बिसरवाके रूप पर कामातुर होय लघुरानी माद्री के शय्या पर जाय भोगरत भयो तत्काल देह छाड़ि दियो वाही राजा के बीजं ते अस्त्रहिपुत्र जौंवा नकुल सहदेव माद्री के गर्भ ते जाय मान भयो याही योग ते जानों कि राजा युधिष्ठिर धर्म्मपुत्र १ भीम वायु पुत्र २ अर्ज्जुन इन्द्र पुत्र पुराणों में विख्यात है ॥०॥ इति महाभारते पुराणे सभापर्व्वे षष्टम ६ सर्ग्ग प्रमाण ॥

धर्म्मवैल रूप का चौपट्ट बिचरण (स) सत्य १॥ शौचे २ ॥ दया ३ ॥ तप ४ ॥

धर्म्ममूल (स) श्रुति, वेद आदि शास्त्र अनुक्षात ।

धर्म्मसंहिता (स) धर्म्मशास्त्र

धर्षं (स) पराभव, सम्बत्सर, बारहमास ।

धर (स) धव वृक्ष । स्वामी, पति, भर्त्ता । [वृक्ष ।

धवल (स) सुपेद १ कइया

धवलपाण्डु (स सुपेद पंडुक ।

धवलासारिवा (स) सुपेद समलर ।

धवलु.} (स) शुक्लवर्ण उज्जल,
धवल } सुन्दर, स्वेत, सफेद ।

दो० । शुक्ल शुभ्र पांडुर विसद, धर्ज्जुन सित अवदात । धवल नवल जंचि पटा, कारत छट। सों बात ॥१॥ पुनः छन्द नत झूलना । रैन पांडुर

विमल गोर पांडर हरित रु-
चि अवदात सित शुक्ल श्वेत।
शुक्ल पुष्कल अमल धवल
अर्जुन विसद शुभ्र अवदात
शुचि पांडु श्वेत ॥ त्रिविध
मारुत सुखद वेग खग
वृन्द काम कुसुम गत पुंग
अलि गुंज माते। कुंज सुख
दैन कियो चैन हरि राधि-
का झूलना मत चेतोस
माते १ ॥

धवला· (स) उज्ज्वली, पर्वत, पर्वत की स्त्री। [च्छताई।

धवली· (स) उज्ज्वलताई, स्व-

धा· (स) प्रकार धारण पोषण।

धातकी· (स) धवई।

धातु· (स) सोना आदि, सोना चान्दी तांबा, लोहा, सीसा रांगा पारा जस्ता खानि की वस्तु। तथा शरीर धारक वस्तु, कफ वात, पित्त रस, रक्त मांस अस्थि मज्जा वीर्य।

धातन, धामिन (ह) सर्पवि-शेष, निर्विष होता है, लोग कहते हैं कि गाय, भैंस को पांव छान कर दूध पी लेता है।

धान्य· (स) अन्न, अनाज, गल्ल।

धाता, (स) विधाता, ब्रह्मा।

धातुद्रावक (स) सोहागा।

धातुपुष्पी· (स) धवई।

धातुसप्तक. (स) सोना, चांदी, तामा, रांगा, जस्ता, सीसा, लोहा।

धात्री· (स) धरती, पालना, धाई, माता, पालक, अंब-ला। दो०। धात्री कहिये आंवरो, धात्री धाय बखान। धात्री धरनी सेस सिर, संवृत तिल पर-मान ॥

धात्रीपत्रक. (स) तालीश।

धाना· (स) यव आदि भुना हुआ।

धान्य· (स) मात्र धान, सफेद धान, यव, मूंग, कोनी, एई ५ तरह का होता है।

धान्याक· (स) धनियां।

धान्याम्ल· (स) अन्नका सिर्का।

धाम· (स) तेज, तन, किरण, घर, ब्रह्मज्योति, बैकुण्ठादि, रूप, स्वरूप। दो०। सद्म सद्म आराम गृह, गेह वेश्म संकेत। लैर्माधिष्ट पद आसपद, आलय निलय निकेत॥१॥ मंदिर मंडप आयतन, बसति नीक अस्थान। भवन भूप वृषभान की, गई सहचरी जान॥२॥ छन्द चूड़ामणि०। धाम निले मंडप भवन धिष्ण आस्पद्वार॥ गेह निकेतन रूम पद सदन सद्म आगार॥ सदन सद्म आगार उद्व सित मंदिर अवसथ आले॥ वेश्म निशांत निकाय पस्त्य गटह वासस्थान विशाले १॥ दो०। दोहा गाहा मेलि के, कीन्हो छंद अहीश॥ नाम धरो चूड़ामणी, धाम नाम बीसु बध॥२॥ अनेकार्थमें। दो०। धाम तेज औ धाम तन, धाम किरन गटह धाम। धाम जोत जो ब्रह्म है, अनो कृत हरि श्याम।

धामदा· (स) बैकुण्ठादि देनिहारी, वा रूप देनिहारी, धाम के दाता।

धायी· (प) दोराही, लोकद्दिक।

धामार्गव (स) वालचिरचिरी, १ नेनुयां २ झींगी।

धारयत्, (स) धारता हुआ, धारन करता हुआ।

धारा· (स) जल प्रवाह, सोता, रीति, पंक्ति, बड़ी बूंदोंका मेह, जल धारा या खड्ग धारा, गुरिच।

धाराधर. (स) मेघ, बादल।

धारि. (स) सेना, फौज़, पाति।

धारिन्, [स] धरनेवाला!

धारी. (प) फ़ौज, सेना, धरने वाला, धरैया, पंक्ति, मेव, माया, सेना, एषा।

धारसिष (स) तुरत का दूहा दूध ठंढा किया ।

धार्त्तराष्ट्र [स] धृतराष्ट्र को सन्तान । [दूध गर्म ।

धारोष्ण (स) तुरंत का दूहा

धाव (स) दौड़, वृक्ष विशेष ।

धावन (स) दौड़ाहाजन, दूत ग्रामेत, फराश, हरकारा ।

धावनिर्गुडा (स) गठिवन ।

धातृ (स) विधाता, ब्रह्मा ।

धावनी (स) रेंगनी ।

धावा (प) दौड़, चढ़ाई, पिछुवाया, पंखी ।

धावयो (स) दवाई के ।

धिक् धिक्, (स) धिक्कार, फिट निन्दा, खोझ का शब्द, तिरस्कार सूचकवचन, खानत, मलामत ।

धिया (प) कन्या, पुत्री, धी, बुद्धिमान, धैर्य धारणवाला।

धिषणा (स) वृहस्पति, शिखंडी

धी धीय, (स) (प) } बुद्धि, ज्ञान, मेधा, पुत्री, भक्त ।

धीर (स) वीर्य, संतोष, गम्भीर, बुद्धिमान, धैर्य्य धारणवाला ।

धीरता, [स] समीन ।

धीरम् (स) केसर ।

धीवर (प) जाति मछुवा ।

धीश्वरी (स) सती, शिवपत्नी ।

धिषणा (स बुद्धि, ज्ञान, मेधा ।

धुंन (प) (स) } की, अभ्यास, वसका शब्द ।

धुंवा, धुंग्रां (द) धूम, धूंवां, भाफ, मरण, मुर्दा मरगा जैसे चो० । धुंग्रां देखि खरदूषन केरा । जाइ सुपनखा रावन प्रेरा । अर्थात् धुग्रां मृत्यु यह शब्द धुंवा का अपभ्रंश है अर्थात् खरदूषण की मृत्यु को देख सूर्पनखा ने मृत्यु समान हो के रावण को प्रेरणा की कि तू भी चल के मर । धुवां मृतक शरीर भाषा बुंदेलखंड की ।

धुनि. (स) लगन, आवाज, शब्द व्यंग, घर की ग्रंथ

पदं सो नहि निकले ता-
कों अनुमान हारे उपरति
जाय कै अर्थं करना यथा
जाग। मर्मं न्हात प्रयागा।
मगन होहिं तुम्हरे अनु-
रागा ॥ कांप कर के,
धुनना, कांपना, धुन कर
के, कंपा करके ॥दो॰। नाद
निनद धुनि रव सबद.
स्वन सुघोष रुत राव ।
वह बंसी में कहत पिय, है
प्रानेस्वरि भाव ॥ १ ॥

धुनी. (स) नदी, सरिता।

धुनीउ (प) कम्पायेउ ।

धुन्वन्. (स) हिलाता हुआ ।

धुन्वो. [स] धुन्ही बाल कीड़ा ।

धुमसपूत. [स] मेघ, बादल ।

धुम्रकेतु. [स] निशिचर विशेष
सेनापति, अग्नि, पूंछ
लतारा ।

धुर. [स] बोझा, मुख्य ।

धृति केर. (स) दूती, कर्त्ता ।

धुरन्धर. [स] बोझा, धरणहार,
धव वृक्ष ।

धुरी. [स] गाड़ी का चक्का का
दण्ड जाके बल चक्का घु-
मत है ।

धुरीन.} (ह) बोझा धरैया.
धुरीण} बोझा धरणहार, बो-
झा धरणेहारा, ।

धुसरि. [स] रज, गर्द, रेणु ।

धूत. (स) हिलाया हुआ ।

धूति. [स] छलि, कपट, कठि-
ठग करके, धूर्त्तता करके
धूतना, छलना ।

धूतिना. [प] ठगना, छलना,

धूतो ध्यानम् [वि धाम] हि-
लाया है वगीचा जिसका।

धूपे. (स) सुगन्धित हुआ ।

धूमं. [स] धूआं, रौला, बखेड़ा
धूपां, भाप ।

धूमकेतु. धुम्रकेतु [स] अग्नि,
आग, पूंछलतारा ।

धूमसो. [स] धूमांस उर्द का।

धूमिल. [स] रङ्ग विशेष ।

धूव. (स) दो॰ धुव निसिचर धुव
जोमुनि, धुव धुव पद धुव
तीन । धुव तारे तिहि पटक.

गुन, गुन गोबिंद गोपाल ॥१॥

धूरी· धूरि· (स) धूल। [दो०।
धूर धूसरी खेह रज, पांशु संवरा मंद। जा पद पंकज रेणु की, बांछत सकल सनंद ॥१॥

धूर्त· [स] नटखट, शठ, ठग उचक्का, फरेबी, जुआरी।

धूम. [स] धूवां, धूकर, रोला।

धूर· [स धूलि, रज, रेणु।

धूमकेतु· (स) अग्नि, पूंछलतारा

धूली· (स)
धूलि·
} रज, खाक।

धृष्ट· (स) अविनीत-प्रगल्भ निर्लज्ज निर्दय, ढीठ।

धूसर. [स] रङ्ग विशेष।

धूक·
धूग·
} [स] धिक्कार, अतिनीच

धृत [स] धारण किया, धारित कपड़ा हुआ।

धृति· [स] धीरज, शान्ति, धैर्य-धारणा - अखिन्नता, तुष्टि, धीरता।

धेनु· [स] गौ दधारी, दुग्धवती, गैया, धेनु· गाय थोड़े दिनों की बिआनी गऊ आदि।

धेनुदुग्ध [स] गुरभी १ थोड़े दिनों की बिआनी गउ आदि का दूध।

धेनु धूलि· [स] गोधूली बेला।

धेनुमती· धेनुमति [स) गोमती नदी,।

धैर्य· [स] प्रतिज्ञा पालन, धैर्यमान, धृति धीरता, धीरज, कठोरता।

धोरी· (प) मुख्यबैल, अधोरी मुख्यबरद,।

धौत, (स) स्वेत, उज्जल।

धौतापाङ्गम० (वि० मयूरम्) स्वेत हैं कोए जिस के।

धौला· (स) शुक्ल, उज्ज्वल,।

ध्याता. (स) ध्यानी, ध्यानक।

ध्यौं (ह) कि, याकि,।

ध्यास्यन्ति (स) ध्यान करेंगे, मन में लावेंगे।

धूर्त। दो० ब्याली जिभ्या कुटिल क्रत, बक्रमो कहँत छलीजु। कपटी कान्हर कुंवर की, केतिक कहति भलीजु ॥१॥

ध्रुव. ध्रुव (स) निश्चल, तर्क, स्थिर, शङ्कु, एक भक्त का नाम। उत्तर केन्द्र, नाम तारा जाको कथा है, भक्त विशेष बरगद वृक्ष।

राजा उत्तानपाद बड़े पुत्र राजा स्वयंभु मनु के थे वाकी द्वि स्त्री बड़ी सुनुती जाके पुत्र ध्रुव जू, और छोटी स्त्री सुरुची जाके पुत्र उत्तमनाम, एक दिनों रानी सुरुची लघु स्त्री के पुत्र उत्तम ने राजा उत्तानपाद पिता की जंघा पर बैठा था ध्रुव जू भी आय देखि कै वा भी दोसरी जंघा पर राजा के पिता अपनों भी जानि जाय बैठो, ता काल मों रानी सुरुची लघु स्त्री देखि के राजा को कहि कहे कि याके पूर्व हिं ते राजा अधिक बशी थे ध्रुव जू को जंघा पर सौं पिता के उत्तारवाय नीचो दियो ध्रुव जू ने याही ग्लानि ते पांच वर्ष की अवस्था मों माता पिता के अज्ञानत रात्रि को उठि करि वन को तपस्या हेतु सिधारे। मार्ग मांझ श्री नारद जू ते भेंट भयो। नारद जू ने पूर्वं बहुत फिरे को समुझाये पश्चात् नहिं फिरे सन्ता मन्त्र उपदेश दियो। वा मन्त्र, उपदेश ते यमुना-घाट मों जाकै छौ मास भगवान् के नाम पर कठिन घोर तपस्या पइसो कियो कि बैकुण्ठादि लोकालोक त्रिभुवन कम्पान हो गयो ता उपरान्त श्री विष्णु चतुर्भुज आय के दर्शन दे कै बर दियो कि २६००० छब्बीस हजार वर्ष पृथ्वी का अटल राज करि पश्चात् धाम हमारों पावोगे और एक पंचजन्य शंख

दियो जाके फूफी संता प्रता पी चारों वेद षट्शास्त्रादि चौदहो १४ विद्या के पंण्डित होय मूक ते बाचाल भयो तद ध्रुव जू ने अपनो कामनों ते परिपूर्ण होय नगर आके २६००० सहस्त्रवर्ष राज करि बैकुंठ द्वार जाके ध्रुवतारा भयो सब देवता सूर्यादिते श्रेष्ठ भयो कि आकाश मों सूर्य्यादि तारागण चलैमान रहत हैं, अरु एह ध्रुव तारा निश्चल पदवो पाय चलैमान् नहि होत है जहीं के तहीं स्थिर अचल रहत हैं ॥ इति ध्रुव चरित्र श्री भागवत ४स्कन्ध ८०अध्याय प्रमाण।

ध्रुवनन्दी· (स) गङ्गानदी, सुरसरी।

ध्रुता·(स)पौधा विशेष,ध्रुवका।

ध्वजा· (स) दो० ध्वजा पताका चिन्ह पुनि, बैजंती ध्वज केत। कौशलेश रघुनाथ के, सोभित शिखर निकेत ॥१॥

ध्वंस. (स) क्षय, लोप, नाश, हानि।

ध्वज· (स) धजा को लंबा बांस फहरात, पताका।

धजनीक.(स)सैना, दल, कटक

ध्वजी· (स) झण्डैत, धजाधारी।

ध्वनि· (स) शब्द, स्वर, बोल आवाज़।

ध्यान. [स] चिन्तन, बिचार, एक तरफ़ मन लगाना।

ध्वनति. (स) प्रतिशब्द करता हुआ।

ध्वनि· (स) शब्द, आवाज।

ध्वनित. (स) शब्दायमान।

ध्वान्त· [स] अन्धकार, अन्धार, अवाज।

न

नंचहिं· [स] नाचते हैं।

नई. [प] नदी, वान बीन।

नए· (प) झुके, नवीन, नया।

नकचिसनो· मु० दंडवंत करने

में या आधीनी से ज़मीन पर नाक रगड़ना, नाक घिसना।

नकचढ़ा· मु॰ चिड़चिड़ा, खुनसाहा, रिसाहा, क्रोधी, जिसका बुरा स्वभाव हो, खिंझनेवाला।

नकसीर फूटना· नकसीर चलना· मु॰ नाक से लोहू बहना, नाक से रुधिर बहना, नकसीर नाक को नस अथवा रग [नासिका, नाक और शिरा, नस से यह शब्द बना है]

नकेल डालना· मु॰ नाच नचाना, दिक्क करना, हैरान करना। नकेल (नाक) लकड़ी अथवा लोहे की बनी हुई एक चीज़ को ऊंट के नाक में डाली जाती है और उस में डोरी डालकर ऊंट को चलाते हैं।

नकू बनना· मु॰ अपयशी होना, निखट्टू होना, बदनाम होना, नकारा बनना, बुरा बनना, नीच बनना, निकम्मा होना।

नकुल· (स) नेउर, बिज्जो, नेवला।

नकुल सहदेव· [स) छठीं और पाण्डवराजा पाण्डु के असल धातु पुत्र वाको कथा है।

नकुलेष्टा (स) नाई ।

नकेत निकेत [द स] घर।

नक्र· (स) नकार, जलजन्तु, मगर, नाका, कुम्भीर, घड़ियार, नाक एक प्रकार का जलजंतु ।

नक्त (स) हल्दी १ रात या अथ, नांक जलजन्तु ।

नक्त दमनी· (स] फूल खेकसा

नक्तमाल (स] करंज।

नक्रराज· [स] डांगर, ग्राह।

नख [स] नख्खर, नोह हाथ नखआदि का २० ॥ बड़ी नख दो॰। करज पुनर्भव नख्खर नख, रहि रंग निधि धाम । कर छिनई सों

लिखत हैं, नहि नख सो कछु काम ॥१॥ पुनः—नख र पुनर्भव पाद रुह, नख छबिपाटल श्वेत ॥ मनो बाल रवि बाल शशि, सोभित एक निकेत ॥

नखसिख से, नख से सिख तक, मु॰ सिर से पांव तक, सब का सब, बिल कुल।

नख से लिखना, मु॰ शोच-मुद्रा, नाखून से लिखना।

नखत· [स] नक्षत्र, तारागण, नख रेशम।

नखपद }
नखरेख· } नुह का चिन्ह।

नखनिर्गता· [स] गङ्गानदी, जाह्नवी।

नखर· [स] नख, नोह, नाखुन।

नखायुध· [स] नख का हथियार।

नखी [स] छोटी नख।

नखी स्वल्प॰ [स] छोटी नख।

नग· [स] पर्व्वत, पहाड़, नगीना, अङ्गूठी का पत्थर, दो॰। नग कहियतु द्रुम नग रतन, नग कहियतु पुनि धाम ॥ नग जिहि गिरते कान्ह को, भयो सु नगधर नाम ॥ १ ॥

नगस्वरूपिणी छंद· [स] एक छंद का नाम मानस रामायण के तृतीय सोपान में यह छंद है। नमामि भक्तवत्सलं। 'नगस्वरूपिणी कहे ते यह भाव कि चपलता, गिरि कानन बिहारी राम प्रतिपाद्य और धराधर भू भार हरन पालन हेतु चले। छंद हू से कछू कहे ज्ञात होत जैसे, आर्यां छंद से पार्थन का वर्णन औ पतिंबरा वर्नन में के कह्यो स्रगधरा छंद से माला कहत है। (का

नगनदी, (स) नाम है एक नदी

नगीन्द्र, (स) पहाड़ों में श्रेष्ट अर्थात् कैलास।

नघुष· [स] तगर।

नगर· (स) बस्ती विशेष जाके आदि १००,घरतें पर्य्यन्त १००० घर का होय वाहा। पुट भेदन पत्तन नगर, पुरी पुरं पू पूर॥ देखत जात मुरारि बल, सखा सहित अक्रूर॥१॥

नग्न (स) दिगम्बर, नङ्गा, बस्त्र हीन, वस्त्ररहित, नंग।

नङ्ग· (प) उघाड़ा, नग्न, बस्त्र हीन।

नंगाझूरी· मु० ढूंढ़ना, ढूंढ़ ढाँढ़, झाड़झूड़ी।

नंगामुंगा· नंगासुनंगा, नंग धड़ंग, मु० बिलकुल नंगा, दिगंबर, बस्त्रहीन, नंगामादरज़ाद, कपड़ा लत्ता रहित।

नंगेसिर· मु० खुलेसिर, उघाड़ेसिर, टोपी वा मुरैठा, वा पगड़ी रहित।

नंगीतलवार· मु० मियान से बाहर निकाली हुई तलवार, मियान रहित तलवार।

नंगेपावों· नंगे पैरों· नंगेपांव· मु० पैर में जूता नहीं पहने हुए, बिना जूता पहने हुए, जूता वा खड़ाउ रहित।

नचिरेण· (स) थोड़ेही काल में।

नट· (स) नृत्यकारक, नचवैया मायावी, अशोक वृक्ष १ सोनवृक्ष २

नटन· स) नाचत, काछत नाचता है।

नटी· (स) नटिन, पतुरिया, टहलनी, चेरी, स्वर्ग की नाचनेवाली, नलुका।

नड़ (स) मूर्ख नल, चुड़ीहारा जाति। [नम्र।

नत. नतः (स) नमस्कार, बाङ्क।

नतम· (स) तगर।

नतरू· (द) [स] } नातो, नहितो नहीं तो, नमस्कार।

नति· [स] नमस्कार, बाङ्का,

नम्र, नमृता नवना प्रणाम।

नद· [स] सरित पुरुष वाचक, ब्रह्मपुत्र शोणादिक।

नदति. (स) बाजता है।

नद मुख्य संख्या विवरण· (स) सिंधु. १ रम्ध· २ शोण· ३ महानद· ४ वेदस्मृत· ५ ऋषिकुल्य · ६ त्रिसाम ७ कौशाक · ८ इति विश्व महानदाः शास्त्र विहित श्री भागवत ५ स्कन्ध० १९ अध्याय प्रमाण।

नदी· (स) जलाश्रय स्त्रीवाचक मुख्यता के विवरण · ॥ चन्द्रवशा· १ ॥ ताम्रपर्णी·२॥ अवटोटा· ३॥ कृतमाला·४॥ वैहायसी·५ कावेरी·६॥ वेणा·७॥ पयस्विनी ·८॥ शर्करावर्त्ता ·९॥ तुङ्गभद्रा·१०॥ कृष्णवेणा· ११॥ भीमरथी · १२॥ गोदावरी· १३॥ निर्विन्ध्या· १४॥ पयोष्णी १५॥ तापी· १६॥ रेवा· १७॥ सुरसा · १८॥ नर्म्मदा · १९॥ चर्म्मण्वती· २०॥ कौशको·२१॥ मन्दाकिनी·२२॥ यमुना·२३॥ सरस्वती· २४॥ दृषद्वती· २५॥ गोमती ·२६॥ सरजू· २७॥ रोधवती ·२८॥ सप्तवती· २९॥ सुषोमा· ३०॥ शतद्रू· ३१॥ चन्द्रभागा· ३२॥ मरु · ३३॥ वृधा· ३४॥ वितस्ता· ३५॥ असिक्नी· ॥ ३६॥ इति विश्वमहानद्य = जम्बूद्वीप भरतखण्डशास्त्र विहित श्रीभागवत ॥ ५॥ स्कन्ध· ॥१९॥ अध्याय प्रमाण· ॥

छंद गणविलसित। द्वीपवती जलमाल सरी सेवमानी ॥ स्रोत दुरेफ स्रवंती सरिता तटिनी ॥ स्रोतस्वती तरंगिनी निमगा ह्रदिनी ॥ अपगा नदी सहित षोडश नाम धुनी ॥ १॥

दो·। इनमामनि पर पति

धरे, नाम होय वारीश ॥
गज मिलित यक छंद है,
कला जानिये धीश ॥ १ ॥
सरिता गण लंघत प्रभू,
सुरसरिता शिरधाय ॥
गुहा माय चरनन परो,
ताहि लियो उरलाय ।२॥

नदीश· (स) समुद्र । [का वृक्ष ।

नदीकूलद्रुम· (स) नदी तीर

नदीकान्ता· (स) काकजंघा
लड़ी ।

नदीसर्ज· (स) वहुआ ।

ननिघोर· ननिघोरे· (ह) नानि
हाल, मानिक ।

ननु [स] निश्चय, ठीक, निश्चल ।

नन्दक· [स] तून वृक्ष ।

नन्दन· [स] वृद्धिकारक, पुत्र
सुखदायक । दो० । नन्दन
चन्दन सों कहत, नंदन
जो धनदात ॥ नंदन क-
हिये पुत्र कहं, जेहि हरषि
पितु मात ॥ १ ॥

नन्दनी, नंदिनी· (स) पुत्री,
बालकी ।

नन्दिनी· (स) रेनुका १ धनपुर·

नन्दियां· (प) बसहा बैल, शिव
वाहन । [बैल ।

नन्दी· (स) शिवदूत, बसहा

नन्दीग्राम· (स) पुर विशेष·
अवधमा निकट श्री भरतजू
की तपस्थान ।

नन्दीमुख· (स) जलचर
विशेष, । नाम गोट्टम ।

नन्दीमुखी· (स) पानी का पक्षी
जिस के मुंह पर मांस का
गोला बड़ा हो ।

नन्दी वृक्ष· (स) तून १ बेलिया
पीपर २ ।

नन्दीश्वर· (स) महादेव जी का
बैल, शिवदूत, विशेष ।

नप्ता· (स) नाती, दुहिता पुत्र ।

नफीरी· (स) बाजा शिर सहनाई,
एक प्रकार का बाजा ।

नवीन· (स) नया, प्रवीण ।

नभ· (स) आकाश, मैं आश्वी
भाद्रपद, श्रावणमास,
निकट, खं, दो० । खं नभ

खं ग्टह खं नखत, खं
सन्यनि को नाम ॥ खं
इन्द्री दुखदेत है, दया करो
हरि श्याम ॥ १ ॥ दो०।
नभ आश्रय नभ भाद्रपद,
नभ श्रावन को मास।
नभ अकाश नभ निकट हो,
घट घट रमानिवास ॥१॥
अंबर अमृत को कहत,
अंबर गगन सु भाइ। अंबर
प्रीति जु श्याम तन, रही
जु तड़ित लजाइ ॥१।

नभग· (स) पक्षी आदि, परिंद. खग, तीर।

नभगनाथ· नभगेश· (स) गरुड़ पक्षी, खगेश।

नगचर· (स) पक्षी, आकाश गामी, परिन्द।

नभपंथ (स) आकाश मार्ग।

नम:·(स) नमस्कार, प्रणाम, दाम।

नभस्·(स) आकाश, सावनमास।

नमत· नमति (स) नमस्कार, नमृ, नमस्कार करता है।

नमस्कार· (स) बन्दन, नम:, प्रणाम पूजा, नमस्कार त्रिनिवेश, सहजाभिनिवेशं बन्धु आदि को ॥१॥ बचनाभिनिवेशं नृपादि को ॥२॥ स्वरूपाभिनिवेशम्० गुरु आदि को ॥३॥ यह तीन प्रकार को। नमस्कार। दो०
बंदन अति बंदन प्रणत,
नमस्कार करिताहि। अंब
प्रनाम करत अली, जहां
सांवरि वर आहि ॥ १ ॥
प्रजा नित्य रामहि करत,
नत्वा प्रणत प्रणाम ॥
अभिवाद वंदन नमस्कार
प्रणम्य नमामि ॥ २ ॥

नमस्कारी (स) पानी की लजौनी।

नमावहे· (स) नमस्कार करतु हौं हम द्विप्राणी.।

नमामहे. (स) नमस्कार करतु हौं हम सब प्राणी, हमलोग प्रणाम करते हैं।

नमामि· नमामी (स) नमस्कार करतु हौं मैं एक प्राणी, प्रणाम करता हूं।

नमित· (स) नवे किये शिर,

झुक, नमाया झुकाया।
हुआ, नीचे किया।

नम्र· (स) नमरताई, अधीनताई, झुका, झुका हुआ।

नम्रे· (स) नमरगयो, झुकि गयो, कुंभिलाई गयो।

नम्रा· (स) पानी को नजीनी।

नयनवंत· नैनवंत (स·द) नेत्रवाले

नय· (स) नवीन, नाया, नीति धर्म। [दफातु मे।

नयेसिरसे, सु॰ फिर से, दूसरी

नयशील· (स) नीति से शोभित।

नय नागर· (स) राज नीति का ज्ञाता।

नयन· (स) नेत्र, चक्षु, आंख।

नयनअम्बोध· (प) नेत्र विमल अर्थात् हृदय।

नयनपट· (स) पलक, पल।

नयनमग· (द) नेत्र के राह।

नयनीय· (स) प्यारा, प्रीय, अज़ीज़।

नयनसलिल· (स) आंखों का जल अर्थात् आंसु।

नयनसलिलोत्पीड़रुद्धावका: श्राम, (वि॰ निद्राम्)

आंसुओंके निकलनेमें रुका है आना जिस का।

नर· (स) मनुष्य, पुं. पुरुष, नाम अर्जुन, पांडव, जन आदमी॥ दो॰। मनुज पुरुष मानुष्य नर, जन मनुष्य नृप मान॥ गोध मर्त्य मानव सहित, नाम इका-दश जान॥ १॥

नरक· २८॥ (स) पाप भोग का स्थान, रौरव आदि पापियों के दुःख भोगने के स्थान, दोज़ख। नरक २८ विवरण, तामिस्र १ अन्धतामिस्र, २ रौरव, ३ महारौरव, ४ कुंभीपाक, ५ काल सूत्र, ६ असीपत्र, ७ वन· शूकर, ८ अन्धकूप, ९ क्रमि भोजन, १० संदंशक्ति, ११ तपतभूमि, १२ वज्र कंटक, १३ शाल्मली, १४ वैतरणी, १५ पूयो-दन, १६ प्राणरोधन, १७

वैश्वसन, १८ लोलाभक्षण, १९ सारमेय, २० चिरेयान, २१ खारकर्द्दम, २२ रक्षोगण भोजन, २३ शूलप्रोत, २४ दन्दशूक, २५ अटनिरोधन, २६ पर्य्यावर्त्तन, २७ सूचीमुख, २८ इति श्री भागवत ५ स्कन्ध, १४ अध्याय ।

नरकेसरी. (स) नरसिंह ।

नरपति. [स] राजा ।

नरवाहन. (स) कुबेर, सुरभण्डारी ।

नरहरि (स) नृसिंह, तुलसी दासजीका, गुरु का नाम साधु विशेष श्री तुलसीदासजी के गुरुदेव श्रीनरहरिदास ।

नरपतिपथ. [स] राजमार्ग, सड़क ।

नरहरि दास. (स) श्री तुलसी दास जी के गुरुदेव वराह खेत निवासी ।

नरनाह. (स) राजा ।

नरेश. (स] राजा, भूपाल ।

नरेटी दबाना. मु॰ गला घोटना, टेंटुआ घोटना, घांटी दबाना ।

नरेन्द्र. [स] नृपति, भूप राजा ।

नश्वररूप [स] नष्ट होने वाला रूप ।

नर्त्तक. नर्त्तकी. } नट, नटिनी,
नर्तन. [स] } नचनिया,
नरतकी. } नाचनेवाला, नट, नटिन ।

नर्त्त वैश्या. (स) नचाइयोत ।

नर्मद. } (स) सुखद, सुखनर्म्मद } दायक, कठोरता, नाशक, कल्याणदाई ।

नल. (स) नल बांधना, सरकंडा, नरकट, नेजा, बांस नली, चोंगा, टोंटा, टोंटी, नली, पनाली, एक राजा का नाम, एक बंदर का नाम, एक राक्षस का नाम । "दो॰ । गलन लकांधर ग्रीव पुनि, कांठ कपोतो कोन । पीक लोकी झल झले, सिसछबि

कोन्हो कौन ॥१॥" मनुष्य, कुबेर पुत्र नाम, बानर विभिषनी सख्याता, फोंफो तृण विशेष।

नखद (स) लामज्ज।

नलकूबर (स) कुबेर को दो बेटे जो नारदमुनि के श्राप से पेड़ हो गये थे।

नलनी (प)} (स)} नाग तृण, कुकी कोर, बन्ध घास को लघु कमल।

नलिका (स) नलुका।

नलिन (स) कंज, कुमोदिन, पद्म, कमल, पानी, सारस।

नलिनी (स) कमल परातान, कमल की स्त्री, कोई, कमल का पञ्चांग कुमुदिनी, कमलिनी, कमलों का समूह, कमलों से भरा तालाब।

नली (स) नलुका।

नव (स) नया, नौ संख्या वाचक, ९, नतन।

नवन् [स] नौ

नवखण्ड विवरण०८ (स) इला वर्त ०१॥ इलावर्त ०२॥ ब्रह्मावर्त ०३॥ मलय०४। केतु०५। भद्रसेन०६। इन्द्रस्पृक०७ विदर्भ०८ कीकट०९। कथा॥ तमनुक्रमावर्त॥ इलावर्तो ब्रह्मावर्तो मलयकेतु भद्रसेन इन्द्रस्पृक् विदर्भः कीकट इति नव नवति मधानः इति पंचम स्कन्ध पंचमाध्याय॥५॥ दोसरा ग्रन्थद्वारे। इला०१ रम्यक०२ कुरु०३ केतुमाल भद्राश्व०५ किंपुरुष०६ भारत०७ हिरण्यमय०८ हरि०९॥ इति नवखण्ड एक जम्बुद्वीप। देवी भागवत प्रमाण०।

नवगुणधनुष विवरण (स) कोमल०१॥ तपस्वी०२॥ संतोष०३॥ क्षमा०४॥ अलष्णा०५॥ जीतेन्द्री०६॥ दान लेना०७॥ सर्वं दाता॥८॥ दयाल०॥९॥ एतैनवगुण०॥१०॥

दोसरा पद्य, धार, १ उच्चार,
२ शब्द, ३ संधिवर, ४ देश,
५ धार, ६ ग्रंथ, ७ काम,
८ कांशल, ९ इति नवगुण
धनुष् प्रशुराम ख्यात ॥

नवजल (स) वर्षा का जल,
वर्षा का पानी ।

नवधा (स) नव प्रकार का ।

नवधा भक्ति विवरण०९॥—(स)
अर्चनं, १ वन्दनं, २
दास्यं, ३ सख्यं, ४ सर्वस्वा-
त्मनिवेदनं, ५ स्मरणं, ६
श्रवणं ७ कीर्त्तनं, ८
विष्णुपादसेवनं ९ ०॥९॥
श्लोक०॥ श्री विष्णोः श्रवणे
परीक्षिद् भवद्वैयासकी:
कीर्त्तने प्रह्लाद स्मरणे तद-
ङ्घ्रि भजने लक्ष्मी पृथुः पूजने॥
अक्रूरस्त्व भिवादने कपि
पति र्दास्येच सख्येऽर्जुनः
सर्व्वं स्वात्म निवेदने बलिर
भवत्कृत्ये मेषां परम् ०॥१॥

नवनेह (स) नवनेह, ज्ञान भए
पै जो नहि प्रेम नवनवीन,
जो पंथ सा नेह नवधि
दो० । नाथ सुने भल
मम संदेह । भयउ ज्ञान
उपजेउ नवनेह ॥

नवनिधि ९॥०॥ (स) नव, नौ,
निधि, खजाना अर्थात्,
संपदा, कुबेर का धन,
कुबेरका खजाना । दो० ।
महापद्म अरु पद्म पुनि,
कच्छप मकर मुकुंद । शंख
खर्व औ नील ए, अपर
कहावत नंद ॥१॥ ए नव-
निधि जे जगत में, बिरले
काहू दीख । ते या कलिभ-
राज के, परत भिखारी
भीख ॥२॥ पुनः दोहा ।
महा पद्म कच्छप पद्म,
मकर नील औ नंद । शंख
खर्व युत नाम ये, नव
निधि सहित मुकुंद ॥१॥
पुनः दो० । महा पद्म
अरु पद्म कहि, कच्छप बहुरि
मुकुंद । खर्व शंख अरु
मकर पुनि, नील जानहु

कुंद ॥१॥ श्लोक ॥ महा पद्मश्च, पद्मश्च, शंखो, मकर, कच्छपी, मुकुन्द, कुंद, नीलाख्य, खर्व्वश्च, निधयोनव इति विशेषण नवनिधिः ।

नवनीता } (स) घृत,
नवनी· नवनीत } मक्खन, नौनी ।

नवमालिका (स) वसंतीनेवार

नवभक्ति (स) नौ प्रकार की भक्ति है अर्थात् श्रवण, कीर्तन, स्मरण, चरण, सेवा, अर्चन, वंदन, दासता, सख्य ।

नवरस (स) शृंगादि नवरस, शृङ्गार •१ ॥ हास्य २॥ करुणा • ३ ॥ रौद्र •४ ॥ अद्भुत •५ ॥ वीभत्स •६ ॥ भयानक •७ । शान्ति •८॥ वीर• ९॥ नवरस प्रकरण। सोरठा ॥ नवरस प्रभु विस्तार, करुणा वीर भयानका । हासरौद्र शृङ्गार, अद्भुत शांत विभत्सयुत ॥१। प्रथमश्रृङ्गारसंयोगरस उदाहरण ॥ छन्दमाला । पवन विविधी विहंग कल भृंग कूजैबनी ॥ नखशिख सबै शिंगार छवि स्याम स्यामा बनो ॥ रमत पटवीविनोद युत अंस दीन्हे भुजा ॥ नगन सगनं जगान सगनं यगाभं भुजा ॥१॥ नगन सगनं यगा छंद मंद भाषिनी ॥विलोकि राकेश निशि चंद्रिकाखिको॥ विनोद मै स्याम हषभानु की लली । विलास कीन्हे विविधि कंठदे भुजा । भुजा भुजा गंध सगनंभुजा भुजा ॥ १ ॥ हासरस— छंद गंड ॥ रुक्मिणि सुनाय स्याम हास कीन्ह प्रीति हीन ह्वै उदास ॥ सिन्धुतीर मौ बसै सभीत मागधेश आदि भूपत्रास ॥ जात पात ना हमार ठीक आदि ना विचारदुर्गबास ॥ संगधीपति सुतास आनभूप

देखि कीजिये बिलास १॥ कांत के प्रभाव वैन भीष्म-जाग कीन्ह एक बात। रोम रोम अंडगाथ सर्व कोश ईश आड जारा पांति॥ तासु भूपवृन्द कौन देव दैत्य जास त्रास त्रास ख्यात। जन्म जन्म किंकरी सुछंद गंड गंध पंच पंच ख्यात ॥२॥ करुणा रस—छंदकंद। कृपा सिन्धु मेरी सुनो कान्ह दै कान॥ उघारी करै दुष्ट लज्जा ढकौ आन॥ सुनी द्रौपदी टेरि बस्त्रं बढ़ो-ख्यानि॥ यगानं कहि चारि अंगौ लघू जानि ॥१॥ रौद्रनाम छंद क्रीड़ा॥ दि-खायो रमाईश वैराटरूपं-अदंष्ट्राकरालं॥ धरानाद भो रोम हर्षं महा रौद्र मूर्ती बिशालं। लख्यो अर्जुन उग्र देवेश गात्रं भई भीतबीडा। प्रसंसा करै

हस्त जोरि यगानं पुरं छंद क्रीडा ॥१॥ विभत्स रस—दोहा। द्विरद कुवलिया पीडघाति, दंत धरे हरि अंस। रुधिर बिन्दु सोभित वदन जाय निपातो कंस ॥१॥ अद्भुत रस—छंदबन्धु। भूषण व्यालि सुपाणि कपाला। भस्म कालेवर मंडन माला॥ मंगल हित अमंगल वर्णी। बन्धु सछंद त्रिभागन वर्णी ॥१॥ शांतरस—छंद प्रचित॥ अमर दुर्लभं देह भोगी यथा स्वान जौंहे विश्रे नाहि तापै अघाना। कहि कोटि इतिहास ससुभाय बहु-भांति वेधेन पाषान जिम शिम्र वाना। त्रिया सूनु कारन कपट विप्र कीन्हे तजौं सो यथा नाग चर्म पुराना। तजो मूढ़ माया भजो कृष्ण पादाब्ज

कलुष दहे तूल जैसे बाश्वा-
ना ॥ १ ॥ सखा बन्धु प-
रिवार भगनी पिता
मातु बामा तनै दास
दासी घनेरे । सबै द्रव्य
साथी करैं स्वार्थं प्रीती
सदा मोह में तू कहे सर्व
मेरे ॥ जबै दूत यमराज
के तोहि घेरे करो बाजि
सिबिका यह नाहि तेरे ।
रमानाथ को ध्यान कीजे
कही मान पराचित कथ
छंद चालीस केरे ।

नवीन· नवीन [दू. स] नूतन,
नया ।

नवसत· (स) नव और सात
अर्थात सोलह सिंगार,
सोलह प्रकार का सिंगार
अंगशुचि, मज्जन, अमल
बसन पहिरना, जावक,
केश संवारना, मांग में
सेन्दुर लगाना, भाल खोरी
अर्थात् तिलक, चिबुक
परतिल बनाना, मेहदी
लगाना, अरगजा अंग में
लगाना, भूषन, पुष्प सुगंध
लगाना, मुखराग, दांत
रंगना, अधर राग, काजर
लगाना ।

नवल· (स) उज्वल, शुक्लवर्ण,
पोधा, तरुण, नवीन
सुन्दर, नया, जवान ।

नवशशिभृत, (स) नये चन्द्रमा
का धारण करनेवाला
अर्थात महादेव ।

नसाय, } (द) बिगाड़, नष्ट,
नशाय, } नशायोग्य, नसाना
बिगड़े, नाशहो, बिगड़ना ।

नशाना } [प] नाश किया,
नसावा } बिगड़ा नसावना,
नाश करना ।

नश्वर. (स) अनित्य, बिनाशी
ध्वंसी, नाशमान, फानी,
नाश होनेवाला ।

नस· (प) नाड़ी ।

नष्ट· (स) तिरोहित, ध्वस्त,
अदृष्ट ।

नखजार (प) देखना रग, नस।

नहरनी (स्त्र) नख काटने का अस्त्र, नखरणी॥

नहरुवा नहारवा (स्त्र) नाम रोग जूड़ा या सों सूत निकसत है अमूड़ सूत निसरि जाता होत है कदाचित् वा सूत मध्य में टूटि जाय तो मरण होत, जांघ में सूत सा रोग जो निकसता है।

नहीं (स) निषेध, नहीं।

नहारु (स्त्र) चर्म का टुकड़ा, धाग का टुकड़ा, व्याघ्र, बाघ, एकप्रास खेत का अंकुर। कही घास, ।

नहारू [स्त्र] नस।

नहुष (स) राजा दैत्य विशेष जा की कथा है, एक समय की कथा है कि श्रीबृहस्पति जू इन्द्रादि देवतन्ह के गुरु में इन्द्र की सभा मों गयो वा दिन इन्द्र ने अभिमानता करि उन्ह का दण्डवत प्रणाम ना कियो। अनादर हुये ते बृहस्पति जू शुक्राचार्य्य दैत्यन्ह के गुरु को इन्द्र के पराजय निमित्त सम्मत दियो जब राक्षसों ने इन्द्र पर रोका कियो। तब इन्द्र ने बृहस्पति जू के विरह हो जानें ते यज्ञकारण रक्षा हेतु श्री ब्रह्मा सों तोष्टा ब्रह्मा के पुत्र की परस्पर सम्मत तें विश्वरूप ब्राह्मण वाको तोष्टा के पुत्र तीनि मस्तकों को ले गयो। वा विश्वरूप का मातृका दैत्य कुली रहु पितृक देवकुली यज्ञ होम काज को वानें एके होम कुण्ड मों एक हाथ तें देवपक्ष दूजी हाथ दैत्य पक्ष मातृक अपने आहुत देके जय दोनों पक्ष का मनावैं लगा। ता काल इन्द्र ने या चरित्र देखि क्रोधित अति होय तीनों मस्तक वो विश्वरूप का क्षण तें काटि अग्नि कुण्ड मों डाल्यो, तत्काल वा कुण्ड तें ब्रह्महत्या प्रगट होय इन्द्रके संहारण हेतु

धाया। इन्द्र नें अति संकष्ट में
परि सब जगह तें निराश होय
मानसरोवर विषें जाके महत्व
तें ब्रह्महत्या आदि को काहू
को सामर्थ वा विषें प्रवेश को
नहीं है गुप्त वर्ष ना छपि। अब
वा ब्रह्महत्या मानसरोवर के
तट पर वा के मानसरोवर जल
तें निसरे की अवलोकन करत
रह्यो कि कौन काल निसरै
तत्काल आवौगो। ता उपरान्त
श्री ब्रह्मा ने इन्द्र को अति सं-
कष्टता देखि रक्षा करि वा
ब्रह्महत्या को चारि स्थान पर
बांट दियां, अर्थी भूमि मों
ऊसर, १ वृक्षों मों गोंदा० २
जलों मों फेन० ३ देह मों
नारियों के तीनि दिन रजस्वला
काल। अब जानना चाहिये कि
जाही सो वर्ष इन्द्र के मान
सरोवर में छपि काल मों इन्द्रा-
सन शून्य देखि, नहुष नामी
एक दैत्य इन्द्र की गाद्दी पर आ
के बहिते सर्व कामना आदि

को अपने वशी करि ऐसो
कुपाठी अधर्म्मी भयो कि अपने
वशि करि नीति धर्म्म होम
यज्ञ पूजादि सबों को छोड़ाय
कुनीति चलायो, औ कोई को
सुनीति धर्म्म काज मों सुने वा
देखै वा को दण्ड करे, यह
चरित्र अधर्म्मी वा को मुनि श्री
नारद जूवा के निमीट हेतु
वा के पास गयो वाने नारद जू
को प्रणाम करि सन्मान सहित
आसन दियो वा नहि बैठ्या कह्यो
कि जब तुम्ह इन्द्र पूरा होगो तब
मै बैठोंगो० वा ने कही कि मैं
इन्द्रगाद्दी पर बैठे हूं सब
हमारो वशीभूत है इन्द्र होने
को अब कहा कसर है नारद
जूने कहे कि अब तक इन्द्राणी
के प्रयाग्रहण न करो तब
तक इंद्र पूरा नहीं हो० वा
ने या को मानि इंद्राणी तें भोग
करण के उद्योग मों हुवा।
अब नारद जू या को वश करि
इन्द्राणी सों तुरन्त अब जाति

जो कही अरु कछु उपदेश धर्म्म रक्षक बतायो, राजा नहुष ने इंद्राणी पास भोग निमित्त गयो। इंद्राणी ने कही, कि ब्राह्मणों को कहरा बनाय पालकी पर आवत रहै तब हम वाके साथ विहार देत रहै। तब नहुष या निज फिरि आके दूतन्ह को हुकुम ब्राह्मण पकरने को दियो। संयोगात् दूतन्ह ने सनकादि चारो भैया को पकरि लायो वा दुष्ट ने बलि तें पालकी में जोति चढ़ि बैठा और वा सबों को आज्ञा या वचन तें दियो कि सर्प सर्प। वाको अर्थ इहि प्रकार एक शीघ्र वाचक कि शीघ्र शीघ्र चलो। दूजो नाग वाचक। सनकादि ने नाग वाचक सिद्ध करि शाप दियो कि जो तुम्ह सर्प सर्प कहत तो सर्पहिं होहु तत्काल वा दुष्ट पालकी पर सर्प होके नीचे गिरि परो। पश्चात् कोई काल वा देह अक्षमान होय अधोगति नरक को प्राप्त भयो। इति श्री भागवत ६ स्कन्ध १३ अध्याय समाप्त।

ना. (सं) पुल्लिङ्गवाचक, निषेधवाचक, नन।

नाईं. (प) तुल्य, ऐसा, समान, सदृश, तरह।

नाई. (प) झुका, झुकाई, नवाकारके, झुका के।

नाउं (दे) नाम। [सिका।

नाक. (सं, प) स्वर, स्वर्ग, ना-

नाककटाना. मु० अपमान करना, अनादरकरना, पानी उतारना, बदनाम होना, अपयशी होना।

नाककटी होना. मु० अपना मान खोना, अपनी बड़ाई को मिटाना, बदनाम होना।

नाक का बाल. मु० जिस का बहुत मान हो प्यारा, जिसका बहुत आदर किया जाय।

नाक चढ़ाना· मु० क्रोधित होना, अप्रसन्न होना, गुस्से होना, नाराज होना।

नाक रखना· मु० अपना यश बना रखना, [प] अपनी इज्जत को बना रखना।

नाक सिकोड़ना· मु० नाक चढ़ाना अप्रसन्न होना, नाराज होना

नाकनटी· (स) अप्सरा, स्वर्गवेश्या।

नाकपति· (स) इन्द्र, स्वर्गपति।

नाकसकोरी· (प) नाक समेटना, घिनाना।

नाका· (प) मार्ग का अन्त, सुई का छिद्र।

नाकुली· (स) नाई।

नाग· (स) नाई १ नागेसर। सीसा धातु सर्प, गज, दुष्ट तोयद, वायुविशेष सप्त संख्या वाचक हाथी, सांप। दोहा। नाग पत्र को नाग गज, नाग दुष्ट नर वाम। नाग सर्प संसार को, सिख मंत्र हर नाम॥ १॥

नागकिञ्जल्क· } नागकेसर· } (स) नागेसर

नागगर्भ· (स) सीसा सेन्दुर।

नागजिह्विका· (स) मंनशिला।

नागदमनी· [स] नागदमनो १ फूल खिकसा।

नागद्वीप· [स] पद्मन, खञ्जन।

नागपति· [स] शेषनाग, वासुकी।

नागपत्ना (स) नागदमनी।

नागपाश· नागफांस, [स० प] रस्सी० फन्द० फांसी विशेष।

नागपुष्पी [स] नागपुष्पो १ नागेसर २ नाग दमनी ३।

नागवल्ली· नागबेल, [स] पान पत्र जाके खाए सुखस्वाद।

नागभाषा· [स] प्राकृतभाषा।

नागर· [स] पण्डित, प्रवीण, चतुर, नगरवासी, नगर के रहनेवाला, नगर का निवासी, सोंठ।

नागरंग [स] नारंगी।

नागरमुस्तक (स) नागरमोथा।

नागरी· [स] अक्षर विशेष, चतुरी, नगर लोगाई।

नागरिपु· [स] गरुड़, सिंह।

नागवल्लरी [स] पान।

नागयष्टा [स] गुरचष्ठी ।
नागारी [स] फूल खिकसा ।
नागिनी [स] नागपुष्पी १ पान २ ।
नागलोक (स) पाताल, नरक ।
नागसीसी [स] दाख, कुदारा ।
नागेश नागेश्वर, [स] शेषनाग नागपति ।
नाडीक [स] गोलका छोटा साग । [साग ।
नाड़िक [स] गोलका बड़ा
नाड़ीकलायक [स] करडंची साग । [साग ।
नाड़ीशाक [स] गोलका छोटा
नाज नाजु, [इ] अन्न, दाना, अनाज ।
नाठी [इ] नाश भई, नष्ट भई, नष्ट हुई, नष्ट बिगरी ।
नात [प] नाता, सम्बन्ध, अपनायत ।
नाथ [स] पति, राजा, गोसाँई, पालक, प्रभु, स्वामी मालिक ।
नाद [स] बोली, शंख, शब्द, अर्थ गोल, आवाज,
नादेय [स] नदी का जल ।
नादेयी [स] जनियार १ जल बेंत २ कठजामुन ३ ।
नाना [स] अनेक, बहुत, नानाभव, विविध ।
नानाकार [स] बहुतसूरत, यथा चन्द्रादि तारे । अर्धचन्द्रादिभेदवाले अनेक आकार के ।
नान्दिया [स] शिव वाहन, बसहा बैल ।
नान्दीमुख [स] श्राद्ध विशेष अर्थात् बालक के जन्म होने सति नार छीनी के पूर्वकाल दान क्रिया वा देव अरु पितर पूजा आरंभ होत है शास्त्रोक्त जाको अभ्युदयिक श्राद्ध कहे ।
नाच (दे॰) नाट्य, नृत्य, नाचना नाच नचाना, मु॰ खिझाना, चिढ़ाना, सताना ।
नाभी (स) ढोंढी, बोंडरी, उदरा

वर्त्त कस्तूरी ।

नापित [स] नाई, हज्जाम ।

नाम (स) संज्ञा, यश, विख्याति ।

नामन् (स) नाम ।

नामपरायण [स] नाम का जपने वाला ।

नाम करना, मु॰ नामी होना, नामवर होना, यशी होना, विख्यात होना, प्रसिद्ध होना । [नाम देना ।

नाम रखना मु॰ नाम धरना,

नाम लेकर मांग खाना मु॰ दूसरे मनुष्य के नाम से भीख मांग खाना ।

नाम लेना मु॰ सराहना, प्रशंसा करना, परमेश्वर के नाम लेना, जप करना, माला फेरना ।

नाम होना मु॰ यश होना, यश फैलना ।

नाम डुबोना मु॰ अपना यश खोना, बदनाम होना ।

नाम देना मु॰ नाम रखना ।

नाम धरना मु॰ नाम रखना, नाम ठहराना, किसी नाम से पुकारना, खराब करके कहना, बुरा नाम रखना ।

नाम निकालना, मु॰ नामी होना, नाम करना, इंश्वरी का नाम निर्णय करना ।

नामानि नामानी (स) समूह नाम वाचक, नाम का समूह । [नाम ।

नामी (स) नामवाला, नामवर नामी होना, मु॰ नामवर होना, प्रसिद्ध होना, विख्यात होना, उजागर होना ।

नायक (स) मुखिया, श्रेष्ठ, स्वामी, सरदार, अगुवा ।

नायिका (स) कुटनी, दूती, घरनी, स्त्री ।

नायो नयो (प) सुहायो, नमायो ।

नार (स) जल, नीर ।

नारकी नारकीय, (स) नरक वासी ।

नार· (प, स] नाला, गौलो, काल सूत, जल।

नारंग· (स) नारंगी ।

नाराच· [स] बाण, शर, तीर,
नाराच नल सर छोटे
अंगुष्ठ प्रादेश प्रमाण ना
राच नावक आदि बाण।

नारायण· (स विष्णु का नाम, अन्तर्यामी।

नारायणी(स)पछांडी सतावर।

नारिकेर· नारिकेल, (स)
नारियरफल, श्रीफल,
नारिअलनाम दो० ।
बानरमुख लंगूरफल,
नारिकलि सुभ काम। ए
तरुनी के नारियर, तो
कंह करत प्रनाम ॥ १ ॥

नारी, नाड़ी· [स] स्त्री, अवरत, रंग विशेष। [नदी।

नारे· नाले, (पफ) नाला, लघु·

नाड्यतिक्त· [स] चिरैता।

नार्य्यी· [स] स्त्री, नारी।

नाल· [स] डांड़ी, डांट, कमल डांट, कमल की डंडी।

नालशाक· (स) बूटी की तरकारी।

नाव· (स) नौका, तरणी।

नावरी· नावरि· (ह) } नाव, नाव घुमाना, अतिर, घर नाहिं।

नाविक· (स) नैया, मांझी, मौलाँ।

नाश· (स) ध्वंस, हानि, लोप, क्षय, निधन, विनाश, अदर्शन। [चयी।

नाशक· (स) उजाड़, , ध्वंसी,

नाशकुरि· (स) केतकीपुष्प।

नासा· नासिका, (स) नाक, नाकड़ा, घ्राणेंद्रिय।

नास्ति· (स) शून्य, नदारद, अस्तिहीन।

नास्तिक (स) अनीश्वरवादी, ईश्वर और परलोक का न माननेवाला।

नाह· नाथ· (पस) पति, स्वामी, ससुर, मालिक।

नाहर. (स) बाघ, व्याघ्र, शार्दूल, वनहर्त्ता, वन विपे को हरे।

नाहक. (स) नग्न धारि अंगुली

का, खेत, क्षेत्री।

नि· (स) निश्चय, प्राप्त, निषेधबोधक शब्द।

निःश्रेणी· (स) सीढ़ी, निसेनो

दो०। आरोहन आरोह पुनि, निःश्रेणी सोपान। मनिमय सीढ़ी सखि चढ़ी लखी न काहु जान ॥१॥

निकल आना· मु० भागजाना, चला जाना। [जाना

निकल पड़ना· मु० बाहर आ

निकलभागना. मु० भागजाना,

निकसजाना. निकसना, मु० निकलना, बाहर हो जाना।

निकालडालना· मु० काटना, काटडालना, ख़ारिज कर देना।

निकाल देना· मु० छुड़ादेना बाहरकरना, अलग कर· देना, दूर करना।

निकाल लाना· मु०. ले आना बचालाना।

निकालदेना· मु० लेलेना, उखाड़ लेना, काढ़ लेना, छांट लेना।

निःश्वास· (स) पवन, प्राण-वायु, लम्बी स्वांस।

निःसङ्ग· (स) सङ्गहीन, अकेला, अलग।

निःसन्देह· (स) निसंशय, अशं-का, अवधारित।

निकट· (स) समीप, सन्निधि, पास, नज़दीक, निकट का अपराध नाम ॥ छंद विपिन तिलका ॥ निकट अवलून आसन्न अभ्यासहू। तटं अभ्यर्णं सामीप अभ्या-सहू ॥ सन्निधीनंतरं तीर अन दूरहू। पास प्रभु आय सुग्रीव सुख भूरहूं ॥१ दोष अपराध औ आग औ मतुं जो। नाथ हरि ये सबै राम भगवंत जो ॥ राम आज्ञा हनूमान कपि दल चला। विपिन तिल-का सुभ छंद बिंसत कला ॥ २ ॥

निकन्द· निकन्दन· (स) नाश, स्कन्ध, रहित, उखड़ा नाश करनेवाला।

निकर· निकाय· (स०ट) समूह· सकल, सार, झुण्ड, निकट, किरण।

निकष· [स] कसौटी।

निकसचलना, मु० भागना, टलजाना, बढ़ चलना, आगे निकलना, बहुत बोलना, अपना गुण दिखलाना।

निकाई· (प) सुन्दरताई, सुंदराई, भलाई, निकानेका पैसा, उत्तमता शोभा,।

निकाम, निःकाम (सप) कामना हीन, नष्ट, अति, बहुत कामना रहित। छंद —राम चले बान कराल, फुंकरत जनु बहु व्याल। कोपि समर श्रीराम, चले विशिषनिसित निकाम॥ अर्थात् निकाम अत्यंत निसित चोखे। निकाम अत्यंत लिखेंगे दूसरा अर्थ न होय अत्यंत बहुत दूत विसिष चोखे। कोपि कोप से विशिष भले सान पे चोखे किए।

[अनेक।

निकाय· (स) समूह, झुण्ड,

निकिंचन· (स) दरिद्र, दीन।

निकृष्ट (स) अधम, नीच, तुच्छ।

निकुच· (स) बड़हर।

निकुचक· (स) जलबेत।

निकुम्भ· (स) दामाजड़ी। एक प्रकार की दवा।

निकीवल (द) अकेला।

निकेत· निकेतन, (स) घर, भवन, कुटी, स्थान।

निकोचक· (स) अङ्कोल।

निखक· (स) सोना धातु, बटखड़ा, तौल की।

निखिल· (स) समस्त, समूह, संपूर्ण, कुल, समय,।

निगदित· (स) कथित, कहतव्य।

निगम· (स) वेद, गमरहित, निश्चय, स्थिर, पवित्र लेख।

निगमनदी· [प] गङ्गानदी।

निगरता· [स] उत्पन्न।

निगूढ़· निगूढ़ा·[स·द] गहरा, सूक्ष्म गंभीर, छिपाहुआ, अप्रगट, दुर्गम, गुप्त, कठिन अतिगुप्त, बहुत छिपा।

निग्रह· [स] रोक, दण्ड, कैद, बन्ध, अनुग्रहाभाव, बंधन, तिरस्कार, रोष।

निघटत· [प] भतिकमती, होता।

निचुल·[स] ईजर, वृच्च विशेष।

निचोल· [स] वस्त्र, कपड़ा, दोहा। चैल निचोल दुकूल पट, अंसुक बास सिचौर। पियतन बास जु बसन मैं, छिनछिन होत अधीर॥१॥

निचिंत होना, मु॰ काम पूराकरना, निबटाना, बे फिकिर होना, फुरसत पाना, अवकाशपाना।

निज· [स] अपना, स्व, उत्कृष्ट, स्वतन्त्र।

निजगति· [स] स्वचाल चंचलता, अपनीगति।

निजधर्म· [स] मुख्यधर्म।

निजतन्त्र· (स) स्वतन्त्र, स्ववशी।

निजसंधि· (स) आपनछिद्र, औसर, अवसर, अपना· छिद्र।

निजसुख· (स) आत्मसुख।

निजबाणी· (स) अपना वचन।

निजानन्द·(स) स्वरूपानन्द, स्वानन्द।

निठक· (स) हीरामणि।

निठुर· (प) कठोर, कड़ा, निर्दया।

नित. नितई,(स॰प)वास्ते नित्य, सर्व्वदा, सदा, निमित्त।

नितगौमी.(स) नित्यनमस्कार।

नितम्ब. (स) चूतड़, कंदब, दोहा॥ बिनै तूल नीप प्रिय कदम मधुगंध कदंब॥ वेग कहो किन भी पिया, कीजै नाहि बिलंब॥१॥ पुन:। नृत्य नीप ग्रीषंक सोह, मदिरागंध सुभाइ। ए कदंब तन कह

बढ़ि, कूदे हैं दह माह ॥ १ ॥

नित्य· (स) सदा, सर्दा, सनातन, अनन्त, अशेष, जगत का सार, उत्पत्ति विनाश रहित, नित्यकर्म, जैसे संध्या आदि।

नितउठे,· नितउठ के, मु॰ सदा, निरंतर, रोज़ रोज़, हमेशह, हरदम, हमेश।

नितनित, मु॰ सदा, नित उठ, निरंतर।

निन्नावे (नव नवति नव जो नवति नवे) नवे और नव, ९९।

निन्नानवे के फेर में पड़ना, मु॰ धन के इकट्ठा करने-की में लगा रहना, दुख में फंसना।

निदर· (स) पर्व्वत, निर्भय।

निदरना. (प) अनादर करना।

निदरि. (प) निरादर करि निरादर करके।

निदरी. (स)निर्भयी, निर्डरी, पाप रहिता।

निदान· (स) कारण, शेष, पीछे, चिन्हबोध, अन्त, आखिर, आदिकारण-कारणज्ञान ,रोगनिर्णय,आखिरकार।

निदिग्धिका (स) रेंगनी।

निदेश. निदेशा,(स॰द) आज्ञा, उपदेश, आदेश, अन्या नाम—दो॰ बयादेस निदेसपुनि, आज्ञा संसरि जोग। आप हैं अब जानुवन्ति, लहै प्रीति को लोग ॥ १॥ पुनः। अज्ञा शासन देशवद, आवस शिष्टि निदेश। निर्देशं अपबाद पितु राम चले वन बेश ॥ १॥

निदेशकारी·[स] आज्ञाकारी।

निद्रा. निद्रा॰ [स] निद्रा, निंद, ऊंघाई, नींद, नीद।

निध [द] खज़ाना।

निधन· [स] मरण, नाश,

निर्हैन, मृत्यु, नाश, मौत।

निधनानी· [स] समूह, मरण, बहुवाचक मरण।

निधान· (स) घर, स्थान, ठांव, आधार, पात्र, आसन आ· श्रय, कार्यंप्रसात, धन, खजाना।

निधि· [स] सम्पत्ति, समूह, आधार, कोष, खानि, समुद्र, बहुत, महापद्मा· दि ॥ ९॥ बहुत धन, खजाना, संख्याविशेष, धन।

निनाद· [स] शब्द, शंख, आ· हट, सराटा, शोर।

निन्दक· [स] निन्दा करने· हारा, निन्दा करनेवाला

निन्दा [स] दोष, कलङ्क, लिस, अपवाद, दूषण, कुत्सा, बदी।

निन्दि· (स) खराबद्रव्य।

निन्दास· (स) जंभास, झप की।

निन्दित. (स) निषिद्ध, दूषित, त्याज्य। [तुच्छनीय।

निन्द्य· [स] निन्दा के योग्य,

निप· [स] कदम्बवृक्ष।

निपट· (प) अति, समस्त, बहुत।

निपतति· [स] गिरता है।

निपातयत्· [स] गिरता हुआ।

निपात· (स) नाश, त्याग, मृत्यु, पतन, गिरना, नाश· किया।

निपाता· (स) नाश किया, काटा।

निपाति (स) नाशि की।

निपुण· (स) पण्डित, प्रवीण, पटु, चतुर, कारण, होशि· यार।

निपुणाई· निपुनाई (प॰द,) पण्डिताई, चतुराई, निपुणता, होशियार।

निब्बार· (स) तीनो धाम।

निविड· (स) सघन, भयंङ्कर, वन, अति अंधकार, अन्ध· कार, घना, घन, गहन।

निवुकि· (द) छकि, कुदकि, कुड़ाईके, निकलि, गिर·

परना, खिसि परना, निवु, काना, छोड़ाना, छोड़ा करके।

निवृत्ति· निर्वृत्ति, [स] मोच, विश्राम, चैन, संसार से छूटना। [पाप रहित।

निःइ पाप, निःपापा· (स०द)

निवेदन· [स] विनती, पार्थना।

निवेदनपत्र· (स) प्रार्थनापत्र।

निवेदित· [स] अर्पित, भोग लगी वस्तु, आगे रखना।

निवेड़· निवेड़ी, [प] निर्वाह, निरन्तर, निबाह, निबहि

निबेरो· [द] चुकाई, जवान स्त्री।

निवेध [स] रोकना।

निबोध· [स]सुणु, सुनो, बूझो, जानो।

निभ· [स] तुल्य, समान, शो- भित, उज्ज्वल, सदृश।

निभृत. (स) एकान्त, चवेला।

निमज्जन· [स] स्नान, गोता।

निमन्त्रण·[स] नेवता, आवाहन।

निमि· [स] एक राजा का नाम, राजा विशेष, राजा जनक पिता संज्ञा, जाके देह मथन तै जनक भयो, अरु नेत्र पलक मा सर्व के सूर्य्यवत्।

निमिष, निमेष· [स] पलक पलकमून्दना, काल विशेष पल, पलक देवता वाचक, कालविशेष, पलकभाजना।

निमित्त (स)हेतु, चिन्ह, कारण-

निमेष· [स) क्षण काल विशेष, पल, लिखा ६० लघ संख्या वाचक, जितनी देर में पलक लगती है·पलभर।

निमिख· (द) निमेष।

निम्न· (स) नीच, तल, गहिरा गहरा, निचान।

निम्नगा. (स) नदी, सरिता।

निम्ब. (स) नीमवृक्ष।

निम्बुक, निम्बू [स०द] कागजी लेम्बू।

नियः [स] प्राप्ति, प्राप्तियोग्य तुल्य, आचार।

नियत. [स] निश्चीत, प्रतिज्ञा· अंगीकार, स्थापित, ठैरा· या हुआ, नियम, नित्य, जितेंद्रिय।

नियतवसतिम्. (वि·स्कान्दम्) ठैराया है वसना जिसने।

नियता· (स) अन्तरजामी।

नियम·[स]अङ्गीकार, वचन री· ति, रीत, 'निश्चय,प्रतिज्ञा अंगीकार, आचार, तरकस।

नियमन· (स) अटकाव, छेक, रोक, दबाना, मरजाद में रखना। [पास।

नियर· (द) समीप, निकट

नियराई· (द) निकवारी, समी· पता, निकटता, निकट पहुंचे, नियराना, निकट आना।

नियात· [स] हिलाव, दो साख

नियुक्त· [स] प्रेरित,-प्रेषित,-अ· धिकृत, जोड़ा हुआ।

नियोग· } [स,द]आज्ञा,प्रेरणा,
नियोगा· } आज्ञा करना।

नियोर· [द] बोलाहट।

निर· निः, [स] बहिस,रहित।

निरखि· (द) ताखि के, देखिके, निरीक्षण [बिनाडर।

निरंकुश· [स] स्वतन्त्र, स्ववशी,

निरञ्जन. [स] अविद्या रहित, शुद्ध, रागरहित, निरुपा· धिक,परमात्मा,[निरंजन] अञ्जन रहित, दुःख सुख रहित।

निरत· [स] लीन, तत्पर, अलीन, अतत्पर, लगा, अति प्रीति युक्त।

निरति [स] लपटी गई।

निरतिक· [स] लिपटी हुई।

निरद· [स] बादल, मेघ, घटा।

निरन्त· [स] अन्तरहित, अपरम्पार, सर्वदा लगा· तार, नित।

निरन्तर· [स] निकट, लगा· तार, नित उठ अन्तरहित सर्वदा।

निरवधि· (स) अवधि रहित।

निरवहा· निरवहई, (प) बीत· गयो, हो गयो, निबहै,

निबहना, निबहा, बचना।

निरबाह· [द) निबाह किया।

निरभर· ( ) परिपूर्ण।

निरमय·(प) बनाना, सिरजना

निरमम· (स) ममता रहित।

निरम्बु· (स) निर्जल, बिनुजल, जल रहित।

निर्लेप· [स] माया रहित।

निरषति· [प] देखत हैं, तकत है एक।

निरषन्ति· (प) देखत हैं सब।

निरषि· [प] देखि के, देख कर के, निरीक्षण।

निरस· निरस्य· [स] रसहीन, मिथ्या, फीका, त्याग, रस बिना, सूखा, स्वाद बिना त्याग करके।

निरस्त· (स) बिलग, रहित।

निरक्षर· (स) अनपढ़, मूर्ख।

निर्गम (स) जाना, निकसना।

निरंकुस· [स] बिना डर

निरामय· (स) निरोग, बराह, रहित, षड्विकार रोग रहित।

निरामिष· (स] मांस बिना भोजन, मांस भोजन से रहित होना।

निराकार· [ ] आकार रहित रूप रहित,।

निराचार· [स] आचार रहित।

निरावत· [स] खेत को घास को खोदना।

निरीश· [स] बिना राजा, बिना सरदार, बिना मालिक।

निरीह· [स] इन्द्रिय चेष्टा रहित।

निरूपण· } [स] कथन, निरीक्षण, आलोकन बिचार, बयान।
निरूपण· }

निरुपधि· [स] बिना प्रयोग, उपाधि रहित, निरुपाधि।

निरै· [द] नरक, यम लोक।

निर्गुण· (स) गुण रहित।

निरुज· (स) रोग रहित।

निरुपम· (स) उपमा रहित।

निरुपाधि· (स) छल रहित।

निरुवारे· (स) खोले, निरुवारना खोलना। [उत्पन्न।

निर्गता· निर्गता. (स) निकली हुई, बाहर की गई।

निरुपथ निरुपन (स,द) विस्तार से कहना, निर्गता, उत्पन्न।

निरंबु (स) जलबिना।

निर्गुण्डी [स] नीला फूल का सिंदुवार।

निर्घन (स) बादलरहित।

निर्ज्जर (स) सामान्य देवता, अग्नि, अचय, अमर, अस्तत।

निर्ज्जरनदी (स) देवता की नदी अर्थात् गङ्गा।

निर्ज्जीव, निर्जीव (स) निश्चय।

निर्झर (स) झरना, पनही, पर्वत की सोता, पर्व्वत का झरना।

निरंजन (स) अविद्या रहित, राग रहित, माया रहित, निरुपाधिक, परमात्मा।

निर्णय (स) न्याय, तजवीज, निश्चय, विचार, तत्त्वकीबात।

निर्दय (स) क्रूर, जिस को दया न हो।

निर्दिशत (स) दिखाताहुआ।

निर्दम्भ (स) निरहङ्कार, दम्भ रहित।

निर्देश (स) आज्ञा, विभाग, निरूपण, वर्णन, आसन उपदेश।

निर्धार (स) निश्चय, निर्णय।

निर्वहे (प) छूटिगए, निर्वाह पावे।

निर्व्वान, निर्व्वानपद, निर्वान (स,द) मुक्ति, परमपद, मोक्षपद।

निर्वृत्ति (स) त्याग। [आलस्य।

निर्व्वेद (स) वैराग्य, त्याग,

निर्भर (स) शरीर सुखहीन, पूर्ण, पूरन, अतिशय, परिपूर्ण।

निर्भरप्रेम (स) नि निरन्तर भर पूर्ण है प्रेम जामे सो निर्भरप्रेम।

निर्भय (स) भयरहित, बेखोफ।

निर्म्मक्षिका (स) मखुवा।

निर्म्माय (स) रचित, सिरजन, उत्पत्ति।

निर्म्मयेउ (प) रचेउ, बनाएउ, निर्माणकिया, बनाया, रचा।

निर्म्मार (स) निर्नाशक, अक्षय।

निर्म्मल· निर्मल· (स) मल रहित, उज्ज्वल, स्वच्छ, शुद्ध पवित्र, साफ़ ।

निर्म्मलन· (स) वमन, उच्छिन्न ।

निर्म्माण· निर्माण· (स) बनावट, सार, रचना, प्रमाण, समंजस ।

निर्म्मित· निर्मित, (स) रचित, बना हुआ, कल्पित, बनाया, रचा हुआ, बनाना ।

निर्म्मूल· (स) उखड़, उच्छिन्न, मूल रहित, नाश ।

निर्य्यास· (स) वृक्षों का गोंद ।

निर्यास· (स) वृक्षारस, क्वाथ. काढ़ा ।

निर्लय· (स) घर, भवन ।

निर्लेप· (स) बेकाम, अलिप्त, लगाव नहीं, मायारहित ।

निर्वाण· (स) मोक्ष, मुक्ति, मोच, निवृत्ति, ब्रह्मानंद ।

निर्विकार· (स) विकार शून्य-परमात्मा । [रहित ।

निर्वंश· (स) वंशरहित, संतान

निर्विय· (स) स्थान, भवन ।

निवार·(स नाश, दूरि, नष्ट रोक

निर्विकल्प· (स) भेद रहित ।

निर्बहा (द) बीत गया

निर्व्विनोद· (स) नहीं आनंद है जिस को अर्थात् दुःखी ।

निर्व्विन्ध्या· (स) नाम है एक नदी का ।

निवारक· (स) नाशकर्त्ता, रोकनहार, दूरकरनेवाला ।

निवारण· (स) नाश, निषेध, रोक. छेक. निवृत्ति, प्रतिरोध, रोकना, दूरकरना, हटाना ।

निवारि· (प) दूरकरि, रोककरि ।

निवास. (स) वास स्थान, ठहर, आश्रय, घर ।

निवृत्ति· निवृत्त· (स) निवारण-त्याग रहित, भिन्न, लौटा हुआ ।

निवेरति. (स) चुकाई, युवा स्त्री, चैन ।

निवेदन· (स) विनती, प्रार्थना, सनमानपूर्वक, ज्ञापन कथन, अर्ज़, दरख़्वास्त ।

निवेरी· (व) युवाई, युवा स्त्री ।

निश, [स] रात्रि ।

निशङ्क· (स) निर्भय, सन्देह ।

निशा· (स) रात्रि, रजनी, रात हलदी ।

निशाकर· (स) चन्द्रमा, चन्द्र ।

निशाख्या· (स) हलदी ।

निशागम· (स. रात्रि आगमन ।

निशाचर· (स) भसटपुर राक्षस, चोर, उलूकादि, श्रृगाल, सर्प, उल्लू ।

निशान· (फ़) झण्डा, ध्वजा, चिह्न, नगारा ।

निशाह्वा· (स) हलदी ।

निशि· (स) रात्रि, रात, रजनी, अर्द्धरात्रि, निशा, प्रिया की को वचन अर्धरात्रि नाम ।

दो० निस निस निसिअर्धनि साइनिस, कौन लगी अध-रात । कौन चले सखि सोय रहु, जैहौं उठि पर-भात ॥ १ ॥

निशिचर· (स) राक्षस, चोर, उलूकादि ।

निशिचरी· (स) राक्षसी, सिंहि का

निशिमुख (स) संध्याकाल, सांझ । रात

निशीथ· (स) अर्द्धरात्रि, आधी-

निशेश· (स) चन्द्रमा, चन्द्र ।

निश्चय· (स) निर्णय, ठीक, स्थिर, सिद्धांत, संशयरहित ज्ञान, विश्वास, यकीन ।

निशर निशाचर· (स) राक्षस ।

निश्छिद्र· (स) निर्दोष, छिद्र रहित ।

निश्वास, निश्वासन· (स) श्वास सांस, प्राण वायु ।

निश्शब्द, [स] चुपचाप ।

निश्श्वास, [स] लम्बी श्वास ।

निवेदित· (स) अर्पित, नैवेद्य किया ।

निषङ्ग· (स) तरकश, तूण, सेल दोहा । तूणी तूण निखंग पुनि, उपासंग तूनीर । इषुधि मध्य तनु लषन सुत सोभित यो रघुवीर ॥ १

निषराणा [स] बैठा हुआ ।

निषाद· (स) जाति संज्ञा, अति नीच, चण्डाल, पहरिया राजा या वेनु की जंघ से उत्पत्ति वा सभीं को, राग विशेष, केवट, मल्लाह।

निषादनाथ· (स) निषादराज, रामसखा।

निकेवल· (स) चमेली।

निषिद्ध, निषेध· (स) त्याग, निवारण, बाधा, छेक, रोक, वर्जित, कुत्सित, निषेध क्रिया घृणा, त्यक्त, वर्जित।

निष्कण्टक· (स) दुःख शून्य, निर्वैरी। [इलायची

निष्कुटी· (स) इलायची, बड़ी

निष्कृति· (स) उद्धार, उपाय, निस्तार।

निष्ठा· (स) विश्वास, स्थापन, धर्म कर्म में श्रद्धा, उत्कर्ष नाश, अंत। [बेरहम।

निष्ठुर· (स) कठोर, निर्दय, कर्कश।

निष्णात· (स) पण्डित प्रवीण।

निष्पतन्ति· (स) निकलती हैं।

निष्फल· (स) फलशून्य बेफायदह।

निष्फला· (स) वृथा, फलशून्य, बेफायदह।

निष्फलारम्भयत्नाः, (वि॰ के) बिना फल वाले हैं आरम्भ जिन के यत्नों के।

निष्पत्ति· (स) स्पष्ट, सिद्धि, समाप्ति।

निष्पाव: (स) बड़ सीमा।

निसि· निशा [ह, स] रात्रि रात

निशिचर· (स) राक्षसी चोर।

निसरत· (ह) निकलत, निकसत, निसरना।

निसागम· (स) रात आये।

निसरि· } (ह) निकसि, निक-
निसरी· } सि. खतम, निकसी, निसरना, निकसना।

निसर्ग· (स) प्रकृति, शील।

निसान· } [ह] नक़ारावाजा,
निशाना· } डङ्का, नगारा, निशान दो॰। हरषित बरषहिं सुमन सुर, बाजहिं

गमन निशान। अस्तुति
करिकरि सबचले, सोभित
विविध विमान॥ अर्थात्
इहां निसान निस्वन शब्द
का अपभ्रंश है बड़ा शब्द
जाते कहे नगारा आदि।

निसारना· (द) निकालना।

निसित. निशित·(स) निःस्वत
चोखा, तीखा निकलने
तीषे, अति चोख मलीन।

निसैनी· निसेनि (द) सीढ़ी,
सोपान।

निसोत. (द) निरामा, अलग
निर्मल, केवल

निसोती· (स) निसोत।

निसेस· निशेश, (स) चंद्रमा,
निशा के ईश।

निस्तार· (स) उद्धार, मुक्ति,
त्राण। [निस्तीर्ण।

निस्पृह. (स) लालसाहीन,

निस्नेह· (स) निर्मोह, निर्म-
मता।

निस्सिरत· निकलना, बाहर
होना, जन्माना।

निस्वन· (स) नाद, शब्द।

निस्सार· (स) बिना सार का।
द्रव्य।

निस्सूक (स) बिना संग का।

निस्स्यन्द· (स) टपकना

निहारा·[द] देखा; निहारना,
निरीक्षण, देखना।

निहार· निहारु, [स] मेघते
जो स्रवे, कुहेसा, कुहिरा,
अन्धकार, नाम—।द्दो०।
अंत्रतनिश्रह तिमिरतम
ध्वांतसु काहरनिहार। सो
तेरे देखे कुंअरि, सो मन
तें न अधार॥१॥

नीचेराख्यम्· (वि, गिरिम्)
नीच है नाम जिस का।

नीचेस्·(स)नीचे को ओर, नीचा,
ओछा, छोटा, नीच, तुच्छ।

निहोर, निहोरा, (द) बिनती,
उपकार।

निहरपा· (द) कुहिसा, अंध-
कार, कुहिरा।

निक्षिप्य [स] रखकर, फेंककर।

निहित· (स) रक्खा हुआ।

निह्राद. (स) शब्द।
निह्रादिन्. (स) शब्दायमान।
निक्षेप. (स) फेंक, थाथी, धरोहर।
निर्झर. (स) झरना। [शब्द।
नी. (स) निश्चय, निषेदबोधक
नीक. (प) सुन्दर, सुथरा, अच्छा।
नीच (स) गहरा, नीच, कमीना
नीड. (स) खोता पक्षी की, खोढ़र, घासला, बैठक, आसन। घूंसा।
नीत. (स) लाया हुआ लिवाया
नीति. (स) उचित, व्यवहार, चलन, न्याय।
नीति धर्म. (स) राजनीति के अनुसार धर्म।
नीत्वा. [स] लिवाकर।
नीतिमंत (स) राजनीति की अनुसार धर्म।
नींद. नींद. (स.प) नीन्द, निद्रा, घोंघाई।
नींद उचाटहोना, मु० नींद नहीं आना, नींद की टूटना, आंख नहीं मिलना, आंख की चाह न होना, आंखें टूटना।
नींद भर सोना. मु० गहरी नींद आना, चैन से सोना।
नीचा ऊंचा. [मु०] ना बराबर ज़मीन, छोटा बड़ा।
नीप. [स] कदम्ब फल १ कदम का भेद कुवजा का २।
नीम. [प] हृदय, अर्ध, आधा। [स]
नीमी. (स) धारपड्डादि, हथियारों का धार।
नीर. [स] जल, तोय, दुग्धपान।
नीरज. [स] कमल, उद्बिलाव।
नीरधर. (स) बादल, मेघ।
नील. (स) श्याम रंग, नीला वर्ण, नीला, नाम निधि, बन्दर विशेष, काला, नील रंग का द्रव्य।
नीलकांत (स) काकाकमल।
नीलकण्ठ. (स) नीलकण्ठपक्षी नीलकंठ पक्षी, मोर, महादेव, कपोत, दोहा।

नीलकंठ कालकंठ सितकंठ चातक चक चकोर भाँति भाँति बोलहि बिहग स्रवन सुखद चित चोर।
अर्थात् नीलकंठ मयूर वा कपोत, कालकंठ कोकिला, चक्र चकवा ख्यात, मयूर पंछी शिव का लिंग गिरवासी, [सिखा।

नीलकण्ठशिखा (स) मोर-

नीलदूर्वा (स) हरीदूब।

निलपुष्पा (स) सिन्दुवार।

नीलपुष्प (स) गठिवन।

नीलपुष्पा (स) नील १ सिन्दु-वार २।

नीलपुष्पी (स) तीसी।

नीलवा (स) पुरी, स्थान।

नीललोहित, (स) श्याम अरुण वर्ण, रुद्रसंज्ञा।

नीलाण्डक (स) काला चांद का हरिन।

नीलाञ्जि (स) कुब्जका।

नीलिका नीलिनी नीली, (स) नील।

नीलीकृत (स) सर्पिका।

नीलाम्बर (स) बलभद्र, कृष्ण श्याम, नीले रङ्ग का कपड़ा।

नीलोत्पल [स] नीलकमल।

नीलोपल [स] नीलमणि,

नीवा [स] रुनाहट, मन्दाई।

नीवार [स] तीनी धान।

नीवी, नीवीबन्ध, } नाड़ा, द्वारा।

नीवीबन्धोच्छ्वसितशिथिलम् [वि, वासः] नाड़ा खुल जाने से ढीला हो गया है जो।

नीसोत [स] खरा

नीहार (स) पाला, शिशिर, धोस। [शित।

नुत (स) स्तुति किए हुए, प्रसं-

नुति (स) स्तुति, स्तव, स्तोत्र, बड़ाई।

नुदति, [स] चलाता है।

नुहड़ा (प) नख से खसोट।

नूतन [स] नवीन, नया, युवा

नूर (स) तूर का सुख।

नूनम्, (स) निश्चय।

नूपुर· (स) घुंघुरु, भूषण, खिंखिणी, पांव भूषण। दोहा। तुला कोटि मंजीर पुनि, नूपुर झनकत पाय। झमक उठी जनु मैन की, बीना सहज सुभाय ॥१॥ पुन: नूपुर का वरण, नाम छंद मानिनी। पदांगद शृङ्खल मंज मंजीरहु नूपुर सेनकि कोटि तुला। पतंचरनं चकनं पद पादहु चक्रम अंघ्रिकमी कमला। पराग सुगंध विलास चलो घनस्याम घ्राण करि दे अचला। सुनो जगनं पुनि एक धुना कहि वासुकि मानिनि छंद भला ॥ १ ॥

नृ· [स] नर, पुरुष, पुं, मनई, मनुष, मनुष्य।

नृत्य· (स) नाच, नर्त्तन।

नृत्यक· (स) नचवैया, नृत्यकारी, टहलुवा।

नृप, नृपति, नृपाल· (स) राजा, भुपाल, पृथ्वीपति। दो०। स्वामी अधिपति प्रभु बड़े, नरपति छितिपति भूप। राजा जहं वृषभानन्नृप, बैठे सभा अनूप ॥ १ ॥

नृसिंह· [स] विष्णु का एक अवतार प्रह्लाद हेतु।

नृसिंहावतार· [स] विष्णु का एक अवतार। दो०। जन प्रहलाद विषाद लखि, कीन्हों खल संहार। भक्त हेत हरि हरि बने, नाम चतुर्दंष्ट्रधारि॥१॥छंद पवंगम। कंठीरव मृगराज पंचमुख केशरी। चित्रकाय हरियक्ष मृगादन केहरी॥ पुंडरीक शार्दूल सिंह द्वीपी हरी। छंद पवंगम षोडश पंचम कलाधारी ॥१॥ पुन: दो०। पुंडरीक हरि पंचमुख, कंठीरव मृगराय। सिंह पकरि वृषभान के, अहपरि पहुंची जाय ॥ १ ॥

नृपराहर· (स) राजमहल, दो० अएउ कोशाहल अवध पति,

सुनि नृप राउर सोर ।
विपुल विहंग बन परेउ
निसि, मानहु कुलिस कठोर ॥ अर्थात् महाराज
को राउर कहैं मंदिर में
सोर सुनि के अयोध्या जू
में अति कोलाहल कहैं
शब्द भयो॰मानो राति में
बहुत पच्छिन कें बन में
कठोर जो बज्र सो परेउ ॥

नेई· [द] नीव, नेव। [अल्प।

नेक· (फ़· प) नेकु, भला, तनिक

नेकु· [द] थोड़ा सा, थोरिक।

नेग· (स· द) पुरूहितादि कर्म्म, पुरोहित आदि का कर भाग, विवाह में का दान, विशेष रचा।

नेगी· [स. द] पुरहितादि कर्म्म कारक, साची, भागी, रचक।

नेति· (स) नाइति, अन्तबिना, नहीं न इति, नहीं ऐसा।

नेट· (स) मार्ग दिखानेवाला

नेत्र· [स] (नी से जाना वा पहुंचाना वा पाना) आंख, नयन, लोचन, नैनी, नायक चलाने वाला, चच्छु, दीदा। नैन नयन औ नेत्र दृट, मृगमद नैन कहंत॥ नेत्र ज्ञान जस जगमगी, तव कहिये भगवन्त॥१॥ दो०। लोचन अंबक चच्छु दृग, ईछन कर अधीन। काकु रिस राते नैन जनु, जावक भीजे मीन॥१॥ पुन: नैन वा अंजन वा तीच्ण, नाम छंद बिचित्र। वंक भ्रू मनो मुरारि युद्द जीति लीन्ह कोन चाप मैन। चच्छु अच्छि नेत्र दृष्टि अंबकं विलोचनं दृगं सुनैन। अञ्जनं सनाग दीप कज्जलं सुखी सदीपजं प्रधान। तीच्णतीच्ण तीमघोरउग्र उत्कठं नराच के समान॥१॥ चंचलं विशाल हरसाल मनो पियूष के निकेत। कंज खंज भृङ्ग मीन एन

छन्द को दिखाय शीषदेत ॥ स्याम स्वेत रक्त युक्त जानिये प्रयाग ईचर्ण मुकुंद । गंध अष्ट और युगम नाग राज ने कह्यो विचित्र छंद ॥२ ॥

नेचोपमफल· (स) बदाम ।

नेपाली· (स) बसंती नेवार ।

नेपथ्य. (स) वेशस्थान·अलंकार, रंगभूमि ।

नेव· (द· स) नेह, नाइब, ता वैस, नहिबस, नेग, मंच ।

नेम. (स) संतोष आदि नियम, शौच, होम, तप, दान, विद्या अध्ययन, इन्द्रिय निग्रह, व्रत चन्द्रायण, आदि ।

नेमि·[स]पहियकी पुट्ठी ।[स्थान

नेमिष· (स) नीमषारदेश, तीर्थ

नेमी. (स) तिनिस ।

नेय· (द) ले जाने योग्य ।

नेवता· (प) निमन्त्रण ।

नेवाज (फ) उद्धारक, पालक, रछ्याकारी ।

नेवारण· (स) छोड़ावन, रोकन छेक ।

नेस्त्रन्त्रि.[स]ले जायंगे, बनावेंगे।

नैऋतकोण· (स) दक्षिणपश्चिम कोण ।

नेह· (स) स्नेह, प्रीति । [वाला

नैदाघ· (स) जेठ असाढ़में होने·

नैपाल. (स) शिरोमणि, नैयाय की प्रवीण, एक देश का नाम ।

नैपाली· (स) मेनसिल ।

नैव· (स) नाएव, नहिएह ।

नैमिषार· (स) नीमषारदेश, तपस्थान विशेष ।

नैश· [स] रात का ।

नैर्झर· (स) पर्वत का झर्ना ।

नैष्ठिका· [स] एकाग्री, निष्ठा· चारी ।

नैष्टा· [स] निष्ठमान, निमि ।

नैहर· [प) मातु पिता घर, मयको, स्त्रीका निज घर ।

नो· (स) निषेधार्थ, स्नान, शौच हम सब को ।

नोकचोक, मु॰ सैकेतों से बातें

करना, इशारों से बातें करना।

नोकझोक, मु० खैंचाखैंची।

नोइ, नोइनी (प) डोरी, गैलो दुग्ध दुहन की, गाय के पांव बांधने की रस्सी दुहने के समय।

नौ (स) हम, दोनों का (नाव)

नौका (स) नाव, बेड़ा, तरणी द्रो०। उडुप पोत नौका पल्लव, तरनि वहित जलजान। नाम नाव चढ़ि भी उदधि, केते तरे पजान ॥१॥

नौकारूढ़ (स) नाव में चढ़ना।

नौमि (स) नमस्कार करता हूं, मैं स्तुति करता हूं प्रणाम करता हूं, नमस्कार करता हौं।

नौसादरलगाना मु० एक तरह की खार लगाना, चिढ़ाना

न्यग्रोध (स) वृक्षनाम, बट वृक्ष, बरगद।

न्यग्रोधा (स) बड़ी तामा कड़ी।

न्यस्त (स) रक्खा हुआ। [मूर्ख

न्यच्चर (स) नष्ट, परमातुर,

न्याय (स) धर्म विचार, तर्कशास्त्र। [कारी।

न्यायक (स) विचारक, न्यायन्यास (स) स्थिति, बासा, ठिकान, चिन्ह, खोज।

न्यून (स) हीन, थोड़ा, किंचित्, अल्प, ऊन, कम, गर्ह्य।

न्यूनता (स) अकुलान, छोटाई, लघुताई।

प

पक्क (स) पक्का, पोख्त, परिणत-विनाशाभिमुख, सिद्ध पकाहुआ, पकाहुआ द्रव्य।

पकापकाया मु० तयार, पका हुआ।

पक्कान्न (स) पकाया हुआ अन्न, पकवान, पकाया अन्न।

पखाउज (द) बाजा भेद, मृदङ्ग।

पखारना (द) धोना, खंगालना।

पगु [स] चरण, गोड़, पैर, पांव, लगना।

पगपटतार बाजन, मु० नाचने में पांवों से गत बजाना।

पक्कापकाया· मु॰ तयार, पका हुआ।

पङ्क· [स] कीच, पाप, कर्द्दम, काद्दो, कीचड़, मिट्टी, च-हटा, पांकी।

पंकज· पङ्करुह, (स) कमल, नलिनी। [काइन।

पंक्ति. (स) लकीर पांती, सतर,

पङ्केरुह· (स) कमल।

पङ्गु· (स) पगुहीन, अपंग वा· तीनि प्रकार पद पंगु, कर्म पगु, सुमति पंगु ॥३॥

पच्चरमारना, मु॰ खिझाना, रुताना, दुख देना, बाड़ देना, किसी का काम अड़ा देना।

पच्चीहोना, मु॰ आपस में सटना। जैसे लड़ै में, बहुत प्यार होना।

पचम्पचा· (स) दारुहल्दी।

पचि· (स) पका कै. ऐंठि कै, पच्ची काम से। [कीटा।

पचुशाक (स) गोल का शाक

पंच· (स) पांच।

पञ्चकवलि· (स) पञ्चग्रास।

पञ्चकोल· (स) पीपल, पीपला· मूल, चाभ, चीता, सोंठ पांचो एक कोल अर्थात् आठ २ मासे।

पञ्चकोश· [स] अन्नमय, प्राण· मय, मनोमय, ज्ञानमय. आनन्दमय।

पञ्चतत्त्व· [स] आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी, पंचभूत, अग्नि।

पञ्चदशनेत्र· [स] शिव, शङ्कर।

पञ्चदेवता. [स] विष्णु, शिव, देवी, गणेश, सूर्य्य ॥

पछाड़खाना, मु॰ सिर के बाल गिरना।

पंचत्व (स) मरण। [शादि।

पञ्चधातु· (स) पांचतत्त्व आका·

पञ्चपल्लव· (स) बरगद, गूलर, पीपर, पाकर, पलास पीपर इन्हीं का छाल।

पञ्चवटी· (स) छल विशेष पञ्च-देवताशापवशी, विष्णु,

शिव, देवी, गणेश, सूर्य्य, इति पञ्च द्वय ।

पञ्चवल्कल: (स) बरगद, गूलर, पीपर, पांकर, पलास, पीपर इन पांचों का छाल ।

पञ्चविषय: (स) शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध । [संज्ञा ।

पञ्चमुख. (स) शिव, सिंह, पशु

पञ्चमूललघु (स) दीवरंवंथ, चकरंवंश, कनभांटा, रेंगनी, हरचीकार, इन पांचों का समभाग ।

पञ्चमूलबृहत्. (स) बेल, गम्भार, पांडर, गनिआर, सोनपत्ता, इन पांचों का जड़ समभाग ।

पञ्चबाण: [स] कामदेव ।

पञ्चशब्द: (स) पांचबाजा नगारादि तत० ॥ १ ॥ कही तार लगा बाजा तानपूरा आदि कही मंजीरा, झांझ आदि ०॥२॥ आनन्द ०॥३॥ कही ढोल, नगारा, मृदंग सहनाई, नरसिंघा आदि ३ ताल० ॥४॥ कही करताल और छोटी झांझ लगो काष्ट आदि० ॥४॥ सिकिया ० ॥५॥ जो घाली जल भरासी की सी बजत ५ ।

पञ्चशर: (स) कामदेव संज्ञा, अनङ्ग संज्ञा ।

पञ्चशर: विशेषण (स) उन्माद, न, तापन, शोषण, स्तम्भन संमोहन ॥ ५ ॥

पञ्चशर: पञ्चानन. (स) शिव संज्ञा, सिंह पशु संज्ञा ।

पञ्चक्षीरी: (स) बरगद, गूलर, पीपर, पांकर, परास, पीपर ।

पञ्चाङ्गुल: (स) सुपेदरेंड़ ।

पञ्चामृत: (स) दुग्धादि पांच सामग्री । [पसली, ठठरी ।

पञ्जर: (स) पींजरा, पांजर,

पक्ष (स) अर्द्धमास, विरोध, बल, सहाय, मित्रपार्श्व, गृह पंख । [द्वारो ।

पक्षता (स) सहायता, तरफ़दारी ।

पक्षपात: (स) पक्ष, रक्षा, मित्र·

ता, सजायता तरफदारी अन्याय।

पक्षिन (स) पक्षी, बाण, बिहंगम, पखेरू, उड़नेवाले जानवर।

पट• [स प] वस्त्र, पत्ता, थप्पा, उलटा, मुखपोंछा, चद्दना, पटीक, पट्टा।

पटच्चर• [स] पतंग।

पटतर• [प• स] उपमा, मसल्ल उत्तम, बाधक, बरोबर।

पटल• [स] समूह, ढपना, घन, पंक्ति। [धारी, मण्डली।

पटली• [स] पंगति, पङ्क्ति,

पटह• (स) नगारा, ढोल।

पटहता• [स] ढोलकपन।

पट्टिका पट्टी [स] पयठातीलोध

पटीर• (स) चन्दन, गन्धसार, दो• गंधसार त्रिखंड हरि मलयजु महि पाटीर। चंदन कोउ धनु धर कर, मलया बासी भीर ॥१॥

पुनः माधा सों चंदन नाम। छंदपृथ्वी। ललाट पत्रिकं तथाभाल गोधमाथा धनं। सुवेषतिलकं हरी थोखंडं हिमचंदनं। पटीर अंगराग सौ गंधेसार विलेपनं। मलेज पुनिसेवितं सभालं परसाधनं। दो•। पट-नामानि ललाटकी, दकदृश चंदन बंद। जगन सगन धुगपुमि कला, तेरह पृथ्वी छंद ॥१॥

पतङ्ग• [स] पाखी, सूर्य।

पथ• [स] रास्ता।

पथ्य. [स] हित।

पथकंज [स] चरणकमल।

पटु• [स] प्रवीण, पण्डित, निपुण, समर्थ, चतुर सुन्दर, तीक्ष्ण, वज्र, आरोग्य, कपाट, केवार, दोहा ॥ पटु तीछन पटु वज्र कहि, पटु आरोग्य कहंत। पटु प्रवीन सोई जगत, भजे जो दकामनिवंत ॥१॥

पटुक• [स] परवल।

पटुकरणी• (वि• प्राणिभिः) कुशल है इन्द्री जिन की

पटुपर्णी [स] चोका।

पटुपालकी [स] नवीनपालकी, सुन्दर जड़ाऊ पालकी।

पटकनखाना, मु० पछाड़ खाना, नीचे गिरना।

पटोर [प] रेशमी वस्त्र, रेशम तागा।

पटोल [स] परवल।

पट्टिका [स] रजत, रूपा।

पड़ रहना, पड़े रहना मु० निवास रहना, सो रहना, लेट रहना।

पठ, पठन [स] पठना।

पढ़ागुणा, पढ़ालिखा मु० पढ़ा हुआ, पण्डित, प्रवीन, निपुण।

पण [स, प] व्यवहार, स्तुति, प्रतिज्ञा, होड़, बीसगण्डा २० कौड़ी, अंगीकार, वयस, अवस्था, संख्या विशेष लक्षते ऊर्द्ध, क्रय विक्रय, दाम परिमाण मूल्य

पणव [स] ढोलबाजा।

पणि. [स] व्यवहार, स्तुति।

पण्डित [स] सत् असत् विवेकी, निपुण, प्रवीण, चतुर, विद्वान, सरदार, सरगना, शास्त्रज्ञ, यथार्थज्ञाता, विद्वान। [अर्थात् वेश्या।

पण्यस्त्री (स) मोल की स्त्री

पण्यवीथी. [स] बाजार, दूकान।

पत. [स] पक्षी, खग, सुख्याति, स्वामी, बड़ाई, प्रावसी।

पतङ्ग. पतङ्गा (स.द्र) सूर्य्य पक्षी अग्नि, रक्तादिवर्ण, फतिंग, गुड्डी, गेन्द, काया, क्षुद्र-जीव, तम्बूरा बाजा दो०। तरनि पतंग पतंग खग, पावक बहुरि पतंग॥ सब जग रंग पतंग को, हरी एकै नव रंग॥१॥

पतन [स] अधोगमन, गिरना।

पतत्रि [स] पक्षी, खग।

पतन्ति [स] गिरत हैं, सब परत हैं बहु वचन।

पताका (स) ध्वजा भेद की लघु दण्ड फहरात, केतन सोगाड़, निन्ह, झंडी।

पति• [स] राजा, पुरुष, स्वामी, भर्त्ता । प्रभु, प्रतिष्ठा, खसम, अधि• पति, खाविंद, मालिक। छंद शुभ करन• ॥ कांत कामी दयित प्रीतम लभ पती इष्ट कामुक प्रभु प्रेय स्वामी रमन ॥ नाथ वर अग्रपती पीय धवबिट गुहे कान दे कान्ह सुनि लेहु शंकटहरन ॥ प्राण अब प्रेम दुख देखि दीजै दरस बात स्तुति सत्य करु नाम करुणा करन ॥ विकल पति कीन्ह कुम• मेषुश्रंत: करन मत्तचालीश पद छंद यह शुभकरन १। दोहा ॥ गोपबधुनि दुख देखि पति, बिहंसत नन्दकुमार ॥ लसत पोट ते प्रगट भे, जनु शशि जलद बिदार ।.२।

पतिबंचक• [स] पति को ठगे• वाली स्त्री, पति ठगनी।

पतिबंचकनारि• [स] पति के ठगनेवाली, चौ• । सो• चिय पुनि पतिबंचक नारी। कुटिल कलह प्रिय इच्छा• चारी ॥ अर्थात् पुनि पति के ठगनेवाली और कुटिल कलह प्यारी स्वतंत्रानारी सोचनीय है अब नीचे को चौपाईन में चारो आश्रम के धर्म में सोचनीय कहत हैं परंतु इहां प्रसंग विरुद्ध जान न लिखं मानस राम चरित्र मे देखना।

पत्ता होना मु• भागजाना, चंपत होना।

पतित (स) भ्रष्ट, नष्ट, दुष्ट गिर परा, गिरा हुआ, पापी, धर्म का त्याग करनेवाला।

पतिदेव• (स) } पतिदेवता
पतिदेवता• } जानो,

अर्थात् पतिव्रता स्त्री, चौ• पतिदेवता करम मन बानी। अर्थात् पति है देवता

जाको कर्म मन बानी ते ।

पतिनिहिं. (द) पत्नी को ।

पतिव्रत. [स] सतीपना, सुशीलता ।

पतिव्रता. [स] कुलवन्तीस्त्री, सती, पति के अनुकूल, पति की सेवा करनेवाली, धर्म में रहनेवाली स्त्री ।

पतंग. [स] सूर्य्य, चन्द, जीव, फतिंगा, गेंद, आकरंग ।

पतंजलि. [स] मुनिविशेष, योगशास्त्र तथा महाभाष्य का कर्त्ता ऋषि । [कं लोक

पतिलोक. [स] हिमाचल, पुरुष

पतिवती. (स) सुहागिन ।

पतोह. (प) पुत्रवधू, पुतोहू, पुत्रवहू ।

पत्तल. [स] पथ, राजमार्ग, सड़क, रास्ता । [प्रिया ।

पत्नी. [स] स्त्री, कान्ता, प्यारी,

पत्तूर. [स] पतंग ।

पत्तन. [स] नगर, शहर गांव

पत्र. [स पत्ती, पत्ता, कागज, सवारी, वाहन, शर, रथ, चित्त, पंख, चिट्ठी । दो० ।

पत्र पात पल्लव परण, दल छद छदन पलाश । जाय कुटि रघुपति बसे, पंचवटी सुखरासि ॥ १ ॥ पत्र पर्ण सो पत्ररथ, वाहन पत्र सु-चित्त । पंख पत्र बिधि नहिं दियो उड़ि नहिं मिलती मित्त ॥२॥ पत्र परत लख परहि छित, देखत जब तब पात । सुध आगम भ्रम चौंकि पिय, उठि उठि उतली जात ॥ ३ ॥

पत्र. पत्रज. पत्रक. [स] पत्ता, तेजपात ।

पत्रघा. [स] तालीसपत्र ।

पत्रलाक. [स] तवकीहर्त्ताल ।

पत्ररथ. [स] पक्षी, परिन्द ।

पत्रशाक. [स] पत्ते की तरकारी ।

पत्राङ्गुला. (स) सुकपक्षाकी ।

पत्री. [स] वृक्ष, पक्षी, कमल, बाण, दोहा । पत्री तरु पत्री कमल, पत्री बहुरि विहंग । पत्री

भरकर चित्र जिमि, दून से बढ़ श्रीरंग ॥ १ ॥

पत्रोर्ण. (स) सोनपत्ता।

पथ. पंथ (स, द) मार्ग, बाट, डगर, पंड़ा, जाल, रास्ता, राह।

पथगतिकुशल. [द] पथ के ज्ञान में चतुर।

पथादिपञ्च. [स] शैवा, सौरा, गाणेशा. वैष्णवा, शाक्ति का. इति पंच पादि पथ।

पथि. [द] बटोही।

पथिक. (स) राहगीर, राही, बटोही, यात्री, मुसाफ़िर, पथ्य, गुनकारी।

पथिन्. (स) मार्ग।

पथोज. [स] कमल, पङ्कज।

पथोणा. (स) लक्ष्मी, दो०। श्री पद्मा पद्मा लया, कमला चपला होय। सिंधुसुता मां इंदिरा, विष्णुवल्लभा सोय॥ १॥ जाको नैन कटाक्ष छवि, रही सकल जग छाय। सो लक्ष्मी वृषभानु सुत, आपहि प्रगटी आय॥ २॥ पुन: छंद दोहा। कमला पद्मा पद्मालया, लोक मात हरि प्रीय। मा रमा इंदिरा गोमती, लक्ष्मी सद्गा श्रीय॥ १॥

पत्थर छातीपर रखना, मु० सबर करना, संतोष करना चुप हो रहना, बस नहीं चलना।

पत्थर पसीजना, मु० पिघलना, नर्म होना, कोमल चित्त होना, नर्मदिल होना, कठिन काम सहज होना।

पत्थर पानी हो जाना, मु० कोमल चित्त होना, नर्म-दिल होना।

पत्थर सा फेंक मारना, मु० किसी को बात को बिन समझे उत्तर देना, कड़ी बात कहना।

पत्थर से सिर फोड़ना, मु० मूर्ख को शिक्षा देना।

पत्थर होना, मु० भारी होना,

अचल होना, अटल होना, चुप खड़ा रहना, निर्दई होना, कठोर चित्त होना।

पथ्य· [स] रोगी का अहार, हितकारी। [हर्रे।

पथ्या· [स] हरड़ेहड़, चिरकी,

पद·[स] चरण, स्थान, महिमा, मुक्ति, स्वरूप, अधिकार, पांव, चिन्ह, श्लोकका चरण, दो॰। चरन चलन गतिमंद पुनि, अंघ्रि पाद्‌|पद पाय। पद बंदन करि सहचरी, ठाढ़ी सनमुख आय॥१॥

पदक· (स) हीरामणि, कण्ठा भूषण गणती॥ श्लोक॥ पदक: कण्ठ भूषणे गण्याने च निगद्यते इत्यमर:।

पदचर· (स) प्यादा, पैदल।

पदचार· (स) पशु, गौ आदि।

पदचारी· (स) प्यादा, पैदल।

पदज· (स) अङ्गुली चरण की, पांव की अंगुरी। [जूता।

पदत्राण· (स) पनही, खड़ांउ,

पदपीठ, पदपीठा· (स·द) चौकी, खड़ांउ, पांव रखने की चौकी।

पद्‌विहार·(स)मार्ग, बाट, डगर।

पद्‌वी· (स) मार्ग, अधिकार।

पदाति· स· दास, प्यादा, पैदल, सेना। [पद में भी।

पदार्पण·(स) पदतें निश्चय के.

पदार्थ· (स) वस्तु, सब वस्तु मात्र, शब्दार्थ।

पद्रिक· (स) मोहनमाला भेद, जामें मुक्ता, हीरा, पद्मराग, पिरोजा ए तीनि मणि जड़ित होय, वा जामें चौकोण छिद्र जाके मणि जड़ित होय, वा कण्ठा भूषण नाम, वा जड़ाऊ चौकी, घोड़ा, पैदल, पथिक, कोमलचरण, हीरा।

पद्रिकहार· (स) पनही, या खड़ाऊं. हीरा का हार भौ॰ उर श्री वत्स रुचिर बनमाला। पद्रिकार भूषन मनि जाला॥ अर्थात उनके उर में श्रीवत्सचिन्ह अर्थात् लक्ष्मी वश्यकरण है और प्रकाशमान बनमाला है और पद्रिक अर्थात हीरों का हार है और मणि

भूषणों का जाल अर्थात् समूह है।

पदुम· (प·) कमल, पङ्कज। छन्द नरेन्द्र॥ "पद्म नलिन अरविन्द तामरस कंज कमल अंभोरुह॥ बिष प्रसून कल्हार कुशेसे सहस्रपत्र सरसीरुह॥ इन्दीवर जलज कोकनद पुष्कर पुनि पंकज पंकेरुह॥ सारस औ राजीव महोत्पल औ अर दंह सरोरुह॥१॥ कुबले उत्पल शत दल वारिज रक्त बरन अंभोजं॥ पुंडरीक कैरव कुमोद युत स्वेत स्वरूप सरोजं॥ इन्दीवर नीलां बुजयुत नीरज नील कहा मैं॥ अत्यासिंसतनाम छंद कल वसु बिंसत कविगामै दोहा। नलीनी बिसनी पद्मनी, कौमुदनी यह नाम॥ नाल मृणाल मृना लका बिशंचतुर्यंह नाम॥१॥ कौशुभ मधुकिंजल्करज, रेणु पाशु मकरंद। धूरि पराग समेत नव, सुखद सौरभि मंद॥२॥ जलनामानि जकार पुनि, नाम तामरस होय। ता पर ज्योनी शब्द ते, नाम पितामह सोय॥३॥" दयाराम का बनाया जो अनेकार्थ है उस में लिखा है। दो०। जलज रूप कुंडल श्रवण, कंठ जलज की माला जलज बदन बाजत जलज जलज कथे नंद लाल॥१॥

पद्म· (स) कमल १ गुग्गुल २ नाम एक निधि का, कुबेर की ८ निधियों में से।

पद्मक (स) कमल १ पद्मकाठ।

पद्मककंटी· (स) कमलगट्टा।

पद्मगन्ध· (स) पदुमकाठ।

पद्मचारिणी· (स) स्थलकमल।

पद्मपत्र· [स] श्यामाहल्दी पुष्करमूल।

पद्मबीजाभ· [स] मखाना।

पद्मराग· [स] मणि विशेष, रक्त वर्ण, लालमणि, मानिक रत्न।

पद्मबीज· [स) कमलगट्टा।

पद्मा, पद्मालया· (स) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, कमलिनी; कमलस्थल।

पद्माट· (स) चक्रवंड।

पद्माह्वा· (स) पदुमकाठ।

पद्माक्ष· (स) कमलगट्टा।

पद्मिनी· (स) कमलपत्राँग, कमलिनी।

पद्मी· (स) हाथी, गज।

पन· [प] वयस, अवस्था, होड़, प्रण, बोधक, प्रतिज्ञा।

पनच· (स) प्रत्यंचा, रोंदा प्रसिद्ध, चिल्ला, धनुष का गुण।

पनव· (स) ढोल।

पनस· (स) कटहर, कटहलफल, केवल फले अरु फूल फल जाके एक ही, वृक्ष विशेष केवल फले अरु फूले नहिं, बानर पशु विशेष।

पनही· [प] जूती, जोड़ा।

पनारा· पनारा, (प) झरना, मोरी, पनाली।

पनि· [स] गति, व्यवहार, चलन।

पनिघट· [प] पानी भरे का घाट। [गत।

पन्थ· [स] मार्ग, पद्धती,

पन्था· [स] मार्ग, बाट, पैंड़ा पथ।

पन्थी· (स) पथी, समुद्र, बाट, राहु। दो०। पंथी हिरि-नी को कहत, पंथी माया जोव॥ पंथी बहुरी ईश्वरी, जिहि सब छित बस कीव॥

पन्नग· (स) सर्प, नाग, सांप, दो०। उरग नाग पंनग भुजग, जिह्मग भोगी सर्प। चक्षुश्रवा हरि अही सप, काकोदर गर सर्प॥ १॥ व्याली विषधर फनिधनी, बिलसौं पुनि कहि व्याल चक्री दरवी गूढ़पा, लेलिह केवल काल २। कालो चहि गंजन सकै, मैं राखो गहि बांह। नंदनंदन प्रिय प्रेम सब, परतछगी दह मांह॥ २॥

पन्नगारि· (स) गरुड़।

पपीलि· पपीलिका (स) च्यूंटी,

जीव, मधुर, अति नीको।

पपीहा· (प) पपीहा ।

पप्ता· (स) पिता, बाप।

पम्पा· (स) पुरीविशेष, शान्ति स्थान, सर विशेष सरवर मध्य।

पय· पै (स· द·) अर्थ, दूषण, घोड़ा, बैल आदि को, अन्न, पानी, दुग्ध, दूध, पयस्विनी नदी, मंदाकिनि चौ० रघुवर कहेउ लखन भल घाटू। करहु कतहुं अब ठाहर ठाटू। लखन दीख पय उतर करारा। चहुं-दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा॥ अर्थात् श्री रघुनाथ जी कहें कि हे लखन यह घाट भला है अब कहूं ठहरने का ठाट करो। तब पयस्विनी के उत्तर ओर लखन जी ने करारा देखि तहां चहूंदिसि धनुष सम नारा फिरा है।

पयतीरा·(द) पयस्विनी के समीप जो चित्रकूट मध्य में है।

पयंद· (स) बादर, घन, स्तन।

पय:पसादी· (स) मिश्री।

पयस्· [स] पानी, पय, दुग्ध, जल।

पयस्विनी· (स) छीरकांकोली, इस के अभाव में असगन्ध १ जीवन्ती २ चित्रकूट में एक नदी, मंदाकिनी नदी, दूधारी गौ, धेनु,।

पयादि· (फ) पैदल, बिनुवाहन। [कुच।

पयान· पयाना· (प· द) यात्रा,

पयोद· (स) बादल, मेघ।

पयोधर· (स) स्तन, मेघ, अर्क, शैल, द्रुम, बादल, पयोधर, भूधर। "दोहा। मेघ अर्क कुच शैल द्रुम, राज पयोधर आहि। भूधर गिरि भूधर नृपति, भूधर आदि वराह॥१॥" स्त्री की चूंची, नारियल, गन्ना, सुगन्धित घास, संस्कृत में पयस पानी वा दूध को कहते

हैं धर रखने वाला, छ रखना सेसना है। छाँद का नाम। दोहा। उरज पयोधर कुच कहिय, अस्तन उर छवि ऐन। कांचन संपुट देवजनु, पूज पुजाई मैन॥ १॥

पयोधि, पयोनिधि पयनिधि· (स) क्षीरसागर, जलधि, समुद्र।

पर· (स) और, परे, उपरान्त, अन्त, गर, पराया, तत्पर, शिरोमणि। [निन्दा।

परअपवाद· (स) पराये की

परई· (द) पड़ना।

परं· (स) श्रेष्ठ, स्वर्ग।

पर· परम्· [स] पीछे।

परष· (स) गाठी, ग्रन्थ।

परचना· (स) परकना, हिसका।

परछिद्र· (स) दूसरे छिद्र, पराये की मर्म्म की बात, पराये का दोष।

परजरा· (स) अतिजरा।

परतन्त्र· (स) पराधीन, परवश।

परतन्त्री· (स) पराधीनो, परवशो।

परत्र· (स) निश्चय, परलोक में, अन्यत्र, और जगह।

परदक्षिणा· (स) दक्षिनावर्त घुसना।

परदार· (स) पराई स्त्री।

परदुम्न· (स) कृष्णपुत्र।

परदेश· (स) बिदेश, अन्यदेश।

परन्तु· (स) किन्तु, पर, वा, और

परधाना· (द) प्रधान, मुख्य, चौधरी।

परना· (द) पूर्ण, पत्ता।

परब· (स) पूर्णमादि, गोटी, उत्सव, अनध्याय, पर्व्व, गांठ।

प्रकृति· (स) स्वभाव। [किला।

परभृत· (स) कोईल पच्छी, को-

परम· (स) बड़े, उत्तम, अति, उत्कृष्ट, ऊंचा, श्रेष्ठ, प्रधान बृहत्।

परमरम्य· (स) अति सुंदर।

परमगति· (न) मोक्ष, उत्कृष्टता।

परमसुजान· (स) सज्जन, प्रवीण।

परमा· (स) परमशोभा, अधिका, बहुत शोभा ।

परमाकान्ति· (स) अधिका, शोभा,

परमाकुल (स) अति विकल,

परमागति· (स) स्वर्गा का सुख

परमाणु· (स) अत्यन्त सूक्ष्मवस्तु, निमेष, ३० रेणु संख्या वाचक, पृथ्वी, जल, तेज, वायु के अति सूक्ष्म भाग जिन का फिर भाग न हो सके, परेह ।

परमान· (द) यथार्थ, प्रत्यक्ष, आदिप्रमाण ।

परमार्थ· (स) तत्व बस्तु, उत्कृष्ट विषय, उत्तमार्थ, श्रेष्ठार्थ. परोपकार, सत्य, यथार्थ उत्तमकर्म । [ब्रह्म, ईश्वर ।

परमात्मन· (स) परमात्मा, पर-

परमातप, (स) बड़ा घाम ।

परमाधर. (स) शोभा के धरने वाले ।

परमित· (स) अवधि, मर्य्यादा, सीमा, हद ।

परमीश·(स) परईश, परमेश्वर,

परमेश्वर (स) जगतकर्त्ता, पर-मात्मा ।

परशु· (स) फरसा हथियार, कुल्हाड़ी, टांगी, आयुध विशेष ।

परम्पद· (स) मोक्ष ।

परसुधर (द) परसुराम ।

परशुराम. (स) जमदग्नि ऋषि के पुत्र, मुनि विशेष जाके यमदग्नि मुनि पितामह अरुयामदग्न मुनि पिता अरु रेणु का माता रही ।

परलोक· (स) स्वर्गादि ।

परस· (प) कुआवट, स्पर्श छूत, छूना , पारस, पत्थर,

परस्पर (स) अन्योन्य, आपस में ।

परश्मि (स) } किरण, चमक, (प) } छूइ के

परा· (स) पूर्व्वकाल, पीछे, पर लाचकोनो ।

पराई· (प) भागना, अगैर, दूसरे, भागा, दूसरे का, पराना, पलायन,

पराक्रम (स) बल, उद्योग, समर्थ, ताकत ।

पराग· } (स·द) पुष्पधूरी, धूली, परागा } कमल का रज, फूल

को भूलि । [त ।

पराङ्मुख (स) विमुख, लज्जि-

पराजय (स) अजीत, हारि, पराभव, अजय, हार ।

पराधीन, (स) पराए बस ।

पराधीन वृत्तिः, (वि॰ अन्यः अथवा अहम्) पराए बस है आजीविका जिस की ।

पर अपवाद (ह) पराय की निन्दा ।

पराजित (ह) हारा हुआ ।

पराना (प) भागना, पलायन ।

परापर (स) फालसा ।

परवर (स) ब्रह्मादि, मनुष्यादि, पर अपर ।

पराभक्ति (स) स्वामीभाव, सेवकभाव का अभाव, स्वामी के स्वरूपमें अपनेको चित्रवत् विसुध होना जैसे सुतीक्ष्ण मुनि की दशा भई ।

पराभव (स) प्रलय, निरादर, पराजय, हार, अनादर, तिरस्कार, विनाश ।

परामर्श (स) प्रश्न, पूछ, युक्ति, विचार ।

परायग (स) पक्षी, पर्वत ।

परायण (स) तत्पर, अनुराग, लीन, मग्न, तन्मय हो जाना, अत्यन्त आसक्त ।

पराशर (स) व्यासजी के पिता ।

परार्थ (स) पर के लिये, अन्य निमित्त । [तर, कपोत ।

परावत (स) परेवापक्षी, कबू-

परावन (स) भगैर, उद्विग्न ।

परास्त (स) निरस्त, पराजित, हाराहुआ ।

परि (स) इति उपसर्ग, परिभव, पराभाव, अनादर, अति, चारोंओर, आसपास ।

परिकर परिकार, (स) फांद, कमर, काछ, पटुका, पर्यंक, परिवार, आरंभ, समूह, विवेक, सहकारी, कटिबद्ध । [कहलाता है ।

परिकीर्त्तित, [स] कहागया है,

परिक्रमा (स) प्रदक्षिण, फेरी ।

परिखमा (स) झिल्ली ।

परिगत (स) घेराहुआ ।

परिघ· (स) ब्योड़ा, हारहुरका. हारठाठ, बेड़ा, लाठी, छंद—हर दहेउ कहिउ बि धरहु धाए बिकट भटरज-नीचरा। सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा॥ प्रभु कीन्ह धनुष टंकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा। भए बधिर व्याकुल जातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा॥ अर्थात् जैसे सुन्दर राज-कुमार हैं कि क्रोध से भरे धर धरहु ऐसी आज्ञा करता। तोमर, बरछा, शक्ति, सांग, शूल जाको पट्टिस सो फल बरछी आदि की गोल वा पहलदार होत, परिघ लाठी॥ हार बेलाठी, अस्त्रभेद। गदाकार। दोहा॥ परिघ बज्र परवत परिघ, घर सर सर्व बिशेष॥ परिघ बान जल थल नदी, परिघ सूर ससि शेष॥ १॥

परिच, परिचित· (स) परिक, हिसिक, ज्ञात, पहिचान।

परिचय· (स) जान पहचान, पहिचान, प्रीति।

परिक्षित· परीक्षित, (स) अर्जुन का पोता, अभिमन्यु का पुत्र, अभिमन्यु का बेटा।

परिचर्य्या· परिचरणा, परिचर्या } (स·द) सेवा, उपासना, शुश्रूषा, पूजा। [बहार।

परिचार· (स) सेवा चलन, व्य

परिचारक· (स) टहलू, चाकर, दास, चेला, सेवक, नौकर।

परिचारिका· (स) दासी, सेवका, गान कारिका, लौंडी।

परिचितभ्रूलताविभ्रमाणाम्, (वि० कौतूहलानाम्) लागी है भ्रूकुटियों को मरोड़ जिन्होंने।

परिच्छन्न· (स) आवर्ण, छाजित, घेरे, ढांपा।

परिच्छिन्न· (स) अविवेककृत, परिमित, सीमायुक्त, हेत, ज्ञात, ५ परिपूर्ण, द्विधारूप,

अध्यापक, घरागया।

परिजन (स) परिवार, कुटुम्ब, प्रजा।

परिणत (स) झुका हुआ, पक्का, पूरा, दूसरा रूप पाया हुआ।

परिणति (स) पक्कापन।

परिणमयितृ (स झुकने वाला, पकानेवाला।

परिणय (स) विवाह यज्ञ।

परिणाम (स) अवस्थान्तर प्राप्ति, फल, भिन्नभाव, समाप्ति, अन्त, आखिर, भावी, अवस्था, अंतफल, विकार, उत्तरकाल, अंजाम।

परिणाह (स) दीर्घ, लम्बा।

परितः (स) चतुर्दिक्, चारों ओर, आच्छादित।

परिताप (स) दुःख, पीड़ा, शोक, कांप, संताप, तपन, गरमी, खिन्नता।

परितापी (स) कोपी, शोकी, क्लेशी, क्लेश दाता, दुःख देनेवाला।

परितोष (स) सन्तोष, प्रसन्नता।

परिकर (स) पटुका।

परित्राता (स) रक्षक, पालक।

परित्राण (स रक्षा, बचाना।

परिदग्ध (स) जला हुआ।

परिदेवन (स विलाप, कल्पना

परिधन परिदधि, परिधि, (स पहिरे, ओढ़े वस्त्र, घेर, मण्डल।

परिधान, परिधेय, (स) पहिरे का वस्त्र, पहिरना, पहिरना, पहिरावा। [पकना।

परिपाक (स) समाप्ति, अन्त, परिपाका (स) अंत का फल।

परिपाटी, (स) क्रम, अनुक्रम रीति परम्परा की, बस्ता।

परिपूर्ण (स) सम्पूर्ण, भरा, समाप्त।

परिपेलव (स) केंवटीमोथा।

परिवेदन (स) पीड़ा, दुःख।

परिव्याध [स] कर्णिकार जलवेंत।

परिभव (स) तिरस्कार।

परिमल· (स)सुगन्ध ।

परिलघु· (स) बहुत थोड़ा ।

परिमाण· (स) तौल, माप, नाप, संख्या, परिसर, अन्दाज ।

परिमित. (स) रीति से, थोड़ा प्रमाण सहित । [फल ।

परिणाम· (स) अवस्था, अंत-

परिवार· [प] कुटुम्ब, परिजन, घराना ।

परिव्राज. [स] } सन्यासी, भि
परिव्राजक· } क्षुक, यति ।

परिग्रह· [स] धारण, ग्रहण ।

परिश्रम· (स) क्लेश, कष्ट, दुःख मेहनत ।

परिसर· (स) बढ़ाव, उन्नति ।

परिशिष्ट· [स] अवशिष्ट , अव शेष, बाकी ।

परिहर· [स] त्याग, अलग ।

परिहरत्· (स)हरता हुआ, दूर करता हुआ ।

परिहरि· [प] छोड़ि के, त्यागि के, परिहरण ।

परिहार· [स] हार, त्याग, अवज्ञा, अपमान ।

परिहास· [स] निन्दा व्यंग वचन, ठठा, हंसी, व्यंग वचन की साथ निन्दा, ठट्ठा, मज़ाक़ ।

परीक्षा· (स) पर्दाक्षिना दीओ न ।

परीक्षक· [स] परीक्षा लेनेवाला ।

परीक्षा· (स) देखाई देना, पा- कमाएश, आंखो दृष्टिदान,

परुष· (स) कठोर, कुवच । गाली, निरादर ।

परुषाक· पुरुष· (स) फालसा ।

परुषवचन· (स) कठोरवचन ।

परे· (स) उसपार, परलोकविधि ।

परेश· (स) ईश्वर, नारायण, सर्वं ईश, परमेश्वर ।

परंतु (स) लेकन, उपरान्त ।

परोक्ष· (स) अगोचर, गुप्त, वनवासी, अप्रत्यक्ष, गायब ।

परोपकार· (स) परायाउपकार, दूसरों के लिये भलाई करना ।

पर्करा· (स) } पांडर वृक्ष ।
पर्करी· } [नाम ।

पर्कटी· (स) पक्षनाम, वट

पर्ण· (स) पत्ता, तांबूल, पत्ती,

पलासा, पंख पच्छी का, पलाश, पत्ता, पान।
पर्णनिकेत (स) पत्ता का घर।
पर्णकार (स) तंबोली, तथा पतल बनानेवाला, बारी।
पर्णमृग (स) बानर, गिलहरी आदि।
पर्णशाला, (स) पत्रकुटी, पत्तों का भवन।
पर्णाटक (स) मोरिभारी।
पर्पट (स)
पर्पटक } धनपापर।
पर्पटा (स)
पर्पटिका, } पापर।
पर्पटी. (स) रोटी १ पपरी।
पर्व (स) तिहवार, उत्सव, अनध्याय, पोर, गांठ, योग पुण्य काल के योग।
पर्यटन [स] भ्रमण, घूमना।
पर्यङ्क [स] पलंग, खाट।
पर्वंकट (स) अगारफ्च।
पर्यङ्कपादिका (स) सुपरासीम।
पर्यनी [स] दारु हलदी।
पर्यन्त [स] सीमा, अन्त, तक लग, परला सिरा, अवधि समाप्ति, वहां तक।

पल [स प] मांस, मास, उन्मान घड़ी का साठवां अंश, ६० निमिष, पलक, थोड़ा। १ तरह का तोला॥ पल मांस को कहत कवि, पल उन्मान पल सोय॥ पलक पलक हरि बिचपरे गोपिन युग सम होय॥ १॥
पलटना [प] फिरना, उलटना, बदलना।
पलल [स] मांस, तिल।
पलाण्डु (स) पियाज।
पलायन [स] भगैर, भागने, भागना, भय से स्थान छोड़ भागना।
पलुहइ [प] प्रफुल्लित
पलङ्कषा [स] लाही, गुग्गुल, हरपिकार।
पलास पलाश (स) परास, ढाक का वृक्ष। होरा। बात पोथ है ब्रह्मद्रुम, किंशुक पर्ण पलास॥ कहु देखि तुम राधिका, जाको मोहन

हास ॥ १ ॥ हरित को वमपलास कहि, राछस बहुरि पलास। दुर्मेद शैल पलास कहि, बहुरो कठिन पलास ॥२॥

पलासी (स) सुगन्ध वाला पछी। एक नगर का नाम जो बंगाल में है।

पलोटत (द) धीरे से पग दाबना, पलोटना।

पलोटना (द) धीरे दाबना।

पल्लव (स) पत्र, शाखा, अंकुर, मुकुल, नयापत्ता, पत्ता, कोंपल।

पल्लवित (स) फलफुलित, रोमांचित, नये पत्ते के साथ, रोमांचित।

पर्व्वत. [स] पहाड़, छंद मत्त गयंद। भूधर पूजन देखि सुराधिप मेघ घने कर कोपि पठायो। कुंजर शुंड समान परे जल विद्युति घोम भयानक छायो। पाहन वृष्टि पपार भई हरि गोकाविलोकि गिरीन उठायो। सप्त भगान सकर्ण दिये शुभ सुमत्त गयंद कहायो ॥१॥ पुन: छंद चौबोला। नग भूधर ग्रावो पर्वत धर कूट अहार्य भव शिखरी। अद्रि अचल स्रुत गोत्र इषरा नग शैल शिलोचै अचल गिरि। सानुमान त्रै ककुत दरी स्रुत शृङ्गी जंबमहीध्र हरी। नाम पचीस छंद चौबोला पांडुग चौदह कला धरी ॥१॥ भूनामनि पर धर धरे, प्रगटे भूधर नाम। पुनि भूधर पर धर धरे, नाम होय घनस्याम २

पर्याय (स) अनुक्रम, प्रकार, अवसर, निर्माण, समानार्थ, बोधक शब्द।

पर्युषित (स) बासी।

पलभरमें सु० तुरंत, उसीदम, पलमारते। [में।

पलमारते सु० तुरंत, पल भर

पलटालेना. सु. पीछा ले लेना, लौटा लेना, बैर लेना, बदलालेना, बैर साधना।

पवन. [स] वायु, बयार, बतास, ढोल बाया, बाह, अल, हवा। दो० ॥ स्वसन सदागति अनिल पुनि, मारुत अरु जगप्रान। पवन प्रभंजन सिखि अगिन, नभस्वान परमान ॥१॥ तुपतन परिमल परसि जब, सीतल धीर समीर। ताकहं बहु सनमान कर, परिरंभन बल बीर ॥२॥ पुनः छंद गीतका। अग, अनिल मारुत वायु पृषदश्व अमीरन नभस्वान। पगमरुत जवन समीर परिमल सदागति पवमान। हरि बात आसुगमा तरि स्वाः धनंजय जगप्रान। पुनि पवन अस्पर्शनस्व शनयुत गंध वाह बखांन। दो०। नाम पंचविंशत सकल, सहित प्रभंजन होय। घट बिंधत कालगीतका, कहत कवि सब कोय ॥१॥ दो०। काह कहां काह पवन धन, काह कहिये पुनि धाम॥ काह छित मंझार उपजे, भजे न सुंदरस्याम ॥१॥

पवनकुमार. [स] हनुमान, भीम। पवनपूत, पवनतनय।

पवमान. [स] पवन, बायु।

पवार (ह) मारणा, छोड़ना।

पवारे, पबारे [ह] डारि, छाड़े मारे, फेंके, पबारना, फेंकना

पवि, पवी. [स] कुलिश, वज्र, हीरा।

पविटाङ्की. [स] हीरामणि।

पवित्र. [स] शुद्ध, निर्मल, पापहीन, पाक, साफ।

पवित्रता. (स) शुद्धता, शुचाई।

पवित्रा. (स) यज्ञोपवीत, कुश।

पवित्री. (स) पहूंठी विशेष।

पशु. (स) जन्तु, चौपाया, चतुष्पद।

पशुपति. [स] महादेव।

पशुमार. (प) मुख बांधि कै मारना।

पशुमेहनकारिका. (स) चनसुर।

पश्चात्. (स पीछे. पछाड़ की ओर।

पश्चात्ताप. (स) संताप, शोक, पछतावा, अफ़सोस।

पश्य. (स) देख तू।

पश्यति. (स) देखता है एक।

पश्यन्ति. (स) देखते हैं सब।

पश्यामि. (स) देखता हौं, हम एक, मैं देखता हूं।

पषावज. [द] मृदंग।

पषारे. (द) प्रक्षालन, धोये, पषारना, धोना।

पषवारा. (द) पक्ष, पन्द्रहदिन।

पश्चिम. [स] प्रतिचीदिक, जिधर सूर्य अस्त होता है पीछे मगरिब। [मुनार

पश्यतोहर. [स] गठकटा,

पषाण. [स] पत्थर, शिला।

पसाउ. पसाउ. [प] कृपा, दया, प्रसन्नता, अनुग्रह, प्रसाद।

पसेव. [प] पसेना, स्वेद।

पह. [प] समीप, ओर, सवेर।

पहफटना. पौफटना, मु. भोर होना, तड़का होना, रोशनी फैलना, दिन निकलना।

पहरा देना. मु. जागता रहना, चौकस रहना, चौकी देना. रखवारी करना।

पहनाई.} [प] मिजमानी
पहुनई } मेहमानी।

पहरे में डालना. मु. हवालात में रखना, पहरए को सौंपना। [में रखना।

पहरे में पड़ना मु. हवालात

पहराव. [प] भूषणादि शृङ्गार वा वस्त्र।

पहिका. [स] पयठानी मोथ।

पहेली [द] संस्कृत में प्रहेलि अथवा का पहेली का, पर बहुत हेल वा हेड् अनादर करना। अर्थात् हटकूट, बूझबुझव्वल, गूढ़प्रश्न, श्लेष, बूझव्वल, मुकरी, फलबुझौवल। मेरी राय

से मुकरी, श्लेष, कलबुझव्वल में अंतर है। यथा पहेली—बढ़े घटे पर चन्द्र नहिं, श्यामवरण हरि नाहिं। चरण संहारे ईश नहिं, विहरै गुणि जन माहिं ॥१॥ [रबर] जो पावै तो करि अचेत। बैठत ही कांधर करि देत ॥ उठे देत सब को बहु पीरा। जाय दुखी करि बूझहु धीरा ॥२॥ [आंख] एक तमाशा देखा प्रात। नाच उलट के घोड़ा खात ॥३॥ (चना) आदि कटे मैला हो जाय। मध्य कटे वह सबै सोहाय ॥ अंत कटे थोड़ा ह्वै जाय। पण्डित ताकर नाम बताय ॥२॥ [कमल] एक चुड़ैल घर घर रहै, जाहि लखे डर लाग। हड्डी को रस चूसि कै, मुंह से उगिले आग ५ ॥ [दियासलाई] फेर फेर चितवै तेहि ओर। लाग धरम सब डारी तोर ॥ वाके बिनु सब दिशा भुलाय। मुई शोच पण्डित पछिताय ॥ ६ ॥ [कुम्बक की सूई] आगे पीछे चलैं नहिं, दुइ मूड़ा अहि होय। खाय अंगार चकोर नहिं, बिरला बूझै कोय ॥ ७ ॥ [रेलगाड़ी] और श्लेष [श्लिष् मिलना] मिलाव, संयोग, एक अलंकार जिस में एक शब्द के बहुत अर्थ होते हैं, "जैसे कीकर पाकर तार, जामन, फलसा आमला। सेव कदम कचनार, पीपल रत्ती तून तज ॥१॥" इस में बहुत से पेड़ों के नाम अर्थात् कीकर पाकर तार जामन फलसा आमिला सेव कदम कचनार पीपल रत्ती तून तज दिखाई देते हैं पर इस का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने तुझ पर कृपा की कि जिस

को तू चाहती थी सो हो आमिला, सो हे कची स्त्री अब उस के पैरों को तू सेवा कर और अब तेरे प्यारे को एक पल भर भी मत छोड़। और मुकरी वा मुकुरी मुकरना से बना है जिस का अर्थ इनकार करना, नटना, नकारना है और एक तरह का छोटा छंद जो ब्रजभाषा में बहुत आता है और उस में चार पद चौपाई की तरह होते हैं उस में पहले तीन पदों से ऐसा जाना जाता है कि बोलनेवाली स्त्री अपने प्रीतम की बात करती है पर चौथे पद में वह स्त्री अपनी सखी से पूछती है क्यों सखी सज्जन हुआ उस पर वह सखी मुकरती है और किसी दूसरी चीज़ (वस्तु) को बताती है। जैसे "बा बिन चित्त चहूंदिसि डोले। चातक ज्यों पुनि पियपिय बोले॥ भले होय आवे नहिं गेह। क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह॥" और फल-बूझौवल, एक खेल का नाम है जिस को मनकेला भी कहते हैं जैसे, मन में कोई अंक मान लो फिर उस को दूना करो और उस में दस जोड़ दो फिर उस में से पांच निकाल लो तो बाक़ी कितना रहा? इक्कीस तो वह अंक आठ है इत्यादि।

पक्षपात· [स] तरफ़दारी, ख़ातिरदारी।

पक्षिन्· (स) पखेरू।

पक्षी· (स) परवालेजन्तु, परिन्दे। दो०। द्विज सकुंत पंछी सकुन, अंडज विहग विहंग। द्विज सुपक्ष पक्ष रथ, पक्षी पतग पतंग॥१॥ नटत विहंग अनंग भरि, कोमल अंत सुजात।

तुम आगम आनंद जन, करतपरस्परबात॥ २ छंद धत्ता॥ अंडज द्विज पक्षी शकुन पतत्री खगशकुंति नभ संगमा॥ बीपची तुं· गावाजि विहंग। विष्किर विहंग विहंगमा। पुनि वयस् पत्ररथ पतग गगग पथ गवत मान औ खे· चरं॥ यह छंद सुधत्ता इकत्तिस मत्ता बिकरनाम तेइस करं॥१॥

पक्ष्मन्· (स) पलक।

पक्ष्यण्ड· (स) पक्षयों का अंडा।

पाइक. (स) पियादा, मल्ल।

पा. (फ़) पगु, चरण।

पांडुक्ष. (स) लालधान।

पांवर (द) अधम, नीचा

पांशु· (स) धूरि, धूली।

पांशुपर्य्याय (स) धनपापर

पांशुलवन (स) रेहमिट्टी।

पांहि· (प) समीप, निकट।

पाक· (स) रसोई, जीर्ण, पक्का, असुर, एक असुर का नाम। पाक (स) काला नोन १ सोचर नोन २।

पाकी (द) परिपक्क।

पाकरिपु· (स) इन्द्र, स्वर्गपति, असुरदुष्ट। चौ॰ काक स· मान पाकरिपु रीति। छली मलीन कतहुं न प्रतीती॥ अर्थात् कौवा के समान पा· कनामा राक्षस का अरि जो इन्द्र ताकी रीति है छली मलीनता औ कतहूं प्रीति नाही भाव राम भ· क्तन पर सब प्रीति करत तहंज स्वारथ देषत हैं।

पाकचार· (स) यवाचार।

पाख· (प) पक्ष, पंख, पन्द्रह १५ दिन को।

पाखंड· (स) दंभ, डिम्भ।

पागे· (प) साने, सोने, पागना।

पाञ्च· (स) संख्यावाचक, पंच दो और तीन, इन्द्र धनुष, पंच। चौ॰ सोइ बात सब बिधिहि बनाई। प्रजा पांच मत भवहु

सहाई ॥ प्रजा पांच अर्थात् पंचायत सो अब क्या बाकी रहा है जिस में तुम मेरी सहाय करोगे ॥ पुनः चौ० तुम्ह पै पांच मोर भलमानी। आयेसु आसिख देहु सुबानी ॥ अर्थात् तुम पंच पै हमार हित मानि के अर्थात् बिरोध न मानि के। पुनः चौ० जो पांचहि मत लागै नीका। करहु हरषि हिय रामहि टीका ॥ अर्थात् पांचहि पंचों की। जो तुम पंचन की यह मत सोहाय तो हृदय हर्षित करि रघुनाथ को टीका करहु। पांच सात मिल कीजे काज। बुरे भले नहीं आवे लाज ॥

पाखाली· (स) पोपल।

पाट· (स) (प) रेशम, पटुवा, सन, चौड़ाई।

पाटमहिषी· (स) पाटराणी, बिवाहीराणी।

पाटल· (स) वृक्षविशेष, गुलाब, देशतक, केवल फुलत अरु फलतनहि, पाणरि। दो० पाली पटनी फलनहा, बामा स्यामा नाम। अंबस्थ मधुलीयसे, पाटल करत प्रनाम। [वृक्ष।

पाटला· (स) लता· लाली· पांडर

पाटलावली (सं) साठी धान।

पाटलासिता (स) कठपांड़र।

पाटलि· (स) गुलाबीरङ्ग· गुलाब·।

पाटली· (स) कठपांडर वृक्ष। कठपांडर।

पाटलिपुत्र· (स) पटनानगर।

पाटीर· (स) मलय· चन्दन· मूली।

पाटे· (प) भरी दीन्ह· भरे· अरदेना, भरदिया, पाटना।

पाठीन (स) पहिना, पाठिना मच्छी। [पढ़ना।

पाठ· (स) पढन, अध्याय· सन्धा,

पाठक· (स) पढ़ानेहारा· अध्यापक· पढ़ानेवाला।

पाठन· (स) नाशक· नाश पढ़ाना, पढ़ावना।

पाठा· पाठिका· (स) पाठी।

पाठिघातिनी· (स) कुपिंदरताश।

पहाड़ सीरातें· मु० लंबीरातें, बड़ी रातें, दुख की रातें।

पांवउठाना वा चलाना, मु० झटझट चलना, जल्दी जल्दी चलना।

पांवउतारना, मु० पांव का जोड़ टलना, पांव गांठ से उखारना।

पांवकांपना या थरथराना, मु० किसी काम के करने से डरना।

पांवकिसी का उखाड़ना, मु० किसी को किसी काम पर जमने नहीं देना।

पांवकिसी का गले में डालना, मु० किसी मनुष्य को उसी की बातें में अथवा तर्क से दोषी अथवा अपराधी ठहराना।

पांवचल जाना· मु० डगमगाना, अस्थिर होना।

पांवजमाना· मु० दृढ़ होके ठहरना, मज़बूती से ठहरना।

पांव ज़मीन पर न ठहरना· मु० बहुत प्रसन्न होना, बहुत खुश होना, बहुत घमंड करना।

पांवसारा· मु० घबराहट, व्याकुलता, झंझट, जंजाल, सीधा अर्थ से बाहर।

पांवडालना· मु० किसी बड़े काम के करने के लिये तैयार होना, और उस को शुरू करना।

पांवडिगना, मु० फिसलना, खिसकना, रपटना, किसी काम से हिम्मत न हार जाना।

पांवतलेमलना, मु० किसी को दुख देना, खिजाना, सताना, पीड़ा देना, खराब करना।

पांवतोड़ना, मु० किसी के मिलने से हाथ रखना, किसी मनुष्य से मिलने के लिये कई बार जाना, थक जाना।

पांवधोधोपीना, मु० बहुत

मानना, किसी का बहुत विश्वास करना, बहुत खुशामद करना।

पांवनिकालना, मु० अपनी मर्यादा अथवा हद से बढ़ जाना, किसी बड़े काम के करनेसे फिरना, किसी अपराध के करने में मुखिया होना।

पांवपकड़ना, मु० गरीबी अथवा अधीनी से बिनती करना, किसी को जाने से रोकना, अधीन होना, शरणलेना।

पांवपड़ना, मु० घिघियाना, गिड़गिड़ाना, गरीबी से बिनती करना, खुशामद करना।

पांवपरपांवरखना, मु० दूसरे मनुष्य का चाल चलन गहना, अथवा लेलेना, दूसरे की चाल चलना, ऐशफैल बैठना, आराम से बैठना, एक पैर को दूसरे पैर पर रख कर बैठना, बड़ी तक़ाज़ा करना।

पांवपांव, पांवोंपांवों, मु० पैदल, पियादेपा, पैरों।

पांवपीटना, मु० अधीरता से पांव पटकना, वृथा कोशिश करना।

पांवपूजना, मु० किसीको बड़ा जानना, किसी से बचना, अलग रहना, दूर रहना।

पांवफूंकफूंकरखना, मु० हर एक काम को सावधानी से करना, सम्हल कर काम करना।

पांवफैलाकर सोना, मु० सुखी रहना, चैन से रहना, बचाव से रहना, बेखटके रहना, निडर रहना।

पांव फैलाना, मु० हठकरना, अड़ना।

पांवभरजाना, मु० पांव ठिठिरना, पांव सो जाना।

पांवरगड़ना, मु० वृथा और मूर्खता से भटकना, फिरना, वृथाश्रकर खाना, मरने के

दुख में होना।

पांवलगना· मु० प्रणामकरना, नमस्कारकरना।

पांवसेपांवबांधना· मु० किसी के पास बराबर बैठा रहना, अथवा किसी की खूब रखवाली करना।

पांवसेपांवभिड़ाना· मु० पास होना। [जाना।

पांवसोना· मु० पांव सुन हो

दबेपांवआना· मु० धीरे से आना।

पाठीन· (स) सहस्रदन्त का मीन, बोआरी मछली, रेहू पढ़िना, बोआरीमीन।

पाठी. [स] चीता।

पाठशाला· [स] पठनस्थान, स्कूल, मदरसा, चटसाला।

पाण· (स) ताम्बूल, वस्त्र की मांड़ी। [दूकान।

पाणि· (स) हस्त, कर, हाथ।

पाणिग्रहण· (स) ब्याह, विवाह। दोहा॥ कर पीड़न पानी ग्रहन, अग्रहविहित विवाह। लौतिज परिभव नहिं कहूं दुख देती अनिनाह॥

पाणिनी [स] मुनीविशेष, व्याकरण सूत्रों का बनाने वाले। [फीका।

पाण्डर· (स) पीला, सीठा,

पाण्डव· (स) युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, पाण्डु राजा के पुत्र। अर्जुन—दोहा। अर्जुन द्रुम अर्जुन धवल, सहसा अर्जुन तत्थ॥ अर्जुन बहुरो पाण्डुसुत, हरि खेला जेहि सत्य॥२॥ पुनः दो०॥ नदी सर्जे अर्जुन ककुभ रिंद्र द्रूतरु बीर॥ तुम कहु देखि राधिका, जा बिनु हृदय अधीर॥१॥ पुनः— छंदीवेदी॥ गांडीवि दैत्यारी अर्जुन कीरीटी धनंजय कपिध्वज नरं स्वेत बाजी॥ कौंतेय फाल्गुण गुडाकेश जिष्णु हर्षसेन पार्थ तथा शव्य साची॥ जो कार्मुकी

मध्य पांडव विजैरथ बि·
डौजातनै पार्थ कौ शब्द
भेदी ॥ औ कर्णसुकौ स-
हित नाम बाइस कला-
लीसभव येकह्यो छंद वेदी
॥१॥ दोहा। अग्निधनंजय
कहत कवि, पवन धनंजय
आहि ॥ अर्जुन बहुरि धनं·
जय, कृष्ण सारथी जाहि ॥१

पाण्डरी· (स) पादुका।

पाण्डित्य· (स) पण्डिताई, विद्या,
पण्डितहोना।

पाण्डु· (स) पीला, पंडुक प·
च्छी, हरफा रेवडी फल।

पाण्डुच्छाया· (वि· सिन्धुः) पी-
की छविवाली।

पांडुच्छायोपवनवृत:, (विद
शार्णाः) पीली है बागों की
सीमा जिन की।]

पांडुता· (स) पीलापन।

पांडुपण्ड ु· (स) लाल धान।

पाण्डुद्रुम· (स) कौरैया।

पाण्डुपुत्री· (स) रेनुका।

पांडुर· (स) उज्ज्वल, शुक्ल।

पांडुलोमसपर्णी· (स) मनहरिद।

पात· (स) पतन, नाश, गिरना।

पातक· (स) पाप, दोष, अप·
राध।

पातकी· (स) पापी, राक्षस,
अधर्मी, दोषी।

पातिन्· (स) गिरनेवाला।

पातञ्जल· (स) योगशास्त्र, पा-
तंजल मुनिप्रणीत। [री।

पातालगडुरी· (स) पाताल गडु·

पाताल· (स) नीचे का लोक।

पातु· (स) रक्षा करो।

पातुम· (स) पीने को।

पातो· (प) चिट्ठी, पत्री।

पात्र· (स) बरतन, बासन, आ·
धार, योग्य, भाजन।

पाथ, पाथी· (स· द) जल,
पानी, नीर।

पाथक· (स) बाट, राह।

पाथकी· (स) बटोही, राही।

पाथा· (स· द) जल।

पाथर· (स) पाषाण, पत्थर।
दोहा ॥ उपल अश्मपाहन
शिला, ग्रावदृषत पाखान ॥

प्रस्तर घना अवातु दृश, पाथर नाम बखान ॥१॥ पुनः—दोहा ॥ ग्रावो अश्म पत्थर उपल, पुनि पाषान अति भार। पानी पर पाहन तरे, जाके नाम अधार ॥१॥

पाथेय· (स) मार्ग्ग का सम्बल, कुलषा, तोसा, मार्ग में खाने की सामग्री।

पाथेयवत्· (स) जिसके पास है मार्गमें खाने की सामग्री।

पाथोज· (स) कमल, पंकजादि।

पाथोद· (स) मेघ, बादल।

पाथोधि· (स) जलसमुद्र।

पात्र· (स) योग्य, भाजन, वर्तन।

पाद· (स) चरण, पांव, किरण, श्लोक का एक चरण, श्लोक का चौथाई भाग, चौथा भाग।

पादचार·(स)पांवों चलनेवाला।

पादचारी· (स) पदातिक, पाथिक, प्यादा, दौराहा।

पादत्राण·(स) पनही, खड़ांउ, जूता, मोजा। दो॰॥ पदभाग को पान पुनि, पादपृष्ठ उपभाय। पनहीं मनहीं भावती, पागे धरी सुभाय ॥१॥ [नाच में।

पादन्यास· (स) पैर रखना जैसे पादन्यासक्कणितरसनाः, (विवेश्याः) पांव रखने में बजती हैं तागड़ी जिन की।

पादप· (स) वृक्ष, पेड़। कर्णिकार, १ बेलिपापीपर २।

पादपीठ· (स) पीढ़ा, पदासन, खड़ांउं।

पादप्रहार· (स) लात, पदाघात। [एड़ी।

पादमूल· (स) गुल्फ, पार्ष्णि,

पादराग· (स) महावर।

पादार्पण·(स)पैर देना, प्रवेश।

पदासन·(स)पादपीठ, पदाधर।

पादिन· (स) जलजन्तु सींस घरियाल आदि।

पादी· (स) पयठानीलोध।

पादुका· पादुभाग· (स) पनही, वा खड़ांउं।

पादायुध· (स) मुर्गा, कुक्कट

दो०। ताम्रचूर चरनायुधा, अरुणसिखर तमचोर ॥ याम बादि कुक्कुटधुनि सुनि जागी हरि भोर ॥ १ ॥

पान. (स) पीयब, पीना, पत्ता, ताम्बूल, मद्यपान, शराब-पीना।

पानकी· (स) नागवेलीपुष्प।

पान तें· (स) पीने तें मद्यादि।

पानि· (स) पाणि, हाथ।

पानीय· (स) पानी, जल पीने के योग्य।

पानीयफल· (स) मखाना।

पाप· [स] अधर्म्म,गुनाह। दो० ऐन वचन दुःकृत दुरित अहमलीन सपंक। किल-बिष कल्मिष कलुषपुनि, कल्मस समल कलंक ॥ १ ॥ पापहार ज्यों नीर कर, रंचक जाको नाम। ताको तू कपटी कहत, कहा कहों तोहि बाम ॥ २ ॥

पापचेलिका (स) पाठो।

पापर, पापड़· [स पर्पट· पर्प-णाना] उरद वा मूंग की पतली रोटी की चीज़। वा पांव पर। काशिराम रसालदार भरतपुरवाले जो कविता में अपना नाम मनोहर रखते थे लिखते हैं। कवित। पापर कहत तोसों पूरी करि आस मेरी मोमन कचौरी धरैं धीर न धराये ते। तू है पकौरी तोसों बड़ी सीखताई अई पायो है कछुक सार मीतम पराये ते॥ कैसे रबड़ी है खोया सुकरन मनोहर मोहिं नाहीं मों दीसो कहा होत घबराये ते। कहत हैं सभोसे खलतो के सब बरा-बरी के गुपचुप रहो जी कहा बात न बनाये ते ॥ १ ॥

पापड़बेलना· मु० बहुत मिह-नतकरना, अथवा दुख सहना, उड़द वा मूंग को पापर बनाने केलिये

विचना।

पामर·(द) अधम, दुष्ट, नर पशु, अर्थात् देह तें नर, बुद्धि तें पशु, नीच, खल, दुर्जन, कमीगह।

पाम्वड़ा· पाम्वड़े· (प) दुलीचा, सतरंजी आदि पगुधारण का वस्त्र।

पानीकरना, मु॰ लजाना, अ- पाना, लज्जितकरना, स- हज करना, सुगम करना।

पानी का बुलबुला, मु॰ अस्थिर चंचल, यह मुहावरा अ- स्थिरता जतलाने के लिये बोला जाता है।

पानीदेना, मु॰ पितरों को जलदेना, तर्पणकरना।

पानी न मांगना, मु॰ तल- वार आदि के एक हो वार से तुरत मरजाना।

पानीपड़ना, मु॰ मेह बरसना पानी बरसना। [बरापना।

पानीपीपीकोसना, मु॰ बहुत

पानीभरना, मु॰ नीचाहोना, तुच्छहोना, निचाई को मानलेना, शरमाजाना, अधिनता करना।

पानीमरना, मु॰ सूखजाना, लजाना, लाजलगना, किसी बात का इशारा करना।

पानी में आगलगाना, मु॰ जो झगड़ा मिटगया हो उसको फिर उठाना वा अनीति करना, आश्चर्य करना।

पानी मे पतला करना, मु॰ ल- ज्जितकरना, लजाना, अ- पाना, तुच्छकरना।

पाम्वर·(स) नीच, मूढ़, नर- पशु, उभौचारी।

पाम्वरी· पांवरी· (स) पनही वा खड़ांउं।

पाय· (फ़) चरण, पग।

पायक· (फ़·) दौराहा, कासिद।

पायन· (प) पगु, चरण।

पायनगिर· (प) पगुपकरि।

पायोधि· (स) समुद्र।

पायस· (स) खीर।

पारखी· (स) मही का मित्र।

चौ० । तब मज्जन करि रघुकुलनाथा । पूजि पारथी नायउ माथा ॥ अर्थात् रामचन्द्र ने महादेव का पूजन किया इस लिये कि शिवपूजा से अनेक विघ्न मिट जाते हैं अथवा शंकर जी रावण के इष्ट हैं उन को प्रसन्न करने के लिये पूजन किया अथवा मार्ग में पारथी के सिवाय मिल क्या सकता है अथवा पथ में पारथी रक्षा करेंगे ।

पारकरना· सु० पार उतारना, नांघना, पूरा करना, कोई काम पार उतारना, निबाहना, छेदना, बंधना, फोरना ।

पारद· (स) पारा, पारा धातु ।

पारषद· (स) दूत, सन्देशी, सेवक ।

पारस· (स) स्पर्श, मणि पत्थर ।

पारसीक वपा [स] खुरासानी वच ।

पारसीकजवानिका· (स) खुरासानी अजवाइन । [सकना ।

पारहिं [दे] सकते हैं, पारना,

पारा· (स· दे· प·) पारदरस, धातुविशेष, समर्थ, पार, गिराया, पारना चौ० । कौशिल्या अब कहा बिगारा । तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥ अर्थात् बज्र पुर पारा अयोध्या में बज्र गिरा दिया ।

पारावत· [स] कबूतरपक्षी, परेवा, कबूतर ।

पारावतपदी· [स] मालकौनी, काकजंघा ।

पारावार· [स] समुद्र, नदी के दोतट ।

पारिजात· [स] सुरद्रुम, पातालचौर, मुंगाहक्ष ।

पारिपन्थि· [स] डकैत, बटवार

पारिपाच· (स) नौका का पतवाल, वा पर्व्वतभेद ।

पारिभद्र· (स) नीम ।

पारिभव्य· [स] कूट ।

पारितोषिक· [स] दक्षिणा,

हृताश, प्रसन्न करनेवाला।

पारिषद (स) सहचर, दिखवैया दूत।

पारिस [स]
पारिच } परासपीपर।

पारो [प, द] डारी, बारी, पाली अवसर, फेंकी, पारना, फेंकना भेंस का बच्चा।

पार्थ [स] अर्जुनपाण्डव।

पार्थिव } [स] मूर्त्तिठाकुर,
पारथिव } शिव, राजा, पृथ्वी का, मट्टी का।

पार्व्वती. पार्वती. [स] शिवकी नारी, दुर्गा का एक नाम, तीसी।

पार्श्व [स] समीप, पांजर, बगल, पास, करोट।

पार्श्वक [स] परासपीपर।

पार्षद (स) सेवक, दास, टहलु।

पालक (स) रक्षक, भाजी पालङ्ग। [बलराम।

पालकश्याम (स) बलभद्र,

पालङ्ग।(स) पलाकीसाग।

पालन (स) पोषण, रक्षण, मानन, रक्षा, हिफाजत।

पालव (स) डार, पत्ता, शाखा, पल्लव।

पाले (स) अधीन।

पालेपड़ना मु० दूसरे के बस में आजाना, जैसे, चौ० आज करउं खल काल हवाले। परेउ कठिन रावन केपाले (मानसरामचरित)

पालनीय (स) पालनयोग्य, पालन।

पालिन्दी (स) पनिलत।

पावरी (स) दोहा ॥ सखी रानटीनध धयरि, कपोतोन्द्री परवाल। तुम अधरन सम कहत कबि, एन हिं मृदुल रसाल॥

पाल्वलम्भ: (स) भरने के पानी के रहने की जगह।

पावक (स) अग्नि, परिस्कारक, आग, छंद रूपघनाक्षरी॥ वायुसखा जात वेद लोहित च हवा कपि आशु शुचपि समाधि

स्वाहापति चित्रभानु ॥
वीति होत्र वैश्वानर पावक
हिरण्य रेत ज्वाला जीतनु
निपात समीगर्भ कृशानु ॥
कृष्ण वर्त्मा सप्त धनंजय
लपीट योनि बर्हि शुक्र
शिखी भास्व पास शिखा-
वान ॥ शोचि केशउषर्बुध
हव्यवाहनं शुची हुता-
शनं विभावसु भन्नो सुख
मा कृशान ॥१॥ दोहा—
सुवर्ण दमन हुत भुक धन-
स, दहन नाम चालीस ॥
रूप घनाक्षरी नेम बिनु,
गुरु लघु वर्ण बतीस ॥१।

पांवड़े (स) बिछौना, पांव रखने का वस्त्र।

पावन (स प) पवित्र, स्वच्छ, जल पावे नहीं। [मन्द।

पावर (द) पामर, नीच, मूढ़,

पांवरी (स) पादुका, खड़ाऊं।

पावन्ती (स) नदी, सरिता।

पावस (द) वर्षाऋतु, वर्षा काल।

पाश (स) बन्धन, डोरी, पासा, फांसी, फन्दा, ओर, तरफ, फांसड़ी, जाल, जूड़ा, (जैसे केशपाश बालों का जूड़ा)

पाशी (स) बधिक, व्याधा।

पाशुपत (स) बड़ा मौलसरी।

पाशुल (स) कावापच्छी।

पाष (प) पच्छ १५ दिन।

पाषाण (स) पत्थर, शिला, प्रसंग, अश्म, प्रस्तर, पत्थर।

पाषाणभेद (स) हत्याजोड़ी।

पास (स. फ़) जल, नीर, निगाह, समीप, पाश।

पासपति (स) वरुणदेवता, पाथर।

पास्यसि, (स) पिचेगा तू।

पाहन (स) पत्थर, पाषाण।

पाहरूप्रतीती (द) विश्वास वाले चौकीदार, विश्वासी, पाहरू।

पाहि (स) रक्षा करो, बाहि-

पांही (प) पास, निकट।

पाहुन (प) अतिथि, अभ्यागत।

पाह (प) व्यक्ति, जन।

पि· (स) पानकर्त्ता, पान इच्छित।

पिक· (स) कोईलपक्षी, परभृत कोकिल, चातिक, "दो॰ पिक सुकंठ चातिक चकोरी, दातप काल सारंग॥ बैन सुधा सम सुनत मन, जुगल किशोर उमंग॥१। परभृत कालरव रक्तदृग, पिक धनि जहं रस पुंज। जनु पिय अहित निरख तोहि, टेरत बलि बलि कुंज॥१॥" मानसरामचरित्र में लिखा है दो॰। छय गये कोटिक केलिमृग, पुरपशु चातक मोर। पिक रथांग सुक सारिका, सारस हंस चकोर॥१॥ अर्थात् केलि पाले हुए, पुर पशु श्वान आदि, पिक कोकिल, रथांग चकवा, शुक सुआ, शारिका मैना।

पिकबन्धु· (स) आमवृक्ष।

पिकबैनी· (स) कोकिला किसी वाणी।

पिकराग, (स) पिकसमूह,

पिकवल्लभ· (स) आम।

पिङ्ग· (स) स्वर्णवर्ण, पीतवर्ण, कपिल।

पिङ्गल· (स) स्वर्णवर्ण, सूर्य का मोसाहिब, पीत, भौंरा, पीला, शास्त्रविशेष।

पिङ्गला· (स) पीतल।

पिङ्गूरा· (स) हिंडोला, झूला।

पिण्डर· (स) पनारस्त।

पिण्डक· (स) पीना।

पिचट· (स) खुरारोग।

पिचुमन्द· (स) नीमवृक्ष।

पिचुमर्द· (स) नीम।

पिच्छलबीजक· (स) कमरख

पिच्छला· (स) शीशम जंगली।

पिच्छ पिच्छाग्राम·
पिच्छालशणी· } (स) मोचर

पिच्छिल: (स) बहुचार।

पिञ्जर· (स) पञ्जर, पक्षी भवन, झूरा।

पिटङ्खिङ्कु· (स) कंगपक्षी।

पिण्ड· (स) देह, तन, गोलवस्तु।

पिण्डल (स) लोदा।

पिण्डखर्जूरिका (स) मुलेमानी छोहारा।
पिण्डतगर (स) स्याहतगर।
पिण्डपुष्प (स) अशोकवृक्ष।
पिण्डर (स) पिंडार। [ताल।
पिण्डहरताल (स) हड़ही हर·
पिण्डालुक (स) गोलसुथनी।
पिण्डी (स) मयनकन्त।
पिण्डीतक (स) मयनफल।
पिण्डछुड़ाना, मु० बचना, भागना, पीछा छुड़ाना, टलना।
पित्तानिकालना मु० दंडदेना, ताड़नाकरना, सजादेना।
पित्तामरना, मु० क्रोधघटना, क्रोध ठंडापड़ना।
पिता पितृ, (स) बाप, मन, ब्रह्मा तात, गुरु, रक्षक, दीक्षा। गुरु नृप गुरु माता पिता, गुरु प्रोहित गुरु छंद। अच्छर गुरु दोरीष कहैं, सब के गुरु गोविन्द ॥ १ ॥ पुनः तात कैतको शब्द दो०। तात पिताप्रभु भ्रात कहि, तात पुत्र कहं जान ॥ फूल चन्द्र रथ काम रस, पद्म केतको नाम ॥२॥ गुरुजन संबोध नाम। छंदहरिमुख। हरि मुख पे बंसुरी पियूषधारी॥ रजनि निशीथ जिठानी जागभारी। मदनमथै बिनु देख स्यामवर्णी॥ नगन खगान जगान गंध करयो ॥१॥ पिता नाम। दो०। तात जनक सुजिता पिता, बाबा तो गुन धाम। तोहि पहिले नंदलाल को, देत हुतो है गाम।
पितामह (स०) दादा, बाजा, पिता का पिता।
पितामही (स०) दादी, आजी।
पितृपति (स) धर्मराज।
पितृव्य (स) चाचा, पितिया, ताऊ। [हिन।
पितृस्वसा (स) फुफी, पितृव·
पितृप्रसू (स) सायंकाल, सांझ।
पित्त (स) शरीरस्थ धातु विशेष, सफ़रा।

पित्तल· (स) पीतल धातुविशेष, पीतल, पीतर।

पित्वा· (स) पीके, पानकरि, पान किया।

पिनाक· (स) शिवधनुष, त्रिशूल, धन्वा, धनुष, कमान, महादेव का धनुष।

पिनाहिक· (स) मन्त्रविशेष। पुत्रदायक।

पिपासा· (स) तृषा, प्यास।

पिपीलिका· (स) च्युंटी, चिपरी।

पिप्पल· पिप्पली· (स) पीपर, पीपल, पीपल का वृक्ष।

पिप्पलीमूल· (स) पिप्पलामूल।

पिय· (स) स्वामी, प्रेमी, प्यारा, प्रीतम। दो०। इहता दंपति ईस पुनि, प्रियभर्तारि सुहोय। पिय की तो सी वल्लभा, श्रौर न देखी कोय ॥१॥

पियवल्लरि· (स) राजवेलीपुष्प।

पिया· (प) पति, स्वामी, प्यारा।

पियाल· (स) चिरौंजी, चिरंजी, फलविशेष।

पिरीतैं· (स) प्रीत, प्रीतम, प्रीतियुत।

पिरोजा· (फ़) नाम पत्थर रक्तवर्ण, फ़ीरोजामणि, जंगाली रंग का मणि।

पिशुन· पिशु· (स) दुष्ट, बैरी, निन्दक, चुगुल, चुगल दिखानेवाला, केसर।

पिष्टिका· (स) हरिद्र श्रादि की पीसी हुई पीठी।

पिसित· (स) मांस। शेष।

पिशाच (स) राक्षस, जाति वि-

पिसाच (द) राक्षस, बैताल।

पीठ के पीछे डालना· मु० बचाना, पक्षकरना, रक्षा करना। [लेना।

पीठ की पीछेपड़ना· मु० शरण

पीठठोकना· मु० ढाढ़स देना, साहसदेना, हिम्मतबांधना।

पीठदेना, मु० भागजाना, फिरना, हटना, ठलना, अप्रसन्न होकर फिरजाना।

पीठपरहाथ फेरना· मु० पीठ थपथपाना, शाबाशी देना,

ढाढ़स देना।

पीठफिरना सु॰ चलाजाना, भागना, हटना।

पीठलगना सु॰ पीठ पर घाव होना, (जैसे घोड़ों के) घोड़े पर चढ़ना।

पीछाकरना सु॰ खदेरना, रगेदना, पीछे पीछे जाना।

पीछाफिरना सु॰ लौटादेना, पीछादेदेना, फेरलेना।

पीछेछोड़ना सु॰ पीछे छोड़ना, आगे निकलजाना, आगे बढ़जाना।

पीछेपड़ना सु॰ पीछे दौड़ना, दबाना, बारबार मांगना, सताना, छेड़ना, खिझाना, दुख देना, पीछे रहजाना।

पीछेलगना सु॰ पीछेजाना, साथहोना, साथलगना, लगारहना।

पीजाना सु॰ पानी पीलेना, सोखना, क्रोध को पीजा मारना, चुपरहना, उत्तर देने से रुकना।

पी (प) स्वामी, पति, प्रिय।

पीठ {स / प} पत्थरी जाको आदर्श नाम, सूर्यमणि, आसन, पीढ़ा, दैत्य विशेष, पिछाड़ी।

पीठक (स) पीढ़ा, बैठकी काष्ठकी।

पीड़न (स) विवाहयज्ञ।

पीड़येत् ( ) दुख देता है।

पीड़ा (स) कष्ट, क्लेश, दुख। दोहा। बाधा बिथुरा बिथारुज, पीड़ा अघि गलात। अर्जुन परसत पीर बलि, किन सिखई यह बात॥ १॥ दुःख वा दारुण नाम छंद सिंहनी॥ स्यामबिना बज गोपीगण कष्ट कुच बेदन दुख भीरा॥ बाधा बिथा ब्रजन शंकट पेद कलेश कलाकुल पीरा॥ उग्र घोर दारुण उल्वण टेरि टेरि रसनावश थाको बन बन ढूंढ़ि खोजि

खोजि छंद सिंहनी तीस कला को ॥ १ ॥ दोहा। खोजत हरिहि ब्रजांगना, सखी बाम इक आय॥ कल्पलता जनु स्वर्ग ते, धरणि परी मुरझाय ॥१॥ छंद सारवती ॥ कौन दशा तव प्राणप्रिया ॥ सीघ्र कही घबरात हिया ॥ काह भई कवि देववती ॥ तीन भगानग सारवती ॥ ६ ॥

पीड़ित (स) कष्टी, कलेशमान।

पीत (स) पीला, कांकुष्ट, ज़र्द।

पीतक (स) बबूर, कसर, किंकिरात।

पीतचन्दन (स) पीत चन्दन।

पीतदारु पीतद्रु (स) दारुहलदी।

पीतन (स) अमड़ा।

पीतपुष्प (स) भुरा कोंहडा, झोंगी। [टिंडपा।

पीतपुष्पा (स) खेकसा, सहे-

पीतफल (स) सिहोड़ा।

पीतफेण (स) रीठा।

पीतभद्रक (स) किङ्किरात।

पीतरक्त (स) गोमेदमनि।

पीतरोहणी (स) गम्भार।

पीतबीज (स) मेथी।

पीतवृक्ष (स) सरल।

पीतसालक (स) पासन।

पीता (स) हरिद्रा, हल्दी, दारुहल्दी, दाख।

पीन पीवर (स) पुष्ट, मोटा, गाढ़ा, स्थूल, तुन्देला, गोदधि।

पीनस्कन्ध (स) भैंसा।

पीपर (स.प) सामान्यवृक्ष, वृक्ष भेद। औषधि। दो०। कोखा कृष्णा माधवी, तिगम तुण्डला होत। बैदेही स्यामा कना, मुंठी कहिये सोय।१। यह पीपर बलि तुंगहन, कहत बहुत परकार। अचते इतनी करि कुंवरि, प्रीतम प्रान अधार॥२॥ दो०। चलदल पीपर गज असन, बोध वृच्छ अस्वत्थ। पीपर देखलु दाहिनो, जोरि हाथ हितमत्थ ॥ ३ ॥ पुनः ॥ हे

चलदल अश्वत्थ है, धर्म ग-
जाशन बोध । है पिप्पल
कित लाङली, कीजै मो-
हि प्रबोध ॥१॥

पीपरि· (स) लघुपीपलि। [पा।

पीयमान· (स) पीया जाता हु-

पीयूष· (स) अमृत, जल, दूध.
घृत, ।

पीलु· (स) अखरोट । [हार।

पीलुपर्णी (स) कुंदरू, चुरन·

पीवर· (स) जातिविशेष. पुष्ट,
मोटा। [सतावर

पीवरी· (स) सरिवन, पक्षांडी

पुं· (स) पुरुष, नर, पुमान ।

पुंल्लिङ्ग, (स) पुरुषचिन्ह, पुरु
षत्व। [रिणी।

पुंश्चली, (स) वेश्या, व्यभिचा-

पुंम् (स) नर अर्थात् स्त्री नहीं।

पुङ्गी· (स) सोपारी।

पुङ्ग· पुङ्गफल· } (स) सुपारी,
पुङ्गीफल· } कसेली, सोपा-
री । दोहा। ॥ बींटा क्रमुक
गुवापुनि, पूगसुपारी चा·
हि । बारबार इमि कहत
बलि, रंचक यहि तन चा-
हि ॥१॥

पुङ्गव· (स) प्रवीण, श्रेष्ट, बड़ा।

पुच्छ· (स) पूंछ, लांगूल दुम्बा
भेड़ा। [समूह।

पुञ्ज· (स) ढेरी, राशि, थोक,

पुट· (स) पात्र, मिलाव, द्रव·
धारक, घुलाव, दोना, ढां·
कने की वस्तु. हत्त की गई
कोपलों का ढांकनेवाला
पत्ता। [गांठ, पुलिन्दा।

पुटी· (स) दोनापात्र, पुड़िया,

पुण्ड्रक· (स) माधवी फूल।

पुण्डरीक· (स) लालधान, सु-
फेद कमल।

पुण्डरियक· (स) कुमुदक।

पुण्डरी· (स) सिंहवनचर।

पुण्डरीक· (स) नागविशेष ।
कमल, दोहा ॥ पुण्डरीक
सायक कहत, पुण्डरीक
आकास ॥ पुण्डरीक हरि
कमल जहं, तहां कमल
को वस ॥ १ ॥

पुण्य· (स) सुकृतकर्म्म, कीर्त्ति,

धर्म्म, पवित्र, अच्छा काम, सुन्दर।

पुण्यजन· (स) राक्षस, सुकृतिजन, पुण्यमान। [खड़ारी।

पुण्यजनेश्वर· (स) कुवेर, सुरभ-

पुण्यप्रतीची, (स) गली, कूचा।

पुण्यभूमि· (स) आर्य्यावर्त्त, अन्तर्वेद।

पुण्यश्लोक· (स) उत्तमश्लोक, नारायण, भागमान।

पुण्यात्मा· (स) दाता, पुण्यवान, पवित्र। [मा।

पुत्तलिका· (स) पुतली, प्रति·

पुत्र· (स) पुत् एक नरक का नाम है बचाना, जो पुत् नाम नरक से अपने बाप को बचावे। सन्तान, लड़का, बेटा, पवित्रकारी, आतमज। दोहा॥ आत्मज कहिये रुधिर अंग, आत्मज कहिये काम॥ आत्मज पूत सपूत है, भजो को सुन्दर स्याम॥१॥ [रका।

पुत्रक· (स) पवित्र, शीवका·

पुत्रजननी (स) लक्षणा।

पुत्रजीवा [स] पितवंजिया।

पुत्रदा [स] लक्षना। [ड़िया।

पुत्रिका (स) कन्या, बेटी, गु-

पुत्री (स) बेटी, लड़की, कन्या।

पुत्रेष्टि· (स) सन्तानार्थयज्ञ।

पुद्गल· [ट]
पुद्गल· [स] } शरीर, देह।

पुनः (स) पुनि, फिर।

पुनः पुनः (स) फेरफेर, बेरबेर, बारम्बार, एक नदी का नाम।

पुनर· (स) फिर।

पुनरुक्ति· [स] फेरकहना, पुनःकथन, द्विरुक्ति, दुबारा बयान।

पुनर्भव· [स] नख, पुनर्जन्म।

पुनर्नवा [स] सुपेद गदहपरवा। [पूर्नी।

पुनर्नवारुणा· [स] लाल गदह-

पुनर्भवा [स] गदहपूरना।

पुनर्भू· [स] सुपेदगदह पूरना।

पुनि· [स] फेर, पुनः, बहुरी।

पुनी· पुनीत· [स] पवित्र,

स्वच्छ, शुद्ध ।

पुन्नाग· [स] केशरीपुष्प । दो० ॥ है केशर सुरवल्लभा, तुंग पुरुष पुन्नाग ॥ किते गई सीतांबरो, जासु अचल सौभाग ॥१॥ छंद सुधाम ॥ किते सुनि स्याम गई लखिता समुझाय प्रिया संग सो लय धाई। विनोद गुपाल लगाय गले जनु नीरद सो छवि विद्युत छाई ॥ बजी बहुवाद्य करे शुभगान त्रियागण नृत्य विलास कन्हाई ॥ मुनि जगनं सगनं पुनि अंत सुधाम सुछंद कह्यो धहिराई ॥१॥

पुन्नाट. [स] चकवंड़ । [नहीं ।

पुमस्· [स] नर, अर्थात् स्त्री

पुमान्· [स] पुरुष, नर ।

पुर (स)—बस्ती जाके आदि ८ घर ते अन्त १६ घर, भरा, पूर्ण, दैत्य, नगर, पुरा, गांव, शहर, ग्राम, शरीर, गुग्गुल ।

पुरपरिचारक· (स) पुरमुधारने को परिचार्य्या करनेवाले ।

पुरञ्जय, पुरञ्जयनी· [स] राजा, रानी, विशेष जाकी कथा चतुर्थस्कन्ध श्री भागवत में विदित. कि राजा पुरंजय जीव संज्ञा, अरु रानी पुरंजयनी प्रकृति संज्ञा, अरु एक पुरुष ब्रह्मसंज्ञा पूर्व देह मों आय के नाना प्रकार के क्रीड़ा करि पश्चात् निसर गया, वाही श्री नारद जू तीनों को छवि अपूर्व्व महाउत्कृष्ट शोभा अप्रमेया दशा हिमाञ्चल पर्व्वत पर । आगे महा पुरुष ब्रह्म संज्ञा, पाछे पुरंजय जीव संज्ञा, बीच पुरंजयनी माया संज्ञा देखि के समुद्र के भीतर १० दशो प्रचेता राजा प्राचीन बर्हिक पुत्रों सों सम्वाद कियो है इति नारदपुरंजय पाषाण श्रो

भागवत ४ स्कन्ध अध्याय आदि २६ पर्य्यन्त २८ प्रमाण, ताही को पुरंजय अरु पुरंजयनी उभोजीव, माया, संज्ञा, अरु मह्दा पुरुष ब्रह्म संज्ञा को उपमा शोभा को श्रीरामायण अयोध्याकाण्ड श्रीराम, लक्ष्मण, सीया, बनजात मग मांझ दियो गयो। चौ० उभय बीच सिय सोभत कैसी॥ ब्रह्म जीव बिच माया जैसी॥१॥

पुरट· (स) सुवर्ण, स्वर्ण, सोना, मुकुट, रचित, कंचन।

पुरठ· (स) श्रवणइंद्री, कर्णइंद्री।

पुरत· (स·) अग्रभाग· आगें।

पुरद· (स·) देशपालक, पोष।

पुरन्दर· (स·) इन्द्र· स्वर्गपति।

पुरश्चरण· (स·) मन्त्र जापादि क्रिया।

पुरस्, (स) सामने, आगे।

पुरस्कार· (स·) आदर, दान, फल।

पुरस्तात् (स) सामने, पूर्व की ओर।

पुरा· (स) पूर्व्वकाल, बड़ा गांव।

पुरवा, आगे, पहले, तुरंत।

पुराकृत· (स) पहिले जन्म के करे हुए, पहले किया गया।

पुराण· पुरान (स·द. ग्रन्थविशेष बहु कालका, पुराना, श्री जगन्नाथ्या वतार दो०॥ जैनी मत की वृद्धि हित, कीन्हो बोध प्रबोध॥ ताको हरिजन कहत सब, जगन्नाथ है बोध॥१॥ छंद रतिलेखा॥ जन हेत अवतार हरि आप कीन्हो॥ जग मन्द कत जंतु अनुकंप कीन्हो॥ दयदर्श जगदीश भव ताप नाशे॥ रतिलेख कलकंद उदोस भाषे॥१॥ दो०॥ चतुर्निगम संसार हित, प्रगट किये भगवान। व्यासदेव तासों कियो, अष्टादश पौरान॥१। चौ०॥ दशहजार है

ब्रह्मपुराना ॥ मारकंड नव सहसबखाना ॥ लिंग इकादश शिव चौबीसा ॥ तेइस विष्णु गरुड़ उन्नीसा ॥ पचपन पद्म भागवत दश वसु । कूर्म सप्तदस मत्स्य चतुर्दश ॥ बामन दश सूकर चौबीसा ॥ नारद नाम हजार पचीसा ॥ चौ ब्रह्मांड युगमदश बरनो ॥ पन्द्रहसहस ततुषसत भन्नी ॥ एक असीसत अधिक स्कान्दा ॥ दशवसु ब्रह्म विवर्त निबन्दा ॥ चौ० । दस सहस पंचशत गावे । नाम पुरान भविष्य कहावे ॥ चतुर्लाख पौरान अष्टदस । चतुर्वेद मथि सच्यो सुधारस ॥ उपपुराण दो० । वायु परासर कालिका, नन्दकेश शिव धर्म । दुर्वासा उशना कपिल, दैव महेश्वर पद्म ॥१॥ सनत्कुमार मरीच नर, सिंहभास्कर जान ॥ साँब वरुण नारद सहित, दशवसुउप पौरान ॥२॥ द्वादश भूषण भक्त को, हरि करुणा कर देत । षोडश औगुण द्रव्य मो, सो उपाधि हरि लेत ॥३॥

पुरातन· (स) प्राचीन, पुरातन, अगला, वृद्ध, पुराना, पुरानो ।

पुरातनकथा· (स) प्राचीन कथा चौ० ॥ कहहिं पुरातन कथा बखानी । सुनहि लखन सिय अति सुख मानी ॥ अर्थात् प्राचीन कथा अर्थात् पुराणादिकों की और कहानी लौकिक प्राचीन कहनी ताको कहत हैं।

पुरारि· (स) शङ्कर, शिव, महादेव, त्रिपुरारी, कामारी । [आच्छादित ।

पुरित· (स) भरिपूर, भरा,

पुरी· (स) नगरी ।

पुरीष· (स) मल, विष्टा ।

पुरुष· (स) पुल्लिङ्ग, जीव, नर।

ईश्वरवाचक, मनुष्य, पुरखा, मर्द, [मोच,पाक्रम।

पुरुषार्थ· (स) धर्म, अर्थ, काम,

पुरुषा· (स) तिलपुष्पी,

पुरुषोत्तम· (स) नरोत्तम, नारायण, नरश्रेष्ठ, ईश्वर।

पुरुहूत· (स) इन्द्र· स्वर्गपति।

पुरोड· (स] देववाचक।

पुरोडाश· [स] देव भाग जाको हव्य कहते हैं, यज्ञ के निमित्त चौ०। बिपति मोरि को प्रभु हि सुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा। अर्थात् पुरोडास होम करने की खीर जो देवताओं का भाग है उसे गदहा खाया चाहता है।

पुरोधस· पुरोधा· [स] प्रवीण जन, पुरोहित।

पुल· पुलीन· | फ· स] सेतु, सांखों, बांध, तट।

पुलक· पुलकावलि· [स] रोमांचित,आनन्दरूप, हर्षमान्, रोमांच।

पुलकित, (स) आनन्द में रोमांच उठे हैं जिसके, रोमांचित, हर्षित, आनन्दित।

पुलस्त्य· पुलस्ति· [स] मुनिविशेष, रावणपितामह।

पुलिन· (स)नदी में बालू का टापू, उपकंठनाम। दो०। कूल पुलिन उपकंठतट, निकट पास अभ्यास। नीर तीर चलि जाउँ बलि, ए आप पिय पास॥१॥

पुलिन्दा· [स· प] नदीभेद, मोटरी, गांठ, चंडाल।

पुष्कर· (स) कमल, जल, समुद्र, आकाश, गयन्द, तीर्थ, पापहर, कमलमूल,गोविन्द, पुष्कर शब्द—दोहा॥ पुष्कर जल पुष्कर गगन, पुष्कर शुंड गयंद। पुष्कर तीरथ पाप हर, पुष्कर नाम गोविन्द॥१॥

पुष्करमूल· (स) पुहकरमूल।

पुष्करिणी· (स)जलाशय,झील।

पुष्कल· (स) विस्तार, पूर्ण, समग्र, अधिक, श्रेष्ठ, की मल।

पुष्कला· (स) कोमलाङ्गी।

पुष्टि· (स) पोषण। [शीस।

पुष्पकाशीस· (स) हीरा का-

पुष्प· (स) फूल, कुसुम, सुमन।

पुष्पक· (स) नाम कुवेर विमान, सजीव आपु तें गमन कार आकाश मार्ग।

पुष्पकीट· (स) भ्रमर, भौंर।

पुष्पचाप· (स) कामदेव, मनसिज, अनङ्ग।

पुष्पकयान· (ट) पुष्प का विमान, फूल का रथ।

पुष्पफल· (स) कैंत १ भूरा कोहड़ा २।

पुष्पवानीर· (स) बेतस।

पुष्परस· (स) पुष्प का मधु, अहृत, मकरन्द।

पुष्परसोद्भवा· (स) अहृत।

पुष्पराग· (स) पोखराजमणी।

पुष्पशाक· (स) फूलों की तरकारी।

पुष्पशिखी· (स) बरसिम्मा।

पुष्पसिता· (स) गुलशकरी।

पुष्पांक· (स) मधुरी लता।

पुष्पाञ्जलि· (स) निछावर, भेट।

पुष्पित· (स) फल फूलित, विकसित। [किताब।

पुस्तक· (स) ग्रन्थ, पोथी,

पुस्तकशिम्बिका· (स) बरसिम्मा। [तरकारी।

पुस्तकशिम्बो· (स) सीम

पुस्तकालय· (स) सरस्वति भंडार, पुस्तक घर।

पुहुप· (स) फूल, पुष्प, सुमन।

पुहमी· (स) पृथ्वी, धरती।

पूछ· (स) पुच्छ, लांगूल।

पूग· पूगी· (स) सुपारी का वृक्ष, समूह।

पूग· (स) तूंत १ सोपारी २।

पुंगव· (स) श्रेष्ट।

पुंज· (स) समूह।

पूजक· (स) पूजा कर्त्ता सेवक।

पूजन· (स) पूजा, अर्चन, सेवना।

पूजना· (प) सेवाकरना, पूरा होना।

पूजनीय· (स) सेवे योग्य, सेवा-
लायक, पूजनयोग्य।

पूजा· (स) अर्चन, सेवा।

पूजिहिं· (स) पूर्ण होगा, पूज
ना, पूर्णहोना।

पूजहिं· (प) पूरा वा पूर्णहोहिं,
पूजन करहिं, पूर्णहोगी।

पूजी· (प) पूरा भई, पूजन किई,
चौ०। एकहि बार आस
सब पूजी। अब कछु
कहब जीह करि दूजी।
अर्थात् एकही बार कहने
में मेरा मनोरथ पूरण हो
गया अर्थात् आपने जीभ
कढ़ाने की प्रतिज्ञा को जो
दूसरो जीभ बनावें तो
कहूँ अथवा इस जीभ से
जो मैंने कहा है वही
कहूंगी।

पूज्य· (स) पूजनयोग्य, मान्य,
पूजाई, पूजा तथा आदर
के योग्य, ईश्वर, पिता,
गुरु आदि।

पूर्ण· (स) सकल, समान, समाप्त।

पूर्णेन्दु, (स) पूरा चंद्रमा।

पूतरी· (स) काठपुतरी, आंख
की पुतली।

पूर्णिमा· (स) पूर्णमासी, मही-
ने की अन्त की तिथि।

पूत· (स)} पवित्र, शुद्ध, पुत्र,
(प)} सन्तान, सत्य।

पूतना, (स) कंसभगिनी, हर-
डेबच, हर्रे।

पूर्त· (स) पूर्ण, समाप्त, पूरा।

पूतरी· पूत्री· (प) गुड़िया वस्त्र
की, वा काष्ठ की।

पूप· (स) पक्कमान अर्थात्
पूआ, मीठी पूरी, पुवा,
मालपुआ, फुल्का आदि।

पूतिक· (स) करञ्ज।

पूतिकरञ्ज· (स) करञ्ज।

पूतिफली· (स) बकुची।

पूय. (स) राद, माञ्ज, पूंज,
पीब, पीय।

पूर. पूरा. (स·ट) सम्पूर्ण, उत्तर,
कर्णभूषण।

पूरा. (स) उत्तर, जवाब।

पूरिका· (स) पूरी।

पूरुष· (स) पुंलिङ्ग जीव, नर, पुरुष।

पूर्णी· (स) सीमार।

पूर्व· (स) प्राचीदिक्, जिधर सूर्य्य उदय होता है, प्रथम, अंग, मुख्य।

पूष. (स) पौषमास, पूसमास।

पूषण·} (स) सूर्य्य, पौर्णमासी,
पूषन·} पौर्णमासी।

पूर्वपक्ष· (स) कृष्णपक्ष, प्रश्न, पहिलापक्ष।

पूर्वापर· [स] आगा, पीछा।

पूर्वाह्नि· [स] प्रथमार्द्ध भाग, पहला आधा भाग।

पूछपाछ· मु० पूछना, निर्णय करना, प्रश्न।

पृच्छ· (स) जिज्ञास, खोज।

पृच्छक· (स) जिज्ञासक, खोजी।

पृथक· (स) जुदा, विलग, अलग, भिन्न, बिना, अलहदह।

पृथिवी· (स) धरती, भूमि, जमीन।

पृथकपर्णि· (स) पिठवन।

पृथिरोमा· (स) मीन, दीर्घ।

पृथुका· (स) हिंगुपत्री।

पृथुकृष्णा· (स) मगरैला।

पृथुपत्राभिका. [स] पत्तोंही सुगन्धवाला।

पृथुराज. [स] राजा विशेष।

पृथुरोमा. [स] मछली।

पृथुल (स) दीर्घ लम्बा।

पृथुशिम्ब· (स) सोनपत्ता।

पृथुशृङ्गी· (स) दुम्मां भेड़ा।

पृथु· (स) हिंगुपत्री। [पत्री २।

पृथ्विका· (स) मगरैला १ हिंगु-

पृथ्वी· (स) धरती, इलायची, मगरैला, भूमि, जमीन।

पृष्टपर्णी· (स) पिठवन।

पृष्ट· (स) पीठोला, पिछला भाग, पश्चाङ्गाग, सफ़ह। पीठ। [हरिन।

पृषत· (स) सुपेद बुन्द। को

पेयूष· (स) फेनुस, दूध।

पेलवपट· (स) कँवटीमोथा।

पेनिहहि· (स) त्याग। [प्रिच्छ।

पेषिय· (स) देखने के योग्य,

पेय· (स) पीने के योग्य जल, पीने की वस्तु दुग्ध।

पेशस्कृत् (स) भृंगी, कीट।

पेक्षण (स) देखन, कौतुक, तमाशा, प्रेक्षण, देखना।

पेटकीआग, मु॰ मा बाप का प्यार, सन्तान, औलाद

पेटकी आग बुझाना, मु॰ कुछ खाना, भूखे को कुछ खिलाना।

पेटकी बातें मु॰ मन की बातें, गुप्तबातें, छीपी बातें।

पेटगड़गड़ाना, मु॰ पेट गड़बड़ाना, पेटबोलना, पेटहड़बड़ाना।

पेटगिराना, मु॰ गर्भगिराना, अधूरा गिराना, स्त्री के पेट से कच्चे बच्चे का गिराना।

पेटगिरना, मु॰ गर्भ गिरना, गाभगिरना, स्त्री की पेट से कच्चे बच्चे का गिरना। अधूरा जाना।

पेटचलना, पेटछूटना, मु॰ पेट आना, बहुतझाड़ा फिरना, बहुत दस्त होना, दस्त की बीमारी होना।

पेटजलना, मु॰ बहुत भूख होना।

पेटदिखाना, मु॰ अपनी गरीबी और भूख को जताना।

पेटपालना, मु॰ अपना निर्वाह करना, गुजरान करना, स्वार्थी होना।

पेटपीठ एक होना, मु॰ बहुत दुबला होना।

पेटपोंछना, मु॰ स्त्री का सब से पिछला बालक।

पेटपोसू, मु॰ खाऊ, पेटू, पेटार्थू, पेटपालू।

पेटफूलना, मु॰ बहुत हंसना, हंसी के मारे लोटना, गर्भ रहना।

पेटबढ़ाना, मु॰ बहुत खाना, दूसरे के हिस्से पर हाथ बढ़ाना।

पेटबांधना, मु॰ भूख से कम खाना। [अधा के।

पेटभर, मु॰ जीभर, भरपेट,

पेटभरना, मु॰ खाना, खाचुकना, पचाना, तृप्त होना।

पेटमारना, मु॰ आत्मघात करना, पापघात करना।

पेटमेंपैठना, मु॰ दूसरे को भेदलेना, खुशामद की बातें करके मिलजाना।

पेटमेंलेना, मु॰ सहना, संतोषरखना।

पेटरहना, मु॰ पेट से होना, गर्भिणी होना, गर्भ रहना।

पेटलगजाना, मु॰ भूखों मरना, बहुत भूखाहोना।

पेटलगरहना, मु॰ बहुत भूखा होना।

पेटवाली, पेटसे, मु॰ गर्भिणी, गर्भवती।

पेटसेहोना, मु॰ गर्भिणी होना, पेटरहना।

पेखना करना, मु॰ स्वांग लेना। खेलकरना, बहाना करना।

पेटचलना, मु॰ पेटचलना, बहुतझाड़ाफिरना, बहुत दस्तहोना, दस्त की बीमारी होना।

पेट का दुख देना, मु॰ भूखों मरना।

पेट का पानी न हिलना, मु॰ यह मुहावरा उस जगह बोला जाता है कि जब घोड़ा ऐसी चाल चले कि सवार हिलेडुले नहीं और न किसी तरह का दुख पावे।

पेटहड़बड़ाना, मु॰ दस्त की हाजत होना।

पैज (द) पैठ, पैरवी, प्रतिज्ञा, प्रण, पन, व्रत।

पैसार (स) पैठना। [डांगस।

पैना (द) तीव्र, चोख, धार.

पैसार (प) पैठ, गति, पहुंच, प्रवेश, पैठाव, पैठना।

पैजकरना, मु॰ पणकरना, होड़ करना, प्रतिज्ञा करना, बचनपरस्थिर होना।

पैसा बढ़ाना, मु॰ बहुत खर्च

करना, अंधाधुन्ध खर्च करना, दूसरे का धन चुरालेना या ठगलेना।

पैसाखाना. मु॰ पैसा उड़ाना, बहुत खर्च करना, मज-दूरी करके पेटभरना, रिशवतलेना, हकार जाना, बिश्वासघातकर के लेलेना।

पैसा डुबोना. मु॰ धन गंवाना।

पैसा डूबना- मु॰ धन बर्बाद होना, रुपया पैसा खोया जाना।

पैसेलगाना· मु॰ धनखर्च करना, धनलगाना।

पैसेवाला· मु॰ धनवाला, दौलतमंद. एक पैसे का।

पैसों से दरबार बांधना. मु॰ रिशवत देना, घूसदेना।

पोंगरा· (द) पुत्र, अंग सखा।

पोच· (प) भ्रष्ट, पशुव, अज्ञानी, नीच, बुरा, दुःखित।

पोटगल· (स) गरकट।

पोत· (स॰ प॰) निपट, शिशु, नाव, नौका, जहाज, बालक, अनूपवस्त्र, हरवा, कांच, वस्तु बनाना, पालन, पोत शब्द—दो॰ पोत कहावे निपट सिसु, पोतजुवस्त्र अनूप ॥ पोत-नाव जिमि जलधिनिधि, स्याम नाम सुखरूप ॥१॥ करनशब्द—दोहा। करन कहावे रवितनय, करन करत पुनि काम ॥ करन नाव जेहि खेइये, करन हार भगवान ॥१॥

पोतक· (स) बालक, शिशु, बच्चा।

पोतकी (स) पोईसाग।

पोलिका· (स) रोटी।

पोता.(स)पौत्र, पुत्र के बालक।

पोषत· (स) पुष्ट करता है, पोषण, पालना, पोषणा।

पोसो· (स) पाल्यो, पाला, पो-सना, पालना।

पंकरुह (स) कमल, जलज।

पंगु (स) लंगड़ा।

पंचकवलि· (स) पंचग्रास।

पंचदस· (स) पन्द्रह ।

पंचसबद. (स) पांचबाजा, नगाड़ा आदि ।

पंजर· (स) पिंजरा ।

पंथ· (स) रस्ता । [पालक ।

पोषक· (स) पालनेहारा, रक्षक,

पोषण. (स) पालन, भरण, रक्षण, पुष्टकरण, पुष्टता ।

पोखे· [हि] पासे ।

पो· [स. हि·] सूत, पदार्थ, अक्षक्रम· पासे में का एक।

पौगण्ड· [स किशोरअवस्था ।

पौगण्ड्य· [स] कीमृदक ।

पौण्ड्रक· [स] लालापन्थी १ पौढ़ा, कैतारी ।

पौतिकम् [स] अच्छत ।

पौत्र· [स] पोता, बेटा का बेटा ।

पौधा [स] तरुपल्लव, कोड़ा, नवीनलता, पौधाओं के दो चार भेद का नाम सुनिये । गुंजा नाम—दो० । काक-चिंचिका कृष्णला, गुंजा करत प्रनाम । सुखद स्याम छवि धाम की, लेत नाम अभि-राम ॥१। इमिली नाम दो० एहो चिंचा तिंतडी, आम्लि-का अम्लीय ॥ मृगशावक नैनी कितै, प्राण प्रबाधक भीय ॥१॥ कंजा नाम—सोरठा ॥ एहो करग करंज, गजमाल चित बिरख तुम ॥ कहुं देखु छवि पुंज, रति रंभा मदमोचनी ॥ ॥ केतकी नाम । दो० नाक खंभ जरि चितद्रुमा, केतकि पकरत पाप । तुम आगम आनंद सनि, फैली अंग न समाय ।

पौर· (स ह) पुर, भूमि, जगह, द्वार । [व्यास ।

पौराणिक· [स] पुराण कथा,

पौरिया [ह] डेवढ़ीवान, द्वार पाल ।

पौरी· [स] द्वार, पौर, डेवढ़ी ।

पौरुष· [स] पुरुषत्व, परसा, बल ।

पौर्णमासी· [स] पूर्णिमा

पौष्कर· [स] पुष्करमूल ।

पौष· [स] मास विशेष, पूस।

प्रकट· [स] स्पष्ट, साफ़, ज़ाहिर।

प्रकरण· [स] भूमिका, अध्याय, विभाग, संबन्ध, प्रसंग।

प्रकर्ष· (स) श्रेष्ठ, उत्तमता, प्रधान, उत्कर्ष, बड़ाई।

प्रकार· (स) रीति भेद, सादृश्य, डौल, तरह, तौर।

प्रकाश· (स) आतप, विकाश-युक्त, हास्य, दीप्ति।

प्रकाशक· (स) प्रकाशकरैया, प्रकाशकरनेवाला।

प्रकाशित· (स) उजागर, प्रसिद्ध।

प्रकाश्य· (स) प्रकाशे योग्य, प्रकाश के योग्य।

प्रकृति· (स) चरित्र, माया, स्वभाव, जगत् का उपादानकारण, स्वभाव, धातु, संस्कार, संसार।

प्रकृष्ट. (स) प्रकाश, उत्तम, मुख्य, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, जो काहू प्रकार न हटे, उत्कर्षयुक्त, प्रधान। [अवकाश।

प्रक्रम· (स) चलन, आरम्भ,

प्रक्रिया· (स) प्रकरण, स्वस्त्ययन।

प्रक्लिष्ट· (स) दुःख, क्लेश, कष्ट।

प्रखेद· (स) पसेना, घाम, काम संज्ञा।

प्रख्यात· (स) प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, विदित, विख्यात, कीर्त्तिमान्। [यश।

प्रख्याति· (स) कीर्त्ति, प्रशंसा,

प्रगल्भ· (स) उत्तम, सामर्थी, निडर, शास्त्र मे विजयी, ढीठ, दृढ़, अन्तर्जामी, लज्जाहीन, विना कष्ट जो सब जाना जाए। [तेज़।

प्रचंड· (स) दुर्धर्ष, अत्युग्र, तीव्र,

प्रचार· [स] विस्तार, प्रचरित, रीति, व्यवहार, प्रकाश, घोषणा, [illegible]प्रवेश, फैलाव, चाल, रस्म, दस्तूर, रिवाज।

प्रचारी· (प) चालिकारि के, चलकार के।

प्रचुर· (स) अधिक, बहुत।

प्रचेता· (स) वरुणदेवता।

प्रच्छन्न· (स) } चोरछिद्रको,
प्रछन्न· (प) } गुप्त, ढका।

प्रजा· (स) सन्तान, राज्य का
लोग, संतति तथा जो
जिस के अधिकार में रहै,
रअय्यत।

प्रजापति· (स) राजा, ब्रह्मा,
पिता, ईश्वर। [राई

प्रजारी· (प) जलाई, भस्मक·

प्रजारना· (द) जलाना।

प्रजाशन· (स)} प्रजा का भो-
प्रजासन· (द)} जन करैया।

प्रजंत· [द] प्रयंत, तक, लौं।

प्रजेश· (स) राजा, ब्रह्मा, पिता,
दक्ष प्रजापति—
चौ०। कहीकहन हरिकथा
रसाला। दक्ष प्रजेस भये
तेहि काला। अर्थात् दक्ष
प्रजेश दक्ष प्रजापति।

प्रजेशकुमारी· (स) दक्ष की
पुत्री।

प्रजापतिनायक· (स) दिक्
पालों के नायक।

प्रज्ञ· (स) प्रवीण, विज्ञ, विद्वान,
पण्डित, बुद्धिमान।

प्रज्ञा· (स) मेधा, धी, बुद्धि,
ज्ञान, अक्ल। [उज्ज्वल।

प्रज्वलित· (स) ज्योतिष्मान,

प्रण· (स) क़ौल, नियम, प्रति-
ज्ञा, पण, अहद, इक़रार।

प्रणत· (स) दुःखित, नमन्त,
शरणागत, नियम, प्रति·
नम्र।

प्रणतपाल· (स) दीनपालक।

प्रणति· (स) नमस्कार, प्रणाम,
दण्डवत्।

प्रणव· (स) ॐकार, अढ़ाई
अक्षर संयुक्त, अ० उ० म्०
शिक्षा आदि वेद अङ्ग,
नमस्कार, ओम्कार।

प्रणवौं· (द) प्रणाम करत हौं,
प्रणामकरताहूं, प्रणवना।

प्रणम· (स) नमस्कार, दण्डवत्,
प्रणाम।

प्रणय· (स) स्नेह, प्रीति, अप-
नापन, मुक्ति, प्रेम।

प्रणयनी· (स) वल्लभा, प्रिया,
अपनायतिनी। [वत्।

प्रणाम· (स) नमस्कार, दण्ड-

प्रणाली· (स) परम्परा, रीति,
नाला।

प्रणिधान·(स)मनोयोग,उद्योग।

प्रणिपात·(स) दण्डवत्, प्रणाम।

प्रणी· (स) मनचला, चटल, निर्धारित।

प्रतग्न· (स) आत्मा, अन्तरजामी, तुरीय अवस्था का देवता।

प्रतानती· (स) गन्धप्रसारनी।

प्रताप· (स) महिमा, कृपा, ऐश्वर्य, प्रभाव, तेज, इकबाल।

प्रतापरवि· (स) प्रतापभानु, भानुप्रताप, सत्यकेतु नाम राजा के पुत्र।

प्रतापदिनेशा· (ह) भानुप्रताप चौ०। नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा। सत्यकेतु तव पिता नरेसा। प्रताप भानु तुम्हारा नाम है।

प्रतापसमूह· (स) तेज का समूह।

प्रतापी·(स)प्रतापवान्,तेजस्वी।

प्रतारक· (स) ठग, वञ्चक, धूर्त्त।

प्रतारण· (स) ठगाई, वञ्चना।

प्रतारित· (स) ठगाया, वञ्चित।

प्रति· (स) हेतु, तरफ़, सन्मुख, बदेला, एकएक, सम, समस्त, विरुद्ध, पास।

प्रतिकार (स) } बैर का बदला
प्रतीकार } अर्थात् जिस ने अपने साथ जैसा अपकार किया हो उस के साथ उसी के तुल्य अपकार करना।

प्रतिउपकार (स) प्रत्युपकार, उपकार का बदला।

प्रतिकूल· [स] विघ्न, वैरत्व, विरुद्ध, विमुख, उलटा, विपरित, खिलाफ़, जैसे सगुन पुरुष के बाम भाग में असुभ होय है।

प्रतिबिंब· प्रतिछाहीं· (स) प्रतिछाया, परिछाहीं।

प्रतिग्रह· (स) दानग्रह, आदान।

प्रतिघात· (स) मार के बदले मार। [ध्यान।

प्रतिचिन्तन· (स) पुनःपुन]

प्रतिफल· (स) सुपेद अकवन।

प्रतिज्ञा· (स) प्रण, वचन, स्वीकार, शपथ, निश्चय, अहद, इकरार।

प्रतिपत्. प्रतिपद्· [स] परिवा तिथि, बुद्धि, बोध, ज्ञात। [हरेक दिन।

प्रतिदिन· (स) दिन २ प्रति।

प्रत्यूह (स) विघ्न,

प्रतिध्वनि· (स) प्रतिनाद गूंज शब्द की भनकार लौटी हुई आवाज।

प्रतिनिधि·(स) प्रतिरूप, सदृश, ज़ामिन, कायम, मुकाम।

प्रतिपक्ष· (स) शत्रु, बैरी, रिपु।

प्रतिपक्षी } (स) प्रतिवाद,
प्रतिपक्षी } शत्रु।

प्रतिपाद्य· (स) ग्रन्थ, गुणावाद, बोध्य, ज्ञातव्य, वाच्य, वर्णनयोग्य।

प्रतिवाद· प्रतिवादन, (स) विवाद, भगड़ा, विरोध।

प्रतिवादी-(स) विरुधी, विवादी प्रत्यर्थी।

प्रतिबिम्ब·(स) परिछांही, भास, प्रतिमा, छाया, अक्स।

प्रतिबिम्बी·(स) आरसी, दर्पण।

प्रतिभट· (स) बराबर का वीर, समान वीर। [ज्योति।

प्रतिभा· (स) समझ, बुद्धि,

प्रतिभू· (स) ज़ामिनदार, प्रतीति।

प्रतिमा· (स) मूर्त्ति, छवि, पुतली, छाया। [छांहो।

प्रतिमूरति (स) प्रतिबंब, परि·

प्रतिमाकद·(स) प्रतिवायु, अच।

प्रतिविषा (स) अतीस।

प्रतिविष्णुक (स) मुचकुन्द फूल।

प्रतिष्ठित· (स) प्रतिष्ठायुक्त, इज्ज़तवाला, नामवर।

प्रतिषेध· (स) निषेध, हटक, रोक। [भ्रष्ट।

प्रतिहत· [स] निराश, रोक,

प्रतिहार· [स] द्वारपालक, डेवढ़ीवान्।

प्रतीक· [स] अवयव, प्रतिकूल, विलोम, टुकड़ा, नकल, उलटा।

प्रतिकार· [स] बदला, उपशम उपाय।

प्रतीची· (स) पश्चिमदिशा।

प्रतीक्षा [स] अपेक्षा।

प्रतीति·प्रतित[स]विश्वास, प्रगट ज्ञात, ख्याति, हर्ष,सादर।

प्रतीर, [स] तट, किनारा।

प्रतुदा [स] तोड़ से तोड़कर फल आदि के खाने वाला पक्षी।

प्रत्यकूपर्णी[स] लालचिचिंरी १। बड़ा तामा जड़ी २।

प्रतीत·करना, मु० परिक्षा करना, भरोसाकरना।

प्रत्यङ्ग· (स) इङ्गित, अङ्ग अङ्ग प्रतिङ्ग।

प्रत्यनीक· [स] सेना, दल का बदला, कटक।

प्रत्यह· [स] प्रतिदिन, सब दिन, विघ्न।

प्रत्यक्ष· [स] सम्मुख, साक्षात, आगे, दृष्टिगोचर, दृष्ट, प्रकट, जाहिर।०[पदेश।

प्रत्यादेश, [स] आज्ञा, दैवो-

प्रत्याशा· [स] भरोसा,आसरा।

प्रत्याहार· (स) समाधि, योग-विशेष।

प्रत्युक्ति·(स) वाक्योत्तर, जवाब।

प्रत्युत· (स) वितर्क, अनिश्चय, संदेह, अवधारण, विनि-यम, विकल्प, पक्षान्तर, अथवा, किंच।

प्रत्युत्तर· [स] उत्तर का उत्तर, उत्तरस्योत्तर, जवाब का जवाब।

प्रत्युपकार· [स] बदला उप-कार, उपकार का फल।

प्रत्यूह· (स) उपाधि, विघ्न विकार, पुंज, राशि, कष्ट, दो०। कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन विवेक। होइ घुणा-क्षर न्याय ज्यों, पुनिप्र-त्यूह अनेक॥ अर्थात् ज्ञान कहने में समझने में साधन में कठिन है और जैसे घुन से अकस्मातो अक्षर बन जाता है जो कदा-

चित वैसे ही इन तीनों विघ्नों से निकले तो फिर आगे अनेक प्रत्यूह अर्थात विघ्न खड़े हो जाते हैं।

प्रत्येक (स) हरएक।

प्रथम (स) पहिले, वा मुख्य, आद्य, अग्र, प्रधान, श्रेष्ठ, योग्य।

प्रथमगति (स) पहर्निशिपुरुष रूप धर्म में तत्पर रहना, दान।

प्रद प्रदह (स) दाता, दानी, देनेवाला।

प्रदेश (स) खंड भूमि, प्रदेश।

प्रदक्षिण (स) फिरना, घुमना, मण्डलाकार।

प्रदीपन (स) विष।

प्रदोष (स) निशागमन, रजनी, मुख, सांझ, रात्रि का आना, सायंकाल, संध्या सांझ या सा वेला।

प्रधान, (स) मुख्य, मन्त्री, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रकृति, परमात्मा।

प्रध्वंस, (स) नाश, विध्वंस, हानि, तिरस्कार।

प्रपञ्च, (स) खेलि, विरोध, चूक, धोखा, झूठा, छल, संसार-कपट, बखेड़ा, भगड़ा, विस्तार, संचय, विवाद।

प्रपञ्चित, (स) विस्तारित, भ्रान्त, मुझाया।

प्रपाणक, (स) इमली आदि द्रव्य का पना।

प्रपितामह, (स) परदादा, पराजा। [पराजी।

प्रपितामही, (स) परदादी,

प्रपुन्नार, (स) चकवंड।

प्रपौण्ड्रक, (स) कुमुदक।

प्रपौत्र, (स)पौत्र का पुत्र,पोता का बेटा।

प्रपौत्री, (स) प्रनातिनी, पौत्रिकापुत्री [प्रसव।

प्रफुल्ल, (स) विकसित, खिला,

प्रबन्ध, [स] रचनावाक्य की, युक्ति, उद्योग, उपाय, ग्रन्थ रचना, बंदोबस्त।

प्रवर्षण [स] पर्व्वतविशेष,

प्रवर्षण गिरि इससे कहा गया कि वहांसब दिन पानी बरसता है।
प्रबल, [स] भारी, अगम, बलवान्, सामर्थी, मूंगा, ।
प्रबला, [स] हाथकुहारा।
प्रवाल, [स] विद्रुमलता, मूंगा, पल्लव, मोती। [श्रोत।
प्रवाह [स] धारा, नदी को
प्रवाहिका, [स] अतिसार, पेटचलो।
प्रविशे, [प] घुसे, पैठे। [या।
प्रविष्ट [स] निविष्ट, भीतरग-
प्रवीण [स] पण्डित, ज्ञानी, चतुर। [सचेत।
प्रवुद्ध [स] जायत, जागता,
प्रवेषण [स] भोजनआरस- करना। [भोजन।
प्रवेषणिक, [स] पारसकर्त्ता,
प्रबोध [स] ज्ञान, सूर्त्त, जागता, उपदेश प्रकृष्ट, बुद्धि, जागरण।
प्रबोधक, [स] बोधकर्त्ता, उप- देशदाता, जनानेवाला।
प्रभञ्जन [स] पौन पवन, वायु पैरी- रूप, समीरअनुवत्, हवा।
प्रभंजनजाया [द] हनुमान, चौ०। उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया। जीत न जाइ प्रभंजन जाया॥ प्रभंजन अर्थात् शत्रुभंजन जो पवन का नाम है उनके पुत्र।
प्रभव, [स] उत्पत्ति, जन्मकारण उत्पन्न, पराक्रम। [अभीष्ट।
प्रभवस्त, [स] मनोरथ, कामना,
प्रभा, [स] शोभा, प्रकाश, चमक, दीप्ति।
प्रभाउ (व) प्रभाव, प्रताप।
प्रभाकर, [स] सूर्य्य, दिवाकर, दीप्तिकारी, प्रकाशक, अग्नि चन्द्रमा समुद्र।
प्रभाकीट [स] जुगनो, खद्योत।
प्रभात, [स] प्रातकाल, भोर, तड़के, फज्रिर या सुबह।
प्रभाती, [स] रागिनीविशेष।
प्रभाव [स] माहात्म्य, प्रताप, ऐश्वर्य, तेज, शक्ति।
प्रभावती, [स] पातालगङ्गा।
प्रभास [स] तीर्थस्थान विशेष।
प्रभु [स] सत्तामान् पुरुष, राजा, स्वामी, गुरु, ईश्वर, रघुनाथ, मनु, समर्थ, पति

पारा धातु, लक्षण ।

प्रभुसन [स] स्वामी से ।

प्रभृति. [स] प्रकार, इत्यादि. तदारंभ्य, आदि, वगैरह ।

प्रमथ [स] सेना, दल ।

प्रमदा [स] सुलक्षणास्त्री, स्त्री, मेहरारू ।

प्रमा [स] अनुभव, यथार्थज्ञान, भ्रमरहितज्ञान ।

प्रमाण [स] निश्चय का कारण, मर्यादा, शास्त्र, सत्यवादी, हेतु, प्रमाता, यथार्थज्ञान

प्रमाणिक [स] यथारूप, योग्य, प्रमा, ज्ञान साधन इन्द्रिय ।

प्रमाता [स] प्रमाणकर्त्ता ।

प्रमातामह [सं०] प्रनाना ।

प्रमातामही [सं०] प्रनानी ।

प्रमाद [सं०] चूक, भूल, बाद अनवधानता, उन्मत्तो जाना, कर्तव्य से निवृत्ति और अकर्तव्य में प्रवृत्ति, ।

प्रमादी [सं०] उन्मत्त, असोच, अचेता ।

प्रमद्र [सं०] असावधान ।

प्रमुदित [सं०] हर्षित, आनन्दित, प्रफुल्ल ।

प्रमेय [सं०] प्रमाणयोग्य, उपमायोग्य । [रोग ।

प्रमेह [सं०] वीर्य्य में का

प्रमोक (सं०) जल, नीर, तोय ।

प्रमोचन (सं०) मुक्तकरण, , उद्धारण ।

प्रमोद. [सं०] हर्ष, आनन्द, सुख, खुशी ।

प्रमोदक [स] साठी धान ।

प्रमोदनी [स] योगिनी वृक्ष का गोंद । [हैं, देत हैं ।

प्रयच्छति [सं०] पूजनकरत

प्रयत्न [सं०] अत्यन्तचेष्टा, परिश्रम, कार्यानुकूलयत्न, उत्तम उपाय, तदबीर ।

प्रयाग (सं०) तीर्थस्थान-विशेष । [गमन ।

प्रयाण (सं०) धावा, यात्रा,

प्रयात (सं०) पवित्र, शुद्ध ।

प्रयातः (सं०) प्राप्त होते हैं छिन्नग । [सब ।

प्रयाति (सं०) प्राप्तहोता है ।

प्रयान्ति [सं०] प्राप्तहोत हैं सब ।

प्रयास· (स) क्लेश, परिश्रम, थकाई, यत्न, उद्योग।

प्रयुक्त· (स) भरा हुआ, मिश्रित।

प्रयोग· (स) अनुष्ठान, दृष्टान्त, फल। [प्रेरक।

प्रयोजक· (स) उठानेहारा,

प्रयोजन· (स) कारण, कार्य्य आवश्यक, हेतु, मतलब।

प्रयोज्य· (स) भृत्य, सेवक, कार्य्यकर्त्ता।

प्ररोही (स) बेलिआरोपर

प्रलम्ब· (स) विशाल, बड़ा, दैत्यविशेष।

प्रलय· (स) सृष्टपदार्थोंमें नाशाधिकरणे काले ब्राह्मणे दिनावसाने च तास्मिं चेष्टाभावे, लम्बा, कल्प का अन्त, युगान्त, वा पांच प्रकार, नित्यप्रलय, युगान्तप्रलय, नैमित्तप्रलय, अत्यान्तक प्रलय, महाप्रलय, ॥५॥ प्रलय का नाम दो०। प्रलै कल्प कल्पांत हैं, • संवर्तक ले काल। सैन कातर हरि सिंधु श्री, आपत अरन विश्रान्त॥१।

प्रलाप· (स) प्रशंसा, निरर्थक वचन, गप, बड़ाई, रोदन, अनर्थ का वाक्य, वाद विवाद लोकवेद मर्य्याद हीन, मिथ्या बकना, अर्थरहीत बचन। सोरठा। प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भये बानर निकर। आइ गये हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस॥ इस प्रकार श्री गोसाईं जी ने ठौना लिखा है क्योंकि आदि में यह लिखा कि "बोले वचन मनुज अनुहारी।" अंत में लिखा कि "प्रभु प्रलाप सुनि कान" बिनु समुझे जो बकि उठें, कहिये ताहि प्रलाप॥

प्रलापी· (स) व्यर्थ बोलनेवाले। दो०। सोइ रावन जग बिदित प्रतापी। सुने न श्रवन अलीक प्रलापी॥ है अलीक प्रलापी झूठ बोलनेवाले।

प्रलेप (स) औषधादिक लेपन, उन्मत, निष्प्रयोजन, अनर्थ वाक्य कहना ।

प्रवर्तक (स) आज्ञापक, प्रेरक, नियोजक, प्रवृत्ति करने वाला ।

प्रवर (स) अगर ।

प्रवाल (स) मूंगा रत्न ।

प्रवालफल (स) लालचन्दन ।

प्रवाह (स) प्रवृत्ति, नद्यादि का वेग, शीघ्रगामी घोड़ा ।

प्रवीण (स) निपुण, चतुर, कुशल, होशियार । [उद्यत ।

प्रवृत्त (स) प्रविष्ट, आरब्ध,

प्रवृत्ति (स) इच्छा, अभिरुचि, प्रवर्तन, प्रवेश, प्राप्ति, आरंभ, वार्त्ता, प्रवाह ।

प्रवेश (स) पैठ, पहुंच, पूगन, अंतर्गमन, घुसना ।

प्रशंसक (स) स्तुति करनेवाला ।

प्रशंसनीय (स) प्रशंसायोग्य, भला, उत्तम ।

प्रशंसा प्रसंसा (स, द) स्तुति, बड़ाई, श्लाघा, गुणकीर्तन, तारीफ़, सराहना ।

प्रशमन (स) दमन, वध, रोग नाश ।

प्रशस्त (स) आनन्दी, योग्य, भला, सफा, प्रशंसा योग्य, श्रेष्ठ, क्षेम ।

प्रशस्ति (स) उत्कृष्टता, प्रशंसा ।

प्रशस्ता (स) प्रशस्त ।

प्रश्न (स) पूछना, जिज्ञासा, पृच्छा, सवाल ।

प्रष्ट (स) अग्रगामी, श्रेष्ठ ।

प्रष्टा (स) जिज्ञासुक, पूछनेहार ।

प्रष्ठा (स) पीठ, अगुवा, मुख्य, श्रेष्ठ ।

प्रसक्त (स) आसक्त, सनातन, प्राप्त, सम्बन्ध ।

प्रसङ्ग (स) प्रस्ताव, मेल, सङ्गम, कथा की चर्चा, संगति विशेष, सम्बन्ध ।

प्रसन्न (स) हर्षित, आनन्दित, निर्मल, दयालु, संतुष्ट, कृतानुग्रह, सुखी ।

प्रसन्नता (स) हर्ष, आनन्द, प्रसाद ।

प्रसव, (स) पुष्पफल बन्ध संयोग्य, गर्भ, जन्मावना, फूल फलो, उत्पत्ति।

प्रसभ, (स) हठ, खैंचि, पकर।

प्रसविन्, (स) उत्पन्न करनेवाला, सन्तान करनेवाला।

प्रशीर (स) अतिशीर।

प्रसस्त, (स) बेहतर, अच्छा, निर्मल बुद्धि, जाकी, नाम रावणपुत्र का।

प्रसहा (स) ठोर से जोर करने वाले पक्षी गीध आदि।

प्रसाद, (स) देवता का उच्छिष्ट, कृपा, जूठन, प्रसन्नता, अनुग्रह, मेहरबानी।

प्रसाद्निका (स) टीकीधान।

प्रसादी, (स) देवता का निवेदितान्न।

प्रसाधन (स) वेशरचना, सुन्दर रचना, साधन।

प्रसारिन्· (स) बहता हुआ।

प्रसारणी (स) गन्धप्रसारिनी।

प्रसिद्ध (स) प्रकाशित, व्यक्त, विख्यात, भूषित, मशहूर।

प्रसिद्धि, (स) विख्याति, प्रचार।

प्रसुत (स) मांड़ पसाया हुआ।

प्रसीद (स) प्रसन्न होहु, कृपा करहु, रक्षा करो, प्रसन्न हो।

प्रसू, (स) माता, अम्बा, जननी।

प्रसूत, (स) उत्पन्न, प्रदररोग, माता, उत्पन्न होनेवाला, अर्थात् सन्तान।

प्रसूता प्रसूती, (स) उत्पन्न कारिणी, जायमानकारिणी, प्रसूतिका, प्रसवकारिणी, उत्पत्ति।

प्रसून· (स) पुष्प, फल, मुकुल, जन्मा, फूल। [बाला।

प्रशंसक· (स) स्तुति करने·

प्रसंसा· (द) प्रशंसा, स्तुति, सराहना। [पत्थर।

प्रस्तर· (स) पाषान, मणि,

प्रस्तार· (स) अभिअन्तर, भीतर। [प्रसंग।

प्रस्ताव· (स) अवसर, प्रकरण,

प्रस्विद· (स) पसीना, पसेव।

प्रस्थ· (स) विस्तार, मान, तौल, मार्ग, पहाड़ की चोटी का स्थल, सानु।

प्रस्थ (स) १६ पल का १ प्रस्थ वो ४ प्रैचे भर का १ पल।

प्रस्थपुष्प (स) मरुआ।

प्रस्थान (स) यात्रा, बिदा, गमन, घर से जाना।

प्रस्थकी (स) मांचिका।

प्रस्थित (स) गया हुआ, चला हुआ।

प्रस्थिति (स) कीर्त्ति, यश।

प्रस्रवन (स) पर्वत्त में पानी का झरना। [हुआ।

प्रहत, (स) पीटा हुआ, बजाया

प्रहतमुरजा (वि॰प्रसादाः) बजते हैं मृदङ्ग जिन में।

प्रहर्ष (स) अतिश्रेष्ठ हर्ष।

प्रहर (स) पहर, दिन का चौथा भाग।

प्रहस्त (प्र बड़ा, हस्त हाथ) रावण का पुत्र, रावण का बेटा, जो रावण को लङ्काकांड मानस में उपदेश दिया है। बड़े पसरे फैले हुए हाथ वाला। बड़ा हाथ। कोई २ कहते हैं कि लङ्कापुर पैठते में अंगद ने प्रहस्त ही को मारा था। मानसमयङ्क लङ्काकाण्ड में लिखा है दो॰। मिलु प्रहस्त दण्डे करै, लरै पेन मलवान। देखि विहंसि अंगद कहै, ना गुरु किहै सुजान॥ यह दोहा इस चोपाई पर है। पुर पैठत् रावण कर बेटा। खेलत रहा सो हो गई भेटा॥ बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई। जुगल अतुलबल पुनि तरुनाई॥ बात को कर्ष यह कि रावण के बेटे ने पूछा कि बंदर तैं कौन है अंगद बोले कि हम रघुनाथ के दूत हैं तब उस ने कहा कि जिस की पत्नी को हमारे पिता हर लाया है इन्हीं ने कहा मैं उन्हीं का दूत हूं जिन्हों ने तेरी फूफू की नाक कान काट लीने हैं यही बात की कर्ष है।

प्रहार (स) मारण, चोट, घा-घात, हथियार का चलाना, मार, मारना, शस्त्र चलाना।

प्रहारवल्ली (स) रोहिनी।

प्रहारी (स) मारनहार, घातक।

प्रहित (स) भेजाहुआ, चलाया हुआ जैसे कमानसे तीर।

प्रहेलिका (स) पहेली, दृष्टकूट, चोल, ठट्ठा।

प्रह्लाद (स) ज्येष्ठ पुत्र चार पुत्रों में हिरण्यकश्यप के चौर जाके विद्यागुरू सण्डामर्क, हिरण्याता, शुक्राचार्य, कुल गुरु दैत्यों के पुत्र थे, चल्लानंद, ग्राह्लाद।

प्राकाम्य (स) कामसिद्धि।

प्राकृत (स) भाषा, देशभाषा, नीच, स्वभाविक, अयोग्य, माया का विकार, साधारण मनुष्य, अनुष संज्ञा, सदामायाकभी।

प्राकृतकवि (स) सूरदास आदि, पण्डित, बुद्धिमान चतुर।

प्रागल्भ्य, (स) गर्व्व, घमण्ड।

प्राची (स) पूर्व्व दिशा का वाचक, पूर्व दिशा, पूरब, मशरिक।

प्राज्ञ (स) प्रान के स्वरूप की प्राप्ति, सुषोप्ति अवस्था का देवता।

प्राचीनी (स) पाठी। [जड़।

प्राचीमूल, (स) पूर्वदिशा की

प्राचीन (स) पुराना।

प्राट (स) वर्षा, झरीकाल।

प्राण (स) वायुविशेष, श्वास, जीव, पांच प्रकार का देह में रहनेवाला, बायु, इन्द्रिय, पराक्रम।

प्राणपिण्ड (स) बोल, बोल।

प्राणनाथ (स) पति, स्वामी, मालिक। [पलायन।

प्राणमुख (स) भागजाना,

प्राणी (स) प्राण से बना है। जीवधारी, जीव, जंतु, प्राणवाला, प्राणी नाम।

दोहा ॥ जन्तु शरीरी

चेतना, जन्मी प्राणी जंतु ॥
सृष्टि रची विधि चतुर्विध,
कीन्ही कृपा अनंत ॥१॥

प्राणायाम· (स) श्वास का निरोध, योगांग विशेष प्राणों के रोकने का उपाय, पूरक कुंभक रेचक ।

प्राणिन्, (स) जीवधारी. जीव, प्राणी, चेतन, जीवधारी ।

प्रात (स) भोर, प्रभात, सवेरा, तड़का ।

प्रातक्रिया (स) स्नानसंध्या आदि, नितनियम ।

प्रातर्, (स) भोर, प्रात, प्रभात, प्रातःकाल, सुबह ।

प्रातकृत(स)स्नानसंध्या आदि ।

प्रान्त (स) सीमा ।

प्राप्, (स) पाया हुआ ।

प्रापणीय, (स) पानेयोग्य, पहुंचाने योग्य ।

प्राप्य (स) पहुंचकर, पाकर ।

प्रादुर्भाव (स) प्रकाश, आविर्भाव ।

प्राप्त·(स) जाको लाभ भी हो मिला, लब्ध, पायाहुआ, पहुंचाहुआ ।

प्राप्तवानीरशाखम्, (वि॰ बस-नम्) पकड़ा हुआ बेरसल की शाखा से ।

प्राप्ति· (स) लब्ध, नाम सिद्ध, लाभ, गोड़ी, वृद्धि प्राय, पाकर, पहुंचकर ।

प्राहट· प्राहड, (स) वर्षा ऋतु ।

प्रामाणिक· (स) अतिमान्य, सिद्धान्त ।

प्रातस्नायी द्विज (स) कुश, भोरे नहाने वाला ब्राह्मण, कुश शब्द, दोहा ॥ कुश
सो कथा कुश कोट पुनि,
कुश करि कमलन सोइ ॥
प्रात समाई विप्र कुश,
कमलकलो विध होइ ॥१॥

प्राविट· प्रावृष, प्रवृषा, (स) प्रथम वर्षा ऋतु का मेघ, अर्थात् काल, वैशाखा, प्र बहुत जल बरसना, बरसा-काल, वर्षा ऋतु, बरसात, जैसे मानसरामचरित्र में लिखा है । चौ॰ । प्राहट सरद पयोद घनेरे । लरत

मनहुं मारुतके प्रेरे। अ-र्थात् प्रावृट अर्थात् वर्षा के काले घन बादर और शरद के श्वेत बादर के समान बादर। ऋतुक: हैं हिम ऋत १ शिशिरऋतु २ बसन्तऋतु ३ ग्रीष्मऋतु ४ वर्षाऋतु ५ शरदऋतु ६ ये सब दो दो महीने की हैं। अगहन पौष तो हिम ऋतु। माघ फालगुण शिशिरऋतु। चैत्र बैशाख बसन्त ऋतु। ज्येष्ठ अषाढ़ ग्रीष्मऋतु। श्रावण भादों वर्षाऋतु। आश्विन कार्तिक शरद ऋतु हैं ॥६॥ अन्य मत से लिखते हैं ॥ मेष और वृष की संक्रांति ये दोनों ग्रीष्म ऋतु है १ और मिथुन कर्क की संक्रांति को प्रावृट ऋतु कहिये इस ऋतु में बादलों से अम्बर छाया रहै मरीड़ि को लिये थोड़ा बरसे भी यह ऋतु वर्षा ऋतु का भेद है २ सिंह और कन्या की संक्रांति को वर्षा ऋतु कहिये ३ तुला और वृश्चिक की संक्रांति को शरद ऋतु कहिये ४ धन और मकर की संक्रांति को हेमन्त ऋतु कहिये ५ कुंभ और मीन की संक्रांति को बसन्त ऋतु कहिये ॥६॥

प्रामाण्य· (स) ग्राह्य, विश्वास्य।

प्राय: (स) बहुधा, कभीकभी लगभग।

प्रायश्चित· (स) पापनाशक कर्म्म, पापक्षयार्थ शास्त्र विहित व्रतादि कर्म्मों का करना।

प्रायश· प्रायशस·, प्रायेण. (स) विशेष, विस्तार, बहुत करके, बहुधा, प्राय:, बाहुल्य, अधिक, अकसर।

प्रायास· (स) क्लेश, कष्ट।

प्रारब्ध·(स) भाग्य, लिखा, प्रारब्ध, दैव, अदृष्टभेद, पिछले जन्मों के वेकाम में जिनकी सुभा·

शुभ फलभोगने को यह शरीर बना है, क़िसमत।

प्रारब्ध· (स) आरम्भ, उपक्रम, प्रथम, शरू, इबतिदा।

प्रार्थक (स) प्रार्थनाकरनेवाला स्तुति करनेवाला, याचक।

प्रार्थना· (स) विनती, चाहत, वाञ्छा, मांगना, याञ्चा, अर्ज़ करना।

प्रार्थित· (स) वाञ्छित, यांचा, मांगा।

प्रालब्ध· प्रारब्ध· (स) ललाट, भाग्य, अदृष्ट, लिखाहुवा, दैव, अदृष्ट भेद, पिछले जन्मों के कर्म जिनके शुभाशुभ फलभोगने को यह शरीर बना है, क़िस मत।

प्रालेय· (स) पाला, तसार।

प्रालेयाद्रि, (स) पालेका पहाड़ अर्थात् हिमालय।

प्रावृत· (स) ढका, ओढ़नी, घूंघट।

प्रावृष·(स)पावस, बरसा ऋतु।

प्राश्रम·(स क्लेश, परिश्रम कष्ट।

प्रासाद· (स) अटारी, झरोखा, राजभवन, महल, भवन।

प्रांशु· (स) दीर्घ, लम्बा।

प्रिय· (स) प्यारी, अज़ीज़ बल्लभ, प्यारा, हृद्य।

प्रियक· (स) आसन।

प्रियकर· (स) कदम्बवृक्ष।

प्रियङ्करी· (स) सुपेदफूल को रेंगनी।

प्रियङ्गु· (स) प्रियंगु, १ चारो रंग की कांगनी २।

प्रियतम· (स) सज्जन, पति, अति प्यार, बहुत प्यारा, अति, प्रिय. अत्यंतप्रिय।

प्रियव्रत· (स) राजा उत्तान पाद के लघु तारूों के पुत्र जाकी कथा है।

प्रियसी· प्रिया· (प॰स) बल्लभा, पियारी। [नेवाली।

प्रियवादिन (स) प्यारसे बोल-

प्रिया (स) प्रियंगु, प्यारी, अपनी, स्त्री।

प्रियाल· (स) चिरंबजी।

प्रीति· (स) हर्ष, मोद, तृप्ति, प्रेम, प्यार, मुहब्बत, दोस्ती प्रीति वा लज्जा वा लोक नाम-छंद काव्य। कीन्ह भक्ति हरि प्रेम प्रीति दोहद सनेह हित ॥ हार पर्णोपनु राग त्यागि बैराग देत मति ॥ बीड़ालज्जा सकुच तथा संकोच छूटी सब ॥ छोड़े हरि के हेत हास निज सही लोक भव ॥१॥ भाव भवन संसार विश्वविष्टप जग संसृति ॥ देत हमै पद योगभोग दीन्हे कुबजा पति ॥ घोर न तप उपदेश आप हरि धूरि उड़ावत ॥ चौबीस मता छंद नाम यह काव्य कहावत ॥२ ॥ दोहा। ता औसर गुंजन लग्यो, चंचरीक एक आय ॥ तासो बोली गोपिका, यदुपतिसखहि सुनाय ॥१

प्रीता· (द) मित्र ।

प्रीते· (प) प्रीतियुत ।

प्रेत· (स) शव, मुरदा, मृत्युका।

प्रेतनदी· (स) बैतरणीनदी ।

प्रेतनिवास·(स) श्मशान, मसान मुर्दारघाट, मुर्दघटी ।

प्रेम· (स) प्रीति, स्नेह, पियार लाड। [मुहब्बत, ।

प्रेमन्· (स) प्रेम, स्नेह, प्रीति

प्रेमाभक्ति· (स) जो प्रेम ते अंध होकैं और अंग के भूषण, और अंगमों पहिराबै, भोजन औरते और खिलावि इत्यादिक जैसो सेवरी अरु बिदुर जी को फल ।

प्रेमी· (स) स्नेही, छोही, मयालु।

प्रेरक· (स) आज्ञाकरैया, भेजनहार, आज्ञाकरनेवाला, प्रेरणाकरनेवाला।

प्रेरण· (स) भेजना, नियोग, आज्ञा, प्रवर्त्तन, पठवना, आज्ञादेना।

प्रेरित· प्रेरे· (स) भेजाहुआ, पठायाहुआ, आज्ञापाके,

आज्ञा किया गया, प्रेरण, भेजना, आज्ञा पाये, पठाय भेजा, भेजाना।

प्रेष्ट (स) वल्लभ, अत्यन्तप्रिय।

प्रेष्य. (स) सेवक, पियादा, दूत।

प्रेषण. ( ) कहीं जाने के लिये आज्ञा देना, भेजना।

प्रेमसमूह (स) उत्कंठा, छंद मंजुभाषिनी॥ कांतसखि कांति स्यामकी॥ रति भई हृदय आस काम की॥ सखि देख ये अब परे गले भुजा॥ मगनें जगांन धुना धुना॥ १॥

प्रेह (स) इन्द्रीचेष्टा।

प्रेक्षण (स) चक्षु, दर्शन, देख जाना।

प्रोक्त (स) कथित, भणित, उक्त कही, कहागया, कहा।

प्रोढ़ (स) सेयानपन, दृढ़ता, मोटा। [बध.।

प्रोक्षण (स) छिड़कना, यज्ञ में

प्रोषित (स) प्रदूर बस, दूर रहना, जो विदेश में हो, विदेश गया हुआ, विदेशी, प्रकसाया।

प्रोषिता, प्रोषितपतिका, प्रोषित भर्त्तृका (स) प्रोषिपतिवा भर्त्ता, वह नायिका जिस का पति परदेश में हो।

प्रोषिता छंदविहार। कठोर हदे तनु स्यादमय। विनु नित्य अभीत॥ दिये पयनाग हरै अस ज्यों बलि वामन जीत॥ तजे हरि हह पिता जननी पुनि प्रीति प्रतीत॥ फनेंद्र कह्यो जगनं षट छंद बिहारन रीत॥ १॥

प्रौढ़ (स) सेयाना, निपुण, साहसी, बड़ा सामर्थ, प्रवीण, मोटा।

प्रौढ़ (स) साभिमान यतकरी जोखिम, विवाद, उद्योग, अभिमान से करना।

प्लव (स) नौका, कूद, फांद उछाल, केवटो मोथा।

प्रवा· (स) जल, में पैरनेवाले पची।

प्लच· (स) पांड़र।

प्लीहशत्रु· (स) शर्फोंका।

प्लीहहन्त्री· (स) रोहेर।

प्लवङ्ग· (स) बानर, बन्दर।

प्लुत·(स)स्वरविशेष,डूबाव,दह।

प्लुति· (स) उछलना, कूदना, फांदना।

प्यास बुझाना,मु॰ प्यास मिटाना, जलपीलेना, पानी पीलाना।

प्यारामानना, मु॰ आदर करना, सन्मान करना, श्रेष्ट समझना।

प्यासलगना,मु॰प्यासा होना।

प्यासे मरना, मु॰ बहुत प्यास होना।

फ

फञ्जी·फञ्जिका· (स) बभनेठी।

फणिमणि· (स) } सांप का
फणिमुक्ता· } मोती।

फणी· (स) } मरुआ।
फणिज्ज· }

फटिक· (प) बिल्लौर, स्फटिक, उज्जल पाथर।

फटिकशिला· (प) वह शिला जो पहाड़ मे टूट के गिरी हो, पहाड़ का टूटा हुआ पत्थर। [मस्तक।

फण· फन, (सद) सर्पकापसारा

फणधर· फणिक· फणी· (स) सर्प, नाग, व्याल, सांप।

फणि·फनि·(स,द) सांप, सर्प।

फणीन्द्र· फणीश (स) शेषनाग, बासुकी, सर्पराज।

फरशा· (प) फावड़ा, कुल्हाड़ी, टांगी।

फरी· (स) ढाल, फलक।

फल· (स) वृच का शस्य, कर्मसिद्ध, मेवा, अर्थ, धर्म, काम, मोच,इन्ही का फल, कर्म का फल, लाभ, नतीजा। [बहेरा।

फलत्रिका· (स) अवंला, हर्र,

फलपूरक· (स) बिजौरा लेमू।

फलशाक· (स) तरकारी, फल के किसम की।

फलक· (स) ढाल, ललाट की हड्डी।

फलंसी· (स) अखरोट।

फाल्गुन· (स) मासविशेष, फागुन।

फलगुनी· (स) किंचित्, थोड़ा।

फलद· (स) फलदायक, फलोदाता। [सदैववार।

फलदाता· फलदायक· (स) फ·

फलपिता· (स) पुष्प, फूल।

फलवैराग्य· (स) जो विषय त्याग, वाको पुनि चाहना ही न होना।

फलरुहा· (स) पाटली।

फला· (स) मेथी, समीष्टच।

फलाध्यच· (स) खिरनी।

फलिनी· (स) प्रियङ्गु।

फलेन्द्र· (स) फलेना जामुन।

फली (स) चंपाफूल।

फंकामारना, मु॰ मुट्ठीभर चीज़ एक बार मुंह में लेना, भूखेरहना।

फफोले फूटने, मु॰ दिल में दुख पाना, मन में चिंता होना, दुखपाना।

फफोले दिल के फोड़ने, मु॰ मन की चाह पूरी करना।

फबती कहना, मु॰ चुटकुला करना, चुहलकरना, किसीके पहरावे की हंसी करना।

फलपाना, मु॰ भले या बुरे काम का एवजा मिलना, बदला मिलना। [वै फल।

फलफलारी, मु॰ नाना प्रकार

फलफूल, मु॰ वनस्पति।

फलनाफूलना, मु॰ भाग्यवान होना, सुखी होना।

फलांग· (द) डेग, कूद, फाल।

फलित· (स) फल समेत, फलसहित।

फांसीदेना, मु॰ गला दबाना, मार डालना, फांसी पर चढ़ाना या लटकाना।

फांसीपड़ना, मु॰ फांसी दिया जाना, माराजाना, लटकाया जाना।

फांसी लगाना, मु॰ गलाघोंटना, गलादबाना, मार डालना।

फागखेलना, मु॰ अबीर उड़ाना होलीखेलना, गाली बकना।

फाड़खाना, मु॰ भमोंड़ना, सताना, बहुतक्रोध करना।

फिटफिट मु॰ धिक्धिक, छीछी।

फिरजाना मु॰ पलाना, धक्का मारना, बागी होना, ऐंठना, बलखाना, टेढ़ाहोना।

फुंकदेना, मु॰ आगलगा देना।

फूंकफूंककर पांवधरना, मु॰ बहुत सावधानी से काम करना या रहना।

फूटपड़ना, मु॰ बखेड़ा मचाना, बिरोध होना।

फूट फूट कर रोना, मु॰ उमंड उमंड कर रोना, बहुत रोना।

फूट होना, मु॰ किसी की सम्मति नहीं मिलना, एक मता न होना।

फूटरहना, मु॰ अलगहोजाना, जोड़ा न होना।

फूलजाना, मु॰ सूज जाना, प्रसन्न होना, आनन्दित होना, मोटा होना।

फूलभड़ना, मु॰ सुंदरताई से बोलना, मीठाबोलना, दीपक से जले हुए तेल के टपकों का गिरना।

फूलपड़ना, मु॰ आग लगजाना, जलजाना।

फूलबैठना, मु॰ खुशहोना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, प्रसन्न होकर बैठना, रंज को बैठना।

फूलतापिरना, मु॰ अत्यन्त प्रसन्न होना, बहुतखुश होना।

फूला न समाना, मु॰ मगनहोना, अत्यन्त आनंदित होना, आनन्द से फूल जाना।

फूस में चिनगारी डालना मु॰ बखेड़ा मचाना, झगड़ा उठाना।

फेंकदेना, मु॰ दूर गिरादेना।

फेंटबांधना, मु॰ किसीकाम कि करनेके लिये तैयार होना, ठानना, ठहराना, कमर बांधना।

फेरखाना, मु॰ घुमना, चक्कर खाना, दुख पाना, तक-लीफ उठाना।

फेरदेना, मु॰ उलटादेना, पीछा दे देना, लौटादेना।

फेरपड़ना, मु॰ फरक पड़ना, बीच रहना, चक्कर पड़ना, दुख होना।

फेरफार, मु॰ छल, फरेब, धो-खा, दगा, खोसरा खोसरी, परस्पर, फेराफेरी।

फेरफारकरना, मु॰ अदल बदल करना, परिवर्तन करना, कपट करना, धोखा देना।

फेराफेरी, मु॰ आपस में किसी चीज़ को लेना और पीछे देना।

सिरपर हाथ फेरना, मु॰ फुसला-कर ठगना।

हाथ फेरना, मु॰ प्यार करना, दुलार करना, छोहकरना।

फली, (स) वृक्ष, सफल, छीमी चम्पाफूल। [आनन्द।

फलोदय (स) लाभ, प्राप्ति,

फलिपुष्पा (स) गूमा।

फलेरुहा. (स) पांडुरवृक्ष।

फल्गू (स) कोठाडुम्बर।

फाणित (स) राबा।

फहराई (द) कूदती हैं, फहराते हैं।

फाबी, (द) पुष्ट, मज़बूत, प्राप्ति, फबो, फबना, सजना। सोभना, चौ॰ कुमतिहि कस कुभेषता फाबी। अनअहि-वात सूच जनु भाबी। अर्थात् सोही भावी मानो अन अहिवात को जनावती हैं।

फाल्गुन (स) मासभेद, नाम अर्ज्जुन पांडव, मास विशेष, फागुन। [सिद्धि।

फुर (द) सत्य, साच, ठीक,

फुलवाई (प) फूल का बाग़, फूलवारी। [सिद्धि।

फूर (द) साच, सत्य, ठीक,

फेन (द) भाग।

रूपी धन्वा से वचन रूपी बाण जो रावण के अंतस में बेध जाते हैं उनको मानो अपने उत्तर रूपी संडसी से निकालता जाता है आप निकालने का सावकाश नहीं पाता।

बकी· (द) बकुली, चौ०। फिरा कमँ प्रियलागु कुचाली, बकिहि सराहति मान मराली॥ बकुली को हंसी मान प्रशंसा करती है।

बक· (स) बगुलापक्षी, झक, गया।

बकलाम्बर· (प) केला का बकुला का वस्त्र।

बकरी· (द) छेरी, घाजा, अजा लिंगा शब्द। दोहा। अजा छाग माया अजा, जिहि मोहे अजवाम। निशा कामिनी कहत कवि, निसा हरिद्रा नाम।

बकरा· (द) छेर, अज शब्द। दो०। अजबकरा अज पितामह, अज कहिये पुनि ईस। अजजीवन भर भर कहत, अज एकै जगदीस।

बकुल· (स) मौलसिरीपुष्प, मौलसिरी, मुरसली, चौ० चंपक बकुल कदंब तमाला। पाटल पनस पलास रसाला। नव पल्लव कुसमित तरु नाना। चंचरीक पटली कर गाना। अर्थात् बकुल मौलश्री पाटल गुलाब कोज पांडरि पनस कटहर रसाल आम चंचरीक पटली भ्रमर की पंक्ति।

बक्ता· } बकता } (स) बोलता, बकनहार कथनिक, कहनेवाला।

बक्र· (स) } बक्र } बाङ्का, टेढ़ा।

बग· (स) क्रौंच, बक, बगुला।

बगछुट· (प) सरपट, धावा, झटपट।

बगमेल· (प) दो०। आइ गए बगमेल, धरहु धरहु धावत सुभट। जथा बिलोकि अकेल, बाल रबिहि घेरत

दनुज ॥१॥ बगमेल कहैं बाग छांडि के अर्थात् अश्व आदि वाहन दौड़ाय के वा बाग मिलाय अर्थात् परा टोनों जमाय के एकत्र ह्वै हल्ला करि कै सुभट धावत धरहु धरहु कहत आइ गए जैसे चकोर देखि प्रातःकाल के सूर्य्य को दनुज संदेह नाम घेरते हैं। बागमिलाय के हल्ला कारण हल्ला करि के, खेलि घोड़ा हाथी, इत्यादिकन्ह को बाग ढील कै दौराना ।

बगरे·(द)फेले, बिगरे, बगरना, फैलना ।

बङ्ग· बङ्ग (स· फ) बाङ्गा, शब्द ।

बकध्यानलगाना, मु॰ पाखंड-करना, कपटकरना ।

बकझक, मु॰ बकबक, गप सप, बकवाद, वृथाबातें ।

बकझककरना, बकबक करना मु॰ टेंटें करना, चेंचें करना, बकबककरना, बकवाद-करना, बड़बड़ाना ।

बक लगाना, मु॰ हूहा करना, गुल मचाना, हल्लड़ करना ।

बन्दरकिसीपर चढ़बढ़ना, मु॰ तुरत रिसाना, जल्द-गुस्से होना ।

बंदर की तरह नचाना, मु॰ बड़ा कठिन काम करवाना ।

बंदरक्याजानैअदरकका स्वाद, मु॰ मूर्ख आदमी अच्छी चीजों का गुन नहीं जानता ।

बक्कनाल· (स) टेढ़ाकमलनाल, बालकस्थान गर्भमध्य, बचे दानी ।

बक्का· (द) लुका, नवार, बक्का, बांस की काड़ का पोर, सब तें बिरोधी ।

बखेड़ा चुकाना, मु॰ झगड़ा मिटाना । [बखवाकरना ।

बखेड़ा मचाना, मु॰ दंगाकरना,

बच·(स) बचन, बात । [बढ़ती ।

बचती· (प) शेष, अवशिष्ट, बचस्, बचांसि, बच, (स) बचन, बोली ।

बचांसि(स) बातें, बचन।

बचनचूक, सु० अविश्वासी।

बचनछोड़ना, सु० बचन तोड़ना।

बचनलेना सु० इकरार करना।

बचनहारना, सु० इकरार करलेना, मानलेना।

बचनतोड़ना, सु० कही हुई बात से फिर जाना, शर्त से फिर जाना।

बचनबज्र, सु० कठोरबचन, असभ्यबचन।

बचनदेना, सु० पक्काकौल करना, प्रणकरना, प्रतिज्ञाकरना।

बचननिभाना या पालना, सु० कहे को पूरा करना, अपनीबातपरपक्का रहना।

बचनबंधकरना सु० बचन लेना, इकरार कराना।

बचनबंधहोना सु० बचन देना।

बचनमानना, सु० बातमानना, आज्ञापालन करना।

बछ }
बच्छ } (प) पुत्र, बछरू, हृदय अतिप्रिय, बत्स।

बछल }
बच्छल } (प) दयापालक, बत्सल दयायुत।

बजन्त्री (स) समाजी, बाद्यकर।

बज्र (स) नाम इन्द्रहथियार, हीरामणि, हीरा नाम दोहा। निःकंपा हक, बज्र पुनि, हीरा, बने जु ऐन। सकुचतीय मन निरखिमन, भूप भवन छवि मैन ॥१॥ गाज, इन्द्र का शस्त्र दो०। शंब पश्चनिश्वर ह्रादिनी, कुलिश बज्र निर्घात। दंभोलि शत कोटि पवि, भिदुर इकादश ख्यात॥१॥ पुनः दो०। अशनी कुलिश नघात पुनि, बज्र सीतयौनाहिं। परी बुरी के धाम जे, बिरस करै रस माहिं॥१॥

बज्रपात(स)गाज का गिरना।

बज्रधर (स) इन्द्र, धर्मराज।

बञ्चक वंचक (स) धूर्तजन, ठग।

बञ्चन वंचन (स) धूर्ताई, ठगाई, ठगाना।

वञ्जुल· (स) बेतवृक्ष ।

वट· (स) सामान्यवृक्ष, बड़वृक्ष, ग़ार, कौड़ी, बट का पेड़ ।
बट नाक नाम—दो॰
जटिल पटीर कपाल बट, जदपि पूतन्ह योध । यह बंसीबट देखु बलि, सब लिख निरुपम बोध ॥ १ ॥

वटाज· (स) बटोही, पथिक ।

बट्टालगना, मु॰ दागलगना ।

बड़बोला· मु॰ शेख़ी बघारने वाला ।

बड़भकुवा, मु॰ मूरख ।

बड़पेटा, मु॰ बहुत खानेवाला ॥

बढ़ाकरना· मु॰ बढ़ाना, चराग़ को बुझादेना ।

बड़ाबोल, मु॰ घमण्ड की बातें ।

बड़ेबोल का सिर नीचा, मु॰ घमण्डमें खराबी होती है ।

बड़ा रस्ता पकड़ना, मु॰ मर जाना ।

बड़े पेट वाला होना मु॰ संतोषी होना, धीरहोना, क्षमावान होना ।

बड़ाई करना, बड़ाई मारना, मु॰ सराहना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, घमंड करना, शेख़ीबघारना, डींग मारना, लम्बी चौड़ी हाँकना, अपनी सराहन करना ।

वटु· (स) विद्यार्थी, ब्रह्मचारी, बालक, ब्राह्मण की पुत्र ।

बटोही (स) पथिक, राही ।

बड़· (प) वृक्ष विशेष, बरगत, वट, बड़ा, अधिक, सेवान ।

बड़व· (स) अग्नि, जल भीतर का आग ।

बड़वा· (स) अश्विनी, घोड़ी ।

बड़वानल· (स) अग्नि जल वासी, समुद्र की अग्नि, बड़वाग्नि, समुद्रकी आग ।

बड़सी, बड़िश (प.स) बंसी मीन की, कुलिश ।

बड़ाई देना, मु॰ आदरदेना, इज्जतदेना ।

बड़ीबातनहीं, मु॰ कुछ कठिन नहीं ।

बढ़चलना, मु॰ धीठहोना, अभिमानीहोना।

बढ़जाना, मु॰ अंदाज़ सेबाहर होना।

बढ़ेई॰ (प) अधिक, बड़ा, विस्तार, मुख्य।

वणिक॰ (स) महाजन, व्यापारी, बनिया सौदागरी तिजारत।

वाणिज्य॰ } (स) वाणिज्य, व्यापार, बनिया, सौदागरी, तिजारत, रोज़गार।
वणिज॰ }

वत (स) बात, वार्ता।

बतकही (स) बात।

बताई॰ (प) नाश, बुझाई, ठंढ़ा, बुतायी।

बताना (स) बुताना, बुझाना।

बतासा (द) बतासा, हवा एक प्रकार की मिठाई।

बतिया॰ (प) बात, छोटाफल।

वत् (स) तुल्य, सादृश्य, योग्य।

बतबना, मु॰ बातूनी, बात बनाने वाला।

बतबढ़ाव मु॰ बात बढ़ाना।

बत्तीलगाना, मु॰ तोप दागना।

बत्तीजलाना, मु॰ चराग़ जलाना, दीया जलाना।

बत्तीचढ़ाना, मु॰ घाव में बत्ती डालना।

बत्तीसीदिखाना, मु॰ दांत दिखाना, हंसना।

वत्स॰ वैवत्स, (स) बछरू, गोपुत्र, लेरु, शिशु, वर्ष।

वत्सल॰ (स) पालक, सहायक, दयावन्त, दयायुत, बछरांगी तहित।

वद (स) वक्ता, रोगी विशेष, व्याघी, कहडू, कहो, प्रवादि।

वदत (स) कहत

वदति॰ (स) कहता है, एक, कहता है।

वदन॰ (स फ) मुख, देह, शरीर।

वदन्॰ (स) कहन, बोलन।

वदन्ति॰ (स) कहता हैं सब।

बदर॰ (प. स) बादल, प्रतीकार असन्त, कर्कन्धु, बेर का फल जाको बेर कूं कहत है।

बदरि.(प) } मेघ, बेर का वृक्ष,
बदरी.(स) } करकंधु वृक्ष, बेर का वृक्ष, बेर का पेड़, बदरी नाम—दोहा ॥ कर्कंधू बदरी कुवल, कोलि कोल फेणील ॥ दिये राम प्रति प्रेम युत, शबरी भक्ति सुशील ॥१॥ मानसरामचरित्र में लिखा है। चौ०। जिन्हहि विश्व कर बदरि समाना। अर्थात् जिन को संसार हाथ में बेरि समान है।

बदरीबन (स) प्रयाग।

बदल.(प) मेघ, घटा, प्रतीकार, अवज्ञे। [एक प्राणी।

बदामि.(स) कहत है हम

बदि. (प) कहिकै, भाषिकै, बदना, कहना, कह करके। [पाक्ष।

बदी. (स) कृष्णपक्ष, पहिला

बद्दल. (प) मेघ, घटा, बदली।

बद्ध. (स) दृढ, बांधा, रोका, दृढ़, नियद्ध, रचित, बंधा हुआ।

बध. (स) हिंसा, हनन, हत्या, नाश, मारण, शत्रु वा बध नाम—छंद शिखरनी ॥ सपत्नं आराती अहित अभिघाती रिपु अरी ॥ विपक्षं अमित्रं द्वषतपरि पंथी दुख करी ॥ हिटं शत्रू दस्यू दुहृद पर बैरी दृश सुखं ॥ सिया स्वामी ताको कदन बध कीन्हीं सुर सुखं ॥१॥ निपाती संहारी हनन हत घाती बसुमती ॥ बिडौजा यौ देखा ऋषि सुभ भाष्यो अस्तुती ॥ यमानं मागानं नगन सगना भागन धुजा ॥ कह्यो भोगी राजा शिखर- निहि छंदा शुभ सजा ॥२॥

बधिक (स) व्याधा, चण्डाल, शस्त्रधर, बहेलिया।

बधिर. (स) बहीर, कनफूटा, बहिरा, बहरा।

बधुनी. बधू. } (स) स्त्री, पत्र
बधु } पत्नी, बहू, विवाहिता स्त्री।

बधू (स) स्त्री, पतोहू।

बधूटी (सं) नवीनता स्त्री, युवती, छोटी अवस्था की स्त्री। । योग्य।

बध्य (स) हननीय, मारने

बन (स) (द) } कानन, जल, पानी, बौरीलगाल, बाटिका, समूह सघन बंगा जाकी कह होता है, जंगल, आरण्य उपबननाम। दोहा। छती भवन उद्यान पुनि, उपबन सोइ आराम। यह वृन्दावन बाग तुप, लखु बलि छबि की धाम ॥ १ ॥ कानन नाम। दोहा। कानन बिपिन अरन्यबन, गहन वकु कांतार। अटवी में छूकलि दई, मो सन नन्द कुमार ॥२॥ बन नाम छंद पंचायकी। बिपिन गहन आरण्य कानन ॥ कांतार अटवी दुर्ग कानन ॥ लखत नाम रघुपति सरि निकुंज। षोडश कला छंद पनावलि ॥ ३ ॥ बन शब्द। दोहा। बन पानी को कहत कवि, बन बारिद को नाम। बन कानन ते सुरभी संग, बन आवत नंदलाल ॥४॥ बन विहार—छंद सुंदर। वृष-भानुसुता हरि संग लिये। बन डोलत कांत बसंत सुहाई। फल फूलनि फूल फली सगरी महि लाग लता अति सौरभ छाई। अलि गुंजि पराग सुपान करें खग कालिक मोर गिरा सुखदाई। सगनै वसु अंत गुरु धरिये यह सुंदर छन्द सुरीत कहाई ॥५

बनचक (द) ठग, मक्कार, धूर्त, सम्बोधन बंचक नाम। दोहा। हेरे हो भी अति छली, कपटी बंच बचाल। व्याजि छलघ्नी जिन्हगी, हरिछबि भरे रसाल ॥ १ ॥

बनचर· (स) बानरादि बनवासी, बानर, जंगली, बनचर नाम—दोहा। चित्र कूट सेवत प्रभू, बनचर व्याध किरात। धानुष लुब्धक शबर पुनि, दस्यु पुलिंद किरात॥ १॥

बनचरलता· (स) केमाच, कीमाच नाम—दो०। कोल बल्लिका कपिलता, विख्यात्र्य सोनाह। कंडु करति ए अंग में, कानन के बलि जाउं॥ १॥

बनज· (स) बन भूर, जलभूर, कमल चन्द्रमा, जलचर मीनादि।

बनवाहन· (द) नाव।

बनमाल· बनमाला, (स) फूल से बनी माला पञ्चवस्तु की, तुलसी, कुन्द, मन्दार फूल और पत्ते की माला, सरोरुह, पारिजात। ५।

बनजबनु } (स,द) कमलबन,
बनजबन· } चौ० भरत दुखित परिवार निहारा। मानहु तुहिन बनजबनु मारा।
अर्थात् मानो पालाने कमल के बन को मारा।

बनाव· (स) वेष, शृङ्गार, रचाव।

बनिक· (स) बनिया, महाजन।

बनआना. मु० होसकना, भाग्य जागना, किस्मत खुलना।

बनजाना· मु० होजाना।

बनपड़ना· मु० सुधरना, भला होना, बनना, होसकना, सफल होना, सिद्ध होना।

बनिज· (स) महाजनी, बनियौटी, व्यापार,।

बनिता· (स) स्त्री, नारी, मेहरी।

बनिक, बणिक· (द स) बनिया।

बनी· (स) दुलहिन, नयी बहू, मञ्जरी का बन।

बन्दन· बंदन, (स) प्रणाम, नमस्कार, दण्डवत्, सो तीन प्रकार के हैं, एक सहज भाव निवेशक जैसे बाप आदि

सम्बन्धी० १ अपनों सों कीन जो बड़ो है राजा इत्यादिक० । २ । तीसरा खरपत्ति, निवेग जैसा गुन है किन्तु दुष्ट है । ३ ।

बन्दनवार (स) सिहरा मोर ।

बन्दनीय (स) नमस्कार योग्य, प्रणामकरने के योग्य ।

बन्दावहि (स) बन्दते हैं हि मारो ।

बन्दामहि (स) बन्दते हैं हम सब ।

बन्दी } (स) भाट कवि,
बन्दीजन } (फ) गिरा भूषण, बन्धुवा, कैदी ।

बन्द्य बंद्य (स) नमस्कार योग्य ।

बंध में पड़ना या आना, मु० कैदी होना, कैद में आना ।

बन्ध्या (स) बांझी, बन्ध्या ।

बन्धु (स) भाई बड़ा, स्वजन, नतैत, कुटुंब, मित्र, भाई, बांधना, संबंधी । दोहा ।
होनी बस निज मृत्यु हित, कंस कीन्ह ततकाल । उद्यम औ उद्योग बहु, बोलि पठाये काल । १ ।

बंधुनाम । दोहा । बंधु सगोत्र सनाभि सो दयो सहोदर भ्रात । स्वः सनात बांधव स्वजन, दोउ मथुरा जात ॥२॥

बंधुक बंधुजीवक, (स०) दोपहरिया पुष्प, रक्तवर्ण ।

बंधुर (स०) सुन्दर, उत्तम ।

बंध्या (स०) बांझी नारी ।

बपुः वपुष, वपु, (स०प) काया, शरीर, देह ।

बपुरा (ह०) रङ्क, कङ्गाल, अनाथ, दुखिया ।

बभ्रु (स) पपीहा पक्षी ।

बम (स०) बाहु, सोता, चार हाथ परिमाण ।

बनबनकरबिगड़ना, मु०तैयार होकर खराब होजाना ।

बनाचुना, मु० संवारा हुआ, सिंगारा हुआ । [हुआ ।

बनाठना, मु० खूब सिंगारा

बना बनाया, मु० तैयार, पूरा, सिद्ध ।

बनारहना, मु० ठहरारहना

बफारालेना, मु० भाफ को बंद करके शरी में जाने देना।

बमत· बमन· (स) बोकर, ओक, छाटना, रद्द, अडारि कांटता है, रद्द करता है, छांटकरन।

बय· बयस· (सं) विहङ्गम, काल, योवन, जात, अवस्था, आयुर्दा· अमिर, वैश्य बनिया. बयस शब्द — दोहा ॥ वयस विहंगम को कहत, बयस कहिये पुनि काल । बयस जु जोवन जात है, भजले मदन गोपाल ॥१॥ काल शब्द — दो० काल असित को काल वध, धर्म राज पुनि काल । काल व्याल के काल हरि, मोहन मदन गोपाल ॥ २ ॥ [बचन ।

बयन, (स, प) राग।विशेष.

बयसा· (द) बैठा ।

बयस्था· (द, स) हरड़े वृक्ष ।

बयाई· (द) दलाली, महाजनी ।

बयार· बयारी· (प) पवन, वायु हवा ।

बये· (द) बोए, बोवा ।

बर· (स) श्रेष्ठ, देवता, प्रेत, सुन्दर, दुल्हा, संसार, कुंकुम, छाया, टिकोर, पति, तिय, बरदान, बल, आशिष, बरना, जलना, जोर, बट वृक्ष, कन्या का पति, अमात्य, बर शब्द— दोहा ॥ बर सुंदर संसार बर, बर जो देवता देत । बर कुंकुम बर छाया पुनि, बर तिय हिय हरि लेत ॥

बरअड· (द) पच्छावेल, नंदी ।

बरबीरु· (द) श्रेष्ठ बीर ।

बरबंडा· (द) अति बली ।

बरकर· (स) बिस्तार हाथ ।

बरन· (स) वर्ण, अक्षर, जाति वर्णन ।

बरनी· बरणी· (द,स) कही, भाषी, कथित ।

बदर· (स) बेर, बैर।

बरद्मग्रीव· (स) श्रेष्ठवाह्मे-न्द्रिय, निपुण, स्वभाविक, गूढ़ा विशेष।

बरदायक· (स) शिव, महादेव, बरदेनहार। [पीत।

बरवर्णिनी·(स) हरिद्रा, हलदी,

बरवरनी· बरवर्णी· (स) गोरी, श्रेष्ठ रंग वाली।

बरवाट· (द) सुन्दरराह।

बरप्रसाद· (स) बरदान का प्रभाव।

बरवस· (प) जोरावरी, बल।

बरहि· (स) बर्हिन, मोर।

बररती· (स) सुन्दर रूप।

बरबेलि· (स) वृक्ष विशेष, पान, दो० । मलिन बसन बिबरन बिकल, छीन स-रीर दुख भारि। कनक बरन बरबेलि बन, मानहुं हनी तुषारि॥ अर्थात् बर बेलि अर्थात् नागवल्ली जस का जो अग्रभाग सुवर्ण-के तुल्य है उस पर मानो तुषार पड़ा।

बररै·(प) बरैरा, खड्डा, बिरनी।

बर्णाधम·(स) चारवर्ण से बाहर।

बरहीवृन्द· (स) कलाप—दो० गुन कलाप तूनीरकहि, चमरन चाहि कलाप। बरही वृन्द कलाप पुनि, हरि हर भजन कलाप १॥

बरबाभन·(स) बर्वदिन ब्राह्मण का भोजन।

बरस्वर्गी· (स) मुक्ति, कल्याण।

बरा· (स) धरती, भूमि।

बराई· (प) किसी को हटाय देना, दूर डालना।

बराक·(स)बलाक, बगुला पक्षी।

बराएं· बराए· (प) बचाइ के, छोड़ि के, हटा के, बचा करके।

बराह· बाराह· (स) शूकर, सूअर, बनैला।

बरि·(प)बांटि के, ऐंठि के, बटि करिके, बट करके, बरना, बटना, बहुरि।

बरियाँ· (द) बेला, समय, बाग।

बरिबण्ड· } (द) बली, तेजस्वी,
बरिवंड· } बलवंत,प्रतापवान्।

बरियाई· (प) ज़ोरावरी, ज़ब-
रदस्ती।

बरियार· } (प) बली, ज़बर-
बरियार· } दस्त, जोरावर।

बरिष्ठ· (स) अतिश्रेष्ठ, अति
उत्तम।

बरी· (स) ब्याही नारी, बरना,
ब्याह करना।

बरीसा.(प) बरिस, वर्ष,बारह
मास।

बरु· बरुक·(द)कदाचित्, भले,
बलुक, बल्कि।

बरुची· (स) कोष विशेष।

बरुण·} (स) जलदेवता,
बरुन·} जल,श्याम,वृक्ष विशेष,
बरुन शब्द—दोहा। बरुन
कहत पति नीर के, बरुन
श्याम को नाम। बरुन
हरे तट नन्द जय, कैसे
धाये श्याम ॥ १ ॥ बरुण
नाम—दोहा०। यादसाम्पति बरुण पुनि, कंप
प्रचेता नाम। अप्पति
पाशी सहित घट, पश्चिम
आसा धाम ॥२॥ पुनः—
दोहा। बरुन प्रचेता
पांसुपति, जलचरपति
जलईस। ते तुमपिय के
पगन तर, नित उठि धरत
जो सीस॥३॥ बरुणा नाम
दो०। हे कुमार बरुणा ब-
रुण,शिक्षा धाम भो खेत।
नित वृषभानुकुमारिका,
सत्य कहो मम हेत ॥४॥

बरूथ. बरूथिनि. (स) यूथ,
समूह, सेना, झुण्ड।

बरेरा· बरेरी. (स) बिरनी,
भिर्री, हड्डा कीट दंशक।

बरेश. बरेशू· (स) बड़ा राजा
श्रेष्ठ राजा।

बरेषो· (स) बरतूही, दुलह का
खोज, ब्याह की बात,बरे-
च्छा, बर देखौनी, दुलहा
ठहराना।

बरोरु. बरोरू· (स,द) सुन्दर
जांघवाली, बांका गाती
की स्त्री।

वर्ग·
वर्ग· } (स) जाति, समूह।

वर्छा· वर्छी· (प) गड़हिया, भेल, बाण विशेष।

वर्छैत.(प) भालैत, अश्वाफिकेया।

वर्ज्जन, (स) त्याग, निषेध, छोड़न। [निषिद्ध।

वर्ज्जित· (स) त्यागा, रहित।

वर्ण. (स) जाति, रङ्ग, आक्षर।

वर्णन· (स) बखान, स्तुति, बिवरण, रङ्गना।

वर्णसङ्कर· (स) दोगला, मिश्रित।

वर्णिका· (स) कहतब, कथन।

वर्त्तमान· (स) बिद्यमान, उपस्थित्।

वर्त्म· (स) मार्ग, डगर।

वर्द्ध· (स) बढ़व, बढ़न्ती।

वर्ब्बर· बर्बर· (प) अधम, बकबाद, नीच, बकवादी।

वर्म्म· वर्म·(स) बकतर, रण बस्त्र, बखतर।

वर्म्मण· वर्म्मा, (स) क्षत्री संज्ञा, क्षत्रियों को पदवी।

वर्म्मणी· (स) क्षत्राणी, नारी क्षात्र।

वर्य्य· वर्य· (स) श्रेष्ठ· उत्तम।

वर्ष· (स) बारह मास १२॥ वर्ष नाम—दोहा॥ अब्द समा वत्सर सरत, हायन संवत साल॥ वर्ष कल्पसम जात नित, बिनु दरसन गोपाल।१। गोपबधुन पद बंदि पुनि, नंद घर ऊधव आए॥ बिदा मांगि मथुरा गये, मिलि स्याम ते जाय॥२॥

वर्षाशन· (स) वर्षभोजन, दक्षिणाबिशेष, वर्षासन, बरिस दिन का भोजन।

वर्हि· वर्हि मुख, (स) देवता, बृक्ष।

वर्ही· बरही (स) मोरपक्षी, द्रुम, अग्नि, कुक्कुट, बरही के नाम। दोहा। बरही द्रुम बरही अगिनि, बरही कुक्कुट नाम॥ बरही मोर किशोर के, चन्द्र धरे सिर श्याम।

वर्च्ची· (स) कन्या बिशेष, दशो प्रचेताओं की स्त्री।

वल· (स) बीर, धीर्य, धर्म्म,

नृपदल, साहस, दैत्य, बलराम, सामर्थ्य, शक्ति, ऐंठन, ज़ोर, सेना, पराक्रम, ताक़त। बल शब्द॥ दोहा। बल बीरज धीरज बहुरि, बल नृप दल को नाम॥ बल सहसा बलदैत्य पुनि, बल कहिये बलराम॥ १॥

बला· (स) बला शब्द—दोहा। बला मैन धरनी बला, बला औषधी होय। बला अचला जानुभी, जिहि जांचे सब कोय॥ १॥

बलाकलभीर, (द) भोजपत्र।

बलाकल· (स) बेला की बखुला, बकला, बोकुल, बल्कल। चौ· बलाकल बसन जटिल तनु स्यामा। जनु मुनिवेष कीन्ह रति कामा॥ पांच चौपाइयों का अर्थ गोसांई जी राम जानकी का वर्णन एक स्थान में प्रगट और एक स्थान में गुप्त कहते हैं। सीय सहित राजत यहां प्रगट है बलाकल बसन जटिल तनु स्यामा—यहां रघुनाथ का वर्णन प्रगट है बलकल अर्थात वृक्ष की छाल और जानकी का वर्णन गुप्त इस भांति है कि लकार और रकार की सावर्ण्य संज्ञा है सो बल से बर का अर्थ होता है और कल सुंदर का अर्थ देता है अर्थात् श्रेष्ठ सुन्दर बसन को धारण किये हुए और तनु पर बड़े २ केश छूटे हुए स्यामा अर्थात् षोड़श बर्ष की अवस्था है जनु मुनि इस में रघुनाथ जानकी प्रगट हैं। चौ·। कर कमलन्ह धनु सायक फेरत। जीको जरनि हरनि हंसि हेरत॥ प्रगट अर्थ से रघुनाथ का वर्णन है और गुप्तार्थ यह कि जानकीजी अपने हाथ से कमल

को फिरतो हैं और धनुष और बान को फिरतो हैं प्रगट अर्थ यह कि जीवन की जरनि को रघुनाथ जो हंसि चितै के हरिलेते हैं और रघुनाथ की जरनि को जानकी जो चितै के हंसि कै हरि लेत हैं। दोहा०। लसत मंजु मुनि मण्डली, मध्य सीय रघुचंद। ज्ञान सभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानंद॥ इस दोहे में दोनों राम जानकी का अर्थ प्रगट है ज्ञान समाज जो भक्ति रूपा जानकी सच्चिदानंद रघुनाथ।

बलकाया (प०) कुदावा, उछलावा, पेंठे की बात।

बलवीर्य (स०) हनुमान, बजरङ्ग, प्रधान बानर।

बलथाका (द) बल थक गया।

बलदेव (स) बलभद्र, बलराम कृष्ण के बड़े भाई। प्रलंबासुर बध—दोहा॥ बिपिन प्रलंब निपात पुनि, करत केलि बलदेव। सुमनवर्षि कर जोरि सुर, बिनय करत दिव देव॥१॥ बलदेवायनमः—छंद शार्दूल बिक्रीड़ीत। कालिंदी भिदनं प्रलंबदमनं संकर्षणं भूधरं। रामं केशव पूर्वजं बल तथा तालांक नीलाबरं। कामंपाल हलायुधं सबलदेवं सीर पाणिं हली। बलभद्रं युत रेवतीरमन बंदे रौहिणेयं मूशली॥१॥ दोहा। नाम अष्टदश छंद यह, शार्दूल सबिवेक। मगन सगन जगनं सगन, युग्मतगन गुरु एक॥१॥

बलय. (स०) जुवार भाठा, जल का बाढ़ि।

बलराम (स०) बलभद्र, मुशली।

बलाक बराक, (स०) बगुला। बकुला, पक्षी श्वेतवर्ण।

बलाकी. बराकी, (स०) बगुली पक्षिणी।

बलाहक (सं०) मेघ, बादल, घोड़ा विशेष श्री कृष्ण रथ, बगुला पक्षी, बादर।

बलात्कार (स) जबरदस्ती।

बलाहक (स) बादल।

बलि } (स) रूप, दैत्य, भोजन
बालि } भाग, पूजा, नाम, राजा पम्पापुरी, दानशूर, बकरा, बलिदान, न्योछावर, नैवेद्य, देवता का भोग, हिस्सा, राजवली, नेछावर, बलैया। चौ० पितहि बुझाई कही बलि सोई। चौथेपन जेहि अजस न होई। बलि बलैया, लेती हूं। बलि शब्द—दोहा। बलि हरि पूजा असुर कहि, बलि भोजन बलि भाग। बलि राजा बलि लक्ष्मी, लाहिय हरि अनुराग। १।

बलित (स०) वेष्टित, घेरागया।

बलिदान (स) देवता के लिये भोग। * [बलवान्।

बली (स०) बीर शूर, सीमट,

बलीमुख० (स) बानर, लङ्गूर मर्क्कट, बानर नाम॥ छंद स्वरूपी—कपीलांगूलदर भवनचर॥ प्लवगवनाले मर्कट हरि। बलिमुख शाखामृग बानर। कोश नाम द्वादश है वर॥ १॥ लेन चले सिय सुधि हेरत। गिरि गुह सोता कपि टेरत। लखि नद तट वृन्द वनौकश। छंद स्वरूपी बल चौदश। २।

बलखाना, मु० ऐंठाजाना, क्रोधकरना, कोपकरना, गुस्साकरना।

बलदेना, मु० मरोड़ना, ऐंठना।

बलबे, मु० शाबाश, वाहवाह।

बलजाना, बलबलजाना, मु० बलिहारीजाना, निछावरहोना। [दानकरना।

बलदेना, बलकरना, मु० बलि

बलिहारीजाना, मु० निछावर

होना, बलशाना, मजबूत जाना।

बल्कल. (स) पेड़ा की बखुला।

बल्काना. (सु) अपनी बड़ाई।

बल्लभ. (स) प्रिय, सज्जन।

बल्लभा. (स) प्रिया, सज्जनी, दुष्टा नाम—छंदधारी। किते बिकुरी सिया कांता इष्टा। प्रिया दयिता रमनी ओ प्रेष्टा ॥ पुरंध्रि बल्लभा पतनी प्यारी। बाला दृशसम छंद ये धारी ॥ १ ॥

बल्ली. (स) लता, पानपत्र, अवर।

बलशील. (स) सुन्दरबलवान, बल करके शोभित।

बवासोलु. (स) श्वान, सामान्य पशु, बवासोलु श्वान संज्ञा। बवासोलु पशु मिज्यंते। इति अमर अष्टम कोष प्रमाण। ११ स्कन्ध ॥ ३ ॥ अध्याय श्री भागवत प्रमाण।

बसत. (द) बसें, रहैं।

बश बशवर्ती. बशवर्ती. } (स) अधीन, पराक्रम, चाह।

बशिष्ठ. (स) श्रीरामचंद्र जू के गुरुदेव कुलपुरोहित।

बशिष्ठी. (स) दूतजन, दौराहा, कासिद।

बशीकरण. (स) नामसिद्धि, मन्त्रविशेष। [वकील।

बशीठ. बशीठी (द) दूत, वकील,

बशीभूत. (स) अधीन, अनुवर्ती, पाला।

बश्य. (स) अधीन होके, आधीन।

बषाण. बषान. बषाना. } (प) कहन, कहतव, कथन, स्तुति, कहा।

बसन. (स) कपड़ा, बस्त्र। चीर नाम—छंद चंचला। अंबरं दुकूल बास बस्त्र चोलचेल चीर। छादनं शुकं पटं हरे हरी दुरेफ तीर ॥ गोपिका बिनै करायमास दीन्ह नन्दनंद। अष्टगंध चंचला सुछंद कीन्ह पन्नगेन्द्र ॥ १ ॥

बसन्त· (स) पच्छिवीऋतु । बसंत नाम—दोहा । कुसुमाकर रितुराज मधु, माधव सुरभि बसंत । माली ज्यों जोगवत सदा, याते अधिक लसंत ॥ १ ॥ पुन: दोहा । मधु माधव ऋतुराज पुनि, सुरभि· बसंत बिहार । बन बन बिहरत मुदित मन, राधा नन्द कुमार ॥ १ ॥

बसन्तद्रुम· (स) आम्रवृक्ष ।

बसन्ती· (स) पीतवर्ण, पीला, पिवड़ी ।

बसन्त फूलना· मु० सरसों के फूलों का खिलना ।

आंखों में बसन्त फूलना· मु० तिरमिराना ।

बसंत के घर की भी खबर है, मु० यह जानते भी हो क्या होरहा है ।

बसाहना· मु० उजाड़ना, नाश करना । [फिरना ।

बहाफिरना, मु० भटकता

बससि· (स) बसत हो तुम, तूं बसता है ।

बसह· (प) बसहा, बैलभेद ।

बसीठ· बसीठी· (स) मुखिया, दूत, वकील, हरकारा ।

बसु· (स) किरण, अग्नि, अष्टअमर, नीर, धन । बसु शब्द—दोहा । अष्टम बसु है वन्हि बसु, बसु सूरज बसु नीर । बसु धन जग में सो धनी, धन जाके बल बीर ॥ १ ॥

बसुअष्टअमर·बिवरण (स) द्रोण१ प्राण, २ ध्रुव ३ अर्क कही सूर्य, ४ अग्नि ५ दोष ६ बसु ७ बिभावसु ८ इति श्रीभागवत, ६ स्कन्ध, ४ अध्याय प्रमाण ।

बसुधा·बसुन्धरा·बसुमती·(स) पृथ्वी, भूमि, काठ । काष्ट शब्द—दो० । काष्ठ काष्ठ या घिसकई, काष्ट अमर पुर काष्ट । काष्ट जु बहुरि बसुन्धरा । बुद्धिहीन नर काष्ट ॥ १ ॥

बस्ती· (प) बसी हुई, वा तीनि संज्ञा ख्यात, एक पुर वा पुरी, नगर में पुर को बिगड़ा भी कहते हैं। १ ग्राम २ नगर वा नगरी, ३॥ दोहा ॥ दो आदि अष्ट (८) अन्त षोड़श हिं, संख्या पुर का नाग। षोड़श (१६) ते पुनि घर शतहिं (१००), संख्या ग्राम प्रमाण ॥ १ ॥ एक शत (१००) ते घर सहस्र (१००) हिं, नगर विचारत चिन्ह। यह लेखा ते जानिये, समुझि गुनावन किन्ह ॥ २ ॥

बस्त· (स) कपड़ा, बसन।

बह· (स) जलमध्यबहना, चलना।

बहराव· बहलावा, (प) मटियावा, सुनि अनसुनि करि, अनठाय देना, सुन करके अनसुनी किया।

बहहिं·(स) उठाते हैं।

बहना (स) उठाना, ले जाना।

बहनीक· (प) अधिक, बहुत।

बहिर्देश. (स) बाह्यस्थान, दूर देश। [अधर्मी।

बर्हिमुख· (स) धर्मविमुख,

बहु (द) अधिक, बहुत, अति, अति नाम—दोहा। दृढ़ अति से अति बेस अति, अधिक्रांत तन अंत। अति सब तें भलि नाहि कहुं, गोसत अंत तुरंत। १।

बहुकालीन· } (स,द) बहुत
बहुकालीना· } दिन का, बहुत काल का।

बहुधा (स) बहु प्रकार, अनेक बहुत प्रकार से, प्रायः अकसर, बहुत प्रकार।

बहुबांह· (द) रावण।

बहुरहिं. (द) फिरे।

बहुरि· (द) फिर।

बहुरना· (द) फिरना।

बहते पानी में हाथ धोना, मु॰ जबतकअपनाकाम बना रहे तब तक अच्छा काम करलेना।

बहुत गई थोड़ी रही. मु॰ उमर पूरी हो चुकी है ।

बहुन· (स, प) बहुत स्त्री ।

बहुपाद· [स] पुलच नाम, बट नाम । [बहु प्रकार ।

बहुविध· (स) अनेक भांति.

बहुव्रीहि· (स) समास विशेष, अनेक धन । [चपल ।

बहुरङ्गी· [स] चञ्चल, विचित्र

बहुला· (स) इलाची ।

बहुलाम्· [स] विशेष, अधिक ।

बहू· [प] बहुत, अधिक, स्त्री, बधु, बहू ।

बहोरी· [द] बनाव, फिर ।

बहेड़· [स] बहेड़ा वृक्ष, बहेरा नाम—दोहा । अक्ष बिभीत कफघातफल, सर्व भक्ष कलिवृक्ष । भूता वास बहेर तरु, है जनि-घलिय मृगक ॥ १ ॥ पुन: नाम—सोरठा । हेतुष भूतावास, अक्ष कलि-द्रुम कर्षफल । कहो बिभी-तक आख, गजगमनी कित गो गई ॥ १ ॥

वह्नि· [स] अग्नि, अनल ।

बह्म· [स] गया, कासी ।

वा· [स] विकल्प, अथवा पक्षान्तर ।

बहुवचन· (स) तीन और तीन से अधिक की संख्या के लिये जमा ।

बाउ· [द] बायु, पवन, बाहरे ।

बांका· [प] लुच्चा, छैला, अकड़ैत, बक्र ।

बांग· } [फ़] शब्द, आवाज़,
बांगा. } ध्वनि, बाच, बाणी, कपास । [रूई वृक्ष ।

बांगा· [प] अवार, दुष्ट,

बांयां पांव पूजना, मु॰ पाखंडी मनुष्य के छल और पाखंड को मानलेना ।

बांसपरचढ़ना, मु॰ कलङ्की होना, बदनाम होना ।

बांह टूटना, मु॰ कोई सहायक न रहना ।

बांह चढ़ाना, मु॰ लड़ाई को तैयार होना ।

बांह देना, मु॰ सहायता देना ।

बांहपकड़ना, मु॰ सहायता करना, पक्ष करना, आश्रय देना।

बांहबल, मु॰ सहायक, साथी।

बांहगहना, मु॰ सहायता करना।

बांह गहे की लाज, मु॰ सहायता कर उसको छोड़ना, बड़ी लाज की बात है।

बाक· (स·फ) बगुला पक्षी, भय।

बाकबिलासा· (द) बातचीत।

बाकी· (स) बगुली पक्षिका।

बाक्य·बाक· [स] बचन, बाणी, बचन योग्य। [चोक।

बाखर· [द] अंगनाई, आंगन,

बागबिभूषण (स) बाणी को शृङ्गार, बाटिका का भूषण अर्थात् फूलन का भलक, बचन का गहना।

बागीश· (स) कवीश्वर, बृहस्पति, पण्डित, बाणी के ईश, देवबानी।

बागीशा· (स) ब्रह्मबाणी।

बागुर· बागुरी· बगुर· (द) जाल, फन्दा।

बाग्· (स) बचन, बाणी।

बाघम्बर· (प) व्याघ्रचर्म्म, बाघ का खाल।

बाच· (स) बचन, बाणी।

बाचस्पति· [स] बृहस्पति, पण्डित।

बाचाल· (स) बक्ता, पण्डित, बचनसमर्थी, बकबादी, व्यर्थवादी।

बाच्य· (स) बचन योग्य।

बाछ· (प) चुनाव, छांट, निकम्मा।

बाज़· (फ) पक्षी, बलवान् विशेष, पुनः चीता, कुआदा।

बाजा· (द) बाद्य, लड़ाई, बाजना, लड़ना, बाद्य।

बाजिमेध· (स) अश्वमेध यज्ञ।

बाजापांचरूख बिशेष· (प) ढोलक, ढोल इत्यादि ॥ १ ॥ टीकब, सीतार, तानपूरा। इत्यादि॥२॥ थापन, तबला मृदंग इत्यादि ॥३॥ बसन सरंगी इत्यादि ॥४॥ फूक सहनाई, बांसुरी, नरसिंहा इत्यादि॰ ॥ ५ ॥

बाजी. बाज़ी. बाजि· } (स॰) घोड़ा (फ) बाहन

पण, खेल, वर्ज्जित, केशी बध नाम—दोहा । केशी बाजी देहधरि, आयो यदुपति पास ॥ तस्य बदन भुज डारि हरि, कीन्हीं असुर विनास ॥ १ ॥

बाट (प) मार्ग, डगर, पथ, राह, रास्ता ।

बाटपरै (प) नष्ट होय, चूल्हा में जाय, बाटगिरै अर्थात् बाटबन्द होय जाय, रोज़गार जाय ।

बाग छूटना, मु॰ बेबस होना, बस में न रहना ।

बाईपचना मु॰ शेखी उतरना, दबजाना, उदासहो जाना । [ना, बकना ।

बाई में भड़कना, मु॰ बड़बड़ा

बागमोड़ना, मु॰ सीतला को ठण्ढाना, घोड़े को रोकना, काम से हटना ।

बाटिका (स) फुलवारी, उपवन, सामान्य बगिया । बाग नाम—दो॰ । बारी बाटी बाटिका, बाग बनी आराम । उपवन सुखद बिलोकि दृग, बसै लषन मुनि राम ॥ १ ॥ छंदमुक्ताहरा । मुनीशहि लेन महीप बढ्यो मुद आय समीप बिनीत प्रनाम । किशोर उभै पुनि देखि प्रमोदित सादर लाय दियो शुभ धाम ॥ प्रसून बनो इत बंधु गये सिय नयन चकोर भये लखि राम । बसू जगनं यह मुक्तहरा शुभ छंद विलास कह्यो अभिराम ॥२॥ दो॰ । देखि स्वरूप अनूप छवि, जनकसुता हुलसाय । रघुबर बर हित गौरि ढिग, बिनय करत शिरनाय ॥ ३ ॥

बाड़उड़ाना मु॰ एकसाथ बंदूक चलाना ।

बाड़झाड़ना मु॰ बहुत आदमियों का एक साथ बंदूक दागना ।

बाड़हीजब खेत को खाय तब रखवारी कौनकरै मु॰जिस पर भरोसा हो जब वही चुरा ले तब कोई चीज़ नहीं बच सक्ती।

बाड़ दिलवाना मु॰ सान पर चढ़ाना, तीखाकरना।

बाड़बांधना मु॰ कांटो से खेत को या किसी जगह को घेरना।

बाड़रखना मु॰ तीखाकरना, सान पर चढ़ाना।

बाढ़ (प) बढ़न्ती, बन्दूक, तोप, धनुषादि का एक बार छोड़ना, दागना।

बाण (स) लक्षितनय, स्वर्ग, हरिपद, शर, तीर गुण, पांच संख्या बाचक ५।

बाणिज्य (स) व्यापार, क्रय, विक्रय, तिजारत, सौदा, गरी। [खेती, वाक्य।

बाणि. बाणी (स) वचन, स्वर

बात वात (स प) पवन, वचन, वायुरोग, गठिया, बाव विषय, वार्त्ता, चर्चा बाई, बतास। [भीम।

बातजात (स) हनुमान बन्दर,

बातप (स) पलाश वृक्ष।

बातउठाना मु॰ बातसहना।

बातकरना, मु॰ बोलना, बात चीतकरना, कहना।

बात काटना. मु॰ दूसरे की बात को रद्द करना।

बात का बतकड़ करना. मु॰ छोटी सी बात पर बहुत बोलना।

बात की बात, बात की बात में, } मु॰ दम भर में, पलभर में, थोड़ी सी देर में, झटपट, तुरंत।

बातघड़ना, बातगढ़ना, } मु॰ मतलबकी बातकरना, झूठीबात बनाना, किसी बात को इस तरहसे बना कर कहना कि दूसरे के मन में जम जाय।

बातचबाना मु॰ बोलते बोलते

चुपरहना, ठहर ठहर कर बोलना।

बातचलाना, मु० कुछ कहना शुरू करना, बातछेड़ना।

बातचीत, मु० बोलचाल।

बातटालना, मु० असल बात का उत्तर न देना और और बातें करना।

बातपर बात याद आती है, } मु० जिस तरह की चर्चा हो उसी तरह की बातें आप से आप याद आजाती है।

बात पी जाना, मु० कड़वे वचन सहना, रूखी बात सुनना।

बात फेंकना, मु० ठट्ठाकरना, बे सोचे बिचारे कोई बात बोलना।

बातफेरना, मु० कहतेर बात का मतलब बदल देना।

बात बढ़ाना, मु० बादकरना तकरारकरना, किसी बात को खूब फैलाकर कहना या लिखना।

बात बनाना, मु० मतलब गांठना, झूठ कहना।

बातबांधना, मु० झूठीतकँ करना।

बातबिगड़ना, मु० काम का न होना, भेद खुलना।

बातबिगाड़ना, मु० नाश करना, बिगाड़करना।

बातमानना, मु० कहना मानना। [लेना।

बातरखना, मु० कहना मान

बातरहना, मु० इज्ज़त और आबरू रहना, प्रतिष्ठा रहना। [निन्दा करना।

बात लगाना, मु० चुगलीखाना,

बातेंकरना, मु० इधर उधर की चर्चा करना।

बातें बनाना, मु० छल करना, खुशामद करना।

बातेंमारना, मु० शेखी करना डींग मारना। [सहना।

बातें सुनना, मु० कड़वी बात

बातें सुनाना, मु० कड़वी बात कहना।

बातों में उड़ाना मु० हंसी चुहल में टालना, ठट्ठा में उड़ाना।
बातों में धरलेना, मु० कायल करना, चुपकरदेना।
बातों में लपेटना, मु० बातों में धोखा देना। [खाना।
बातायन· (स) झरोखा, वाखा
बातायु· (स) मृग, हरिण।
बाति· बाती· (प) बत्ती, दीप की, बत्ती, वर्त्तिका।
बातुल· वातुल· (ह·प) बौड़ाह, पागल, बाई चढ़ी, बौझ-का, अन्यपाती।
बातोधर· (स) खिरकी, दरेची।
बात्सल्य· (स) सेवक का दोष नहि बिचारण, पालक, पोसनहार, प्रीति।
बादर· (प) मेघ, घटा।
बादरायणि· (स) शुकदेव। व्यास पुत्र संज्ञा।
बादल. (प) मेघ, घटा।
बादलें. (द) बादल, मेघ।
बादि· (प) मिथ्या, लोप, बृथा, वास्ता, प्रयोजन, व्यर्थ।
बादिनी· वादिनी· (स) विरोधिनी, बोलैवाली, बकबादकारिणी, बोलने-वाली।
बादी· (स· प) विरोधी, झग-ड़ालू. बिबादी, कहने वाला।
बाधक· (स) दुःखद, जाल तें बझावनहार व्याधा, रोक-नेवाला, विघ्न, प्रतिबंधक।
बाधक बधिक· (द) बाधाकर-नेवाला बधिक।
बाधा· (स) रोक, छेक, दुःख, पीड़ा, विघ्न।
बान· बाम· (स· प) गन्ध, गति, कान्ह, ज्योति, चाल, प्रकृति, बानासुर, बाण, रंग, शोभा, स्वभाव, बाना, शर, तीर। बान नाम— छंद वंसपत्र। सर नाराच शिलीमुख पत्री रोपण हू। बेन कलंब विशिष जिह्मग तोमर कारण हू॥ अस्त्र

गरुर प्रवाग सायक इषु मार्गण हू । संधाने प्रभु छंद कला बायमगण हू १॥ पुनः—दोहा । बाण कहावे बलितनय, विशिष आदि पुनि बान । बाण कहत कवि स्वर्ग को, यो हरि पद निर्वान ॥ २ ॥

बानप्रस्थ· (स) मद्दुवाहच, आश्रम तीसरा ।

बानप्रस्थाश्रमकर्म्म· (स) ब्रह्मचारी हो के बिवाह करना पुनि बानप्रस्थ लेई स्त्री सहित बन को जाना, तपकरना ।

बाना· (प) बेष, भर्नी, फटना, एक हथियार का नाम ।

बानि· बानी (प) स्वभाव, आदत ।

बानैत. (प· द) सीपाही जनटेरदार, तीरफांदैत, बान फेंकने वाला, विरदैत ।

बांधव· बान्धव· (स) नतैत, सम्बन्धी, कुटुम्ब, सुजन, मित्र, परिवार, भाई । [दीन ।

बापड़ा· (द) बापरो, दरिद्र, बापरो· (द) बापड़ा, दीन, कङ्गाल । [बर मानना ।

बापकरना, मु० बाप के बराबापमेरा, बाप रे बाप, मु० अचंभा, और सोच और डर आदि को जतलाने वाला शब्द । [बैर ।

बापमारे का बैर, मु० बड़ा भारी

बाप न मारो पीदड़ो } मु०यह
बेटा तिरन्दाज, } कहा-

वत वहां बोलते हैं जब किसी के बाप दादे कुछ योग्य नहीं हों और वह कुछ बढ़कर किया चाहे या दिखाया चाहै ।

बापिका. वापी (स) .बावली, कूपभेद ।

बापुरी· (द) तुच्छ, कई रोग वाला, बपुरा । [भाफ ।

बाफ· (प) वाष्प, बफारा, धूंआं,

बाम· (स) कुटील, शिव, काम स्तन, मनोहर, स्त्री, बायां बाम के नाम । दो० । बाम कुटिल अो बाम शिव, बाम

काम तन बाम। बाम मनोहर को कहत, जैसे सुंदर श्याम ॥१॥ काम के नाम। दो०। काम भोग अभिलाष पुनि, मन्मथ कहिये काम ॥ काम काग अनि भूमि मन, अजिले मन अभिराम ॥ २ ॥

बामपंथ· (स) टेढ़ा रास्ता।

बामपथ· (स) टेढ़ पथ, श्रुति बिरुद्ध मत। चौ०। तजि श्रुति पंथ बामपंथ चलहीं। बंचक बिरचि बेषु जग छलहीं॥ अर्थात् बेदपंथ को छोड़ि बामपथ अर्थात् पंच मकार सप्त मकार प्रधान है जामें ता पथ में चलत हैं और छली बेष बनाय के जगत को छलत हैं पंच मकार यथा मांस १ मत्स्य २ मद्य ३ मैथुन ४ मुद्रा ५ सप्त मकार में मल १ मूत्र २ दुइ विशेष हैं सो कुलार्णव में स्पष्ट है।

बामन·
बावन·
बावना· (द) नाटा, ठिंगना, विष्णु का पांचवां अवतार, बामन नाम। दो०। कुब्ज खर्व बामन लघू, धारि स्वरूप द्विजेंद्र। इन्द्र ह्वैत उपइन्द्र बनिगो, समीप असुरेन्द्र॥२॥

बामा· (स) देवी, पार्वती, पाटली, स्त्री, कुटिली, मनोहरी। [पसारना।

बाय· (द) पसार करके, बाना,

बायक· (स) दरजी, कपड़ा सीयनहारा।

बायन· [प] ब्याना बट्टा, बैना, भाजी, डाली, नेउता।

बायव· [स] वायुकोनविशेष, दूसरा, अलग। [कौआ।

बायस· [स] कागपक्षी, कौआ

बायुसख· [स] अग्नि, अनल।

बायें· [द] बाम, बायां।

बार· [स०प] बिलंब, दिन, समय, पुत्र, बारम्बार, रबि, समूह, बेग, देर, काल।

बारण } (स) हाथी, बर्जना
बारण } किसी की सनाह,
गज नाम। छंद मरहटा।
बारन मातंगज कुंजर
स्यामज हस्ती दंती व्याल।
कुंभीतंबेरम द्विरद सेकईभ
गज मतंग सुंडाल ॥ पद्मो
हरि सिंधुर दंतावलि करी
जो द्विप नाग गयंद ॥
यह नामै चौबीसकला
उनतिस बिदित मरहटा
छंद ॥ १ ॥ बारन शब्द
—दोहा॥ बारन कहिये
बरजिबो, बारन छार स-
नाहि। बारन गज हरि
उरधखो, ग्राम ग्रस्यो जब
ग्राह ॥ २ ॥

बारय· (स) हवारणयोग्य
दूरिकरो, दूरकरना,
बारना।

बारयासास (स) हबाइ करि
लिया, छोड़ाय लिया।

बारह बाट· (प) तहसनहस,
मोहादि, बारह रस्ता।

बारहि· (द) लड़कापन।

बारहिते· (प) लड़कपनतें।

बारांगना· (स) वेश्या, पुतु-
रिया।

बाराण (स) बार, बेर, दफ़ात।

बाराणसी· (स) काशीनगरी
शिवपुरी।

बाराह· (स) शूकर, सूअर,
बनैला, बाराहावतार—
दोहा। दंष्ट्री सूकर कोल
करि, किट बराह भूदार।
क्रोड़ घृष्टि पोची घृणी,
बपुधारि हरिभूधार।

बारि· (स॰प) जल, बरजीनाव
को, तट, त्याग, मकतो
चादि।

बारिचर· (स) जलजन्तु अर्थात्
मीन ग्राहादिक।

बारवगना, मु॰ देरी करना।

बारहबाटहोना, मु॰ उजड़-
ना, बिगड़ना, सत्यानाश
होना, दुखपाना, सता-
या जाना।

बामा· (द) स्त्री, वा भामा सि
बाम प्रतिकूल यथा गो॰।

जो हठकरहु प्रेमबस बामा। तौ तुम दुख पाउब परिनामा॥

बारिचरकेतु. (स) कामदेव अनङ्ग, मछली का सवार।

बारिज·वारिज. (स) कमला-दिक, कमल।

बारिद. (स) मेघ, बादल।

बारिदमाला· (स) मेघोंकेसमूह

बारिदनाद· (स) मेघनाद. इन्द्रजीत, मेघ का शब्द।

बारिधर· (स) बादल, मेघ।

बारिध, बारिधि·(द,स) समुद्र, सागर।

बारि· बारी· (द· प·) जाति विशेष टहलू पश्चिम देश ख्यात, प्रभाती अरु पचौ पहुंचौआ, फुलवारी, छोंका बधवाली, जल, पानी, छोटी निछावर, बारना, चतुर बिहारीने एक कवित्त में लिखा है। कवित्त—

चतुरविहारी पै मिलन आई बाला साथ मांगत है पाजु कछू हम पै देवाइए। गोद लिए फूल देहु नीके पहिराइ मोती पानन को पातरो हुतासन के पाइए॥ ऊंचे से अवास के झरोखे के चढ़ि बैठिए जू सेज श्याम चहिए सुरतिपति ध्याइए। ग्वाल समुझाइबे को उत्तर जो दीन्हे एक उकति विशेष भांति बारी नहीं पाइए॥१॥

बारीस· (स) समुद्र, सागर, बारिध।

बारुणी· } (स) मदिरा, मद
बारुनी· } पश्चिम, शराब, बारुनी शब्द—दोहा।

गज गति कहिये बारुनी, सुरा बारुनी नाम। पश्चिम दिसि है बारुनी, बरुन बसहिं तेहि ठाम॥१॥

बारे· (प) बाल अवस्था, लड़कई छोड़ि कै, बालक, छोड़ कर के।

बारिक· बारैक· (प· स·) एक दिन, एक बार।

बारू· (स) जल, नीर, बालू।

बाल· (स· फ·) केश, बालक, मूर्ख, अज्ञानी, मूर्ख दरार, बाहु,। बालक नाम—छंद सुखद। शिशुनन्दन पोत प्रजा पृथुकं सुत बालक सूनु तनंधय अंगज। तनुजं पुनि तात अपत्य तनै पुनि दारक अर्भक सावक आत्मज। पुनि उहइ पुत्र सतान;स्वयंहुक विंसत नाम पुरान बखानत। सगनं वसु है वधु अंत हिये सुखदं यह छंद कवीगण गावत ॥ १ ॥ दोहा॰। अलक सिरोरुह चिकुर कच, कुंतल कुटिल उदार। कवरी लसत ललाट जनु, चंदहि भई दरार ॥१॥ बंक बक्र कुंचित कुटिल, बाल चिकुर कच केश। अलक शिखंडक कुतलं, शिरोरुहं शिर देश ॥२॥ अनेकार्थ में लिखा है। दो॰। बाल सिरोरुह बाल सिसु, मूर्ख कहावे बाल। बाल सोई है जगत में, भजि सुयाल गोपाल ॥ २ ॥

बालसी· (स) दाख कुहारा।

बाला· (स·प) बालकी, लड़की, कड़ा हाथ की, स्त्री, बाला।

बालि. (स) राजाविशेष, सुग्रीव का ज्येष्ठ बन्धु, अंगद का पिता, बानर जाति।

बालितनय· (स) अंगद।

बालिसुत (स) अंगद।

बालगोपाल, मु॰ लड़किबाले बाल बच्चे।

बालबांधी कौड़ी मारना या उड़ाना, मु॰ बे चूके निशान ठीक निशान लगाना।

बालबालबैरीहोना, मु॰ हर· एक अपने और पराये से बैर होना।

बाल बाल गज मोती पीरोना, मु॰ खूब संवारना।

बाल बच्चे, मु॰ लड़के बाले।

बात बीका न होना, बाल

बांका न होना, मु· किसी तरह का बिगाड़ न होना।

बांकाचांद, मु॰ नया चांद,

बांकभोला, मु॰ वह लड़का जो छल कपट कुछ न जानता हो,

बालिश. (स· फ़) मूर्खता, गिरदनी, तकीया।

बारीश (द) समुद्र दो॰। बांधेउ जलनिधि नीरनिधि, जलधि सिंधु बारीस। सत्य तोयनिधि कंपनिधि, उदधि पयोधि नदीस। अर्थात् जलनिधि १ नीरनिधि २ जलधि. ३ सिंधु, ४ बारीश ५ तोयनिधि ६ कंपनिधि ७ उदधि ८ पयोधि ९ नदीश और यह पूछा कि सेतु सत्य कर बांध लिया।

बालेन्दु· बालेन्द (स. द) दूज का चान्द।

बाल· (स) इलायची, बाण।

बाल्य· (स) बालकपन, लड़कपन।

बाव· (प) वायु, पवन, अपर्दश।

बावबांधना, मु॰ खुशामद करना।

बावमहाना, मु॰ हवाचलना।

बाव के घोड़े पर सवार होना, मु॰ घमंडी होना, शेखी करना। [छोड़ना।

बावसुरना· मु॰ पादना, हवा

बावड़ी· (द) बावली, तड़ाग कूप। [धूंवां।

बाष्प· (स) बाफ, बफारा,

बांस· (द) एक वृक्ष, बांस का भेद कागज़ी १ दाभ २ कठबांसी ३ पहड़िया या फूबांस ४ मकसूदाबादी ५ चहर ६।

बास. (स) निवास, वस्त्र, गन्ध चौ॰। जहं जहं राम बास बिश्रामा। तहं तहं करहिं सप्रेम प्रनामा॥ अर्थात् बास राति को औ बिश्राम दिनको ठहरिवे को स्थान।

बासन· (स· प) सुगन्ध, निवास, भांड़ा, पात्र, बरतन, कमंडलादि।

बासन्ती· (स) मधुरीलता।

बासी फूलों बास नहीं, परदेशी बालम तेरी आस नहीं, मु० यह कहावत निराश होनेपर बोली जाती है।

बासी बचे न कुत्ता खाय, क० कुछ बाकी नहीं रहता।

बाहर के खाजांयं, घर के गीत गायं, कं० आपने सब धरे रहैं और दूसरों को लाभहो।

बासव· (स) इन्द्र, स्वर्गपति बासव. दोहा—शक्र शत· क्रतु शचीपति, संक्रंदन पुरहूत। कौसिक बासव ब्रत्रहा, मघवा मातलि सूत॥१॥ जिष्णु पुरंदर बज्रधर, आख-ण्डल रिपु पाक। शोभित जह्व वृषानतृप, श्री है इन्द्र बराक ॥२॥ पुनः छंद चौ पैया। कौशिक संक्रंदन नमुचि, सूदनं सुनीसीर पुरहूत हरी। शतमन्यु सुरेशं गीर्वाणेशं तुराषा डपोलोमभरो। हृधव्रत विघाती बलि आराति इन्द्र अप्सरानाथपती। हय वृद्ध श्रवा बासव मघवा मेघवाहनं दिवस्पती॥१॥ दुश्मन शचीपति ऐरावत पति पाकशासनं शत-क्रता। सुत्राम पुरंदर ले· षर्षभ हरिवाहन जिष्णू-गोत्रभिता॥ भूधरमद· मोचन सहस्रविलोचन मरुत्सखा प्राचीन वरा॥ आखंडल राजा शक्र वि· डौजा मरुत्वान और बज्र-धरा॥ सोरठा। अमरा· धिप के नाम, त्रेचालिश अमरादिकमति। हय वसु बसु विश्राम, त्रिरभंगी ब-क्तिसकल॥ दोहा। गिरि नामनि पर रिपु धरे, सुर नामनि पर राज। दिव· नामनि पर पति धरे, नाम होय सुरराज॥१॥ आयुध ताको बज्र है, पूज्य वृह-स्पति होय। बास सदा

अमरावती, नंदनवन है जोय ॥ २ ॥

बासर· (स) दिन, दिवस, बासर।

बासुकी . (स) अर्द्धङ्ग, अर्द्धी, असा, विगताकृपा ज्ञाता-लक्षा, वाचा भर भिवाते ॥ बासुकी नियमं ज्ञात्वा निर्मितं विस्रवर्द्धीणा ॥ इति कथा बाल्मीक्याम्।

बाह. (स) अश्व, घोड़ा, बाहन।

बाहन· [स] सामान्य सवारी रथादिक, असवारी, सवारी। [सवारकार।

बाहनी· [स] सेना, दल,

बाहिज. [स] बाह्य, बाहरी, बाहर से।

बाहिनी· [स] बाहिनी, सेना। चौ० संख्या भई फिरी दोउ बाहनी। लगी सवारन निज निज अनी। अर्थात् बाहनी और अनी दोनों सेना का नाम है पर कुछ भेद है।

बाहु· (स) बांह, भुजा, भुजदंड, हाथ।

बाहुज· [स] राजा, क्षत्री।

बाहुल्य· [स] बहुतायत, अधिकाई। [प्रगट।

बाह्य· [स] बाहिर, बाहर का

वि. [स] उपसर्ग, निश्चय, विशेष, विगति, निषेध।

बिंश· [स] बीश· २० संख्या विशेष।

बिंशति· [स] चालीश ४० संख्या विशेष।

बिकट· (स) भयंकर, कठिन, भयानक, टेढ़ा, बिकट।

बिकरार· बिकरार· बिकराल· } [स] भयङ्कर, भौंहा, डरोना।

बिकल· [स] व्याकुल, निरस्थिर, अपूर्ण। [कल्पनाहीन।

बिकल्प· [स] अचार, अहृढ़,

बिकसना· [प] फूलना, खिलना, निकसना, मुस्काना।

बिकसे· [प] निकसे, फूले, खिले, मुस्के, बिकसना, फूलना।

बिकार· [स] अवगुण, या

जन्मादि,६॥ मकारक दोष, अवगुणी, विकार, ऐगुन, काय, कारज। [दूषित।
विकाश· [स] प्रकाश, चमक,
विक्रम· [स] पराक्रम, सत्ता, विक्रम,पराक्रम, ज़ोर,बल।
विख्यात· [स] प्रसिद्ध, प्रकाशित, यशस्वी, विदित।
विगत· [स] नाश, त्याग, रहित, हीन, विगत, विशेष नष्ट, विशेष प्राप्त।
विगतभिद· [स] भेद रहित।
विगोरा (ह) विशेषचोरी।
बिगोय· (प) नाश, नष्ट, नाशकिये, बिगोना, नाश करना।
विग्न· (स) पृथक्, अलग।
विग्रह· (स) काया, द्वन्द, हठ, विरोध, विग्रह, झगड़ा, शरीर, देह, लड़ाई, फैलाव, प्रकाश।
विघट· (स) नवीन रचना।
विघटन· (स) तोड़ना, नष्ट करणा, विघटन।
विङ्ग· व्यङ्ग, (प· स) उलटा, विपरीत। [फिरत।
बिचरत· (स) रमत, चलत,
बिचरहिं· (प) फिरहिं, चलहिं, फिरते हैं, बिचरना, फिरना।
बिचरित· (स) ख्यात, जाहिर।
विचल· (स) पलायन, भगैर।
बिचलो·(ह) विशेष चलजाना।
विचक्षण· (स) उज्ज्वल, स्वच्छ, चतुर, प्रवीण, पंडित।
बिचारी (ह) चारा रहित।
चौ०। तात बात मंह सकल संवारी। भइ मंथरा सहाय बिचारी॥ १॥
विचित्र· (स) अनेकवर्ण, आश्चर्य रूप, अनेक प्रकार का, विचित्र।
विछंतुंद (ह) राहु।
विचिप्त (स) पगला।
बिछोह· (प) वियोग, भिन्नता।
विजय·(स) जीत, नाम अर्जुन, पाण्डव, अर्जुन नाम—
दो० जिष्णु धनंजै विजय·

रथ, फाल्गुनकिरीटी होय गुड़ाकेसगांडीव कर, पार्थ कपिध्वज सोय ॥१॥ भारत पति बसुधा अधिप, समरथ समरख होय। अर्जुन जिमि धनुधर अवध, रवै तिहारे सोय॥२॥ हार पाचक बिष्णु, सूर्य्य।

बिजयी. (स) बिशेषजयवाला, बिजयकरनेवाला, बिजयी।

बिजाक· (द) बिबाक़, खतम।

बिजि· (स) जय, कल्याण।

बिज्ञ· (स) बिद्दान, ज्ञानी, श्रेष्ठ।

बिज्ञान· (स) अनुभव, निश्चय, ज्ञान, बिशेषज्ञान, बिज्ञान।

बिज्ञानी· (स) बिशेष ज्ञानी।

बिज्ञान बिज्ञाना (द) बिज्ञान बिज्ञान, ज्ञान रूप और, ज्ञान की हानि।

बिट· (स) वैश्यवर्ण।

बिटप. (स) अङ्ग, पत्र, गुच्छा, वृक्ष, बिस्तार, पेड, बिटप। बिटप शब्द—दोहा। बिटप अरग पल्लव बिटप, बिटप कहत बिस्तार। बिटप वृक्ष की डार गहि, ठाढे नन्दकुमार ॥ १ ॥

बिटपायुध· (स) वृक्ष है हथियार जिनके।

बिटपी· (स) वृक्ष, पेड़।

बिडम्ब. बिडम्ब· बिडंब (सद) बञ्चक, निन्दित, दुःख, मारण, ठगी, छल, वंचन।

बिडम्बना· (स) निन्दा, दुःखदा, दुख, अपमान। [ठंग।

बिडम्बित· (स) दुःखित, दीन,

बिडर. (प) निडर निर्भय, छितराना, बिशेषभय. दीन।

बिडरी· } (प) छितरावै, भय
बिडरि· } युत, बिशेषभय, छितरा करके।

बिडरना. (द छितराना।

बिडारै· (प) भगाई, बहकाई, बिडारना, भगाना।

बिडाल· (स मार्जार, बिल्ली।

बिढ़ई· (द) कमाई, उद्यम, कौटी, कमाकरके, बिढ़वना, बामाना।

बिढ़वना· (द) कमाना, उद्यम करना।

बित·(स) विचारण, विवेकन, धन।

बितक· (स) विचारयुत ।

बितान· (स) बिस्तार, चौला।

बिताम· (द. स) बाजा, चन्दवा वस्त्र यज्ञशाला, मंडप, शो· भाकारी, तम्बु निवास क· रणवस्तका, मांड़व, बहुत बिस्तार, फैलाव, वितान।

बित्त. (स) धन, सम्पति, मकदूर, वित्त।

बित्तराग· (स) बासनात्याग, धन भक्त त्याग।

बत्तेश· बित्तेश्वर, (स) कुबेर, सुरभंडारी, धनराज, धनपति।

बिथिन· बिथुन· (स) गली समूह, समस्त गली।

बिथक. (स) चकित।

बिथकाहिं· (द) चकित होते हैं।

बिथकना· (द) चकित होना।

बिथकि· (द) लीन लुप्ति।

बिथरे· (द) छितराने, छिटाने।

बिथा·[प] पीड़ा, व्यथा, दुख, क्लेश।

बिथी·[स] गली, कूचा, मार्ग बाट, बीथी नाम—दो०। अत्र प्रतोली वीथिका, रथ्या कहिये ताहि। यहीं गली चलिये बली, निपट निकट पिउ आहि॥१॥

बिथुर· } [द] फैला, पसारा,
बिथुरे· } रास्ता फैले, बिथुरना फैलना।

बिद· (स) ज्ञान, जानतब, ज्ञात, जाननेवाला, बिद्, ज्ञाता।

बिदा करना, मु० रुखसत [करना।

बिदक } (स) ज्ञानयुत, नाम-
बिदैक } युत, पानेवाला, प्रमाथ कहनेवाला।

बिदसि· (स) दिशा का कोन।

बिदग्ध· (स) पण्डित, चतुर, बिचक्षण, लम्पट।

बिदर. बिदारन· [स] फटे, फाड़े, फाड़ण, चीरण।

बिदरेउ· (द) बिदीर्ण, फटगया, बिदरना, फटना।

बिदारे· [प] फाड़े, चीरे, बिदीर्ण, बिदारना, फाड़ना।

बिदारहिं (द) फाड़ते हैं, बिदारना, फाड़ना।

बिदित [स] ख्यात, प्रकाश, बिस्तार, प्रसिद्ध, जानतब, जताया गया, विदित।

बिदिसि } [स] दिशा का
बिदिशि } चारो कोण, ईशान, नैऋत, वायव, अग्नि।

बिदुष [स] पण्डित, प्रवीण, चतुरनाम—दोहा। कुशल निपुण सुण चतुरपटुं, औ प्रागल्भ प्रवीन। बिदुष बिदग्ध, बिशारदा, सो दसमुख प्रतिहीन॥ १॥

बिदुषक [स] पण्डितायुक्त, प्रवीणतायुक्त।

बिदुषण [स] पण्डिताई, प्रवीण।

बिदूष (स) निन्दादूषण।

बिदुषन्ह [द] पण्डितलोग, बिदुष शब्द का बहुवचन।

बिदूषक (स) भांड़, निन्दित, बिदूषण कर्त्ता, निंदक, बिदूषक।

बिदूषण [स] निन्दा, दूषण।

बिदूषहिं [प] निन्दहिं, दूषहिं, निंदा करते हैं।

बिदूषना [स] निंदाकरना।

बिदेह (स) राजा जनक, देह रहित, देह बिना, बिदेह।

बिद्यामान् } (स) मौजूद, हा-
बिद्यावान } ज़िर, वर्त्तमान् है, होता, बिद्यमान।

बिद्या [स] ईश्वरीमाया, ज्ञान, शिक्षा आदि १४॥ शास्त्र ज्ञान, इल्म। [पढ़ैया।

बिद्यार्थी [स] छात्र, शिष्य,

बिद्यवान् [स] ज्ञानवान्, पण्डित, बिदुष।

बिद्युत [स] बिज्जुली, दामिनी।

बिद्रुम [स] प्रवालीलता, मूंगा, विद्रुम, [त, बिदुष।

बिद्वान् [स] बिद्यावान, पण्डि

बिध [स] प्रकार, रीति, भांति।

बिधवा } [स] मृतपति, स्त्री
बिधवा } राण्ड, बेवा, रंडा, जिस स्त्री का पति मरगया।

बिधाता [स] ब्रह्मा, बिरञ्चि, चिदेवा, बिधाता।

विधात्री· [स] ब्रह्माणी, त्रिदेवी विधात्री।

विधावट· [स] साल, वेध, छेद।

विधि· [स] ब्रह्मा, ग्रहण, काल, विधान, रीति, कर्म्म, यथा, दैव, भाग्य, विधि शब्द— दोहा ॥ विधि काल विधि देवता, विधि कहिये जो विधान ॥ विधि को विधि जो हरि रचि, सोई विधि प्रमान ॥ १ ॥

विधिअण्ड· [द] ब्रह्माण्ड, ब्रह्मा का अण्ड। [कारक।

विधिकर. [स] दास, विधि·

विधिप्रपंच. [स] जगत् संज्ञा, विधि खेलि।

विधिवत्· [स] यथा, योग्य, उचित, विहित, जैसा चाहिये।

विधिवाञ्चित. [स] विधि ठग अर्थात् विधि चर्थात् विधि ठगा, जिस को। [चन्द्र।

वधु· (स) विधु, चन्द्रमा, शशी,

विधंतुद· (स· द)
विधुंतुद. } राहुग्रह।

विधुवदनी· विधुमुखी. (स) चन्द्र मुखी।

विधुबैनी. (द) चंद्रवदनी, अमृतबैनी। सवैया—सांवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जित मैन लियो है। बान कमान नि· षंग कसे सिर सोहैं जटा मुनि बेष कियो है॥ संग लिये विधुबैनी वधू रति को जेहि रंचक रूप दियो है। पायन तो पनही न पयादेहिं क्यों चलिहैं सकुचात हियो है॥ अर्थ सांवरे गोरे कुंवर सहज ही सलोने. मनोहरता करि काम को जो जीत लियो है या मनोहर ताको कामते जीति के लियो है। तीर कमान हाथ में काठि काटे में तर· कस सिर में जटा सोहत है मुनिवेष को बनाये हैं। संग में विधू कहैं सुधांसु

सोईहै बचन अर्थात् अमृत बैनी वा प्रायः प्राकृत में मध्यम वर्ण लोप के स्थान में यकारादेश होता है । जैसे मध्य चकार लोप करि लोचन से लोयन बचन को बयन तैसही इहां बदन के दकार लोप करि बैन भयो है विधुबैनी अर्थात् विधुवदनी स्त्री जिन्होंने रति को किंचित रूप दयो है । भाव जाके रूप को लेश सम रति रूप है। पगन में पनहो नहीं है । पांव पांव ते कैसे चलि हैं मेरो हृदय सकुचात हैं ।

विधेय. (स) अधीन, शिष्ट, होनहार ।

विधु. (स) राहु ।

विध्वंस. (स) नाश, उजाड़, विकटता । [आधीन ।

विनत. (स) टेढ़ा, झुका, नम्र,

विनता. विनती. (स) गरुड़माता, खगेशजननी, विनीता ।

विनवा. (द) विनय किया, विनवना, विनाश करना ।

विनती. [स] नम्रता, निवेदन ।

विनय. (स) विनती, स्तुति, शिष्टाचार, विशेषनीति, विवेक, नम्रता ।

विनष्ट. [स] विशेषनष्ट हो जाना । [मरना ।

बिन आय मरना मु॰ बे मौत

बिन रोये लड़का दूध नहीं पाता, मु॰ कहावत, बिन मांगे कुछ नहीं मिलता ।

बिन भय प्रीत नहीं. क॰ बिन डराये कोई नहीं मानता।

बिन मांगे दूध बराबर मांगे सो पानी, क॰ बिन मांगे मिले वही अच्छा है ।

विनयी. [स] अतिनीतिवाला, विनयकरनेवाला ।

विनायक. (स) गणेश, गणपति ।

विनीत. [स] अतिनीत, प्रिय विनय, अति दीन, आरत, नम्र, प्रवीण, सुशील, विशेष नीति, सुभद्र ।

बिनोद. [स] क्रीड़ा, केलि, हर्ष, आनन्द नाम — सोरठा। आरा आम बिनोद, मोद प्रीति उत्सव प्रमुद। सुख आनंद प्रमोद, मात्रयमें संमुद हरष ॥ १ ॥

बिन्द. [स] लाभ, प्राप्ति।

बिन्दक·[स] लाभयुत, प्राप्तयुत,

बिन्दु· [स] बुन्द, बुन्दा।

बिन्ध्य· [स] बिन्ध्याचल पर्वत जाको सूर्य्य सो मारका पड़ी थी अगस्त्यमुनि निरु-वार किए कथा है, बिन्ध पहाड़।

बिपञ्चक. [स] बाजा, बितान, तन्त्री। [दुर्गति :

बिपत्ति [स] बिपद, आपदा,

बिपद· [स] दुर्दशा, दुःख, बिपत्ति।

बिपरिणम. बिपरिणाम· [स] और रङ्गते और रङ्ग होना, मोंट ते पातर, पातर तें मोंट होना। [प्रतिकूल।

बिपरीति· [स] उलटा, कुढार,

बिपर्य्यय· (स) बिरुद्धता, उलटा, बिपरीत।

बिपिन· बिपनि· (स) बन, जङ्गल, आरण्य। [बहुत।

बिपुल· (स) अनेक, बिस्तार

बिपुला· (स) धरती, पृथ्वी।

बिपुलाई· (द) अधिकाई, बाहुल्यता।

बिप्र. (स) ब्राह्मण, द्विज, वेदाभ्यासी, गणगोवारष्कृमि।

बिप्रचरण· (स) भृगुलता, भृगु जी ने जो भगवान की छाती में लात मारा था उस का चिन्ह। [ब्राह्मणी।

बिप्रबङ्ग·[द] गणगोवारी कृमि,

बिप्रबधू· [स] ब्राह्मण की स्त्री। चौ॰। बिप्रबधू कुलबद्ध बुलाई। करि कुलरीति सुमंगल गाई ॥ ब्राह्मणों की बधू और कुल की बृद्धा को बुलाया।

बिप्लव. [स] नाश, क्षय, नष्ट।

बिबर· [स] बीयर, समाधि· कुटी, पर्व्वतखोह, द्वार,

छेद। गुहानाम—दोहा।
विबर गुहा द्रोणी दरी,
गुफा कंदरा गेल। पुनि
पुनि खोजत निज पिया,
रामचन्द बन गेल ॥ १ ॥

विवरण (प) बेरंग, विभाग, छिरियाणा, व्याख्या, बखान, टीका, कुंभिलान, बरन नष्ट।

विवरन [द] विवरण।

विवरन भएउ (द) रूपरहित है गए। [गाना।

विवराणा (प) मुर्झाना, अल

विवराय (द) चीरफार, बिलगाई, अलग करना।

विवरन विवर्ण (द स) और तें और रंग होना, वा पातर तें मोट, मोट तें पातर होना, नीच जाति, कुरूप, बेरंग, बुरा रंग, जुदा, अलग।

विवर्द्ध (स) अतिबाढ़ि, बढ़न्त, विशेष, बहुत बढ़ता।

विवस (स) विवश, विकल, व्याकुल, विशेष वश।

विवस्वत् विवस्वान् (स) सूर्य्य दिवाकर, दिनकर।

विवाक विवाको [प द] नाश घग, घटाय। [त्याग।

विविक्त, विविक्ति [स] एकान्त,

विविच्य [स] छांटना, वा कूटना अन्नादिक।

विविध (स) विशेषप्रकार, अनेक भांति के।

विविधि (स) त्रैगुण्यजनित।

विबुध (स) देवता, ब्रह्मा, पंडित।

विबुधधारी (स) देवमाया।

विबुधनदी (स) सुरसरी, गङ्गा।

विबुधवन (स) नन्दनबाग स्वर्ग में, देववाटिका। चौपाई।
विबुध विपिन जहं लगि
जग माहीं। देखि रामु
बन सकल सिहाहीं ॥
अर्थात् देवतन के बन जहां लगि जगत में हैं अर्थात् चैत्ररथ नंदनादि स्वर्ग और मधुबनादि जो भूमि में सो सब श्रीरामवन को देखि सिहात हैं कि

हम ऐसे न भए ।

बिबुधबैद्य बिबुधवैद्य (स) अश्विनीकुमार, देवता के बैद्य ।

बिबुधारि (स) राक्षस, असुर ।

बिबुधारी. (स) राक्षसीनारी ।

बिबेक (स) सत् असत् का बिचार, सांच, ज्ञान ।

बिबेकनिधिबल्लभा (प) सुनयना, जनक की स्त्री, दो० । कौशिल्या कहि धीर धरि, सुनहु देवि मिथिलेस । को बिबेकनिधिबल्लभहि, तुमहि सकै उपदेस ॥ अर्थात् बिबेकनिधि तुम जनक की बल्लभा अर्थात् पत्नी तुम्हें कौन सिखा सकै ।

बिबेचन. (स) झूठ का बिचार ।

बिभञ्जन (स) नाशकरनेवाला, नाशक, क्षय ।

बिभञ्जनी. [स] तोड़नेवाला, नाशकारिणी ।

बिभव [स] ऐश्वर्य्य, सम्पत्ति, सामर्थ, प्रतापी, पाक्रम, धन

बिभस्वत्, बिभाकर [स] सूर्य्य, भास्कर, दिनकर ।

बिभाग. बिभाग (स) बिलगा, विशेषण, बांट, खंड, जुदाई, बखरा, भाग्यहीन, टुकड़ा ।

बिभाति बिभाति (स) प्रकाशित, उजियारहोत है सोहता है ।

बिभावरी (स) रात्रि, निशा, रजनी । रजनी नाम— दो० । क्षनदा क्षपा तमस्वनी, तमी तमिस्रा होय । निसि श्री सदा बिभावरी, रात्रि त्रियामा सोय ॥१॥ सुखद सोहाई सरद की, कैसी रजनि जाति । चलु बलि मोहनलाल पैं, कत बैठी अनखाति ॥ २ ॥

बिभावसु (स) सूर्य्य, अग्नि ।

बिभीतक (स) बहेड़ावृक्ष ।

बिभुनइ, (स) विश्व, तैजस, प्राज्ञ, प्रतक्ष ॥ ४ ॥ ब्रह्म ।

बिभू बिभू (स) सत्तामान् पुरुष, व्यापक, सामर्थ, स्वामी ।

बिभूति. विभूति· (स) ऐश्वर्य्य, भस्मतिलक, राख, सम्पद्दा, भक्ति।

बिभेद· विभेद· (स) फूटकारना, शत्रु मित्रभाव राजनीति विशेष अंतर।

बिमत· (द) विशेष मतवाला।

बिमद. (द) विशेष मतवाला, अहंरहित। [फरसा।

बिमल· विमल· (द) निर्मल,

बिमान· (स) देवरथ,सुरवाहन।

बिमाच· बिमाच· (स) मैभा मतारी से जो बेटा। [मुक्त।

बिमुक्त. (स) छुटाहुआ अलगा,

बिमुक्ति·(स)मोक्ष,उद्धार,मुक्ति।

बिमुख· (स) विरोधी,पराङमुख।

बिमोचन.(स)छोड़न, त्यागन।

बिम्ब.(स)ओष्ठ, चन्द्रसूर्य्यमंडल, प्रतिबिम्ब, कुन्दुरु।

बिम्बा· बिम्बिका (स) कुन्दुरु, तिलकोरा, तिलकोचा।

बिम्बुक· (स) लाल, भभूका।

बियत. बेत·[स·द]आकाश, शून्य

बियद्ग· [स] कागपक्षी।

बियोग· [स] त्याग, ग्रहण।

बियोगश्रृङ्गार—छंद अपराजिता। मधुपुर जब ते प्रयान कियो हरी। दहत उर अनंग सबै मती हरी॥ बिरहबस भयो कलेवर भोरजा। नगन नगन गंध गंध धुजा धुजा॥ १॥ बियोगवारोगनाश—सोरठा। सखि हरि किन्ह बियोग, पलक बिरह बिछोह ते। भा उपताप कुरोग, गद रुज आमे व्याधि रुक॥२॥

बियोगी. वियोगी· [स] अलग जुदा।

बिरक्त. विरक्त· [स] वैराग्यवान् योगी, वीतरागी, त्यागी, बैरागी।

बिरक्ति· [स] बैराग्य, अरुचि।

बिरचि· [प] बनाईके, रचिके, बिचरना, बनाना।

बिरज· विरज· [स] रजादि गुणरहित, निर्मल, माया ते परे, माया रहित,

करता, जो रजगुण से उत्पन्न नहीं है। [पिता।

बिरञ्चि· [स] ब्रह्मा, अज, आग·

बिरत· विरत· [स] तत्पर, आविष्ट, अति प्रीति, शान्त निवृत्त, बैरागी, बैराग्य-मान्, मुमुक्षु।

बिरति. विरति [स] विशेष बैराग्य, निवृत्ति, शान्ति, त्याग, अति प्रीति।

बिरथ· [स] बिदारण, बिना रथ।

बिरद. (स) हाथी, यश, बीर-बाना, स्तुति, ख्याति।

बिरदावली. (स) गुणों की प्रसंशा का समूह।

बिरली· बिरनी· (स) काय-निका, वर्णनिका, बिच-गता।

बिरल. (द) बिगड़, बिछर।

बिरव· बिरवा· (द) वृक्ष छोटा, पौधा, गाछी, नौकेड़, बीरो, छोटा पेड़।

बिरह· (स) वियोग, बिछोह, शोक जुदाई, बिछड़ना।

बिरहित· (स) विरहित, रहित, त्यक्त [अनङ्ग।

बिरहबिदार· (स) कामदेव,

बिरहन (द) बिरहिणी, बिरह गु० वह स्त्री जो अपने पति से जुदा हो।

बिरहा· (प) वियोग, धोबी की गीत।

बिरहिणी· (स०) पति बिदेश गमिनी कामातुरी स्त्री जाको रात्रि समय एका-न्ति भाव तें बिना पुरुष चन्द्रमा के ज्योति तें शीत-लता पाए तें अधिक का-मातुर दुःखित होति हैं।

बिरति. (स) त्याग, चौ०। बिरति बिबेक बिनय बि-ज्ञाना। बोध जथारथ बेद पुराना॥ अर्थात् बिरति त्याग बिबेक सत असत्य का जानना बिनय नम्रता

बिश्राम अंतस बिचार बेद
पुराणों में यथार्थ बोध।

बिरहित (स) अति रहित।
अति छोड़ि के, बिशेष
रहित, बिशेष करि रहि।

बिरही. (स) बिरहवान् पुरुष.
शोची।

बिराग. बिराग(स) त्याग, बिगत
बनाना वा छोड़ जगत
का बैराग।

बिराजना. [स. बि बहुत राज
शोभना] क्रि० अ० शोभना
सुखभोग करना, चैन से
रहना [प्रकाशित।

बिराजति (स) सोहति,

बिराजित (सं) बिराजती है,
सोहती है।

बिराट, बिराट (स) जगत्,
अधिराज, बिश्वरूप।

बिराध (स) निशिचरबिशेष।

बिराना [द] गु० पराया, दू-
सरे का, खिझाना।

बिरियां, बिरियां [द] स्त्री०
बेला, समय, व.क्त, काल,
बेला, बेरा।

बिरुज, बिरुज (स) रोगहीन,
निरोगी, रोग नहीं।

बिरुद (स) प्रभुत्व, पराक्रम।

बिरुदावलि } (स प) यश प्र-
बिरुदावली } ताप.प्रशंसापंक्ति।

बिरुदैत (द) बानावाले बीर।

बिरुद्ध बिरुद्ध (स) बिरोध, बैर,
शत्रुता, बिरोधयुत, बैरयुत।

बिरोचन (स) बन, सूर्य्य, चन्द्र,
दैत्य, गात धर्म्म। बिरो-
चन शब्द—दोहा। सूर्य
बिरोचन सुरज पुनि, चन्द्र
बिरोचन गात। हृदय
बिरोचन धन्य सों, जाके
बन सो तात ॥ १ ॥

बिरोग [द] बियोग, बिरह,
जुदाई।

बिरोगन [द] गु० स्त्री० बियो-
गिनी, वह स्त्री जो बिरह
से व्याकुल हो।

बिरोध (स) बैरत्व, शत्रुता।

बिल (प) बीयर, बीलसर्प्यादि,

छिद्र, छेद, भट, रोज़न, सुराख़।

बिलग· (प) भलग, फ़रक़, भशुचित, न्यारा, बुरा, भान, कुछ। [मना।

बिलगमानना· सु॰ बुरा मानना।

बिल्ली भी लड़ती है तो मुंह पर पंजा धरलेती है· क॰ जब लड़ना चाहिये तो पहले भपना बचाव सोचना चाहिये।

बिलपाता· बिलपाति, (प) विलाप करति, रोती।

बिलरी·बिरली· (स) कर्णिका, कर्णिका, बिलगता।

बिलष· (प) उदास, कल्पित।

बिलखात· [स] दुःखसहित, पछिताना।

बिलखान· [द] उदास होना, दो॰। दशकंधर के वचन सुनि, कुंभकरन बिलखान। भर्थात् बिलखान उदास हो गया। [रोना।

बिलखना· [प] विषाद करना,

बिलखाई· (प) विषाद करत, रोवत, बिलखाना, बिखाद नीचे करना।

बिलस· [द] उदास।

बिलसत· [स] निर्मल, प्रकाश विशेषशोभित।

बिला· [स] धरती मेदिनी।

बिल्ली के भागों छींका टूटा· क॰ भयोग्य मनुष्य को संयोग से बड़ा काम मिला।

बिलावल· (द) स्त्री एक रागिनी का नाम।

बिलाव· बिलार, बिडाल, बिलाड़· (स·द) मर्जारि, बिलार, बिल्ला, मार्जार।

बिलोना· बिलोवना (स) बिलोडन, (वि लुड मथना) क्रि॰स॰ मथना, महना।

बिल्ली· (स) स्त्री॰ बिडाली, बिडाली, एक जानवर का नाम। बिडारी नाम— दोहा ०। सिंधु लंघि हनु वपु धरो, मारजारि वपदंड। भीत बिडारी

आखु भुक, लखे धाम दशकंठ ॥१॥ भक्त विभीषण भेटि पुनि, लखि सिय बिपिन उजारि। पुनि दशा स्य के पास गो, जिम गज मध्य गजारि ॥ २ ॥ भंग वाटिका सुत निधन, सुनि कोप्यो दशशीश । रे वनचर तव नाम कह, बोल्यो निर्भय कीश ॥ ३ ॥

विसन· (द) स्त्री॰ व्यसन, दोष औगुण, बुराई, बुरा काम ।

बिसरना· (स) विस्मरण, बिनहीं, स्त याद रखना, क्रि॰ अ॰ भूल जाना, स्मरण न रखना।

विस्वा· (द) पु॰ बीघे का बीसवां भाग, बीस शब्द से बना है ।

बिसात· (द) स्त्री, पूंजी ।

बिसाती· (द) पु॰ छोटी छोटी चीजें बेचनेवाला ।

बिसाना, बिसाहना (द) क्रि॰ स॰ मोल लेना ।

बिसारना· [द) क्रि॰ भुलाना, बिसराना ।

बिसूरना· (द) क्रि॰ अ॰ धीरे धीरे रोना, सिसकना ।

बिसैला·(द) गु॰ विष,जहरीला ।

बिस्तारना.(द) क्रि॰ स॰ फैलाना, विस्तार । [शोच, रोना ।

विलाप· (सं) कलाप, कल्पना,

बिलास· (स) क्रीड़ा, चमत्कार, सुख, कार्य्य, हर्ष, विशेष शोभित, खेल, काम, ऊंचे, नीचे, करना ।

बिलासिनी· (स) बिलास कारिणी, स्त्री, बिलास करने वाली । [होजाते हैं ।

बिलाहो· (द) बिलाते हैं, नष्ट,

बिलेशय·(स)सर्प्प, अहि, नाग।

बिलोक· (स) दर्शमान्, देखि ।

बिलोकि· (स) देख करके, विलोक्य बिलोकना, देखना ।

बिलोकन· (स) दृष्टि, झांक, ताक। [झांकना ।

बिलोकना·(प) देखना, ताकना

बिलोचन·(स)नेत्र, नयन, आंख ।

बिलोय. (स) मथन, छेदन ।

बिल्व (स) बेल वृक्ष वा फल,
बिल्वनाम—दोहा । हे श्री-
फलशांडिल्य से, सूख बिल्व
मालूर ॥ कहहु कपा
करिकित गई, पाप सजो-
बन मूर ॥ १ ॥

बिशती (स) सत, अतान ।

बिशद. (स) शुक्लवर्ण, उज्ज्वल,
स्पष्ट ।

बिशसन (स) खड्ग, करवाल ।

बिशाख (स) कार्त्तिकेय, शिव
पुत्र ।

बिशाद (द) शोक ।

बिशाखा (स) सोलहवाँ नक्षत्र:

बिशारद (स) निपुण, प्रवीण,
चतुर ।

बिसारद (द) चतुर । [चतुरी ।

बिशारदो. (स) निपुणी, प्रवीणी

बिशाल (स] दीर्घ, बिस्तार,
चौड़ा, बिनु चौड़ा, बड़ा ।

बिशिष (स) बाण हथियार,
शर, तीर, बिसूरति, चिंता
करती है ।

बिशिष क्षशानू (द) अग्निबाण ।

बिशिष्ट (स] संयुक्त, जोड़ा,
उत्तम, बड़ा ।

बिशूरति [स] बिशूरता, अभा-
विनी, अनादरी । [पवित्र ।

बिशुद्ध [स] विशेष, शुद्ध, विशेष

बिशेष. (स) बिस्तार, बिशाल,
भेद, कोई, जाति, ढब,
अधिक । [बड़ाई ।

बिशेषण (स) गुणवाचक,

बिशोक (स) शोक रहित,
विशेष शोक । [गन्ध ।

बिस्र (स) अपक्व मांसादिक

बिश्राम. (स) सुख चैन, कल,
आराम ।

बिश्लेष. (स) बियोग, अलग,
बिछोह, बिभाग ।

बिश्व. (स) जगत, संसार, सर्व
सब जाग्रत, अवस्था का
देवता ।

बिश्व तेजस, प्राज्ञ, प्रतग्ध ॥४॥
(स) ए चारो अवस्था जा
ग्रत स्वप्न सुषुप्ति-तुरीया के
अभिमानी देवता है ।

विश्वनागर· [स] सुंठी महा· औषध जगत्प्रवीण ।
विश्वभिषक्· (स) सुंठी महा औषध । [जगधारक ।
विश्वम्भर. (स) जगत्पोषक,
विश्वम्भरा·(स)धरती, मेदिनी ।
विश्वरूप·(स) जगत्रूप,संसार रूप, सर्व रूप । [नाग ।
विश्वा·(स)नापने का पात्र,कड़ा,
विश्वाकर. [स] सूर्य्य, दिनकर ।
विश्वामित्र· [स] विश्व संसार अथवा सब मित्र प्यारा जिस के सब संसार मित्र है । गाधी राजा का बेटा जो राजऋषि से ब्रह्मऋषि होगये । कौशिक, कौसिक शब्द—दोहा ॥ कौसिक गुग्गुल दग्ड पुनि, कौसिक घूघू नाम ॥ कौसिक विश्वामित्र है, जिन जाँचे श्री राम ॥१॥ [भरोसा ।
विश्वास· [स) प्रत्यय, प्रतीति,
विश्वेश·विश्वेश्वर· [स] त्रिदेवा ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

विष· [स] गरल,हलाहल,माहुर पूतना-अथ विष ना कुच वा कठोर वा कोमल, वा माता नाम—छंद घत्ता नंद ॥ रसमास कोल गर विष हालाहल कालकूट विरशन गरल॥ पयसार प्रदीपन छिड़ ब्रह्मसुत रा ष्ट्रक रस मे घोर वत्स॥ धो गरमवत्सधर धारि पयो· धर कुच मंडन स्तन उरजि॥ चूचुक वक्षोजं कुचा उरोजं दोल स्तान मुख खल हर- जि ॥ १ ॥ खेचरी कठोर परुषं कर्कशतथ्य कठिन दृढ़ कीन्ह मन ॥ हरि का फल पिशल मृदु भल्लोलं फला, मृदुल कोमल मदन॥ तिहि यति अनधिचोशू सावित्री जननी माता अंब यत । इकतिश कल छंदा घत्ता नंदादश वसु पर विश्राम गति ॥ २ ॥ विष नाम—दो॰ । गरलहलाहल

गर अमृत, काल कूट रस मांस । रसमें बिरसन घोर बलि, अलिये बनकर बास॥
बिषकसेन·[स]नारायण संज्ञा।
बिषचक्र· [स] बिषय, गरल।
बिषद· बिसद·[स] बिषदाता, कामदेव,सफ़ेद.सपष्ट,माफ़
बिषयक· (द) बिषे, बिषयमें, बाबत।
बिषधर·[स] सर्प्, अहि,नाग।
बिषम. [स] संग्राम, युद्ध, भयंकर, पांच॥ ५ तीनि ३ ॥ शत्रु मित्र भावयुत, असमान, छोटा बड़ा।
बिषमबान. [द] कामदेव चौ०। अस्तुति सुरन्ह कीन्ह अति हेतू। प्रगटेउ बिषमबान झखकेतू॥ अर्थात् बिषम बान अर्थात् पांच बाण वाला और मछली का सवार।
बिषमता· [स] रागद्वेष।
बिषय. [स] बस्तु, धन, इन्द्रियगोचर, वा॰ पञ्चप्रकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध॥५॥ संसारिक अनुराग भोगनेवाला।
बिषया· (स) स्त्री,नारी.अङ्गना।
बिषयी· (स) संसारी, भोगी, बिषय करनेवाला।
बिषहर·(स)बिषनाशक,बिषघ्न।
बिषहा. (स) बिषभरा, बिषाक्त, बिषनाशक।
बिषभ्रिक·(स)बिषभोगनेवाला।
बिषाण· (स) शृङ्ग, सींग, दान्त, हाथीदान्त।
बिषान·(द) शृङ्गि। [उदास।
बिषाद. (स) शोकभेद, थकाई.
बिषालु· (स) बिषभरा, बिषहा।
बिष्ठा· (स) मलगन्धगी,ग़लीज़।
बिष्णु. (स) जगपोषक, जगव्यापक, नारायण, हाफ़िज़ छंद—चौपैया। अच्युत दामोदर यज्ञ बिश्वंभर बासुदेव गोविंदं॥ भूधर भुवनेश्वरं प्रभु परमेश्वर बिष्वक्सेन सुकुंदं॥ दैत्यारिमिकंदन देवकिनंदन कैटभजित गिरिधारी।

केशव नारायण हरि जलशायन अज बैकुंठविहारी ॥१॥ शौरी सारंगी ललित त्रिभंगी पद्म नाभ भवंगतं । माधव मधुसूदन विष्णु जनार्दन विष्टरश्रवा अनंतं ॥ श्री कृष्ण निरंजन जन-मनरंजन विश्वरूप अघहारी ॥ केशव० ॥ २ ॥ सुरगण अवतंसी औ बलिध्वंसी औ पुरान पु-रुषोत्तम । वामन जगदीश्वर कुशल गदाधर कंसाराति न-रोत्तम । श्री वत्स चतुर्भुज श्री-श अधोक्षज दीनानाथ मुरारी ॥ केशव० ॥३॥ घनश्याम उपेन्द्रं विभु अमरेंद्रं गरुड़ध्वज गरुड़ा-सन । मंगल विश्वेश्वर पीतांब-रधर राम अविद्यानाशन । अक्षी अविनाशी सब घटवासी नन्दकेश अविकारी ॥ केशव० ॥४॥ कालीमदमर्दन केशीसूदन ज्योतिरूप योगीश्वर । अव्यक्त अरूपं व्यक्त स्वरूपं गुणातीत अखिलेश्वर ॥ सर्वज्ञ वराहं नि-र्जननाहं रावणारि धनुधारी ॥

केशव० ॥ ५ ॥ नरसिंह अनूपं औवृषजूपं त्रिकामत्र कमलेक्षण । दैत्येयविदारन प-धमोधारन नरकांतक सुरभू-षण ॥ अद्वैत अनीशं स्वंभू म-हीशं वनमाली हितकारी ॥ केशव० ॥ ६ ॥ ब्रह्मण्य मनोहर विभु करुणाकर हृषीकेश बर-दानी ॥ त्रिभुवनपति स्वामी अं-तरजामी मोक्षपाल मृदुबानी ॥ गोपति गोपालं दीनदयालं इ-न्द्रावरजवकारी ॥ केशव० ॥७॥ शत अधिक चतुर्दश नाम सु-धारस नित प्रभात उठि पीजै । प्रथमं समा दश पुनि वसु हा-दश छंदचौपैया कीजै ॥ पद-कंज स्याम घन चंचरीक मन-हरिविलास अभिहारी ॥ के-शव० ॥८॥ दोहा—गिरि महि नाम न धरधरे, गरुड़ रमा प-रईश । दैत्य पापनाशन वचन नाम होय जगदीश ॥१॥ शंख पंचजन कौमुदी, गदा चाप सारंग । नन्द सुदर्शन चौ असी, नन्दकयुत हरि संग । २ ॥

बिष्णुपदी. (स) गङ्गानदी, निगमनदी। [रिभता।

बिष्णुवल्लभ. (स) हरिप्रिय, ह-

बिष्णुवल्लभा· (स) लक्ष्मी, श्री, कमला, तुलसी।

बिसनी· (स) लत्ता, बिशती।

बिसारद. (स) बिसारद, चतुर, प्रवीन, निपुन।

बिसूरति· (प) चिन्ताकरति, शोचकरति।

बिसूरना. (द) चिन्ता करना।

बिस्तर· (स· फ) बिस्तार, बिशाल, बिछावन!

बिस्मय· (स) शोक, कल्पना, आश्चर्य, अचरज, दामोदरलीला तत्र था बिस्मैनाम—छंदबिष्णपद। तक्र घृष्टि मथित दंडाहत काल सेय मगरो। दियो महाय स्याम अंगनाई मातु पाय पकरी॥ उखलबंधन कियो बहुरि हरि बिटपि गिराय दये। तासो प्रगट धनदसुत बिनती करि निज लोक गये॥ १॥ गोपिन लख्यो तिन। भूषंपन पतत हुत पम मैं। कौतुक बिच भदी आश्चर्य अद्भुत उद बिस्मै॥ सहसानंद सूनु उरलाया कीन्हा बिष्णु भला। षोडशकल बिश्राम बिष्णुपद छंद कबीश कला॥ २॥

बिस्मरण· (स) बिसरण, भूल।

बिस्मित· (स) शोकी, चकित, अचंभित, अचरजयुत।

बिहग· (स) पक्षी बिहङ्ग, खग, पखेरू। [पक्षी, खगपति।

बिहगबर. बिहगेश· (स) गरूड़

बिहङ्ग· (स) पक्षी, अण्डज, खग। उडुप शब्द—दोहा। उडुप बिहंग उडुप नखतागन उडु कैवर्तक आहि। उडुप चन्द्र नौका उडुप, उडुप गरुड़ बड़ आहि॥१॥ खगशब्द—दोहा। खग रवि खग ससि खग पवन, खग अंबुद खग देव। खग

बिहंग हरि सुतसतजि,
खग उर से बल सेव ॥ १ ॥

बिहङ्गवर. बिहङ्गेश (स) गरुड़, पक्षी, खगेश ।

बिहरना (द) क्रि० अ० बिहरण, बिहार करना, खुशी करना, हुलसना, फटना ।

बिहर. बिहरण (स) क्रीड़ा, चलन, फिरण ।

बिहरण. बिहरणा (द) फटना, चलना, फिरना, क्रीड़ाखेल ।

बिहत. बिहरति. (स. द) फटना फटत, फिरत, फटती है ।

बिहस् (स) आकाश, शून्य । अन्तरीक्ष ।

बिहाई (प) त्यागकरिके, छोड़ के, बिहाय, छोड़करके ।

बिहात. (स) गलित, बिलित, बीताजात ।

बिहाय. (स) त्यागकरिके ।

बिहायसी (प) आकाशवत्, आकाशऐसी । [खं ।

बिहायस् (स) आकाश, अम्बर,

बिहान बिहान (द) भोर प्रात: बीतजाना ।

बिहार बिहार (स) क्रीड़ा, चलन खेल एक देश का नाम ।

बोहित (स) धारण, उचित, निर्णीत, योग्य ।

बिहीन (स) त्यागित, बिनु, रहित, अति नीच ।

बिह्वल (स) दुर्ब्बल, क्षय, सूक्ष्म ।

बिक्षिप्त (स) उन्मत, बावला, पागल ।

बिक्षेपा, बिक्षेप (स) व्याकुलता, त्याग, फेंक और की बाणी श्रवण प्राप्ति, शरीर, इन्द्री, मन, इन को उपाधि करिके स्वस्वरूप भूलना ।

बिज्ञानी (द) बिशेष ज्ञानी ।

बीचपड़ना, मु० अन्तरपड़ना, फूटपड़ना, ।

बीचबिचावकरना, मु० दो आदमियों में मेलकरना ।

बीच में पड़ना, मु० दो आदमियों में मेलकराने के लिये मध्यस्थ होना ।

बीचौंबीच मु० ठीक बीच में ।

बीड़ाउठाना, मु० किसी कठिन

काम केलिये सवाल करना हिन्दुस्तान में रीत है कि जब किसी सरदार को कठिन काम पड़ता है, तो वह अपने नौकर चाकरों को इकट्ठा करके उस काम को कहता है फिर एक पान का बीड़ा थाल में रख कर सब के साम्हने फेरा जाता है जो उस को उठाकर चबा ले वह काम उस के जिम्मे हो जाता है।

बीच बिच. (स) अलगबिलग।

बीचि· (स) तरङ्ग, कल्लोल।

बीची· (प) बिछिया, अंगुली पगु भूषण। [पानी।

बीज· (स) मूल, कारण, बिया,

बीण बीणा. (स) बीनबाजा, विपञ्चक, बीनानाम—दो० तंत्री बीना वल्लकी, बहुरी बिपंची आहि। जंत्र बजावत सहचरी, बहुरी बरनति ताहि ॥ १ ॥

बीति होत.(स) अग्नि, अनल।

बीथिम. (स) आंगन, सहन।

बीथी, बीथीका· (स) गली, पुण्य प्रतोली, कूचा।

बीन बीना· (स) बाजाभेद, तम्बी, नारद गमन बीण नाम—दोहा। सोधि बिपंची वल्लकी, तंत्र यंत्री बीन। हरिसमीप गावन लगी भोदेवर्षि प्रवीन॥

बीना· (फ) प्रवीण, चतुर, दृष्टिवान्।

बीमा·(प) झगड़ा, भाड़ा, पावक।

बीरघातिनी· (स·) शक्ति कही सांगी विशेष ब्रह्मा को दिया, बीर का नाश करनेवाली।

बीरता· (स·) शूरता, योधापन।

बीर, बीर· (स) शूरमा, भाई, भैया, संग्राम, स्वधर्म, तप ग्राम, दान अवदान बीररस कही प्राणदेके के काहू कष्ट वियोगकरना अगती पोकानि, बलवान बीर रसयुत बीर रस—छंद मौक्ति

कदाम ॥ समे रणभूमि धरे रघुवीर ॥ धरे धनु बान अपार तुनीर ॥ दशास्यनिपाति दई गति राम ॥ सुचारि जगान सुमीक्त दाम ॥१॥

ज्ञानवीर—छंदभूषण॥ दान चिपाद धराहरि लीन्ही ॥ याक कटु तनु तारन कीन्हो ॥ यपि सबै बलि धर्महि राषा ॥ छंद त्रिभागन कहींहु भाषा ॥ १ ॥

धर्मवीर—छंदललित ॥ कीन्हो महीपगण व्याज द्यूत को ले कीरति नारि धन धर्मपूत की ॥ तापै युधिष्टिर धर्म नातआ ॥ कर्णौ जगान सगनंधुना धुना॥१॥

दयावीर—छंद भुजंगो ॥ दिये प्राण योगो दधीचादिने । पराये हितं युक्त पल्हादने ॥ दयावीर बिख्यात नामै रह्यो । त्रियद्वं धुजाभी भुजंगी कह्यो ॥ १ ॥

कलि शब्द—दो०॥ कलि कलेश कलि सूरमा, कलि निषंग संग्राम ॥ कलि कलिजुग यह भोर नहिं केवल केशव नाम ॥ १ ।

बीरभद्र. (स·) शिवगण नाम ।

बीरासन· (स) बीर के समान बैठना ।

बीररस· (स) संग्राम, १ स्वधर्म, २ । तप, ३ । ज्ञान ४ । दान, ५ । दान बीर रस कह्यो धन, प्राणादि देके काहू का कष्ट निवेरण करि आनन्द दातव्य ।

बीर्ज्ज. (स·) अनन्त दुःख तें भी दुःखित नहिं होय ।

बीर्य्य· (स·) सामर्थ्य, बल, बीज, धातु ।

बीर्य्यवान· बीर्य्यमान्, (स·) पराक्रमी, सामर्थ्यी, प्रतापी ।

बीह. बीहा, (प) बीससंख्या बाचक २० ।

बीहड़· (प) विकटथान, कठिनभूमि ।

बुद्धि (स) मनीषा, अन्तःकरण वृत्ति, विशेष अज्ञा। दो०। बुद्धिमनीषा सेमुखी, मेधा धिषना धीय। मति मों मतो करत चली, भली विलक्षण तोय ॥१॥ पुनः। बुद्धि मनीषी सेमुखी, धिषण मेधो धीय। उपलब्धी ज्ञा चेतना, प्रेक्षा संवित मतीय ॥ १ ॥

बुद्धिहा· (स.) मदिरा, वारुणी, मद, बुद्धिनाशक।

बुझाई (द) समझाई, समझ करके, बुझाना, समझना।

बुद्बुद.(स·) बुलबुला, विंबुला।

बुध· बुद्ध. (स·) पण्डित, शशी-सुत, बोध अवतार, चौथा ग्रह, चन्द्रपुत्र, बुध शब्द—दोहा। बुध पंडित को कहत हैं, बुध ससि सुतहि बखान ॥ बुध हरि को अवतार एक, बोध भयो जिहि ज्ञान ॥ १ ॥

बुभुक्षा (स·) भोजन की इच्छा।

बुभुक्षित· (स·) क्षुधित, पेटू, भूखा।

बुल्ला (स·) बुद्बुद, बुलबुला।

बुढ़ अभलगना, मु· बुढ़ापे में जवानी की बातें करना।

बुढ़ापा बिगड़ना, मु॰ बुढ़ापे में दुख होना।

बुत्तादेना, मु॰ ठगना, छलना।

बुराकहना, मु॰ निन्दाकरना, बदनामी करना

बुरा चीतना, मु॰ किसी का बिगाड़ चाहना, किसी की बुराई चाहना।

बुरा बेटा, खोटा पैसा काम आता है, क॰ अपना बेटा निकम्मा भी हो तो भी किसी समय काम आता है।

बुरामानना, मु॰ अप्रसन्नहोना नाराज होना, नाखुशहोना।

बुरा लगना, मु॰ भला न मालूमहोना।

बुराई पर कमर बांधना, मु॰ बुराई करने पर तैयार होना।

बूंदा बांदी, मु० मेह की थोड़ी २ बूंदें गिरना।

बूड़मरना, मु० डूबमरना।

बूढ़ाधाम, बूढ़ाखरांट, मु० बहुत बूढ़ा।

बूता (प.) बल, काबू, ज़ोर।

वृक (स.) हुंडार, अग्नि, दानव, देवबक, भेड़िया। वृक हुंडार जाको काहू देस में बाग काहू देस में भेंड़िया कहते हैं।

वृकारि (स. हुंडार, वनजन्तु।

वृना (स.) मद्दीविशेष।

वृंद (द) समूह।

वृजिन (स.) दुःख, पाप।

वृंदारक (द) देवता।

वृत्त, (स.) मण्डल, रीति, पद्य।

वृत्तान्त (स.) वार्त्ता, विवरण, पता।

वृत्ति (स.) चित की लगनी, चाल, व्यवसाय, जीविका।

वृत्तधारी ( ) वृतका निर्वाह करनेवाला।

वृत्र (स) असुरविशेष जो इन्द्र को ऐरावत हस्ती समेत निगलगयाथा वाके मारण हेतु साढ़ेतीन धनुष् दधीचि के पंजरा का बनाया, इति ६॥ स्कन्ध॥ ८॥ १०॥ अध्याय श्रीभागवत प्रमाण अरु श्रीमहाभारत में विग्रह ख्यात ताकी विवरण, गाण्डीव धनुष् अर्द्ध जामें ३ तीनि गुण कही प्रताप वाके वैद्यनाथ में जाके प्रगट किये श्री वैद्यनाथ जू पश्चात् वाकी अर्जुन इन्द्रपुत्र सव्यसाची अधिकारी भयो॥ १॥ दूसरी शक्ति की वज्र धनुष् पूरा जामें ६ छौ गुण वाके इन्द्र अधिकारी॥२॥ तीसरी पिनाक धनुष् पूरा जामें ७ सात गुण वा के श्री शिव जू अधिकारी। चौथा अजय धनुष पूरा जामें ८ गुण सूर्य्यादि देवतन्ह का दिया वाके यामदग्नमुनि परशुराम मुनि का पिता अधिकारी वा धनुष कर संहत विग्रह कै

वर्णन जो श्री रामायण बालकांड मैं श्रीरामचन्द्र जू श्री परशुरामसुनि को धनुष प्रशंसित कहे हैं ॥ चौ० । देव एक गुन धनुष हमारे । नव गुन परम पुनीत तुम्हारे ॥८॥ अचय धनुष गुण सहित विवरण ॥ ० ॥

गुण० नाम		देवता गुणद ०
बार०	१	सूर्य्य०
उभार०	२	इन्द्र०
अंख०	३	विष्णु०
मशग्वर०	४	बृहस्पति०
देश०	५	०
धार०	६	वरुण०
शेष०	७	ब्रह्मा०
काम०	८	कामदेव०
कोदासा०	९	दिग्पाल०

९ इति नवगुण ।

वृत्रहा· (स) इन्द्र, पुरन्दर ।

वृथा· (स) मिथ्या, असत्य ।

वृद्ध·(स) बूढ़ा, पुराणा, प्राचीन डोकरा ।

वृद्धश्रवा·(स) वासव, स्वर्गपति।

वृद्धा· (स) बूढ़ी, डोकरी, बुढ़िया।

वृद्धि· (स) जराअवस्था, बढ़ती, बाढ़, उन्नती, बढ़ोती ।

वृन्द· (स) यूथ, झुण्ड, समूह, राशि । [गीर्व्वाण ।

वृन्दारक· [स] देवता, द्विवीश,

वृन्दारका·(स) देववधू, अपसरा, देवता । [आठवीं राशि ।

वृश्चिक· [स] बिछु, बीछाकीट.

वृष, वृषभ· (स) बैल, बछुरु, श्रेष्ठ, काम, सुधर्म्म, सुरपति, कर्ण, दूसरी राशि।

वृष नाम—दो० वृष सुर
पति वृष करन पुनि, वृष
जै वृषभ वृष काम ॥ वृष
सुधर्म्म करि हरि भजो,
जो चाहो सुख धाम ॥२॥

वृषकेतु [स] शिवशङ्कर, महादेव ।

वृषभ· [स] बैल, श्रेष्ठ ।

वृषले·[स] बैल, गौनर, बेड़िनी ।

वृषली· [स] गौ, शूद्री, शूद्रा ।

वृष्टि· [स] वर्षा, बारिष, मेघ, मेह, बुन्द समूह ।

वृष्णी·[स] यदुवंशी । [विपुल ।

वृहत· [स] भारी, बड़ा, स्थूल

बृहत्क्षीरक· [स] मंगरैला।

बृहती· [स] बनभंटा।

बृहत्पत्र· [स] पयठानी लोध।

बृहत्फल· (स) कटहल, भूरा कोहड़ा।

बृहत्या· (स) रेंगनी, बनभंटा।

बृहदेला· (स) बड़ी इलायची।

बृहन्नोनी· (स) गोलवाग्राग।

बृहो· (स) साठीधान।

बृहस्पति· (स) देवगुरु, पांचवां ग्रह, दोहा। धिषण बृहस्पति गीष्पति, वाचस्पति गुरु जीव। चित्र शिखंडिज आंगिरस, सुराचार्य नव सीव॥ १॥ पुनः॥ धिषन धिखंडित अंगिरा, सुराचार्यं गुरु जीव। जिहके जनु ससितर उदित, बनी निधारी ग्रीव॥ २॥

वृक्ष· [स] तरु, दली, द्रुम, वृक्ष नाम—दोहा॰ पती दली फली बली, वृक्ष महीसुत होय। साखो बिटपी अगकु है, कुजद्रुम पादप होय॥१॥ कल्पतरो वह तल्प रचि, करत की विलपत तीय। तदपि न तनक दया कहूं, पावत निरदय जीय॥२॥पुनःछंदपरसात। वृक्ष अनोकह पादप गो बिटपी फलगं कुज ग्रासतरु दली। शाखिहु अंघ्रिप पति बनस्पति पौ फल ग्राही कुटंब बही फली॥ विंसत नाम द्रुमं पुनि भूमिनि नाम निरूह धरे नग जानिये॥ सात भगान लगावहु अंतहु ये परसात सुछंद प्रमानिये॥१॥

बेग· [स] तरङ्ग, वीचि, भङ्ग।

बेगार पकड़ना, मु॰ जबरदस्ती से किसी मजदूर को पयवा गाड़ी को बिन मजदूरी दिये या थोड़ी मजदूरी दिये पकड़ना।

बेड़ा पार करना, या लगाना, मु॰ दुख से छुड़ाना, दुख दूर करना।

बेड़ापार होना, मु० दुख से छूटना, सब बाञ्छपूरी होना।

बेगि· बेगी· (प) तुरन्त, शीघ्र।

बेझा· [इ]निशाना, ताका चिन्ह

बेड़ा· [फ़] घरनाई, चौखड़ा।

बेण बेणु. [स] बांश, वंश, बांसुरी, राजा विशेष।

बेणी· [स] पृथ्वी, नदी का संगम, चोटी, जुल्फ़ालिझाट, कबरी नाम दो० ॥ केशवेश बेणी कबरि, वंशपाश छबि देत ॥ सात कुंभ के खंभ जनु, नागिन लहरें लेत ॥१ अंग अंग शोभित सकल, छबि सुषमा सुकुमारि। अलंकार द्वादश तथा, यो षोडश शृङ्गार ॥ २ ॥

बेणु· (स) मुरली, बांसुरी, वंशी, राजा विशेष, बांस।

बेत· बियत· बेंत· (इ· स·) वृक्ष विशेष, छड़ी, वेत्र, यष्ठी, पान, आकाश, शून्य, (वेत्र अज् जाना) एक तरह की लचकदार लकड़ी। सो०। फूले फले न बेत, जदपि सुधा बर्षहिं जलद। मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचि सम ॥१॥ इस सोरठे का लोग अनेक अर्थ करते हैं परन्तु निर्णय करने से यह निश्चय हुआ कि बेत जो आकाश रूपी वृक्ष है सो फूलता नहीं चाहै बादर रात्रि दिन अमृत बरषा करें क्योंकि आकाश शून्य है उस में अमृत ठहरता नहीं कैसे गुन करे ऐसा ही मूरख का हृदय शून्य है ब्रह्मा के समान भी गुरु हो तो क्या करे अमरकोश में आकाश का नाम वियत भी लिखा है वही भाषा में बिगड़ के बेत हो गया है, चौ०। जिमि जल निघटत शरद प्रकासे। बिलसत बेत सुबनज बिकासे ॥ अर्थात् जैसे शरद ऋतु के

प्रकाशसे जल घट जाता है बेत अर्थात् आकाश अमल होता है और कमल विकसता है। बेंत वृक्ष का नाम। दो०॥बेंत छरी विद्रोकरवि, भूप खियारा मीर। वंजुल मंजुल कांतार, बैठे हैं बलबीर ।१। आकाश का नाम दो०। अंबर पुष्कर विष्णुपद, अंतरीक्ष नभ बास। व्योम अनंत बिहाय सिख, सुरबर्तमन आकाश ॥१॥ गगन जो अहगम बनि रहे, नेकु करो तजि रोष। देखन तेरो रूप जनु, सुर तिय कीन्ह अरोष॥ २ ॥

बेतपाणि· (स) हाथ में बेत लिये कंचन मणि जटित आसा।

बेतस. [द] बेत वृक्ष, सामान्य वृक्ष, आकाश। [हार।

बेत्ता· (स) ज्ञाता, विज्ञ, जानने

बेत्र· (स) बेतवृक्ष विशेष, छड़ी, यष्टी, समान्य वृक्ष, ताकी प्रमाण कथा श्रीबाल्मीक ॥ वेत्रे करालस्य महो बिनिश्चितं शमी न्यम्बुरपि वर्षते सदा तदा विवेचयश्च पुष्पितं नहिं। तथा मनुष्यापि गुरोर्विनिश्चितं हरो विरंचि गुरोः समीड्रवेत् तथा दृगास्थेः प्रियया विनिश्चितं विनिर्मलं ज्ञान निरञ्जनं गतिः ॥ १ ॥

बेद· (स) आदि पुस्तक चारि, ऋग, यजुष, साम, अथर्वण ॥४॥ कन्यावाचक, पुत्री बाचक, देवं यांनि मूर्ति पुरुष आदि, ज्ञातव, चार संख्यावाचक ॥ ४ ॥ बेद नाम। दो०। धरि द्विज बपु विनती करत, वेद ब्रह्म सिद्धांत ॥ आम्नाय श्रुति शास्त्र पुनि, आगम निगम छतांत ॥ १ ॥ पुनः नाम। दो०। ब्रह्म निगम श्रुति वेद पुनि, धर्म मूल निज

काम। निगम अगम जाको कहत, सोइ बसि सुंदर श्याम ॥१॥ [विद्‌वाणी।

वेदगिरा· (स) आकाश वाणी,

वेदशिरा· (स) मुनि विशेष, जो वेद सिर पर रक्खे, मुनि विशेष, वा ब्रह्मा जाको वेद शिर पर शिरस् धातु ते जानना इति। [शास्त्र।

वेदाङ्ग· (स) व्याकरणादि को

वेदान्त· (स) वेदका अन्तभाग।

वेदिका, वेदी. (ह) वेदी, अग्निहोत्र, चौक, चबुतरा, स्थण्डिल नाम प्रसिद्ध कर्म्मकाण्ड, करने के लिये छोटा चबूतरा वेदी पद को देखो। [फांक।

वेध· (स) छिद्र, छेद, साल,

वेधा· (स) ब्रह्मा, विधाता।

वेन, वेण.(प· स·) बांसुरी, बंशी, बंशिया। [खस।

वेना· (ष) पंखा, बीजना, खस

वेनी· वेणी· [पै· स·] नदी, देवी, चोंटी, सुहागी, संगम, एक, द्वि, तीनि, चारि, पांच, छो, सात, आठ, नव, दश, इत्यादिक हज़ार पदार्थ मिलिकें एक जगह सिद्धि होय वाको भी वेनी संज्ञा।

वेनु· वेणु· (प· स) भूपविशेष सूर्य्यबंशी जाकी कथा है कि राजा वेनु राजा अङ्ग के पुत्र उत्तानपाद के वंश थे माता वाकी अधर्म्म की पुत्री ताहि पत्न यज्ञ करि के अधर्म्म अंश भया अधम कुपाठी उत्पन्न भयो कि प्रौढ़ होते जीवों पर शिकारकरण लग्यो, पिता तें बल करि राज लेकें यज्ञ, दान, व्रत, पूजा आदि सुधर्म्म को बाधा भयो, जहां वासव होत सुनत तहां वाको दण्ड करत धनवालों का धन लूट लेत ऐसो महा अधम कुपाठी प्रगट भयो कि पृथ्वी घोर अघभार ते

समस्त उमाडोल भयो, अरु वृ-क्षादि निरस भयो, लोगों सबों कामी क्रोधी लोभी होत भए, तब ऋषियों विचार करि ऐसो अधम के नाशहित यज्ञ आरंभ युक्त साथ करि हुङ्कार मरण, मन्त्र तें आहुत दियो कि वाको मरण भयो, पश्चात् बिना राज-पति के बाहू तें अधिक द्वन्द्व भय होने लग्यो, तब ऋषी-श्वरों पुनि विचारद्वार अत्रो उत्पन्न निमित्त राजावेनु मृतु के अंग मथन किए वातें बिल-कुल मातापक्ष अधर्मी राक्षसी अंश तें पहिले निषादजाति पहरिया उत्पन्न भयो। पश्चात् वाके बांहु को मथन किए पि-तादेव पक्ष तें द्विरूप एक पु-रुष विष्णुअंश अवतार राजा पृथु, दोसरो देवोअंश सुदित्ती नाम कन्यी राजा पृथु की स्त्री उत्पन्न भयो, उस रोज तें रा-जकाज प्रजा सुखी धर्मादि की वृद्धि भली प्रकारसें होने लग्यो।

बेणुबंश· (द) बांस की कोठ, यो०। अबही तें उर संसय होई। बेनुबंस सुत भयेसि घमोई। अर्थात् बेणुबंश बांस की कोठ मैं तें कहां से घमोई हुआ। [जहाज़।

बेरो· बेरे· (फ़) नौका विशेष,

बेल· (स· प·) समुद्रतट, पर्व्वत काण, लता, बिल्वफल, तरङ्ग, वृक्षसंज्ञा। बेल-नाम—दोहा। सुरभी सिव की सदा फल, बेलताल मालूर। एओफल तुभ कु-चन सम, कहत बहुत का-विकूर॥

बेला· (स· प) लहर, ज्वार, समय, बाजाभेद, पुष्प वि-शेष।

बेलि· (स) नागबेली बावर लतानाम—दोहा। प्रा-खाव्रतती वल्लरी, बिसतो बिसनो बेलि। बिटपलता बल्ली सहित, यह नव नाम हमेल॥ १॥

बेसज· (स) मरिचऔषध।

बेश.(स)रूप, छवि, छटा, शोभा।

बेश्या· (स) गणिका, कसबी, पतुरिया। बेश्यानाम— छंद हीरक। बारवधू गणिका विलासिनी दासि दारिका। पुण्यवधू संभली रूपजी वालंजिका॥ वार-मुखी वेश्या सर्व वल्लभा कामुका। नृत्यत रघुनाथ सभाति इस कलहीरका॥१

बेष· (स) भेष, बाना। [लपेटना।

बेष्टन· (स) पेढ़न, बसना,।

बेष्टित· (स) चारों ओर से ढका हुआ।

बेसर· (द) पशुनाम पश्चिमदेश ख्यात खच्चर लदुवा जानवर।

बेसरि· (प) भूषणभेद नाक का।

बेश्म· (स) घर, भवन, स्थान।

बेह· (स) छिद्र, छेद, साल।

बेहड़· (प) विकटस्थान, खंडहर, जघनीच, स्थान, बीहड़।

बेहु· (स) यज्ञभो, छेद।

बै· (स· प) निश्चय, निर्णय, स्थिर, ठीक, अवश्य।

बैकुण्ठ· (स) विष्णु का धाम, नारायण।

बैठजाना· मु॰ गिरपड़ना।

बैठरहना· मु॰ छोड़देना, आस-तोड़ना, सुस्त होजाना।

बैकृत· (स) दूषण, विकार।

बैखानस· (स) तपस्वी, यती, संन्यासी।

बैजयन्ती· (स) माला विशेष। दोह॥ सीपो सांपो शूकरी, करी हरी कमठ बाल। पटपट् मुक्ता जहां होये, सो बैजयंती माल॥१॥ ध्वजावाचक।

बैतरणी· (स) प्रेतनदी, यम-द्वार, नरक विशेष, यमपुर की नदी।

बैताल. (स) प्रेत विशेष।

बैदिक. (स) जो वेद की रीति से हो।

बैदेही·बैदेही· (स) जनकपुत्री, मधुपीपलि औषध, सीता

बैद्य· (स) चिकित्सक, भिषकबर।

बैरपड़ना, मु॰ दुश्मनी होजाना।

बैरलेना, मु॰ बदला लेना।

बेन· बेण· (प·स) वंशी बाजो, बचन, बाक्. राजा पृथु बेनु पुत्र।

बैनतेय· (स) गरुड़ पक्षी, खग पति, खगेश, स्त्री॰। तार्क्ष सुपर्ण सुरेश जित, बैनतेय हरिजान। नागांतक खगपति गरुड़, उरगरिपु गरुड़ मान ॥ १ ॥

बैभव· (स) पालन, ऐश्वर्य्य, त्रैलोक्य धन।

बैमात्र· (स) सौतेला भाई।

बैयान· बेना· (स) जन्म, प्रसव, सृष्टि, उत्पन्न, बचन।

बैर. (स) बिरोध, द्वेष, शत्रुता।

बैरागी· (स) वीतरागी, उदासीन।

बैराग्य· (स) विषयों का त्याग, अरुचि, अरु वा चारि प्रकार, हेतु बैराग्य ॥ १ ॥ स्वरूप बैराग्य ॥ २ ॥ फल बैराग्य ॥ ३ ॥ अवधि बैराग्य ४ ॥

बैबस्वत· (स) धर्मराज, काल कृतान्त।

बैश्वन्दर. (स) वह्नि. अग्नि, आग।

बैश्रवण· (स) कुबेर, सुरभण्डारी मीनजन्तु।

बैश्वानर· (स) अग्निविशेष।

बैषरी. (स) सुख घोर बाणी।

बैखानस. (स) बाणप्रस्थ आश्रमी। [बैरागी।

बैष्णव. (स) बिष्णु उपासक,

बैसन्दर· (स) अग्नि. अनल।

बैस· (स) बैस, अवस्था।

बैसा. (द) बैठा, स्थित, बसना बैठना।

बैसे· [द] बैठे, स्थितभए।

बोढ़ा. (स) मल्लाह, मांझी।

बोटीबोटी फड़कना, मु॰ बहुत चालाक होना।

बोझा सिरपर होना, मु॰ कोई कठिन कामका आजाना।

बोल चाल, मु॰ बातचीत।

बोलीठोली सुनाना, मु॰ ताना देना।

बोध· [स] ज्ञान, समझ।
बोधिद्रुम· [स] पीपलवृक्ष ।
बोध्य· [स] बोध के योग्य।
बोरना· [द) डूबाना। [बरि
बोलि· [द] बोलि कहै बोलाय
बोवालिनी· [स] कोट्ई ग्रन्थ
गीच तावी प्रमाण॥
कचा।०॥ चेलापि बीजानि
बोवालिनीषु च इच्छेत
परं शाखिनी वश्ची इच्छया
इति बाल्मीक्याम्।
बोहित· बोही. [प. स] नाव,
तरणी,नौका,प्लव,जहाज।
बौड़ा. बौड़ाहा· [प] बताह,
बताहा।
बौंड· [प] लता, बेल, बांवर।
व्यक्त· [स] रूपमान्, शरीर,
ज्ञानी, स्पष्ट, खुला।
व्यक्ति·[स] एकता,एकाई,जन।
व्यग्र·व्यग्र·(स) बिकल, चौभित,
भूला भटका, बहका।
व्यङ्ग· (स) परिहास, बिद्रुप,
ठट्ठा,स्तुति,निन्दा,मिश्रित।
व्यजन· व्यजन· (स) बीजन,
पंखा, बंगबेना।
व्यञ्जन· (स) तरकारी,शाग्नी।
व्यतिरेक. (स) अलग, भिन्न,
फ़रक़। [गत·।
व्यतीत· (स) बीतगया, हुआ,
व्यय· (स) छीन, नाश।।
व्यथा·व्यथा· (स) पोड़ा, क्लेश,
कष्ट, दुख।
व्याधि. (स) बहेलिया।
व्यापक· (स) सब में प्राप्त।
व्यवधान· (स) रोकावट, छेक।
व्यवसित· (स) व्यवहार,धन्धा।
व्यवहरिहा·व्यवहरिया· (द) प·
रखिया, पोतदार, महा-
जन। [गामिनी।
व्यभिचारिणी· (स) परपति·
व्यभिचारी· (स) लुच्चा, परस्त्री-
यगामी।
व्यलीक. व्यलीक· [स] कपट,
छल।
व्यसन· (स) भूषण, कुपात,
कष्ट, शोक, कलिशनाम—
दोष। विधुर व्यसन कृच्छ्र
गहन,तगन कलिशदु शोक

उहर कष्ट अदुःख प्रभु,
सियाहीन सब लोक ॥१॥

व्यसनी, व्यसनी· (स) फूकन्ना, कवार, जुवारी आदि कुपाची, बानि, शौक।

व्याख्या· (स) बखान, कथन, टीका।

व्याघ्र· (स) बाघ, बनजन्तु।

व्याज. (स. प) मिथ्या, भगत, चर, प्रपंच, छिपापन, बहाना, सूद, बटा, छल। प्रियाजी के बचन धूर्तनाम—दोहा। व्याजी जिभ्या कुटिल लात, बक्रनि कहत कलोजु। कपटी कान्हर कुंभर की, केतिक कहति भलोजु ॥१॥

व्याप· (स) जगत्।

व्याय· (स) जगत्, संसार।

व्याथा. (स) पीड़ा, क्लेश, कष्ट।

व्याधि. (स) रोग, दुःख।

व्याल· (स) सर्प, सांप, हाथी, क्रूरनर, दुष्ट श्वापद। व्यालशब्द—दोहा। व्याल कहत है क्रूरनर, दुष्ट श्वपद गज व्याल। व्याल सर्प सिर पर चढ़त, चेतहु बर नंदलाल ॥१॥

व्याधू· (स) बहेलिया, चिड़ीमार।

व्याली· (स) सर्पधारी, नागधारी, मंत्रधारी।

व्यास· (स. प·) मुनिविशेष, एक मुनि का नाम जिन्हों ने वेदांत सूत्र और पुराण आदि बनाया, पण्डितवाचक, विस्तार, भारी, फैलाव, अधिकाट।

व्याह· (ह) व्याहनाम—दो०। पाणिपीड पाणिग्रहन, प्रणै व्याह उपयाम। परिण निवेश विवाह कहि, उहाह भयो सियराम ॥१॥

व्याहरन्· (स·) उच्चारयन्, कथन।

व्याहरचना, मु० शादी की रीतें रसमें करना।

व्याहबिगाड़ना, मु० बनी

बात को बिगाड़ देना।

ब्याहलाना, मु॰ दुलहन को घर में लाना।

व्यूह· (स·) कदम्ब झुंड, पधिक, सेना की रचना, समूह।

व्योम· (स·) शिव, आकाश।

ब्रज· (स·) गोकुल देश, गति, प्राप्ति।

ब्रजति· (स·) प्राप्ति होत है।

ब्रजन्· (स·) गमन, चलन, प्राप्ति।

ब्रजन्ति· (स·) प्राप्तहोत हैं, जाते हैं बहुवाचक।

ब्रण· ब्रन (स.हि) गड़ारोग, फोड़ा, छिद्र घाव, ज़खम।

ब्रत· (स·) उपवास, पुण्य कर्म।

ब्रतती· (स·) लता। अमरलता नाम—दो॰। ब्रतती बिसती बल्लरी, बिसुनी अतालतान, अमरबेलि जिमि मूल बिन, इमि देखत तुमनाम ॥ १ ॥

ब्रतनिरम्बु· (स·) ब्रतनिराधार।

ब्रती· (स·) ब्रतधारी, नैमी, ऋषिनाम—छंद हंसगति ॥ शंसित योगीजटलीभिक्षुक मुंडी ॥ वर्णी तपस्वी यती साधु मुनि दंडी ॥ ब्रती तापसी जपी ऋषी निर्वाणी ॥ सन्यासी संयमीअष्ट दश ज्ञानी ॥ १ ॥ चौ॰। द्वादश अष्ट कला रचि ठानी ॥ नाम हंस गति छंद बखानी ॥ [संज्ञा।

ब्रतुल· (स·) सूर्य्य संज्ञा, रवि

ब्रह्म· (स·) परमात्मा, आदि कारण, जीव, वेद, विधि, सदन ब्रह्म शब्द—दोहा ॥ ब्रह्म ब्रह्मकुल ब्रह्म विधि, ब्रह्म देव को जीय ॥ ब्रह्मनंदके सदन में, ताहि न आवति तीय १॥

ब्रह्मलोक (स) अजधाम।

ब्रह्म ऋषि· (स·) वृहस्पति, भृगु, लोमश, वशिष्ठ।

ब्रह्मगिरा (स) ब्रह्मा की बाणी।

ब्रह्म धाम
ब्रह्मभवन } (स) ब्रह्मलोक।

ब्रह्मचर्य (स) वेदज्ञानार्थ मुपनयनानंतर प्रथम आश्रम मैथुन रहित्य।

ब्रह्मगिंवार (द) ब्रह्मद्रव।

ब्रह्मचर्याश्रमकर्म. (स) विद्या अध्येन, हस्त भोजन, गुरु आज्ञा करण।

ब्रह्मदत्त (स) ब्रह्मा का दिया हुआ, नाम भेद।

ब्रह्मद्रुम (स) पलाश वृक्ष।

ब्रह्मर्षि (स) बृहस्पति, भृगु, लोमस, वशिष्ठ,।

ब्रह्मा (स) सृजनिहार. खालिक़, ब्रह्मा नाम छन्द—छप्पै॥ हरिण गर्भ लोकेश प्रजापति सत्यक धाता॥ नाम कञ्ज परमेष्टि सदानंद द्रुहिण विधाता॥ आत्म भू भी स्वयंभू चतुराणन अंडज॥ अब्जयोनि सुरज्येष्ठ हंस वाहन वेधा अज॥ कः कमलासन सनस्रष्टा पितामह बिरंचि ब्रह्मा तथा॥ यह छंद छप्पै लो चतुर्दश उल्लास युगी कथा। दो०। अज कमलज जग विधि पिता, धाता सिद्धित होय। स्रष्टा चतुराणन धिषन, भीषम संभू सोय॥१॥ ले ले सब छबि छबिन की, जत होती जग मांझ। तोहि रची विधि निपुनता, होय गयो बहुरी बांझ।

ब्रता व्रात (स.) पंक्ति, यूथ, समूह झुंड।

ब्रह्मानंद (स) विषय का भूलना, स्वरूपानंद, भगवान का सुख।

ब्राह्मी (स) बुद्धि, धी, सरस्वती, २ नारंगी, बरंभी।

ब्रह्मकुश (स) अजमोदा।

ब्रह्मदर्भा (स) अजवाइन।

ब्रह्मदारु (स) तूत।

ब्रह्मद्वितीय (स) पीतल।

ब्रह्मपुत्र (स) चार रंगका उकारा।

ब्रह्मजटा (स) दवना।

ब्रह्मवृक्ष (स) परास।

ब्रह्मसुवर्चला. (स) हुरहुर।

ब्राह्मण (स)
ब्रह्मणयष्टिका } बभनेठी।

ब्राह्मणी (स) स्पृका।

ब्राह्मन (द) विप्र।

ब्राह्मण (स) प्रथमवर्ण, विप्र, शतपथादि चार ग्रन्थ विशेष ब्राह्मण का छल, वा दीर्घ वा पीन नाम—छंद कलहंस, बाडव जन्माय विप्र द्विज ब्राह्मन ॥ भूसुर लखि मोद भयो भूपति मन ॥ करि व्याज कूट व्रत कर व्यपदेशा ॥ निभ छद्म कापट छल नृप उपदेशा ॥ १ ॥ मखिपाय कीन्ह तनु दीर्घविशाला। गुरु मांस बढ़त आयुत तनु काला ॥ पुनि पीन पृथुल पृथु करि निज काया ॥ कलहंस छंद कवि दास गाया ॥२॥

ब्रिषाण (स) शृङ्ग, सींग, सींगाठा।

ब्रिहिन (द) चिटी, टूकाविशेष।

ब्रीड़ा (स) लज्जा, संकोच, शरम।

ब्रीही. (स) अनेकप्रकारक धान्य।

ब्रैण. (द) गूदमस्तक।

भ

भ [स] नक्षत्र, अश्विनी आदि २७। भा चमकना, ग्रह, राशि, शुक्राचार्य, नक्षत [नक्षत्र पहुंचना वा जाना] तारा, नक्षत्र २७ हैं जैसे १ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ अश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तरफाल्गुनी १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्टा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढ़, २१ उत्तराषाढ़, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिषा,

२५ पूर्वभाद्रपदा, २६ उत्तरभाद्रपदा, २७ रेवती।

भकसी· (द)स्त्री,० कैद करने के लिये एक बहुत छोटा और तंग और अंधेरा मकान, पृथ्वी में गुफ़ा, अंधेरी।

भकुआ, भकुवा· (द) गु० मूरख, भोंद, कापढ़, निर्बुद्धि, मूर्ख, अहमक।

भकुर. [स] भाकुरमछली।

भक्त· [स] सेवक, अर्चक, भगत, अन्न, ओदन, भक्तियुक्त, तदात्मक, विभक्त।

भक्त· भक्तान· [स] भात।

भक्ता· [स] भांग।

भक्तचतुर्वा· [स] आरती, अर्थार्थी, जिज्ञासु, ज्ञानी, उत्तम, मध्यम, नीच, लघु।

भक्ति· [स] मत, धर्म, श्रद्धा, सेवा, आराधना, विभाग।

भग· [स] योनि, ऐश्वर्य्यादि गुण, ६ सन्तीराणादृच।

भगत खेलना· मु० स्वांगलाना, नकल बनाना।

भगन· (स) नाश, टूटन, फोरन।

भगवान्. (स) ईश्वर, षट्भगसंयुक्त, ऐश्वर्य, १ धर्म, २ यश, ३ श्री, ४ वैराग्य ५ मोक्ष ॥ ६ ॥ अपर प्रमाण भरण, २ आधार, ३ सर्वकारण, ४ शरणत्व, ५ करुणा ॥ ६ ॥

भगवत्. (स) परमेश्वर, ऐश्वर्यादियुक्त।

भगिनी· [स] बहिनी, दिदि, सहोदरा, स्वसा, बहिन।

भङ्ग· [स] नाश, तरङ्ग, टेढ़ा, टेढ़ाई।

भङ्गुर. [स] नश्वर, पनसोखा, आकाशवर्द्दित, नाशमान्, नाशशील, वक्र।

भंगुरा· (स) अतीस।

भग्न· (स) पराजित, खंडित, हाराहुआ, टूटाहुआ।

भच्च· [स] भोजन, अन्न, खाना

भज· [स· द] सेवा, भजन, रामण, धारण, भागने, पराछ, खिदमत।

भजन· [स] सेवा, गुणानुवाद, भक्ति, सेवन, आराधन, तोरना।

भंजन·[स] आमर्दन, विदारण, तोड़ना, नाशकरना।

भजामहे. [स] भजत हौं हम सब, हम सब भजते हैं, हम भजते हैं।

भजामि· (स) मैं भजतु है, मैं भजता हूं।

भजी. (प) अङ्गिकारकीन्ह, अंगिकार किया, भजना।

भजे· (स) सेवतहौं, मैं भजताहूं।

भञ्जन· (स) नाशक, घालक, क्षयकारक, नाश, नाशकरनेवाला।

भट· [स] वीर, शूर, तनूर, योधा, बहादुर, सिपाही।

भटभेर· भटभेरि· [प] कष्ट, दुःख, धक्का खात फिरत, धक्का खाते फिरते हैं, टक्कर, भजनादिक सतसंग होने काल अभाग्य का विघ्न प्राप्ति करना ताको भटभेर कहो। [उपाधिभेद।

भट्ट. [स] पण्डित, विद्यावान्,

भण्टाकी· भण्टिका·[स] बैंगन।

भण्ड [स] सिरिस।

भड़िहाई· भडिहाई· (ट) श्वान का स्वभाव चंचल चित्त तें चोरनाई रसोईघर मों भांड, वा मार्ग मों चलत अंगनभ्मार मों आपनो भोजनवस्तु खोजना, चोरी, भांडरा चाट के। चौ०। सो दस सीस श्वान की नाई। इत उत चितइ चला भड़िहाई॥ अर्थात् भड़िहाई चोरी करे चले। भड़िहाई चोर को बुंदेलखंडादि में कहत हैं।

भण्डी· भण्डीतकी·[स] मंजीठ।

भण्डीर· [स] सिरिस, चौराई साग।

भण्डीरी· [स] मंजीठ।

भण्डील· [स] सिरिस।

भणई· भनई· [प] कहत हैं, कहते हैं।

भणंति· [स] कहत हैं सब ।

भणि· भनि· [प] कहि के, कह करके ।

भणित· भणी· भनित· [स] कथन, कथित, उक्त, कहा हुआ, कहना, कविता ।

भणु· भनु· [प] कहो, कहते हो ।

भणहु· [प) कहत हों ।

भणि· भनी· (प] कहि ।

भनता· [द] कहते हैं ।

भदेश· भदेस· [स. प] प्रकृति प्रत्ययरहित, निन्दित, निद्य प्रकारा, खराब, गवांरी, गंवरऊ निंदायोग्य ।

भदेसु· [द] मंद ।

भद्र. (स) कल्याण, भला, चन्दन, भाग्यमानी, मुण्डन, मंगल, सुख ।

भद्र· (स) गौ ।

भद्रपर्णी· [स] गम्भार, गंधप्रसारिणी, युक्त ।

भद्रमुञ्ज. [स] रमसरका ।

भद्रमुस्ता· [स] नागरमोथा ।

भद्रयव· [स] इंद्रयव ।

भद्रवती· [स] कायफर ।

भद्रवला· [स] गंधप्रसारिणी ।

भद्रश्री· [स] सुपेदचन्दन ।

भद्रा [स] कायफर, चनसुर ।

भद्रैला· [स] बड़ी इलाइची ।

भनी· [स] कही ।

भद्रहोना· मु॰ सिर के बाल और दाढ़ी मूंछ को बाल मुंड़ाना (हिन्दुओं में एक रीत है कि जब कोई मरता है तब अथवा तीर्थ पर बाल मुड़ाते हैं) ।

भव· [स] जनम, संसार, अङ्कुर, कल्याण, सुयश, कुटुम्ब, परिवार, होय, स्थिति ।

भवभामा· [द] भव महादेव भामास्त्री, पार्वती, गिरिजा, प्रेमजा ।

भवत: [स] हिहोत है ।

भवताम्· [स] हिहोय ।

भवति· [स] एकहोत है ।

भवत्· भवद्· [स] एकहोय ।

भवन· [स] घर, गृह सदन, स्थान, मकान, गृह ।

भवत्. [स] सब होय ।
भवभयहारा. [स] संसार के भय के हरनेवाले ।
भवन्ति. [स] सब होते हैं ।
भवभीरा [हि] संसार का भय ।
भवा. भवानी. [स] पार्व्वती, गिरिजा ।
भवान् [स] आपु तुम्ह ।
भवाम्बुनाथ. [स] संसारसमुद्र ।
भवाय. [स] जनम, जन्मप्राप्ति ।
भविष्य. [स] होनिहार, भवितव्य, आगे जो होगा ।
भविष्यत्. [स] आवीकाल, आनेवाला जमानह ।
भवुक. [स] कल्याण, गत ।
भव्य [स] सुन्दर, कल्याण, भावी, शुभ, सत्य, योग्य ।
भभरना. [प] डहर्ना, घबरावना, फुटफाट होना ।
भरमजाना. मु० किसीपर किसी बात का संदेह होना ।
भरमखुलना. या खुलजाना. मु० भेद खुलजाना ।
भरमखोलदेना. मु० छीपी बात को प्रगट कर देना ।
भरमगंवाना. मु० अपने धर्म को बट्टा लगाना, आबरू खोना ।
भरमनिकलजाना. मु० भेद खुल जाना । [याला ।
भलघोड़िया. मु० अच्छे घोड़ा-
भलाकर भला हो. सौदा कर नफा हो क० जैसा करेगा वैसा पावेगा ।
भलाआदमी. मु० अच्छा आदमी ।
भलामानना. मु० अहसान मानना । [ताजा ।
भलाचंगा, मु० निरोग मोटा
भलालगना, मु० अच्छामालूम होना । [आये ।
भलेआये, मु० बहुत देर में
भलाई लेना, मु० लोगों के साथ अहसान करना । [ना ।
भलाई रहना, मु० सुयश रह-
भक्षाभक्ष्य (स) भक्ष्याभक्ष भक्ष्या भक्ष्य के खानेवाला, अघोरी ।
उमर भर, मु० सारी उमर ।
कोसभर, मु० पूरा एक कोस ।

सेरभर, मु॰ पूरा एक सेर।

भयखाना, मु॰ डरना।

भभरि. (प) घबराइ के, फुट फाट के, घबरा कर के।

भभरो (ह) घबराया।

भय· (स) डर, त्रास, भीति, खौफ, भयमान—दोहा। साध्वी दर आतंक भय, भीत भीर पुनि त्रास। डरत सहचरी सकुच तें, गई कुंवरि के पास ॥१॥ पुनः-छंद सारंग ॥ आतंक भे भीत साध्वी दरं त्रास ॥ सौमित्र को कोप सुग्रीव के त्रास ॥ ह्वै भीर कीन्ही विनै भाय दै-त्यारि ॥ सारंग ये छंद तग्गान है चारि ॥ १ ॥

भयङ्कर. (स) भयानक, डौड़ा, डरौना, भय जनक, खौफ-नाक, जिस के देखने से भय हो। भयंकर या सम या सुभाव नाम छंद होवै। राम स्याम तनु मल्ल विलोके भीषण भीमभयकारी ॥ भीषण रौद्र भयंकर भैरव प्रति भय भयानक भारी ॥ द्वंद युद्ध करि बंधु दोउ न मिलि चाणूरादिक मारे ॥ कंस लख्यो घनस्याम काल सम सहस सदृश तनुधारे ॥१। पुनि सजात सदृश सवर्णा तुल्य सधर्म समाना ॥ जाय मंचहरि केश गहे नृप ध-रणि पटकि हत प्राना ॥ कोमल प्रकृत शील विभ्रम हरि अनिज निसर्ग सुभावै ॥ धाम दियो निज कला बीस लघु होवै छंद कहावै ॥ २ ॥ [तुर।

भयंचक· (स·) भय भीत, भया-

भयहृ· (प·) ऋतु भाई की स्त्री।

भयानक· (स·) भयंकर रस विशेष भयानकरस दोहा। निपट विकट नरसिंह वपु, सुरगण निकट न जात। जोरि पाणि प्रह्लाद तब, कीन्ह विनै बहु भांत ॥

भयावह:· (स) भयदाई।

भयावहा (स) डरानेवाला।

भरं· भरण, भरन, (स·) प्रति, अधिक, धारण, पोषण, पालन, भृ भरना।

भरा (द) बोझा, पोषणा, पोसना, धारण।

भरणी, भरनी (स.द) भेकाकार जन्तु सर्पै उदरगामक, नक्षत्रविशेष, एक नक्षत्र का नाम, सर्पकुल वर्णन गीत, रूस औ व्रज देश में प्रसिद्ध है। सांप का झाड़ा पक्षी विशेष, रेवा, गरुड़ मन्त्र।

भरत· (स.) नृपविशेष, राम लघु भ्राता कैकयी पुत्र।

भरद्वाज. (स·) मुनि विशेष।

भरब· (द) बिताबना, काटना, काटब, बितायब।

भरि, भारिता (प) पूर्ण, पूरन।

भल्ल (स) } भेलावा।
भल्लातक }

भल्लगंधा· (स) रेगंनी।

भल्लपर्णी· (स) कुपीलु सीसव।

भल्लटक (स) हरिद्रकार।

भर्ग भर्ग· (स·) शिव, गिरीश, ज्योति, तेज, प्रकाश, रोशनी। [लका

भर्त्ता· (स·) भतार, पति, पा-

भवना (द) बर।

भवपंथ (स) मरनाजीना।

भव· (प) भिया, हुआ, भया, संसार, शिव, जन्म, भद्र- शब्द—दोहा। भव शंकर संसार भव, भव कहिये कल्यान ॥ भव सुंदर जब जगत फल, तब भजिये भगवान ॥ १ ॥

भवंत (स) आप की।

भवदंघ्रि (स) आप का चरण।

भवफंद (स) संसार का फंदा।

भववारिधि (स) संसार रूपी समुद्र।

भस्मन् (स) भस्म, राख, छाई, [छार।

भवंर· (प·) नदी, क्रोध कोड़, भौंरा भ्रमि भ्रमर, भ्रमरगीत ॥ दो० ॥ जबहि पधारे हरिसखा, कांधे

हरि को वेश ॥ पच सुना- वत शियषप्रति, योगज्ञान उपदेश ॥ १ ॥ छंद वाला ॥ ज्ञानविज्ञान तप योग· धारे ॥ ध्यान अन्यास मन रागजारे ॥ दीन्ह संदेश ये नंदलाला ॥ भत दृग मत्त को छंद वाला ॥ २ ॥

भा· (स· द·) प्रकाश, चमक साभा, भया, हुवा, ।

भांड़· भांउ· (प) पाच नकल करनेवारा ।

भाह· (प) प्रेम, स्नेह का लक्षण, भाव, भावना, सत्ता, जन्म ।

भाग· भाग्य· (स) अंश, हिस्सा, बांट, प्रारब्ध, नसीब, बिभाग, एकदेश, विभाग्ययोग्य, शुभाशुभसूचक कर्म, प्रा- रब्ध, किसमत, भागनाम । दोहा ॥ भाग धेय विधि इष्टिपुनि, दैव भाग वस कंस ॥ बोलि पठायो काल निज, सकल भई मति भ्रंस ॥ १ ॥

भागखुलना, भागजागना, सु· भाग्यवान् होना ।

भागभरोसा· सु· धीरज, ढाढ़स ।

भागनिकलना, सु· निकलच- लना, भागचलना ।

भागचलना, सु· निकलचलना, भागजाना, चलाजाना । भागना, पलाना, दौड़ना, पलाया करना ।

भागाभाग, सु· दौड़ादौड़ ।

भागजाना, सु· चलाजाना, रफूचक्कर होना ।

भागलपुर· (द) एक शहर का नाम जो सूबे बिहार में है । एक गांव का नाम जो मझौली राज गोरख- पुर में है वहां एक प्रशस्ति बहुतपुरानी है ।

भागी· (स) साझी, बटैत, अंशी ।

भागीरथ· (स) राजपुत्र विशेष तपशूर । [शेष ।

भागीरथी· (स) गङ्गानदी बि·

भाग्य· भाग· (स. प) कपाल, अदृष्ट, प्रारब्ध ।

भाग्यवन्त· (स) प्रारब्धी, लक्ष्मीवान्, धनवान्, । [पात्र ।

भाग्यभाजन· (स) भाग्य का

भाजन. भाण्ड· (स· प) बरतन, भांड़ा, बासन, पात्र, योग्य।

भाजा. (द) सोहा ।

भांजीमारना· मु० रोकदेना ।

भांडि· (स) बरतन, भांड ।

भाणा· (प) बासन । [खोल ।

भाथा· (स) तरकश, तीर का

भाथी· (स) तरकस ।

भादों की भरन· मु० बहुत भारी मेह जो भादों में बरसता है । [मान् ।

भाधर· (स) शोभाधरे. शोभा-

भानु· (स) सूर्य्य, भास्कर, रवि, प्रभु, राजा, सूर्य ।

भानुकर· (स) सूर्य्यकिरण, धूप।

भानुकुलकैरवचंदू· (द) राम; चौ०। गांव गांव घस होइ अनंदू। देखि भानुकुल-कैरवचंदू ॥ अर्थात् भानुकुल जो कोई का बन है ताके चंद्र श्री राम को देखि के गांव गांव में अस अनंद होत है ।

भानुपीठ· स) सूर्य्यमुखी पथरी।

भानुफला· (स) क्रीड़ा, लीला, केलि ।

भानुजा· (स) जमुना, रवितनया ।

भाव· (स) प्रकृति, आदर, प्रेम ।

भावी. (स) होनेवाली ।

भावुक· (स) कल्याण, मुक्ति, गत ।

भामा· (स) स्त्री, नारी, क्रोधयुक्ता ।

भामिन· (प) कोपी, क्रोधी ।

भामिनी. (स) स्त्री, नारी, कर्कशा, लड़ाकी, क्रोधशील स्त्री । [विवाह विशेष ।

भाम्वरी· (प) घुमाउट, विधि·

भाय· (प) भ्राता, भाव ।

भायप· (प) भाईपना, भैयारी ।

भाये· (प) भाव, सुन्दर ।

भार· (स) बोझ, पांटी, बलधी ।

भारती· (स) सरस्वती, वाणी ।

भारतीहार· (स) यज्ञोपवीत, जनेउ ।

भारद्वाज· (स) भारद्ई पक्षी, भरद्वाज मुनि पुत्र ।

भारवाह· (स) कहार, मोटिया, बहंगीदार।

भारमही· (स) पृथ्वी का भार।

भारङ्गी· (स) बभनेठी।

भारीभरकम· मु॰ गंभीर, भलामानुस, सहनेवाला।

भारी पत्थर चूम कर छोड़देना· } मु॰ जो काम अपने से न हो सके उसको छोड़ देना। [होना।

भारीहोना· मु॰ बहुत कठिन

भारे· (द) भारी।

भार्गव· (स) शुक्रवार।

भार्गवी· (स) नीला दूभ।

भार्गी· (स) बभनेठी।

भार्या· (स) स्त्री, पत्नी, मेहरी, विवाहिता स्त्री।

भाल· (स) लीलाट, ललाट, तीर, का फाल, माथ, माथा, मस्तक। [मेल, सांग।

भाला· (स) बर्छी हथियार,

भालित· (प) बर्छैत, बल्लम फेकैत।

भाव· (स. प) प्रेम, भावना, जनम, सत्ता, मोल, जनु।

भावता· (स) प्रिय, चाहिता, प्रेमी।

भावन· (स) सोहात, पसन्द।

भावना· (स) भावना, सोहात, अच्छा लगना।

भावबताना· मु॰ चोंचलाकरना, नाचने में हाथ पैर आंख आदि अंगों से इशारा करना।

भावी· (स) होनहार।

भाष· (स) कथन, व्यान, कहै, भाषना।

भाषण· (स) कथन, कहना।

भाषा· (स) स्त्री॰. भाष्कहना, बोलना, बोली, वाणी, सरस्वती, जो संस्कृत नहीं है। प्राकृत, नरबोली, नरबाणी, षट्देशबाणी, श्लोक। संस्कृतं प्राकृतञ्चैव शूरसेनं च मागधम्। नैपालं पारसञ्चैव भाषायां कथ्यतानि षट्॥ १॥ वाक्य, जबान, कँहा, भाषना, कहना, भाखा, भगवद्गुण·

इदंचि – गीर्वाणवाणी निपुणो रामस्तैपगत सदा । रामस्सरस्वती जिह्वो ब्रह्मा मोमरपूजित: ॥ दैत्यदानवनागानां भाषाभिज्ञो रघूद्वह: । भूतप्रेत पिशाचानां भाषाविद्राघव: प्रभु: ॥ अन्यान्यदेश भाषाभिस्तथैव व्यवहारक: । सर्वचतुरी राम: फारसीमपि पठितवान् ॥ कीशानां भाषया राम: कीशेषुव्यपदेशिक: । ऋक्षराक्षस पक्षेषु तेषांगी भिस्तथैवस: ॥ यावंत: कारवीकीके येच विद्यापकीषन: । तेषामाचार्यतां प्राप्तोरामो दाशरथि गुणै: ॥ भाषा बोली जैसे बङ्गाले में बङ्गाला, भोट में भोटिया, नयपाल में नयपाली, कश्मीर में कश्मीरी, पंजाब में पंजाबी, सिन्ध में सिन्धी, गुजरात में गुजराती, राजपुताने में ईसवाली, ब्रज में ब्रजभाषा, तिरहुत में मैथिली, बुन्देलखण्ड में बुन्देलखण्डी, उड़ेसे में उड़िया, तिलंगाने में तेलंगी, पूना सितारे की तरफ़ महाराष्ट्री, कर्नाटक में कर्नाटकी, द्रविड़ में तामली, जिसे अन्ध्र भी कहते हैं बोलियां बोली जाती हैं । इन सब में ब्रजभाषा बहुत प्रसिद्ध और अत्यन्त मधुर कोमल प्यारी और रसीली है, और कितनेही काव्य के ग्रन्थ इस भाषा में कवि लोगों ने बहुत सुंदर और नामी रचे हैं । पुरानी पोथियों में जो दस भाषा लिखी हैं अर्थात् पंचगौड़ और पंचद्राविड़ । पंचगौड़ में सारस्वत, कानकुब्ज, गौड़ मिथिला और उड़ेसा और द्राविड़ में तामल महाराष्ट्र कर्नाट तैलंग और

गुर्जरा सो इन में से जो
बोली कान्यकुब्ज में बोली
जाती थी वही हिन्दी की
जड़ है। प्राचीन समय में
यहां प्राकृत अर्थात् मा
गधी भाषा बोलीजाती
थी, बौद्धमत और जैनमत
की बहुत पोथी इसी भाषा
में लिखी हैं।

भाषित· (स) कथित, कहाहु-
वा, कहाहुआ। [निवाला।

भाषिन· (स) वादी, बात कर

भाखे· (प) कहे, कथे, बोले।

भाष्य· (स) टीका, टिप्पनी,
सूत्रार्थ।

भास· (स) प्रकाश।

भासू· (स) झलक, ज्योति ।

भास्कर· भास्वत्·(स) सूर्य्य, दिवा-
कर, सूर्य, प्रकाशक, अग्नि।

भास्वर·(स) तेजस्वी, दीप्तिमान्।

भिण्डिपाल· (स) ढेलवांस,
जापरचढ़ाइ, ढेलाफेंकत,
ढिलवांस।

भित्ति· (स) भीत, दीवार।

भिन्दिपाल· (स) अस्त्रविशेष,
काता।

भिन्न· (स) पृथक, अलग, न्यारा,
फूटगया, जुदा, सिवाय।

भिन्नपादगामी· (स) हत्याजोड़ी।

भिल्ल· (स) व्याधा, जातिभेद ।

भिस्सटा·
भिस्सा· (स) } भात।

भिस्साण्ड· (स) कमलकंद।

भिषड्माता· (स) वाकस ।

भिस्सा· (स) भात। [भुंरली।

भिक्षु (स) तालमखाना, छोटी·

भिक्षा· (स) भीख।

भिक्षाक· भिक्षु· भिक्षुक· (स)
तपस्वी, भिखारी, जांचक,
सन्यासी, यति।

भिलावा· (स) औषधि विशेष,
भिलामानाम—दोहा॥
सुनहु अरुष्कर अग्निमुख,
वीरवृक्षभल्लात॥ इंदुमुखी
देखे बिना, दंडकल्प सम
जात॥ १॥

भी· (प, स) और, फिर, तौं, हूं,
भय।

भीड़भाड़, मु॰ ठठ, भीड़।

भीड़भड़क्का, मु॰ बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना।

भीत (प·स) भित्ति, दिवार,डर।

भीति· (स·प) भय, डर, शङ्का, त्रास, दीवार, भित्ति।

भीम· (स) डरौना, भयंकर, रोगविशेष, पांडव वायुपुत्र याको कथा है। भीमसेन नाम—दोहा॥ कीचकशत्रु वृकोदरं, कुरुरिपु वायुकुमार॥ भीमसेन भेटे हरष, स्वफलकसुत बहुबार॥ १॥ सबै भेटि अक्रूरपुनि, मधुपुर हरि ढिग आय॥ खबर पांडवन की सबै, सदुख कही समुझाय॥ २॥ सोरठा। यदुपति भक्ति प्रसिद्ध, अचल करे निष्कामना। अष्टसिद्धि नवनिद्धि, ठाढ़ रहत नितद्वार पर॥ १॥

भीर·(स)(प) स्त्री, कठिन, भीड़, धूम धाम।

भीरा· (स) बोझा, भीड़,डर।

भीरु· भीरू· (स) डरक, भयङ्कर, कादर, स्त्री, डरपोकना, कातर।

भीरू· (स) पकाही सतावर।

भीरुक· (स) कतारी।

भुआल· (द) राजा।

भुज· (स) भुजा, बांहु, दण्ड पखुरा—छंद। उर सोभ कर भुज चरन, जहं तहं लगी सहि परन॥ अर्थात् भुज पखुरा कर पहुंचा। अंग विभाग भुज पखुरा जामें बिजायठ और कर जामें मुंदरी कटक आदि।

भुंइहार· (द) ब्राह्मण का भेद, इस में कई एक शाख है। १—सोनभंदरिया,२ अथरव, २ बगौछिया ३ मनेरिया, ४ दोनवार ५ शकरवार ६ डोमकटार ७ किनवार ८ गौतम ९ पलकवार १० एकसरिया ११ टेटिहां १२ सिहोगिया १३ बेरुआर १४ नरवनी १५ सोवरनिया

१६ भेलवरिया १७ ब्रेवराकी १८ बौंरिहा १९ दौघबद्दत २० जथरिया २१ कोरांचे २२ चेसियार २३ घट्टवार २४ भट्टान २५ भारद्दाजी २६ परद्दच २७ सरवे २८ चहयार २९ अलेवार ३० चकवार ३१ परहापे ३२ जाणो ३३ मूघरगने ३४ बेरयूघार ३५ कलेघनिया ३६। स· च्छगोती ३७।

भुजबीहा· (द) बीसोंभजा बाला, रावन। यहां बीसा मे बीहा बना है।

भुजङ्ग· } (स) सर्प्प, व्याल, अहि, सांप।
भुयङ्ग· }

भुयङ्गभामिनी· (स) नागिनी।

भुजङ्गम्· (स) सीसा धातु।

भुजङ्गनाथ· (स) शिव, शङ्कर।

भुजङ्गाची· (स) नाई।

भुजवसी· (स) लुलहुवा, पंगा।

भुजबल· भुजविक्रमा· (स) बाहुबल।

भुञ्जन· (प) भोग करेगा।

भुरकी डालना, मु॰ जादू से बस में करलेना। [छलना।

भुलावादेना, मु॰ धोखादेना,

भुव· (स) स्वर्ग, अम्बर, आकाश। [सांप।

भुवङ्ग· (स) नाग, भुजङ्ग,

भुवङ्गिनी· भुजंगिनी· (द·स) नागिनी, सांपिनी।

भुवन· (स) गगण, पृथिवी, जल, त्रिभुवन नायक, मन्दिर, जगत्, आकाश, मनुष्य, ब्रह्मांड।

भुवनविचार· (स) श्लोक॰ ॥ भूपञ्चाशत कोटीनां योजनानामिताशुभा ॥ सप्त चाब्धनगाश्चैवतापाद्यसंयुता ॥१॥ नद्योद्दादश कोटिश्च पञ्च कोटि वनानि च ॥ पुरपट्टनग्रामाश्चपञ्चविंशति कोटयः ॥२॥ इति हनुमान नाटक प्रमाण।

भुवाल· भुपाल (स) राजा, नृप।

भुवी· भुवि· (स· द) पृथिवी, धरती, पृथ्वी में। [विशेष।

भुशुण्डी· (स·) काकभुशुण्डी

भुरकना (द) पु० शुक्र, कहावत हैं कि सगर के लोग बुरकवा, शुकर के आंखि भुरकवा ॥ शुक्र शब्द का यह अर्थ है। शुच पवित्र होना या सोचना। छठां ग्रह, एक मुनि का नाम जो भृगु ऋषि का बेटा और राक्षसों का गुरू था, आग, अग्नि, वीर्य, बीज।

भू· (स·) पृथिवी, सत्ता, ब्राह्मण।

भृष्कदृक्षिका· (स) बड़ी भुंडली।

भूख बन्द हो जाना, मु० भूख नहीं लगाना। [होना।

भूख लागना· मु० भूख मालूम

भूख मरना· भूखों मरना मु० मारे भूख के दुखी होना।

भूख भागना· मु० सुख होना, आराम पाना, खाने पीने का कुछ दुख नहीं रहना।

भूख· (द) क्षुधा, आहारेच्छा।

भूंजव· (द) भागवव।

भूखन· भूषण· (द· स) भूष शोभना, गहना, आभूषण, आभरण, अवतंश, अवतंस, — शब्द — दोहा ॥

भाल पुत्र अवतंस कहि, अल अवतंस सुजान ॥
सोरह बरस वयस को, अभिनव कांत सुमान ॥१॥

मनुष्य के द्वादश भूषण — दोहा ॥ दया शील शुचि मृदु गिरा, क्षमा तीष बुध दान ॥ सत्य शांति हरि रति अमद, द्वादश भूषण मान ॥१॥

भूजा· (स) जानकी, सीता।

भूत· (स) जीव, रूप, अतीत, काल, भयाहुआ प्रेत विशेष।

भूतद्रोह (स) जीवद्रोह।

भूतघ्नी (स) दोनों तुलसी।

भूतजटा· (स) जटामसी।

भूतवृक्ष· (स) बहुफार।

भूतिक· (स) रोहिस, अगिया खर। [सिहोड़ा।

भूतवास· (स) बहेड़ावृक्ष,

भूतल· (स) धरती, भूमि, पाताल, पृथ्वीतल, पृथ्वी में, भूमि पर। [शिव।

भूतात्मा· (स) जीवात्मा, देही.

भूतिक· स) अगियाखर।

भूतावास (स) बहेड़ावृक्ष।

भूति· (स) सम्पदा, मुक्ति, मोक्ष, राख, जीव, धन, ऐश्वर्य्य, विभूति। [सूवर।

भूदार· (स) शूकर, बाराह,

भूदरीभवा· (स) मूसा कानी।

भूधर· (स) पर्व्वत, पहाड़, स त्ताधारी, नृपति, आदि बराह, शेषनाग।

भूनिम्ब· (स) चिरैता।

भूप· भूपति· (स) राजा, नृप, पार्थिव, महीपाल।

भूपद· (स) राजपद।

भूपदी· (स) मल्लिका।

भूपाल· (स) राजा, नृप।

भूपिठली· (स) खेकसा।

भूबिलास· (स) भौंकाफिरना।

भूमल· (स) अङ्गारा, गरम राख।

भूभृत· (स) पर्व्वत, गिरि, रेह।

भूमि· भूमी (स, द) धरती, खेत, पृथ्वी, स्थानमात्र, जिह्वा. पृथवी। [मोकाम।

भूमिका· (स) प्रसङ्ग, प्रकरण,

भूमिखर्ज्जूरिका· (स) क्षुद्रखजूर।

भूमिछत्र· (स) गोबरछाता।

भूमिधर· (स) पर्व्वत, नृपति, आदि बराह।

भूमिनाग· (स) साधारण सांप, साधारणसर्प्प, सामान्यनाग, भूमि पर के सांप, पृथ्वी पर के सांप। केंचुआ, चारा, चो०। सो मैं कहीं कवनबिधि बरनी। भूमि नाग सिर धरै कि धरनी॥ अर्थात् भूमिनाग केंचुओं के शिर पर जैसे धरती नहीं धरी जा सक्ती है।

भूमिपाल· [सं] राजा, म-[हीपाल।

भूमिसुर· [स] ब्राह्मण।

भूमिसह·भूमीसह·(स,द) भुंईरस।

भूम्यामलकी· [स] भुंईग्रवरा।

भूयः [स] बारम्बार, पुनः फेर।

भूयोभूयः·[स] पुनः पुनः और और फेर फेर।

भूर·(स) विस्तार, दान, दक्षिणा, पहाड़।

भूरि. भूरी· (स,द·) आकाश, विस्तार, समूह, अधिक, बहुत। अनंतनाम—दो॰ अमित नेक अधिकं सरिस, अति अनंत भूयिष्ट। बहुल भूरि प्राभूत बहु, पुष्कल विपुल वरिष्ट॥ १॥

भूरिभाग. (स) बड़ाभाग्य।

भूरि. (स) लरहीसीज।

भूर्ज. भूर्य्य· (द· स) जल, भोजपत्रवृक्ष, भूर्यनाम—दो॰ एरी चर्मी मृदुत्वचा, भूर्य समान पवित्र। देखी परी कहु मम प्रिया, जासु सिंगार विचित्र॥ १॥

भूर्य्यपत्र· (स) भोजपत्र।

भूर्जतरु· (स) भोजपत्रका वृक्ष।

भूलाबिसरा·
भूलाभटका. } मु॰ भटकाहुआ, रास्ता भूलकर इधर उधर फिरनेवाला।

भूष· (स) अलङ्कार, शोभा।

भूषण· (स) अलंकार, शोभा, गहना, ज़ेवर। भूषण वा दर्पणनाम—छंदचंचरीक। सोभित रमनीक कुंज फूले तरु सुमन पुंज लेत गंध भृङ्ग गुंज विपिन मञ्जरी। सित सुगंध पवन मंद सुधा वैन शकुन वृन्द करणा युत पूर्णचंद्र शर्द शर्वरी॥ शर्द शिशर हिम बसंत ग्रीषम बरषा बदंत षट ऋतु गुण छवि अनंत रास निशिकरी॥ ऐसो लखि बनविहार उमग उमग मन उदार कीर्तिसुता छवि निहारि मोद मध्वरी॥ १॥ कुसुमनि भूषण समारि मंडन भी अलं·

कार आभरण औ परिष्कार
विरचि निज करो ।
राधे कै अंगधारि किन्हें
षोडश सिंगार नख शिख
कौ सब प्रकार रूप ना-
गरो ॥ देख्यो प्रतिबिंब सु
कर दर्पण आदर्श सुघर
त्रिभुवन दुति खैचि निकर
आडली धरो । द्वादश द्वा-
दश सिंगार अनुकूल पुनि
अंत धारि हरिविलास
छंद सार निज चंचरी ॥२॥
द्वादश भूषणनाम—छंद-
रोला । शील लाज शोभाग
मधुर बोलनि तनु कोमल ।
बेणीनैन कटाक्ष मंद विहं-
सन वपु निर्मल ॥ पति
से प्रीति अनन्य अहरि
क्रीड़ा दंती गति । यह
द्वादश आभरन छंदरोला
चौबीस जति ॥ ३ ॥ गहनों
के नाम—अनवट, आड़ि-
या, आड़, आरसी, उतर्नी,
अंगूठी, अंगूठा, अंगुश्ताना,

कंगना, कचकी, कमर-
कस, कंठश्री, कंठिया, कं-
ठेसरी, कुंडल, कड़ा, कंठा,
कंठी, करणफूल, कान,
करधनी, कुलफी, खसिया,
गड़ुआ, खुटिला, खोंपिया,
गजरिया, गूजरी, गुलस-
यारी, गुलूबन्द, गोप, गुल्फ,
घुंघरू, घुन्सो, चन्द्रहार,
चम्पाकली, चूड़ादन्ती, चंद्र,
चोटी, चूड़ी, चौकी, छन्द,
छल्ला, छुंगनू, छाप, छुच्छी,
छड़ा, जवा, जुगनू, ज़ंजीर,
जोशन, जहांगीरी, ज़ीग़ा,
ज़ुल्फ़, झूमर, झाला, झू-
मक, झबिया, झब्बा, झि-
र्झिमिया, झुलनी, टड़ि-
या, टीका, टीक, ठोसिया ।
डंडा, ढरकौवा, ढोलना,
तैंती, तिलरी, तोड़ा, तर्की ।
तरिवन, (तखौना) तौक़,
तावीज़, दोहरिया, दुल-
री, दस्तबन्द, धुकधुकी, न-
थुनी, नथिया, नगिहरी,

नौगरा, (नवरत्न) नूपुर, नेउरा, नादफलो, नकबेसर, पायल, पाज़ेब, पौरिया, पान, पगपान, पैंजनी, पकुचा, पछेला, पहुंचारी, पहुंची, पखानी, पत्ता, पीपरपत्ता, पैरी, पट्टा, पंचलरी, पटुली, परीछम, फुंदहरी, बाजू, बरेखी, बहूंटा, बांक, बाजुला, बिछायठ, बन्दी, बिछिया, बेसर, बाला, बारी, (बाली) बिजुली, बजी, बुलाक, घुंघुरी, बंधनी, भुजबन्द, मोहनमाला, माला, मंदारमाला, मोती, मोरभंवर, मोतीकड़ा, मछली, मंगटीका (टीका) यंत्र, (जंतर) रुद्राक्ष, रावटी, लट्टू, लरका, लच्छा, लवंग, शेरदहां, (कड़ा) सीसफूल, सूरजमुखी, सोनसरी, सिकरी, सड़क, सेली, सतलरी, हैकल, हुमेल, हंसुली, हाथपान, हार।

भूषित. (स) भूषणयुक्त, शोभा वाला, शोभित।

भूसुर. (द) ब्राह्मण, महीसुर।

भृकुटी. भृकुटि. (स) भौंह, भ्रु, घुड़की।

भृकुटीभंग. (स) भौंह का फिरना।

भृगु. (स) कन्दरा, शृङ्ग, ढांग, मुनि विशेष, शुक्रवार।

भृगुराश्रम. भृगुक्षेत्र. (स. द) एक तीर्थस्थान जो ज़िला ग़ाज़ीपुर में और परगना बलिया में है। ददरीनाम भी भृगुक्षेत्र का है।

भृगुभवा. (स) बभनीठीं।

भृगुनाथ. भृगुपति. (स) परशुराम विप्र। [भौंरा।

भृङ्ग. (स) भंवर कीट, भ्रमर,

भृङ्ग. (स) मेघ, राज, भृङ्गराज।

भृङ्गरा.
भृङ्गराज. } (स) भेंगराज।

भृङ्गी. (स) कुम्हारी कीट विशेष, शिव, दूत विशेष, भौंरी, महादेव का गण।

भृति· (स) कमाई, मजूरी, वेतन

भृत्य· (स) दास, सेवक, चाकर, चेला, खिदमतगार, भृत्य-जाम, दो० । बिधिकरकिंकार दास पुनि, अनुचर अनुगम दात । भृत्यफिरत जहं सैंनमे, छबि बरनी नहिं जात ॥१॥ [चेलो ।

भृत्या· (स) दासी, चाकरणी,

भृशं· (स) बारम्बार, अधिक, ।

भृगमाच्छी· (स) भुराकोहड़ा ।

भि· भये· (स) भेदा, हुआ ।

भिई· (स) भीना, तर, भया, हुआ, गीली, भिगाया, भेगना, भिगोना ।

भेउ· (प) भेद, गम, जुदाई, फूट करना, तोड़ना, मर्म ।

भेक· (स) मेंडुक जीव, बेंग, दादुर, मिंजुका, मेभुका ।

भेट·भेंट· (इ·प·) भेंटी, डाली, नज़राना, मुलाक़ाति ।

भेषक· (स) भेंड़ा ।

भेद· (स) भिन्नभाव, भ्रम, गुप्त की बात, तैं, मैं, मोर, तोर इत्यादि देहाभिमान, तोरणा राजनीति विशेष, दुइकरना अन्तर, पृथक्, अभिप्राय, फ़र्क़, भेउशब्द में देखो ।

भेदबढ़ाया. (द) बैरबढ़ाया ।

भेदलेना, मु० छिपी हुई बात को मालूम करना ।

भेदकहना, मु० छिपाने जोग बात को कहदेना ।

भेदखोलना, मु० छिपीबात को प्रगट करना ।

भेषबदलना· मु० स्वांगभरना ।

भेड़ियाधसान, मु० सब जानते हैं कि जिस ओर एक भेड़ी जाती है, सब उसी ओर चलती हैं इसलिये जब बहुत आदमी बे समझे किसी के पीछे चलते हैं तब यह मुहवरा बोला जाता है ।

भेदक. (स·) सन्धानी, फोड़नेहारा ।

भेरी· (स·) बाजा विशेष, विपुल मुख पीतर का, बड़ा नगारा, बड़ा मुंहवाला पीतर का बाजा ।

भेव (प) भेद, मम, जुदाई, मर्म, फूट करना, तोड़ना।

भेष भेस (स) स्वरूप, चाल, ढोल, छवि, । [औषधि

भेषज (स) औषध, दवाई,

भेषज (द) औषध।

भै (द) भेआ, हुआ।

भैरव (स) भयानक, एकदेव।

भो (स) शिव, महादेव, हो सम्बोधनवाचक।

भोग (स) सुख। [सर्पनगरी।

भोगवती भोगावती, भोगा (स)

भोजन (स) अदन, खादन, जीमना, खाना, भोजन नाम—दोहा॥ अदन खदन भोजन अशन, भक्षन भोग अहार॥ नंदनंदन चित लै चली मधुपुर की हिजनारि॥ १॥

भोजनचतुविधि (स) चाटना, चूसना, चोबावना, पीना।

भोजनखानी (द) रसोई का का घर।

भोम (स) सुख, मदन।

भोर (प) भूल, चूक, सुख, प्रात

भोरा भोला (द) दोष, सूधा।

भोरि (द) भूलकैभी, प्रातकाल।

भोरि भोरी भोली (प) भूली, बावरी, सीधी, भूलना।

भोरहोना, मु॰ विहान होना

भोलानाथ, मु॰ महादेव, शिव।

भोलाभाला, मु॰ सद्दा।

भोली बातें, मु॰ सीधी बातें, बे कपट बातें।

भौ (स द) भीति, भय, डर, त्रास, भेया, हुआ।

भौतिक (स) भूत कृत उत्पात।

भौम (स) मङ्गलवार, ग्रह विशेष, मंगलग्रह।

भौमजल भौमाम्भ:	(स)	पृथीवी का पानी।

भौं चढ़ाना, मु॰ गुस्सा होना।

भौंटेढ़ाकरना, मु॰ त्योरी चढ़ाना। [ढ़ना।

भौंहें तानना, मु॰ त्योरी च

भ्यास (स) साधन, चिन्तन।

भ्रंम. भ्रंश.	(स)	ध्वंस, नाश,

बिगहा, हानि, मृत्यु, अध:पतन, मृत्युनाम—दोहा ॥ काल धर्म पंचत्व लै, नाश मरन दृष्टांत ॥ अंतक निधन मृतकंस ध्वनि, सुरबंदत श्रीकांत ॥१॥ छंदलीला । नटनागर गोपाल मनोहर यशुदानंदन ॥ रामानुज सुरपतिमदभंजन कंसनिकंदन ॥ गोपीनाथ राधिकावल्लभ कुंजबिहारी ॥ विष्णुस्वयं श्रीकृष्णचंद श्रीपति अवतारी । १ नन्दकिशोर मदनमदमोचन यदुकुलभूषण ॥ नंदलाल मथुरेश बीरवर केशीसूदन ॥ दयासिंधु गोबिन्द गोमतीनाथबकारी ॥ विष्णु॰ ॥ २ ॥ ललित त्रिभंग प्रभानिधिनटवर गोवर्द्धनधर ॥ प्रभु अहित पूतनानाशन हरि दामोदर ॥ बासुदेव चाणूरविघाती अघअसुरारी ॥ विष्णु॰ ॥३॥ बंसीधर व्रजपति वनमाली कालीमर्दन ॥ चन्द्रबंसअवतंस हंस द्युति स्याम स्यामघन ॥ नाम चवालिस लीला मत्ता चौबिस धारो॥ विष्णु॰॥४॥

भ्रम. (स.) चूक. भूल. सन्देह, संशय, अनिश्चय, मिथ्याज्ञान, शक. भूलना, धोखा ।

भ्रमर· (स·) भौंरजीव, अलि ।

भ्रमाई (द) घुमाई थी ।

भ्रमवानी (द) भूंट का नाश ।

भ्रमरावली (स) भौंरसमूह, छंदविशेष, आसननाम—छंद भ्रमरावली ॥ हरि देखि छटा बनिता गहि पाणि लियो ॥ पट आसन बिष्टर मसनद पीठ दियो ॥ बहु मान किये धरि धीर प्रमोद हियो ॥ सगनं पच को भ्रमरावलि छंद कियो । १ ॥ दोहा ॥ जनमन हनि समुझाय, हरि, पुनि तालानकसाज ॥ महाराम लाभि करन, भक्त मनोरथ काज ॥ १ ॥ छंद

जलहरन ॥ गहन सघन मह नचत ललन सह करत रहस नरनटवर नग-धर ॥ जलजनयन गल-लसत जलजरद लजत मदन कखन भजत अग-धर ॥ मदनकदन मद हरण सदन० जग खलन दलन कर जनन भवन हर ॥ भनत भगत अघ अघत जगत कथ कहत महत जन रहतन यम डर ॥१॥ दोहा ॥ गोपिन मंडल बांधि हरि, नृत्यत अति अनुराग ॥ धरि सुधा धरि बांसुरी, भनत सरसुर राग ॥ १ ॥

भ्रष्ट· (स·) पतित, अधर्म्मी, निषिद्ध, नष्ट।

भ्रामरीसव (स) माधवी।

भ्रामर (स) शहत।

भ्राज· (स·) शोभा, ललित।

भ्राजत·भ्राजा, भ्राजना } (स·द) शोभित, लखितमान्, सोभना।

भ्रात्र (स) सहोदर भाई।

भ्राता· (स.) बन्धु, भाई, छोटे भाई को अनुज कहते हैं। अनुजनाम—दोहा। संग प्रभु लोग अघन्यजा, प्रीय ज्ञानीय कनिष्ठ ॥ यवीयान-मति शायनं, अवरज अनुज यविष्ठ ॥ १ ॥

भ्रान्त· भ्रान्ति· (स·) भूल, चूक, भ्रम, छुला, भ्रमण, अयथार्थम।

भ्रिंदी (स) सुपेदकटसरैया।

भ्रुकुटी. (स) भौं, भवां।

भूधरसुता (भू पृथ्वी धर, धृ धरनेवाला, सुता, पुत्री अर्थात् पारवती) स्त्री० गिरिजा, हिमगिरिसुता, प्रमाण श्लोक। वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवा-पगामस्तके। भालेबाल-विधुर्गलेच गरलं यस्योर-सिव्यालराट। सोयं भूति विभूषण: सुरवरस्सर्वाधिप: सर्वदा । सर्वःसर्वगत:

शिव: शशिनिभ: श्रीशंकर: पातुमां। अर्थात् शिव शङ्कर महाराज के बामांग में भूधरसुता अर्थात् पार्वती को विशेष शोभायमान हैं और मस्तक में गङ्गा और ललाट में बालविधु अर्थात् नयाचांद और गले में विष और उर में शिर सांई विभूति करिके भूषित और देवतों में श्रेष्ठ और सब के स्वामी और सर्व अर्थात् सर्व रूप मय और सर्वगत अर्थात् सब मे भिन्न और शिव कल्यानरूप और चन्द्रमा के समान श्वेतवर्ण श्री शङ्कर सर्वदा मेरी रक्षा करें।

भ्रू· (स) भौंह, दीर्घ, भृकुटी।

म

मइके· मयके (द. स) माता का घर, नैहर।

मक· मकु· (द) कदाचित्, बरन, बरु बल्कि।

मकर· (स) मगर, प्राय:, छन्दोभाषा में क का ग हो जाता है जैसे काक, काग, शाक, साग, आदि। निधि विशेष, मीन, मगर जलजन्तु, समुद्र, दशवांराशि, दसईंराशि, मकरी, मोह आदि, मच्छ।

मकरचांदनी· (द) कौमुदी, मकर की चांदनी, मकरचांदनीनाम—दो०। जोतिस्नान पुनि कौमुदी, मकरचांदनी नाऊं। जौन सी परति बदनतें, श्रोड़े इंसि बलि जाउं॥ १॥

मकरध्वज· (स) कामदेव, हनुमानपुत्र। [फूल का रस।

मकरन्द· (स) पुष्परस, पराग,

मकरी. मगरी· } (प)मीन, मकरी विमकड़ी· } शेष, पानी का एक जीव, मकंटी, एक तरह का कीड़ा जिस के आठ पैर होते हैं। यह पूर्व इन्द्र

सभा में अपसरारही देखि के हंसचे कारण श्री दुर्वाशा। मुनि के श्राप तें मकर की स्त्री भयी, इति पुराण प्रसिद्ध। मकरीनाम—दो० सूत्रा लूता मर्कटक, तंचवाय तंतुवाय। ऊर्णनाभ युत जान यथा, पद्मनाभ गुणगाय ॥ १ ॥ जनत विश्व हरि करत पुनि, उत्पति पुनि संहार। पंचतत्व मय लोक सब, बिरचत बारंबार ॥ २ ॥ पुनः दो०। लूता सुता मरकट कारी, ऊर्ण नाभि पुनि होय जनु कह मकरी गुन करी, पकरी विद्या सोय ॥ ३ ॥

मकुट. (स) सिहरा, मुकुट, मौर, किरीट, ताज।

मकुर. (स) आरसी, दर्पण, मुंह देखने का आईनह, दर्पण।

मकुलक. (स) तांमाजड़ी।

मकुष्ट. मकुष्टक. (स) गिरंगी।

मख. (स) यज्ञ, याग, अध्वर।

मखभंग. (स) यज्ञकाभंगहोना।

मग. मगु. (स) मगध देश, मगध, बाट, मार्ग, रस्ता।

मक्खीउड़ाना. मु० किसीकी खुशामद या गुलामीकरना।

मंगनी देना, मु० उधार देना।

मक्खीचूस, मु० कंजूस, सूम, कृपण।

मक्खी मारनो, मु० सुस्त बैठा रहना, बेकारबैठारहना।

मगध. (स) मगह, देशविशेष।

मगन. (स) आनन्द, प्रसन्न, लवलीन, हर्षित, जलबूड़ा, डूबा, खुश।

मगर. (स) कुम्भीर, मगर मच्छ, ग्राह।

मग्न. (स) मुदित, प्रसन्न, जलबूड़, लय, लीन, डूबजाना। [बासव।

मघवा. मघवान्. (स) इन्द्र,

मघा. (स) नक्षत्र विशेष।

मङ्गहिं (द) मगाते हैं।

मंगलद्रव्य. (स) पुष्पादि।

मङ्गन (प) याचक, भिखारी।
मंगल (स) मङ्गल, प्रशस्त, अभिष्टार्थ सिद्धि, हर्ष, आनंद कुशल, क्षेम, तीसरा ग्रह, हर्ष वाग्रइन्द्रिय कर्त्तव्य मंगलनाम॥ । दोहा ।
लोहितांग कुज भौम पुनि, अंगारक चौवार॥
मंगल कंवल धरणिसुत, ये वसु नाम विचार॥१॥
प्रजाहीन लखि प्रजापति, हृदे फाटि करि शोक॥
कुच सुत हुव कन्या भई, तासो भयो नृ लोक॥२॥
पुनः—दोहा। कुज अंगारक भौम पुनि, लोहितांग महिबाल। मंगल से ठाढ़े उदित, धरे जो दीपक माल॥१॥ कुज, जम—शब्द—दोहा॥ कुज मंगल कुज द्रुम कहैं, कुज भोमासुर नाम॥ जम जग जम जमराज तें, दामदु सुन्दर स्याम॥१॥

मङ्गला (स) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी।
मङ्गलाचरण (स) वन्दना, नमस्कार, मङ्गल, व्यवहार, सो तीनि प्रकार, इष्ट गुरु नमस्कारात्मक, वस्तु निर्द्देशात्मक, शिष्य आशीर्वादात्मक॥२॥
मङ्गल्यक (स) मसूर।
मङ्गल्यकुसुमा (स) } शंख पुष्पी।
मङ्गल्यपुष्पा }
मङ्गल्या (स) प्रियंगु, शंखपुष्पी, जीवन्ती, वच, समी वृक्ष, रीठा।
मङ्गल (स) गोरोचन।
मङ्गलाचार (स) बधावा, कल्याण। [रण।
मचलाई [ट] धरना, धरपमच्छ [स] मीन, मछली।
मज्जा [स] हाड़ के भीतर का गूदा, चरबी।
मझार मझारी [ट] मध्य, बीच, मांझ, भीतर।
मञ्च (स) मचान, बैठकी, गरगज, डोंगा, छप्पर-

मोहरा, तख़त पोश ।

मक्षिका [स] } मक्खी ।
मक्षीका [स] } [मलीन ।

मल्ल [स.] छेद्र, सान, चूरा,

मट्टीकरना, मु॰ नाश करना, बरबाद करना, सत्यानाश करना ।

मट्टीखाना, मु॰ मांस खाना ।

मट्टीडालना, मु॰ दूसरे का दोष छिपाना ।

मट्टीदेना, मु॰ गाड़ना, मुर्दे को दफन करना ।

मट्टीपरलड़ना, मु॰ धरती के लिये झगड़ना ।

मट्टीमें मिलना, मु॰ सत्यानाश होजाना, नष्टहोना, खराबहोना, बरबादहोना, बे इज़्ज़त होना ।

मट्टीहोना, मु॰ दुबलाहोना, निर्बलहोना, सत्यानाश होना ।

मनचोर, मु॰ मन को लुभाने वाला, जिस में मन लग जाय ।

मनभाना, मु॰ मन को अच्छा लगना, सुहाना लगना ।

मनभाना मुंड़ियाहिलाना मु॰ जिस चीज़ को मन चाहे उस को नहीं चाहने का बहाना करना ।

मनभावन, मनभावना, मु॰ मनोहर, सुहावना ।

मनमाररहना, मु॰ संतोष के साथ दुख को सह लेना ।

मनमानता, मनमाना, मु॰ सुहावना, जो मन को अच्छा लगे, मनचाहा ।

मनमारना, मु॰ अपनी चाहको रोकना । [ध्यानदेना ।

मनलाना, मु॰ मनलगाना,

मन का ढलकना, मु॰ मरने पर होना, मराचाहना, अब तब होना ।

मर खपना, मु॰ मरजाना, मर मिटाना ।

मरमिटकरना, मु॰ नष्टकरना ।

मरपचना, मु॰ बहुतदुख सहना, बहुतमिहनत करना ।

मलमिटहीना, मु॰ मष्टहीना।

मररहना, मु॰ मरजाना।

मष्टमारना, मु॰ चुपरहना।

मज्जन (स.) स्नान, शीच।

मज्जस (स) संचित, कठोर, गुमर।

मज्जारि (स) बिलार, बिल्ला।

मज्जिष्ठा (स) मजीठ।

मज्जीर मंजिर (स) बिछुवा, पादभूषण विशेष, पायजेब आदि।

मज्जीरा (स) झांझ, मजीरा।

मज्जु (स) उज्ज्वल, मोती, सुन्दर, शोभायमान, मनोहर, कोमल।

मज्जुल (स) कोमल, चेतहच सुन्दर, मनोहर, सिद्धि।

मज्जुमणि. मंजुमनि, (स) गजमुक्ता, पोखराज।

मज्जू. (स) शोभ, शोभित, सुन्दर, चाहिता, उज्ज्वल, मोती।

मंजूषा (स) पिटारी, संदूकची।

मञ्जूषा (स) मंजीठ।

मठ (स) मढ़ी, धर्म्मशाला।

मणि मणी (स) हीरादि, रत्न सर्प्पादि, सामान्य जवाहिर, मुक्तादि रत्न।

मणिबन्ध. (स) पहुंचा, हाथकी।

मणिमय (स) समुद्र, सागर।

मणिका (स) माला का दाना।

मणिछिद्रा (स) मोटा तदाभव में वैद्यक में सतावर।

मणिमन्थ (स) सेन्धानोन।

मणियारा (प) मणियुक्त सर्प्प विशेष।

मणिवर (स) हीरामणि।

मणी. (स) सर्प्प मणिदार।

मण्ड (स) मांड़, तुराणी, गांभी। [घटी।

मण्डक (स) दोस्तीरोटी, मा-

मण्डन. (स) भूषण, शोभित, शृंगार, गहना।

मण्डल (स) आकाश, गोल, कुंडल, चौरस, तेज।

मण्डल-मण्डन (स) भास्कर, सूर्य्य।

मंथो (स) कामदेव, चन्द्रमा।

मंथो शब्द—दी॰। मंथो

ससि मंथी मदन, मंथी घाम प्रचंड। मंथी बहुरो राहु है, जो हरि कर बिच खण्ड ॥ १ ॥

मंदप. (द) मल्ल। प्रियाजी की मुसकान मल्लनाम—दो०। दरस वेध ईषद मल्ल, रं-चक मंदप याकु। तब पिय सहचरि तन चितै, मुसकी कुंघरि तनाकु ॥ १ ॥

मंडलाकार. (स) गोलाकार, कुण्डली।

मण्डली. (स) समूह, सभा, थोक, गुरोह। [राजा।

मंडलिक.} (स) मण्डलेश्वर
मण्डलीक.}

मण्डूकपर्णः. (स) सोनपत्ता।

मण्डूकपर्णी. (स) मजीठ, बरभी।

मण्डूका. (स) बरभी।

मण्डूर. (स) लोहसिहान।

मण्डित. (स) जड़ित, भूषित, शोभित।

मण्याकर. (स) मणि का खानि।

मत. (स) मति, रीति, धर्म, समाह।

मत्तगज. (स) मतवारा हाथी।

मतंग. (स) एक ऋषि का नाम यथा चौ० रिषि मतंग महिमा गुण भारी। जीव चराचर रहत सुखारी ॥ अर्थात् ऋषि मतंग की आशीर्वाद से वहां के जानेवाले को दुख नहीं रहता, हाथी, मातङ्ग, हस्ती।

मतंगज. [स] हाथी।

मता. [स] उपदेश, विचार।

मति. [स] बुद्धि, मेधा, मनीषा, ज्ञान, इच्छा, स्मृति।

मतिद्युति. [स] बुद्धि का ठहरना, बुद्धि का मान।

मतियंत्री. [स] बुद्धि का बंद कर देना।

मतेभ. [स] मतवारा हाथी।

मत्त. [स] मतङ्ग, मतवाला, उनमत्त, घमली, पागल।

मथानी. (द) खैलरि जिस से दही मथि के घी निकालते हैं।

मत्तकाशिनी. [स] युवा स्त्री।

मत्स. [स] मीन, मछली।

मत्सर· (स) ईर्ष्या, चीढ़, डाह, द्वेष, जलन, द्रोह, चाह, परऐश्वर्य का न सहना, पराई संपति को देखकर जलना, क्रोध, कृपण, डाह खाना, न सहना मत्सरता—छंद तारक॥ हरि गोविन प्रीति प्रतीति भुलानी। करि चेरि दरी कुबजा पटरानी॥ तजि हंसिनि हंस बकी मन मानी। सगनं चतुरं गुरु रीत बखानी॥१॥

मत्स्य· [स] मीन, मछली, मच्छ, मत्स्यावतार—दोहा। शंख मारि ले वेद धरि, झख वपु नाम पचीस। मास्यो सब विधि दुखकला, उक्ताजा वसुबीस॥१॥ मीन नाम—छंद उल्लाला। तिमि तिमि षति मंगल मकर झष पृथरोमा चहलीनयो। वैसारिण चिलिचिम सुदरारा सहस्त्र दंष्ट पाठीनयो॥ राजीव शाल प्रोष्ठी गडक शकुल शिशुकनक मीनयो। याटी विसारि रोहित सफरि मत्स्य उलपी मीनयो॥१॥

मत्स्याघ्न· [स] मछुवा, मीनघातक। [जलपीपर।

मत्स्यगन्धा· (स) होहवेर, मछेछी,

मत्स्यगर्भ· [स] मछलीका अंडा।

मत्स्यानिषूदन·[स] बीलहफल।

मत्स्यपित्ता· [स] कुटकी।

मत्स्याण्ड.[स]मछली का अंडा।

मत्स्यण्डी· [स] शक्कर। [छेछी

मत्स्यादनी· [स] जलपीपर, म·

मत्स्याक्षी· (स) गांडर दूब, मछेछी। [मट्ठा।

मथित· (स) मथाहुआ द्रव्य,

मद·(स) मदिरा, शराब, सुरा, अहंकार, अभिमान, निशा वा अष्ट प्रकार॥८॥ जाति मद, कुलमद, रूपमद,

युवामद, धनमद, विद्यामद, ध्यानमद, ज्ञानमद।

मदगर (स) मगरा।

मदतायम (स) हर्ष का बर।

मदन (स) कामदेव, दस्त, मैनफल, काम, सुरा, धतूरा।

मदनारी (द) महादेव।

मदनमंथन मदनारि (स) शिव गिरीश।

मदबर (स) हस्ती, हाथी।

मदमातो (स) मद से मतवारी।

मदयन्ती (स) मल्लिका।

मदादिक (स) अभिमान आदिक।

मदिरा (स) दारू, सिरोता, मद्य, शराब।

मंदोदरी (स) रावण की स्त्री।

मदोद्भवा (स) मेदा, तदभाव में सतावर।

मद्दक (स) सोम।

मद्गुरु (स) मांगुर मछली।

मद्य मद्या (स) सुरा, मदिरा, मदयांय्य, शराब।

मद्यप (स) सुरापी, मद्यपिवैया।

मधु (स) चैत्रमास, मदिरा, मकरंद, नभ, जल, पय, सुधा, राक्षस, पुष्परस, बसन्त ऋतु, द्रुम, मदनपुत्र, कामदेवपुत्रनाम जो स्त्री के अंग में रती अरु मधु उभो माता पुत्रबसित है अरु कामदेव पुरुष अंग में बसित है। यथा वेदस्तवा।

मदनमधुसुत परिगरपश्यतिं हृदय मारुणोदय श्वरम्॥ प्रमाण इति श्रीभागवत् ५ स्कन्ध॥ क्षीर, मद्य, मकरंद, फूल का रस, एक दैत्य का नाम। अमृत का नाम दो॰। सोम सुधा पीयूष मधु, अंगद राग सुभोग। अमृत जहां कांन्हर कथा, मती रचत सब लोग॥१॥ पुनः रसना और अमृत नाम। दो॰। रसन रसज्ञा जिह्व हरि, पूरित अमृत पीयूष। सुधा अमी सुर भोग मधु, यथा मृगांक मयूष॥१॥ पुनः अनेकार्थ

में दो० । मधु बसंत मधु चैत्र द्रुम, मधु मदिरा मकरंद । मधु कर मधु पय मधु सुधा, मधु सूदन गोविंद ॥ १ ॥ नाममाला में दो०। माधव मधु द्रुम मधु श्रवा, मधुष्ठीव गुड़फूल । एजु मधुक के फूल बलि, कछु तुष गड़गी तूल ॥१॥

मधुक· (स) जेठीमध ।

मधुकपुष्प· (स) महुवा ।

मधुकर्कटी· (स) मधुकाकरी ।

मधुकर· (स) भौरकीट, भ्रमर, भौंरा, मधुमक्षिका, भ्रमरनाम—दोहा । मधुकर भ्रमर द्विरेफ अलि, षटपद शिलीमुख भृङ्ग । चंचरीक रोलंब पुनि,कीता ले सारंग ॥१॥ मधुपम मधुव्रत मधुरसिक, मधु बावन बगपोर । भ्रमर बिना केतकी न कछु,केतकि बिना भौंर ॥ २ ॥

मधुकरी. (स.द्) भ्रमरस्वभाव, अतिथी को भिक्षाटन ।

मधुकृत· (स) मधुमाखी ।

मधुकैटभ.(स) उभौ राक्षस विशेष, शिशिवरभेद ।

मधुकोष·(स) शहद का छत्ता ।

मधुगंधवा. (स) मौलसरी ।

मधुच्छदा· (स) मोरशिखा ।

मधुच्छिष्ट· [स] मोम ।

मधुचौर· [स] अलि, भ्रमर ।

मधुदुत· [स] रसालवृक्ष, आम्रवृक्ष ।

महिमा· [स] प्रभाव ।

मधुद्रुम· (स) महुवावृक्ष ।

मधुदूत· (स) आम ।

मधुदूती· (स) पांडर ।

मधुधातु· (स) सोनामक्खी ।

मधुप· (स) भ्रमरकीट, अलि, भौंर, भौंरा ।

मधुपर्क· (स) मधु, दधि, घृत, यह त्रिवस्तु एकत्र करि कांश के थार में दुलह को मड़वा पर खिलाय के विधि करावत हैं, अरु

पाहून लोगों को मान सनोमान काल में हाथ पांव धुलवाय के पूर्व्वं म-धुपर्क्क खिलाय पश्चात् पान तमाकू देत हैं या पश्चिम देश की रीति है ।

मधुपर्किणका· (स) गील ।

मधुपर्णिका· (स) सुदर्शन ।

मधुपर्णी· (स) गम्भार ।

मधुपर्य्य· (स) पका रसीलाफल

मधुपुष्पक· (स) महुआ ।

मधुप्रीय· (स) भ्रमर, भंवर ।

मधुवारा· (स) मदिरा, सुरा, मद्य [रीक ।

मधुव्रत· (स) भ्रमर कीट, चंच-

मधुमाच्चिक· (स) सोनामक्खी, मक्खी का सहत ।

मधुर· (स) मीठारस, प्रीय, सुन्दर, स्वाद, मिष्टरस ।

मधुरव· (स) मीठा शब्द ।

मधुर· (स) मधुकाकरी ।

मधुरशृङ्ग· (स) जीवक तद्भाव में विलाईकन्द॰

मधुरसा· (स) दाखकुहारा, गम्भार, चुरणहार ।

मधुरसिक· (स) भ्रमर, अलि ।

मधुरा· (स) सौंफ,

मधुरा· (स) सोआसाग ।

मधुरी· (स) मीठी, रसीली, सुहावनी ।

मधुरेणु· (स) करवी ।

मधुवृक्ष· (स) महुआ ।

मधुशर्क्करा· (स) मधु का शकर चीनी की चासनी ।

मधुशिग्नु· (स) सुंनगा ।

मधुशेष· (स) मोम । [वृक्ष ।

मधुस्रवा· मधुष्ठील· (स) महुआ

मधुश्रेणी· [स] चुरनहार ।

मधुष्ठील· (स) महुआ ।

मधुसिक्थ: [स] मोम ।

मधुस्रावा [स] जीवन्ती ।

मधुस्राव: } [स] महुआ ।
मधुलक: }

मधुसूदन· [स] भ्रमर, राक्षस-नाशक, विष्णु ।

मधुहा· [स] व्याधा मधुगाहक या घातक ।

मधूलिका· [स] चुरनहार ।

मधूली. [स] सुपेद गोहूम ।

मध्य· [स] मांझ, बीच, में, अन्तराल, बीचके, अन्तर्वर्ती ।

मध्यगति. [स] उदासीन ।

मध्यदिवस [स] दोपहरदिन ।

मध्यम· (स) उदासीन, बिचवैत ।

मध्यस्थ. [स] साची, बीचमान, बीचवाला, मध्यस्थायी, बीच का, सालिस ।

मध्यान्ह· [स] मध्यकाल, दिपहरदिन, दुपहर ।

मध्यान्हिक· [स] दुपहरिया ।

मध्याधार· [स] मोम ।

मधवालुक. (स) शकरकंद ।

मन· [स] चित्त, हृदय, आत्मा, आत्माशब्द—दोहा । मन बुद्धि चित्त सुभाव तन, धर्म जीव अहंकार । इन को कहिये आतमा, परमातमा अधार ॥१॥ विसिख स्रोत अंतःकरन, मन आत्मा उर चेत । अत्रचित्त मानस हृदय, स्वत आकूत सचेत ॥ २ ॥

मनज. मनजात· मनसिज· } [स] काम ।

मनन· (स) परामर्श, अभ्यास, स्मरण, विचार ।

मनस· (स) ज्ञानेन्द्रियविशेष, मन, दिल ।

मनअस· (स) मानस, विचार ।

मनमथ· [स] कामदेव, अनङ्ग, मदन, मनोजात । [अमर ।

मनमाषा· (प) मनक्रोध, मन

मनशिला· (स) मयनशिल ।

मनसिशु· (द) कामदेव, अनङ्ग ।

मनमारि· (द) उदास ।

मनसहिं· (द) मन में ।

मनसा· (स) इच्छा, मन ।

मनाक् मनाग् (स) बारम्बार, अल्प, थोड़ा सा । चौ० । तदपि मनाक मनहिं नहि पीरा । अर्थात् मनाक किंचित नहीं है मन में पीरा । [औ ।

मनागपि. (स) अल्पभी, थोड़ा

मनाग्· (स) अल्प, सूक्ष्म, थोड़ा ।

मणि· (स) सर्प के शिर में की को मणि, शिरोमणि।

मनियारा· (द) मणियुत।

मनीषा· (स) मेधा, सुधी, बुद्धि प्रकृत।

मनु· (स) स्वायम्भवादी चौदह, स्मृति, तीस करोर सतसठ लाख आठ सहस्र वर्ष जो राज करै, स्वायंभूमनु १ उत्तम २ स्वारोचिष ३ तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष ६ आर्द्धदेव ७ सावर्णि ८ दक्षवर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इन्द्रसावर्णिमनु १४ स्वामी १४ मनु मों स्वायंभू आदि आदि मनु आदि सो प्रसिद्ध मुख्य हैं जिन्हते यह सृष्टि भइ श्री भगवान के मानसी पुत्र हैं॥ श्लोक॥ स्वायंभूवस्येह गुरो वंशोयं विस्तराच्छुत: यत्रविश्व सृजासर्गो मनुन्यन्वन्तरेषु: ॥१॥ स्वारोचिषो द्वितीयस्तु मनुरग्ने:सुताभवत्। द्युमस्तु सेषरोचिष्मत् प्रमुखास्तस्य चात्मन: ॥२॥ तृतीय उत्तमो नाम प्रियव्रतं सुतो मनु:। पवन:सृजयोयज्ञ: होत्रा द्यास्तासुतान्नृप: ॥३॥ चतुर्थ उत्तम भ्राता, मनुर्नाम च तामस:। पृथुख्यातिर्नर: केतुरित्याद्या: दश तत्सुता: ॥ ४ ॥ इति श्रीभागवत अष्टम स्कन्धे प्रमाण।

स्वायंभूमनु १ स्वारोचिष २ उत्तममनु ३ तामसमनु ४ दो०। स्वायंभू उत्तम स्वा, रोचिष तामस जान। ए चारी मनु आदि के, भागवत कहे प्रमाण ॥ १ ॥

मनव्यथ· (स) उदास, एकसर, अकेला।

मनरात (द) मनलगा, चौ०। अस विवेक जब देहिं बिधाता। तब तजि दोष

गुणहिं मनराता ॥ अर्थ— गुण में मनराता अर्थात् प्रीति करै।

मनुज· मनुष्य. (स) मानुष्य, नर, मानव, मर्त्य, मनुष्य मात्र, पुरुष स्त्री, मानव, इंसान, आदमी। [नरनाम।

दोहा – मानुष परम पवित्र वपु, मानकु मनुज प्रमान। नर जनि जानहु नंदसुत, हरि ईश्वर भगवान ॥ १ ॥ मनुजवाचक शब्द के आगे अरि वाचक, शब्द रखने से दनुज राक्षस का बोध होता है।

मनुजाद· (स) राक्षस, दैत्य।

मनुजादा (हं) मनजादु, धो०। सन्निपात जल्पसि दुर्वादा। भयेसि कालबस सठ मनुजादा ॥ अर्थात् हे मनुज के खानेवाले तैं सन्निपात में कालबस होकर दुर्वचन कहता है। [वीरविशेष।

मनुजाहारी· (स) निशिचर

मनुसाई· (ह) पुरुषारथ।

मनोज· } (स) कामदेव, मन-
मनोभव· } सिज, अनंग,
काम। [थिर, मनोहर।

मनोज्ञ· (स) सुन्दर, सुरूप, रु·

मनोगुप्ता· (स) मनगो केतारी।

मनोह्वा· (स) मयनशिला।

मनोभव· मनोभूत· (स) अनङ्ग मनमथ, कामदेव।

मनोरथ· [स] इच्छा, बासना, कामना, मनअभिलाषा।

मनोरम· (स) सुन्दर, उत्तम, मनरमित।

मनोत्सव (स) मन की खुसी।

मनोहर· (स) सुहाना, सुन्दर, मनोरम, मनोज्ञ, रुचिर

मन्त्र· (स) उपदेश, सलाह, मार तारक आदि मंत्र, उपदेश। [मंत्र।

मन्त्रराज· (स·) राम तारक,

मंत्रिन् (स) मंत्री, आमात्य, वजीर। [कैकयी की।

मन्थरा. (स·) नाम चेरी रानी

मन्द· (स·) शनैश्चर बार, मंद

ते स्त्रीगण को नख रंगित होत है, लाखी, लाख का रंग।
महासिद्धि. (स) कल्याण, गत।
महाहि· [स] शेषनाग, चहीश।
महि· [स] पृथ्वी, कौन। कौन द्रोन शब्द — दोहा। कौन मही घट कोन दिस, रट· ह अंतर कहि कौन। द्रोन काक घट द्रोन गिर, कर कहि वारिज द्रोन ॥ १ ॥
महिपाटि· [द] पृथ्वी में गिरा दिया। [चस।
महिषेश. [स] महिषासुर रा·
महिभार· [स] पृथ्वी का भार।
महिवाल.[स]मंगल,मङ्गलवार।
महिमा· [स] नामसिद्धि, प्रा· क्रम, बड़ाई, प्रभाव।
महिला· [स] स्त्री,नारी, मैहरी वाराङ्गनी अर्थात् पृथ्वी।
महिपाल·महीपाल.[स]राजा।
महिदेव· [स] ब्राह्मण।
महिष· [स] भैंसा, धर्म्म, यम, दैत्य विशेष,भैंस महिषासुर।
महिषासुर· [स] दैत्यसंज्ञा, रा· चस विशेष।
महिषी· (स) भैंसी, धर्म्मरानी, राजपत्नी, पटरानी।
महिषेश· महिषेस· (स) अरणा भैंसा, यमराज,यमवाहन, महिषासुर का ईश, महि· षासुर। चौ०। तेज कृशा· नु रोष महिषेशा। अघ अवगुन धन धनिक धनेशा। अर्थात् अग्नि का सा है जिन का तेज हित और अनहित के जलाने में और महिषेश अर्थात् यम का सा है रोष पाप और अव· गुन के धन के धनी कुबेर के सम है। • [पड़ा।
महिखसेज· (द) पृथ्वी में गिर,
महिलाह्वय· (स) प्रियङ्गु।
मणिमस्तक· (स) लालधान।
महिषाच· (स) गुग्गुल।
मही· (स) पृथ्वी, धरती,खाक, भूमि,गौ,जमीन,गाय,इला शब्द—दोहा। इला मही

बुध तिय इला, इला उमा अभिराम। इला सरस्वति से भजे, जो जाने अभिराम॥१॥इड़ा शब्द—दो०। इड़ा आदि नभ देवता, इडा भूमि अभिराम। इड़ा अंबिका मात मों, प्रीति देव घनश्याम॥२॥ पृथ्वी का नाम छंदसुगीत।—रत्न गर्भा मेदनी क्षोणी क्षमा छिति उर्वरा। भूत धात्री भूमि भू पृथ्वी पुहमि पृथ्वी थिरा॥ गो अनंता कुंभिनि महि ज्या धरणि धरिनी धरा। काश्यपी सर्वंसहा जगती कुसागर अंबरा॥१॥ अवनि वसुधा गह्वरी विपुला रसाह विश्वम्भरा। क्षोणि उरवी वसुमती गोत्रा इलाहु वसुंधरा॥ नाम यह चालीश परपति शब्द ते पृथवी भुजा। शब्द सुर ते विप्र कहिये रुह द्रुम पुनि सुत कुजा॥२ दोहा। पुनि भू नाम न धर धरै, शेष शैश गिरि ईश। छंदसुगीत फनीश कहि, कला चारियुग बीश॥१॥

महीतल. (स) भूतल,पृथ्वीतल।

महीदेव. (स) ब्राह्मण. महीसुर।

महीधर. (स) वाराह, शेषनाग, पर्व्वत, पहाड़।

महीप. महीपति, महीपाल, (स) राजा, नृप, भूपति, पृथ्वी पाल, नृपति।

महीरज. (स) धूरि, पृथिवी।

महीरुह. (स) वृक्ष,रुख, पेड़।

महीसुर. (स)ब्राह्मण, महीदेव।

महेन्द्र. (स)इन्द्र, प्रधान,राजा।

महेरुण. (स) सलैया।

महेश.महेस,(स)शिव,महादेव।

महोदरी. (स) देवी शतावर।

महोन्नत (स) ताड़ वृक्ष।

महोट्टी. (स) बनभंटा।

महोत्पल. (स) महा कमल।

महोत्सव. (स) बड़ापर्व्व, महा उत्सव, बड़ा उच्छव, बड़ा

उत्तम, महोच्छी।

महोदधि· (स) नदीविशेष, विशाल उदधि।

महौषध· [स] लहसुन, सोंठ।

महौषधा· [स] गद्दीकी बरंभी।

महोदर· [स] निशिचर बीर विशेष। [शेष।

महोष·महोषा· [स] पची वि-

मह्यं· [स] मुझे, हम को।

मच्चिका· [स] मांखी, मांची।

मान· [स] एक राजा का नाम जिस के नाम पर बनारस में मानमंदिर है।

मा· [स] लच्मी, श्री, निषेध वाचक, नहीं।

मां· (स) मुझ को, माता। माता नाम—दो॰ अंबा सावित्री प्रसू, जननी माता नाम। जननी राधा कुंपरि की, बैठी मंगल धाम ॥ १ ॥

मांझा· (द) पावस का प्रथम जल जिस मे मैंढकी बहुत व्यथित होती है।

मांगध· (क) मंगल जनकाध्यक, वंश के प्रशंसा करनेवाला।

मांची·(प) खिर गया, ख्यात भी।

माई· (द) माता, माया करने वाली। चौ॰ विविध भांति होइहि पहुनाई। प्रिय न काहि अस सासुर माई॥ माई है माई वा माया करने वाला सासुर। चौ॰। राघ तव बदन पैठिहों आई। सत्य कहौं मोहि जान दे माई॥ माई के शब्द से माया उत्पन्न कराने का प्रयोजन है सत्य के साथ में ब्रह्मचर्यधृत महावीर का है।

मापि· [द] क्रोधित हुए।

माइक· (प) माता।

माख· (द) क्रोध, सौंदा, लपटाई, लज्जा, लगाना।

माखा· (द) ईरषा यथा। चौ॰। देखिअ आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरे लाज न रोष न माषा॥ अर्थात्

कपि हनुमान्‌जी जो कछु भाषा तुम्हारा स्वभाव कहा सो सब मैं चाइ अपने नेत्रों सों देखा कि न तुम्हारे लाज है न रोष न क्रोधी स्वभाव है न माख अपमा· नादि कारणों पाइ तुम्हारे मन में ईर्षा नहीं आवत।

माखो· (प) मांछी।

माखे (स) खिसियाना।

मागध (स) मगह देश विशेष, भाट, वंशकी प्रशंसा करने वाला।

मागधी· (स) एक भाषा, पुष्प जुही लघु पीपल, पीपर।

मागन·(स)मंगतजन, भिखारी।

मागमा·(स)कांकोर जल जन्तु।

माख· (द) बनौड़ी, खपटाई बचन, जगाने, खेरने, ईर्ष्या, क्रोध।

माचा· (द) मञ्च, खाट,पलङ्ग।

माची. (द) प्रसिद्ध, फैल रही, खाट।

माजा· (प) नवीन वर्षा जल का फेन, वाके खाए मीन मर जात है। चौ०। नयन सजल तन थरथर कांपी। माजहि खाइ मीन जनु मापी॥ अर्थात्‌ आंख में आंसू भरि आए औ तन करि कै थरथर कांपति भई मानो माजा खाय के म· छरी माती नवीन पावस के जल परेते कबहूं माजा नामा एक रोग होत है वा सेहुड़ आदि डारेते जल में जो फेन उत्पन्न होत है ताको माजा कहत हैं।

माञ्ज. (स) राद, पीव, पूंज।

माञ्जर· (द) पञ्जर, हाड़।

माञ्जा· (प) नवीन वर्षा जल का फेन।

माञ्झ·(द)बीच,मध्य,रागिणी।

माणिक· (स) मणि का भाव, लाल, सामान्य जवाहिर।

माण्डवी· (स) कुशकेतु जनक भ्राता ताकी पुत्री जाते भरत जी को विवाह भयो।

मातङ्ग (स) हाथी,मुनिविशेष।

मात करना, मु॰ बाजी जीतना।

माथाठनकना, मु॰ किसी काम के बिगाड़ने का हाल पहले से मालूम हो जाना।

माथा रगड़ना, मु॰ बहुत गरीबी से प्रार्थना करना, या देवता, अथवा राजा से गरीबी के साथ मांगना, बहुत मिहनत करना।

माथेपरचढ़ना, मु॰ अन्याय करना, जुल्म करना, प्रजा को बहुत दुख देना, सताना।

मातरिश्वा. (स) वायु, पान।

मातलि (स) नाम इन्द्र का सारथी। [को।

मातहि.(द)मतवारा वा माता

मातलिसूत (स) पुरन्दर, इन्द्र।

मातुल (स) मामा, इन्द्र का सारथी, धतूरा।

मातृ (स) माता।

मातुलुंग (स) बिजौरा लेम्बू।

मादनी. (स) भांग।

माध्वीक (स) सहत।

मात्र (स) परिमाण, अन्दाज, सकल, अवधारण, अल्प, घड़ी भर, उतनाहीं।

मात्रा (स) गुण, लेख, स्वर।

मात्सर (स) ईर्षा वाला, ईर्षक, द्वेषी, डाही।

मात्सर्य (स) डाह, ईर्षा, जलन, मात्सर्य नाम। दो॰ बासन्ती पुष्पांक सोह, मुकुत माता पुनि माह। इत माधविका परत तन, नेकु चिते बलि जाउ॥ १॥

माधव (स) बैशाखमास, विष्णु, मधूपहच,श्रीकृष्णचन्द्र जी का एक नाम।

माधविका माधवी (स) मधुरी लता, बराहीकन्द, खांड़।

माधुरी. माधुर्य (स) मीठी, सुन्दर, सुन्दरता, मिठास मिठासबचन को अमृत अस जानना। [को।

माधवी (स) मदिरा, सुरामद्दवे

मान· (प·स) नाम मर्य्याद,पत, घमण्ड, चाहित, नाज़, तौल,अहंकार,अभिमान। मान नाम। दो०। अहंकार मद दर्प पुनि, गर्ब समै अभिमान। मान राधिका कुंअरि को, सब की अब कल्यान ॥१॥ पुन: छंद चंद्रवर्त्म । लंकापति देख्यो बालितनै। अति तेज प्रताप अभीत मनै ॥ दर्पित अति तन्य उद्दीपत है। सौहीरं उदरउद्दत है॥१॥ मानी अहंकारी गर्बित है, तनु दीर्घ नील अनु पर्बत है। अद्द रोपि दृगानग दर्पंदलां, छंद चंद्रवर्त्म नवसम कला ॥२॥ पुन: सो०। अब हमरे बस कान्ह सकल गोपिकनि मन भयो। अहंकार अभिमान, गर्ब दर्प मदमान अति॥१॥

मानव· (स) मानुष, नर,मनुष्य मात्र।

मानक· (स) मानकंद।

मान्ध. (स) कुंदरु।

मानस· (स) मनसुवा, मन्त्रस, मन, मनसा, तालाब, विशेष, सरोवर अंत:करण दोहा—खांत हृदय मन-मथ पिता, आत्मा मानस गाउं। मन मन सोचत सहचरो, भीतर केहि विधि लाउं ॥ १ ॥ पुन:। मउर बल्लव पुनि बच्छ कहि, हिय पिय चखि निजकाय, यातै पड्यो जो मान हित, मान तिया के भाय ॥२॥ मानस एक ग्रन्थ का नाम जो गोस्वामी तुलसीदास जी बनाए हैं इस का नाम मानस राम-चरित भी है।

मानसमूल· (स) सरजूनदी जाको मानस मूल है अर्थात् जा से निकलो।

मानसर.(स) देवताओं का सर, सरोवरविशेष,जाकेमध्यमाह

बाह्रद हिंसंज्ञा अरु किनारा उसका बाहरवाली बाह्रदी एह हि संज्ञा ख्यात है, मध्य शाल संज्ञा में हंस रहत है, अरु शाली संज्ञा औं हंसनी सदा दिवारात्रि रहती है, शाल संज्ञा मांझ हंसनी कबहु नहीं जाती है, रात्रिकाल हंस ने अपने स्थान ते हंसनी के स्थान शाली संज्ञा मौं आवत है ।

मानप्रद·(स) मानके देनेवाला।

मानसिक.(स) मनद्वारा विशेष, मन सम्बंधी ।

मान्यता·(स) पूज्यता,योग्यता।

माणिक· (ह) जवाहीर, लाल ।

माप·मापा· (ह) परिमाण, नाप, पूर्ण, व्याप्त, व्यापा, मापना, व्यापना । चौ० । तलफत विषम मोह मन मापा । माजा मनहु मीन कहुं व्यापा॥ अर्थात् मापा कहैं व्यापा माजा नया बरषा के जल के फेन को कहत हैं ।

मापी· (ह) मतवाली,बौड़ाही।

मामभिरक्षय·(स] मो को रक्षा करहु ।

माया· (स) छल, दाया, कृपा, नेह, मोहनी, कामना, त्रिगुणशक्ति,कपट,अविद्या, चौ० । जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया । तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया॥ अर्थात् इहां माया का नाम अविद्या लेना दो०। माया खल मायादि यह, माया नेह कहंत । माया मोहनलाल की,जिन मोहे सब संत॥१॥ पुनः दो० मायां दया कृपा घृना,अनु कंपन अनु क्रोस करुना करि करुना निधे, क्षिमा करहि तनिरोसु॥२॥

मायावी. (स) छली, कपटी, प्रतारक, माया जानने वाला ।

मायापति. (स) ईश्वर, मालिक,

मायाकरनेवाला रामचंद्र।

मायारूपी· (स) राचस, असुर।

मायिक· (स) मिथ्या, झूठ, ऐन्द्रजालिक, छली, माया करनेवाला, मायासम्बंधी।

मार· (स. फ़ा) विघ्न, विष, कामदेव, अतिअमृत, सर्प्प, नाग, मारना। मारशब्द—दो०। मार विघन विष मार पुनि, मार कहावे काम। मार अमृत हूं ते अमृत, सुन्दर गिरधर नाम ॥१॥

मारग· (प) मार्ग, बाट। मार्गनाम—छंदमाला। सिय टेरत भे प्रभुगदगदबयना। पथ बाट सरिण पदबीस्रुत अयना ॥ अत मार्ग वर्त्म अध्वा औ संचर। यह माली छंद कला दश बसु पर ॥१॥

मारकुटाई· मु॰ मारना, और कुचलना, मारपीट।

मारखाना· मारखानी· मु॰ पिटना, मारपड़ना।

मारगिराना· मु॰ पछाड़ना, पटकदेना।

मारडालना· मु॰ जीनिकालना, प्राणलेना, जीलेना।

मारदेना· मु॰ मारना, गिराना।

मारपड़ना· मु॰ पिटना, मारखाना। [रना, पीटना।

मारपीट, मु॰ मारकुटाई, मा·

मारमरना· मु॰ आप घात करना, आत्महत्या करना,। लड़ाई में बैरी को मारकर मरना। [लेना।

मारलेना· मु॰ मारना, जीत·

मारलाना. मू॰ लूटलाना।

मारहटाना· मु॰ जीतलेना मारना और निकाल देना।

मारगण· मारमन· (स·प) पानपत्र, ताम्बूल, बाण, तीर, खोजना।

मारव· मालव· (प· स) देश विशेष सजल चूल्हखाने सों जल निसरत है, मालवादेश।

मारा· (प) संपूर्ण, भरा।

मारात्मक (स) हिंसक, घातक, वधिक, कृष्णपोत।

मारापड़ना मु० माराजाना।

मारामाराफिरना मु०भटकता फिरना, डांवाडोलफिरना, इधरउधरफिरना।

मारामारी मु० आपस में मार पीट, धौलधप्पा, लातमुक्की।

मारिष (स) मर्सा होगों।

मारीच (स) पु० नामराक्षस रावण का मामा, (मृ मरना वा मारना) एक राक्षस का नाम, जो तारका राक्षसी का बेटा और रावण का नौकर था जिस को श्री रामचंद्र ने मारा, दैत्य विशेष, कंकोल।

मारुत मारुति (स) वायु, समीर, हनुमान, पवनपुत्र पवन, हवा, भीमसेन।

मारू (स) रागविशेष।

मारुतसुत मारुति (सद)महावीर, श्री हनुमान जी, भीमसेन।

मारे (अव्यय) से, कारण, निमित्त, जैसे गरमो के मारे व्याकुल होगये।

मार्कण्डी (स) खेकसा।

मार्कव (स) भेंगराज।

मार्ग मार्ग (स) पथ, सड़क, बाट, रास्ता। मार्गनाम—दो०। वर्त्म अध्वा मार्ग पथ, संचर पदहु बिहार। मग देखत तो पग गई, मोहन नंदकुमार॥१॥

मार्गण (स) इषु, तोमर, बाण।

मार्गशीर्ष, मार्ग } (स) अग-
शिर, मार्गशीष, } हनमास,
मंगसर, मंगसिर। मृगशिरा एक नक्षत्र का नाम, इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है।

मार्जन (स) परिष्कारकरण, शुद्धिकरण, झारना, बोहारना।

मार्जार मार्जार (स) बिलाड़,

बिल्ला, मानु, बिलाव, बिल्ली।
मार्जार (द) बनबिलार।
मार्जगंधिका (स) बनमूंग।
मार्त्तण्ड· (स) दिनकर, सूर्य्य।
मार्षे· (द) मर्षा दोनों।
माल· (स) समूह, बीरजन, मल्ल, माला, कुस्तीबाज, हार।
मालव·(स) देश, मालवा, मालवादेश। [व्यवसादी।
मालाकार· (स) माली, पुष्प-
माला· (स) समूह, हार पुष्पादिक, पोथी, पंगति, पंक्ति, माला, हार, मालानाम -दो०। सीता गमन मराल, कर में स्रग बीनण वती। राम हार सुकमाल, राम कंठ मेली हरषि॥१॥ दो०। माला अक् स्रग गुन पतिहि, अर्जुन नामको दाम। जो नर यह कंठहि रखै, सुंदर है छबि धाम॥२॥
मालिका· (स) माला, हार।
मालूर· (स) बेलवृक्ष। [दि।
माल्य· (स) समूह, हारपुष्पा-
माल्यवन· (स) नाममंत्री रावण के पिता का, वा रावण की माता का पिता अर्थात् रावण का नाना, और मंत्री।
माल्ल· (स) बीरजन, पट्ठा।
माष· (द·स) क्रोध गुस्सा, कोप, मैंकाई पत्र।
माषो· (प) माछी, मक्षत।
मासा· (म) मांस, महीना।
मास. मास्· (स) महीनावाचक, वा भावार्थ बारह संख्यावाचक। १२॥ दिवारात्रि।
माहात्म्य· (स) महत्त्व, बड़ाई।
मांस· (स)मांस, गोस्त, आमिष।
मांस नाम दोहा॥ क्रव्य पेशि आमिष तरस, पिशित पललपल मांस। जंगल भक्ष्यग्रास्य नित, करत निकेत बिलास॥१॥
मांसरस· (स) मांस का रस।
मांसरोहिणी· (स)मांसरोहिनी।
मांस द्विधा· (स) जंगल औ अनूप एह दो तरह का मांस है। [सिंघाड़ा।
मांसशृङ्गाटक (स) मांस का

माकन्द· मानक, (स) मान का कंद।

माचिका· (स) माइफा।

माणिक्य· (स) मानिक रत्न।

माणिमन्थ· (स) सैन्धा नोन।

मातुल पुत्र· (स) मामा का लड़का, धतूरा फल।

मातुलानी (स) भांग।

मालती· (स) चमेली।

मालतीफल· [स] जाफल।

मालवा· [स] पोई साग।

मांहि· (प) मांझ, मध्य, में।

माहिख· ( ) महिषासुर।

माहुर· (प) तीता रस, गरल, विष, जहर।

माहेश्वरी· (स) लोकमाता।

माहात्म्य· (स) अधिकाई।

मालूर· (स) बेल।

मालूरफल· (स) बेल का फल।

माष· (स) उरीद।

माषपर्णी· (स) बन उरीद।

माषपृष्टी· [स] उरीद की पीठी।

माषवटी· [स] उरीद की बरी।

माषान्न· [स] मखाना।

माहेयी· [स] गौ।

माचिका· माची· (स) अबरत।

मिति· [स] मर्यादा, हिसाब, तारीख़ आख़री, हद, नाप, अंत थोड़ा भी।

मित्र· [स] भानु, सूर्य, हितु, साखा, दोस्त, अग्नि, मित्र, नाम—दोहा॥ बनविचरत हनुमन्त मिल्यो, भेटे रघुकुल दीप। करि संभाषन पुनि, चले जेहि गिर पर सुग्रीव १॥ दयित इष्ट बल्लभ सुहृद, प्राणप्रीय संबंध। मित्र सखा सुग्रीव कह, कीन राम सह संबंध॥ २॥ बालि मारिकर नृपसखा, शैल बसे रघुबीर। पुनि सुकंठ मद जानि प्रभु, अनुज पठायो तीर॥ ३॥ सुहृद मित्र बल्लभ सखा, प्रीतम परम सुजान। पियाप्यारे पै चलिय बलि, न करु प्रकाश मान॥४॥ पुन: मित्र भानु को कहत कवि, मित्र अग्नि को नाम।

मित्र मित्र सब जगत के,
एकै सुंदर स्याम ॥ ५ ॥

मिथ· [स] परस्पर, अन्योन्य ।

मिथनी· [स] मेथी ।

मिरा· [स] शराब ।

मिश्रक· [स] खुरा रांगा ।

मिश्रपुष्पा· [स] मेथी ।

मिश्रेया· [स] सोया ।

मिष्ट· [स] मीठा रस ।

मिशी· [स] सौंफ, सोया ।

मिथिला· [स] नगरविशेष, जनकपुर ।

मिथ्यारंभ· [स] झूठबोलनेवाला,

मिथिलेश· [स] राजा जनक ।

मिथिलेशी· } [स] राजा जनक
मिथिलेसि· } की रानी ।

मिथुन· [स] स्त्री पुरुष युगम, एकट्ठा, द्वि, जुगम, जोड़ा ।

मिथ्या· (स) अलीक, व्यर्थ, झूठ झूंठ, मृषा, असत्य । मिथ्या वा पाप वा पुण्य नाम, छंद अति गीत । मिथ्या वृथा विफलं मृषा अनृतं मुधा मोघं अलीक ॥ भी विगद व्याज निरस्यवीकत स्याम तनु नित चंचरीक ॥ इनको कह। अतिदोष अपने प्रगट भे अघ दुरित पाप ॥ दुःकृत कलिल कलुष मष किल्विषवृजनआधर्मताप१ ॥ श्रीरमण पंकज कलिमल अंह मंदतु सब हमार ॥ कुसुमाय मधुकर कह्यो बिनती व्रज दर्श दीजै मुरारि ॥ सुकृत सत्कृत धर्म श्रेयस पुण्य करिये कृष्णचन्द्र ॥ करिवेग इनी द्विरेफ पुनि नव बीज काम अति गीतछंद ॥२ मिथ्या ॥ नाम—दो० । मिथ्या मोघ मृषा अनृत, व्याज अलीक निरस्य । ऐसे पिय सों झूंठबकि, क्यों बोलिय विरस्य ॥ १ ॥

मिथ्यादृष्टि. [स] नास्तिक निन्दक । [भ्रष्ट ।

मिथ्यामति· [स] भ्रम, बुद्धि ।

मिष, मिष्ट, मिस, मिसु (द) बहाना

ठजूर, बनावट, पेलना ।

मिलनाजुलना· मु० सदा मिला रहना, सच्चाई से मिलना ।

मिलना हिलना, मु० इकट्ठा रहना, शामिल रहना ।

मिले जुले रहना, मु० मेल से रहना, मिलाप से रहना।

मिष्ट· [स] मधुर, मीठा ।

मिष्टान्न.[स]मधुरद्रव्य मिठाई ।

मिसकाल·[स] कलङ्क,बहाना,

मिसि· [द] मातु पिता ग्राम नारी पर्थात् नैहर ।

मिर्च· [स] मरिच, स्र मरचा, एक मसाले का नाम । गोलमिर्च, काली मिर्च । मिरिच लता नाम—दो० रितका उखना कोल था, लक्षफला पुनि नाव । मिरचलता पां परि कहै, भखो करी बलि जाव॥१॥

मिर्चा.[द] मिर्चाई,लाल मिर्च ।

मछिका· [स] सामान्य पाला ।

मिहिर· [स] दिवाकर, सूर्य्य ।

मिश्रित·[ ] युक्त, मिला हुआ ।

मीच· [स] कड़वाई, मरण, मृत्यु, मौत । [ना ।

मीला· [स] मिलकरके मिला-

मीन·[स] मच्छ, मत्स्य, मछली, मीन नाम—दो०। सफरी अनमिषमत्स्य पुनि,पृथुरोमा पाठीन । मकर रुमू पड़ीडमन, जाबस मनभष मीन ॥१॥ छीर समुद्र के ज्यों बसत, चन्द्रादिकिम चाहि । बरहि नन्द मदन जिमि, जलनिधि मानत ताहि ॥ १ ॥

मीनहा· [स] बंसी । बंसीनाम दो० । बंसी कुंभी मीनहा, मच्छघातनी नाम । बैसर सौं उरझी जु लट, मानो बंसी काम ॥१॥ [कादरी।

मीनपोन· [स] गोदधि, गाय

मीनर. [स] बंसी ।

मीनकेतन· मीनकेतु· [स] अनङ्ग, मनसिज, कामदेव ।

मीना (स) चोर, तस्कर जाति विशेष।

मीमदा. [स.प] बेसरी भूषण

मीमांसक [स] विचारक, विवेचक, मीमांसा शास्त्र का जाननेवाला, तथा पढ़ानेवाला, सिद्धान्तकारक ।

मीमांसा (स) विचार, निष्पत्ति, शास्त्रविशेष, विचारपूर्वक तत्वनिर्णय, शास्त्रविशेष जैमिनि प्रणीत ।

मीसी [इ] अञ्जन, सुरमा।

मोस [प] भीर, जूथ।

मुंह [प] मुख, वदन, आनन।

मुंहअंधेरा मु॰ संध्या, सांझ, निशारंभ, कुछकुछ अंधेरा।

मुंह अपनासा लेकर फिर जाना। मु॰ निरास होकर चलाजाना।

मुंह आना, मु॰ मुंहफलना, मुंह में छाले हो जाना ।

मुंहामुंह मु॰ पूराभराहुआ । लबालब । [होजाना।

मुंहउतरजाना मु॰ उदास

मुंहकरना, मु॰ साम्हनेहोना, भिड़ाना, बराबरीदेना, गालीदेना, फोड़े के छेद करना, फोड़े या घाव के फूटना, सब से पहले हमला करना, (जैसे शिकारी कुत्ते या जानवर पर करते हैं) किसी चीज़ या जगह की ओर देखना या उस तरफ पांव उठाना।

मुंहबन्दकरना मु॰ किसी को चुपकरना, जीभपकड़ना।

मुंहबनाना मु॰ मुंह सुथाना, भौंटेढ़ाकरना, त्योरीचढ़ाना।

मुंहबाना. मु॰ मुंहखोलना, मुंहफाड़ना, जमुहाना, जमुहाई लेना ।

मुंहबिगड़ना. मु॰ अप्रसन्नहोना, नाराज होना, बुरा मानना, रिसाना, कोई कड़वी या बुरी चीज़ के खाने से मुंह का स्वाद बिगड़ जाना।

मुंहबिगाड़ना, मु॰ भौं टेढ़ा करना, त्योरी चढ़ाना, मुंह बनाना।

मुंहबोला, मु० माना हुआ, किया हुआ, धर्म का जैसे मुंह बोला भाई, धर्म का भाई वह आदमी जिस को अपना भाई कर माने ।

मुंहभरी. मु० रिशवत, घूस, अकोर ।

मुंहदेखरहना. मु० अचंभे में किसी का मुंहताकना ।

मुंहदेखे की प्रीत, मु० किसी के सामने प्यार की बातें करना, और उस के पीठ पीछे उस का कुछ ध्यान नहीं करना, दिखाऊ मिलाई अथवा प्यार ।

मुंह पर गर्म होना. मु० बड़े आदमी के अथवा अपने अफसर के सामने बेअदबी अथवा ढिठाई से बोलना ।

मुंह पर लाना. मु० कहना जताना ।

मुंह पर हवाईउड़ना. मु० मुंह का रंग बदलजाना ।

मुंहपसारना. मु० अचंभे में हो के मुंह फाड़ना, अमुहाना ।

मुंहफिरना मु० किसी काम के करने से रुकजाना ।

मुंहफैलाना. घमंड करना, बहुत चाहना, अमुहाना, अमुहाई । [ढाकना ।

मुंहछिपाना. मु० लाज से मुंह

मुंहठठाना. मु० किसी के मुंह पर तमाचा मारना, थप्पड़मारना ।

मुंहडालना. मु० मांगना, जांचना, चाहना, काटना, (जैसे घोड़ा) ।

मुंहतकना. मु० चकित रहजाना, भयचक रहना, घबराना, व्याकुल होना ।

मुंहतोड़ना. मु० खिझाना, तकलीफ देना ।

मुंहतोदेखो. मु० यह मुहावरा उस जगह बोलाजाता है जब कोई आदमी अपनी ताकत या योग्यता से अधिक कोई काम करने का बहाना करता हो ।

मुंहथुथाना. मु० मुंहबनाना ।

मुंह देख कर बात करना· मु॰ खुशामद करना, ऐसी बात करना जो सुननेवाले का मन भाय ।

मुंहदेखना· मु॰ मदद चाहना, सहायता मांगना, किसी का बहुत आदर सम्मान करना, घबराना, या बेबस होना ।

मुंह का फूहड़· मु॰ बुरी बात बोलनेवाला, बद जबान, निन्दक । [अनादर, बुरा ।

मुंहकाला· मु॰ कलंक, अपमान,

मुंह काला करना· मु॰ कलंक लगाना, दाग लगाना, आबरू उतारना, सजा देना ।

मुंह के कौवे उड़ जाने· मु॰ उदास दिखाई देना, व्याकुल दिखाई देना ।

मुंहखोलना, मु॰ गाली देना, निन्दा करना ।

मुंहचढ़ाना, मु॰ हिलमिल जाना, मुंहलगना, सामना करना, सम्मुख होना ।

मुंहचला, मु॰ काटना, या काटा चाहना, जैसे घोड़ा ।

मुंहचोर, मु॰ शरमीला, लजीला, डरपोकना ।

मुंहचोरी, मु॰ लाज, शरम ।

मुंहमांगा, मु॰ जैसा चाहा वैसा हो, जैसा मुंह से मांगा वैसा हो ।

मुंहमारना, मु॰ चुप करना, जीभ पकड़ना, मुंह बन्द करना, काटना ।

मुंह में पानी आना या भर आना मु॰ किसी चीज़ को बहुत चाहना, किसी चीज़ के लिये मन बहुत ललचाना ।

मुंहमोड़ना, मु॰ फिर जाना, अलग जाना, किसी काम के करने से रुक जाना ।

मुंहलगना, मु॰ मिरिच आदि चरपरी चीज़ से मुंह जलना, या चरपराना, हिलमिल जाना, मुसाहिब होना, पक्का दोस्त होना ।

मुंहलगाम, मु॰ छोटे आदमी

से सिसकारना, छिलना, मिलना, मुसाहिबबनाना

मुंह सीते रहजाना, मु० शर्म से चुपहोजाना।

मुंह से फूलझड़ना मु० गाली देना, धिक्कारना, झिड़कना

मुकुट (स) किरीट, मकुट, चूड़ा, ताज, शीश का मुकुट नाम—दोहा ॥ मस्तक मूर्धा शिर शिर, उत्तमांग कं शीश। काकपच्छ अवतंस पुनि, मुकुट भाल नक्षत्रीय। [बहुत, मोती।

मुकुता, मुक्ता (दे·प) विस्तार.

मुकुन्द (स) विष्णु, समुद्र, निधिविशेष, मुक्तिदाता। सल की निर्य्यास, साठी धान।

मुक्तबन्धना (स) बेल। फूल।

मुक्तामोदक (स) मोतीचूर का लड्डू। [शीशा।

मुकुर (स) आरसी, दर्पण।

मुकुल (स) कलिका, कली, बोल।

मुकुलित (स) थोड़ीखिली हुई कली।

मुक्त (स) जाकी कल्याण भो, प्राप्त मोक्ष, त्यक्त, आनंदित, छुटाहुआ।

मुकुन्दा (दे) मुकुंद, सो०। बरषहिं सुमन देव मुनिबृन्दा जय कृपाल जय जयति मुकुन्दा ॥ अर्थात् मुकुन्द इसलिये कहा हम विपत्ति रस्सी में बन्धे रहे सो छुड़ा दिया।

मुक्तलता (स) मधुरीलता।

मुक्ताशुक्ती (स) सीपी।

मुखदूषक (स) पियाज।

मुखप्रिय (स) नारंगी।

मुद्ग (स) मूंग।

मुद्गपर्णी (स) बनमूंग।

मुद्गमोदक (स) बेसन का लड्डू।

मुक्ता. } (स) मोती, मणि,
मुक्ताफल } बहुत, विस्तार, मोती नाम—दो०। ससि मोती गोती गुली, मक्षक

सीप सुत नाम। मुकता बंदनवार तहं, शोभित सुन्दर धाम ॥ १ ॥

मुक्तावली. मुक्ता-फल. मुक्ताहल. } (स·द) मोती का हार, मोती।

मुक्ति· (स) आत्यंतिक दुःख निवृत्ति, ब्रह्मानंदप्राप्ति, जन्ममरणादि संसार बंधन रहित्य, मुक्ति नाम—दो॰ मुक्ति अमिय कैवल्य पद, अपुन गर्भ अपवर्ग। नि-श्रेनी निर्वान सुख, सदा सिद्ध पर स्वर्ग ॥१॥ मुक्ति जो चार प्रकार की, नहि पैयत जग जोग। ते वृष-भान सुप्राप्त कि, पावत पामर लोग ॥२॥ कल्याण, शांत, त्राण, सा चतुर्विधाः ॥४॥ सालोक्य, सामिप्य, सारूप्य. सायुज्य ॥ ४ ॥

मुक्ता· (स) छूटिके।

मुकता. (द) मोती।

मुकर· (स) दर्पनी।

मुख· (स) देवता, वदन, मूंह, आरंभ, उपाय, शरीराव-यव, विशेष, मूंह—दो॰। आनन आस्य लपन वदन, वक्त्र तुण्ड छवि भौन। म-नहुं रूप इमिका गई, जिमि मुख प्रमुदितपौन ॥१॥ पुनः। मुख वा तांबूल नाम छंद कुमसस्तवक। मुख संपद कीन्ह लजाय सरोज प्रभि असिधारि बिलोकि हरि वंदनं। मुख आनन वक्त्र सतुंडहु आस्य कहै वसु नाम युतं लपनं भवनं ॥ मणि माणिक लाल भई अति से लखि मंडन नाग लताहु तंबूल छवी। कुश मस्तवकं शुभ छंद यही सगनं नव कीन्ह भुजंगम नाथ कवी ॥ १ ॥

मुखर· (स) बहुवक्ता अर्थात् भ्रमर, झिंगूर कीटादि. शब्द, कौल, बकवादी वाचाल, अवहवक्ता, मूर्ख,

शंख, काक पक्षी, बहुत बोलना।
मुखरतर. (स) नाद बाजा, शंख। [खास।
मुखागर. (स.द) जुबानी, मु
मुख्य. (स) प्रधान, मुखिया, पहिला।
मुद्गवटक. (स) मुंग का बारा।
मुद्गवटी. (स) मुंगवरी।
मुचकुन्द. (स) मुचकुन्द फूल।
मुञ्ज. मुञ्जातक. (स) सरकी।
मुंड. (स) मूंड, कपार। चौ. कोटिन रुंड मुंड बिनु डोलहिं। सीस परे महि जय जय बोलहिं॥ विना शिर के रुंड दौड़ते हैं और उनके कटेहुए मुंड जीता जीतो बोलते हैं।
मुण्डी. (स) छोटी मुंडली, बिना सिंह का हरिन।
मुण्डीतिका. (स) छोटी मुंड़ली।
मुग्ध. (स) मूर्ख, अज्ञानी, सुन्दर मूढ़। [सुन्दरो।
मुग्धा. (स) कन्या, कुमारी,
मुधा. (स) निष्फली, मिथ्या।
मुठिभेर. मुठिभेरी. मुठिभेरो. मु. मुठिभिराव, सम्मुख, नगीच से घात, जुटजाना, निकट से।
मुठिका. (द) मुक्का।
मुठभेड़, मु. साम्हनाहोना, मिलजाना।
मुश्कें बांधना, मुश्कें चढ़ाना मु. हाथ पीठपीछे बांधना, जकड़ना।
मुत्प्रीति. मुद. मुदा. (स) हर्ष, आनंद, आह्लाद।
मुद्रा. (स) प्रत्ययकारणी, मुहर, छाप, चिन्ह, हस्ताक्षर, रुपया।
मुदित. (स) हर्षित, निहाल, आनंदित, खुश।
मुदिर. (स) मेघ, बादल।
मुद्रिका. (स) मुन्दरी, अंगूठी।
मुद्रित. (स) अंकित, चिन्हित।
मुदिता. (स) प्रसन्नता, चौ.। मुदिता मथपद प्रीति

अभाया। अर्थात् प्रसन्नता और मेरे पद में कपट रहित प्रीति।
मुधा· (स) मिथ्या, झूठ,झूठा।
मुनि· (स) ऋषि, तपस्वी, सप्त संख्या,स्थिर चित्त, रागादि रहित ज्ञान।
मुनिन्द्रा· (स) मुनिमुख्य।
मुनिपट· (स) वल्कल के कपड़ा, बोकले का कपड़ा, वल्कलादि।
मुनिपुष्प· (स) अगस्त फूल।
मुनि भूषण· (स) तुलसी अगस्त्य मालादि।
मुनिभाजन· (स) तुम्बादि।
मुनिपुहुप· (द) अगस्त्य पुष्प।
मुनिद्रुम· (स) अगस्त फूल।
मुनिनिर्मिता· (स) डिण्डिस।
मुनिपुत्र· (स) दवना।
मुनिराजू } (द) वशिष्ट जी।
मुनिराज } [चार्य।
मुनिवर· (स) मुनिश्रेष्ठ, शुका-
मुनिनाथ· (द) मुनींद्र, मुनियों में प्रधान।
मुनीचीर· (स) भोज पत्र।
मुनीन्द्र· (स) मुनीश्वर, जिन।
मुनीश· (स) मुनिप्रधान, ऋषि·
मुन्द्रा· मुन्द्री· (स) काड़ा, अंगूठी गलाची।
मुन्द्रिका· (स) अंगूठी, गलाची।
मुमुक्षु·(स)मोक्ष की इच्छावाला।
मुर· (स-द) मूलधन, राक्षस नाम भोमिया सुर का दूत ज्योति नगर का वासी। [श्रीपति।
मुरमर्द्दन, मुरारि· (स) विष्णु,
मुरा· (स) एकाङ्गी।
मुरे· (प) घुरे, फिरे।
मुल· (प) मराई वन्द विशेष।
मुशल· (स) मूसर अन्न कूटवे का अस्त्र, स्थाली, बटूवा पाकपात्र, डोल जल भरवे का, मूल विशेष,तार फल।
मुशली· (स) बलभद्र, बलराम सिया जी के वचन बलभद्र नाम दो०। रौहिनेय बल· भद्र बलि, संकर्षन बलि धाम। नीलांबर रेवती·

रवन, मूसलपानिक राम ॥१॥ अब रंचक क्यों चुप करे, कत बैठी जिय लेत। हरि हलधर के बीर को जोत बड़ाई देत ॥ १ ॥

मुस्कें (द) बाहु, भुजा।

मुषक (स) चूहा, मूस।

मुष्कक [स] काठपांडर।

मुष्टि, मुष्टिक, मुष्टिका [स] मुक्की, मूठी मूका, मुट्ठी।

मुष्टिक [स] मुक्का।

मुस्त
मुस्तक } (स) मोथा।

मुस्ता
मुस्तादत् (स) } केवटी मोथा। [थाई।

मुहर (स) घड़ी, पहर की चौ-

मुहूर्त (स) द्वादशक्षण, दो दण्डकाल,। [रखार।

मुहूर्म्मु, हूर, (स) घड़ी घड़ी, बा-

मूक (स) गोंगा, गूंगा, मूठ, मौन, अनबोला, वा चारि प्रकार ॥ वचनमूक ॥ १ ॥ अज्ञानमूक, २ ॥ धर्म्ममूक, ॥ ३ ॥ ज्ञानमूक ॥ ४ ॥

मूढ़ (स) मूर्ख, जड़, अज्ञानी, अज्ञ, बालक। मूर्खनाम—छंद चामर ॥ मुग्ध मूढ़ संठ अज्ञ भूक बुद्धि हीन है ॥ औ जडं बिलंबितं कुवाद ने दचीन है ॥ मंद मूर्ख लंकनाथ चोर कीन्ह बावरो ॥ सप्तगंध अंतदीर्घ कीन्ह छंद चामरो ॥१॥

मूत्र (स) पेशाव।

मुर्वा (स) चुरनहार।

मूर्च्छा (स) सम्मोह, गश।

मूद्रा २४ (स) सुमुखं १ संपुटं २ चैव विततं ३ विस्तृतं तथा ४ एक ५ द्वि त्रिमुखं ६ चैव चतुः ७ पंचमुखं ८ तथा १ ९ सन्मुखं १० अधोमुखं ११ चैव व्याप १२ कांजलिकं १३ तथा ॥ शकटं १४ यम पाशंच १५ ग्रंथितं सन्मुखो १६ सनमुखं १७ ॥२॥ प्रलंब-मुष्टिकं चैवमत्स्यं १८ कूर्म्मों १९ वराहकं २० सिंहाक्रान्त

२१ मत्स्याक्रांत २२ मुद्गर २३ पल्लवं २४ तथा ॥३१७॥ एतामुद्रा चतुर्विंशति प्रदर्शितं जापे ॥

मूरि· (स) बूटी, जड़ी, सञ्जीवन बूटी, सञ्जीवन जड़ी, मूल, जड़ी, वा समासूल।

मूसलाधार बरसना, मु॰ बहुत जोड़ से मेंह बरसना।

मूर्ख· (स) विवेकहीन, ज्ञानहीन, अनपढ़योग्य, अनउपदेशयोग्य, सून्यहृदय बंशवन्त, अनाड़ी, मूढ़, विद्यारहित मूरखनाम—दो॰। मुग्ध मूढ़ जड़ मूक नर, अग्य अबुधं बद्द संठ। मूरख जन जाने कहा, मनि जैसे कपि कंठ॥१॥ [मुग्ध।

मूलकपोतिका· (स) नेपाली

मूर्च्छा· (स) मुञ्चकू बाजा।

मूर्त्ति· (स) काया, स्वरूप, प्रतिमा, पुतली, देह, दृढ़ता सस्तीर। [मूर्त्तिमान्

मूर्त्तिमन्त· (स) आकारवन्त,

मूर्द्धा. (स) शिर, माथा, भृकुटी।

मूल· (स) आदि, मूर, कन्द, जर, बंश, कुल, पूंजी, जड़, कारन।

मूलक· (स) मुरई, मूरी, मूली। चौ॰। जिन के दशन करालन्ह फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे॥ अर्थात् जिनके दांत करालन वज्र फूट गये हैं।

मूल्य. (स) मोल, भाव, निछावर, कीमत, बेतन।

मूष, मूषक· (स) चूहा, मूस, मूषिक, मूसा, चोर। [पति।

मूषक वाहन (स) गणेश, गण-

मूषण· (स) चोरी करण, हरण।

मूषिक· (स) मूसा, चोर, मूढ़बन्धा।

मृग, मृगा· (स) हरिण, हरिणी, समूह चौपाया, पशुमात्र, हरिण, पशु। मृगका स्थान नाम—छंदमोहिनी। मोष, दिवस मरीच वपु धारो

मृग हरिना ॥ सुरभी पृषत बनाय हरि बात पशु भवरना ॥ एन कुरंग बिलोकि प्रभु धाये धनु धरिके ॥ इति दशमुख सीता हरी कपट बेश करिके ॥१॥ यथा स्वान कौलेय स्वा मंडल दृढ पाला ॥ सारमेय कुक्कर परोगति घतितकाला ॥ ग्राम सिंह हरि भाग जिम तुरत ले पलायो ॥ तेरहदश कमछंद यह मोहनीसुहायो ॥ २ ॥ सखी की अनखाहट कुरंग नाम—दो० । ऐन हरिन बातप प्रषद, हरि सारंग सो भाय । मृगसिसु कैसे दे गली, चली श्रौर अनखाय ॥ १ ॥

मृगनाभी. मृगमद. (स) कस्तूरी।

मृगजल, मृगतृष्णा. (स) धूप में जल भ्रांति, मृगतृष्णा, मरीचिका, निर्जल देश में रेतली जगह पर सूर्य की किरणों में तृष्णार्त्त मृगों को जल की भ्रम होना और जल न मिलना।

मृगपति. (स) सिंह, मृगराज, मृगेन्द्र।

मृगडाल. (स) कमल की डांडी।

मृगमत. (स) कस्तूरी, सुगंधवस्तु।

मृगमाला. (स) मृगयूथ, मृगझुण्ड।

मृगया. (स) आखेट, अहेर, शिकार, व्याधकर्म। प्रगट हो कि छोटी और बड़ी चिड़ियों के अनेक प्रकारों में जिन जिन प्रकार की जिन २ चिड़ियों को प्राय: लोग शिकार कर के खाते हैं उन में १०० चिड़ियों के नाम बहुत खोज से और इस देश के शिकारियों से पूछ कर क्रमश: लिखे जाते हैं। जानना चाहिये कि यद्यपि इन नामों में बहुत अन्तर पाया जाता है और प्राय: खाने में भी

कहीं किसी चिड़ियों को खाते हैं और कहीं उसे छोड़ दूसरी को, पर यहां वही नाम लिखे गये हैं जिन को इस प्रान्त के मांस खानेवाले प्रतिष्ठितलोग (ब्राह्मण और क्षत्रिय) भी खाते हैं, और नाम भी यद्यपि बहुधा उर्दू अथवा ग्राम्यभाषा में हैं पर ज्यों के त्यों वही लिखे गये हैं जो यहां के बहेलिये और मीरशिकार पुकारते हैं क्योंकि इस के मुख्य जानकार वही लोग हैं। पानी में तैरने वाली अर्थात् पनिहर वा मुर्गाबी—मंगवाह, सींखा, बतख-अमीरी, बतमोग़लया, बतचीनिया, सुरख़ाब, दिघउच, लालसर (डूमर), सिलगह, नाहिंव, नकटा, हेंव, मेल, संखार, कर्का, अधेंगा, बैजला, सिलही, घरन, मलका, सोनवाह, गिरी, बानवे, गंधिला, घोघर, ओकार, लोकड़ो (पनडुब्बी), करमा, टिकवा (केसरार), भोदर, पिहुआ, मखाना, भिल्ली। बड़ी और लंबे पैरवाली अर्थात् गोड़ारी—बैवर, मलेख, कुलंग, तुरनी कुलंग, करकरा, हंस (हंसावे), आंधिल, लगलग, घोंघिल, टंटार। गोड़ारी से छोटी अर्थात् सहराई—दाबिल, मुंडल, करांकुल, ओवार॥ गोड़ारी और सहराई के सिवाय कुछ वही जो पानी में चरती है। आंजन, खैर, दाक, मोनी चर्ज़, अवलकचर्ज़। चाहा के प्रकार। गोइयार, सरगई, बगबध। घोटरा, भर्का (दोलंगा), भुभुका, मलगुलहा, सुरमा, खारग, चाफन, करियाइट, टुटनारी, रूभुनी, सांसी, नपरका, भटान, करवानक (बटसिरी) करवानकबड़ा। बन में और वृक्ष पर रहनेवाली—मोर, तीतर काला, तीतरगोरिया, तीतर कैर, तीतर गोठिला, चकोर, बटेर, लवा बड़ा पहाड़ी,

लवा छोटा, बनका, धनेस, हरियल (हारिल), पंडुक धवर, पंडुक कल्हवा, पंडुक कोदैला, (तीतरोला), पंडुक इटकोहिया (सरीतो), सोनपंडुकी, कबूतर, (लक्का, शिरहबाज, भूलोट, सिराजी, मुखी, भूरा, कालपोटिया, सुर्ख़, लाल, अकास, हरा, सब्ज़, लोहड़ा, कासनी) वगई, तिलगीर, कंसड़ई। बहुत छोटी। बगेरी (बगरा), पिलकई, मिसरैची, सीना बाज़, चोंचा, चंडूल, गौरा, टुना, गोठहुली। विदित होकि यद्यपि यह सब चिड़िया इस देश की नहीं है। इन में आधी से अधिक काश्मीर वा पूर्व वा अन्यान्य देशों और पहाड़ों की हैं पर किसी किसी ऋतु में कोई थोड़ी कोई बहुत सब इस देश के तालों झीलों नदियों की रेती दियारों और बनों बागों और खेतों आदि में मिलती हैं। यद्यपि यह भी सम्भव है इस से भी अधिक इन के प्रकार हों किन्तु जितना खोज से मिला लिख दिया है और बहुधा इन्हीं के नाम सुने भी जाते हैं, वरन इन में भी कोई २ अलभ्य हैं और कोई २ थोड़ी मिलती हैं वा किसी स्थान में कोई और कोई विशेष मिलती है, निदान सब तालों नदियों और बनों आदि में सब नहीं मिलतीं। इन का विशेष ब्योरा और रहनी का स्थान तथा इन के शिकार की अनेक रीति और मिलने का समय आदि शिकारी ही भली भांति जानते हैं॥

मृगपतिठवनि·(द्द) सिंहठवनि, निशंकता।

मृगयाकर·(स) आखेटी, अहेरी, शिकारी। [मृगेन्द्र।

मृगराज. मृगराय·(स·प) सिंह,

मृगशिरा· मृगशीर· (स) नक्षत्र विशेष, पांचवां।

मृगशावक (स) मृग का बच्चा, मृगबच्चा।

मृगादनी (स) बड़ी इन्द्रायन।

मृगाङ्क (स) शशी, चन्द्र।

मृगाधीश (स) मृगराज, सिंह।

मृगालय (स) उपवन, रमणा, बहलंगा। [इन्द्रायन।

मृगाची (स) मृगनैनी, बड़ी

मृगी (स प) हरनी, हरिणी, बनचरी, रोग विशेष।

मृगेन्द्र (स) मृगराज, सिंह।

मृड़ाणी (स) गिरिजा, पार्व्वती।

मृणाल (स) कमल डांट, कमल को जड़, कमल की दण्डी, भसींड़। [कन्द।

मृणालमूल (स) कमल का

मृतालका (स) सोरटी मट्टी।

मृत्सना (स) सेरठी मिट्टी।

मृदुच्छद (स) कुकरौंधा।

मृदुच्छदा (स) खजूर।

मृदुपुष्प (स) सिरिस।

मृदुरेचनी (स) खिकसा।

मृदुला (स) सुलैमानी कुह्हारा।

मृद्विका (स) मोनक्का या दाख।

मृत मृतक (स) शव, मुर्दार, मरा, मुआ, निर्जीव शरीर, मुरदह।

मृत्तिका (स) मिट्टी, मांटी,

मृत्यु (स) मौत, मरण, काल, प्राणवियोग।

मृत्युञ्जय (स) शंकर, शिव का एक नाम, कालजीत।

मृदङ्ग (स) बाजा भेद।

मृदल (स) उत्शीसा, उपधान, बालिश।

मृदु मृदुल (स) कोमल, धीमा, नम्र, नरम, शान्त।

मृद्वीकार (स) दाष कुहारा।

मृध (स) युद्ध, संग्राम।

मृषा (स) मिथ्या, व्याज, झूठ, वृथा, असत्य।

मे (स) मुझे, मौका।

मेकल (स) राजऋषिविशेष, पर्व्वतविशेष।

मेकलशैल (स) पर्व्वतविशेष।

मेकलशैलसुता· (स) } नर्मदा
मेकलसुता· } नदी जो
मेकलकन्या· } विंध्यिाचल से निकल अधिक होत हैं, गङ्गा, चौ०। सुरसरि सरसइ दिनकरकन्या। मेकलसुता गोदावरि धन्या॥ सब सर सिंधु नदी नद नाना। मंदाकिनि कर करहिं बखाना। अर्थात् श्री गंगा सरस्वती जमुना नर्मदा गोदावरी जो धन्या हैं औ सब सर मानसर आदि औ समुद्र औरौ अनेक नदी औ नद सोनभद्रादि ते मंदाकिनी कर बखान करत हैं।

मेकला. (स) } वृषभानु की
मेकली. } स्त्री, कलावती को स्वतीनि।

मेखकथा·(स) भेड़ों का समूह। भेड़ों का झुंड।

मेखला· (स) आवृत, वेरा, छाता, कटिसूत्र, करधनी, किंकिणी, कटिभूषण, चौकोना दरसन बन्ध, क्षुद्रघंटिका, जनेउ, खड्ग बंधनार्थ यज्ञ काल, चौक, कटिबंध। मेखला नाम—दोहा॥ कलाप श्रोणि कटि मेखला, क्षुद्रघंटिका जाल॥ रसना कांची किंकिनी, सप्तकि सूत्र विभास॥ १॥

मेखली·(स) टाट, पट्टी, अगाड़ी।

मेघ· (स) घटा, अभ्र विशेष, कृष्ण रथ। बादल, दो०। धाराधर जलधर जलद, जगजीवन जीमूत। मुदिर बलाहक तड़ितपति, पर जन जन्य सुपूत॥ १॥
घन विछुरी ज्यों कौमुदी, रही अमल मनि होय। मैं ताहि देखत भामिनी, कछु मनि कारन सोय॥२॥
पुनः छंद गोपाल। मेघ घनाघन वारिद होय। घन जीमूत बलाहक सोय॥ धूमयोनि धाराधर जान। अम्बुभृत्य परजन्य बखान॥ ॥ अभ्र मुदिर जलमुक जलवाह। जलधर कहु सौ·

दामिनिनाह ॥ नाम सप्त दश कहि बिशाल । पंद्रह कला छंद गोपाल ॥ दो०। जल नामनिनकार पुनि, होय बलाहक नाम। जग पोषक गंभीर ध्वनि, तस्य चंचला नाम ॥ १ ॥

मेघज्योतिष· (स) बिजली, गाज, दो०। क्षन रुचि छटा अकास क्षत, तड़ित, दामिनी होय। चपला बिनाम घन बने, घन बिन बने न होय ॥ १ ॥ पुन: दो०। बिद्युति चपला चंचला, सौदामिन घनबाम। चणप्रभा आकालिको, तड़ित छटा नव नाम ॥ १ ॥

मेघडम्बर. (स) चन्द्रविशेष।

मेघनाद· (स) मेघशब्द, गर्ज्जन रावण का पुत्र, चौराई साग, एक जड़ी का नाम।

मेघपुष्प·(स)नीर, जल, पानी।

मेघवाहन· (स) इन्द्र, पुरन्दर।

मेचक· (स) कृष्णवर्ण, काला उपाध श्याम भेद, काला, श्याम।

मेचकताई (द) श्यामता।

मेढुकी का जुकाम होना, मु० यह मुहावरा छोटे और नीच आदमी के घमंड जतलाने के लिये बोला जाता है।

मेढ़ा· (स) मेष, गाड़र, भेंड़ा।

मेण्डूक· (स) भेक, मेंडूक, मेंगजलजन्तु।

मेढुकनी· (स) मेभुका।

मेथी (द) मेथी।

मेद· (स) यज्ञ, मेध, मज्जा, स्थूलता, दुम्बाभेड़ा।

मेदक· (स) मदिरा, मद, सुरा दो०। मधुमाध्वी मदिरा इरा, सुरा वारुनी होय। आसव मे कादंबरी, मधु वारानिधिसोय ॥ १ ॥ सिंदुर रसना बुद्धिहा, हलाहल सिंधु प्रसूत। मधु पीए ज्यों बकत कोउ, कहा कहत है दूत ॥२॥ पुन:

छंद सुंदरी—रगण भी दश बांधर संग रजगौबर भूमत पान किये मदिरा । मैरेय प्रसन्ना मधु मधुवारा माध्वो हाला शुंड सुरा ॥ नदना कादंबरि मद्य बुद्धिहर आ-सव वारुणि सीधु मिरा । यह नाम समुद्रग्रन्थ बसु-द्वादश सता सुंदरि छंद धरा ॥ २ ॥

मेदा·(स) मेदा महामेदा शतावर।

मेदोगला·(स) खेत की ककोली

मेदिनी,(स) धर्ती, भूमि, पृथ्वी, जमीन। (मिदान।

मेध·(स) यज्ञ, मेद, अध्वर, स-

मेधा·(स) बुद्धि, अनुभव, बूझ।

मेधावी·(स) निपुण, बुद्धिमान।

मेध्य·(स) शुचि, पवित्र।

मेनका·(स) स्वर्गवेश्या।

मेनकात्मजा·(स) गिरिजा, पार्व्वती।

मैनाक·(स) पर्व्वतविशेष।

मेय·(स) उपमायोग्य, प्रमा-णयोग्य।

मेरु·मेरू·(स) पर्व्वत विशेष, मध्य, धोव, मेरुपर्व्वत, सुमेरुगिरि। सुमेरु नाम दो०। कांचनशैल, सुरा-लया, रत्नखान जु सुमेरु। हेमाद्री अरु देवघट, सप्त-नाम कहि मेरु ॥ १ ॥

मेला ठेला, मु० बहुत से आ-दमियों का इकट्ठा होना भीड़भाड़ होना। [डालना।

मेली·(द) डाली, मिलना।

मेष·(स) पहिली राशि, मेंढ़ा, भेंड़ा।

मेषलोचन·(स) चकवंड़।

मेषकर्णी, मेषशृङ्गी·(स) मेढ़ासिंगी।

मेह·(स) मेघ, मूत्ररोग।

मेहणा मारना, मु० ताना देना।

मैका·(द) नइहर, पीहर, मयका, पितृगृह।

मैत्रावरुणी (स) अगस्त्यमुनि।

मैत्री·(स·द.) मित्रता, हित-दारी, बंधुता, प्यार।

मैथुन·(स) रति, सङ्गम, स्त्रीसंग,

प्रसङ्ग याके अष्ट ८ प्रकार भाव, श्रवण, १ मनन, २ कीर्त्तन, ३ चिंतवन, ४ बात एकान्त, ५ दृढ़संकल्प, ६ यत्न, ७ प्राप्ति ८ ॥

मैना. (स० प) नामस्त्री राजा हिमाचल, शारिका पक्षी विशेष, पार्वती की माता का नाम। [नाम।

मैनाक. (स) एक पर्व्वत का

मैरेय. (स) शराब।

मैलछांटना, मु० निर्मल करना साफ करना।

मैलकाटना, मु० साफ़करना, धोना, निर्मलकरना।

मैलाकरना, मु० गंदाकरना खराबकरना, अपवित्र करना। [गदला।

मैलाकुचैला, मु० मैला, गंदा,

मैलाहोजाना, मु० गंदाहोना गदला होना, खराबहोना।

मैहिका. (स) महिष, भैंसा।

मोई. (प) मोही, मोना, मोहना। चौ०। लोग शोग श्रम बस गए सोई। कछुक देवमाया मति मोई॥ अर्थात् लोग शोक रूपी श्रम के बस ह्वै सो गए औ कछु देवतन की माया ने भी मति को मोही। [याद।

मोघ. (स) मिथ्या, वृथा, व्यर्थ,

मोघा. (स) पांढ़र।

मोच. (स) लचक, कचक, मचक।

मोचक. (स) मुनगा।

मोचन. (स) नाश, छुटा, अपहरण, छोरना।

मोचनिर्य्यास. (स) मोचरस।

मोचरस. (स) मोचरस।

मोचा. (स) शिम्बर, केला।

मोचाकन्द. (स) सेमर का मुसला, केला का मुसला।

मोचास्राव. (स) मोचरस।

मोचिका. (स) कोइया मछली।

मोती की सी आबउतरना, मु० बेइज्जत होना, किसी का अपमान होना, अनादर होना।

मोतीकूटकर भरनी, मु० खूब

चमकीलाहोना, (यह मुहावरा आंख के लिये बोला जाता है)
मोती पिरोने, मु० मोती गूंथना, मिठास के साथ बोलना, रोना।
मोद· (स) आनन्द, हर्ष अन्तःकरणकर्त्तव्य, खुशी।
मोदक· (स) हर्षकारक, लड्डू विशेष।
मोदगी· (स) बहुर।
मोदित. (स) हर्षयुत, हर्षित।
मोरट· (स) चुरनहार।
मोरटा· (स) फटाहुआ दूध।
मोरध्वज· (स) राजा विशेष, धर्मशूर।
मोरपच्छ. (स) मोर की पांख।
मोरहुति· (प) हमरी ओर में, मेरी ओर से।
मोर्षका (स) मेथी।
मोह. (स) मायाविषे आपनपी मानना, अज्ञान।
मोह में आना, मु० अपने मित्र अथवा प्यारी के अचानक मिलने से अचेत होजाना।
मोहलेना, मु० रिझाना, किसी का मन अपनी ओर खैंच लेना, लुभाना, बस करना, मंत्र फूंकना।
मोहन· (स) सज्जन, मनोहर, प्रिय, सुहावनहार।
मोहनी. (स) सुहावनहारी मोहिनी।
मोहमय· (स) झूठा। [खाल।
मोहाना· (प) वेणी, सङ्गम,
मोहापहारी· (स) मोह का नाशिका।
मोहित. (स) मुर्छित, अचेत, मोहुवा। [बटपत्री।
मोहिनी· (स) वेश्या, रूपवती।
मोच· (स) मुक्ति, सुगत, निर्व्वंध, मोक्षा। अपवर्ग, संसारात्रि हत्ति, परब्रह्म प्राप्ति॥ मोच नाम—दो०। मोच मुक्ति अपवर्ग पुनि, अमृत श्रय निर्वान। हरि पद गति कैवल्य युत, खगनि दीन्ह भगवान॥१॥
मोचक· (स) मोखा।

मौषास· (द) गढ़, धाम।

मौक्तिक· (स) मोती।

मौन· (स) चुप, गुम, तुष्णीम् चुपचाप, तुष्णी।

मौलि. (स) मस्तक, शिर, संजर भामाट्टिक, शिखा, माथा, किरीट, मुकुट, चूड़ा, चोटी।

मौली. (स) चोंटी, चूड़ा, शिखा।

म्लान· (स) मैला, मन्द, मलीन, मुर्झा।

म्लानि· (स) मलीनता, शुष्कता।

म्लेच्छ· म्लेच्छ· [स] वेदाचारहीन, नीचजाति, वेदविरुद्ध, धर्मावलम्बी, नीचनिवासी, सिमरिख।

म्लेच्छकन्द· [स] लहसुन।

म्लेच्छमुख· [स] तामाधातु।

य

यं· (स) जेहिको जिसको, जिस को।

य· (स • याना) पुं० हवा, पवन, १ यश, कीरति, नाम २ मेल, योग ३ सवारी, गु० जानेवाला।

यजन· (यज् पूजना) पु० मख, यज्ञ, पूजा।

यच्छ· यच्छ· (स) देउ, दीजिए।

यजमान्· (स० यज् पूजना या यज्ञ करना) पु० यज्ञकर्त्ता, दानकर्त्ता, यज्ञकरनेवाला, जजमान।

यजुः (स० यज् पूजना) पु० यजुर्वेद, दूसरा वेद।

यच्छ· (स० यक्ष् पूजना) पु० गुह्यकदेवता, कुबेर के नोकर।

यज्ञ. यज्ञ· (द.स० यज् पूजना) पु० बलिदान, पूजा, होम, हवन, याग, १ विष्णु, भगवान, हरि।

ययाति· (स) राजा का नाम विशेष ताकी कथा है। एक समय की कथा है कि बृहस्पति गुरुदेवतन्ह ताके पुत्र कचने शुक्राचार्य्य गुरुदैत्यन्ह के पास सञ्जीवनी विद्या पढ़ते थे काहे कि श्री बृहस्पति जू पिता

उन्ह के सञ्जीवन मन्त्र जानत रहे अरु सञ्जीवनी विद्या नाहीं । अरु देवजानी नामि शुक्राचार्य्य की पुत्री बारह वर्ष की अवस्था वाओ एक अटशाल कच के साथ पढ़ती रही । कोई काल युवा जोर ते काच तें देवजानी ने भोग की इच्छा किया । परन्तु वाने गुरु पुत्री जानि नहीं मानेउ । तद देवजानी शाप दिई कि हमारी आशा जैसी भंग किया तैसे तूं हमारो पिता कि विद्या पढ़ाई विस्मृत हो जाहुगी । तब कच भी शाप वाको दियो कि जो तुम को चाह भोग का भो तो तुझै क्षत्री पति होयगो । एक शाप देवजानी को याही रही । और दूसरी प्रसंग जानो चाहिये कि एक दिन राजा वृषपर्वा दैत्य बानासुर का भ्राता ताको पुत्री शर्म्मिष्टा सहेलिनी सहित और देवजानी शुक्राचार्य्य की पुत्री भी सबोंने नदी में वस्त्र छाड़ि छाड़ि स्त्री स्वभाव स्नान क्रीड़ायुत करत रही । संयोगात् श्री नारद जू को आवत देखि सबीं जल ते निसरि अति लज्जित आतुर होय वस्त्र ग्रहण करण लग्यो वाही काल वस्त्र शर्म्मिष्टा का देवजानी तें उलटि पलटि बदल भयो । पश्चात् स्थिर हुए शर्म्मिष्टा ने वस्त्र अपनो देवजानी के शरीर में देखो दोनों तें परस्पर दुर्वाद बकवाद नीच ऊंच होने लगो कि पूर्वं शर्म्मिष्टा ने कही कि तेरो पिता मेरो द्वार का भिक्षुक है । तुझि हमारो वस्त्र ग्रहण का कहा समर्थ जो तूं ने अइसी कियी । भलो जों तू को राज-पुत्री का वस्त्र भावा तों तूं राज पत्नी होयगी या शाप दिई । देवजानी भी वासों ऐसो कहि शाप दियी कि हे राजपुत्री हम तुम्हारे पिता के गुरुपुत्री हूं जों कदाचित् वस्त्र ग्रहण में धोखा हो गई तो ऐसो कुवाच अनु-

चित दासावत् किए अरु कही तें तूं भी दासी भाव को प्राप्ति होयगी। या श्राप सुनत शर्म्मिष्टा ने मारगे मैं आवत अति क्रोधित वस्त्र सब वाको छिनाय कूप माहिं दियो गिराय। अरु सब अपने सहेलियों को बुलाय के कहि के वर्जित वो ताड़न करि घर चली गई। वाके दोसरे दिन राजा ययाति ने वाहीदिशा शिकार करत जल हेतु वा कूप पर जाके भीतर वाके एक कन्या दिगम्बरी अति रूपवन्ती देखि दयायुक्त वाको पाग वस्त्र अपनो गिराय थोड़ी वाको ऊपर होत हाथ पकरि ऊपर खींचि लियो, ऊपर होय वार्त्ता दशा भ्रष्ट आदि की बातें पूछते भए उन्हों ने अपनो परिचय शुक्राचार्य्य की पुत्री अरु शर्म्मिष्टा की कुचाली राजा तें वरणन कियो अरु कही कि जौं इस कुमारी का हाथ तूं ने ग्रहण कियो, तौं अब दोसरी तें पाणि ग्रहण उचित नहीं है अरु पिता को अपने हम समुझाय तुम्हारी पत्नी होय साथ जायगी, यद्यपि राजाने ब्रह्म पुत्री जानि इनकार कियौ, परन्तु उन्होंने नहीं ग्रहण किए ते राजा के अपनी प्राण त्याग की प्रण किई, तब विवश होय वा को पिता पास ले गयो, शुक्राचार्य्य ने सब वार्त्ता सुनि करि अति कोपमान् होय राजा वृषपर्वा को श्राप भस्म का देने लग्यो तब वृषपर्वा ने शुक्राचार्य्य को बोहु कोई यतन ते शांत नहीं पायो, परन्तु जब शुक्राचार्य्य ने देवजानी अपनी पुत्री के कहते राजा की पुत्री शर्म्मिष्टा को दासी होय अपनी पुत्री देवजानी के साथ दायी कही जो बादां जाने कह्यो, तब राजा वृषपर्वा ने अपने जान प्राण राज पाट रक्षा हेतु और एक पुत्री का उठाय वचन मानि शर्म्मिष्टा पुत्री को अपनी घरते निकालि

देवजानी के साथ करि दियो, तब शुक्राचार्य्य ने राजा ययाति को देवजानी को विवाह करि बिदा कियो और शर्म्मिष्टा को साथ करि वा पर कुदृष्टि करण तें राजा को वर्जित करि दियो, राजा जब देवजानी शर्म्मिष्टा सहित अपने घर आयो, कोई काल बिते राजा ने शर्म्मिष्टा जो देवजानी ते भी अति रूपवन्ती रही कामातुर शौकीन वा पर होय देवजानी ते प्रीत स्नेह छाड़ि दियो, तब देवजानी ने राजा को अति विषयी की रीति देखि अपने पिता के पास जा रही, शुक्राचार्य्य वृत्ति वा राजा की आकरण्य कही सुनि वाको श्राप दियो, वा युवा अवस्था जो अछत सों वृद्धभाव को प्राप्त भयो, कोई काल फेरि बीते कोई आकरौं कि वेश्या अपूर्व रूपवन्ती राजा के सभा सों आ रही है राजा ने बाहर आवते वा पर अति शौकीन होय अभ्यन्तर गति वृद्धावस्था ते विवश हो रहा, पश्चात् पूर्व यदुनाम ज्येष्ठ पुत्र ते अपनी युवावस्था चाहना कियो वा न दयो, तब वा को राजा ने आवराजहीन बंश का दियो, पश्चात् पुरु लघु पुत्र तें चाहना कियो, वा ने पिता आज्ञा मानि अपनी युवावस्था तत्काल संकल्प करि आपु वृद्ध अवस्था को प्राप्त होय रहा. अब राजा नी वा दिनौं ते अपने कामातुर होय अघ कर्म्म को नाना प्रकार करि तत्पर रहा, एक दिन अपने राजमद ते श्री वशिष्ठजू सौं कह्यो कि हम सदेह सुरपुर जाने को चाहत हौं, श्रीवशिष्ठजू ने या आश्चर्य्य बातौं सुनि कथान्तर पर टाल दिए, तव राजा ने श्री विश्वामित्र गुरुदेव ते अपने कल्पना अपनी कही तब विश्वामित्र ने कृपा दृष्टि करि कन्ध आवाहन करि राजा को आकाश मार्ग को सदेह

बनाया, निकट सुरपुर जात देवतोंने बिचार करि आश्चर्य जानि सुरपुर की मर्य्यादा मानि अपने अपने तेजों के प्रताप राजा को सुरपुर जानेते नीचे मर्त्य लोक में गिरा दियो सुरपुर को जाने न दियो ॥

यजन· (स) पूजन, आराधन, यज्ञ। [विशेष।

यजुर्वेद· (स) दूसरा वेद, वेद

यज्ञ·(स) मेध, याग, बलिदान, मख, सत्र।

यज्ञभूषण· (स) कुश।

यज्ञवृक्ष. (स) कंटा।

यज्ञाङ्ग· (स) गूलरफूल।

यज्ञीय· (स) खयर वृक्ष।

यज्ञपायन· (स) पवित्रयज्ञ।

यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत. (स·) पु· द्विज भेष, जनेउ, उपवीत, कंठसूत्र, जनेऊ।

यतन·(स) ध्यान, उपाय, यत्न जतन।

यतराज·(स) नक्षराज, विमुख्य।

यति, यती. (स० यत जतन करना मुक्ति केलिये) पु० तपस्वी, भिखारी, सन्यासी, बैरागी, जैनियों का भिखारी।

यतुलवण· (स) पांगा नोन।

यत्· (स) जैतिक, जहांतक।

यत्न·(स०यत् जतन करना। पु० उपाय, यतन, उद्योग, प्रबन्ध, तदबीर, कोशिश, मिहनत, सावधानी, जतन।

यत्र. (स०यद् जो क्रि० वि०) जहां विषे, जिस स्थानमें, यस्मिन्, जहां, जिस जगह।

यत्रतत्र· (स) जहां तहां।

यथा· (स० यद् जो क्रि० वि०) ज्यों, जैसा, जिस रीति, जैसे, सादृश्य, येन प्रकारेण, जिस प्रकारसे, जिस रीति से, बराबर, तुल्य।

यथाक्रम· (स) परिपाटी से, जैसा, जाकी मर्य्याद।

यथातथा· (स) जैसा, तैसा, ज्यों, त्यों।

यथायोग्य (स० यथा जैसा योग्य ठीक) क्रि० वि०। जैसा उचित, जैसा चाहिये, ठीक है, यथोचित।

यथार्थ (स० यथा जैसा, अर्थ अभिप्राय, मतलब) गु० क्रि० वि०। सच, खरी, सांच, सत्य यथायोग्य, ठीकठीक, जैसा, चाहिये।

यथार्थित (स) एचिले, जैसे।

यथावत (स) समाप्त, संपूर्ण, सब। [यथायोग्य।

यथाविधि (स) विधिपूर्व्वक,

यथाशक्ति (स० यथा जैसी या अनुसार, शक्ति बल) क्रि० वि०। जैसी सामर्थ्य हो, अपनेबल के अनुसार, जितना हो सके।

यथाशास्त्र (स) शास्त्रानुसार।

यथासम्भव (स) जैसा होने का योग्य।

यथास्थित (स) जैसा का तैसा, ज्यों का त्यों। [इच्छा।

यथेच्छा (स) यथा रुचि, जैसी

यथोक्त (स) जैसी कही गयी।

यथोचित (स० यथा + उचित) क्रि० वि०। यथायोग्य, जैसा उचित, जैसा चाहिये, यथायोग्य।

यद (प) जब, ज्यौं। [लिये।

यद्वधि (स) जब से, कहां से,

यदा (स० यद् भी) क्रि० वि०। जब जिस समय में, जब लगि, अस्मिन् काले। [भी।

यदापि (स) यह निश्चय, यह

यदि (स० यद् भी) क्रि० वि०। जो कदाचित्, जैसा कि, पक्षान्तर, विकल्प, अब।

यदु (स) पु० एक राजा का नाम जो राजा ययाति का बड़ा बेटा और श्रीकृष्ण का पुरुषा और चन्द्रवंशी राजाओं में पांचवां राजा था।

यदुकुल (स) पु० यदु राजा का घराना, यदुवंश।

यदुनाथ यदुपति. (यदु यदुवं- शियों का, नाथ या पति

माणिक) पु० श्रीकृष्ण, वासुदेव ।

यदुवंश (स) पु० । यदुकुल, यदु एक राजा का घराना ।

यदुवंशी. (स० यदुवंश) पु० । यदु के वंश के लोग, यादव ।

यद् (स). जब, ज्यों ।

यद्यपि-यद्दपि (स) अव्यया० जौं भी, जौं लिखय, यदिच, यनःचि, जो भी, जो ।

यन्त्र (स) बाजा, कल, टांट-का, पेच ।

यन्त्रिका. (स) ताला वा जंजीर कपाटादि, कुलुफ ।

यन्त्रित (स) ताला अथवा जंजीर सौं बन्ध । [बधकारी ।

यंत्री (स) ओभा, तारकसी,

यम. (स) धर्मराज, काल, युग, संयम, दक्षिण दिशा का देवता ।

यमक (स) पशुप्रास, यमल ।

यमकरधार (स) यम की सेना ।

यमदग्न (स) परशुराम का पितामह ।

यमवाहन (स) भैंसा चतुष्पद ।

यमयातना (स) यमकष्ट, नर-ककुण्ड ।

यमराट् यम-राड् यमराज } (स) जमराज, काल, धर्म राज । छंद तोटक । यम-राज कृतांत तथा दमनं । महिषध्वज दंड धरं समनं ॥ यमव्रत अंतक पितृपती । यमकाल कराल परेतपती ॥ समवर्त्तिक धर्म सुधर्मपती । यमुना वर बंधु हुं मृत्युपति ॥ यह नाम वसुद्दश वेद कहै । सुगनं श्रुति तोटक छंद धरै ॥ दोहा । आर्जरि सूनज हते, सो सुख चदु मिश्र हेत । लेवे खव क्षत सुकृत पुनि, वैवस्वत फल देत ॥१॥ नाममाला १९। २० दोहा में । वैवस्वत पुनि मृत्युपति, सब जीवन पति होय । महि-भुज धर दंडधर, सबी, सूर्य सुत सोय ॥१॥ अंतक

काल करात यम, धर्म राज कोपंत । ते तुम पिय सुभ नाम सुनि, थर थर थर कांपंत ॥ २ ॥

यमलार्जुन (स) नाम द्विजों का वृक्ष जो कि कुबेर सुरभंडारी का द्वि पुत्र एक नल बड़ा, दूसरा छोटा पुत्र कुंवर नारद जू के शापतें दोनों वृक्ष जौंवा हो के गोकुलपास में श्रीनन्द जू के द्वारे स्थित भए. श्री कृष्णावतार होने में अखर के धक्का लागि के उद्धार उन्हीं का हुआ ।

यमानुजा (स) यमुनानदी ।

यमोवि (प) संयमी जैसे ।

यमुन.यमुना (स)नदी विशेष ।

यमुनाभ्राता. (स) काल, यम, धर्मराज ।

यया (स) भाग । [जव ।

यव (स) जौ अन्न विशेष, इन्द्र-

यवकरकोट (द) घुन ।

यवनदेशज (स) सिलारस ।

यवनेष्ट (स) पियाज, लहसुन ।

यवरोटिका (स) जव की रोटी ।

यवशक्तु (प) जव का सतुवा ।

यवशोक (स) वथुआ ।

यवसाह्वया. (स) अजवाइन ।

यवक्षार. (स) जवाखार ।

यवाग्रज (स) जवाखार ।

यवानिका (स) अजवाइन ।

यवास (स) यवसा ।

यश (स) कीर्त्ति, पुण्य, पति ।

यष्टी (स) जेठीमध ।

यष्टीपुष्प (स) पितौंजिया ।

यष्टीमधु (स) जेठीमध ।

यस (प) जैसा ।

यसद (स) जस्ताधातु ।

यस्मिन् (स) जिहिविषें,जिसमें ।

यहां का यहीं, सु० ठीक इसी जगह ।

यज्ञपावनी (स) पवित्रयश ।

यक्ष (स) पक्षगण, देवजाति विशेष, पूजन, दान ।

यक्षधूप (स) धना ।

यक्षपति.यक्षराट (स) कुबेर, सुरभंडारी ।

यज्ञभूषण (स) कुश ।
यज्ञवृक्ष (स) कण्टाई ।
यज्ञाङ्ग (स) गूलरफल ।
यज्ञीय (स) खयरवृक्ष पलास वृक्ष ।
याग (स) यज्ञ, मेध ।
याचक (स) प्रार्थक भिक्षुक, मंगता, भिखारी, मांगने वाला । [रंक ।
याजक (स) पुरोहित, यज्ञका
याजन (स) याजक का कर्म्म ।
याज्ञ (स) यज्ञ, मेध ।
याज्ञवल्कि (स) ऋषि विशेष ।
याज्ञिक (स) यज्ञकर्त्ता, यज्ञ करनेहार ।
यातना (सं) वेदना, नरक कष्ट
यातायात (स) धावागमन ।
यातुधान (स) राक्षस, कष्टक, चौ० । सोतै पुनि करसि कनि त्रासा । करिहौं जातुधानको नासा ॥ अर्थात् जातुधान पद ते राक्षस मात्र कहे ताको भाव रावण तूं एक है सारे राक्षस एकत्र जो होंहि तौभी नाश करौंगा जातुधान कुल कै नाश को उद्योग करौंगो ।
यात्रा (स) तीर्थ, तीरथ, कूंच, प्रस्थान ।
यात्री (स) परदेशी, तीर्थ करैया ।
याथार्थिक (स) ठीक, सत्य, वास्तविक ।
यादसापति (स) वरुण देवता ।
यान [स] विमान, वाहन, सवारी ।
यापन (स) कालक्षेप, निर्व्वाह ।
याम (स) पहरकाल, प्रहर ।
यामदग्न (स) मुनिविशेष, परशुराम पिता ।
यामाता (स) जामाता, जंवाई ।
यामिक (स) पालक, सहायक, पाहरू, जामिन । [रात्रि ।
यामिनी (स) निशा, रजनी
यामुन (स) स्याह सुर्मा ।
यामी (स) द्वितीयप्रहरदिन, मध्याह्न काल ।

यावक· (स) लाखो, लालवर्ण, महावर, आरत ।

यावकपम· (स) दुपरियापुष्प ।

यावत्, यावद्· (स) जबलगि, जबताईं, जितना, जब तक, जहांलौं ।

यावानाद्ती· (स) मुर्गी ।

याव. (स) लाही ।

यावशूक· (स) जवाखार ।

यास· (स) जवासा । [सटा ।

युक्त·(स)उचित,उपाय,योग, लग।

युक्तरसा· (स) रासना ।

युक्ति· (स) प्रवीणता, कसौटी, न्याय, अनुमान, दलील ।

युग (स) द्विसंख्या वाचक, जोड़ा, सत्य, त्रेतादि चार, बारह बर्ष, दोयुग्म ।

युगपत्रक· (स) कचनार ।

युगपत· (स) एकेबार, एकत्र, एक काल ।

युगल· (स) दो, युग्म, युग, जोड़ा, दो० । गिरधरि रज गुरु पाद युग, युगल यमल यम होय । युग्महेत मिथुनं उभै. द्वंद द्विते युत सोय ॥१॥ युग विरंच युग मध्वरो, युग श्रीरंग युगशंभु । हरिविलास सिर नाय पद कीन्ह ग्रन्थ प्रारंभ ॥२॥ शुक्ल शुक्ल पुनि शुक्ल युत, रवि तिथि हय तिमिरारि । अम्नि शुक्ल भव शुक्ल निधि, भू युत बर्ष उदार ॥३॥ रामानुज पद इष्ट निज,रामानुज पुर धाम । रामानुजय सौ जन्म निज, हरिविलास निज नाम ॥ ४ ॥

युग्म· (स) जोड़ा, युग, दो ।

युत· (स) मिला, विशिष्ठ, सटा, जड़ित ।

युथिका· (स) जुही, पुष्प विशेष.

युद्ध· (स) रण, संग्राम, लड़ाई । चौ०। युद्धविरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर । रामप्रताप सुमिरि उर अंतर । युद्धविरुद्ध अर्थात् युद्ध में विशेष प्रवृत्त भये ॥

युधिष्ठिर·(स) कुन्तीपुत्र पांडव ।

युवती (स) स्त्री, तरुणी, जवान।
युवन (स) युवा, तरुण, यौवन।
युवराज (स) राज अधिकारी, नायब, राजा का प्रधान पुत्र, आपु अछत पुत्र को राज देना, राज गद्दी का अधिकारी, राजपुत्र।
युवा (स) तरुण, यौवन, जवान।
युवेह (स) सुपक्क कैतारी।
यूष (स) दिवाकर, सूर्य।
यूखांशु (स) सूर्यकिरण।
यूथ (स) झुण्ड, सेना, जथा, समूह, गिरोह।
यूथप (स) सेनापति, युद्ध नायक, दो० इहि विधि होत बतकही, आये यूथप यूथ। नाना बरन अतुल बल, देखिय कीस बरूथ॥ अर्थात् यूथपयूथ अर्थात् बानरों के राजाओं के समूह आये जिन में एक एक यूथपतियों के साथ अनेक वर्ण और अतुलबल कीस बरूथ अर्थात् बानरों की सेना देखी गई।
यूथी (स) सुपेद जूही।
यूथीस्वर्ण (स) पीला फूल की जूही।
यून (द) पुराना, बहुकाल।
यूह, यूहा (स प) यूथ, समूह।
यूथपयूथ (स) सेनापतियों के समूह।
ये (स) ज्यों सब, जो सब, जो लोग, जो, यह।
येक (स द) आलस्य, सुस्ती।
योग (स) मेल, संयोग, जोड़, काम विशेष, ईश्वर जीव का वियोग छूट कर मिल जाना द्वन्द्वों का जीतना।
योगीन्द्र (स) योगियों में श्रेष्ट।
योजन (स) चार कोस, परिमाण।
योधा, योद्ध (स) वीर।
योनि (स) उत्पत्ति स्थान।
यौवन (स) जवानी।
जोगक (स) स्याह अगर।
योगाग्नि (स) योग द्वारे आपि आपु देह तें अग्नि निसरे

सती जोगाई के पद्धती।

योगिनिद्रा· (स) काकनिद्रा, जागता। [माधो।

योगिनी· (स) भूतिनी, पि-

योगी· (स) तपस्वी, योग साधक।

योगीश्वर· (स) योगीश, सिद्ध.

दोहा। सन्यासी वर व्याज धनि, जटमाँ मुंडी होय। दंड आद भगवान सम, निर्वाणी पथ सोय॥१॥

रिषि भिक्षुक तापस जपी, व्रती तपी मुनि आदि। जोगी जन मनविसका करि नितही खोजत ताहि॥२॥

योगीश्वर नव विवरण· ९ (स) कवि, हरि, अन्तरीक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आवि-र्होत्र, द्रुमिल, चमस, कर-भाजन, एते नव योगीश्वर।

योग्य· (स) उचित, सम्भव, उप-युक्त, लायक।

योजनवल्ली· (स) मजीठ।

योधा· (स) युद्धकर्त्ता, वीर, जवांमर्द।

योनि· (स) भग, उपज स्थान।

योनिचौरासी लक्षविवरण· (स) स्थावर वीश २० लक्ष, जलजन्तु ९ लक्ष कूर्म्म एगारह ११ लक्ष, पक्षी दश १० लक्ष, पशु तीश ३० लक्ष, नर चारि लक्ष। ८४०००००।

योषा· (स) स्त्री।

योषित, योषिता· (स) स्त्री, अबला, नारी, पत्नी।

योषित्प्रिय· (स) हल्दी।

योस्मोसि· (स) जो तूं है सो तूं है, जैसें तैसें।

योष्ठ· [स] ओठ ओष्ट वा मूंगा नाम। सोरठा॥ रदपट्ट-दंता वास, अधर ओष्ट नंदलाल के। आरत बिंब मदनास, औ प्रवाल विद्रुम सहित ५६॥१॥

नाममाला। दोहा। बानि ओष्ठ पुनि रदन छद, अधर मधुर एहि भाय। नाम लिखित जाको तुरत,

किसलक जग होए जाय ॥१॥

योतक·योतु·[स] दहेज,जहेज़।

यंत्रिक· [स] ताला।

र

रखछोड़ना, सु॰ धरना, रखना, बचाना।

रखदेना, सु॰ धरना, रख-छोड़ना, बचाना।

रखलेना, सु॰ लेलेना।

रगड़ाझगड़ा· सु॰ लड़ाई, दंगा, बखेड़ा। [दिक।

रंह:· रंहस्· [स] वेगजल्दा·

रक्त· [स] रुधिर, लाल, लोहू लालरंग, तामा धातु, दुपहरिया फूल, मानिकरत्न।

रक्तनाम—दोहा। रुधिर असृक शोणित क्षतज, लोहित औ कीलाल। रक्त अस्त्र के घर भरे, देखि सुरत सुरभीन ॥१॥ अरुण बरणनाम—दोहा। बरन रक्त पाटल अरुण, लोहित शोणाताम्र। देखि परत रण धरणि सब, शोणित निकर बाम ॥ १ ॥

रक्तगो· [स] लालगज।

रक्तचंचु· [स] शुक, तोता, पक्षी।

रक्तचन्दन· [स] लालचन्दन।

रक्तफल· [स] बरगद, प्लक्षनाम, वटनाम।

रक्तफला· [स] तिलकोचा, तिल कोरा, स्वर्ण बल्लरी, कुंदरू।

रक्ततरु· [स] सुवर्ण गेरू।

रक्ततिल· [स] बन तिल।

रक्तधातु· [स] गेरू। [कोनी।

रक्तपादी· [स] पानी की ल-

रक्तपुष्प· [स] लाल कचनार, लाल कनइल।

रक्तपुष्पक· (स) पलास।

रक्तपुष्पी· [स] लालगदह पँड़वा, सेंदुरिया सिन्दुर।

रक्तमार्ष· [स] लालसाग।

रक्तयष्टिका· [स] मजीठ।

रक्तरण्ड· [स] लाल रेंड़।

रक्तलोचन· [स] परेवापक्षी।

रक्तवासुक· [स] बनबथुआ।

रक्तरीण· [स] रीठा।

रक्तबीजा (स) सिंदुरिया।

रक्तशालि· (स) लाल धान।

रक्तसार· [स] लालचन्दन, पतङ्ग, खयर वृक्ष।

रक्ताङ्ग· [स] केसर, लाल चन्दन, कमला गुण्डी।

रक्ताङ्गी· [स] मजीठ।

रक्ताक्ष· [स] लाल चखवन।

रक्तालु· [स] रतालू।

रक्तिका· [स] लालकर्णमी।

रग· [अ·फ] शिरा, नाड़ी, नस।

रघु· [स] कुलसंज्ञा, जीवसंज्ञा, सूर्यवंशी, राजा दिलीप का पुत्र। [कि राजा।

रघुराई, रघुराज. (प) रघुकुल

रघुकुलसरोजदिननायक. [स] रघुकुलकमल के सूर्य।

रघुपतिसेवक· [स] सुग्रीव।

रघुकुलकमलपतंगा· [द] राम, रघुकुल के पतंगा अर्थात् सूर्य कुल का प्रकाशकर्त्ता।

रघुकुलकेतु· [द] रामचन्द्र।

रघुराज· } [स] दशरथजी,
रघुनाथ. } रामचन्द्रजी।

रङ्क· [स] दारिद्र, निर्धन, दरिद्र, कंगाल।

रङ्ग· [स] अरमर, शोभा, अति हर्षित, लाल पीलाआदि, खुरारांगा। रंगनाम लाल, पीला नीला, गुलाबी, काला, धौला, धुंधला, हरा, आस्मानी, बैंजनी, सोसनी, नारंगी, बगफशी, कासनी, भूरा, सुनहरा, जाफ़रमानी, संदली, जाफ़रानी, मिटिया, अब्बासी, बोतली, पिस्तई, सुरमई, ककरैजी, खाकी, धानी, अमुरंदी, जंगाली, मुंगिया, पियाज़ी, लाजवर्दी, तूसी, फालसई, गंधकी, कपूरी, उन्नाबी अरगजा, गोरा, अगरई, चम्पाई, बादामी, बसंती, कसौंधा, ज़र्दा, पचरंगा, इकरंगा, कुसुम्भी, मलागीरी।

रंगलगना मु· रंग चढ़ाना, झगड़ा उठाना, बखेड़ा मचाना।

रङ्गखड्ग. [स] असा।

रङ्गभूमि. [स] अनुपयुक्तभूमि, नाच घर, अखाड़ा, समरभूमि, संग्राम भूमि, लड़ाई की जगह।

रचक. [स] रचनकर्त्ता, निर्मापक बनाने वाला।

रचन. [स] निर्माण, बनाना।

रचित. [स] निर्मित, बनाया हुआ।

रज. [स] शूरता का पांच प्रकार रणशूर, दानशूर, धर्मशूर, तपशूर, ज्ञानशूर, प्रमाणा।

रजशब्द—दोहा— रज राजस आकाश रज, रज युवती में होय॥ रज धूली रज पाप कहि, रज जल निर्मल सोय॥ १ ॥ रजस, सूत. स्त्रीको धातु, धूल, धूर, धूली, पाप, निशानी।

रजक. [स] धोबी जाति।

रजत. [स] रूपा, चांदी, दुर्वर्ण, सोना, श्वेतदांत, रुधिर, रूपानाम—दोहा। रुक्म रजत दुर्दीन कधु, आतक रूप खजूर। रूपे के गीसाल तहं, भूप भवन तें दूर॥१॥ चांदीनाम—दोहा। शुभ्र रजत खरजूर पुनि, आतक रूप कपाट। विविध तिकेत बहु, मणि युग हाटक हाट॥ १ ॥

रजधानी. [द] राजपुरी, राज नगरी, राजस्थान, राजा की रहने को जगह।

रजनी. [स] निशा, रात्रि, रात, हरिद्रा, हलदी।

रजनीचर. [स] निशागामी, राक्षस, असुर।

रजनीमुख. [स] सायंकाल, प्रदोष, संध्या, सांझ।

रजनीश. [स] चन्द्रमा, शशी, चन्द्र।

रजस्वला. [स] ऋतुमतीनारी, कपड़ों से, पुष्पवती स्त्री।

रजखाल. [स] भैंसा।

रंगउतरजाना, मु॰ पीला होजाना, सोच में होना,

कुढ़ना, कलपना।

रंगकरना, मु॰ खुशीकरना, बिलसना, समय को आनंद में बिताना।

रंगचढ़ाना मु॰ शराब के नशे में मगन होना।

रंगदेखना, मु॰ किसी चीज़ की हालत को या परिणाम को जानना।

रंगबरंग, मु॰ रंग रंग का, कई रंग का, तरह तरह का, भांत भांत का।

रंग बिगड़ना, मु॰ किसी चीज़ की हालत बदलना।

रंगभंग, मु॰ आनन्द में बिगाड़ होना, खेल का बिगाड़, खुशी में सोच होजाना।

रंगमारना, मु॰ चौपड़ का खेल जीतना। [होना।

रंगरातन, मु॰ खूब गहरा प्यार

रंगराता, मु॰ रंग में रंगा हुआ, प्रसन्न, आनन्दित।

रजपूत (द) राजपूत शब्द का अपभ्रंश है, परंतु यह शब्द योगरूढ़ि है अर्थात् क्षत्री के सिवाय अन्य वर्ण के राजपुत्र का बोध कदापि नहीं करता, और न इस भारतवर्ष में प्रसिद्ध कोई वर्ण राज करता था अत-एव क्षत्रियों के टूटी फूटी दशा में भी यह शब्द राजकर्त्ता के वंश में बतलाता है और जैसे कोई पुरावीनतत्व वेत्तालोग। प्रशस्त ईंट पत्थर पाकर गढ़ कोट तथा राज का पता पाते हैं वैसे ही राजपुत्र शब्द के कहने से क्षत्री का बोध होता है क्षत्रियों की दशा पूर्व दशा से कोटि गुणहीन है तथापि वीरता का शेष इसी वंश में अ-वतक आता है और कुछ इति-हास इस बात की साक्षी देता है आजकल एक देश जहां पर राजपूत लोग विशेष कर अवध कन्नौज आदि प्रांत से जा कर बसे हैं उसे राजपुताना वा रजवाड़ा या राजस्थान कहते हैं उसी में उदयपुर, जयपुर,

जोधपुर आदि हैं। राजपूतों (क्षत्रियों) में कई एक भेद का यहां पर नाम लिखा जाता है—सूर्यवंशी १ चन्द्रवंश २ भृगुवंश ३ अग्निवंश, ४ नाग-वंशी ५ सोम वंशी ६ सिसोदिया ५ कछवार ६ राठोर ७ चौहान ८ हाडा ९ पवार (पंवार,पमार,पुवार)१०परिहार ११ चालुक्य १२ गहरवरिया, वैश्य १३ तिलोकचंदी वैश्य १४ कुंभी वैश्य १५ प्रतिष्ठानपुरी वैश्य, १६ बघेला१७ चंदेला१८ बिमवार १९ सकरवार २० नवतमी २१ गौतम २२ धनि-ठिया २३ टिटिहा (टेटिहा) २४ उज्जैन २५ मझरौर २६ चौबरिया २७ खाम २८ बड गइयां २९ सिरनेत ३० करम-वार ३१ सूरवार ३२ बिसेन ३३ सेंगर ३४ भट्टी ३५ निकुंभ ३६ नरवनी ३७ गौड़३८ बुंदेला ३९ गहरवार ४० कलहंस ४१ गोहतमिया (गोहस्तंभ) ४२ कोषभवनिया ४३गोन्हिया (गोनिया या गुनिया)४४ ढकहा ४५ भूतहा४६कीन४७तिलौथा ४८ गर्गवंशी ४९ रघुवंशी ५० राजकुमार ५१ महलियार ५२ कानपुरिया ५३ जनवार ५४ कौशिक ५५ बेदवार ५६ गाहि ५७ ठकुराई (वैश्यक्षत्री का एक भेद) ५८ करचौलिया ५९ बघेरिया ६० गोहलोत या गोहलोत या गोहलोट या गो-हलोट ६१ चमहा ६२ धाकर ६३ सिरमौर ६४ मंडिघोर ६५ बनाफर ६६ पचतूरिया [पच-तरिया)६७ काकन ६८ खीचो६९ कांडवार ७० जदुवंशी (यदु-वंशी) ७१ खिचर ७२ डोंगवार ७३ सुकलंकी७४ जादव (यादव) ७५ पलवार, (पलिवार, पली-वार) ७६ तोमर ७७ गंधवरिया ७८ भदवरिया ७९ भरसुरिया ८० नागवंशी ८१ बंधलगोती ८२ वैश्य [बैस] ८३ सतपख-रिया [सरपखरिया] ८४ सर-

निहां ८५ मरवर ८६ रावत ८७ चपूपायन ८८ गन्हिस ८९ छन ९० जाट ९१ रैकवार ९२ कोन वार ९३ सानवान ९४ दीक्षित ९५ चद्दवलिया ९६ पमया ९७ धनटैंया ९८ बरहिया ९९ मौनक १०० वानडग १०१ धनवत्स १०२ चोपट खं.भ. १०३ निनि वरवार १०४ हरद्वास १०५ बहर बलिया १०६ ननवग १०७ ऋषिवंशी १०८ भनवग १०९ रज वार ११० भट्टी गुज्जर १११ विजहरिया ११२ मौनस ११३ पटिक्री (पटीक्री) ११४ चगस्त वार ११५ सोरहनिया ११६ बरवर ११७ डीर ११८ नरव- लिय ११९ विलखरिया १२० छगुवंशी १२१ भृगुवंशी १२२ विडरिहा १२३ गर्ग वा गर्ग वंशी १२४ छोरी वा छोरे १२५ पटसरिया १२६ भयरिया वा बटवरिया १२७ वमनिया वा चन निया १२८ संजल १२९ धनिस १३० सथौर १३१ रौरा १३२ भाला सुलतान १३४ वि- झीनिया १३५ विझीरिया १३६ श्रीमत १३७ बहेरिया १३८ मरहिया १३९ चकवाडून १४० दुरगा वंशी १४१ न- नैवसुरवा १४२ ककवरा १४३ दंगस्त १४४ सिंधेल वा सिंगलो १४५ वच्छलगोती १४६ नागक १४७ टीहा।

रजाई· रजायस· (प· फा) आज्ञा, हुकुम, अहलाद, शौक, राजत्व, ऐश्वर्य, भोग।

रजायस· रजायसु· (प) आज्ञा, राजत्व, राजभाव, भोग, राज की आज्ञा, राजाज्ञा।

रञ्जन· (स) पतंग।

रञ्जनी· (स) नील।

रज्जु, रजु· (स) रसी, डोरी, जेवरी, सूत, रस्सो।

रञ्च· (प) अल्प, ईषत्, थोड़ा, जड़ा।

रञ्चक· (प· ह) अल्प, बारजनी।

रञ्चनी· (स) पपरिया।

रल्लक· (स) चित्रकार, प्रीति- कारक।

रञ्जन· (स) आनन्ददाता, पालन, रङ्ग, शोभा, रंगावट, चित्रकारी। [डराना।

रट· रटन· (स) बोलना, हो·

रण· (स) युद्ध, संग्राम, लड़ाई, शब्द, ध्वनि। [हर्षित।

रणरङ्गा· (स) रणविषैं अति

रणित· (स) शब्द, ध्वनि, युद्धित, लड़ित।

रणिवास· (प) रंगमंडल, रानी स्थान, रानीभवन, लोगाई का भवन।

रगड़. (स) दैड़छच।

रत· (स) मैथुन, आविष्ट, तत्पर, लीन, कामदेव।

रतन· (प) रत्न, हीरादि मणि।

• रतनार· (सं) लालवर्ण, ला लिमा, लालरंग।

रति· (स) मैथुन, क्रीड़ा, प्यार, प्रीति, कामदेव की स्त्री।

रती· (स) कामदेव की स्त्री, धन। छंद—योगी अक-पटक भये पति गति सु-नत रति मूर्छित भयी। रोदिति बदति बहु भांति करुणा करति शंकर पहं गयी॥ अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सम्मुख रही। प्रभु आशुतोष कृपालु शिव अ-बला निरखि बोले सही॥ अर्थात् रति काम की स्त्री पति की गति अर्थात् काम का मरण सुन के मूर्छित होगई और रोती और पति के प्रताप को बदति अर्थात् कहती शंकर के निकट गई आसुतोष अ-र्थात् प्रसन्न होनेवाले। दोहा। अब तें रति तव नाथ कर, होइहि नाम अनङ्ग। बिनु बपु ब्यापहि सबहि पुनि, सुनि निज मिलन प्रसङ्ग॥ अर्थात् अब से हे रति तेरे पति का नाम अनङ्ग अर्थात् अङ्गरहित होगा और सब में बिना बपु अर्थात् बिना

शरीर व्याप्त रहेगा। यह सुन उस को सन्देह हुआ कि इस से मेरा प्रयोजन क्या तब शंकर ने कहा कि अपने पति के मिलने का भोग सुन। चौ०। जब जदुबंश कृष्ण अवतारा। होइहि हरण महा महि भारा॥ कृष्ण तनय होइहि पति तोरा। बचन अन्यथा होइ न मोरा॥ अर्थात् कृष्णतनय प्रद्युम्न जी काम के अवतार हैं।

रतीचमकना· मु॰ बढ़ना, फलना फूलना, भाग्यवान होना।

रतिनाथ· (स) कामदेव, चौ०। सून कुलिस असि अंगव-निहारे। ते रतिनाथ सुमन सर मारे॥ अर्थात् त्रिशूल वज्र तरवार आदि के अंग बनिवारे सहने वाले को काम ने फूलबान से मार दिया।

रतीपति· (स) कामदेव, अनङ्ग।

रतीवन्त. (स) धनवन्त, भाग्यवान, प्रारब्धी।

रत्न· (स) मणि, मुक्तादिक, पुतली, मणिमुक्तादि श्रेष्ठ वस्तु, मोती आदि जवाहिर। दो०। श्री मणि रम्भा वारुणी, अमी शंख गजराज। कल्पद्रुम शशी विष धनुष, धन्वन्तरि धेनु बाज॥१॥ अर्थात मणि श्री, रंभा, वारुणी, अमी, शंख, गजराज, कल्पद्रुम, धनुष, धेनु, शशी, विष, बाजी, धन्वन्तरि॥१४॥

रत्नसानु. (प) सुमेरु पर्वत।

रत्नाकर· (स) महोदधि, सागर, समुद्र।

रथ· (स) चार पैयों की गाड़ी, अभिलाष, समूह, कुंभार का चाक, चक्र। चक्र शब्द— दो०। चक्र बरन रथ चक्र गन, चक्र विहंग विसेस। चक्रसुदर्शन कृष्ण को, चक्र

नृपति को देस ॥१॥ रथहू
या अश्वविवरण ४ सैन्य,
सुग्रीव मेघ, बलाहक ४

रथद्रु· (स) तिनिस ।

रथवान्· (स सारथी,गाड़ीवान् ।

रथाङ्ग· (स) पैया, चक्र, चकवा
पक्षी, चकई, चकवा ।

रथी· (स) रथयुत, रथवाला ।

रथ्या· (स) गली, कूचा ।

रद. रदन· (स) दन्त, दांत,द-
शन, विलेखन, विदारण ।

रदछद· रदपट· (स) अधर,
ओष्ठ, ठोर, होठ, ओठ ।

रन· रण· (स) युद्ध । [रक्त ।

रनवास· (प) अन्तःपुर, रङ्गम·

रनिवास. (प) रानी आदि का
आगामी स्थान ।

रन्तिदेव.(प्र) राजा विशेष पर
उपकारक को धर्मशूर मुनि
सन्निधारण काल करना
अन मध्य १८ दिन के उप-
वास उपरांत आध सेर
चून लब्ध भयो वा को
चारि भाग करि काढो छिद्दी
लगाए तापर संयोगात्
बीस २० दिन का क्षुधित्
चारि अभ्यागत सम्प्राप्त
भयो अति आतुर जानि
वा चारि छिद्दी वा चारी
अभ्यागत को दिए आप
गङ्गाजल पी के एहूं रह
गयो । [छद्र, दोष ।

रंद्र, रन्ध्र. रन्ध्र·(स) छेद्र, छेद

रनिवास· (प) अन्तःपुर, रङ्ग·
महल ।

रवि. रवि (स) दिनकर सूर्य्य,
सूरज,बारह संख्या वाचक ।

रवि उपराग· (स)सूर्य ग्रहण ।
चौ० । भये पर्व बिनु रवि
उपरागा । सूर्य ग्रहण
विना पर्व लग गया ।

रविपुत्र· } (स०रवि सूर्य्य पुत्र
रविसुत. } बेटा) पु० सुकंठ,
सुग्रीव,जम,कर्ण,शनिश्चर ।
रामचंद्रिका तेरहवें प्रकाश
में लिखा है । पद्धटिका
छंद । रवि पुत्र बालि सों
होता जुद्ध । रघुनाथ भये मन

मांह क्षुद्र ॥ सर एक रच्यो उर मिच काम । तब भूमि गिस्रो कहि राम राम ॥ रामायण महात्मय में गोपाल दास ने लिखा है। चौ०। कहन लगी रवि सुत सों रोई। तब चाकरी न हम सों होई।

रविजा, रवितनया. रविनंदिनी रविनन्दनी. (स) यमुना नदी, यमानुजा।

रविमणि· (स) सूर्यकांत मणि, सूर्य्य मणि पत्थल जाको आइग्नि भी कहत हैं या पत्थर सों सूर्य्य सन्मुख होत अग्नि उद्योत होत है।

रमन· रवन· (द) पति।

रमण· (स) क्रीड़ा, मैथुन, केलि करण, पति, व्यापक।

रमणक· (स) द्वीप विशेष, क्रौंच द्वीप, क्रीड़ाकार, बिहारक।

रमणी· रवनी. (स· प) उत्तमा स्त्री, बधूटी, मनोहरी, क्रीड़ाकरणवाली।

रमणीय· (स) सोनाधातु, सुन्दर, मनोहर, शोभायमान।

रमत· (स) खेलत, कौतुक, बिहारत।

रमा· (स) लक्ष्मी, विष्णु, पत्नी, रमानाम श्री जानकी जू के तापनी आदि में है।

रमापति· रमा-निवास· रमेस· } (स) विष्णु।

रमाविलास· (स) ब्रह्मांड जगत् सृष्टि। [सुन्दर।

रम्भ· (स) शोभित, प्रकाशित,

रम्भा· (स) कदली, केला, केरा, गोपी अप्सरा, वेश्या, स्वर्ग की वेश्या, केलावृक्ष। कदलीनाम—दो०। रंभा सो सो अगबरा, तंबलिया सुकुमार। ए कदली जिन के कछू, नजे अंब अनुहार ॥१॥ पुनः—दोहा। रंभा पुनि आगर बसा, कदली पुनि काष्टील। बहुरि अंसु मत फल शदृस, कनक खंभ मणि मौल ॥१॥ रंभाशब्द—दो०।

रंभा कहिये अपसरा, रंभा
कदली नाम रंभा गोकुल
की वधु, जिन मोहे घन
स्याम ॥ १ ॥ [योग्य ।
रम्य. (स) सुन्दर, मनोहर, रमण
रम्यक. (स) पलवल का झाड़ ।
रय. (स) वेग, जल्दी ।
रये रए. (द) रंगे, बोड़े ।
ररू. (द) अधिक, विस्तार ।
रव. (स) शब्द, नाद, ध्वनि,
बोल, झपट, दौर, वेग, वचन,
आवाज ॥ [दौरधूपके
रवकि. (प) बोलिके, झपटिके,
रवि. (स) रात्र, अकवन ।
रविप्रिय. (स) तामा धातु ।
रविप्रीता (स) हुरहुर । [षण ।
रशना. (स) किङ्किणी, कटि, भू-
रश्मि. (स) मयूख, किरण ।
रस. [स] विषय, धीरे, नीर, नव-
द्रत, अमृत, विष, स्वाद,
पारा, सार, बल, प्रेम, धीर,
मधुरादि, शृङ्गारादि ।
रसशब्द—दोहा । रसन-
वरस द्रुतरस अमृत,
रस विषया अरु नीर ।
रसवर को रस प्रेम रस,
जाके रस बल धीर ॥ १ ॥
रसक. [स] खपरिया ।
रसगर्भ. [स] रसवत ।
रसधातु. [स] पारा ।
रशना. रसना [स] जिह्वा, जीभ,
कांची, स्त्री का मोर, रा-
सना, औषधी विशेष, रसन,
किंकिणी । दो० । रसना
कांची किंकिनी, क्षुद्रमेखला
जाल क्षुद्रा वलि जनु मैन
घटह, बंधो बंदन माल ॥ १ ॥
रसना शब्द—दोहा । र-
सना कांची कहत कवि,
रसना बहुरो दाम । रसना
जीभ्या बासुकी, जो न भ-
जहि हरि नाम ॥ २ ॥
रसरस. [प] धीरे धीरे, सहजे सहजे ।
रससार. [स] अमृत, विष ।
रसा. [स] मेदिनी, धरती,
पृथ्वी, पाढ़, रासना, औषधी
विशेष । [भुवन ।
रसातल. (स) पाताल, अधो

रसाल (स) रसभरा, आम-फल वा फले फले दोनों। इक्षु, ईख, मीठा आम का पेड़, रसालय। चौ०—नाथ देखिअहि बिटप बिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला॥ अर्थात् जंबु जामुन, रसाल आम तमाल वृक्ष ब्रजभूमि में इसी नाम से प्रसिद्ध है। आम्र नाम—दो०। हे सहकार रसाल हे, आम्र चूत पिक प्रीय। अति सौरभ कह सुम सखी, राधाजीवन जीव॥१॥ पिक बंधुर कामांग पुनि, मदद्रुत खग सहकार। यह रसाल की माल बनि, नैनु रही फल भार॥२॥ रसाल अर्थात् आम का भेद—बंबई १ मालदह (यह देश भेद से है) बिज्जू (बिया से जो उत्पन्न हो) ३ सिन्दूरिया (सिनूरिया) ४ करीअवा ५ गोपी ६ रोहिणीया (जो रोहिणी नक्षत्र में पक जाय) ५ भदैअवा (जो भादों महीना तक रहे) ६ बरहमसिया (जो बारहो महीना हो) ७ एक आम सतर में फलता है। ८ लड्डुआ (जो लड्डू सा होता है) १० चोरिया (जिसका स्वाद खट्टा न हो, और जो कुछ चावल का स्वाद रखता हो) ११ लेटीअवा (जो अत्यन्त छोटा होता है) १२ लंगड़ा (अब एक जात भी इस का कहा जाता असल में हाजीपुर में लंगड़ा एक पेड़ है और प्रसिद्ध है उसी के स्वाद या ढंग पर जो होता है लंगड़ा के नाम से प्रसिद्ध है) १२ केरवा (जिस का आकार केला सा होता है।) १३

रसअम्ला (स) चुक।

रसायनी (स) मजीठ, गुरिच।

रसाला· (स) सिखरन ।

रसेन्द्र· (स) पारा ।

रसोन. (स) लहसुन ।

रस्या· (स) रासना ।

रसिक·(स) रसज्ञाता, रसिया, रसीला, रस का जानने वाला ।

रसिकादि· (स) मेघ शब्द ।

रहन· (प) चलन, भांति, रीति ।

रहस. (स) एकान्त, ठठोलपन, हर्ष ।

रहसेउ· [द] हर्षेउ, रकार हकार उलटे हैं । दो० । येहि अवसर मंगल परम, सुनि रहसेउ रनिवास । सोभत लखि बिधु बढ़त जनु, बारिधि बीचि बिलास ॥१॥ अर्थात् यहि अवसर को परम मंगल सुनि रनिवास हर्षेउ चंद्रमा को शोभत अर्थात् पूर्ण भए देखि जैसे समुद्र लहरि करि विशेष सोभा युक्त बढ़त है ।

रहसि· (द) एकांत हर्ष चौ० । सब विधि गुरु प्रसन्न जिय जानी । बोलेउ राउ रहसि मृदु बानी ॥ अर्थात् सब प्रकार ते अर्थात् नैन मुख बचनते गुरु को प्रसन्न जिय मैं जानि के महाराज हरषि के कोमल बानीते बोले पुनः चौ० रहसि रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेह जनाई । अर्थात् बन जावे को रुख पाय रानी हरषो औ कपट करि सनेह जनाय बोली रघुनाथ कहे रहे कि मोरी सपथ सांच कहु तापर आपन सचाई जनाइबे हेतु भरत सहित रघुनाथ को सपथ करि कहति है । रहसो प्रसन्न हुई ।

रहस्य· (स) चरित्र, एकान्त, निगूढ़, निर्जन, गुप्ततत्त्व, भेद परम दिव्य गुण ।

रहित· [स] वर्जित, हीन, शून्य बिना, त्यक्त, भिन्न पृथक ।

रक्षक, रच्छक· [स·द] पालक, स्वामी, रखवार, रक्षा करने वाला।

रक्षण· [स] पालन, पोषण, बचाव, रक्षा।

रक्षस, राक्षस· (स) निशाचर, भूत, प्राणीहिंसक, जाति विशेष, राक्षस नाम—छंद रूप चौपाई। राक्षस कौणप नैऋत कर्बुर। क्रव्याद भक्षप रात्रिंचर॥ पुण्यजन यातिकधात्मजआशर॥ या-तुधान पिशिताशन निश्चर। ऐसो अधम जन्म करुणा कर। पाहि पाहि शरणागत रघुबर॥ सुनत विभीषण बिने शिया बर। अंकलाय पुनि लंक तिलक कर॥२॥

रक्षा. [स] उद्धार, पालन, त्राण, परित्राण, हिफ़ाज़त।

रक्षित· [स] हिफ़ाज़त किया हुआ।

राई·[द] राजा नृप, राजिका।

राउ· [द] राणा, नृप, भूपति।

राउत. [द] सरदार, श्रेष्ठ, महतो, राजा।

राउर· [द] आप, आप का, हज़ूर, मर्यादवाचक, महल, राजमन्दिर, राउर कहि मंदिर, राजमहल।

राज· [द] राजा, नृप, भूपति।

राए (प) राजा, राणा, राजपूत।

राए रायान· (प) राजों में प्रधान।

राका·(स) पौर्णमासी, पूर्णिमा, पूर्णमासी, शरद पूनों।

राकेश· } (स) चंद्रमा, पूर्णचंद।
राकेस· }

राकापति, राकाशशी· (स) पौर्णमासी का चन्द्रमा।

राख·(प) विभूति, भस्म, भभूत।

राग· (स) वासना, स्नेह, गान, क्रोध, प्यार, प्रीति, अनुराग। बोल, पांच संख्या वाचक, राग रागिनी नाम—छंद दीपमाला। भैरव सिरी मेघ हिंडोल दीपक तथा माल कौसोषटं राग को

गान ॥ टोडी कलंगडा
विभासल असैया ललित
सिंधु आसावरी भैरवी जान।
मारू नट गूंजरी गुणकली
गौड सारंग पीलू कुमुद
योगि यातना। गौरी
किदारा भुपाली पर्ज देश
सोरठ धनाश्रीस खंमाच
कल्याण ॥ १ ॥ जे जैवती
कान्हरा भी बिहागो तथा
एमनं रागिनीतीअप्रधान।
बैसारि बंगाल माध्वी झं
झौटी घटं जंगला आस
सिंदूर मुलतानि। रागी
कालो सोहनी पूरवी काफी
बरवा सहाना हमीरं सहित
मान। सपरागिनी षोडषं
गायकनि कीन्ह चालीस
कलछंद ये दीप मालाम ॥२

रागछाना. सु॰ रंग रंग होना,
गाना बजाना होना, नान
मिलाना।

रागरंग· सु॰ गानाबजाना।

रागिणी· (स) राग भेद, ताल।

रागी·(स) गायक, पिया, क्रोधी।

राचा·(प) लगा, रचना, राचना
लगना।

राजकसेरू· (स] बड़ा कसेरू।

राजकुमार· (प) राजाका पुत्र।

राजकोशातकी.(स) झींगो।

राजजम्बू·[स].फलेंदा जामुन।

राजत· (स)प्रकाशित, शोभित,
सोहता. सोभना, राजना,
सोहना।

राजन्· (स) नृप, राजा।

राजति· (स) प्रकाशति शोभ·
मान् होत हैं, सोहती है।

राजत्व· (स) राजभाव, राजा
का काम, प्रभुता।

राजधर· (स) मन्त्री, सचीव।

राजन्या. (स) खिरनी।

राजधानी· (स) राजपुरी, राज
स्थान, राजधाम, राजा
का निवास स्थान।

राजध्वनिका· (स) राज
बेली पुष्प।

राजनीति·} (स) राजनियम।
राजनय· } कानून। राज

करने की चाल वा चारि प्रकार साम, दाम, दण्ड, विभेद ॥ ४ ॥ साम वाही है जो सब जीवन्ह का स्वभाव समता सब जीवन्ह पर रहना वैर प्रीति काह्र पर नहीं ॥१॥ दाम वाही है जो द्रव्य, हाथी, घोड़ा, पयद्र, रथ, चतुरङ्गी सेना। और आयुध.अनेकन्ह करि के और कोई राजों का धन धाम, इत्यादि जीति लेनो। किंतु कोई दोसरों राजा जबरदस्त अपने तें अपने राज्य में आवैं, वाको द्रव्य देके अपनों राज्य को रक्षा करना ॥२॥ किंतु द्रव्य देके परे राज्य को ले लियो है, तहां दाम जो राज्यनीति है, ताको गुण करि के कोई प्रकार जीति लेनो, ३॥ दण्ड, वाही है जो अनीति कारकों को शास्ति देनो॥३॥ विभेद, वाही है जो औरो कोई राजा का कामकाजी मन्त्री आदि वा भ्राता वा पुत्र इत्यादि कन्ह को फोरि कै अधिकाय लेनो ॥ ४ ॥

राजपत्नी·(स) राणी, महिषी।

राजपुत्रक·(स)मालदही आम।

राजपुरुष.(स)राजा का आदमी।

राजपुत्रिका· (स) चमेली।

राजपुष्पी· (स) रेणुका।

राजमाष· (स) दोनोघोड़ा।

राजराज.(स)कुबेर, सुरभण्डारे।

राजरीति· (स) पीतल।

राजवल्का·(स) गन्धप्रसारिनी।

राजवल्ली· (स) राजदली नाम

दो०। अंब श्रेष्ठ तन सादनी राजवल्लिका आदि। तुमहि देखी फूली शुचि रंचक एहि तन वादि॥१॥

राजवृक्ष·(स) अमलतास।

राजशासन (स)राजा का दण्ड।

राजशिक्षी. (स) नरशिक्षा।

राजा. (स) प्रजाशक, स्वामी, भूपति। राजा नाम— छंद खंजा ॥ राज राजा

प्रभू नाथ भर्ता विभु ईशता इन्द्र इन ईशान महीपतो ॥ अधिप ईश्वर नृपति भूप स्वामी मनुज नाथ नरदेव बाहुज पार्थिव नरपती ॥ सर्व आये जहां चंड कोदंड है खंड के हेत खंडखंड भे तनु सबै । नाथ गुरु माथ रघुनाथ हर्षित उठे चाप भव भंजि नृपन-दर्प भंजि तबै ॥१॥ दोहा । बीस नाम नृप छंद कल, खंजा बीस इकोस । भू नर नामनि पति धरे, प्रगटे नाम महीस ॥ १ ॥

राजादन· (स) चीरौंजी, खिरनी

राजाम्र· (स) मालदही आम ।

राजार्ह· (स) स्याह अगर ।

राजावर्त्त· (स) पिकरीमिट्टी ।

राजित (स) शोभित ।

राजिका · (स) दोनों राई ।

राजिमत्फला· (स) झींगो ।

राजिवनयन. (स) कमलनैन, श्रीरघुनाथजी ।

राजी. राजि (स) पाँति, पंक्ती श्रेणी, दोनों राई, पंगति । प्रसंग, शोभित ।

राजीव· (स) कमल, सुक्ता, मीन, शशी, अनिल, नाभी, राजीवशब्द दोहा । राजिव शशिराजिव अनिल, राजिव सुक्ता मीन ॥ राजिव नाभि गोविंद को, होई रहिये मन लीन ॥ १ ॥ सपेद बुन्दा का हरिना ।

राजे· (प·) प्रसन्न, हर्षे, आनन्दे प्रसन्न ।

राजेश्वर· (स) महीप्रति· महाराज

राज्या· (स) लज्जित, मोहित ।

रातना· (प) रचना, लगना, ।

राता·
रत· } (स) लाल, रङ्ग, प्रीतियुत, प्रीतिमान ।

रात थोड़ी और साँग बहुत यह कहावत उस जगह बोली जाती है जहां काम तो बहुत हो और समय थोड़ा हो, या थोड़ी आमदनी

हो और बहुत खर्च हो ।

रातोंरात, क्रि॰ रात ही में ।

रात्रि } (स) निशा, यामिनी,
रात्री. }

रात, रात्रिनाम—छंद संगख्या ॥ तमोत्रिया मा-रजनी निशीथनी ॥ तम-स्वनीरात्रित्रियाइ यामिनी। क्षपाइ श्यामा सुख दाइ शर्वरी ॥ सनत्त दोषाच-यदाविभावरी ॥१॥ दोहा। षोडशनामनि कर धरे, नाम पीत है चंद ॥ भगन तगन जगनं रगन, संग-स्थान यह छंद ॥१॥ चर धारे ते जानिये, और निशाचर नाम। शनु शब्द ते गगन मधि, कहत वेद बुधि ग्राम ॥ २ ॥

रात्रिचर·रात्रिचर· (स) राक्षस, प्रेत, भूत, चोर ।

राद· (स) पीव, मांज पूंय ।

राध· (स) निकट, समीप, बड़ी भाति ।

राधपुत्र· (स) बड़ीपुत्र, कुमार बच्चा, ।

राधा· (स) समीप, नीच, आगे, वृषभानुसुता, कृष्णप्रिया, बड़हिषी, । [कुमार ।

राधेय. (स) पवन, कृष्ण, कर्ण

राम. (स) सर्व्वरमणक· दशरथ नन्दन· परशुराम, वलि-राम, त्रिसंख्यावाचक । प्रेमी यमन (मुसल्लमान दिल्लीवाल) संवत् १७९८ मैं हुए हैं अनेकार्थी नाम-माला बहुत सुंदरग्रंथ रचा है। राम शब्दार्थ। कवित्त। ईस नभ अस्मन मेरु धनु परशुन संगी देवसिंह अश्वसिंह गुच्छ आनिये । दुन्दुभी भंवर शठ अगिनि सूर.सस पक्ष जम कौतुक कलागीत चित्र ठानिये ॥ जीव वासुदेव रिस गरुड़ गणिप्रकाश त्रिवली भौ मोतीमाल जलयंतुजानि-ये। गज गति हंसगति

नरगति सिया नदी चित
शीत गुरु छंट रश्मिमान
मानिये ॥ १ ॥ पुनः छंद
मदनहरा--शङ्करधनु खंडन
रघुकुलमंडन दंड अखंडन
वेद परे सर चाप धरे।
काकुत्स्थ मनोहर राम-
दिवाकर ध्वांत निशाचर
नाश करे सुर शोक हरे॥
मनसिज मदमोचन सर-
सिजलोचन त्रिभुवन रोचन
देवपती त्रैलोक्यगती। दश-
वदननिकंदनप्रभु रघुनन्दन
करत निकंदन खरगपती
विधि सरस्वती ॥१॥ राघव
रघुवंशी कुल अवतंसी विभु
खरध्वंसी दुष्टदहै त्रसनिगम
कहै मानस वच कायक जो
नित गायक सीतानायक
पाद गहै रति अचल लहै॥
रघुनाथ दशा कर भरता-
ग्रज हरि दासरथी वर
श्रीयधरा दुख हरन धरा॥
यह नाम पचीशं कल
कालीशं छंदाधीशं मदन
हरास विलास करा ॥२॥

रामजन. (स) भक्त, सन्त, साधु।
रामजनी. (स) भक्तिनी, सज्जनी, वेश्या, गौवी, कञ्चनी।
रामरस. (स) लवण, नक, नून।
रामशर. (स) राम बाण, नरकट, तृण विशेष।
रामायण. (स) राम की कथा, रामचरित्र।
रामाकार (स) राम का स्वरूप।
रामायुध. (स) धनुषवाण।
राय. (स) राजकुमार, राजा, उपाधि विशेष, धन।
रारि. रार (प) झगरा, बिगार।
राव. रावर, (प) राजा, नृप, महत्त। [वस्तु।
रावड़ी. (द) घोरजारी, भोजन।
राढ. (स) मयनफल।
रावण. (स) आपुरीवे औरको रोवावै निशिचर विशेष, लङ्केश।
रावणारि. (स) रावण का अरि, श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ।

रामठ (स) हींग।

रामदूतिका (स) नागपुष्पी।

रामफली (स) कमरख।

रामसेनक (स) चिरैता।

राम (स) घूना।

रामराम, सु० सलाम,प्रणाम, नमस्कार, (गंवार लोग सलाम की जगह राम राम कहते हैं)।

रामलघु भाई (ह) भरत, चौ०। केकयिसुअन योग जग जोई। चतुर बिरंचि दीन मोहि सोई॥ दशरथ तनय रामलघुभाई। दीन्ह मोहि विधि बादि बड़ाई॥ अर्थात् भरत जी कहते हैं कि यह तो बिरंचि की चतुराई यथार्थ है कि जग में जो केकेई के पुत्र होने का योग मुझे दिया परन्तु दशरथ का पुत्र और राम का छोटा भाई कर के मुझे विधि ने व्यर्थ बड़ाई दी और अपनी की अविधि करवाला।

रामवल्लभा (स) सीता, श्लोक। उद्भव स्थिति संहारकारिणीं क्लेशहारिणीं सर्वश्रेय स्करीं सीतां नतोऽहं राम वल्लभां॥ अर्थात् उत्पत्ति और पालन और प्रलय की करनेवाली और क्लेश को हरनेवाली और संपूर्ण कल्याण की देनेवाली श्री रामवल्लभा सीता को मैं प्रणाम करता हूं।

रामगिरि [स] चित्रकूट, कामदनाथ, चौ०। अटतुराम गिरि बन तापस थल। असनु अमिय सम कंदमूल फल॥ अर्थात् श्रीराम के गिरि औ बन औ तपस्विन के थल का अटन करि फिरना।

रामेश्वर (स) रामचंद्र का स्थापित शिव लिंग। चौ०। जो रामेश्वर दरसन करि हैं। सो तन तजि मम

धाम सिधारिहैं॥ अर्थात् रामेश्वर शब्द का अन्योन्य अर्थ होता है रामस्य ईश्वर वा रामः ईश्वरो यस्य यही सखा भाव है।

रामशैल·
रामसयन· } [द] कामदनाथ, दोहा। राम सैल सोभा निरखि, भरत हृदय अतिप्रेम। तापस तपफलपाइ जिमि, सुखी सिराने नेम॥१॥ राम शैल अर्थात् कामद नाथ की शोभा देख।

रामकहानी, मु॰ बड़ी लम्बी बात, लम्बी कथा, रामायण।

रायमुनि [स] लालनाम पक्षी। छंद—जय कृपाकन्द मुकुन्द द्वन्द हरण शरण सुख प्रद प्रभो। खल दल बिदारण परम कारण कारुणीक सदा बिभो। सुर सुमन बर्षहिं हर्ष संकुल बाज दुन्दुभि गहगही॥ संग्राम आंगन राम अंग अनङ्ग बहु शोभा लही। सिरजटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं॥ जनु नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगण भ्राजहीं। भुज दण्ड शर कोदण्ड फेरत रुधिर कण तन अति बने। जनु रायमुनिय तमाल पर बैठी बिपुल सुख आपने। अर्थात्—नील गिरि स्थान में रघुनाथ का शरीर है और घनघटा स्थान में रघुनाथ और बिजली स्थान में बालों की चमकनि है और तारागण स्थान में फूलों की पंक्ति है श्री रघुनाथ जी का शरीर जो तमाल वृक्ष के समान श्याम है और उसपर नख से सिखतक रुधिर के छींटे जम रहे हैं उन की उपमा गोसाईं जी लिखते हैं कि मानों तमाल वृक्ष पर राय मुनियां अर्थात् लालपक्षी

अनेक सुखपूर्वक बैठ रहे हैं।

राशि·(स) ढेरी,मेषादि बारह, धान्यादि समूह ढेर, मेष वृषभादि द्वादश राशि।

राष्ट्र· (स) बसाहुआदेश ।

राष्ट्रिका· (स) बनभांटा।

रास·(स) क्रीड़ा, व्याज, बाग।

रास्ना. (स) रासना।

रासभ· (स) खर, गदहा पशु, गर्धभ, गधा। रास पंचाध्यायी—दोहा।। पूर्ण चन्द्र निशि शर्द लखि, भाय विपिन घनश्याम ॥ धारि सुधाधर बांसुरी, टेर दई ब्रजवाम ॥ १ ॥

रासी·(प) मध्यम,ऐसा वैसा।

राहु·(स)पाठवांग्रह,ग्रहविशेष।

राक्षस·(स) असुर, कौणप, जातिविशेष, प्राणिहिंसक ।

रांड का सांड· मु० बिधवा लुगाई का बिगड़ा हुआ लड़का।

रिक्त· (स) शून्य, खाली, रीता, बन, दरिद्र, तुच्छ,रहित।

रिपु. (स) दुष्ट, शत्रु, बैरी,प्रतिदुश्मन्.।

रिपुहन, रिपुसूदन· (स) शत्रुघ्न, सतुहन।

रितुराज·ऋतुराज·(द·स)बसंत।

रिपुपाक· (स) इन्द्र, पुरन्दर, दुष्ट, असुर।

रिपुसन· (स) शत्रु से।

रिषि,ऋषि·(द स)सूक्ष्म दर्शी।

रिषिनायक· } (द·स०) धर्म
ऋषिनायक· } ऋषि , वशिष्ट-
रिषिनाएक· } मुनि ।

रिष्ट· (स)हर्षित,आनन्दित,खुश।

रिस· (स) क्रोध, कोप।

रिसानो·(द) क्रोध, क्रुद्धभई। रिसाना।

रीते· (द) खाली, छूंछ ।

रीछ· (द) भालू , भालुक, ।

रिसेश· (द) आसक्त।

रितिहेतु (स) रास्ता ।

रीति· (स) चाल चलन,प्रकार, क्रम,सीमा, स्वभाव,तरह।

रुक· रुक् (प· स) रोक, रुकावट, सूर्य का प्रकाश।

रुक्म· (स) रूपाधातु, चांदी, सवर्ण, सोना ।

रुख़· (फ़) तरफ़, मरज़ी, सम्मुख, नज़र, दया, क्रोध, दया दृष्टि।

रुचक· (स) सोचरनोन २ बिजौरालेमू ।

रुचि· (स) प्रकाशसूर्य्यादि, रुचा-व, चाह, अनुराग, स्पृहा, शोभा, भूख। [चाहमान्।

रुचिमान्· (स) प्रकाशमान्,

रुचिर· (स) रुचिकरा, सुन्दर, मनोहर, मधुर।

रुज· (स) रोग, घाव, गूढ़ा, व्याधि, पीड़ा, बीमारी ।

रुट· (स) तामस, क्रोध, कोप।

रुठी (स) क्रोधित ।

रुणमेय·(स) मदिरा, मद, दारू।

रुंधन (द) कांटा का खांचा ।

रुण्ड· (स) मध्यधर, धड़, कबन्ध, देहबिनाशिर, पशु, बिना सिर की लोथ, धर।

रुदन·(प·स) रोदन, रुलाई, ।

रुद· रुद्धवाही· (स) छेंका, रुका अटका, बन्धा ।

रुद्र· (स) शिव, एकादशसंख्या वाचक ११

रुखासूखा, सु॰ सादा, बेस्वाद खाना, कड़ा, कठोर बात।

रुद्राणी·(स) गिरिजा, पार्व्वती।

रुदित (द) रोना ।

रुधिर· (स) लेहू, लोहू, लहू, लोहू, खून, ।

रुप्य· (स) चांदी ।

रुरूक· (स) कुपितरेगड़ ।

रुष्ट· (स) क्रुध, क्रोधित, रोषित ।

रुष्कार· (स) सीला । [बकरू ।

रुह· (स) उत्पन्न, जन्म, शिशु,

रुहा· (स) दराङ्कन ।

रुच· रूक्ष· (स) रूखा, कठिन, खरखरा, निस्नेह, प्रेम रहित।

रूख (स) वृक्ष, तरु पादप ।

रूखा. (प) निरस ।

रूखौ. (द) गिलहरी ।

रूज· (स) कीटविशेष, ।

रूप· (स) शकल, आकाश ।

रूपनारायणविवरण· (स) सत्य युग श्वच्छवर्ण· त्रेतारक्तव, र्ण, द्वापर श्याम वर्ण, कलि

रूप हीन केवल नाम हरि भाव प्रसिद्ध ।

रूपविन्दु·(स) टिकुलीरूपे की ।

रूरःरूरो· (प) अधिक, सुन्दर, सुन्दरताई, श्रेष्ठता ।

रूरु· (स) मृगा, हरिण ।

रेख· रेखा· (स) लकीर, चिन्ह, गिनिती, अमिट ।

रेवड़ी के फेर में पड़ना, मु॰ कठिनता में फसना, पेंच में आना ।

रेखखांचना वा रेखा खांचना वा रेखाखींचना मु॰ निश्चयकरना, ठीक करना ।

चौ॰ पूछा गुनिन्ह रेख तिन खांची । भरत भुआल होंय यह सांची । अर्थात् गुनी ज्योतिषियों ने ठीक कर कि कहा है । वा गुनी कहें ज्योतिषी रमल वाले आदि से पूछा तिन्होंने रेखा खांचि अर्थात् निश्चय करि कहा कि भरत राजा होंहिंगे यह सांची है भाव श्रीराम को राजा होना झूठ है ।

रेङ्गाई· (प) चलाई, रेंगना, चलाना ।

रेचनी·(स) निसोथ, बट पत्नी ।

रेणु, रेनु·(स) धूली, रज, खाक बालू, अब सूर्य्य की ३० किरण, झरोखे में पड़े ताको भी रेणु संज्ञा है ।

रेणुका· (स) परशुराम की माता, धूलि खाक ।

रेणुक· (स) कंकुष्ट । [चूर ।

रेत, रेता·(द) बालू, रज, धूल,

रेतः. (स) शुक्र, वीर्य्य, बीज, धातु ।

रेतज· (स) बालू ।

रेवती· (स) बलभद्र पत्नी, नक्षत्र विशेष । [राम ।

रेवतीरमण· (स) बलभद्र, बलि

रेवा· (स) गुञ्जार, शोभा, नदी विशेष नर्मदा नदी ।

रेष्ट्र· [स] ईर्षा, द्वेष, दोष ।

रेस्सी.(स) जेवरी, डोरी, रसी ।

रैनुका· (द) रेनुका ।

रैन·(स) निशा, रजनी, रात्रि ।

रोग (स) व्याधि, बीमारी।

रोगावृष्य. (स) कूठ।

रोचक (स) रुचि कारक, पाचक मणिमालंकार, भविष्टतर।

रोचन, रोचना. (स) हलदी, गोरोचन, रोड़ी, दर्पण, केशर। [सिंदूर का भेद।

रोचन. (स) कमलागुरूडी।

रोचनी. [स] चुकपत्तांकी।

रोचि. [स] सूर्य दीप्ति।

रोचिका. [स] रोटी। [हरिन।

रोझ. [स] काला पांडू का

रोदति, रोदिती. [स] रोवति, रोवत है, रोता है।

रोदन. [स] रोना, कल्पना।

रोदनी. [स] दीर्घों जवासा।

रोदसी. [स] मेदिनी, भूमि, पृथ्वी।

रोध. [स] तट, घाट, तीर, किनारा, कूल, रोक, छेक।

रोधन. (स) रोकाव, अटकाव।

रोपा. [द] प्रगटकरना, बिया डालना, नींव डालना।

रोपिता. [स] रोपहुआ द्रुम।

रोम. [स] केश, बाल, रोंवा।
रोम नाम—दोहा—रोम
कोमतनु रूह में, बसत एक
इक अंड। सो सुरहित,
नन्दसुत भयो, जाको
तेज अखंड॥ १॥

रोमका. [स] डिम्डिस।

रोम कूप. [स] रोम छिद्र, रोम का सुराख़।

रोमपाट. [स] कम्बलादिपश्मीनी वस्त्र, ऊनवस्त्र, दुशाला आदि, ऊनी कपड़ा।

रोमाञ्च. [स] रोम खड़ा, भिहरण।

रोमावली. [स] रोमों का समूह।

रोलम्ब. [स] भ्रमर, षटपद, अलि। [गुस्सह।

रोष. (स) क्रोध, अमर्ष, कोप,

रोहिणी, रोहिनि. [स, द] नक्षत्र विशेष, चन्द्रमा की स्त्री, बलभद्र की माता।

रोहित. [स] लाल रङ्ग, इन्द्र के धनुष की सीधाई, रोह, मत्स्य विशेष, नाम राजा।

रोहिताश्व. [स] अनल, अग्नि।

रोहु· [द] रोकना।

रोर· [द] हल्ला करना।

रोसाई. [द] सिहराई, यशो, सरदरी।

रंक· [स] दरिद्र, निरधन।

रंध्र· [स] छेद, दोष, छिद्र।

रंजन· } [द] हर्ष देनेवाली।
रंजनी· }

रंतिदेव. [स] एक राजा का नाम।

रौप्य. [स] रजत, चांदी।

रौरव. [स] नरकविशेष, भयानक।

रौहिणेय· (स) बलभद्र, रोहणी पुत्र, बुधग्रह, चन्द्रमा पुत्र।

रोहिणी· [स] हर्रें, कुटकी।

रोहित· [स] मछली।

रोहितक· [स] रोहितक।

रोहिष· [स] घगिया खर।

रोही· [स] रोहितक।

ल

लकुच· [स] बड़हल।

लकुट· [स] लाठी, छड़ी, लकड़ी।

लकुटहस्तगिरना [स] लाठी सहित, गिरे तो अभ्यास रहित भाव।

लगुड़. [स] लालकनइल।

लक्षण. [स] लक्षण, बाणी, शब्द।

लगि·[प] लगके, वास्ते, तक, निमित, अवलंब।

लग्न· [स] राशि का उदय, आसक्त।

लघिमा· [स] सिद्धि विशेष।

लघु· [स] छोटा, शीघ्र, ह्रस्व अक्षर, हलका, हलुका, थोड़ा, सुन्दर, असार, भाररहित, क्षुद्र, अल्प, संक्षिप्त, लामज्जः।

लघुकुलतीय· [द.] छोटे कुल की स्त्री।

लघुमूलक· [स] छोटी मूरई।

लघुलागि·(द)छोटी जानपड़ी।

लघुतरणी (स) छोटीनाव।

लघुता· (स) लघुताई, छोटाई, हलुकाई। [लछिमन।

लघुतापस·(स) छोटा तपस्वी,

लघुधावन (स) छोटा दूत।
लघुतिक्त· (स) कंडुष्ट। [लड़ी।
लघुदन्ती· [स] छोटी बाला
लङ्क· लङ्का· (स ट) कटि देश, बहुत, ढेर, बार।
लङ्कापति· (स) लङ्का का राजा।
लङ्किनी· (स) लङ्का की चौगाई, निशिचरी।
लङ्केश· (स) लङ्का का राजा।
लङ्कोयी· (स) सूका।
लङ्गर· (फ·ह) भिकरा पची नौकादि थामने का यन्त्र।
लज्जा· (स) संकोच, लाज, चपा, शर्म, लज्जा नाम —दोहा॰। लज्जा मोहा चपा, सकुचन कहु बिनु लाज। पिय प्यारे पै चकित बलि, भौंह खात कि लाज॥१॥
लज्जालु·(स)पानी की लजोनी।
लज्जित· (स) संकोचयुत, लजिता, लज्जायुत, शर्मिन्दह।
लट· (प) जटा, कोशाङ्गुलि विशेष।
लटत [प] सुरत, सुरता है। लटना।
लता· (स) पुष्पादिवती. बेल, दाख का वृच बांवर, गौरि, प्रियंगू, मालकोनी, गुडुच्यादि। [दाना।
लताकस्तूरिका· (स) मुश्क
लतामणि·(स)विद्रुम, प्रवाली।
लतामृग· [स] सूका।
लतास्फोता· [स] समलर।
लतश्री· [स] मालकोनी।
लब्ध·[स]लाभ,प्राप्त,उपार्जित।
लभ्य· [स] पाने के योग्य, मिलनहार।
लम्पट·[स] झूठा, लुचा, तत्पर, कुट खेला,कामी, विषयी।
लपन· [स] लामज्ज।
लम्बकर्णी· [स]खरहा बारपद।
लम्बोदर·[स]गणेश,विनायक।
लय· [स] तदात्मक ब्रह्माकार वृत्ति एकरस,आलस निद्रा, नाश, टेर, ताल, स्वर।
ललन· [स] कुतूहल, कौतुक

खिल.प्यार.प्यारा,दुलारा।

ललकि· [दृ] उमगि।

ललना· [स] स्त्री, नारी, मेहरी, प्यारी।

ललाट· [स]। लिलाट, माथा प्रारब्ध, मस्तक।

ललाम. (स) भूषण, गहना, श्रेष्ठ, रतन।

ललित·(स) शोभाकार, सुन्दर चेष्टाविशेष, नीति।

लव·(स) अल्प, अंश, क्षणकाल निमिष का सांठवां भाग, लेश, बिनाश काल, परि माण, भेद, रामचन्द्रका पुत्र।

लवलाई (स) कीलगाना।

लवङ्ग· (स)लता विशेष, लौंग, औषध।

लवण·(स)लोन, नोन, निमक, सुन्दर, नमक।

लवणसिंधु· लवनसिंधु (स·द्द) नोनासमुद्र, खारासमुद्र।

लवणाब्ध· (स) खारा पानी, समुद्र नोना। [पद्य।

लवनिमेष· (स) अल्पक्षण, अल्प

लवलेश· [स] अल्प तें अल्प, अल्पकृति, अति लघुतर।

लवली· [स] हर्फा रेवड़ी।

लवा. [स]बटेर,पक्षी विशेषो।

लवाई· [स] नवीनी बियाई गौ, लिवाकरके, पेन्हाई, लिवाए को। [दृष्टान्तो।

लवाक· लवाणक. [स] हसुआ

लबार[प]झूठा, मिथ्यावादी।

लबार के लक्षण। दोहा।

बातहि हाथी गांव हय।

धन धन बातहि माहि।

बातनहि मिलवत सबै

और नेक कछु नाहिं।

कवित्त। बातन हो हाथी गांव ऊंट बकसीस करै बातन हीं बातन खजानै बतलावैं हैं। बातनही देश गेह·जानियो तुम्हारो सबै बातन पहार सो पहारहि मिलावैं है। बातनहीं सूर संग लोन्हें करछिलिछि रहै बातन जी बात तिन्हें धार में बहावैं हैं। आपकु ग

देखैं तौ बतावैं काहू औरन कों कागद के घोरा कर कटक में चलावैं हैं ।

लग्म्यग्रटम्· [प] उलटा-पुलटा ।

लशुन· [स] लहसुन ।

लषण· लषन [प] लक्ष्मण, लखन, देखना, लखन कहि चिन्ह । [देखना ।

लषहीं [द] देखते हैं लखना,

लषाऊ· [द] चिन्ह, जानना ।

लसत· (स) शोभित, गुंजित, सोहत, लसना, सोहना ।

लसन· (द) लहसुन, दोहा —
बिगड़ो होय कुसंग जिहि,
कौन सकै समुझाय । लस
न बसाये बसन को, कैसे
फूल बसाय ।१॥ [रना ।

लसना· (प) शोभना, गुञ्जा·

लहकौरि· लहकौवर· (द) लघु-ग्रास, लघुवचन, चौनि कोहबर मों होत है दुलहा दुलहिनि का औरपाक का खिलावने का विधि अर्थात् दुलह दुलहिनी को अरु दुलहिनी दुलह को सुख सों अपने अपने हाथ सों परस्पर देत हैं जूठा वस्तु ।

लहना· (प) पावना, पाना, लागना, फलना ।

लहठी [द] स्त्रियों का एक लाह का भूषण ।

लहेरी [द] एक जात जो लहठी बनाता है ।

लक्ष· लच्छ· (स·द) सौ हजार, लाख, निशाना जापर तीरादि । चलावत हैं, वेझा चिन्ह, व्याज, दशायुत संख्या १०००००, निशान, लक्ष ।

लक्षण· (स) चिन्ह, चाल, रेखा, लक्ष्य, पहचान, परख, आख्या ।

लक्षणकाव्यार्थ· (स) धुनि, अवरेब, गुण, जाति । ४ । धुनि या है जो दुइ, ३, ४ अक्षर को पद होई, ताहि

शब्द में कोउ अर्थ होई ।
चौ० । बन्दौं नाम राम
रघुबर के । यमक वा है
जो अक्षर उलटि कै अर्थ
सिद्धि होई, । चौ० ।
रामकथा कलि बिटप कु-
ठारी ॥२॥ गुण वा है जो
२, ३, अक्षर के पद होहि,
अरु जो अक्षर पूर्व ही परै
सो पद पद में जमक अनु-
प्रास परत नाहिं अरु एक
अर्थ होई । चौ० । भवभव
बिभव पराभव कारिणी ॥३
जाति वा है जो ८,१०,१२
मनु जाहि राचे मिलहिं सो
बरु सहज सुन्दर सांवरो ॥४॥

लम्बहा· [द] ख़रगोश ।

लक्षण. लछमन. (स) सपेदफूल
की रेंगनी, चिह्न, प्रधान,
दशरथ का पुत्र ।

लक्षणा· (स) लछुमना काड़ो ।

लक्षि, लक्षी·(स)ऐश्वर्य्य,लक्ष्मी ।

लक्षिकरी· (स). लक्ष्मी, सिद्धि,
लक्ष्मी को उत्पत्तिकारि,
महालक्ष्मी,सांकेतवा सगी ।

लघिमा· (स) नाम सिद्धि ।

लक्ष्मी·(स) श्री,सम्पति,ऐश्वर्य्य,
रीसी, तद्भाव में बराही
कन्द, समीवृक्ष,विष्णुपत्नी,
शोभा ।

लक्ष्य. (स) निशाना, वेभा,
ताकयोग्य, चिन्ह, व्याज,
दशायुत संख्या१००००००

लगानखाना, मु० बराबर न
होना, उपमा या बरा-
बरी के योग्य न होना ।

लगोंटबन्द, मु० वह आदमी
जो व्याह न करे ।

लगोंटिया यार, मु० बालकपन
का पुराना मित्र ।

लट्टूहोना· मु० किसी के प्यार
में फंसना ।

लड़काबाला, लड़का लड़की,
मु० बाल बच्चा,बेटा बेटी ।

लड़ाईकरना, मु० झगड़ना,
लड़ना, बखेड़ाकरना, यु-
द्धकरना ।

लम्बाकरना, मु० फैलाना,
बढ़ाना, पीटना, मारना ।

लम्बी सांस भरना, मु॰ रोना, विलाप करना। [हुआ।

लहूलुहान, मु॰ लोहू से भरा

लाक्षिक· (द) छमिंग।

ला· (स) पृथ्वी, धरती, ग्रहण।

लाई· (स· प) लगाई, प्रजारे अग्नि, वास्ते, लावै का लड्डू, लिये।

लागू· लाग·(स अंग का कपड़ा, आधार। चौ॰। सोहत दिए निषादहि लागू। जनु धनु धरे विनय अनुरागू। अर्थात् निषाद के कांधे पर हाथ धरे। निषाद कौं लाग दिए अर्थात् कांधेपर हाथ दिए सोहत है सो निषाद के कांधे पर हाथ दिए नहीं सोहत है मानो धनु धरे विनै औ अनुराग सोहत है इहां विनै रूप निषाद है अनुराग रूप श्री भरत जी हैं और जी गलबाहीं है सो धनुष है यह पाठ राजापुर के पुस्तक के अनुकूल है अन्यत्र जनुतनु धरे विनै अनुरागू। पाठ है तिस का अर्थ स्पष्ट है। चौ॰। रामसखा कर दीन्हे लागू। चलत देह धरि जनु अनुरागू। अर्थात् निषाद के हाथ का आसरा लिए। जो राम विरह करि औ दरस से परम विरही लखन सा बूझि आसरा लिए मनहु लखन सन भेंट भई।

लाघव. (स) लघुभाव, सहज, आरोग्य, शीघ्र, हलका।

लाङ्गल· (स) लागन, हलकी लकड़ी मूठी गहने की।

लाङ्गलकोटी· (स) लोहरचित फार हल जोतने का।

लागि· (द) लिये।

लाङ्गली· (स) नारियर, जल पीपर, कसाव, कारिहारी।

लाची· (द) लाइची, इलाइची, इलइची नाम—दो॰। इन्द्रायन्यक कानीक लट,

त्रिकुट बालुका बेलि ।
इत इलायची पग गहत,
वलि रंचक सुख मेलि ॥

लाज· (प) संकोच, लज्जा ।

लाजा· (स) धान की लावा, खोइ, तृण विशेष, मंगल द्रव्यबड़ी, लोक में लजौनी ख्यात, जो हस्त के स्पर्श-तें सम्पुट होत है, लज्जा ।

लाञ्छन. (प) चिन्ह, लक्ष्म ।

लाट· (प) लटपटी ।

लाटी· (द) तालू चादि सूखें, मुहसु-खाना, तालु चादि सूखे ।

लाड़· (प) दुलार, प्यार, चलोल ।

लाड़ला· [प] दुलारा, प्यारा, पीय ।

लात· (स) पशु, चरण, पैर, पांव की मार, पदाघात, ।

लाद· (प) बोझा, भार, चन्त-ड़ी, सानी खिलाने का पात्र पशुवों का ।

लाधे· (प) पाए, चारम्भ ।

लान· (स) गजबन्ध, बेरी ।

लापन· (स) मुख, वदनशयन ।

लाभ· (स) प्राप्ति, उपार्ज्जन, फल, व्याज ।

लाभ्य. लाव्य. (स) लाभयोग्य, प्राप्तियोग्य ।

लाल· (स) मणिविशेष, लड़-कानो, रंगविशेष ।

लामज्जक. (स) लामज्ज ।

लालन· (द) ललना, चापलुसी प्यारवाणी, प्यारो, दुलारो ।

लालमा· (स) पूर्व्व सूर्यउदय काल की लाली ।

लालसा· (स) इच्छा, वांछा, चाहना, महाभिलाष, स्पृहा, ख्वाहिश ।

लाली· (प) दुलारी, प्यारी, लालमा दुलारना । [पक्षी

लावक. लावा, (स·प) बटेर·

लावण्य· (स) शोभा, सुन्दरता, निमकीनी, सौंदर्य विशेष, लावणता ।

लाघे. (स) फाने ।

लाहा· लाहु· (द) लाभ, प्राप्ति ।

लाषा· (स) लाही १ पेवती २ गुलाब ।

लाचाप्रसादन (स) पेठानी लोध। [प्यार करना।
लाड़लड़ाना, मु० दुलारना,
लिकुच (स) बड़हल, लकुच, चुक्र। [कूंची।
लिखनी. (स) लेखनी, कलम
लिङ्ग (स) इन्द्री, शरीर, रूप चिन्ह, पुंस्त्व, दृष्टि, अनुमान।
लिङ्गिका लिङ्गवर्द्धन (स) कौंत।
लिङ्गवर्द्धनी (स) चिरचिरी।
लिङ्गिनी (स) पंचगुरिया।
लिपि. लिपी (स) लिखना, लेखन।
लिपिकर (स)
लिपिकार } लेखक, लिखनेवाला, चित्रकार।
लिप्सा (स) इच्छा।
लिप्त. (स) लिपा, पोता, मिला, विलिप्त, लेपित, लीपाहुआ, भक्षित, विषदिग्ध, मिलित।
लिम्पा [स] जंभीरीलेमू।
लिम. (स) कलङ्क, ठांसा, चिन्ह।
लिलार (प) लिलाट, माथा, भाल, मुख। [लिखरखना,
लिखलेना, मु० नकल करना।
लीक लीका (स) लकीर, पगडण्डी, कलङ्क, गिनती, मर्य्याद, लीख, रेखा।
लीन (स] तन्मय, डूबित, मिलित, नाश।
लीलहिं [प] खेलतहिं, लीला करतहिं, लीलासे, बिना श्रम।
लीला. (स क्रीड़ा, खेल, विहार।
लीलावती [प] गणितग्रंथविशेष।
लुक [स] आदर्शन, अंजन, गिरेया, तारा, चिकनातेल।
लुखरी [न] लोमरी।
लुठ़त [प] लोटत, बटोरत, लोटना, लुटना।
लुनाई [प] सुन्दरता, झलकाई, चमकदारी।
लुप्त (स) नष्ट, गुप्त, लूट, अदृश्य।
लुबुध लुबुधठ (स) लोभी, लालची, लुब्ध।
लुम्द, (स) रसादिक पास।
लुब्ध (स) लोभी, लालच, लोभ।
लुब्धक (स) लोभी, लालची, लम्पट, लुब्धा, बधिक, व्याध।

लुम्नि· (स) रोम, केश, रोवां।

लुलाप· (स) भैंसाचारपद।

लुढ़जाना, लुढ़कजाना, मु॰ मरना।

लूक· (स·प) तारा, लुगता, लू, गरमवायु, लुक।

लूता·(स) मकरीकीट, ऊर्णनाभी।

लूकालगाना, मु॰ आगलगाना, जलाना, झगड़ा उठाना, बखेड़ा मचाना।

लूटखूट, मु॰ लूटना और उजाड़ना। [लेना।

लूटपाट, मु॰ लूटना और मार

लूटालूट, मु॰ लूट, छीन, झपट।

लिखई· (प) देखई, दिखाई, लखती है, देखती है।

लेखक (स·) लिपिकार, लिखने वाला, लिखनेवाला।

लेखती·(स) खोदती है। [कलम।

लेखनी· [स] लिखनेकीकलो,

लेखपत्र· [स] ताड़ पत्र।

लेखर्षभ· [स·] श्रेष्ठ देवता· इन्द्र।

लेखा· [स·म·] देवता, गीर्व्वाण, हिसाब, रेखा, खाता, देखा।

लेलिह. (स) अहि, नाग, सर्प्प।

लेश, लेस, (स) अल्प, छोटा, लागि, थोड़ा, भाग सूक्ष्मांश, थोड़ासा, थोड़ा।

लेष्टु.(स) पक्कल, चटनीविशेष।

लोई. (स.प) लोग, मनुष्य, कम्बल भेद।

लौं.(द) तलक, तक, लग, पर्य्यंत।

लोक· [स] व्याकरण, जन, देह, रसमूल, तीनिलोक, लोग, भुवन, मनुष्य, जगत् संसारिक आदि। लोकशब्द— (दोहा। लोक व्याकरण लोक जन, लोक देह रस मूल। तीनलोक सुत उदर में, रहौ जसोमति भूल ॥१॥ लोकचतुर्दश विवरण। भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर्लोक, जनलोक। तपलोक, सत्यलोक, ७॥ ए सात लोक उपर लोक, अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसा·

तल, पाताल ॥७॥ ए साती लोक नीचे का ॥ १४ ॥

लोकप. लोकपति, लोकपाल, (स) विष्णु, राजा, दिक्पाल वरुणादि । लोकप कहैं लोक के रक्षा करनेवाले अर्थात् इंद्रादि ।

लोकेश. (स) त्रिदेवा, ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

लोग. (प) पुरुषगण ।

लोगाई. (प) लोगण, मेहराक ।

लोचन. (स) नयन, नेत्र, चक्षु, आंख ।

लोकपतिलोक } (स द) स्वर्ग
लोकपतिलोका } चौ० । मुनि प्रभाव जब भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपति-लोका ॥ अर्थात् लोकपति जे इंद्रादिक तिन के लोक सब लघु लगे ।

लोटा. (स) पु० गड़ुआ, पानी डालने का बरतन, जल-पात्र विशेष ।

लोढ़ा. (स० लोष्ट, लोष्ट् टुकड़ा

लोढ़ा } पु० सिलबट्टा, १ ओसवाल महाराजनों की एक जात ।

लोध्र. (स) लोध १ पेठानी लोध ।

लोध्रपुष्पक. (स) लाल धान ।

लोनाई. (प) चमकदारी, उज्ज्व-लताई, पनगरी, निमकाई सुन्दरता ।

लोना. लोणा (द) लड़का, बा-लक, फलविशेष, सुन्दर, चटीला, लवण, गु० खारा ।

लोन. (स) लोनिआं साग ।

लोनी. (स) लोनी, लोनिआं-साग । (नाश, अदर्शन ।

लोप. (स) अदृश्य, अगोचर, गुप्त

लोभ. (स) लालच, इच्छा, परीप्सा, पर द्रव्य की आकांक्षा ।

लोभामर्ष (स) लोभ और द्वेष ।

लोभी. (स) लालची, लोलुप ।

लोम. (स) रोम, रोवां, केश ।

लोमकर्ण. (स) खरहा ।

लोमसा. (स) वच ।

लोपांजन. (स)—दो० । काजल

जल पाटल सुखी, नाग
दीप सुत सोए। लोपांजन
दृग देचली, ताहिन देखे
कोय ॥१॥ [नेत्र, आंख।
लोयन. [द] नयन, लोचन,
लोल· [सप] चंचल, कम्पायट,
आंशू. अधर पत्ती, चतुर,
साकांचा, जिह्वा।
लोला. [स] डोलती, चञ्चला,
लोल, चंचल।
लोलुप. } (स) अत्यन्त लोभी
लोलुपभ· } लालची, कुकुर,
लम्पट, झूठा, चंचल, चुग-
ला, लोकपाल·इन्द्रादिक,
अति लोभी लम्पट।
लोवा. [प] लूमरी, खिखिर।
लोष्ट· [स] ढेला, गोला, डेला,
लाह, ढप, खोभी, अर्थात्
गद्दरी, तरकट, छांट, मट्टी
का ढेला, लोहे का मैला।
लोह· [स· प] लोहा. युद्ध, रण,
अस्त्र, स्याह अगर।
लोहा·[द] लोहा धातु विशेष।
लोहप चारः [द] चंचल
अचारवाला।
लोहित· [स] रक्तवर्ण, लाल रंग,
मानिक रत्न, केसर, रक्तच-
न्दन, रुधिर, योनरो अन्न।
लोहिताङ्ग (स) मङ्गलवार।
लोहितपुष्पक [स] अनारफल।
लोहू· [प] रुधिर, लहू।
लोट पोट होना, मु॰ मोहित
होना, किसीप्य र में डूबना।
लोनमिर्चलगाना, मु॰ अपनी
तरफ़ से बहुत बढ़ा कर
कहना। [लड़ना।
लोहाबजाना, मु॰ तलवार से
लौं. [प] तलक, तक, लग, अवधि।
लौका·[पस] विज्वल्ली, चमक,
कोढ़ा, तुम्बा, तूम्बी।
लौकिक· [स] लोक व्यवहार,
लोकाचार, प्रसिद्ध, लोक
प्रसिद्ध।
लौन्ध·[प] मलमास, अधिमास।
लौर· लउर. [द] लाठी।
लौह·[स] लोहा। [सिंघासन।
लौहसिंहासन [स] लोह
लौलगना, मु॰ ध्यानकरना,

ईश्वर की उपासना, या प्रार्थना में स्थिर होना।

लौलगाना, मु० धुनलगना, किसी को बार बार याद करना।

लंपट· (स) कुमार्ग में जिस की बुद्धि लिपट गई है।

व

वंस·वंश.(स) बांस,पुत्र पौत्रादि, बांस का वृक्ष।

वंशक· (स) सुड़की शितारी।

वंशजा· (स) वंशलोचन।

वंशपत्री· (स) वंशपत्री।

वंशरोचन.
वंशधारी· } (स) वंशलोचन।

वंशिक· (स) स्याह अगर।

वकुल·(स) मवलसरी।

वक्रा· (स) ककरासिंही।

वङ्ग·[स] खुरा रांगा।

वङ्गसेन· (स) अगस्त।

वच· (द) औषधी विशेष।

वज्र· (स) अबरख, सुठरिया बीज,हीरा,इन्द्रास्त्र विशेष।

वज्रक. (स) हीरामणि।

वज्रजात· (स) अबरख।

वज्रद्रुम· (स) सुठरिया बीज।

वज्राङ्गी· (स) हड़जुड़ी।

वञ्जुल· (स) अशोक, बेंत, तिनीस।

वट. (स) बरगद।

वटक· (स) बारा।

वटपत्री· (स) वटपत्री।

वटिका· [स] बरी।

बररहना, मु० अच्छा रहना, अरस रहना,जयवंत होना।

वत्स· [स] बकरा।

वकवृत्ति·[स] पाखण्डी, दूसरी को अपनी उत्तमता दिखा-कर ठगनेवाला मनुष्य।

वकुल· [स] बगला पक्षी।

वक्तव्य· [स] कथन योग्य, निंद-नीयवचन।

वल्क· [स] मुख, वस्त्र विशेष।

वचन· [स] वाक्य, भाषण।

वत्सक (स) कोरया।

वत्सनाभ· (स) वत्सनाभ विष।

वत्सादनी· (स) गुरिच।

वट· [स] वृक्ष विशेष, बड़ ।
वटी. [स] गोली ।
वटु· [स] बालक, ब्रह्मचारी ।
वत्· [स] समान्. तुल्य, सदृश ।
वत्स· (स) वर्ष, प्रिय, बछड़ा ।
वत्सर· (स) वर्ष, साल ।
वदन· (स) मुख, कथन ।
वदर· (स) वराही कन्द ।
वदरा·(स) वराहीकन्द,इरहुर ।
वदरी· (स) बेर ।
वदरीमहत्· (स) बड़ी बेर ।
वद्द· (स) सीसा धातु । [स्पृक्कार
वधू· (स) पक्षांहो सुगंधवाला,
वन· (स) पानी ।
वनकोद्रव· (स) वन का कोदो ।
वनज· (स) तुम्बुरु ।
वनद्रुम· (स) भिरंगी ।
वनशृङ्गाट· (स) हरचिकार ।
वनस्पति· (स) बरगद,पुष्पफल-
रहित वृक्ष.बेलिया पीपर ।
वनिता· (स) स्त्री, अश्वत्यादि
वृक्षमात्र ।
वनीक· (स) याचक, भिखारी ।
वनौक· (स) वानर· ।
वन्दाक· (स) बांदा ।
वन्धा· (स) गोरोचन । [फूल ।
वन्धुजीव·वन्धुक·(स) दुपहरिया·
वन्धुकपुष्प· (स) आसन ।
वन्ध्याकर्कोटकी·[स]फूलखेकसा ।
वह्नि·(स) अग्नि,चीता औषधि ।
वप· वपन· (स) केश मुंडन,
बीजधान, बाल मुड़वाना,
बीजबोना ।
वपुषा. [स] क्षीरवेर ।
वपुस्· (स) देह, शरीर, जिस्म ।
वब्बूल· [स] बबूर ।
वभ्रु· [स] बाघ ।
वमन· (स) छर्दन । [पचौ ।
वयस. (स) बाल्यादिअवस्था.
वयस्था·[स] क्षीर काकोली,तद्
भावे अश्वगंध,हर्रे,गुरिच ।
वर· (स) केसर ।
वरटा· वरटिका· [स] बर्रे ।
वर्णाश्रम· (स) ब्राह्मण. क्षत्रिय,
वैश्य,.शूद्र, ब्रह्मचर्य गृहस्थ,
वानप्रस्थ, सन्यास ।
वरतिक्त· (स) धनपापर ।
वरतिक्तिका·[स] पाढ़ । [बेल ।
वरदा· (स) हर हुरा, असगंध,
वरद्दातु· (स) सुपड़स, भुंईसह ।

वरद्दी· [स] मध।

वरवर्णिनी· [स] हलदी।

वरा· [स] भवंरा, हरें, बहेरा।

वर्णन·(स) कथन,भाषण,स्तुति।

वराङ्ग· [स] तज।

वराह· (स) शूकर, सुअर।

वराहीकन्द· [स] वराहीकान्द।

वरी· [स] दोनों शतावर।

वरुण· [स] वरुणा वृक्ष।

वर्कं· [स] खस्सी।

वर्कर· [स] बकरा।

वर्णपुष्प· [स] बानरुष्प।

वर्तक· [स] बटेर।

वर्त्तमान· (स) उपस्थितकाल, जगारह काल।

वर्त्ताकू· [स] बैगन।

वर्त्तीक· वर्त्तीक [स] बटेर।

वर्त्तीर· [स] बगेरी।

वर्त्तुंल· [स] केराव।

वर्तुल· [स] गोल।

वर्द्धमान· [स] सुपेद रेंड़।

वर्ध· [स] सीसा धातु।

वर्व्वरा· [स] बरबरी।

वर्ष· (स) बारह मास, साल।

वर्षकेतु· [स] लाल फूल का गदहपूर्णा।

वर्हम्. (स) थुनेर।

वर्हिना. (स) भवरतगर।

वर्हिष्ट· [स] सुगंधवाला।

वर्ही. (स) कुश।

वल· [स] तीनतरह बोड़ा।

वलभद्र. [स] त्रायमान।

वलभद्रिका·(स)हरीद की रोटी

वलवता.(स)चार रंग का गंधक।

वलवल्लभा. (स) शराब।

वलाका. [स] बगुला।

वलामोटा. (स) नागदमनी।

वली. [स] बेल, चार रंग का गंधक।

वल्कल· (स) वृक्ष की छाल।

वल्लक· (स) बरसिमा।

वल्लकी· (स) सलैया।

वल्लभ (स) प्रिय, मित्र, अध्यक्ष।

वल्लरी. (स) मेथी।

वल्या (स) असगन्ध।

वल्हिका. (स) रूहेंछी।

वश्रिर· (स) पांगानोन,नोनी।

वष्कयणी·
वष्कयीणी· } (स) बकेनगाय।

वसन· (स) वस्त्र, कपड़ा।

वसा. [स] चरबी।

वसिर· (स) बाकस।

वसीर· (स) गजपीपर, लाल चिरचिरी।

वसु· (स) बड़ी मौलसरी।

वसुक· (स) सुपेद आकवन।

वसुधा· वसुंधरा. वसुमति· (स) पृथ्वी, ज़मीन।

वसुरसा· (स) रास्ना।

वसुच्छिद्रा· (स) महामेदा तद्‌भावे शतावर।

वस्त. (स) खस्सी।

वस्तु· [स] द्रव्य, पदार्थ, चीज़।

वस्त्र· [स] वसन, कपड़ा।

वस्त्ररञ्जक. (स) कुसुम।

वस्त्ररञ्जनी. [स] मजीठ।

वह्निष्ट. (स) सुगन्धवाला।

वंचक· [स] शृगाल, खल, धूर्त्त ठग। [नमस्कार।

वंदन. (स) स्तुति, प्रणाम।

वंशी. [स) वंशलोचन।

वा. [स] विकल्प, उपमा, वितर्क, पादपूर्ण, समुच्चय।

वाकुची. (स) बकुची।

वाक्य· [स] पद समुदाय, वचन, फिक़रह। [वाक्य, वाणी।

वाच· वाचा. [स] वागिन्द्रिय,

वाचस्पति. (स) वृहस्पति, पोखरा, जमणि।

वांछा·(स) इच्छा, स्पृहा, ख्वाहिश।

वाजिगन्धा. (स) असगन्ध।

वाजिदन्त· (स) बाकस।

वाजी· वाजीवाह· (स) घोड़ा।

वात्या· वात्याल· वात्यालक· वात्यालिक. } (स) बरियार।

वाण· [स] शर, तीर, कटसरैया, नील, रसरका।

वाणप्रस्थ. (स) दोनों महुवा।

वाणाह्व. (स) नीलाफूल का कटसरैया।

वाणीर. (स) बेत।

वातकफ. (स) पलास।

वातघ्नि. (स) चित्रक।

वातवटक· (स) मगेली।

वातवैरी· वाताद. } (स) बादाम।

वातारी (स) सुपेद रेंड़, लाल रेंड़, वायविड़ंग।

वानता· (प) स्त्री अश्वत्थादि वृक्ष मात्र ।

वान्त· (स) प्रहत ।

वापि· वापी· [स] जलाशय, बावड़ी ।

वाष्प· (स) बाफनी ।

वामीमत्स्य· (स) बामीमछली ।

वायस· [स] काकपक्षी, कौवा ।

वायसी. (स) कवैया, आरार ।

वायसोली· (स) काकोली तद्भाव में असगंध ।

वायु· [स] पवन, हवा ।

वार· [स] वारि, जल, पानी, ठोकर, घाव, पाली ।

वारक· [स] निवारक, रोकैया, बाधक । [बाधा, हाथी ।

वारण· [स] प्रत्याख्यान, रोक,

वारंण· [स] प्रवृत्ति, प्रतिरोध, निषेध, वर्जन, गज ।

वारणवल्लभा·
वारणबुषा·
वारणबुसा. } (स) केला ।

वारन· [स] अर्पण, भेंट, बलि ।

वारना.[प] घेरना,भेंटचढ़ाना ।

वारवधू.[स] वारांगना, वेश्या, कुलटा, चंचली ।

वारा· [प] सस्ताई, बचाव, निछावर ।

वाराणसी·[स] काशी,बनारस ।

वारापार· [प] वर्लेपर्लेपार ।

वाराह· [स] शूकर, सुअर, बनैला सूअर ।

वाराहकर्णी· [स] असगंध ।

वाराहांगी· [स] तामाजड़ी ।

वाराही.
वाराहीकन्द· } [स] वाराही-कन्द ।

वारि· [स] जल, पानी ।

वारिद· [स] मेघ, बादल ।

वारिदनामक [स] मोथा ।

वारिधि· [स] समुद्र ।

वारिपर्णी· [स] कुम्भी ।

वारिवाह्री· [स] बरडुवा ।

वारिशिरीषिका.[स] जलका-पीपर ।

वारी [स] पानी ।

वारुणी· [स] शराब ।

वारूणी· [स] इन्द्रायन ।

वार्तक· [स] बनभांटा ।

वार्तीक· [स] बैंगन ।

वार्ताकु. [स] कटेर बैगन ।

वार्तिक· [स] खरीरी ।
वार्षिका. [स] बेलाफूल ।
वाल· वाला· [स] सुगंधवाला ।
वालजीवन· [स] दूध ।
वालपत्र· [स] खयर ।
वालमूलिका· [स] माचिका ।
वालवत्सा [स] धेनु ।
वालखिल्य· [स] बेलसुंठ ।
वालिका.वाली·(स) माचिका ।
वालुका· (स) बालू ।
वालिषम्· (स) केंवटीमोथा ।
वालेचु· (स) भदेलीकेतारी ।
वाल्हीक· (स) हींग, केसर ।
वाल्हीका· (स) गोलबासाग ।
वाष्पक· (स) दोनोंमर्षा ।
वास. (स) बरगद ।
वासर. [स] दिवस, दिन, रोज़ ।
वासक· (स) बाकस ।
वासन्ती· (स) बसन्त की नेवार माधवी फूल ।
वासपुष्प· (स) चनसुर ।
वासा· (स) बाकस ।
वास्तव· [स]:यथार्थ,सत्य,ठीक ।
वास्तुक. (स) बथुआ ।
वास्तुकाकार· (स) पलांकी ।
वाहनी·[स]रथादियान,सवारी।
वाहिनी· [स] सेना, नदी ।
वाह्य·[स]भिन्न,पृथक,बहिर्भव ।
विधा· (स) छीहवेर ।
विकङ्कत· (स) कटाई ।
विकषा· (स) मजीठ, रोहणी ।
विकिर· (स) पत्ती, चुचांड़ी ।
विकीर्ण· (स) कालभकवन ।
विक्रेय·[स] विक्रेययोग्य पदार्थ, बेचने के लायक चीज़ ।
विख्यात· [स] प्रसिद्ध, मशहूर ।
विघ्न· [स] उपद्रव, विघात ।
विचक्षण· [स] पण्डित,विद्वान, चतुर । [अपूर्व ।
विचित्र· [स] अद्भुत, आश्चर्य,
विजय· [स] जय, जीत, फ़तह ।
विजया. [स] हर्रे, भांग ।
विडाल· [स]मार्जारि,बिलाव ।
विड्· (स) काला नोन ।
विडङ्ग . (स) बाभिरंग ।
वित्त. [स] धन, द्रव्य, ख्यात, विचारित, ज्ञात, लब्ध ।
वित्ति· (स) घोड़ा ।
वितुड्· (स) तूतिया ।

वितुन्नक· (स) कैवटीमोथा, धनियाँ ।

विदारीगन्धा· (स) सरिवन ।

विदित· [स] विख्यात, ज्ञात, प्रार्थित ।

विदुला· (स) वेत जरहीसीज ।

विदेश· [स] देशान्तर, अन्यदेश, परदेश । [राजा जनक ।

विदेह· [स] शरीररहित,

विद्यमान· [स] वर्तमानकाल, प्रत्यक्ष, मौजूद ।

विद्या· [स] ज्ञानतत्व का साक्षात्कार ।

विद्युत्· [स] तड़ित, बिजली ।

विंदु· [स] जलकण, भूमध्य, अनुस्वार, ज्ञाता, दाता, वेदितव्य ।

विद्रुम· (स) मूंगा ।

विद्रुमलता· (स) नलुका ।

विध· [स] प्रकार, वेतन, मूल्य ।

विधान· [स] विधि, नियम, उपाय, प्रकार ।

विधि· (स) परमात्मा, ब्रह्मा, भाग्य, क्रम, आज्ञा ।

विधु. [स] चन्द्रमा, कपूर ।

विध्वंस· [स] नाश, विघात, तिरस्कार । [अनुनय ।

विनय· [स] शिक्षा, प्रणाम,

विनाश. [स] मृत्यु, अदर्शन, ध्वंस ।

विनीत· [स] विनययुक्त, दुवना ।

विनोद· [स] हर्ष, आनंद, प्रसन्नता, क्रीड़ा ।

विपत्ति· [स] आपत्ति, नाश, यातना, दुःख, क्लेश ।

विपद. [स] } विपत्ति, मुसी-
विपदो· } बत ।

विपरीत· [स] प्रतिकूल, उल-टा, बरखिलाफ़ । [माफ़ ।

विपर्य्यय· [स] व्यतिक्रम, खि-

विपिन· [स] आरण्य, बन, जंगल ।

विप्र· [स] ब्राह्मण ।

विभव· [स] धन, ऐश्वर्य, मोक्ष ।

विभु· [स] प्रभु, परमात्मा, व्यापक ।

विमल. [स] निर्मल ।

विमला· (स) जरहीसीज ।

विसुता. (स) माधवी ।

विशेष्य· (स) गुणादिभिर्भेद्य, विशेषणाई, मौसूफ़ ।

विश्राम. (स) निवास, स्थान, स्थिति । [मशहूर ।

विश्रुत· (स) विख्यात, प्रसिद्ध,

विश्व· (स) जगत, संसार, बहुभिमानी, जीवसमष्ट, सकल, शौंठ ।

विश्वभेषज· (स) शौंठ ।

विश्वा· (स) अतीस, शौंठ ।

विश्वामित्र· (स) गाधिपुत्र, मुनि विशेष ।

विश्वास· (स) प्रतीति, श्रद्धा, पूर्ण, निश्चय, यक़ीन ।

विश्वंभर· (स) परमात्मा ।

विष· (स) गरल, ज़हर, नीवा, सुरई । [खेकसा ।

विषकंटिकिनी· (स) फूल

विषकर· विष्कर· } (स) पक्षी ।
विषपक्षी· }

विषकारा· (स) कीटकर खाने वाले पक्षी बटेर आदि ।

विषघ्न· (स) चौराई साग ।

विषघ्नी· (स) हडुबेर, पीला फूल का बंदाल, करंज ।

विषतिन्दु· (स) मकरतेंद ।

विषनाशिनी· (स) दोनों रास्ना ।

विषप्रसून· (स) कमल ।

विषम· (स) असम, दारुण, संकट, अयुग्म ।

विषमच्छन्द· (स) छतिवन ।

विषमुष्टीक· (स) बकाइन ।

विषय· (स) इन्द्रिय गोचर, शब्दादि, देश, स्थान ।

विषा. (स) अतीस ।

विषाण· (स) पशुशृङ्ग, हस्ती दंत, बराहदन्त ।

विषाणिका· (स) काकड़ासिंगी ।

विषाणी· (स) रिषभक तद भावे विदारीकन्द, मेढ़ासिंगी ।

विषाद· (स) शोक, क्लेश ।

विषापहा· (स) सुफ़ेद गदहपूंछा, नागदमनी ।

विषु· (स) विष्टा ।

विष्टी· (स) पानी का वर्षा ।

विष्ठा. (स) मल, पुरीष ।

विष्णु· (स) व्यापक, परमेश्वर, अग्नि, शुद्ध । [जिता ।

विष्णुक्रान्ता· (स) सुफ़ेद अपरा-

फेण· (स) समुद्रीसीन, समुन्दर फेन।

फेणिका (स) फेनी शिरनी।

फेणिल· (स) बेरफल, रीठाफल।

ब

बंश· वंश· (स) कुल, बांस, वंश नाम—दोहा॥ वंसजनन संतान कुल, अमृा अन्वाय। गोत्रथ बिर अभिजन सुजस' बंदीजन बहुगाय॥१॥

बइखानस· (द) बानप्रस्थ, चौ०। सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई। जो नहिं गुर आयसु अनुसरई॥ दो०। सोचिय गृही जो मोह बस, करइ करम पथत्याग। सोचिय जती प्रपंचरत, बिगत बिबेक बिराग॥ चौ०। बइखानस सोइ सोचइ जोगू। तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू॥ अर्थात् अपना ब्रत जो ब्रह्मचर्य्य है अर्थात् इंद्रियन को रोकि के वेद पढ़ना सो त्यागत हैं और गुरू के आज्ञा में नहीं चलत हैं सो ब्रह्मचारी सोचनीय है। गृही को कर्म पितर देवपूजन अर्थात् सेवनादि है। बैखानस कहैं बानप्रस्थ इहां पहिले बानप्रस्थ कहि फेर यती कहना रहा सो नहीं है ताते पाठ क्रमते अर्थ क्रम बलवान होत है ताते यती की व्याख्या बैखानस के बाद करना।

बगछूटदौड़ना, मु० सपट जाना।

बगलाभक्त मु० कपटी, छली, पाखंडी, कपट धर्मी।

बगलामारे पंखहाथ आये, मु० गरीब को दुख देने से बहुत लाभ नहीं होता है।

बक्रउक्ति· (द) टेढ़ोवक्त, दो०। बक्र उक्ति धनु बचन सर, हृदय दह्यो रिपु कीस। प्रतिउत्तर सडसिन मनो, काढ़त भट दससीस॥ अर्थात् अंगद की वक्र उक्ति

विषूवकसेन (स) प्रियंगु ।
विसारि (स) मछली [चांग ।
विसिनी (स) कमल का पं-
विसूचिका (स) रोग विशेष,
हैजा ।
विसृत (स) विस्तीर्ण, फैला
हुआ । [फैला हुआ ।
विस्तार (स) विस्तीर्णता,
विस्ता (स) छछूंदर ।
विस्तृत (स) विस्तीर्ण, विस्तार-
युक्त, फैला हुआ ।
विस्मय (स) आश्चर्य, अद्भुत,
संशय । [हैरान ।
विस्मित (स) विस्मययुक्त,
विस्मृत (स) स्मरणरहित, भूल ।
विहग (स) पक्षी, मेघ, शर,
सूर्य, चन्द्र । [पक्षी ।
विहङ्गम विहंग विहङ्गम (स)
विहित (स) जिस कर्म को
शास्त्र में विधि हो ।
विह्वल (स) भयादि कर के
व्याकुल । [करण ।
विक्षेप [स] त्याग, प्रेरण, दूरी
वीज (स) बीजा ।
वीजकर्पास (स) कासन ।
वीजकोश (स) कमल का पत्ता ।
वीजपूर (स) बिजौरा लेमू ।
वीजपूरोपर (स) मधुकर्कटी ।
वीर (स) शौर्ययुक्त, बहादुर,
लड़नेवाला, झार, कडुवा ।
वीरण (स) झार ।
वीरणमूल (स) खसखस ।
वीरतरु (स) झार ।
वीरवती (स) रोहिणी ।
वीरवृक्ष (स) भिलावा, कडुवा ।
वीरसेन (स) सुयानी ।
वीरा (स) भैला, काकोली तद्
भावें असगन्ध ।
वीर्य [स] शुक्र, पराक्रम, बल,
प्रभाव, तेज ।
वुका (स) बड़ी मौलसरी ।
वुकीवमु (स) बड़ी मौलसरी ।
वृक [स] भेड़िया ।
वृका (स) बाघ ।
वृकी (स) पाढ ।
वृत्तकोषा [स] बन्दाल ।
वृत्तपुष्प [स] युक्त ।
वृत्तफल [स] लालमिरचिरी ।

वृत्ता. [स] रोहिनी ।
वृत्तान्त· [स] संवाद, संदेश, वार्त्ता । [वैफ़ायदह ।
वृथा· [स] व्यर्थ, निरर्थक,
वृद्ध· (स) वृद्धियुक्त, पंडित, दीर्घायु । [करीला ।
वृद्धा· (स) गतयौवनस्त्री,बुढ़या,
वृद्धि· (स) समृद्धि, अभ्युदय, सम्पत्ति, समूह । [कन्द ।
वृद्धो·(स)वृद्धा,तद्भावे वराही·
वृद्धेत्तु· [स] सुपका केतारी ।
वृन्द·(स) समूह, दशार्बुद,संख्या।
वृन्दावन· (स) नगर विशेष ।
वृश्चिक· (स)विच्छू,अष्टमराशि ।
वृष· वृषभ. (स) धर्म, बैल,बल-युक्त, शत्रु, वृष, श्रेष्ठ ।
वृषल· (स) शूद्र ।
वृषा· [स] तामाजड़ी ।
वृष्य· [स] कमल डण्टी ।
वृष्या· [स] केमाच ।
वृष्टि· (स) बर्षा, बारिश ।
वृहज्जीरक· [स] मगरैला ।
वृहत्· (स) महत्, अधिक ।
वृहती· [स] बनभांटा ।
वृहत्पत्र· [स] पयठानीलोध ।
वृहत्फल. [स] कटहर, भूरा कोंहड़ा ।
वृहदेला· [स] बड़ी इलायची ।
वृहल्लोनी· [स] गोलवा साग ।
वृहस्पति· (स) देवताओं का गुरु
वृही· [स] साठीधान ।
वृक्ष. [स] द्रुम, पेड़, दरख्त ।
वृक्षदनी· [स] बांदा ।
वृक्षधूप· [स] सरलनिर्य्यास ।
वृक्षभक्षा· [स] बांदा ।
वृक्षमर्कटो· [स] लक्खो ।
वृक्षमार्य्यार. [स] बनबिलार ।
वृक्षरुहा· [स] बांदा ।
वृक्षशाक· [स] गोबरछता ।
वृक्षा· [स] बांदा ।
वृक्षामय· [स] लाही ।
वृक्षाम्ल· [स] तिन्तिड़ीक ।
वेग· (स) प्रवाह ।
वेणी· [स] वन्दाल ।
वेणु· [स] बांस, बांस का वृक्ष ।
वेणुपत्री· [स] वंशपत्री ।
वेणुमुक्ता·[स] बांस का मोती ।
वेतन· (स) मूल्य, कर्म,दक्षिणा ।

वैजयन्ती· (स) गनिआर।

वैतस· [स] जलबेंत।

वेद· (स) विष्णु, ज्ञान, ऋक, यजु, साम, अथर्व, ईश्वर, प्रति पादित ४ संहिता।

वेदला. वेदला· (स) दाल का अन्न।

वेदान्त (स) {ब्रह्मप्रतिपादक ईशकेनादि २२ उपनिषत, उत्तरमीमांसा।

वेधमुख्या [स] कपूर, कस्तूरी।

वेल (स) उपवन, काल, समय, मर्यादा, समुद्र कूल।

वेलज· [स] जंगली बेल।

वेल्लतक· [स] भरीहुई रोटी।

वेल्ल· [स] बाभिरंग, कालीमिर्च।

वेश·(स) गृह, वेश्यागृह, प्रविश, नैपथ्य, अलंकार, रचना, दिखत रूपान्तर।

वेश्मन·(स) गृह, घर भेस, नकल।

वेष (स) अलंकार, रचनादिक कृत, रूपान्तर।

वेष्टनिका· }
वेसन· } (स) चना आदि अन्न का मयदा।

वेसनवटी·(स) फुलौरी।

वेसवार· (स) भूनामांस।

वेसनमोदक· (स) मोतीचूर लड्डू। [इकीम।

वैद्य· (स) पंडित, चिकित्सक

वैणवी· (स) वंशलोचन।

वैदूर्य· (स) वैदूर्यमणि।

वैदेही· (स) पीपर, जनकपुत्री, सीता।

वैभव· (स) ऐश्वर्य।

वैराग·(स) विषयवासनारहित।

वैर·(स) भय, विरोध, शत्रुता,।

वैशाख· (स) मासविशेष।

वैशेषिक·(स) कणादि ऋषिप्रणीत शास्त्र और उसका जानने वाला।

वैश्य· (स) तृतीयवर्ण।

वैश्रवना·(स) बरगद।

वैषम्य·(स) विषमत्व वैलक्षण्य।

वैष्णव· (स) विष्णु उपासक, विष्णु संबंधी।

वैसारी· [स] मछली।

वोधनी· [स] मेथी।

वोधिद्रुम· [स] पीपर।

वोल· [स] बोल।

व्यक्त· (स) स्पष्ट, प्रकाशित, बुद्धिमान्, स्थूल। [जन।

व्यक्ति· (स) पृथगात्मता, प्रकाश,

व्यङ्गुलमर्गी· [स] केसाव।

व्यग्र· (स) व्याकुल, व्यासक्त।

व्यजन· (स) पंखा।

व्यतिक्रम· (स) विपर्यय, उलटा।

व्यतीत· [स] प्रतीत, गुजराहुआ।

व्यथा (स) दुःख, पीडा, तकलीफ।

व्यभिचार· (स) निन्दित आचार स्त्रीका परपुरुष से और पुरुष का प्रसंग से महितुदोषभेद।

व्यय (स) खर्च।

व्यर्थ (स) निरर्थक, बेफायदा।

व्यवसाय. (स) उद्यम, उपजीविका, अनुष्ठान, अवधारन।

व्यवस्था (स) शास्त्र निरूपित विधि, शास्त्र मर्यादा।

व्यवहार [स] रीति, व्यापार, चालचलन।

व्यसन [स] विपत्ति, नाश, मृगया, द्युत, क्रीड़ा, असूया, स्त्रीभोग, मद्य पानादि।

व्याकरण [स] शब्द, धातु, प्रत्यादि, बोधक शास्त्र, इर्फ, नह्व।

व्याकुल (स) उद्विग्न, शोकग्रस्त, व्यग्रचित, उदास।

व्याख्या (स) विवर्ण, टीका, कथन।

व्याख्यान (स) व्याख्या, वर्णन।

व्याघ्र [स] सिंह, बाघ, शेर।

व्याघनख· [स] बड़ी नखी।

व्याघ्रपाखी· [स] कंटाई।

व्याघ्रपुच्छ· [स] लालरेंड़।

व्याघ्रपुच्छध· [स] बड़ीनखी।

व्याघ्री [स] रेगनी।

व्याध (स) वधिक, शिकारी।

व्याधि (स) रोग, कुष्टरोग, बिमारी।

व्याधिव्रात· [स] अमलतास।

व्यापक (स) विभु, अधिक देश में रहनेवाला।

व्यापार (स) लोभार्थ कर्म, क्रय, विक्रयादि रोजगार।

व्याप्त (स) पूर्ण, समाक्रान्ता, ख्यात। [में रहनेवाला।

व्याप्य (स) परिछिन्न, अल्पदेश

व्यामपोर· [स] रोहिष।

व्याल. (स) सर्प, सांप, हिंसक, पशु, चीता, बाघ, सिंहादि।
व्यास. (स) मुनिविशेष, विस्तार, कुतर।
व्युत्पन्न. [स] पंडित, विद्वान।
व्योष. [स] सोंठ, पीपर, मिर्च।
व्रण. (स) घाव, छिद्र, फोड़ा।
व्रात्य. (स) यज्ञोपवीत, संस्कार रहित, सावित्रीपतित।

श

शं. (स) कल्याण, श्रेय, शुभ।
श: (स) प्रकार, भांति, बार।
शक. [स. फ] सम्वत्, शकाब्दा, समर्थ, धोखा, शुबहा, संकोच।
शकट. (स) गाड़ी, छकड़ा, रथ, यान विशेष।
शकली. (स) मछली।
शकाना. (स) भयमाना, डरा।
शकानी. (स) शकुचानी, लज्जिता, लज्जुक।
शकाब्दा. (स) संवत्सर, वर्ष।
शकुन. शगुन. (स) पक्षी, शुभ, शुभ का चिन्ह।
शकुनाधम. (स) काग, वायस, अधम पक्षी।
शकुनाहत. [स] कामधाम।
शकुनी. (स) गीध, गृध्र, पक्षी।
शकुन्ति. [स] खग, पक्षी, चिड़िया।
शकुलादनी. [स] जलपीपर।
शकुलादनी. (स) कुटकी।
शकुलाची. (स) गांडरदूब।
शक्त. [स] सामर्थी, बलवान, कठोर।
शक्ति. [स] माया, सत्ता, बल, बर्छी हथियार, स्त्री, तारी, जोरी, अस्त्र विशेष सांग, सामर्थ्य।
शक्य. [स] होने के योग्य, साध्य, शकभर।
शक्र. [स] मघवा, इन्द्र।
शक्रगाखी. [स] कोरैया।
शक्रसुत. (स) जयन्त।
शक्रारी. (स) मेघनाद।
शक्राह्वा. [स] इन्द्रजव।
शखामृग. [स] वानर, बन्दर।

शङ्कर· [स] शुभकर, शिव, उपकारक, गुरु।

शङ्खणक· [स] छोटा शंख।

शङ्करण· [स] इन्द्रिय, गो।

शङ्का· [स] भय, त्रास, डर, दलील।

शङ्कित. (स) शङ्कायुत, भयभीत।

शङ्कु· (स) ठूंठ, बर्छी, कील, मत्स्य, गिनती विशेषण, १०००अंकु,१ अर्बुद,१००० अर्बुद,१ ब्रन्द, १०००ब्रन्द, १ पद्म, सांकुच मछली।

शंकन्दन, (स) इन्द्र, स्वर्गपति।

शङ्ख. (स) नाद, हड्डी विशेष।

शङ्खधरा. (स) हरहुणा।

शङ्खपुष्पी. (स) शङ्खपुष्पी।

शङ्खवर्चं. [स] नागनिधि।

शङ्खमुक्ता. [स] शङ्ख का मोती।

शङ्खालू. [स] पेपची। [पुष्पी।

शङ्खाहुली. शङ्खाह्वा. [स] संख-

शचान. [द] बाज, शिकारापची विशेषवली।

शचानी. [स] सिकरा।

शचि. शची. [स] इन्द्राणी, इन्द्र की स्त्री।

शचीपती. [स] इन्द्र, पुरन्दर।

शटी. [स] कचूर, पच्छाही सुगन्धवाला।

शठ. [स] धूर्त, अन्यन्यहृदय काष्ठवत, अपनी हानि लाभ स्वार्थं परमार्थं नहिं समुझे, मूर्ख जान के जो अन्याय करे।

शठबंगा. [स] लुचा।

शणपुष्पिका. [स] रहर।

शणपुष्पी. } [स] वनसनई।
शणसमा. }

शत. (स) सौ संख्यावाचक१००।

शतकुन्त. (स) सुपेद सनई।

शतक्रतु. (स) इन्द्र, बासव।

शतघ्नी· (स) अस्त्र विशेष,तोप।

शतधृति. (स)ब्रह्मा, विरञ्चि।

शतपत्र· (स) कमल।

शतपत्त्रम्. (स) पंडुक पची।

शतपत्री· (स) सेवती, गुलाब।

शतपर्व्वा·(स) बांस कमीसाग।

शतपर्व्विं. (स) हरी दूब।

शतपर्व्विका·(स) बच,दोनों दूब।

शतपुष्प· (स) साठीधान।
शतपुष्पा. (स) सौंफ़।
शतपोरक. (स) सब पोर की केतारी।
शतफली· (स) बाँस।
शतवल्ली· (स) हरा दूब।
शतवीर्य्या· (स) सुपेद दूब, पच्छाहीं शतावर।
शतवेधी· (स) अम्लवेंत, चूक।
शतबोधिनी· (स) चुकपलाकी।
शतमूली. (स) देसी शतावर।
शताननः [स] विष्णु, सौमुख।
शतानन्द. [स] राजा जनक की पुरोहित का नाम।
शतावरी.[स] दोनों शतावर।
शताह्वा· [स] सौंफ।
शत्रु· [स] अरी, बैरी, द्वेषी, रिपु,दुश्मन। [का पुत्र।
शत्रुघ्न· (स) शत्रुघातक, दशरथ
शद्दीर· [स] तपस्वी, यति।
शनि· [स] शनैश्चर।
शनैः शनैः· [स] धीरे २, धीरे २, सहज २। [कसम।
शपथ· [स] किरिया, सौगन्द,
शप्पा· (स) चांद,बेझा,वृक्ष,ता।
शब्द· [स] नादबाजा. वचन, ध्वनि, ब्रह्म, विषय विशेष, आकाश, ध्वन्यात्मक, वर्णात्मक,आवाज़,लफ़्ज़। शब्द नाम—दोहा ॥ गोपवधू धूनि बांसुरी, रव विराव संराव। शब्द घोष धुनि ध्वान स्वन, निनद निनाद धराव॥१॥
शब्दग्रह· [स] श्रवण, कर्ण।
शभु· (स) शत्रु।
शभुपत्ता. (स) शमीवृक्ष।
शम· शाम· [स] इन्द्रिय का निग्रह, अंतष्करणी निर्वृत्ति, शांति, अन्तरिन्द्रिय दमन। [दांन, शान्ति।
शमन· (स) यम, नाशक, बलि-
शमि· (स) शमीवृक्ष।
शमिजा· (स) दाल का अन्न।
शमिपत्रा·(स)पानीकी लजौनी।
शमिर· (स) शमीवृक्ष।
शमी· (स) वृक्षविशेष, छीमी, निर्वृत्तियुत।

शम्ब· (स) कुलिश, वज्र ।
शम्बर· (स) शाबर जाति हरिन का ।
शम्बरी· (स) तामाकड़ी ।
शम्बर. (स) श्रेष्ठ, कल्याण, जल, बटखरची, असुर, मृगभनूप ।
शम्बरारि.(स) कामदेव, अनङ्ग ।
शम्बल· [स] विकार, मल, बटखरची ।
शम्बूक· (स) सीप, शंख, घोंघा ।
शम्वेसन· (स) शय्या, आसन ।
शम्भु· (स) शिव, शङ्कर ।
शयन· (स) निद्रा, निन्द, शय्या ।
शयनीय. (स) शय्या, आसन ।
शय्या· (स) आसन, बिछावन, सेयानाम दो० । कसियुतल्प सेया सयन, संवेसन सयनीय । दुग्धफेन सम सेजपर, बैठी तिय कमनीय ॥
शर· (स) वाण, शाम, चिन्ता, सरकण्डा, मृत्युशरादग्धकरण, रमसर्का, पांच, तीर, जल । बाण नाम—दो० । तोमरखग शिलग असुग, विसिख सिलीमुख बान । कन मार्गन नाराच इषु, आशो तोषन पान ॥ १ ॥ सायकघाय पिराय पुनि, बचुरी सिमिट मिरात । बचनतीर की पीर बलि, मिटे न क्यों जुगजात ॥२॥
शरदसर्वरी. (स) क्वार, कातिक की रात ।
शरपंजर. (स) वाणोंका पिंजरा बानोंकापिंजरा बनादिया ।
शरहति· (स) बाण मार दी ।
शरपुङ्खा· (स) सरफोंका ।
शरवीज. (स) रमसर्का ।
शरट· (स) गिरिगिट, कृकलास ।
शरण· (स) आश्रय, घर, रक्षा, गृह, रक्षक, रक्षण, आश्रय पनाह ।
शरणागत· (स) शरणार्थी, आश्रित, वा षटप्रकार अपर्ण शरणागत् । अनुकूल संकल्प शरणागत । प्रति कूलवर्जन । आत्मा, समर्पण । गोपृत्व शरणागत । रक्षिष्यतीति

विश्वास शरणागत ।
शरण्य· (स) शरण, शरणयोग्य, रक्षणीय ।
शरत्. शरद्. (स) ऋतुविशेष, आश्विन,कार्त्तिक,आश्विन कातिक मास, वत्सर ।
शरभङ्ग. (स) मुनि विशेष ।
शरमित. (स) लज्जित ।
शरारिका· (स) सिधुआ पक्षी पानी पर चरनेवाला ।
शरासन· (स) धनुष. धनुवा, चाप, बाण, कमान ।
शरासुर· (स) बाणासुर ।
शरीर· (स·फ·) काया, देह. आंग, दुष्ट, गात्र, शिश्न । शरीरनाम—दो॰ । काय कलेवर कुणप वपु, देह आतमा अंग । विग्रह उपधन संहनन, धाम सरीर पतंग ॥ १ ॥ तुव तन सम करिकरन लगि,स्वर्न धगिन भ्रूप लेत । कोमल सरस सुगंध नहिं,को कवि उपमा देत ॥ २ ॥ शरीर के एक भाग का नाम कंध है । कंध नाम—दोहा । उन्नत छवि सम सुभग छवि, कंध कंधरं अंस ॥ कर धर कीरतिका मुदित, जिम चकई लखि हंस ॥ ३ ॥ शरीरनाम—छंदवंसपत्र । गात्रधाम संहनन कलेवर उपघन है । कुणप देह संहनन शरीरहु वपु तनु है ॥ काय मूर्ति विग्रह पतंग युत पंचदश है । वंसपत्र यह छंदकला षट षोडश है ॥४॥
शरीरी· (स) देही, जीवात्मा, प्राणी ।
शरेष (स) बाण से, तापकरिके ।
शर्करा· शर्क्करा· शर्क्कर· (स) रज, खांड़, शक्कर, चीनी, बालू ।
शर्व्व. (स) कल्याण दायक, स्वामी, शिव ।
शर्व्वरी· (स) निशा, रजनी ।
शर्व्वरीनाथ·(स)चंद्रमा,शशि,चंद्र।
शर्व्वाणी. (स) कल्याणदायका, स्वामिनी, शिवा, पार्व्वती ।
शर्म्म· (स) सुख, हर्ष ।
शर्म्मण· शर्म्मा· (स) विप्र संज्ञा । ब्राह्मण जाति का उपपद ।

शमक. [स] साहिल।

शमकी. [स] साहिल,सालय।

शमिक· [स] सलेषा।

शलभ· [स] पतंग कीट,टीड्डा।
फटङ्गर, पांखी।

शल्यक· [स] मयनफल।

शल्यपर्णी· [स] मेदा तदभावे
सतावर।

शल्य. (स) शूल, बाण, झाड़,
झाग, क्लेश, तोमर,।

शव.(स) प्राणहीनदेह, लोथ,
मृत्यु, मृतशरीर, मुरदह।

शवल· (स) नानावर्ण, अनेक।

शवलब्रह्म· (स) नानावर्णब्रह्म,
जगत, संसार।

शश· शशक· शाशी· (स)खरहा-
वनचर, रात्रिकिरण, खर-
गोश।

शशघातक. [स] बाज।

शशा. [स] चौगुना।

शशांक· (स) चन्द्रमा, चन्द्र।

शशिन· [स] चन्द्रमा।

शशिलेखा· [स] बकुची।

शशिपोषक· [स] छजिधारी।
दोहा—सम प्रकाश तम
पाख दुइ,नाम भेद विधि
कीन्ह। शशि पोषक शोषक
समुझि, जग यश अपयश
दीन्ह॥ अर्थात् पचौं के कर्म
के नाम का भेद कर दिया
है सो एक को चंद्रमा का
पोषक और दूसरे को
सोषक समझ के अर्थात् उन
के विधान के संग से जगत
ने एक को यश और दूसरे
को अपयश दिया है।

शशी· [स] चन्द्र, जोती,अनी-
सुनिपुत्र विशेष,चन्द्रमुनि।

शशीकर· [स] चन्द्रमा का
किरण। [महेश, शंकर।

शशीधर· शशीभूषण· [स· शिव,

शशीरस· [स] अमृत, अमी।

शष्कुली· [स] संवरामछली।

शसि. [स] धान, अन्नसमूह।

शस्त्र· [स] खड्ग,तलवारि,असि
खड्गादि हथियार, लोह,
जो आयुध कर गहे रहत-
कार्य्य करे।

शस्त्रक· [स] लोहा धातु।

शस्य· [सं] लंबी, घास, आन्न,
बरकत।

शश्वत· [स] निरंतर।

शस्पम्· [स] हरा दूब।

शहना· [फ़] चौकीदार, पहरू, गोहायल।

शामभरीज·(स) काला कमल।

शाक· [स] भाजी, तरकारी, हरा, पीत, बल, ओर, द्वीपविशेष, तरकारी ६ किस्म की,फल,फूल, पत्ता, डंटी, जड़, ओवरछाता।

शाकपाक· [स] पकाया तरकारी।

शाकम्भरीय· [स] सांभरनोन।

शाकराट· [स] बथुआ।

शाकश्रेष्ट· [स] जीवन्ती।

शाकवणिक· शाकबनिक· [स] कुंजरा, बिसाती।

शाकल· [स] होम की वस्तु।

शाका· [स.द] यश, साल, वर्ष, प्रभुता।

शाक्त· [स] शक्ति के उपासक, पथिक विशेष।

शाख· [स] वृक्षांग विशेष, शाखा, डाली।

शाखा· [स] डाली वृक्ष, बहुविध विचार।

शाखामृग· [स] बानर, बन्दर।

शाखी· [स] वृक्ष, पेड़।

शाखोट· [स]सिहोरा। [हरा।

शाग· [स] भाजी तरकारी,

शाण· (स) पत्थरी चाकू आदि तेजकरण की,सान,सिल्ली।

शाण्डिल्य· } (स) बेलवृक्ष,
शाण्डील्य· } मुनिनाम।

शात· [स] सुख,आनन्द,तोष।

शातन· (स) क्लेश, कष्ट।

शातपदि· (स) विवाह, यज्ञ।

शान्त· (स) मधुर, कटुवचन सहिता, स्थिर, ठण्ढा, मृदु, कोमल,सौम्य,क्रोधोरहित।

शातकुम्भ· [स] सोना।

शातला· [स] लरखी सीव।

शान्ति· (.स) स्थिरता, चैन, ठण्ढाई, क्षमा, निवारण, काम क्रोधादि का जीतना, विषयों से मन का रोकना।

शाप· (स) श्राप,शपथ,धिक्कार, कोसा, आक्रोश, बद्दुआ, कसम।

शापत· (स) शापदेत।

शापानुग्रह·[स]शाप का उद्धार।

शाम्बूक· (स) सीप,शंख,घोंघा।

शायक· (स) बाण,तोमर,म्यान।

शायका· [द] बाण।

शारद· (स) प्रवीण, निपुण, शिक्षार्थी, भूषित, छतिवन।

शारदा· (स) प्रवीणी, निपुणी, सरस्वती, श्यामकमल।

शारदी· (स) शरद ऋतु, में जो होय वस्तु, जल पीपर।

शारदूल· [स] सिंह।

शार्दूल.शार्दूल(स) व्याघ्र, बाघ, सिंह, श्रेष्ठ।

शाल· (स) सखुआ वृक्ष,कांटा, मत्स्य, दुःख,घर, हृद,मान सरोवर का मध्य स्थान सालय।

शाल्मलि· (स) सेमल का वृक्ष, सेंवरनाम—दोहा। पही पूर्णो पिच्छिका, शाल्मली स्थिरायु। मोचा तुम देखी कहूँ, राधा प्राभा निकाय॥

शालक· (स) दुःखदायी, कष्टदायक।

शालनिर्य्यास· (स) धूना।

शालपर्णिका· (स) एकांगी।

शाला·(स)स्थान,भवन,घर,गृह।

शालामर्कटक·(स) नेवारगुरई।

शालासुख· (स) काला मूंग का साठो धान।

शालि· शालिस·(स)कासधान, धान आदि अन्न हेमन्त ऋतु का।

शालिधान्य· (स) जाल धान।

शालिन· (स) सौंफ।

शालिपर्णी· (स) सरिवन।

शाली· (स·फ) धान, गेहूं आदि अन्न, मोती, शोभा, सब किस्म का धान, मानस तालाव को बारह स्थान छहो संज्ञा जानें हंसनी सदा दिवाराति रहति है याते कबहिं हंसस्थान शाल संज्ञा माहि नहिं जाति है या वाको नियम है। याही पर कही गई है अयोध्याकाण्ड। चौपाई। विमल विवेक धरम नय शाली। भरत

भारती मंजु मराली ॥१॥
शालूक. (स) कमलकन्द ।
शालेय· (स) सौंफ़, नेवारसुरई ।
शाल्मली· (स) सेमर ।
शाल्मलीनिर्य्यास· } (स) मोच
शाल्मलीवेष्टन· } रस ।
शावक. (स) बालपक्षी, बच्चा मृगादि ।
शावर· (स) क्रोध ।
शाश्वत· (स) नित्य, सनातन, निरन्तर । [निरंतर ।
शाश्वन· (स) सतत, नित्य,
शासन· (स) आज्ञा, दण्ड, ताड़न, शिक्षा । [योग्य ।
शासनीय· (स) ताड़नीय, दण्ड·
शास्ति· (स) आज्ञा, राज्यदण्ड ।
शास्त्र· (स) ग्रंथ, पुस्तक, पोथी, आयुध, हितानुशासन ग्रन्थ, वेद, उपनिषद्, पूर्व मीमांसादि षट शास्त्र ।
शास्त्रज्ञ· (स) शास्त्रवेत्ता, पंडित
शास्त्रार्थ· (स) सम्वाद, चर्चा ।
शास्त्री· (स) शास्त्रज्ञ, विदुष, विज्ञ
शिक्षा· [स] जड़ ।
शिखण्डिक· (स) मुर्गा ।
शिखण्डिज· [स] वृहस्पति ।
शिखपक्षी· [स] मयूर, मोर ।
शिखर· [स] पर्वतटिकोर, नाद, धार, चोटी, पर्वताग्र, पर्वत की चोटी ।
शिखरी· [स] पर्व्वत, पहाड़ चिरचिरी ।
शिखा· [स] मस्तक का टीक, दीपादि का टेम, फण, अग्नि, ज्वाला, चूड़ा, चोटी, केशविशेष ।
शिखिग्रीव· [स] तूतिया ।
शिखिज· [स] मयूरस्रव, मोर· समूह ।
शिखिनी· [स] मयूर की मेदी ।
शिखी· [स] मयूर, अग्नि, आग, फनैला, शिरिधारी । अग्निनाम—दो० । पावक वह्नी दहन अल, सिखी धनंजै होय । शुक्र जाय बुध वायु सख, मित्र चोच धुनि सोय ॥१॥ जातु वेद •ज्वल ज्योति हरि, चित्र·

भानु वृश्ज्ञान । अनल हुताशन विभावसु, निर्जर जीभ कृशान ॥ २ ॥ अग्नि दग्ध द्रुमलता बलि, फिरि दल मूलहि देत । बचन दग्ध जिहि मानहीं, बहुरि न अंकुर लेत ॥ ३ ॥

शिघ्र· [स] सुनगा।

शिग्रु· [स] बेतवृक्ष।

शिग्रुपुष्प· [स] सुनगा का फूल।

शिखण्डाको· [स] राई, अन्न, जड़ पत्ता पानी सब एक साथ कर सिर्की बनायाजाय।

शितवर·
शितवार· } [स] सिरियारी।

शिथिल· [स] ढीला, मन्दा, धीमा, सुस्त, अदृढ़, अपुष्ट।

शिप· [स] विदित, प्रत्यक्ष।

शिखिना·
शिखिभषा· } [स] टाल का चक्ष।

शिखी· शिखो· [स] दोनों सीम तर्कारी।

शिर· शिरस्· [स] मस्तक, माथा, सिर, अग्र, प्रधान।

शिरिंगिका· [स] जलशिरिस।

शिरिष· [स] नामपुष्पखैंकाकार।

शिरीष· [स] सिरिस।

शिरोमणि· [स] शिर का भूषण।

शिरोरुह· [स] केश, बाल।

सिरोरुह नाम—दोहा। अलक सिरोरुह चिकुर कच, कुन्तल कुटिल सुढार। कबरी लसत ललाट जनु, चंदहिं गई दरार ॥ १ ॥

शिला· [स] चटान, पाषाण, मयनशिल।

शिलाजतु· [स] चार रंग का शिलाजीत।

शिलाटिका· [स] लाल गदह-पड़वा।

शिलापुष्प· [स] छरीला।

शिलाह्वय· (स) चार रंग का शिलाजीत।

शिलीमुख· [स] बाण, तोमर।

भ्रमरनाम—सोरठा। मधुकर षट्पद भृङ्ग, भ्रमर शिलीमुख पुष्पलिट। अलि दुरेफ सारंग, चंच·

रीक मधु नत मधुप ॥१॥

शिलीसुखाकर· [स] तरकश, तीर का खोल।

शिलीन्ध्रक· [स] गोबरछाता।

शिलोच्चय· [स] मन्दर, पर्व्वत।

शिल्प· शिल्पि· (स) चित्रकर्म्म, व्यवसाय, शिल्पकर्म्म की कारीगरी, चित्रकलादि-कर्म्म, कारीगरी।

शिल्पकार· (स) शिल्पकर्त्ता, कारीगर, शिल्पी। [कर्म।

शिल्पकर्म. (स) थवई आदि का

शिव· [स] शुभ, कल्याण, श्रेष्ठ पुरुष, शङ्कर, सत्तिल, ब्रह्म, ईश, काफिर।

शिवतत्त्व· [स] कल्याणतत्त्व।

शिवप्रिय· [स] धतूरा।

शिवमल्ली· [स] बड़ी मौलसरी।

शिववीर्य· [स] पारा।

शिवशैल· [स] कैलास पर्व्वत।

शिवसुत वाहन·(स) मयूर, चूहा।

शिवा· (स) पार्व्वती, लक्ष्मी, हरड़े औषध, आमफान्द, हर्रै शमीवृक्ष, भुंईआंवरा।

शिवा शब्द—दोहा। शिवा शंभु की सुंदरी, शिवा स्यार को नाम॥ शिवा हरी किमि रोग हर, इस अघहर हर नाम॥१॥ हरड़ा नाम दो०। अभया पथ्या अव्यथा, अमृता वेची सोय। कल-स्याय पुनि कौनदी, शिवा श्रेयसी सोय॥१॥ एक रिड़ा को सब कहत, हरन उदर को रोग। ते तुम गिरधर लाल की, पाव सकल सुख जोग॥२॥

शिवाटिका· (स) बंशपत्री।

शिवाह्वय· (स) पारा।

शिविका· (स) पालकी, यान विशेष, पीनस, डोली।

शिंशिपा· (स) जंगली शीसो। सरीफा।

शिविर· (स) डेरा, सेनाके रहने का स्थान।

शिविगुंड्रा· [स] मोंह पटेर।

शिशिर·[स] जाड़ा, पाला, ऋतु विशेष, हिम ऋतु विशेष, माघ, फाल्गुनमास, शीतल।

शिशु.[स] बालक, लड़का, अल्प।

शिशुमार·[स] ध्रुवतारा विशेष।

शिष· (स·द) शिषापन, शिष्टी, मारिमारि, दण्ड।

शिष्ट(स) आधीन, आज्ञाकारी, शान्त, सुबोध, धीर, वेदा नुकूलगामी।

शिष्टता[स] आधीनता, नम्रता।

शिष्टाचार [स] सन्मान, विनय, आदर।

शिष्य [स] छात्र, चेला, मताव लम्बी, शिषापन योग्य, शागिर्द। शिष्य नाम—दो॰ मौंडशिष्य दीक्षित सहित, आय महीप समीप, राम लषन को ले चले, गाधसूनु कुलदीप॥१॥ हति ताड़िका सुबाहु युत, गौतम नारि उधारि। धनुष यज्ञ देखन चले, मुनिसंग राज कुमार॥२॥

शिश्न· (स) इन्द्री, लिङ्ग, जगत्।

शिश्नोदर(स)विराटरूप, विष्णु, जगत् हैं उदरमें जिन्ह,को लिङ्ग अरु उदर।

शिक्षक (स) बोधक, ज्ञापक, सूचक, उपदेशक, शिक्षा देनेवाला, गुरु, अध्यापक।

शिक्षा [स] बोध, ज्ञाप, उपदेश सिखाई, ग्रन्थ विशेष।

शीकर (स) फूहारा, जल बुन्द, अम्बुकण, बिस्तार, झींसी फूही, शिकारी जल, कण, सित्यमर:।

शीखी [स] अनल, अग्नि।

शीघ्र (स) तुरन्त, उतावली, बिलंबाभाव, त्वरित, जल्द, छो॰। आशु झटित द्रुत तूर्ण लघु, छिप्र सत्वर उताल। तुरत चली आतुर चलो, आतुर चलि नंद-लाल॥१॥ छंद सुमुखी॥ सबै तजि काम सुवाम चली अति वेगहि मुंचहु चद्रहु आतुर॥ तुरंत लघु तुरितं अविलंबित सीघ्र जयं झटितं सहसापर॥ द्रुतं जरलं रव बाजि रयं चपलं पुनि छिप्र उताल

तुरंसर ॥ त्रिविंसतनाम
वसू जगनं लघु अंतहु छंद
कह्यो सुमुखी वर ॥२॥ छंद
नील ॥ नृत्यत रास बिलास
करै बहु बाद्य बजै। गावत
रागधनिकन कोकिल कंठ
लजै ॥ गोपिन तै अति प्रीति
मुरारि बिनोद कियो। देखि
प्रिया करि कोप तज्यो
पुनि मान कियो ॥ ३ ॥
तासु बिना हरि आकुल
शोक भयो मन मैं। एक
घरी जुग बितत खोजत है
बन मैं ॥ पूछत स्याम फलो
गथ तै नहि धीर रह्यो ।
पंच भगान गुरु पुनि नील
हि छंद कह्यो ॥ ४ ॥

शीघ्रा (स) तामाजड़ी।

शीत· [स] बैंत, चोंस, या ग्रथ-
नम, बहुधार।

शीतफल. [स] अखरोट।

शीतभीरु. (स) मल्लिका।

शीतरससिंधु· (स) कच्चे केतारी
की रस का सिरका।

शीतशूक· (स) सुपेद संगका यव।

शीतल. (स) शीतस्पर्श युक्त प-
दार्थ, ठंढा।

शीर्षरोम· (स) थुनेर।

शीत· (स) हिम, ठंढ, जाड़,
पाला, शितल, जल, हिम
सरदी।

शीतवानीर· (स) बेत वृक्ष।

शीतकाल. (स) हिम ऋतु,
मार्गशिर, पौष मास।

शीर्ष· (स) शिर, मूर्धा, माथा।

शील· (स) प्रकृति, स्वभाव,
भाव, बान, स्थान, पात्र,
सद्वृत्ति, सुन्दराचरण।

शीलसनेह· (द) सुंदरसनेह
वाले।

शीलसंकोच. (स)· सुंदरसंकोच।

शीलवान्·(स) शीलवन्त, सुशील,
मिलनसार।

शीष, शीस·(स) मस्तक, माथा।

शीसुपा· शिंसुपा· (स) शीसो
वृक्ष, अशोक वृक्ष।

शुक· (स) तोता पक्षी, कीर,
निशिचर दूत संज्ञा, व्येष्ठ

मास, शुकाचार मुनिविशेष व्यास पुत्र। शुक शब्द—दोहा। शुक निसर अरु शूक गन, शूक जेठ के मास॥ शुक जु अजहुं आवमहि प्रति, पसपत भरत उसास॥ १॥

शुक: (स) } शुकच्छद: } थुनेर।

शुकतरु (स) शिरिस।

शुकरताल (स० शुक्रावतार) एक तीर्थ स्थान, मालिनी एक छोटी सी नदी बिजनौर के ज़िले में गंगा जी से थोड़ी दूर पूरब को है और हस्तिनापुर वहां से दक्षिण ओर पन्द्रह सोलह कोस है बीच में गंगा जीके दाहने तटपर शुक्रावतार तीर्थ है जिसे अब साधारण लोग शुक्रताल कहते हैं।

शुकवल्लभ (स) अनार वृक्ष।

शुकसारण (स) नाम राक्षस दूत संज्ञा, ए दोनों पूर्व ऋषि थे श्री भगवल्यजी के श्राप ते राक्षस भयो है।

शुक्रदेव (स) मुनिविशेष, व्यास पुत्र।

शुकतुण्ड (स) पीला सिमरिख।

शुकनासा (स) सोनपत्ता।

शुकपुष्पशुकप्रिय (स) थुनेर। शिरिस।

शुकवर्ह (स) थुनेर।

शुकशिम्ब (स) केमाच।

शुक्ति (स) सीपी, शंख, घोंघा सितुहा का कीड़ा।

शुक्तिज (स) मोती।

शुक्त (स) चूक, शराब।

शुक्तिमुक्ता (स) सीप का मोती।

शुक्र (स) ज्येठमास, शुक्रदेवता, कठवांसह, अग्नि, वीर्य। शुक्र नाम—दो०। उशना भार्गव काव्य कवि, असुर पुरोहित सोहि। गजमुक्तान के माल यह, शुक्र धरे जनु पोहि॥ १॥ दैत्य पूज्य उशना कवि, शुक्र

भार्गव जान ॥ असुर गुरु एकाच युत, सब षट नाम बखान ।

शुक्रसंभूत· (स) अग्निजात, कार्त्तिकेय, शिवपुत्र ।

शुक्राम· (स) किवंटी मोथा ।

शुक्ल· (स) उज्ज्वलवर्ण, धौला श्वेतवर्ण, चांदी, शुद्ध ।

शुक्लपक्ष·(स) मास का उत्तरार्द्ध भाग, प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त ।

शुक्लाकन्दा· (स) अतीस ।

शुक्लतुलसी· (स) सुपेदतुलसी ।

शुक्लफला· (स) सुपेद अकवन ।

शुक्ला· (स) खुरासानी बच ।

शुक्लैरण्ड·(स) सुफेद रेंड़ ।

शुङ्गी· (स) बरगद ।

शुचि· (स) पवित्र, स्वच्छ,श्वेत, भल्ली, सुन्दर, पाक ।

शुण्ठी· (स) सोंठ औषध, सुखी अद्रख ।

शुण्ड·(स) सूंड़, हाथी का नाक।

शुण्डाल· (स) गज, हाथी ।

शुद्ध·(स)पवित्र, निर्दोष, अकेला वचन, केवल, निर्मल, सैन्धवलवण ।

शुद्धान्त· (स) रनिवास ।

शुद्धि· (स) फर्कोहट, पवित्रता। शुद्धता, निर्मलता, शोधन।

शुधि· (स) (प) पवित्र, खबर ।

शुनसेफ (स) श्वानपूंछ, कुक्कुर की पूंछी ।

शुभ· (स) कल्याण,सुभाग, भला, मङ्गल, क्षेम, कुशल, श्रेय शुभयुक्त खुसी ।

शुभग· (स) मनोहर, सुंदर ।

शुभा· (स) बकरी ।

शुभ्र·(स) उज्ज्वलवर्ण, निर्मल ।

शुभ्रा· (स) बंशलोचन ।

शुल्य· (स) तामा धातु, कवाब बनाने का कांटा ।

शुल्यमांस·(स) कवाब मांस का ।

शुश्रूषा·(स)सेवा, टहल,कहना, उपासना, श्रवणेच्छा ।

शुष्क· (स) सूखा, निरस, कठोर, निस्सार, सूखाहुआ, खुश्क ।

शुष्कमत्स्य· (स) सूखी मछली।

शूकधान्य·(स) सुपिदमुंग का जव।

शूकर. (स) सूअर, बराह, कोल, पशु विशेष।

शूकरखेत· शूकरक्षेत्र· (द) बराहक्षेत्र·। [अशुचि।

शुतक· (स) प्रसव से अशौच,

शूद्र·(स) हिन्दुवों में चतुर्थ वर्ण।

शून· (स) हत्या विशेष·।

शून्य· (स) खाली, छूछा, बिन्दु, आकाश, निर्जन स्थान, अभाव, असंपूर्ण, जन, तुच्छ

शून्यमध्य· (स) नरकट।

शून्यवादी· (स) नास्तिक, बौद्ध।

शूर· (स) वीर, शूरमा, रावत, सूअर, सूर्य, सिंह, शूकर, बलवान, अद्ध शूर वीर वाचक का पंच प्रकार ॥५॥ रणशूर कुंभकरण अस १. धर्मशूर राजा मोरध्वज १, राजा रन्तिदेव २, राजा हरिचन्द्र ३. राजा शिवि ४) अस। दानशूर राजा बलि अस॰ २॥ तप शूर, स्वायंभूमनु १ राजा दधीचि राजा भागीरथ॰ ३ अस ४॥ ज्ञानशूर ऋषभदेवादि अस ५॥

शूरण. (स) ओल।

शूरति· (स) शूरता, खेयाल।

शुराई· (प) शूरताई, वीरताई।

शूर्प· (स) सूप, डगरा, छाग, छाज।

शूर्पनखा· (स) सूपनखा रावण की बहिनी, अथवा शूर्पवत् नख होय जिस नारी को सो शूर्पनखा।

शूल· (स) त्रिशूल हथियार, पीड़ा, कांटा, कील, शूल, भा को पट्टिस सो फल।

शूली· (स) खरहा, ४ पद।

शूलधर· (स) शिव। पीड़ित, दुःखित।

शृकाल, शृगाल· (स) गीदड़, बनचर, सियार, चौ॰। बारबार इमि कहेउ कृपाला। नहि गजारि यश बधेशृगाला। अर्थात्

जैसे स्यार के मारने से गजारि अर्थात् सिंह को यश नहीं होता, तैसे हि रावण तेरे मारे रघुनाथ को सुयश न होगा।

शृङ्खला·(स) सुरखा, जञ्ज, मेला, कड़ी, बन्धन, ज़ंजीर, बेरी।

शृङ्ग·(स) सींग, शिखाग्र, शिखर, कलश।

शृङ्गक·(स) डकड़ा विष।

शृङ्गवेर·(स) सोंठ, अदरख।

शृङ्गवेराभमूलक·(स) गोंदपटेर।

शृङ्गवेर·(स) सूर्य्यपर्व्वत प्राप्ति काल अर्थात् गो धूलिवेर, दिनरात्रि अभावकाल, नामपुरी निषाद,जा को सिंगरौर भी ख्यात।

शृङ्गार·(स) सिंगार, शोभा, प्रथम रस।

शृङ्गाटक·(स) सिंघाड़ा।

शृङ्गालिका·(स) बिलारू कंद।

शृङ्गी·(स) पर्वत, शिखरी, बाजा भेद, योगी, शरीर, ककरासिंही, सिंगीमछली।

शृणु·(स) क्रियापद अर्थात् सुनो।

शृतशीत·(स) ठंढा काढ़ा।

शेप घण्टा·(स) तामा जड़ी।

शेथ·(स) पलङ्ग, आसन।

शेल·शेला·(स) शक्ति हथियार, बर्छी।

शेलु·(स) महुआर।

शेष·(स) नागपति, विस्तार, सूक्ष्म, बचन अशक्ति, अवशिष्ट, अन्त, सीमा, बाकी, अर्थ, अतुलितशक्ती, अनूपवीर, अनंत, अवशेष। अनंत शब्द—दो०। गगन अनन्त कहत बुध, बहुरि अनन्त अनेक। सेष अनन्त कहत कवि, हरि अनन्त अव एक।

शेषरात्रि·(स) अर्द्धरात्रि।

शेषावस्था·(स) वृद्धावस्था, बूढ़ापा।

शैत्य·(स) हिम, शीतलता, जाड़ा।

शैथिल्य·(स) शिथिलता, ढोलाई।

शैवलिनी·(स) नदी, सरिता।

शैल·(स) पर्व्वत, पहाड़,

पहाड़, कूट। कूटशब्द —
दो०। कूट बहुत घन कूट गिरि, सहिरण कूट कहंत। कूट कपट कह निपट तम, भजले मन भगवंत ॥१॥

शैलजा.(स)पार्व्वती,गिरिजा।

शैलधातुक. (स) चार रंग की शिलाजीत। [हिमगिरि।

शैलनाथ. (स) शिव, महेश,

शैलनिर्य्यास. (स) चारो रंग की शिलाजीत।

शैलराज. }
शैलराय. } (स. प.) राजा हिमाचल,पहाड़ का राजा।
शैलराव. }

शैलसुता. स)गिरिजा,पार्व्वती

शैली. (स) रीति, चाल, परिपाटी, भांति।

शैलुष. (स) बेलवृक्ष।

शैलूष. (स) बेल।

शैलेय. (स) छरीला।

शैलेश. (स) शिव, शङ्कर।

शैव. (स) शिवोपासक, शैवी, पथविशेष।

शैवल. शैवाल. (स) सेवार।

शोक. शोग. (स. प) दुःख,सोच, कष्ट, सन्ताप, चिंता, रंज, गम, फ़िक्र।

शोचनीय. (स) शोचैयोग्य, शोचने के पात्र। [रक्त।

शोण. (स) नदीविशेष, लालिका

शोणित. (स) रुधिर, रक्त, लालिमा, लोहू, खून।

शोणिताभिध. (स) केसर।

शोथ. (स) सूजन, फूलाव।

शोथघ्न. (स) लाल गदहपड़वा।

शोथघ्नी. (स) सुपेद गदहपड़वा।

शोध. (स) शुद्धि,ऋणपरिस्कार, खोज, विचार। [चिता।

शोधन. (स) शुद्धिकरण, निर्द्दोशीभा. शोधित. (प) खोजकिया, पवित्र कियो।

शोफघ्न. (स) भिलावा।

शोभन. (स) मनोहर, सुन्दर।

शोभा. (स) सुन्दरता, सिंगार, दीप्ति,कान्ति। शोभानाम।
दो०। भा धाभा शोभा प्रभा, सुषमा परमा कान्त। छविदुति पति ललित जहं, सुरन होत मन भ्रान्त ॥१॥

छंदप्रमोद । स्याम सिंगार समारि सबै तनु सोभित आभा श्री रुचि रोच। कांति प्रभा तिट दीप्त दुती सुखमा छवि सोभा भारुच सोच ॥ लखि भये दृग गोपवधू सुनि बेणु धुनी भी श्रीत विनोद। पंच भगान भगान पुना सगनं लघु अंतौ छंदप्रमोद ॥ १ ॥

शोभांजन· (स) वेतवृच्छ।

शोर· (स) आवाज़, पुकार, ऊसर। [चूसनहार।

शोषण· (स) चूसाव, शुष्कता,

शोषणप्राण· (स) बाण, तोमर।

शौक्तिक· (स) मोती।

शौच· (स) स्नान, फर्राई, शुद्धि, पवित्रता।

शौण्डो· (स) पीपल।

शौण्डीका· (स) लघु पीपलि।

शौर्य्य. (स) शूरमापन, वीरता, योधापन, शक्ति, बल, पराक्रम, वीरत्व।

श्मशान· [स] मरघट, मुरदाघाट, मुरदह फूकने की जगह।

श्मप· [स] विदित, प्रत्यच।

श्याम· [स] काला रङ्ग, ईश्वर, कोकिला, मरिच, कृष्णवर्ण हरिदर्ण, सैन्धव लवण। श्री कृष्णचन्द्र को शिष ते नष लौ श्याम वर्णन—दो०।

श्याम नाम गुण रूप छवि, शारद कहत सकोच। श्रुति जिह्वा शुचि हित कह्यो, हरि विलास मति पोच॥१॥

श्यामक· [स] सांवां अन्न।

श्यामल· [स] कृष्णवर्ण विशिष्ट, काला। [मानुजा।

श्यामला· [स] यमुना नदी, यश्वेत· (स) शुक्लवर्ण, सफेद।

श्यामसबल· (स) उभीज्ञान विशेष जो भोजन काल सूक्ष्मरूप स्थितमान।

श्यामा· [स] स्त्री सोलह वर्ष की, लक्ष्मी, प्रियंगु, जंगली कौसी, समलर, पीपल, पाटलि, लघु पीपलि,

काली रंग की चीड़िया विशेष, सुन्दरी, श्यामा—शब्द—दोहा ॥ श्यामा तिय जो रज बिना, श्यामा रज-नी होइ ॥ श्यामा कहिये प्रीत सों, करो श्याम सो सोइ ॥ १ ॥

श्यामाक· [स] रोहिस ।

श्रद्धा· [स] आस्तिक्य बुद्धि, आ-दर, भक्ति, विश्वास, स्पृ-हा, शुद्धि, वेदगुरु वाक्य सों प्रतीति । [वान् ।

श्रद्धालु· (स) श्रद्धायुक्त, श्रद्धा-

श्रम· [स] तापदिद्दरण, आश्र-य, कष्ट, मेहनत, थकना, तप, खेद, आयास, शस्त्रा-भ्यास ।

श्रमकण· [स] पसीना, पसेव, पसीने की बूंद ।

श्रमभारु· [द] जन्म मरणादि, चौ० । सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू । अर्थात् भारी श्रम मिटत । [के बुन्द ।

श्रमबिन्दु· श्रमबुन्द. [स] पसीना

श्रमित· [स] लज्जित, आश्रयी, थकित । [खोजी ।

श्रमी· [स] उद्यमी, यत्नी,

श्रव· श्रवण· [स] कर्ण, कान, सुनवट, कर्ण वा कपोल नाम—दोहा ॥ श्रवण शब्द गुरु श्रोत्र श्रुति, कर्ण कुंडल लोल ॥ बिहरत मानो वारिचर, सरवर गंड कपोल ॥ १ ॥ सुनना, कर्णेन्द्रिय श्रवननाम—दो० । श्रुति अरु श्रोत्र श्रवण पुनि, कर्ण सुभी छवि भोर । मनो बिरूप सु कवल कलि, फूले ससि पुख तोर ॥ १ ॥

श्रवहिं· [द] गिरहिं ।

श्रवणपूर· (स) कर्णभूषण ।

श्रान्त· [स] श्रमयुक्त, शान्त, जीतेन्द्रिय ।

श्राद्धशाक· [स] गोलवा शाग ।

श्राधा· श्रद्धा· [द] गुरु वेदांत वाक्येषु विश्वास श्रधा ।

श्रावण· [स] सावन मास, मास विशेष, पाखंड ।

श्रावणशीर्षक· (स) मुंडली, तेन्द्रिय।

श्रावणी, (स) मुंडली, राखी।

श्री· (स) लक्ष्मी, श्रेष्ठ, शोभा, धन, कल्याण, तेज, प्रताप, लवंग भेष रचना, प्रभा, कीर्त्ति, बुद्धि विभूति, अधिकार, वृत्ति, सिद्धि त्रिवर्ग, संपत्ति, प्रकार, उपकरण, आप। चौ०। ते तुम्ह रामय काम पिआरे। दीनबन्धु मृदुबचन उचारे। अब जानी मैं श्री चतुराई। भजिय तुम्हहिं सब देव बिहाई॥ अर्थात् ते तुम्ह निष्काम पियारे दीनबंधु हे श्रीराम आपु मधुर बचन उच्चारण किए, अब मैं ने श्रीचतुराई आपु की चतुराई श्रीपरम ऐश्वर्य्य के हेतु है यह मैं जाना ताते सब देवन को छोड़िके तुम को भजिए। भाव। तुम्ह अपने भक्तों को अपने से अधिक मान देत हो औ अवर सेवक सम राखत हैं, वा हेराम आपु मृदु बचन कहा ताते अब हम आपु को दीनबंधु जाना ताते श्री चतुराई शोभित चतुराई हमारि यहै कि तुमही को भजिए, भजिय तुमहि यह पाठ और टीकाकारन ने राखा है तेहि के अनुकूल यह अर्थ किया औ मिरजापुर को पाठ 'भजो तुम्हहिं सब देव बिहाई' है तेहि की अनुकूल यह अर्थ अब मैं श्री की लक्ष्मी ताकी चतुराई जानो कि सब देवतन को त्यागि के तुम्ह हीं को अंगीकार किए, वा श्रीं जानकी औ जो स्वयंबर मैं देवदनुजधरिमनुजशरीरा, सब राजे जुरे रहे भजी बरो तुम्हें सब देव बिहाय छोड़ि। कोई भू श्रीकीता

कई रूप माने । परिचर्या कारो या रीति चार स्वरूप अनूप तिहारे सो सब रूप ते रघुबरे को भजो बरी ।

श्रीखण्ड· (स) चन्दन, गन्धसार, सुपेद चन्दन ।

श्रीचतुराई. [द] आप की चतुराई, चौ०। अब जानी मैं श्रीचतुराई । भजिय तुम्हहि सब देव बिहाई ॥ अर्थात् श्री आप की चतु· राई को मैं ने जाना कि आप कहते हैं कि और देवतों को छोड़ के मुझी को भजो ।

श्रीपति·(स) विष्णु, लक्ष्मीपति ।

श्रीपट्टी· (स) बेला फूल ।

श्रीपर्णी·(स) गम्भार, गनिधार, कायफल ।

श्रीप्रसून· [स] लौंग ।

श्रीफल·(स) बेल, बिल्व, नारियल ।

श्रीफली· (स) नील ।

श्रीवत्स· [स] कमलाक्ष, लक्ष्मी का चीन्ह । [वान्, धनी ।

श्रीमत. [स] शोभामन्त, भाग्य

श्रीमान·[स] तिलपुष्पी ।

श्रीवारक. [स] सिरिधारी ।

श्रीवास· (स) सरल, निर्य्यास ।

श्रीयसी· (स) हरैं, रास्ना, गज पीपल । [विष्णु ।

श्रीरङ्ग· (स) लक्ष्मी, शोभित,

श्रीसंज्ञ· (स) लौंग, लवङ्गलता ।

श्रीहत· (स) शोभाहीन, लक्ष्मी हीन ।

श्रुत·(स) सुना, कर्णगत, सन्देश, कान । [कर्णेन्द्रिय ।

श्रुति· (स) वेद, श्रवण, सुनना ।

श्रुतिकीर्त्ति·(स) कुशकेतु जनक के लघुभ्राता ताको लघु पुत्रीशत्रुहनबियाहिता।

शृङ्खल· (स) बन्धन, सङ्कल, सीकर ।

शृङ्खला. (स) बेरी, सुरवा, सीकरी, फसरी ।

श्रेणी· } (स) } पांति, पंक्ति, स·
श्रेणि· } } कीर समूह, छिद्र रहित पंक्ति, पंक्ति वा दशन नाम—दोहा। श्रेणिमला· का धर्वाल पुनि, राजी

वाकी पंक्ता । मुक्ता सम घनश्याम के, दमन कदन रद दंत । १ ॥

श्रेय· (स) मुक्ति, मङ्गल, श्रेष्ठ ।

श्रेयस्· (स) धर्म, मोक्ष, शुभ, अति प्रशस्त ।

श्रेयसी·(स)हरड़े वृक्ष,कल्याण ।

श्रेष्ठ· (स) उत्तम, बड़ा प्रशस्त ।

श्रोणी· (स) जानु, जांघ ।

श्रोत· (स) नदी, झरना ।

श्रोतव्य· [स] श्रवणीय, सुनने योग्य ।

श्रोतस्· (स) नदी, सरिता ।

श्रोता (स)सुननेवाला, सुनवैया, श्रवण धारी, कर्णधर ।

श्रोतात्रिविध· (स) उत्तम जो- बनमुक्त, मध्यम मुमुक्षु, कनिष्ट विषयो ॥१॥ सा- त्विको,राजसो,तामसो॥२॥

श्रोत्र· (स) श्रवण,कर्ण कर्णेन्द्रिय, कान ।

श्लाघा· (स)स्तुति,प्रशंसा,वाञ्छा, प्रेम, अभिलाषा, लालसा ।

श्लेष्मा· (स) कफ, खखार ।

श्लोक, (स) पद्य, दोहा, छन्द, यश, प्रीति ।

श्वदंष्ट्रा, (स) हर्चिकार ।

श्वपच, (स) डोम, चण्डाल, जो भोजन के लिये कुत्ते को पकावे ।

श्वफल्क, (स) अक्रूर के पिता ।

श्वल्प, (स) हलुवा, हलुश ।

श्वसित, (स) साहित्य ।

श्वशुर, श्वसुर, (स) पति वा पत्नी का पिता, ससुर, भार्या का पिता ।

श्वश्रु· (स) सास, सासु, पति वा पत्नी की माता ।

श्वा· (स) एक कुकुर ।

श्वान· (स) कुकुर सब, कुत्ता अनेक, कुकुर, कुत्ता । खर शब्द—दोहा । खर राक्षस खर श्वान खर, खर तीक्षन को नाम । खर गरधभ जग में कोई, जो न भजे हरिनाम ॥ १ ॥

श्वास· (स) प्राणवायु, सांस, श्वासित वायु, प्राण, रोग विशेष ।

श्वित्र (स) कोढ़, सपेद, रक्तनष्ट।
श्वीकार (स) अङ्गीकार।
श्वेत-श्वेत (स) शुक्लवर्ण, उज्ज्वल, धौला, द्वीप विशेष।
श्वेतकुवलय (स) सुपेद भेंट।
श्वेतगुञ्जा (स) सुपेद घुंघची।
श्वेतपुष्प (स) सुपेद फूल का सेनुवार, सुपेद कनइल, सुपेद अकवन।
श्वेतपुष्पा (स) बड़ी इनारुन।
श्वेतपुष्पी (स) नागपुष्पी।
श्वेतमरिच (स) सुगना का बीया।
श्वेतमाष (स) सुपेद मसी।
श्वेतमुद्ग (स) सुपेद मूंग।
श्वेतमूला (स) गदहपंडुवा।
श्वेतराजी (स) चिचिंगड़।
श्वेतवृन्ताक (स) सुपेद बैगन।
श्वेतशिम्बी (स) सुपेद सेम।
श्वेतसार (स) पपरिया खयर।
श्वेतादूर्वा (स) सुपेद दूब।
श्वेतासुद्रा (स) सुपेद फूलकी रेंगनी।
श्वेतार्क (स) सुपेद अकवन।

ष

षंड. (द) खंड, टुकड़ा षंड-नाम—सोरठा ॥ लखचन्द्र भगवान, भनुरक्षक इति कीन पुनि। षापषंड कण भान, सकल लोग सकर्म विकल ॥१॥
षगड़ा (स) गैंड़ा, बनजन्तु।
षट् (स) छ, संख्यावाचक।
षट्विकार (स) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद मत्सर्ज यथा—चौ०। षट विकार तजि अनघ अकामा। अ-चल अकिंचन सुचि सुख-धामा ॥ अमित बोध पर-मारथ भोगी। सत्यसार कवि कोविद जोगी ॥ १ ॥ अर्थात् काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ मत्सर किसी का ऐश्वर्य्य न देख सकना ५ अहंकार ६ को छोड़ के पाप रहित और कामना रहित और अचल

रहित और वाइना रहित और पवित्र और सुख जिन के हृदय में स्थित है। सत्य सार के कवि अर्थात् कहने वाले हैं और कोविद सत असत के जाननेवाले योगी इन्द्रीयजित। षट विकार। दो०। जन्म अस्ति परिणाम क्षय, उदरान्तर गतमान। वृद्धि क्षय सह नाश क्षय, बाहिर ज्ञान सुजान ॥ १ ॥

षटभग भगवान· (स) दो०। श्री ऐश्वर्य विराग यश, मोक्ष धर्म यश ज्ञान। ए षड भग को खान जो, तिहि कहिये भगवान ॥ १ ॥

षटऋतु· (स) दो०। ग्रीषम पावस शरद कहि, शिशिर हिमंत बसंत। ए षट ऋतु को अंत है, बिना भक्ति भगवंत ॥ २ ॥

षट्रस· (स) खटाई अम्लादि १ मीठा लड्डु आदि २॥ चरपरा मरीच सोंठ आदि ३॥ खार नोन गरा आदि ॥४॥ कषाय ओला हरा आदि ॥ ५ ॥ कटु मिरचाई ॥ ६ ॥ आदि षटरसस्वाद· दो० कटु तिक्ताम्ल कषाय अरु, मधुर लवण षट जानि। कूट सुंठि चिंचा अभया, गुड़ सैंधादि बखानि ॥ १ ॥

षटउर्मी· (स) दो०। क्षुधा पिपासा प्राण के, जन्म मरण तन जानि। शोक मोह मन को होऊ, षट उर्मिं पहिचानि ॥ १ ॥

षटवननाम· }
षटपंक्तिनाम· } (स) दो०। वन कानन अटवी विपिन, गहन अरण्य बखानु। पंक्ति आलि अवली विथी, श्रेणि राजि षट जानु ॥ १ ॥

षटकपटनाम· (स) दो०। कपट छद्म कैतव प्रधय, व्याज दंभ षट होइ। तिहि तजि भजि सियराम

पूर। ज्ञानी कौं अति निकट सो, मूरख कौं अति दूर ॥८॥

षटकमलदल· (स) दो०। चारि षष्ट दश द्वादशरु, षोडस द्वै दल भाग। पृथ्वी जल अग्नि पवन, पुनि आकाश मन जाग ॥१॥

षटविधिशरणागत. (स) दो०। प्रभु के अनकूलत्व कौं, करै विचार सदाइ। पुनि त्यागन प्रतिकूल को, मन वच कर्म सुभाइ ॥१॥ अपनो रक्षा पैं रखैं, सर्व काल विश्वास। एई मम रक्षक सदा, इहि विधि दृढ़ मन आस ॥२॥ सर्व कर्म परित्याग पुनि, निज कृपणाई जान। प्रभु को कृपा अभीष्ट को, रक्षण षट विधि मान ॥३॥

षडंगवेद· (स) दो०। शीक्षा कल्पहि जानिये, औ व्याकरण निरुक्ति। छन्द नाम बरणात सुकवि, पुनि जोतिष संयुक्ति ॥१॥ वेद पढ़न को विधि सबै, शीक्षा देइ लखाय। सब करमन की रीति जो, कल्पहि तें दरसाय ॥२॥ शब्द अशुद्ध शुद्धि को, ज्ञान व्याकरण जानि। कठिन पदन के अर्थ कौं, कहै निरुक्ति बखानि ॥३॥ अक्षरमात्रा हुति को, ज्ञान छंद सौं होय। जोतिष काल ज्ञान इमि, वेद षडंग गनोय ॥४॥

षटदेशस्थान· (स) दो०। गुदा शिश्न नाभी हृदय, कंठ भृकुटि गनि लेव। गणपति ब्रह्मा विष्णु शिव, जीव अग्निषट देव ॥१॥

षटचक्र· (स) दो०। अधार स्वाधिष्टान पुनि, मणि पूरक कहं जानि। अनहत और विशुद्ध कहि, आज्ञा षट प्रमाण ॥१॥

षटयोगकर्म· (स) दो०। धोती बस्तीनेति अरु, त्राटकनोली

जान । पुनि कपाल भस्त्री
छठौं, ये षट् कर्मबखान॥१॥
यथा धोती । दो० । मृदुल
मिहीं सित बस्त्र मिति,
विस्तर अंगुल चार । पन-
रह करकी तूल ले, तूल तासु
को फार ॥२॥ ताहि भिंजैं
जलसौं ग्रसैं, गुरु उपदेसहि
पाइ । पुनि काढै तिहि
उदर तें, धरैं धरैं करि
चाइ ॥३॥ कास श्वास
पिलही अपर, कोढ़ जिते
कफ रोग । धोती कर्म
प्रभाव इन, सब तें होय
वियोग ॥४॥ बस्ति । दो० ।
नाभि मान जलमाहिं मग,
निहुरि अकुंचि अधार ।
खैंचे पवन अपान सौं, बस्ति
कर्म निर्धार॥६॥बात पित्त
कफ उदर रुज, पिलही
आदि अनेक । नासै जठर
नल बंधे, सुर दुति सहित
विवेक ॥७॥ नेती । दो० ।
मृदुल नेह युत सूत की,
बाती डेढ बिलस्त । नाक
नाखि मुखमग काढै, नेति
सिद्ध की अस्त ॥८॥ अर्द्ध
जात रोगनि हरैं, शोधे
शुद्ध कपाल । नैन जोति
बर्द्धन करे, हरै मौलि मल
जाल ॥९॥ त्राटक । दो० ।
अनमिल निश्चल डीठकरि,
चितवै सूक्षम लक्ष । सो
त्राटक अंसुवा गिरे, तौलौं
मिचे न पक्ष ॥१०॥ दूरि
होइ दृग रोग सब, सिद्ध
होय जब कर्म । ताहि
छिपावे वित्त लौं, कहै न
काज मर्म ॥११॥ नौली ।
दो० । उदरहि बामद
दाहिनै, वेगि वेगि बहु
बार । चालन भ्रमन कराव
यह, नौलि कर्म ब्यौहार
॥१२॥ पंचागिनि दीपन
करे, मंदागिनि मिटि जाय ।
उदर दोष शोषन सरस,
संतोषन सुखदाय ॥१३॥
कपाल भस्त्री दो० ज्यौं
लुहार भस्त्री धवै, क्रम
करि बार बार । त्यौं रवि
शशि मग खैंचि तजि,
पवन कर्म ब्यौहार ॥१४॥
सिद्ध होय सोधन करे,

सब कपाल कफ जाल। याही कों योगीश सब, भाषत भक्ति कपाल १५

षट्कर्म ब्राह्मण का· (स) यजन १ जापन २ अध्ययन ३ अध्यापन ४ दान ५ प्रतिग्रह ६।

षटकांश· (स) छः कचा।

षट्पदा (स) भौंरा।

षट्पदानन्द. (स) बेला फूल।

षड्गन्धा. (स) बच, पहाड़ी सुगन्धवाला, कराट।

षड्षण· [स] काली मिर्च, पंच कोल।

षटपद· [स] भ्रमर, भौंरा, छप्पय, छपै छंद।

षट्सम्पति· (स) शम, दम, उपरति, तितिक्ष, श्रद्धा, समाधान।

षड़ानन [स] कार्तिकेय, शिवपुत, छः मुख।

षट्रस·(द) मधुरादि षट्प्रकार यथा मधुर, तिक्त अम्ल, लवण, कटु, कसाय।

षड्गुण· [स] पोषण, भरण, अधार, सर्व्वशरण, सर्व्वव्यापक, कारुण्य।

षड्वदन· [स] शिवपुत्र कार्त्तिकेय।

षड्विकार· [स] जन्म वर्द्ध, विपरिणाम, चोयत, हानि, नाश ॥ ६ ॥ काम, क्रोध लोभ, मोह, मद, मत्सर्य६॥

षण्मातु· षण्मुख· [स] कार्त्तिकेय, शिवपुत्र।

षण्ट. [स] नपुंसक, नामर्द।

षष्टिक· [स] साठीधान।

षष्टी·[स] साठ, संख्या वाचक।

षष्ठ [स] छठवां, छवां।

षष्टिका· [स] साठी धान।

षष्ठी. [स] छठी तिथि, देवी विशेष।

षभाव [स] शोक।

षिला.[स] विदारण,पसारण।

षीण· [स] क्षय, दुर्बल, दूबर।

षोड़श· [स] सोलह संख्या वाचक १६ संख्या विशेष।

षरतरतीर· खरतरतीर· [द] तीव्र तर बान। ष को ख समुझना। गोस्वामी तुलसीदास लिखित रामपुर के पुस्तक में ख को ष लिखा और भाषापुस्तकन

में भी ख को ष प्राय: लिखा मिलता है।

षोड़शशृङ्गार. (स) सिंगार सोलह तरह का है, १ शरीर का मैल उतारना, २ न्हाना, ३ साफ़ कपड़े पहनना, ४ काजल डालना, ५ अलता से हाथ पैर रचना, ६ बाल संवारना, ७ सिंदूर से मांग भरना, ८ लिलाड़ में केशर चन्दन की खोरी या निकालना, ९ ठुड्ढी पर तिल बनाना, १० मेंहदी लगाना, ११ देह में अरगजा या इतर आदि सुगंधित चीज़ लगाना, १२ गहना पहनना, १३ फूलों की माला आदि पहनना, १४ पान चबाना, १५ दांत रंगना, १६ होठों को लाल करना। छंद सुद्गीत। तनु मज्ज तिलक सुगंध शुभ पट अंजन दृग मंजन रदन। कटि सूत्र कंकन माल कुंडल अलक अलिवली बदन, अंगराग कुच मंडन चतुरता तुलायुत जावक पदन। सुद्गीत छंद सिंगार षोड़श बीसबसु कला प्रतिपदन॥ दोहा। प्रिय श्रृंगार विहार करि, नटवर नंदकिशोर। मान जानि मोज तजि, कानन रमनो खोर॥ १॥ उते गोपिका अति विकल, स्याम तजो करि कूट। यथा नीलमणि क्षपण धन, गयो गांठ ते छूट॥ २॥ पुन:। दोहा। प्रथम अंग शुचि एक विधि मज्जन द्वितीय बखान। अमल बसन पहिरन तृतीय, जावक चारि सुजान॥१॥ पंचमकेश संवारिबो, षष्टम मांग सिंदूर। भाल खोर सप्तम कहत अष्ट चिबुक तिल पूर॥ २॥ मिहंदी

कार पग रचन नव, दशम करगजा अंग। ग्यारह भूषन नग जटित, बारह पुष्प प्रसंग ॥३॥ बास राग मुख तेरवीं, चौदह रंगि यो दांत। अधर राग गति पंचदश, कज्जल षोड़स भांत ॥ ४ ॥

षोड़शउपचारपूजा. (स) स्त्री०। षोड़श बिधि पूजा, सोलह प्रकार से पूजा अर्थात् आवाहन, स्थापन पाद्य, सिंहासन, अर्घ, आचमन, स्नान, चंदन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमस्कार, आरती १६ दो०। आवाहन अस्थापनो, पाद्य सिंहासन जोत। अर्घ और स्नान पुनि, चंदन पुष्प उद्योत॥१॥ धूप दीप नैवेद्य कहि, बहुरि आरती लेखि। तांबूल सुप्रदक्षिणा, नमस्कार सविशेषि ॥२ ॥

षोड़शभगवान के पार्षद (स) दो०। बिष्वकसेन रु जय बिजय, नंद सुनंद बिनीत। भद्र सुभद्र रु चंड पुनि, है प्रचंड सुन मीत ॥ १ ॥ और कुमुद कुमुदाक्षपुनि, शील सुशीलहि जान। कृतम सेन षोड़श भये, पार्षद श्री भगवान ॥ २ ॥

षोड़शचन्द्रकला. (स) स्त्री० चन्द्रमा को १६ कला अर्थात्, अमृता, मनदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूरणा, पूर्ण अमृता १६। दो०। अमृता कहत जु मानदा, पुष्पा पुष्टि सुतुष्टि। रतिधृति शशिनी चंद्रिका, कांति जोतिष्या पुष्टि ॥१॥ श्री कहियत अरु प्रीति है, भनत अंगदा नाम। गनत पुनी है सकल कवि, पूरन अमृत नाम ॥ २ ॥

षोडश ब्राह्मण संस्कार. (स) दो०। गर्भाधानद पुंसवन, सीमंतद शुभ साध। नाम कर्म निष्कर्म पुनि, जानहु बुद्धि अगाध ॥ १ ॥ अन्न प्राशन चौल कहि, कर्न-वेध उपवीत। वेदारंभ दीक्षा बहुरि महाव्रत सुपनीत ॥ २ ॥ डाढ़ी मुंडन मुंजि को, त्यागन बहुरि विवाह। संसकार षोडश कहैं, ब्राह्मन धर्म निबाह ३

षोडशदान. (सं० षट् छः, दश दस गु० सोलह, षोडश + दान) पु० सोलह चीजों का दान, जैसे १ धरती आसन, २ पानी ३ कपड़ा, ४ दीपक या दीप के लिये तेल, ५ अनाज ६ पान ७ छत्र ८ सुगंधित चीज़ ९ फूलों की माला १० फल, ११ सेज १२ खड़ाऊं १३ गाय, १४ सोना १५ रूपा या चांदी १६

षोडश भुजा (सं) षोड्श सोलह, भुजा, हाथ स्त्री० सोलह हाथ की दुर्गा, देवी की मूरत।

स

स. (स) सहित, को।

सई. (द) स्त्री० नदी विशेष, एक नदी का नाम, स्यन्दिका।

सक्त. (स) थोड़ा।

सकूल. (स) कुल सहित।

संकाश. [स] तुल्य, बराबर।

सं. [स] सहित, साथ, मिला, सम, कल्याण, भला।

संकट. [स] मूर्च्छा, विपत्ति।

संकुल. [स] समूह, पूर्ण, भरा, बिलकुल।

संकुलमति. [स] बड़ीमति।

संकर. शंकर. [स] शिव, महादेव, मिला हुआ।

संख. [स] नाम राजा जाकी कथा सिंहासनबतीसी मों ख्यात, बाजा, संख या कंठ नाम – छंद मोटनक ॥ •लाजैदर कंबुक संख दरी।

संभूत· [स] उत्पन्न पैदा हुआ।

संभ्रम· [स] वेग, जल्दी, भ्रम, धोखा, उत्साह।

संवत· [स] राह का खर्ची।

संवुक· [स] घोंघा।

संभावना· संभव·[स] दोविधा, यथा उचित समुझ कहो नित्य को नित्य अनित्य को अनित्य जानना, अरु असं-भावना· विपरीत समुझ कहि नित्य को अनित्य अरु अनित्य को नित्य जानना॥

संभावित· [स] बड़ामान्य, अति आदर वा मान किया गया।

संभार· [स] सामग्री, वस्तु।

संमत· [स] सलाह से।

संतत· [स] निरंतर, सर्वदा, सब दिन।

संदोह· (स) समूह।

संधाने· [द] जोड़ा।

सपन्न· [स] धनी, युक्त।

संपुट.[स] हाथ जोड़के, डब्बा।

संयम· [स] नेम, नियम, पथ्य बराव, इन्द्रियों का रोकना। इन्द्रिय निग्रह, योगाभ्या-साग नियम, प्रकार, अरु संयम दस, यम अहिंसा, सत्य, स्तेय कहो इन्द्रिय को विषय चोरावना अर्था-त् निग्रह, ब्रह्मचर्य्य, दया, नम्रता, क्षमा, धृति, अल्प भोजन, शौच, १०।

संयाव· (स) पेराक।

संयुक्त·(स)संदृश प्रकारा, जुड़ा, सटा।

संयुग·(स) युद्ध, समर, गिणती, हिसाब, संग्राम, लड़ाई।

संयोग· (स) द्रव्य का मेल, संगत, इत्फ़ाक़, उपाय, तद्बीर, मिलन, मेल, संबंध। [सहूत।

संलग्न· (स) संयुक्त, लगा,

संशय. (स) सन्देह, भय, चिन्ता।

संसर्ग· संसर्गी. (स) दर्शन, मेल, पड़ोस, कड़ति।

संसरिन (स) जीव, रूह।

संसार (स) जगत्, अपनी देह, देह सेवी माता, पिता, स्त्री, पुत्र, बंधु, इत्यादि विश्व, दुन्या,

संसिद्धि (स) प्रकृति, स्वभाव।

संस्पर्शा (स) पपरी।

संस्वेदज. (स) गोबरकृता।

संसृति (स) आवागमन, संसार, दुनिया।

संस्कृत. (स) देववाणी, परिस्कृत, शोधित, परिष्कृत, कृतसंस्कार पदार्थ। [शरीर

संहनन. (स) काया, देह,

संहर्त्ता (स) नाशक, हरणहार।

संहार (स) नाश, क्षय, नष्ट, प्रलय, संक्षेप, विसर्जन, नरक विशेष। [सौंफ।

संहिता. (स) वेद का सार संग्रह।

संक्षेप (स) सुख्वक, सारांश, सूक्ष्म, थोड़ा।

सः (स) सहित, युत।

सक. (फ.द) संदेह, समर्थ।

सकना (प) सामर्थी होना, सठाना।

सकरुण (स) दीनता सहित, कल्पित, करुणा के साथ।

सकर्दम. (स) मलीन, अस्वच्छ।

सकर्मक (स) कर्म सहित क्रिया।

सकल (स) समस्त, सारा, सगरो, सब, कला के साथ, विद्यायुत, सावयव, समग्र, संपूर्ण।

सकलप्रिय. (स) चना। [मान।

सकान (प) लाज, डर, भय-

सकाना. (प) चटासहोना थकना, लजाना, डराना, डरना। [सफल।

सकाम (स) कामनासहित,

सकाल (स) प्रातःकाल, प्रभा, भोर।

सकाली (स) सकुचानी, सकाचना, सकुचाना।

सकाश (स) सदृश।

सकिलि (द) बटोरिबो, समे-

टिकै, बिमल, बटुरकरके, एकट्ठा होकरके, सकिल-ना, बटुरना ।

सकुच· (स) लाज, संकोच डर ।

सकुचि· (प) मकुलो, बिशेष, लजा कै, थक थकाय कै ।

सकुनि· [प] पत्ती, चिड़िया ।

सकरैरबार [द] मैथिल ब्राह्मण की एक जाति, मैथिल ब्राह्मण में अनेक जाति होती हैं उन में से सकरैर वार में कईएक का नाम यहां लिखा जाता है । सक-रैवार मुखिद १ सकरैवार सकुरी २ सकरैवार तत—इल३ अब और कुछ नाम लिखा जाता है । दरहरे होह १ दरहरे अमरावती २दरहरे रतवंली ३ दोधवे कोकिलवार१दोधवे सन—हपुर २ दोधवे पौनी ३ खउआरे सतएर१ खउआरे नाहस २ सदर पुरिये सरिसव१सदरपुरिये सुंदर२ खगोरे और १—सतलखे कन्हौली २ सतलखे सत-लखा ३ अंड्इवार परम गढ़ १ अंड्इवार वैंगनी२ अंडइवार उमरौली ३।

सक्कत्· (स) एक, एकवार, एक वेर, मत्त, कर्त्तव्य समूह ।

सकेलि· (द) ‥टारिकै, हटाईकै, बटोरिकै, सकेलना, बटो·रना ।

सक्त· (स) फल, अभिलाष, आसक्त, अविरत ।

सक्ती· (द) शक्ति, बल, स्त्री, बरछी ।

सक्तव· सक्तुक· (स) सतुआ ।

सङ्कोच· (स) केसर ।

सक्र शक्र· (द·स) इन्द्र ।

सकोप· [स] कोप सहित ।

सखन· (स) मित्रता, हितता, बन्धुता ।

सखर· (स) खरखराहट संयुत, कठोरयुत, घामअग युत ।

सखा· (स) मित्र, हित, सज्जन।

सखी· (स) मित्री हित· कारिणी। सखी नाम— दोहा। बैस। सुमुखि सखी पुनि,हित सहचरि आहि। चली कुंअरि वृषभान की, चली मनावन ताहि ॥१॥

सख्य· (स) मित्रता, हितता, बन्धुता, दोस्ती ।

सगरे· [स] सब, सकल ।

सगर·[स]राजा विशेष, समस्त, सर्व्व। [सहित।

सगर्भ· [अ] तात्पर्य्ययुक्त, गर्भ।

सगलानि· [स] निरादार, बिनु हर्ष ।

सगलानि· सग्लानि·[स]निरा- दार सहित,लज्जा सहित, बिनुहर्ष, निरादर, से ग्ला- नि के साथ, हर्ष बिना।

सगा. [प] नातेदार, कुटुम्ब।

सगाई· [प] नातेदारी, कुटुम्ब· ताई, नारी की दोसरी विवाह, नाता।

सगुण·[स] साकार, गुणसहित गुण विशिष्ट।

सघन· [स] निविड़, घना, सान्द्र, गहन, घन नाम— दोहा। घन दृढ़ घन वि· स्तार पुनि, घन निहि गढ़त सोनार ॥ घन अंबुद घन सघन घन, घन दर्षि नंदकुमार ॥ १ ॥ [दुःख।

सङ्कट. [स] विपत्ति, कष्ट,

सङ्कर· [स] दो ज़ाति का, दोग़ला, युद्ध, आपदा।

सङ्कर्षण· [स] बलभद्र, हरि· संज्ञा, रगड़, खेंचि।

सङ्कल्प. (स) मन की इच्छा, नेम, चाह, समर्पण।

सङ्काश· (स) तुल्य, समान, सदृश ।

संकुच· (स) लज्जित ।

संकुल· (स) संयुक्त, समूह, युद्ध, लपेटा, पूर्ण, घना, व्याप्त, भरा।

संकुलमति· (स) बड़ीमति ।

सङ्कोच· (स) लज्जा, लाज, आगे पीछे पसोपेश, संक्षेप· केसर।

सङ्कोची· (स) क्लेशमान्, अंकोचमान्। [उचित।

सङ्गत· (स) यथायोग्य, संलग्न,

सङ्गति. (स) मैथुन, भेंट, मेल।

सङ्गी. (स) आधार, साथिया।

सङ्गीत· (स) गाने की विद्या, गान।

सङ्गोपन· (स) छिपाव, गोपन।

सङ्घर्ष· (प) रगड़, खेंच।

सङ्घट्टात· (स) समूह संबन्ध।

सचान. (स) पक्षीविशेष, सिकरा, बाज, चौ॰ गये सहमि कछु कहि नहिं आवा। जनु सचानु बन झपटे लावा॥ अर्थ जैसे बन में सचान अर्थात बाज के झपटे लवा सहमि जाता है।

सचिव· सचीव· (स) मन्त्री, दिवान, हितोपदेशी, सहाय, दास, नौकर।

सची· [स] इंद्राणी।

सचिवसुत· (स) मंत्री पुत्र।

सचु. (स) आनन्द, हर्ष, सुख।

सचुपाना· (द) सु॰ सचुपावही, सुख पाते हैं।

सचेत· सचेता· (स) सावधान, सचेतन, चौकस।

सच्चिदानन्द· (स) ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर।

संक्षिप्त· (स) संक्षेपयुक्त, अविस्तृत, प्रक्षिप्त, थोड़ा।

संक्षेप. (स) विस्तार रहित, स्वल्प।

सजग· (स) चैतन्य, जाग्रित, सावधान, सचेत खबरदार।

सजन· (स) प्रिय, साजन।

सजनी· (प) सखी, सहेली

सजल· (स) जलसहित जलभरा, जला, सीला, [आंख।

सजल नयन· (स) जलभरी

सज़ाई· (फ·प) दण्ड, साजना, बनावटी, सजा, साज करके, साजना।

सज्जा· (स) सेज, सभा वा कल्याण नाम··छंद चंवरी॥ सज्जा संवेशतल्प सैनोक सिय जनवास जानकीस जानकीश राजत छबिछाई॥ मुक्ति सुप्ति। दा चरित्र कलुष हरन भांति

पवित्र श्रवण गान किये
लाभ होत भद्र भाई ॥
मंगल शिव भव्य श्रेयश
भावुक कल्यान क्षेम भा-
विक स्वाकुशल क्षभयं
शिव शुभदाई। चंपरोक
सुभग छंद छतिस दशकल
निबंद्ध कीरति रघुनाथ बि-
शद हरिविलास गाई ॥१॥

सजिव. सजीव· (स) जीव सहित, जीता, सुख से जीना, प्रान सहित।

सजीवनमूरी·(द)विशेष जरी।
सजीवनमूरी नाम—दो॰
जीवन मधु अम मधुश्रवा,
जियत जिया पुनि चाहि।
इतहि सजीवनमूरि यह,
जैसी तू बलि चाहि ॥१॥

सजोइल. सजोयल· (द) सजग, सचेत, तयार, सजग होय।

सजोवन· (स) तैयारी।

सज्जन· (स) साधु, कुलवन्त, सत्कुलोद्भव, सत्पुरुष, पच्छा मनुष्य। [सहित।

सज्ञान· (स) ज्ञानी, ज्ञान

सञ्चय· (स) संग्रह, राशी, ढेर समूह।

सञ्चर· (स) पथ, बाट, मार्ग।

सञ्चार· (स) संक्रमण, प्रस्ताव, सलन।

सञ्चित· (स) बटोरा, संग्रहित, रखा हुवा, पूर्व का इकट्ठा किया हुवा।

सञ्जात· (स) उत्पन्न, जनम।

सञ्झा· (प) सायंकाल, प्रदोष, सन्ध्या।

सटीक· (स) टीकायुक्त, टीका-सहित। [दुष्ट।

सठ· (स) शठ, मूर्ख, कुटिल,

सण्डसी· सण्ड } (स) गहवा,
सिन· सडसिन्ह· } सङ्सी, सं-
ड्सी लोहे की।

सत· (स) सार, धीर, गुदा, सत्य, साधु, अविनाशी, शत, सौ, पच्छा।

सतत· (स) सदा, नित्य, निरंतर, लगातार।

सतंत· (स) निरंतर।

सतपञ्च. (स) द्वादशसंख्या बाचक, सातपांच।

सतर· (स) शीघ्र, जल्दी।

सतरूपा· (स) राजा मनु की नारी का नाम।

सतसपथ· (द) सत शपथ समीचीन शपथ वा सैकरों शपथ। चौ०। भामिनी राम सपथ सत मोही। अर्थात् रघुनाथ का समीचीन सपथ वा सौ सपथ।

सतसङ्ग· (स) सत के सङ्ग तें असत का त्याग।

सतानंद. (स) जनकजी के पुरोहित का नाम।

सतिभाउ· (द) सतिभाव, सत्य भावते, दो०। सखा राम सिय लखनु जहँ, तहाँ मोंहि पहुंचाउ। नाहित चाहत चलन अब, प्रान कहौं सतिभाउ।

सतिभाव· (द) समीचीनभाव।

सतिन· (स) केराव।

सती, सति· (स) पतिव्रता वाचक, राजा दक्ष पुत्री, शिवपत्नी, सूवा, सीधा, सती नाम छंद कलिका। पति साथ सिया तपस्विनी, आर्या साध्वी मनस्विनी॥ बुध ज्ञात सुधा सुची हसती॥ पुनि पतिव्रता एकव्रती॥ चौपाई। चौदह कला अनेक मिलावे। सोई कलिका छंद कहावे॥ १॥

सत्कार· (स) सनमान, पूजन, आदर। [आचार।

सत्पथ·(स) सुमार्ग,वेद विहित

सत्पात्र· (स) सुपात्र, सज्जन, श्रेष्ठ, मनुष्य।

सत्ता· (स) बल, पराक्रम, शक्ति अंश, प्रताप।

सत्य·(स) यथार्थ, ठीक, सरल, मिथ्यारहित।

सत्य वादिन्· (स) यथार्थवक्ता।

सत्यव्रत· (स) सत्यप्रतिज्ञा, सत्यतत्पर। [युग।

सत्ययुग· (स) प्रथम युग, कृत

सत्यलोक. [स] ब्रह्मलोक।

सत्यसङ्कल्प· [स] सङ्कल्प कहीं इच्छा जिनकी सत्य होय मिथ्या नहि होय।

सत्यसन्ध्य·[स] सत्य संकल्प ।
सत्रि· [स] देवता, अमर, अ-
मरतेश ।
सत्वर·[स] शीघ्र, तुरत, आशु ।
सत्सङ्ग· [स] उत्तमसाथ, साधु
संग ।
सद्. [स] संयुक्त, मिला,
श्रेष्ठ, बैठेवाले ।
सद [द] तुरन्त । [ग्टह,जल ।
सदन, [स] घर स्थान, मन्दिर,
सदगुण [स] समीचीन गुन ।
सदय.[स]दया सहित, कोमल ।
सदग्रन्थ [स] समीचीन ग्रन्थ ।
सदा· [स] सर्व्वदा, नित्य,
हमेशह, सर्बदा ।
सदागति. [स] वायु, पवन ।
सदाचार· [स] श्रेष्ठआचार,
सर्वदा आचार, अच्छा
आचार है जिसका ।
सदापुष्प. [स]सुपेद्अकवन ।
सदापाल· [स] नारियल ।
सदाव्रत. [स] भूखों को अन्न
दान, सर्वदाव्रत ।
सदृश·सदृश्·[स] तुल्य, समान,
बरोबर, मुवाफिक ।
सदेश. [स] समीप, निकट ।
सदैव. [स] सदाएव, हमेश,
सदाही, सदा, हमेशा ।
सद्गति· [स] निस्तार, त्राण ।
सद्गुण· [स] समीचन गुण,
भगवतगुण ।
सद्यः [स] तत्काल, तत्क्षण,
जल्दी, उसी काल में ।
सद्रर्षि· [स] नारदादि ।
सध्रुर· (स) श्रोष्ठ, ठोर ।
सध्रीचीन· (स) उत्तम सुन्दर ।
सन. (स) समीप, शरण, सें,
वृक्ष विशेष, सण, साथ ।
सनकरि. (प) इशारा,कनखी ।
सनकादि.(स)सनक।सनन्दन,
सनातन, संनत्कु मार॥४॥
एह चारो ब्रह्म पुत्र महा-
त्यागी अरु कोई कल्प के
सप्तऋषियों मों ख्यात ।
सनकार,सनकारि, (प) इशारा,
मटकी आए, इशाराकिया,
सनकारना,इशाराकरना ।

सनातन, (स) नित्य अनादि, सदा, ब्रह्मपुत्र। शाश्वत।
सनाथ· (स) स्वामीसहित, कृतार्थं।
सनाह· [स] बकतर पहिरे।
सनाह· [स बकतर, बखतर, पतिसहित।
समीप·[प]निकट, उप, समीप
सनेह· [प] स्नेह, प्रीति। प्रेमनाम—दो०। दीहद छाड़िं सनेह हित, प्रते राग अनुराग। कितगो तेरो प्रेम वह, हे भामिनी बड़ भाग॥ १॥
सनूहामर्क· [स] दभी पुत्र शु· क्राचार्य्य कृतगुरुदैत्यन्ह अरु श्री प्रह्लादभक्त के विद्यागुरु जो नादातव्यं, नाधर्म्मक· र्मव्यं पढ़ावत अरु वा वि· परीत पढ़त। [शान्त।
सन्त· (स) साधु, धर्म्मी, स्थिर,
सन्तत. (स) सदा, सर्व्वदा, सदैव, निरन्तर।

सन्तानिक· [स] सन्ताई।
सन्धन·[स] सिरका। [पुचादि।
सन्तति, [स] बंश, सन्तान,
सन्ताप.[स] भावत्य, भौमादि।
सन्ताप. [स] अग्नि ताप, मनस ताप।
सन्धित, सन्धान, [स] अंचार।
सन्तुष्ट, [स] तृप्त, अगभरा, हर्षित, सन्तोषयुक्त, तृप्त, प्रसन्न, खुश।
सन्तोष· [स] धैर्य, सन्तुष्टि, अलोभ, सम। [परिसय।
सन्दिग्ध· [स] सन्देहयुक्त,
सन्देश· [स, प] समाचार, वृत्तांत, सौगात।
सन्देशी· (स)दूत, चर, पियादा,
सन्देह, सन्देह· [स·द] संशय, शङ्का, चिन्ता, शक, संशय।
सन्दोह, [स] समूह, विस्तार, पूर्ण, समुद्र।
सन्ध, [स] सङ्कल्प बाद।
सन्धर्षण· [स]·आकर्षण, रगड़।
सन्धान· [स] शर का छोड़ना,

अन्वेषण, खोज, झांक ।

सन्धि.[स]'मेल, संयोग, दरार। बीच, मैत्री, मिलाप, जोड़।

सन्ध्य. [स] संकल्प, चाह, नेम, इच्छा।

सन्ध्य .(स) सन्ध्याकाल, सायं काल, संध्या नाम—दो०। निसिमुख संध्या पितृप सम, सायंकाल प्रदोष। सांझ परी चलु एहि, क्रिया करहि तजि रोष१॥

सन्निकर्ष.[स] सन्निधान, समीपता। [समीप।

सन्निधि. [स] निकट, पास,

सन्निपात.[स]त्रिदोष कारण।

सन्निहित.[स] निकट, समीप, पड़ोस। [सत्कार।

सन्मान· [द] आदर, मर्याद,

सन्मुख· [द] सामने, आगे, आदर, साक्षात।

सपथ· [स] सपथ, सौगंद।

सपद· [द] जल्दी।

सपदि· [स] शीघ्र, झटपट, तत्काल, जल्दी, तुरंत।

सपरव· [स] गांठी सहित।

सपर्व· [स] गिरह, गांठी, पोर, गांठ के साथ।

सपच· [स] सहायक, संगी, पांच सहित। [पक्षी।

सपादमलय· [स] गोड़राम·

सपुत्र· [स] पुत्र सहित।

सपोला· [द] सांप का पोया, दो०। जिमि कोउ करै गरुड़ सन खेला। डरपावहि गहि स्वल्प सपोला। अर्थात् स्वल्प सपोला छोटा सांप का बच्चा।

सपूत· [स] सुपुत्र, सुशील।

सपेला· (स) सांप का बच्चा।

सप्त·[स·प·]सात संख्यावाचक।

सप्तऋषि, सप्तर्षि· (प·स·) भृगु, अंगिरा, वशिष्ट, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, मरीची। सप्तऋषि दो०। कश्यप अत्रि वशिष्ट गुरु, विश्वामित्र बखान। भरद्वाज गौतम सहित, यमदग्नि उर आन॥१॥ पु०॥

दो०। पुलह अत्रि भृगु अंगिरा, पुनि पुलस्त्य क्रतु जान। नारद चेय वशिष्ट ऋषि, सप्त दु तय बिधि-मान॥ २॥

सप्तद्वीपविवरण. [स] जम्बु १ प्लक्ष, २ शाल्मलो ३ कुश ४ शाक ५ पुष्कर ६ क्रौंच ७ अरु एह साती द्वीप राजा प्रियव्रत के रथचक्र क्षत। सप्तद्वीप। दो०। जंबू और प्लक्ष कुश, क्रौंच कहत पुनि शाक। शाल्मलि पुष्कर द्वीप ए, भाखै वेद सुवाक १॥

सप्तमहर्षि. सप्तमहाऋषि. (स) भृगु, अंगिरा, वशिष्ठ, अत्रि पुलह, पुलस्त्य, मरीची।

सप्तमुक्तिपुरी. (स) अयोध्या, मथुरा द्वारिका अर्द्ध विष्णु कांची, मायापुरी दक्षिण दिशा॥ ३॥ इति विष्णु स्थान, — काशी हर-द्वार, अवन्तिका कही उज्जैन, अर्द्ध शिव कांची मायापुरी दक्षिण दिशा, इति शिव स्थान, अयोध्या मथुरा, द्वारिका, काशी, हरद्वार, अवन्तिका, माया पुरी। सप्त मुक्तिपुरी। दो०। मथुरा माया अवधपुर, काशी कांची जानि। द्वारावती अवंतिका, सप्त मुक्ति की खानि॥ १॥

सप्तर्षि. (स भृगु आदि।

सप्तक. (स) पचास सहित।

सप्तसर. मानसरादि विवरण, (स) मानसर, पम्पासर, विन्दुसर, याती सरोसर इच्छादायक जो या सर में जो इच्छा करि डुबकी मारै सो वाको तत्काल होहै, नेवारिसर, रामसर, मणिसर, गरुड़सर, इति सप्तसर।

सप्तसागर. (स) क्षीरनिधि, घृतनिधि, दधिनिधि, सुरानिधि, गण्डनिधि,

मधुनिधि, सुधानिधि । एते राजा प्रियव्रत के रथ चक्र क्षत इति पंचम स्कन्ध पंचम अध्याय श्रीभागवत प्रमाण । अरु खार निधि अष्टम पाछे भयो है । सप्त-समुद्र । दो० । लवण सिंधु रस इक्षु को, सिंधु सुरा को जान । घृतदधि छीर सुनीर को, सिन्धु सुद्ध दर आन ॥ १ ॥

सप्तस्वर गायन·(स) षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत, निषाद । श्लोक । निषादर्षभगान्धार षड्जमध्यमधैवता । पञ्चमश्चेत्यमी सप्ततन्त्री कण्ठोत्थिता स्वरा ॥ १ ॥ सप्तस्वर नाम – दोहा । प्रगट रिषभ स्वर वृषभते, सिखहिते गांधार । धैवत तुरग निखाद गज, षज मयूर बिचार ॥१॥ पंचम बिरच्यो कोकिला, मध्यम सारस जान । हरिविलास सिद्धांत मति, स्वर उत्पत्त बखान ॥२॥ पुन: । दो० । षड्ज रिषभ गंधार अरु, मध्यम पंचम जान । धैवत बहुरि निषाद पुनि, ये स्वर सात बखान ।१॥ राग रागिनी ताहि स्वर, किनहूं लह्यो न पार । नाम मात्र ताते लिखे, रागस्वरनिनिर्धार ॥२॥

सप्तपर्ण: (स) छतिवन ।

सप्तला. (स) बसन्ती नेवार, सरिसीज ।

सप्तावर्ण· सप्तावरन· (स) सातोलोक सातवार घुमना, वा भ्रमित प्रकृति आदि के सात आवर्ण कहिफिर, दो० । छिति जल पावक पवन पुनि, पंचम गगन बखान । अहंकार षट सातवीं, महत तत्व पहिचान ।१॥ इक तें इक दश गुण महत, हरिविधि की वृत्तन्त । तिहि पर माया

जानिये, ब्रह्म जु सब को अन्त ॥ २ ॥

सप्तमहापर्वतजंबुद्वीप के. (स) दो०। कहत हिमालय निषद पुनि, विंध्याचल कवि लोय। मल्लिमान को जानिये, पारिपात्र कहि जोय ॥१॥ गंधमादनहिं भनत सब, हेमकूट है और। सप्तमहापर्वत भले, सजत ठौर की ठौर ॥ २ ॥

सप्तपर्वत भरतखंड की। दो०। माहेंद्र शुक्ती मलय, रिच्छवा पुनि परिजात। गुह्य विंध्य गिरि सत्य ये, भारत में विख्यात ॥ १ ॥

सप्तपताल· । दो० । अतल वितल पुनि सुतल कहि, और तलातल जानि। महतल और रसातलै, भनि पताल गुनखानि ॥१॥

सप्तचीरंजीव· (स) दो० । द्रोणाचार्यै बलि व्यास हित, हनुमान द्विजराम। अश्वत्थाम विभीषण अरु, चिरंजीव जपि नाम ॥१॥

सप्तधातु स्वामीसहित· (स) दो० कंचन रूपा ताम्र अरु, सीसा रांगा जानु। पारा लोहा आमि इन, क्रम सों ग्रह ऋषि मानु ॥१॥

सप्तब्रह्मप्रकार· (स) दो० । श्रुतक साची ह्व भयो, अस्ती भाती सोइ। प्रिये नाम अरु रूप ये, ब्रह्म सप्त विधि होइ ॥१॥

सप्त स्वर्ग· (स) दो० । प्रथम कहत भूर्लोक को, भुवर लोक स्वर्लोक । महर लोक जनलोक पुनि, तप अरु सत्य सुलोक ॥१॥

सप्तदेवपुरी· (स) दो० । विष्णु शिवपुरि ब्रह्मपुर, अमरावती विचित्र । अलकावति वरुणावती, और यमपुरी मित्र ॥१॥ ।

सप्तवार· (स) दो० सूर्यचन्द्र अरु भौम बुध, गुरु शुक्र

अग्नि होइ । सप्त बार क्रम भेद भौं, सप्त सकल जग जोइ ॥ १ ॥

सप्तअग्नि जिह्वा (स) दो० । हिरन्या गगना रक्तिका, कृष्णा सुप्रभा जान । बहु-रूपा अति रक्तिका, जिह्वा सप्त बखान ॥१॥

सप्तअप्सरा (स) दो० । तिलोतमा रंभारु उर-बसी सुकेशी होइ । मंजु-घोष अरु मेनका, सप्त-घृताची सोइ ॥ १ ॥

सप्तउपधातु।(स)दो०। अभ्रक सोमल मैनसिल, गंधक अरु हरताल । सुरन मांखी गेरु मिलि, सप्तुप धातु बिचार ॥ १ ॥

सप्त कृत्तिका।मूलअग्नि के (स) दो० । बारपार गो शृंग अरु, दीमक चक्र कुलाल । अश्वरु गज के थान की, कृतिकाहार नृपाल ॥१॥

सप्तधान्य (स) दोहा । यव गेहूं तिल कांगुनीद, उरद मूंग अरु धान । सप्त धान्य के नाम ये, धर्म शास्त्र सों जान ॥१॥

सप्तत्वचा (स) दो०। रस अरु शोणित मेद कहि, अस्थि गुदापुनि वीर्य । त्वचा सहित त्वच सातए, बरनत हैं गुण धीर्य ॥ १ ॥

सप्तईति (स) दो० । अना-वृष्टि अरु वृष्टि कहि, टोड्डो मूषक जानु । सुवा आपनी सेन अरि, औ पर सैन बखानु ॥१॥

सप्तविधियुद्ध (स) दो० । धनुष चक्र अरु कुन्त कहि, खड्ग युद्ध भनियन्त । छुरि-का गदा समेत हू, मल्ल युद्ध को अंत ॥१॥

सप्त जगाइवे योग्य । (स)दो०। कार्जिक भूखा भामिनी, क्षपिरचक भंडार । विद्या-र्थी गुरुसप्त को, जगवो सत्य विचार ॥ १॥

सप्त न जगाइबे जोग्य (स) दो०। अहि राजा अरु सिंहशिशु, मधुमक्खी पर स्वान। अरु मूरख ए सप्त कौं, जगवैं नहीं सुजान ॥१॥

सप्त खाली हाथ न जाइबे ठौर (स) दो०। राजा कन्या ज्योतिषि, वैद गुरू सुर सिद्ध। भरे हाथ इन पैं गये, होय कार्य सब सिद्ध ॥१॥

सप्तदंडनीय (स) दो०। खर चेरो मूरख प्रजा, पशु दुंदुभी पखान। दंड दिये सुख पाइये, दुःख किये सनमान ॥१॥

सात के भूषण (स) दो०। रैनजु भूषण चन्द्रमा, दिवसा भूषण भानु। दासा-भूषण भक्ति है, भक्त्या-भूषण ज्ञान ॥१॥ ज्ञाना-भूषण ध्यान है, ध्याना-भूषण त्याग। त्यागा-भूषण शांतिपद, तुलसी-अमल अदाग ॥२॥

सप्तज्ञान भूमिका (स) दो०। शुभ इच्छा सु विचारना, तनमानसा सुहोइ। सत्वापत्तिहि जानु पुनि, अंश शक्ति कहं सोइ ॥१॥ षष्टि पदार्थ अभावनी, सप्तम तुरिया जानि। न्यारे न्यारे वेद सब, इन की कहीं बखान ॥२॥ शुभ इच्छा लक्षण दो०। विषय विषैं भइ हीनता, गुरु तीरथ अनुराग। तातैं शुभ इच्छा कही, कया श्रवण मन लाग ॥३॥ विचारना ल०—दो०। दूजी कही विचारना, उपजो तत्व विचार। ह्वै एकांत शोधन लग्यो, कौ हौं को संसार ॥४॥ तनमानसा ल०—दो०। तनमानसा सु तीसरी, मन को मध्याकार। थिर ह्वै शुद्ध स्वरूप मैं, राखै सदा

सम्हार ॥ ५ ॥ सखापति
भा । चतुर्थ जु सखा
पत्ति यह, अनुभव उदय
अभंग । आतम जग
दरस्यो भले, ज्यों जलधि
सिन्धु तरंग ॥ ६ ॥ असं
शक्तिक० दो० । छूट्योतन
अभिमान जब, निश्चय
कियो स्वरूप । असंशक्ति
यह भूमिका, पंचम
महा अनूप ॥ ७ ॥ पदार्थ
अभावनी ल०—दो० ।
कहि पदारथ बुद्धि कौं
सब को होइ अभाव । यहै
पदार्थ अभावनी, षष्टी
भूमि स्वभाव ॥८॥ तुरिया
लक्षण—दो० । भावा-
भाव जहां न कछु, सप्तम
तुरिया माहिं । मैं तू तहां
न संभवे, कहा आहि
कछु नाहिं ॥ ९ ॥

सप्तमनसहित चंचल(स) दो०।
चलदल पत्र पताक पटु,
दामिनि कलप माथ। भूत
दीप दिपक शिखा, यों
मनवृत्ति अनाथ ॥१॥ इति
विचारमाले ।

सप्त कांड रामायण—
दो० । बाल अयोध्या
कांड पुनि, तृतिय जानि
आरण्य । किष्किन्धा सुंदर
कहत, लंका उत्तर गण्य १॥

सप्त भूमिका विनयपत्रिका
दो० । विनयपत्रिका
के विषें, सपतभूमिका
ज्ञान । ईश्वर ऊपर है
कही, जीवन पंचप्रमान॥१॥
प्रथम कहत सो दीनता,
मानमर्षता आन । भय-
दर्शन भर्त्सन कहत,
आश्वासनहिं बखान ॥२॥
मनोराज्य वर्णन करत,
बहुरि विचारहि जान ।
सप्तभूमिका नाम यह,
क्रम सों लक्षण मान ॥३॥
यथा दीनता । किहि
विधि देउं नाथहि खोरि ॥
यथा मानमर्षता । काहेतें
हरि मोहिं बिसारी । भय

दर्शन। राम कहत चलु२ भाईरे। भजन। ऐसी मूढ़-ता या मन की। चाखाचन। ऐसे रामदीन हित कारी। मान राज्य। कबहुं क हौं इहि रहनि रहौंगो। यथा विचारना। केशव कहिं न जाइ का कहिये।

सप्ताह· (स) सतवारा, सात दिन, हफ़ता।

सफरी· (स) मीन विशेष।

सफल· (स) कृतार्थ, सार्थक, फलसहित।

सबरीगायन·(प)मुरलीगायन।

सर्वज्ञ (स) सब जाननेवाला।

सर्वपर. (स) ईश्वर।

सबल· (स) बलवान्, प्रौढ़।

सर्वदा (स) सर्वकाल।

सविता· (स) सूर्य्य, दिवा-कर, सूर।

सबीज. (स) बीज सहित, बी-जाधार सहित।

सबीतर· (स) सबठौर, सर्वत्र।

सभय· (स) भय सहित, भीति युक्त।

सभा· (स) समाज, मेला, म-ण्डली, अभिष्ट क्रियार्थ जन, समूह, मजलिस।

सभासद (स) चतुर।

सभीत (स) डर के साथ।

सभीति· (स) डरक, भयमान्, भय सहित।

सभ्य· [स] सभायोग्य, भद्र।

सभ्यास· [स] साधनयुक्त, चि-न्तन सहित, इत्यादि।

सम· [स] बराबर, तुल्य, स-मान, न्याय, वासना का त्याग, राग द्वेष रहित, सदृश, अन्तष्करण, मन बुद्धि, चित्त, अहंकार, इत्यादिक का वेग को एक रस कीर रहना, प्रीति से भरा विरोध से रहित।

समग्र· [स] समस्त, समुदाय, सारा, सकल, संपूर्ण।

समगन्धिक· [स] खसखस।

समङ्गा [स] बराहीकन्द,

अरिथार, मजीठ, पानी की मजीगी। [मीण।

वार्त्ता, भेद, बिगाड़, आ-

समचारी· [स] आचरणी, व्यवहारी।

समता· [स] समभाव, एकता, मित्रता।

समदरसी, समदर्शी, [स] बराबर सब को देखनहार, अपक्षपाती।

समदि· [प] पूजिके, सन्मानके, पूजा करके। [राम।

समन, शमन [स] नाश, यम·

समन्तात्· [स] चतुर्दिक्षु. चारोंदिश्‌विषैं।

समंजस [स] उचित, योग्य, यथावत, सम्यक्।

समन्वित· [स] समायुक्त, संयुक्त एकत्र। [काल।

समवर्त्ती· [स] धर्मराज, यम.

समय· [स] अवसर, काल, वेला, अच्छे दिन, वक्त।

समय नाम—दो०। समये समै अनीह पय, वेला अनमिषकाल। कबीरअों सखिन वे, देखी बाल रसाल ॥१॥ छिन—शब्द। छिन उत्सव अरु नेमछिन, छिनजु मुहूर्त कहन्त। छिन यह समय न पाइये, भजले मन भगवन्त ॥१॥

समर· [स] युद्ध, रण, लड़ाई, झगड़ा, संग्राम।

संग्रामनाम—दो०। आयोधन रनआजि मृग, अभ्यास संक्रम पीक। समराई संगर समर, मंजुग कलह अनीक ॥१॥ सुरति जुद्ध जब पीय सों, तोडि बनेअो बाम। नखनारजनी सुनि कुंअरि, तो कहं कही प्रनाम ॥२॥

समररस.[स]युद्धरस, वीररस।

समरामहे· [प] हमसबों स्मरण करतहैं।

समर्प· समर्पण, [स] त्याग, अर्पण, सौंपना।

समर्पे. [स] सौंपे, समर्पना।

समर्थं [स]शक्तिमान, बलवान,

कोरावर । अन्त शब्द—

दोहा । अन्त अन्त मर्थ समर्थ, अन्त, अन्त पूरन को नाम । अन्त अभरन अन्तअलस तजि,भजो मनोहर स्याम ॥ १ ॥

समशील·[स] बराबर स्वभाव ।

समस्त·[स] सकल, संपूर्ण,सब, समग्र, सारा, तमाम ।

समस्या. [स] संकेत कहना ।

समंजस [स] अच्छी भांति ।

समक्ष· [स] सन्मुख, सखा सविधान, साक्षात ।

समा·[स] समय, वर्ष, बहुतात, हिस्सा ।

समाई· [प] सन्तोष, धैर्य्य ।

समाउ·(द) सन्निपात,बरोसो ।

समाज· [द] समाज ।

समागत· [स] उपस्थित, प्राप्त पहुंचा, सभा ।

समागम· [स] अवाई, संयोग, सभा, प्राप्ति ।

समाचार· [स] सन्देश,सम्वाद, समाचरण, सम्यगाचरण, वृत्तान्त, वार्त्ता, हाल, शक्ति, व्यवहार, भेद, निगाह, आचरण ।

समाज· [प· स] सभा, हाथी, साथ, सामग्री, समूह, मनुष्य समूह ।

समाधान· [स] स्थिर, मिलाप, चुकौता, अपने, स्वरूप तें श्रीराम स्वरूप चित्त तें डिगे नहीं, पूर्व, पश्चोत्तर, संशय,निवर्त्तन ।

समाप्त [स] अवसान, प्राप्त, खतम, तमाम । [नाश ।

समाप्ति[स] अवसान, पूर्त्ति,

समाधि· [स] एकाग्रचित्त, ध्यान, थिरता, सुख, स्थिरता ।

समान· [स, प] बराबर, तुल्य, न्याय,प्रवेश, समान, सम, सदृश ।

समास· [स] विचार, अनेक पद को एक पद करना, पदों का योग, संक्षेप, थोड़ा ।

समिध· [स] जलावन, इन्धन, यज्ञकाष्ठ, लकड़ी।

समिधर. [स] परास।

समीरण. [स] मरुआ।

समीक· [स] युद्ध, समर, रण।

समीचीन· [स] सचाई, सच्चा।

समीती· [स] मीताई, हिता-पन, दोस्ती।

समीप· [स] निकट, सनीप, नीयरे, पास, नजदीक। निकटनाम—दो०। अति पासवं अति ढुर तट, उप समीप अभ्यास। अवसि निरादर होय जो, रहै निरंतर पास॥१॥

समीर· [स] वायु, पवन, बयार, हवा। [नाई।

समीरण· [स] वायुताई, पव·

समीह·समीहा·[स] कायादि, २ चेष्टा, यत्न, व्यवहार, अभिलाष, उद्यम।

समुचित·(स)यथायोग्य उपयुक्त।

समुदाय· (स) गोलयारी, मोट, समूह, समस्त, एकत्र।

समुद्र· (स) सागर, उदधि, जलनिधि, समुद्र नाम—छंद-रूपमाला॥ अब्धी उदधि पयोध अर्णव यादपति कूपार। जलधि सागर जलनिधि अंभोध पारावार। वारिराशि समुद्र रत्नाकर सिंधु नदीश। सरस्वान सुधादि भवपापांपति वारीश॥१॥ दोहा—बीस नाम वारीश के, छंदकला चौबीस। नाम रूपमाला कहत, भाखी सुभग फणीश॥१॥

समुद्रमथन· (न) सागरमथन, समंदरमथन, जलनिधि। कूर्मावतार—दोहा। कश्यप सुत सागर मथत, विकल देखि करि दृष्टि। कूर्म कमठ कच्छप बने, सुंदर धारी पृष्टि॥१॥

समुद्र फेण· (स) समुंदर फेन।

समुद्रान्ता· (स) स्पृक्का, कपास, दोनों जवासा।

समुहानी. (प) सन्मुख होने वाली, सन्मुख हुई, समुहना, सन्मुख होना।

समुहाई. (द) बटोर।

समूह. (स) थोक, भीड़, समाज, ढेर, समुदाय, गिरोह। समूह नाम—छंद चकोर। व्रात समाजत तीनिवहं विसरं व्रज पुंज सतोम कदंब॥ ओघ निचै प्रकरं निकरं गण बारि निकाय निले निकुरंब॥ संघ संघात संदोह कला, पहु संतति यूथ व्यूह समुदाय। संचय वृन्द समूह तथा भगनं मुनि भंध चकोर कहाय॥१॥ पुन: दो०। निकर व्यूह संदोह पुनि, व्रज घत यूथप व्यूह। चयदल जाल कपाल कुल, निवहस सपे सटूह॥१॥ व्रात अनेक कहो देवगन, ग्राम धाम बहु कंद। मैं अनेक बातें कहो, भद्रता! बाको बंद॥२॥

सम्हति. (स) स्मृति, धर्म शास्त्र, स्मरण। [पति संपत्ति।

सम्रिद्धि. (स) सम्पत्ति, बढ़ती,

समृद्ध. [स] अधिक, संपत्तियुक्त, अति वृद्धि। ऋद्धि।

सम्पदा. (स) ऐश्वर्य, विभव,

सम्पन्न. (स) षोड़शकला सम्पूर्ण, सिद्ध, पूर्णयुक्त, परिपूर्ण।

सम्पर्क. (स) सम्बन्ध, मिलाव।

सम्पाति. (स) जटाइ गृद्ध का भ्राता सुन्दरगिरितट वासी।

सम्पाक. (स) अमलतास।

सम्वर्तिका. (स) नया कमल का पत्ता।

सम्पादक. (स) सम्पादनकर्त्ता, उद्योगकारक।

सम्पादन. (स) सिद्धि, प्राप्ति, लाभ, उद्योत।

सम्पुट. (स) जोड़ेहुवा, डब्बा, ढपा, डिब्बा, डब्बा, डिबिया।

सम्प्रति. (स) इदानीं, अद्य, अब ।

सम्प्रदाय· (स) परम्परा का धर्म ।

सम्वत्· सम्वत्सर· (स) वर्ष, शाका, सन, साल ।

सम्बन्ध· (स) संयुक्त, नाता, लगाव । [सम्बन्धी ।

सम्बन्धी· (स) नतैत, गोती,

सम्बर· (स) वारि, नीर, जल, संबर शब्द—दोहा ॥ संबर जल संबर असुर, संबर केश अनूप । संबर बांधहु गांठ गहि, कृष्ण नाम सुख रूप ॥ १ ॥ कुंत—शब्द । दोहा ॥ कुंत सलिल औ कुंतसह, कुंत अनिल वसु काल । कुंत कमल पुनि कुंत सुख, कुंत सुरंग कराल ॥ २ ॥ कं शब्द—दोहा । कं सुख कंशल कं अनल कं सिर कं पुनि काम । कं काञ्चन ते प्रीति तजि, सदा कहो हरि नाम ॥ १ ॥ कुश—शब्द—कुस सीतासुत दर्भकुस, कुस कहिये पुनि नीर । कुस दानव दल छार कर, तहां बसे बलबीर ॥ १ ॥ कंबु भुवन—शब्द—दोहा ॥ कंबु संख औ कंबु गज, कंबु इष्ट को नाम । भुवन गगन औ भुवन जल, त्रिभुवन नायक स्याम ॥ १ ॥ कबन्ध—शब्द—दोहा ॥ बिन सर कहत कबन्ध सो, कह कबन्ध पुनि नीर । राक्षस राज कबन्ध सों, गति दीन्ही बलबीर ॥ १ ॥ कंवल शब्द—दोहा ॥ कंवल जल परवाह पुनि, कंवल गुग्गल नाम । कंवल बहुरो ऊन है, कंवल मंगल नाम ॥ १ ॥

सम्वाद· (स) बात चीत, चर्चा, खबर, समाचार, अच्छा कहना ।

सम्भव· (स) उत्पत्ति, योग्यता ।

सम्भावित· (स) प्रतिष्ठित, मर्य्यादिक, बड़ामान्य ।

सम्भाषण· (स) विधिपूर्व्वक
कथन, वर्णन।

सम्भूत·(स) उत्पन्न, जनम, राम
चन्द्रावतार जन्म नाम—
दोहा॥ कौशल्या के गर्भ
से, भेउ ईश भवजात। जन्म
प्रगट संभूत जनु, उत्पत
जनि शुभगात॥१॥

सम्भ्रम· (स) अतिशय, सन्मान,
आदर, भय, वेग, उत्साह,
घरफराहट।

समस्त. (स) संपूर्ण, समग्र,
तमाम, सारा। [मस्तहत।

सम्मत· (स) अनुमत, सलाह,

सम्मोति·(स) इच्छा, स्वीकार।

सम्बर. (स) नाम राजा दैत्य
विशेष।

सम्बरारि· (स) राजा सम्बर-
दैत्य का अरि अर्थात्
प्रदुम्न अवतार कृष्णपुत्र।

सम्पति· (स) अतिविभव, ऐ·
श्वर्य। [ऐश्वर्य।

सम्पद· (स) संपति, विभव,

सम्पूर्ण· (स) परिपूर्ण, समग्रह,
पूर्त्ति।

सम्प्रति· (स) इदानीं, अधुना,
अब। [रिश्तह।

सम्बध· (स) संसर्ग संयोग,

सम्बोधन· (स) सम्यक् ज्ञान्,
सम्यग् ज्ञापन, आवाहन,
समास्वासन।

सम्भव· (स) हेतु, उत्पति, उ·
त्कठ, संदेह, मुमुकिन।

संमति· (स) अनुमति, विचार,
निश्चयोयुक्ति।

सम्मान· (स) आदर, सत्कार,
अभिलाषा, सलाह, राय।

सम्यक· सम्यक· (स) परमपद,
षोडश प्रकार, योग्यता, से
ठीक, अच्छी भांति, सुषु·
म्नामार्ग, शोभन, संगत,
मनोज्ञ, सत्य वाक्य, यथावत्।

सम्युग· (स) संयुक्त, एकट्ठा।

सम्राट· सम्राड्.(स) अधिराज,
चक्रवर्त्ती।

सय· (ह) सौ। [कृतान्त, यम।

सयमनीपति· (स) धर्म्मराज,

सयन· (स) सेवना, सज्या,
इशारा।

सयान. (प) चतुराई, प्रवीण ताई, चतुर।

सरनिशा· (द) राजपूतका एक भेद, कर्मवारके एक शाखा।

सयापन· (प) चतुर, प्रवीण, बड़ा।

सयाना·(प) पक्का, चतुर, बड़ा।

सर· [स] सरोवर, तड़ाग, सरकण्डा, दूधै व दही की मलाई, बाण, तलाव, चिन्ता जल, तीर।

सरई [स] कुमार कातिक।

सरज [स] मक्खन।

सरजू· [स] नद्दी विशेष, मानसरजाता। [नाम।

सरद· शरद [स] एक ऋतु का

सरण· [स] गन्धप्रसारनी।

सरणी. [स] नदी, सरोवरी, गन्धप्रसारनी।

सरपि· [प] सर्पि, घृत, चिकनाई, घी।

सरभङ्ग· (स) मुनि विशेष।

सरलसुभाए· (द) सूधे सुभाय से

सरल·सरलतासरला· (स·प·) सीधा. सोझा, पौधाविशेष नरम, कोमल, सहा, स्वाभाविक, सर्व जीव का सुखदायक, सिधाई, उदार, ऋजु।

सरलनिर्य्यासि·(स)गन्धाबिरोजा।

सरलस्राव· (स) गुग्गुरी, गंधाबिरोजा।

सरला· (स) निसोथ।

सरवरी· (प) बराबरी, समान, रात्रि, रात।

सरस·(स.प·)सप्रेम, रससहित. श्रेष्ठ, अधिक, उत्तम, प्रेम सहित, मकरंद समेत।

सरसई· (स) सरस्वती नद्दी।

सरसाई· (स) बहुताई, अधिकाई।

सरभङ्ग· सरभंगा· (द) एक मुनि का नाम, सरभङ्ग, सरल प्रभु के मारेवाला काम ताहू को भङ्ग करैवाले अर्थात् कामके बस नहीं।

सरसी· (स) सरोवर, ताड़ाग।

सरसीरुह. (स) कमल।

सरस्वती (स) बेरंभी।

सरसीज· सरसीरुह· (स) कमलादि (तलाव में जो पैदा हो) सरसीं जो उपजै ।

सराइ· (द) ठिकरा,पाल,ढकनो, दीपली ।

सरावक· (स) जातिविशेष ।

सरासन· (स) धनुष ।

सरासुर· (स) बाणासुर, चौ० । सकइ उठाइ सरासुर मेरू। सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू॥ अर्थात् सरासुर बानासुर, सर बान परिजाय । सरासुर बानासुर, जो मेरू को उठाइसको सोऊ हृदय में हारि परिक्रमा दे,चलोगयो । शर बाणघोर असुर से शरासुर बना ।

सरि,सरित· (स) नदी, आपगा, तटनी ।

सरितवर· (स) श्रेष्टनदी, मंदाकिनि, गंगा ।

सरितमूल· (स) ह्रद, पर्व्वत, चौ० । सरित मूल जेहि सरिता नाहीं । बरषि गए पुनि तबहि सुखाहीं ॥ अर्थात् जिन नदियों का मूल पहाड़ नहीं है, वे वर्षा बीतनेपर सूख जाती हैं ऐसे ही राम की शरणागति परिपूर्ण होने का मूल है कहीं कहीं शैल मूल भी पाठ है ।

सरिता· (सि) नदी, तटनी ।

सरितापति· (स) सागर, समुद्र ।

सरिस· सरिसा, (प) तुल्य, समान, सदृश्य, बराबर ।

सरिल (द) जल । [सपर्प ।

सरीसृप· (स) व्याल, नाग,

सरुज· (स) रोगसहित, रोगी, बीमरिहा ।

सरुष· (प) क्रोधसहित, क्रुध ।

सरेन (स) सरसे, बान से ।

सरोज. (स) कमलादिपद्म ।

सरोजभव· (स) ब्रह्मा,विरंचि ।

सरोवर· (स) सर, झील, तड़ाग, बड़ातालाव, ।

सरोवरनाम—दो०। हृदि पुष्कर का कासर, सरसी ताल तड़ाग । यह देखो अलि मानसर, फूल्यो तू अनुराग ॥

सरोरुह·(स)पद्म पंकज,कमल।

सरोष· (स) रोष सहित ।

सर्गे· (स) छंद ।

सर्ग.(स) स्वभाव, सृष्टि, निश्चय, मोह, उत्साह, अनुमति ।

सर्ग·(स)जनम, उत्पत्ति, उद्भव ।

सर्ज्ज· (स) सले ।

सर्ज्जक. (स) आसन, साखय ।

सर्ज्जरस· (स) धूना ।

सर्ज्जरसतैल· (स) चोआ ।

सर्प्पाङ्गी· (स) नाई ।

सर्प्पाची. (स) सरहची ।

सर्प्प. (स) नाग, सांप, चढ़ी, शीघ्र, अगाड़ी, गमन, सांप का भेद, करैत(करैता)१ गोहुअन२ नागिन ५ सुगवा ६ डोंर७ अंव८ अजगर १० । अहि शब्द—दोहा । अहि आसर अहि बधिर पुनि, अहि एक दानव नाम । अहि भुजंग जमुना पर्यो, सो नाथ्यो घनश्याम ॥१॥

सर्पनाम। छंदकुरियाला। गरीक्षणणशणापुलिनकंदक खेल सखन को संगम । मंदमहरके काजहितकोन्हो दर्पविनाश भुजंगम ॥ व्याल सरी स्वप कुंडली गूढ़ पाद भोगी आसी मुख ॥ सर्प भुजग, चक्री फणी पव नाशनपन्नगआसीविष॥१॥ दीर्घ पृष्ठ चक्षुश्रवा, दंदशूक जिह्मग काकोदर ॥ लेलिहान विषधर, पवी उरग भुजंग नाग हरवो कार। रहित पदांक बिले-सया नाम बोस नव को-विद भाषत ॥ कुरियालाइ छंद है अततेरह पांडस कवि गावत ॥२॥ [पति।

सर्प्पपति· (स) शेषनाग, नाग

सर्प्पि. (स) घृत, चिकनाई ।

सर्प्पिस्. (स) घृत, मक्खन ।

सर्प्पी· (स) चींव ।

सर्व्व,सर्व· (स) समस्त, सारा,

सकल, सब, सबरूप, संपूर्ण,
मलाहरन सर्वं नाम-दोहा। सर्वं सकल कल्यान प्रतिपाल, की समस्त गुण पाय। सो विरंच प्रख्यात मनि, बालक वस्त चुराय ॥ १ ॥

सर्व्वकाल· (स) सब दिन, सदा।

सर्व्वगत· (स) सर्व्वव्यापी।

सर्व्वज्ञ· सर्वज्ञ· (स) सर्व्वज्ञाता, सब जाननेहारा, परमेश्वर।

सर्व्वतोभद्र·(स) मण्डल विशेष।

सर्व्वत्र· सर्वत्र· (स) सबठौर, सब स्थान में, सर्वस्मिन्, सब जगह, सबकाल में।

सर्व्वथा· सर्वथा· (स) सब रीति से, सब प्रकार तें, प्रतिज्ञा, हेतु, बिलकुल।

सर्व्वदा·सर्वदा·(स)सदा, नित्य, सब दिन, हमेशह।

सर्व्वमंगला· (स) पार्व्वती, गिरजा।

सर्व्वमुख· (स)नीर, अप, जल।

सर्वपर· (स) ईश्वर।

सर्वस्व· (स) समस्तधन।

सर्व्वानुभूति· (स) निसोत।

सर्षकी· (स) कमल की जड़, भसीडा। [सहित।

सलज्ज· (स) लजाल्, लाज।

सलिता· (स) नदी, तटनी।

सलभ· (स) पतंग, फतिंगा।

सलिल· (स) जल, उज्ज्वल, शुक्ल, पानी।

सलूप· (स) अल्प, स्वल्प, थोड़ा।

सलोक· (सं) यश, कीर्त्ति, जस।

सलोने· (द) सुन्दर, लाड़ला।

सल्लकी· (स) सालै वृक्षविशेष, गजाहार।

सव· (द) शव, मुर्दा।

सवीज·(स)वीजाक्षर सहित।

सवति· (द) सपत्नी। [डाह।

सवतिभारेसू· (द) सवतिभा·

सवर· सवरी· (स) भीलजाति, भिल्ल, भिल्लिनी। [का बच्चा।

स्वल्पसपोत·(स) छोटा साँप

स्वल्प· (स) थोड़ा।

स्वानन्दित·(स)प्रसन्न। [सहित।

सशङ्क· (सं) भयमान, शङ्का

सष· (स) दुग्ध, क्षीर।

सषर· [स] षर निशिचर सहित, जातुधानसहित।

सर्षप· [स] सरसों।

सगाभाई, मु॰ अपना भाई, एक बाप का बेटा।

सचमुच, मु॰ ठीकठीक, यथार्थ।

सजधज, मु॰ बनाव, तैयारी, रूप, शोभा, डौल, धज।

सड़कनींद, मु॰ खूब गहरी नींद।

संडमुसंड, मु॰ खूब मोटा ताजा और जोरावर।

सत्यानाश करना, मु॰ नष्ट करना, बरबाद करना, ख़राब करना, बिगाड़ डालना।

सत्यानाश जाना, सत्यानाश होना, मु॰ नष्ट होना, बरबाद होना, ख़राब होना, बिगड़ जाना।

सरपट फेंकना, मु॰ घोड़े को सरपट दौड़ाना।

स्वांग लाना, स्वांग लाना, मु॰ नकल बनाना, बदलना।

सषरस· (स) उदार, दुर्धरस।

ससा· शशा· (स) शशक, खरहा, चौगड़ा, खरगोश।

ससक· शशक· (स) खरहा।

ससि· (स) शशि, चंद्रमा, खिरी।

ससिरस (द) शशिरस, अमृत।

सस्वर· (स) स्वरसहित, नित्य, स्वरसमेत, राक्षस।

सस्य [स] वृक्षों का फल, खेत का नाज।

ससासम्बर (स) सामय।

सखा [स] शनिवार।

सह· [स] समेत, साथ, सहित, साकल्प, विद्यमान, सादृश्य, यौगपद्य।

सहकारिन् [स] सहकारी, सहाय, मित्र, साथी, एक साथ का काम करनेवाला।

सहकार [स] आम।

सहगामिनी· [स] पतिव्रता स्त्री। सती, साथ चलनेवाली स्त्री।

सहगामी· (स) साथ जानेवाला, साथ चलनेवार।

सहचर· [स] साथी, अनुगत, कुङ्गी, सुफेद फूल का कटसरैया।

सहचरी· (स) सखी, सङ्गिनी।

सहज· (स· प) स्वभाव, स्पष्ट, सामान्य, सुगम, सीधा-भाव, सरल, शुचि, स्वाभाविक, पैदा हुआ जो प्राकृत ते भिन्न रूप।

सहजस्वरूप· [स] शुद्ध स्वरूप जो ईश्वर के निकट रहे यह जा स्वरूप ते समाधि सिद्धि होती है।

सहसा· (स· प) भगिनी, सुखमा, अचानक दिता, शीघ्रता, हठता, बिनाविचार।

सहजानी (स) चीमृत।

सहडुक· [स] पकाया मांस।

सहदेवी· [स] सहदेई।

सहन. (अ· फ़) उज्ज्वल, स्वच्छ, धीरा, आंगन, क्षमा, नि-तिक्षा, शीतोष्णादि, द्वन्द धर्म सहन।

सहनी. (द) दरोगा।

सहम. सहमि· (स) थरथराहट। लज्जित, विमुद्धि भय, संदेह याद की।

सहमी· (स) कम्पमान, लजालु, विमुख, डर, बेफ़िकिर।

सहरोष· सहरोषा· (स) उत्साह, रोषसहित, रोषसहिता, क्रोध सहना।

सहशा· (स) खिलब्धार्थं, विशेष।

सहस. (स) हजार संख्यावाचक, सहस्र, १०००।

सहस्रबाहु· (स) सहस्रभुज राजा, सहस्रबाहु।

सहस्रपत्र· (स) कमल। [कस्तूरी

सहस्रभित. (स) घनसबेत।

सहस्रवीर्य्या· (स) दरादूब, देसीसतावर।

सहस्रवेधी. (स) चूक, हींग।

सहसा· (स) बील, हंसी युक्त, बीधन, साहस, बिना विचारे, उतावली से, शीघ्रता, जल्दी, हठ, बिना विचार के। [करि।

सहरोसा· (स) सत्य संकल्प

सहस्रानन· सहस्रआनन. (स) शेषनाग, नागपति, हजार मुख रखनेवाला।

सहसाषी· (प) गवाह सहित, हज़ारनेत्र, सह साक्षि, हजार, आंख रखनेवाला इन्द्र, गवाह, समेत, साखी सहित ।

सहस्र· (स) हज़ारसंख्या वाचक, १००० दशशत संख्या १००० हज़ार ।

सहस्रवदन·सहस्रानन· (स) शेषनाग· पृथ्विपति, महीश शेष शब्दार्थ भिन्न लिखित छन्द माधवी में देखिये । सहसानन शेष अनंत धराधर वासुकिदेव भुजंग पति । महिनामन पे धर शब्द धरे अहि नामन पै पुनि शब्द पती ॥ प्रगटै धरणीधर नाम सुई बिरच्यो जिन पिंगल भोगवती । तिहि पाद प्रनाम विलास करै सगनं वसु माधवि छंद गती॥१॥ दो०। पुनि पुनि करहु प्रनाम पद, पन्नगपति वर पातु। हरिमिश्राक्ष विरचोपहत, भाषा पिंगल ख्यात ॥१॥ नानामाला में लिखा है । दो० । शेष सहा अहि सर्पपति, धरणी धरन अनंत। सहसवदन करि गुन गनत, तदपि न पावत अंत ॥२॥

सहस्रा·(स) नासिका, मोरशिखा ।

सहस्राक्ष· (स) इन्द्र, सुरेश ।

सहाय· (स) सहारा, रक्षा, सहायक, दयाल, सहचर, अनुकुल, मदद ।

सहाया (द) साथ, मददगार ।

सहायक· सहायता, [स] उपकारी, रक्षक, दयालु ।

सहिजन· [स] सहिजना । सहिजन नाम । दोहा ॥ है शोचक शोभांजनं, तीक्ष्ण गंध पच्छीव । सिग्रूअवलोको कह, राधा दुती अतीव ॥१॥

सहित· (स) हित सहित, संग, विष्णु, मिश्रसमेत, संगसमित, समवेत, संयुक्त, सधर्म, सात्म । सहित नाम

दो०। रण मद्धि प्रभु कपि दल सहित, अन्वित संहित युक्त। युत संभृत अन्वीत सह, संवेता संयुक्त ॥ १ ॥

सहिदानी. [स] निशानी, चिन्ह।

सहिष्णु. [स] सहनशील, क्षमावान्। [लता।

सहिष्णुता. [स] सहनशी-

सही [स] निश्चय।

सहेली. [प] सखी, आली, सजनी, सहेली नाम—छंद गाहा ॥ सुनहु सहेली सुमुखी सब या सखी भटु आली। सखी बीवैस्या। सहचर सुहि त्यागी बनमाली। दर्प जानि घनश्याम तज्यो नहि कीन्हो निर्वाहा ॥ षोडश पर विश्राम बहुरि दशकला छंद-गाहा। दोहा। बाम यूथ यूथेश्वरी, ढूंढि फिरी चहुं ओर। पुनि यमुना तट आय सब, टेरत नन्द-किशोर ॥ १ ॥

सहोदर. [स] सगाभाई, सखन, एक पेट का, भाई एक पेट का, एक बीज का, कचा। यमाष्ट कुची पुरुषस्य काय सहोदरी चैव विनोद वर्णितम्०। प्रमाण अरु एक देश में केवल पिता के धातु लैके चौ०। अस बिचारि जिय जागहु ताता। मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता ॥ अर्थात् एक अर्थ यह कि पिता के पक्ष में दोनों भाई सहोदर हैं दूसरा अर्थ यह कि ऐसे भाई जगत में नहीं होते कि दोनों भाई का एक पेट हो अर्थात दोनों का एक मन हो तीसरा अर्थ यह कि हमारे साथ जैसा तुम ने पृथक उदर हो के प्रीति की है ऐसा जगत में सहोदर भाई नहीं मिलता

सहोचर [स] सुफेद फूल का काटसैराय।

सह्य· (स) सहने के योग्य, सहाऊं।

सांई· [प] पति, मुख्य, प्रभु, भगवान, गुरु, जल से भींना, स्वामी, मालिक।

सांधा· [प] मिलाया, सामा, लगाया।

सांति, शांति [स] शमन।

सांस· [प] श्वास, प्राण।

सांसभरना, मु॰ पीड़ाभरना, लंबी सांसलेना, पछतावा करना। [गला घुटना।

सांसरोकना, मु॰ दम बंद होना,

सांसरुकना, मु॰ गलाघोटना, दमबंदकरना, गलादाबना।

सांस उलटीलेना, मु॰ हांपना, हांफना, दमनाक में आना, जैसे मरने के समय में होता है।

सांसति·सांसत·(स) दण्ड, पीड़ा।

साकबनिक· (स) कुंजड़ा, साग बेचनेवाला, बिसाती।

साकार· [स] आकार सहित, आकृति, मूर्त्ति विशिष्ट, सावयव।

साका करना, मु॰ नया संबत चलाना, बहादुरी के काम करके नामी होना।

साकेबंध, मु॰ वह राजा जो नया संबत जारी करता है।

साकेत· [स] अयोध्यापुरी, ।

साख· [स] नाम, धाक, भरम, गोत।

साखा· [स] डार, बहुत प्रकार से विचार।

साखामृग·[स] बानर।

साखोचार, [स] गोताउच्चारण बंशावली कहना।

साखोट· [स] शीशोहरू।

सागर·[स] राजा सगरपुत्र, अष्टप्रकार समुद्रमेंसे सहस्त्र, पुत्र राजा सगर कृत अश्वअन्वेषणकाल, समुद्र, सागर, नाम। दो॰। सिंधु सलिल पति सरितपति, अंभोनिधि अंपार। इरा बनत उदधिजल, जलनिधि पारावार॥१॥ रत्नाकर तन रूप को, सुंदर गिरधर लाल।

तेहि निमित्र प्रेम करतो लिये,
धो न बोलिय बात ॥१॥
सागरज· [स] पांगानोन।
सागरा· [स] धरती, मेदनी।
साङ्ग· [स] समाप्त, अङ्ग सहित,
बर्छी, बेल।
साज·[प] घन्वादिक की सामग्री
सजाव।
साढ़साती·[स] शनैश्चरी दशा,
शनैश्चरी मूरति, शनीश्चरी दशा।
साती [द] मिली।
सागपात, मु॰ तरकारी।
सातपांच करना मु॰ दुवधा में
होना। [का नाम।
सात समुद्र मु॰ दूर, एक खेल
साथ देना, मु॰ मिलना, मेल
रखना, शामिल होना।
साम्हनाकरना, मु॰ लड़ाई
करना, लड़ना, चढ़ाई कर-
ना, मुकाबलाकरना।
सातोकाण्डमानसत्र निर्णय[स]
शास्त्र· सांख्यशास्त्रमति, १॥
अयोध्या, विरागवैशेषिक
शास्त्रमति, २॥ आरण्य,
मीमांसा शास्त्र मति, ३॥ कि-
ष्किन्धा, पातञ्जलशास्त्रमति
४॥ सुन्दर न्यायशास्त्र मति॥
५॥ लङ्का·वेदान्तशास्त्रमति
६॥ उत्तर, कर्म्मकाजमति ॥७॥
सात्विक· [स] सतोगुणी, साधु·
सरल।
साथरी· [द] कुशासनी, चटाई,
शेन करने के लिये सेज।
सादर·[स] आदर सहित, आदर
पूर्वक, मानसहित।
सादृश्य·[स] समानता, तुल्यता।
साधक· [स] तपस्वी, साधन-
करैया, पढ़नेवाला, सा-
धन समेत, उपाययुक्त,
पितौंजी।
साधन·[स] अभ्यास, अनुष्ठान,
उपाय, रीठा, तदबीर।
साधा [स] मिलाया।
साधमत·[स] शिष्टाचार, अच्छा
व्यवहार।
साधारणदेश· [स] जंगल अनू·
प मिलाहु आदिक।
साधु·(स) भलो, उत्तम, सुन्दर।

अच्छी, सज्जन, पति, भला आदमी, अच्छा, मोक्षपाने की इच्छा रखनेवाला, कुलीन, श्रेष्ठ,उचित, मुनि भक्तजन, जिस को सन्मान, से हर्ष और अपमान से क्रोध न हो। साधु का मुख्य लक्षण विवरण। अक्रोध,वैराग्य,जितेन्द्रिय, दया, क्षमा, दाक्षि, नि-र्लोभ, निर्भय, निःशंक, निरहङ्कार॥१॥

साधुसाधु·(स) प्रशंसितवाचक, सकारवाचक, भली २, उत्तम २, शाबस २, वाह २, सत्य सत्य। चौ०। सहज सरल सुनि रघुबरबानी। साधुसाधु बोले मुनिज्ञानी॥ अर्थात् स्वाभाविक सूधी अर्थात् बनावटी से नहीं रघुबर की बानी सुनि साधु साधु कहैं सत्य सत्य मुनिज्ञानी बाल्मीक जी बोले।

साधुसराहि·(द) सत्यसराहि।

साध्य·(स) साधनयोग्य,सुगम, यत्नसिद्ध।

साध्वस·(स) भय, भीत,त्रास।

साध्वी.(स) सती, अच्छी, पतिव्रता, सुशील स्त्री।

सान·(प) शाण, पथरी बाढ़ धरे की, मान, मिलना, तेजकरना, आदरमान।

सानी·[स·फ]बैलादिपशुआहार, मिली,सौंदा,दूसरा,दोसरी।

सानुकूल· [स] सहायक, रक्षक, युक्त।

सानुज· [स] अनुजसहित, लघुभ्रातासमेत, संयुक्त।

सान्ती·(स) वेदऋचा संज्ञा, आशिष देनकालक उच्चा-रण ख्यात।

सान्द्र·(स) सघन,घना, गहन।

सान्द्रानन्द·(स)आनन्दसघन।

सापत (द) खापदेताहुआ।

साफल्य·(स)फलिभूत,सफलता।

सावकाश·(स) निश्चिन्त, अव-काश, अवसर, छुटी।

सावमान. (स) अनादर, अ-
भाव। [नीतिविशेष।

साम. (स) तीसरा वेद, राज-

सामग्री· (स) वस्तु. पदार्थ, घ-
टाला, कारण,समूह द्रव्य,
सामान।

सामध· (स) समधीमिलन।

सामर्थ्य· (स) बल, शक्ति,
योग्यता।

सामप्रायक. (स) पिता का स-
मपर्णदोष, श्राद्धक्रिया।

सामय·(स) समय, बेला,काल।

सामान्य· (स) साधारण, अल-
नसार।

सामीप्य सामुह· (स· प) नि-
कटता, समीपता,सन्मुख।

सामुद्र· (स) पांगानोन।

सामुद्रजल· (स) आसिन के वर्षा
का पानी।

सायं. (स) संध्याकाल।

सायक· शायक· (स) बाण,तीर,
खड्ग,तलवार। [नान्त।

सायन्तन· (स) सायंकाल, दि-

सायम्,(स)दिनान्त,सायंकाल।

सायुज्य. (स) मुक्तिविशेष, ब्रह्म-
लीन।

सार. (स) बल, जल, धर्म,
मज, इस्पात लोहा, धृत,
धन, न्याय, नवनीत,लोह,
लोहा, वन, वायु रोग,
श्रेष्ठ नित्य, गुदा, हीर,
रक्षा, सार शब्द—दोहा।
सार बीज धीरज धरम,
सार वज्र धृत सार। सारजु
सब की सांवरो, जिन
मोह्यो संसार ॥ १ ॥

सारक· [स, फ़] मेना पक्षी,
रक्षाकारक, जयपाल, ज-
मालगोटा।

सारङ्ग· [स] गज, मृग,
मोर, चातक, दीप, अलि,
विष्णु धनु, धनुष, हरिण,
हाथी,छत्र,राजहंस, चित्र,
वस्त्र, मयूर। कामदेव,
केश, आभरण, कर्पूर,
पुष्प, कोकिल, मेघ, सिंह,
रात्रि, भूमि, वायु, राग
विशेष। सारंग शब्द—

दो॰। पिक चामर कच संख कुच, कर बारस गह होय। खंजन कंजनखत-सद, काम विखग है सोय ॥ १ ॥ छित तलाव भुजंग पुनि, को बड़ भाग समान। सारंग श्रीभगवान को, भजिये आठो जाम ॥ २ ॥ सारग सुंदर कोकिल सत, रात दिवस बड़ भाग। खग पानी अरु धनवहिय, भ्रंवर अखिला राग ॥ ३ ॥ रवि ससि दीपक गगन हरि, केहरि कुंजर रंग। चातक दादुर दोबहल, ये कहिये सारंग ॥४॥ पपीहानाम—
दो॰। काल सुकण्ठ दात प हरी, चाचिक सारंग नाउं। घन कौं रठे पपिहारा, नहिं न वनै बलि जाउं ॥ १ ॥

सारगंध· [स] चंदन।

सरघ। सारघ·[स]मधु, शहद।

सारणी· [स] गन्धप्रसारिनी।

सारंगिक [स] व्याध,शिकारी।

सारज [स] नवनीत, मक्खन।

सारतरु. [स] कदलीवृक्ष, केले का वृक्ष।

सारथी. [स] रथवान्, रथ हकैया, रथादि वाहनों को हांकनेवाला।

सारद· [स] सारदाता, सार देनवाला, सरस्वती।

सारदा· [स] सरस्वती, वाणी, सारदेनवाली, जो दारुकी स्त्री है वाकी चारि रूप है, परा हृदय नाभी वा श्रवण स्थान अरु गुणातीता दूसरी पस्यंती॰ २ जाके हृदय के शिरोभाग स्थान सात्विक गुण युक्त.॥२॥ तीसरी मध्यमा, जाके कण्ठ स्थान राजसगुण युक्त, ३॥ चौथा बैखरी, जाके मुख्य स्थान तामस गुणयुक्त ॥४॥ सरस्वती शब्द का अर्थ निम्न लिखित छंद में देखिये।
छन्दमालिनी—वचन वच

गिरा घौ शारदा हंसजानी कपितयुत हृता घौ भाषितं ब्रह्मरागी ॥ सुखद बरद ब्राह्मी उक्त व्याहर दानी। जयति सरसुती गी भारती वाक्य बानी ॥१॥ गलजन्तक सुमाला भाल भा बिंदु सो है। कमलदृग विशालं वक्र राकेश सो है। कनक सम शरीरं पुस्तकं बीण पानी। जयति०॥२॥ श्रुति अगम अपारं सिंधु गीता पुरानो। निशि दिन मन चिंता सो हरौ हीन जानी। जननि तव भरोसे ग्रंथ भाषा बखानी। जयति० ३॥ दशवसु शुभ नामं मालिनी छंद जानो। नगन युगम मानं युग्मगायन पानो॥ विनय हरिविलासो कीजिये सत्यबानी। जयति ॥४॥ तुलसी शब्दार्थ में लिखा है। दो०। ब्राह्मी बाणी भारती, बाग शारदा होइ। भाषित उक्ति लंपित बचन, बच व्योहार सुगाइ ॥१॥ अन्यच्च नाम—दो०। बाणी वाक सरस्वती, गिरा शारदा नाम। ध्वनी मना-वन भारती, बचन चातुरी काम ॥१॥ [वस्तु होय।

सारदी·[श्र] सरदऋतु मों जो

साद्र्र [त्रि] अद्रता युक्त, गीला।

सारना· (प) निबाहना, सर·काना, काढ़ना, करना।

सारस·[स] कमल, पक्षी विशेष, मयूर, एक चिड़िया, सारस पक्षी।

सारसभ्रार· (प) तदुन, भार।

सारसजल· [स] तालाब का पानी।

सारा· (स.प) पोषण, वा पालन किया, समस्त, साला, पाका, पोषा, किया, पक्षी विशेष, खरछीसीज।

साराक्ष [स] तिलवृक्ष।

साराह्वय· [स] रसातलोड़ा।

सारिका. [स] मैनापक्षी, साढ़ी वस्त्र स्त्री को ।

सारिवा· [स] सनसर ।

सारी· (स) मैनापक्षी, दूध का सार, धोती ।

सारेङ्ग· (प) करेङ्ग, किएङ्ग ।

सार्ङ्ग· (स) विष्णु, धनुष, भौंरा ।

साल· (स· प) काष्ठविशेष, छिद्र, वर्ष, दुख, शोभा, घर ।

सालक· (स) दुखदर्शी ।

साला· (स गृह, स्थान, मकान ।

सालावृक· (स) कुक्कुर, कुत्ता ।

साली· (स) धान, शोभायुक्त, संयुत । [स्त्रीघारर ।

साले· (स) वृक्षविशेष जंगली·

सावक· (स) शिशु, बच्चा, शावक, चिड़िया का बच्चा ।

सावकरण·श्यामकर्ण· (स) काला कानवाला घोड़ा ।

सावकाश. (स) अवकाश, काम से छुट्टी ।

सावज· [द] जङ्गली, बनैला, अहेर, हरिणा मृगादि ।

सावधान. (स) चौकस, सूर्त्ता, सुध, स्थिर, सचेतन, होशयार, खबरदार ।

सावर· (स) किरातवेष तें शिवकृतामन्त्रादिग्रन्थ ।

सासति· (स) दण्ड, पीड़ा ।

सासन· (स) बिपति, भय, डर ।

सास्ना· (स) गोगल, स्थितत्वक, कंबल ।

सास्वतं· (स) अमर,

साहनी· सहनी· [स द] भृत्य, दास, दारोग़ा, चाकर ।

साहस· (स) ढाढ़स, बरबस, दण्ड, दुष्कृतकर्म, अविचारकृतकर्म ।

साहबी· [द] फौज़ । [ढीठ ।

साहसी·(स बरबसिया, निडर ।

सावन हरे न भादौं सूखे, सुसदासरीखे, सदाएक से ।

साक्षी· (द) साची । [मित्र ।

साहित्य· (स) सङ्गता, साथ,

साहिब· साहेब· [प· फ] सहायक, मालिक ।

साक्षात्. [स] प्रत्यक्ष, आगें,

सामने, सम्मुख ।

साक्षिन्· [स] साक्षात्द्रष्टा, परमेश्वर, साक्षी, गवाह ।

साक्षी· [स] प्रमाणकारक, गवाही । [यादवास ।

सिंगरौर· [स] शृङ्गवेरपुर, नि-

सिंह· [स] मृगराज, मृगेन्द्र, श्रेष्ठ, व्याघ्र, बाघ, शेर, उत्तम, सिंहपद ।

सिंहकेसर· [स] मौलसरी ।

सिंहठवनि· [स] सिंहध्वनि, सिंहचलन, सिंहठानि, सिंहटेरौ ।

सिंहतुण्ड· [स] सुठरिथासोज, सेहुंडवृक्ष ।

सिंहपर्णी· [सं] बाकस ।

सिंहपुच्छ· [स] पिठवन ।

सिंहावलोकन· [स] सिंहतकन जो तके श्रीर दिश् चले श्रोर दिश् ।

सिंहासन· [स] राजासन, पाट ।

सिंहान. [स] लोहसिंहान ।

सिंहिका. [स] बाकस ।

सिंही· [स] बाकस, बनभांटा ।

सिकत· सिकता· [स] बालू, रेती, किरकिर, रेत ।

सिख. [द] चोटी, दिया का टेम ।

सिखा· [द] शिक्षा, शिष्य, चेला ।

सिखिनी· [स] मोरनी ।

सिक्थ· सिक्थक· [स] मोम ।

सिकताख्य· [स] चीनी ।

सिङ्गल· सिङ्गल· [स] उपद्वीप विशेष ।

सित. [स] शुक्लवर्ण, उज्ज्वल, चांस, स्वेत, सफेद, रौप्य, चन्दन, शर, शुक्रग्रह ।

सित शब्द—दो० । सितरूपौ सित ज्ञान पुनि, सित सुकतहि कहन्त । सित तीक्ष्ण सित शुक्र पुनि, सित उज्ज्वल भगवन्त ॥१॥

सितकण्ठ· [स] शिव, कैलाश बासी ।

सितकर· [स] चंद्र, कर्पूर ।

सितकुंजर· (स) इन्द्र और इन्द्र का ऐरावत नामक हाथी ।

सिततिल· [स] सुपेद तिल ।

सितछत्रा. [स] सौंफ।

सिता· [स] सर्करा, खांड़, मिश्री, चीनी।

सितादि· [स] गुड़।

सितासित· (स) शुक्ल, स्याम, उज्ज्वल काला दोनों।

सिथिल. [स] ढीला।

सिद्ध. [स] साधु, पक्क, बना, समाप्त, अणिमादि सिद्ध, मुक्त, सिधारा। सिद्धिनाम दो०। अनिमा महिमा गरमता, लघिमा प्राप्ति प्रकाम। वसीकरन अरु ईसता, अष्ट सिद्धि के नाम१॥ एकहु सिद्धी वस्य करि, तेहि सिधि कह संसार। ते वृषभानभुपाल के, द्वार बोहारनिहार॥२॥

सिद्धार्थक. (स) सुपेद सर्षों।

सिद्धधातु· (स) पारा।

सिद्धांत. (स) निर्णीत अर्थ जो अंत में निश्चयहो अंत में जो अर्थ निकले।

सिद्धि· (स) अणमादि, ८॥ कार्य्यकीलभा, कामहोना, मोच, सम्पत्ति, फलोत्पत्ति, जयलाभ।

सिद्धी· (स) रिद्धी तदभावे बाराहो कंद। [भवे।

सिधाये· (प) गये, गयो, जात

सिधारा· (प) गया, जात भया, चलागया।

सिधारी· (प) गई, चलीगई, जातभई, सिधारना, जाना।

सिन्दुक· (स) सुपेद, फूल का सिंदुवार। [सिंदुवार।

सिन्दुवार· (स) सुपेद फूल का

सिन्दूर. (स) सेंदुर, स्त्री की शृंगार रक्तवर्ण, चोपा सेन्दुर।

सिंहवधू. (स) सिंहनी। चौ०। को प्रभु संग मोहि चितवन हारा। सिंहवधुहि जिमि ससक सियारा। अर्थात् सिंहवधू सिंहनी को चोगड़ा और स्यार कैसे देखेगा।

सिन्दूरी (स) सिंदुरिया।

सिंधु (स) समुद्र, उदधि, देश विशेष सागर।

सिन्धुक (स) तमालवृक्ष, तापिछ।

सिन्धुज (स) सेंधा नोन।

सिन्धु प्रसूतो (स) मदिरा, सुरा।

सिन्धुर (स) गज, करी, हाथी।

सिन्धुसुत (स) शशी, चन्द्रमा।

सिन्धुसुता (स) लक्ष्मी, कमला

सिम (स) सिमाना, मर्य्याद।

सिमकी (स) ढोली बाइन, ट्टी कतार की।

सिमिट सिमिट (स) बटोर, एकठौर, सङ्कोच, सिकोर, जुटे, एकत्र होना।

सिमटे (स) इकट्ठे, सिमटना।

सिम्बी (स) सेवा।

सिम्न्तिनी (स) स्त्री, नारी, मेहरी।

सिय (स) श्री सीताजू, सीता।

सियरमन, सियरवनू (द) राम, रघुनाथ।

सिम्बतश सिम्बीफल (स) सेवा।

सिरजा (स) रचा, बनाया, (सं॰ सृज)।

सियन, सियनि (प) सीयना कपड़ा, आदि, सीयावट।

सियरै (द) थकथकाने, कुम्ह लाने, जूड़े।

सियाह (फ) श्यामता, काला।

सिरस (स) सरसिवृक्ष।

सिरपर चढ़ाना, मु॰ लड़के को बिगाड़ना, इतराना, छोटे आदमी को बड़ा करना, आदरमानकरना।

सिरपीटना मु॰ रोना, विलाप करना, दुखकरना।

सिरफिराना मु॰ बेफायदह मिहनतकरना, वृथा परि- श्रम करना।

सिरनाई [द] सिर नीचे करके, सिरनवाके, दो॰। यथा मत गज जूथ मद, पंचान न अभिनाय। रामप्रताप संभारि उर, बैठ सभा सिर नाय। अर्थात् बैठ, सभा

सिरनाय इसके दो अर्थ हैं एक यह कि अंगद के आदर को सभा उठखड़ी हुई इसलिये कि अंगद भी नीत के अनुसार नमस्कार कर बैठ गये दूसरा मुख्य अर्थ यह कि अंगद के बैठने से सारी सभा का सिर नीचे हो गया। पहले लिखा है चौ०। उठी सभा सब कपि कहं देखी। रावन उरभा छोभविसेषी। अर्थात् सभा के उठने के दो भाव एक तो अंगद के तेज को देख किसी का आसन न थंभा दूसरे बंदर के कर्त्तव्य का भय बना है इसलिये सचेत हो गये और रावण को विशेष क्षोभ हो गया कि मैं भी उठूं।

सिरफेरना, मु० हुक्म नहीं मानना, आज्ञा नहीं मानना।

सिरमारना, मु० बहुत मिहनत उठाना, मिहनत से खोजना।

सिरमुंडाना, मु० सब से मेल छोड़ कर फकीर बनजाना।

सिरझुकाना, मु० नमस्कार करना, प्रणामकरना।

सिरधुनाना, सिरधुनना, मु० दुख से सिर हिलाना, घबराना, दुखीहोना।

सिरतोड़ना, मु० वस में करना, अधीनकरना, दबाना।

सिरधरना, मु० वस में होना, अधीनहोना, तावे में होना, आज्ञाकारी होना।

सिरनवाना, मु० गरीबहोना, अधीनहोना, बसमें होना, नमस्कारकरना, सिर झुकाना।

सिरपपोलना भेजाजाना, मु० जाहिर में भिचाई दिखलाना और मन में बड़ा बैर रखना।

सिरपर धूलडालना, मु० रोना, बिलापकरना।

सिरउठाना, मु॰ अपने मालिक से फिर जाना, बगावत करना।

सिरकरना, मु॰ शरू करना।

सिरकाढ़ना, मु॰ नामी होना प्रसिद्ध होना, मशहूर होना

सिर के जोर, मु॰ अपने बल बल से। [मुंह भरा।

सिर के भल, मु॰ औंधा सिर,

सिरखुजाना, सिरखुजलाना, मु॰ मारखायाचाहना, सजाचाहना, पिटाना चाहना। [सामी।

सिरचढ़ा, मु॰ घमंडी, अभि

सिरचढ़ाना, मु॰ बड़ाई करना, बड़ाजानना, माथे पर रखना, पवित्रसमझना, इतराना, घमंडीहोना, आदरमानकरना।

सिराई, सिराहि (प) ठंढा, शीतल, शीत, बितित, बितते हैं, बीतना।

सिरानो (प) बोती, ठंढाभई, सिराना।

सिरावै (प] ठंढाकरै, जुड़ावे।

सिरीषो. (स) वृक्षविशेष, पुष्प कारक।

सिलीमुख (स) बानर, भ्रमर।

सिलोन्ध्र [स] सीलन्धुमछली।

सिल्प, शिल्प (स) कारोगरी, राजगीरी।

सिल्हर्क (स) सिलारस।

सिव सिवाना सींव (प, फा) सीमाना, छोर, डांड, मर्याद, महादेव, कल्याण, रुद्र, सींवा। शिव शब्द। दोहा। शिव सुख सिव कल्यान पुनि, श्रेष्ट पुरुष शिवसोय। शिवसंकरप्रभु शिवसलिल, साधु सदा शिव होय ॥१॥

सिवसैल [स] कैलाशपर्वत।

सिवा, शिवा. [स] पार्वती।

सिशिर [स] शिशिर ऋतु,।

सिसु शिशु [स] लड़का, बच्चा।

सिंसुपा [स] सोसो का पेड़, सरीफा का पेड़, प्रधान

सीसो है कोई सरीफा का भी कहते हैं।

सिस्न· [स] लिंग।

सिवि· [स] राजा विशेष, परोपकारक धर्मशूर जाकी कथा श्रीभागवत मध्य प्रमाण। एक समय उपकार परीचा निमित्त यज्ञकाल अग्नि बाज़ रूप, और इन्द्र कपोत रूप होके राजा शिवि को यांचन गयो, परन्तु राजा नैं कपोत को बचा के बदले उस के अपनीं मांस देह का काटि काटि के वा बाज को दियो है।

सिगिका·[द]पालकी चौपहला, नालकी इत्यादि।

सिंशुपा· सिशपात. (प· द्र)सीशोवृच, शरीफा फल।

सिहर· (प) ठिठुरनै, सूखनै।

सिंहठवनि·(द्र) सिंह की चाल।

सिहांडी· (प) देखि के राजी होना वा हर्ष होना अभिलाषित होना, देख के संतुष्ट होते हैं, अभिलाष, डाह, सिहाना।

सींक· (स) सीकी तृण, नरकट, सरकंडा।

सीकर· (स) छोटा, बूंद।

सींग· (प) बिषाण, शृङ्ग।

सीच·(स) जलछीटना, जलस्पर्श।

सीटीबजाना· मु॰ मुंह से सीसी ऐसो आवाज निकालना।

सीत· शीत· (स) पाला, ठंढा।

सीता·(स) (सि बांधना) जानकी, वैदेही, मिथिला के राजा जनक की बेटी औ जगदीश्वर रामचन्द्र की पत्नि, इस के नीचे एक कोहे का फल लगा रहता है उसे भी सीता कहते हैं और जब राजा जनक यज्ञ के लिये हलजोत कर धरती को साफ कर रहे थे तब धरती में से एक घड़ा निकला उस में से एक लड़की निकली इसी कारण से उन का नाम

सीता रकवा, सीताग्रब्द—दोहा। सीतानिधि सीता क्षमा, सीता गंगा होइ। सीता सिय भोदेवता, जेहि जांचे सब कोइ॥ १॥

सीतापति· (स) रामचंद्र।

सीताफल· (द) शरीफा, एक फल का नाम।

सीतासुत· (स) लव और कुश। मानस शंकावली में जो बंदन पाठक का ज्यों का त्यों कुछ अक्षर बदल कर मुद्रित करलिया है लिखा है। यहां तो यह लिखा है कि हुई सुत सुन्दर सीता जाये। आगे यह लिखते हैं कि दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे। तो यहां प्रथम श्री राघव का नाम नहीं लिखा सीता का नाम लिखा इस में क्या हेतु है। उत्तर। भरतादिक भ्रातन को पुत्रतो श्रीअवध में भये तातें पिता के नाम से ख्यात किये औ श्रीजनक किशोरी जी के पुत्र लव-कुश महामुनि वालमीका-जीके आश्रम में भये अत-एव माता ही के नाम से ख्यात भये काहे कि मुनि जो ने सीता को पुत्री क-रिके मानी है तिस का प्रमान वालमीकी आदि में प्रसिद्ध है अतएव इसी चौपाई द्वारा गुसाञ्या श्री सीता जी को मुनि आश्रम को ग्रंथकार ने गाई या में सन्देह नहीं है।

सीताकान्त, (स) रामचन्द्र, प्रमाण मिथिला रामायण बालकांड सोरठा। सुनु गिरजा वृत्तान्त, महादेव कहकनि कथा। लखना सीता कान्त, मारुतनन्दन मौं कहल॥ १॥

सीतेश·(स) रामचंद्र। मिथिला भाषा रामायण बालकांड में पं॰चंदझाजं लिखा है। चौ॰। विदित तत्व सीतेश

प्रणाम । इम करहुत हो मन सुखकाम ॥

सीद. (स) दुःखित, सिहरने ।

सीदना, (प) दुःखपाना, सिहरना ।

सीदहिं. (प) सिहरहिं, दुःखित होहिं, दुखी होते हैं ।

सीधा (प) निष्कुल, सीझा, कोराअन्न ।

सीधु. (स) मदिरा, सुरा, शराब ।

सीप. सीपी. (स) सितुआ, शंख, घोंघा, सुतुही ।

सीपसुत. (स) मुक्ता, मोती ।

सीम. सीव. सीमा. (स) सिवाना, अवधि डांडा, मर्य्यादा, पल, अपार, हद्द ।

सीर. (स) सूर्य, अर्कवृक्ष, हल ।

सीरपाणि. (स) बलदेवजी ।

सीलसराहि. (द) सुभावसराहि ।

सीवा. (द) सिवान, सीमा, मर्य्याद ।

सीस. (स) शिर, मस्तक, शीस, सीसा धातु ।

सीसफूल. (द) गहना विशेष ।

सीसज. (स) पीपासेंदूर ।

सु. (स) सुन्दर, उत्तम । [सूनु ।

सुअनु. (प) सुअन, पुत्र, लड़का,

सुअंजन. (स) अच्छाअंजन, सिद्धअंजन ।

सुआर. (द) रसोइया, पाककर्त्ता, रसोईदार, रसोई ।

सुक. [स] सुग्गा, सुखदेव मुनि ।

सुकटा. (प) कृश, दुर्बल ।

सुकण्ठ. (स) सुन्दर कंठ वाला, सुग्रीव, बालि अनुज ।

सुकर्कश. (स) अतिकठोर ।

सुकाष्ट. (स) देवदारुकाष्ट ।

सुकीर्त्ति. (स) सुयश, सुन्दर, पुण्य ।

सुकृत. (स) पुण्यवान्, सुशील, भाग्यवान्, अच्छी करनी, पुण्यकारक, धार्मिक जन ।

सुकृती. (स) पुण्य, धर्म, सुन्दर करणी, भलाई, धर्मात्मा, अच्छा कार्य्यकरनेवाला ।

सुकेतु. [स] नाम यक्ष, पक्ष विशेष ।

सुकेतुसुता. [स] ताड़का निशिचरी सुन्दर, नामा असुर की स्त्री ।

सुक्र. [स] वीर्य्य, शुक्राचार्य्य ।

सुकृताश. [स] अति कठोर ।

सुख. [स] आनन्द, मोद, हर्ष, पुण्यफल, प्रसन्नता, इच्छानुरूप फल प्राप्ति ।
सुखखु· (स) सुखयुक्त इन्द्री ।
सुखद. सुखप्रद [स] सुखदाता, तोषक ।
सुखवर्त्तिका. [स] सज्जी ।
सुखासन. [स] सुखपाल, वाहन विशेष, पालकी । [भाग ।
सुखेत. [प] सुन्दर खेत, दहिन
सुखेन. [स] सुख से, अकष्ट तें ।
सुखमा. [स] परम शोभा, अति शोभा ।
सुखारि. [स] सुखी ।
सुखपांश. [स] महाफ़ा किसम वाहनविशेष ।
सुखचैन. सुं० आराम ।
सुखपाना, सु· आरामकरना, चैनकरना ।
सुखदेनेवालो, सु० सुख देनेवाला । [वाली ।
सुखकंदा. [द] सुख बरसने
सुभलेना. सु० खबरलेना, समाचारलेना ।

सुनसान. सु० उजाड़, चुपचाप, एकान्त, निराला ।
सुरमिलाना. सु० एक सुरकरना, अच्छे सुर से गाना ।
सुगम. [स] सहज, स्पष्ट, सुकर ।
सुगंध. (स) खुशबू, गठिवन, स्याहजीरा, सत्तकोनिर्य्यास अगियाखुर, कांटायुक्त ।
सुगन्धक. [स] लालधान ।
सुगन्धमूल. [स] हर्फारेवड़ी ।
सुगन्धा. (स) कुलञ्जन, रास्ना जाई, सुगन्ध कोकिला ।
सुगन्धी. (स) एलवालुक ।
सुगाई. सुगाना. [द] लगाई, लपटाई, लगाना, लगाकरके ।
सुग्रीव. (स) वालि का अनुज, अस्त्र विशेष कपारथ ।
सुघटित. (प) सुन्दरबने, सुन्दर बने, सुन्दरतुले. अच्छाबना ।
सुच. (स) निर्म्मल, स्वच्छ, शुचि ।
सुचक. [स] कौतुक, सचेत, सगुन ।
सुचत. [स] निर्म्मल, स्वच्छ, शुचि । [सुचिताई ।
सुचाई. [प] सुथाई, निर्म्मल·

सुचि, शुचि. [स] पवित्र ।

सुचित. सुचेत. [स] सुरती, स्मरण, चोकस ।

सुचिंतित. [स] अति विचारित।

सुचिसेवक. [स] आज्ञा मे नहीं टरनेवाले सेवक ।

सुजन, सुजान. [स] सुन्दर-ज्ञाता, प्रवीण, साधु, भला आदमी, चतुर ।

सुटकि, कुटुकि. [प] गिरझुका के, लुकरके, कोड़ा मारि के ।

सुठि, [स] अधिक, कोमल, सुन्दरविशेष, अति बहुत अत्यन्त ।

सुड़क. [प] कोड़ा, चाबुक ।

सुड़कि [प] कोड़ा मारि के ।

सुड़की. [प] गुड्डी की डोरी ढील देना ।

सुढर. [प] सुन्दर, सुडौल ।

सुढारि. [प] युताई, चोरिभाई ।

सुत. [स] पुत्र, लड़का, बेटा, तनय, भाई । चौ० । सुन सुत भयेउ कालबस रावन । सो कि मान अब परम सिखावन ॥ विभीषण को कुम्भकरण ने सुत इस लिये कहा कि छोटा भाई पुत्र के समान है ।

सुतश्रेणी. (स) बड़ी तामाखड़ी ।

सुतर. [स] श्रेष्ट, सुन्दर, अति सुन्दर ।

सुता. [स] पुत्री, लड़की ।

सुतीछो. [द] सुंदर चोखा ।

सुतीक्षण. [स] नाम मुनि ।

सुतेजन. [स] धामिनवृक्ष ।

सुतुंन. (स) तर्बूजा ।

सुथन. (स) पैजामा, तमान ।

सुथरा. [प] सुन्दर. अच्छो ।

सुदर्शन. (स) विष्णुका चक्र, सुदृष्टि. सुदरसनैजड़ी मकली एक द्रव्य ।

सुदीर्व. [स] चिचिण्डा ।

सुदेश. सुदेशु. (स) सुवस्तुपति-पादुक, अंग, सुन्दर देश ।

सुदेने. (ट) अच्छी वस्तु देनेवाला।

सुधबुध. (स) चेत, सूझ । समुझ ।

सुधरत. (स) बिगड़े को बनान ।

सुधा. (स) अमृत, पीयूष, जल, आबेहयात, मठरिया सोल,

सुधा शब्द—दोहा। सुधा दूध बिजुरी सुधा, सुधा कलो निज धाम। सुधा वधू पुत्री सुधा, सुधाऽमृत को नाम॥१॥

सुधांशु. सुधाकर. (स) शशी, इन्दु, चंद्रमा, शिव।

सुधानिधि. (स) चंद्रमा, कर्पूर।

सुधावास. (स) खीरा।

सुधि. (प. स.) चेत, ध्यान, शुद्ध, स्मरण, चिन्तन।

सुधी. (स) सुबुद्धि, विद्वान सुबुद्धियुक्त, सुंदर बुद्धि।

सुनकातर. (स) सर्प्पविशेष।

सुनयना. सुनयनी. (स.प) नाम राजा जनककी स्त्री, सुन्दर नेत्री।

सुनसर. (स) भूषणविशेष।

सुनाज. सुनाजु. (द) सुभक्ष, सुभक्ष।

सुनाम. (स) नामवर।

सुनाभि. [स] पर्व्वत, पहाड़।

सुनाशीर. सुनासीर. [स] इन्द्र, मघवा।

सुनिषराषक.[स]गिरिधारी।

सुन्दर. [स] अच्छी, विमल, पर्व्वत, विशेष सम्पाति स्थान समुद्रतट, मनोहर, खूबसूरत। सुंदर नाम— दो०। सुभग, सुखम बंधुर रुचिर, कांत अभिराम कमनीय। रुचिर सुवेषल भव्य अरु, दर्श-नीय रमनीय॥१॥ तैसोइ सुंदर बर, कुंअर, नागर नग-धर पीय। जोरी रचि विधि निपुनता, एक प्रान तन दोय॥२॥ छंद विनोद। घनस्याम त्रिभंग अनूप मनोहर सुंदर चित्त हरी कमनीय। रुचिरं अभिराम ललामहु बंधुर चारु विशाल शुभंरमनीय। सुभगं रुचि रम्य प्रशस्त मनोज्ञ सवाम सुदृश नाम समाज। सगनं वसु अंत लघू पुनि दे यह छंद विनोद कह्यो कविराज॥

सुन्दरी. [स] युवास्त्री, रूपवती, अच्छी। [समूह भोजन।

सुप. [स] दालभोजन वस्तु,

सुपकारक· सुपकारी· [स] रसोइया, पाककर्त्ता ।
सुपर्ण· [स] खगेश, गरुड़ ।
सुपर्णक· [स] अमलतास ।
सुपर्णिका· [स] बकुची ।
सुपशास्त्र.[स]रसोई की विद्या ।
सुपाश· सुपाशा. सुपाशु. सुपास. } [स·ट]रचना, सुख, चैन, सुविहिता,मैदानी, आराम, सुविस्ता ।
सुपार्श्वक· (स) पलासपीपल ।
सुपुत्र·(स) योग्यपुत्र, सुसन्तान ।
सुपेति· (ट) तोशक, बिछावन, वस्तु पलङ्ग का ।
सुप्रसन्न· (स) सुंदर, प्रसन्न ।
सुप्रवेश·(स)सुन्दर प्रवेश,सुभग।
सुपोदन· (स) दाल भात, भोजनवस्तु ।
सुवट· [स] सुन्दरवृक्ष ।
सुबट· [स] सड़क, शाहराह ।
सुबर्ण.[स]सुन्दरवर्ण,सोनाधातु दो० । कञ्चन कार्तिस्वर कान्तिसुर, चामीकर तपनीय । अष्टापद हाटक पुरट,महारजतरमनीय ॥१ सोनेही के सदन सब, मानिक गच सच देत । जहां तहां नरनारि सब, झांई झुकि झुकि लेत ॥२॥
सुबस· [स] सुन्दरबसागित ।
सुबाट· [स] सुन्दरसड़क, सुन्दर मार्ग, । [यथ ।
सुबास·[स] सुगन्ध, भलाअसबाब,
सुबासिनी·[प· स·]सुहागिनी, सुगन्धिनी ।
सुबाहु· [स] निशिचरविशेष, मारीच दैत्य का भ्राता, सुन्दरभुजा । [कुंड़मार्क ।
सुबुद्धि· [स] चतुर, प्रवीण,
सुबेल· [स] सुन्दरबेल, समुद्रतट, सुन्दरपर्वत, सुन्दरकाल, पुरीविशेष, शैलविशेष,समुद्र का किनारा, सुन्दरसमय।
सुबेलि· [स] पान, ताम्बूली ।
सुबेरा·सुबेला·[स]सुन्दरलगन।
सुबहा· [स]सलेभा, नीलाफूल का सिंगुआर ।

सुवहा· [स] रास्ता।

सुभ· [स] सुभट, भड़क, शुभ, अच्छा, सुन्दर, शोभा।

सुभा· [स] सुभा शब्द दोहा। सुभा सुधा सोभा सुभा, सुभा सिद्ध परनारि। बहुरो सुभा हरीत को, हरि पद को रज धारि ॥१॥

सुवता· [स] पञ्चांङ्गेसुगंधवाला।

सुभगुण· (स) ध्यान, वैराग्यादि, अच्छागुण। [भाव।

सुभाउ· (स) संसकार, अच्छा

सुभ्र. (स) सफेद। [ऐश्वर्य।

सुभग· (स) सुन्दर, प्रतापी,

सुभगा· (स) सुस्त्री, सौभागवती।

सुभट. (स) सुन्दरवीर, सुन्दर योध्या, बड़ेबड़े योध्या।

सुभाव. सुभाय· (प·स) सुन्दरभाव, अनेक जन्मके संचित कर्म को शेष, सुभावनाम दो०। प्रकृति निसर्ग सहज अति, जबही सरल सुभाव। कौन टेव टेढ़ी परी, सुन्दर सरल लखाव ॥१॥

सुभुज· (स) सुन्दरबाहु, सुबाहु दैत्य।

सुमति· (स) सुबुद्धि, राजा सगर की लघु स्त्री।

सुमन· (स) पुष्प, फूल, गोधूम, देवता, सुन्दर, गेंहुम, तीनो तरह का गोहुम, धतूरा, शीलवन्त सुन्दरमन, सुमननाम—दो०। कुसुम सुमद सुफल पिता, पुष्पमंजरी नाम। सुमन गेंद कर वर लिये, छवि सो खेलत श्याम ॥१॥ कुसुम मंजरी फल पिता, पुष्प प्रसून सतांत। सुमन फुल सुमनस सुमंदर्श नाम सिद्धांत ॥२॥ दोहा। सुमनस सुर सुमनस पुहुप, सुमनस बहुरि बसंत। सुमनस जेहिमन मैं बसहि, से सब कमलाकंत ॥३॥

सुमनस· (स) भमर, पुष्प, वसन्त, विष्णु देवता।

सुमना· (स) मालतीपुष्प, सुतिदा

तीय। सुमना शब्द — दो०। सुमना कहिये मालती, सुमना मुदिता तीय। सुमना रति सोइ कान्ह सों, कर ले लंपट जीव ॥ १ ॥
रति, चमेली चमेलीफूल। चमेलीनाम—दो०। सुमना जाती मल्लिका, उत्तम गंधा जासु। कुक एक तुम तन बास तें, मिलत जासु की बास ॥१॥

सुमन्त· (स) नाम मंत्री राजा दशरथ, सामान्यमंत्री, मंत्र, सलाह।

सुमिरत. (प) ध्यानकरत, स्मरण करत, ध्यानकरता हुआ। [शास्त्र।

सुस्मृति· (स) स्मृतिशास्त्र, धर्म·

सुमुष्टिक· (स) कोकिला।

सुमेरु· [स] पर्व्वत विशेष। केन्द्र, सुमेरुनाम — दो०। रत्न सानु हेमाद्रि सुर, आलय मेरु सुमेरु। करत प्रदक्षिण भानु नित। तातें सांझ सबेर ॥१॥

सुम्वा·[स]तोप की ठसनी, गज़।

सुयश· [स] सुख्याति, कीर्त्ति, सुनाम।

सुर· (स) देवता, देव, निर्ज्जर, स्वर, पंडित, सूर्य्य। सुर शब्दवाचक शब्द के आगे पति शब्द वाचक रखने से इन्द्र का बोध होता है। तथा रिपु वाचकशब्द रखने से दनुज, राक्षस का बोध होता है। सुर शब्दवाचक शब्दों के आगे सरि अर्थात् नदी वाचक शब्द रखने से देव नदी अर्थात् गंगा का नाम होता है। और जन्हू शब्द के आगे पुत्रीवाचक शब्द रखने से भी गंगा नाम होता है तथा भीष्म शब्द के आगे मातावाचक शब्द रखने से भी गंगा का नाम होता है। सुरपति शब्द के आगे सुतवाचक

शब्द रखने से जयंत का बोध होता है।

सुरगुरु. (स) देवगुरु, बृहस्पति।

सुरबल्लभा. (स) देवांगना, केसर। केसर नाम—दो०। का श्मीरी कुंकुम रुधिर, देव-बल्लभा नाउ। यह केसर पग परि कहत, अभी बारि बलजाउ ॥ १ ॥

सुरकुसुम. (स) लवंग लवंग लतानाम—दो०। देवकु-सुम श्रीरंग पुनि, जावक जाको राउ। ललित लवंग लता इतहि, पवन परत लखि जाउ ॥

सुरतरु. (स) देववृक्ष, कल्पवृक्ष।

सुरति. (स) सुन्दर प्रीति।

सुरसमुदाय. (स) देव समूह।

सुमिति. (स) सुन्दर मित्रता।

सुरथपति. (स) विश्वकर्मा, चौ०। रचेउ राम मनु देवन जाना। कलित सहित सुरथपति प्रधाना ॥ अर्थात् श्री राम का मन रख्या चह जब देवन जाना तब सुरथपति विश्वकर्मा सो प्रधान है। जिन्ह में सो सब देवते चली। स्थपतिवर्धकीत्दोऽपिइत्यम-रः ॥ कारस्तु कारके शिल्पि विश्व शिल्पनि इति हेम-चन्द्रः चली और पोथिन में सुरपति परधाना है।

सुरपति. (स) इन्द्र, बज्रधर, अर्हंत, विष्णु, शिव इत्यादि।

सुरपतिसुत (स) जयंत।

सुरवर्त्म. (स) देवमार्ग, आकाश।

सुरवीथी. (स) देवमार्ग, शून्य, आकाश, सिसुमारचक्र, देवता की राह।

सुरभि. (स) बसन्त ऋतु, चम-त्कारवन, इष्टगन्ध, चन्दन, मृग, जायफल, गैया, सुगंध।

सुरधाम. (स) देवलोक।

सुरभी. (स) कामधेनु, देवगौ, सुगंध। सुरभीनाम—दो० सुरभी चन्दन सुरभि मृग, सुरभी बहुरि बसंत। सुर-भी चम्पक वन कहै, जो

लग करता कान्त ॥१॥
गोचारण गोनाम—सो०।
को विरंच हर सेव, सो
सुरभी गो सेतु गो । चा-
रत हरि बलदेव, विपिन
धेनुका सुरबध्यो ॥२॥

सुरभोग (स) देवभच्छ, अमृत।

सुरमणि. } (स) चिन्तामणि।
सुरमनि. }

सुरमणी. (स) देवस्त्री, सुरपत्नी।

सुरराय. (स) इन्द्र, विष्णु आदि।

सुररिपु (स) राचस, असुर, निशाचर, बीरविशेष। प-सुरनाम—दो०। शुक्र शिष्य दानव दनुज, असुर दैत्य शक्रारि। सुरद्वेषी दैत्येय सब, कीन्हे कदन सुरारि ॥१

सुररूख (स) कल्पवृक्ष, मन्दार आदि वृक्ष।

सुरूप [स] सुंदर रूप।

सुरलोक [स] स्वर्ग, देवतालोग, मिथिलाभाषा रामायण बालकांड में पंडित चंदा झा ने लिखा है। सो०। कयल प्रार्थना ई सुरलोक कहुकनि धरणी को बड शोक ॥१॥

सुरसर [स] मानसरोवर।

सुरसरिता सुरसरी [स] गङ्गा नदी, मन्दाकिनी चौ०। मुनि वरबहुरि राम समुझाए। सहित समाज सुसरित नहाए ॥ अर्थात् मंदाकिनि।

सुरसा [स] नागमाता। चौ०। सुरसा नाम अहिन की माता। पठयन्ह आय कही ते बाता ॥ अर्थात् सुरसा नाम सर्पों की माता को भेजा सो उस ने कह दिया। पुन: चौ०। जस जस सुरसा बदन बढ़ावा। तासु दुगुण कपि रूप दिखावा ॥ पुन:—दो०। रामकाज सब करिहहु, तुम बलबुद्धि निधान। आशिष दे सुरसा चली, हर्ष चले हनुमान ॥ अर्थात् हर्ष के दो कारण हैं एक तो इन के बल बुद्धि का देवताओं की परीक्षा में पूरा उतरना दूसरा सुरसा से आशिर्वाद

पाना। [षडानन।

सुरसेनप·[स] इन्द्र, कार्त्तिकेय,

सुरा·[स] मदिरा, मद्य, मन्दिर, शराब।

सुरारी·सुरारि[स]दैत्य,राचस।

सुराई·[द] शूरता, बीरता।

सुराचार्य्य·[स] बृहस्पति, धिषणा।

सुरानीक·[स] देवताओं की सेना,मदिरा अच्छा। चौ०। बहुरि शक्र सम बिनवौं तेही। सन्तत सुरानीक हित जेही॥ फिर उन को इन्द्र मान कर बिनती करता हूं और सुरानीक यह शब्द द्व्यर्थक है एक देवताओं की सेना अर्थात् जैसे देवताओं की सेनापति इन्द्र हैं ऐसे बिषई की सेनापति खल हैं दूसरा अर्थ सुरा-मद्द अर्थात् जिन की मद्द से नीक हित है और मद इन्द्र के साथ राजमद है और इन के साथ विकार मद है।

सुरासुर·[स] सुर और असुर।

सुरुचि·[स] सुन्दररुचि, सुन्दर चाह, अच्छी रुचि।

सुरेन्द्र· सुरेश·[स] इन्द्र,।

सुरेशा·[द] इन्द्रादिक।

सुरंगा·[द] पीतरंग, लालरंग, अच्छा रंग।

सुलभ·(स) सुन्दर लाभ, सहज, सुख से प्राप्त, सुगम, सुखसाध्य, अदुर्लभ, आसान।

सुवन·(स) पुत्र, लड़का, सूनु।

सुवर्ण·(स) सोनाधातु, सुन्दर, मनोहर।

सुवर्च्चला·(स) हुरहुर।

सुवर्च्चिका·(स) सज्जी।

सुवर्णक·(स) अमलतास।

सुवर्णगैरिक·(स) सुबरनगेरू।

सुवास·(स) सुगंध, यश।

सुवासिनी·(स) सुहागिनी।

सुवेल·(स) समुद्र का किनारा, पर्व्वत, सुंदर समय।

सुशील·(स) सुस्वभाव, धीरज, साधु, सुंदरशीलवान्

अच्छेस्वभाववाला।
सुश्रमित· (स) सुन्दर ताप खेदनाशक।
सुश्री. (स) शोभासुन्दर, मनोहर, अतिसुन्दर।
सुखमा·सुषमा·(स) परमशोभा।
सुषुप्ति· (स) सुखनिन्द, घोरनिद्रा, निद्रावस्था।
सुषेण· (स) नामवैद्य लङ्कावासी।
सुष्टु· (स) सुन्दर, भला, सु, अतिशय, प्रशस्त, सत्य।
सुस्थिर· (स) निश्चल, अचल, अटल।
सुस्म· (स) पांचवां वेद महाभारतादि। [सुवर्ण।
सुहाई· (स) सुन्दर, सुहाना,
सुहृत्· सुहृद्· (स) मित्रविलुप्तयोजन, सहायकारी, हितु सुन्दर मित्र, दोस्त।
सूअर· (प) शूकर, वराह।
सूआ·सुवा· (द) बड़ीसुई, तोता।
सूगा·सुग्गा· (द) शुक, तोता दो०। रक्त चंचु सुर्क कीर अब, पढ़न जगत पियनाम। भुकि भइरावति मुसुखि तब, अति छबि पावति बाम॥१॥ कीर का नाम नीचे लिखे हुए छंद में भी है पर उस में नासा, मोती का भी नाम है। छंद कुंडलिया रीत द्वितीय—घ्राण नासिका गंध वह नासा प्रोणा नाक्रं मूक्तिज मुक्ता मौक्तिकं अंबुज गुली बुलाक। अंबुज गुली बुलाक कीर शुक लोहित तुंड मन। दाडिम बीज वितुंड गहे अति पुष्ट मुदित मन॥ दाडिम बीज वितुंड महा अद्भुत छवि छाई। हरिविलास अभिलाष वास कर मन उरआई॥१॥
सूप शास्त्र· (स) भोजन शास्त्र।
सूकर· (स) वराह, सूअर।
सूकरखेत· (स) वराहक्षेत्र, वाराहखेत। [जनाव।
सूच· (स) बोध, शिक्षा, ज्ञाप,

सूचक· (स) ज्ञापक, शिक्षक, भेदक, जनावतकार, स गुन बतानेवाला। [दुष्ट
सूचत· [स] जनावत, जनाता
सूचिकापुष्प· [स] केवड़ा।
सूचीपत्र· [स] सिरिस्तारी।
सूचोपत्ता· [स] सुड़नीकेतारी।
सूत· सूथ· (स· द·) सारथी, रथवाह, संकरविशेष, पुराणिक, बढ़ई, पुराण से स्तुति करनेवाला।
सूत· [स] पारा।
सूतल· [स] छठवां पाताल।
सूतिका· [स] जच्चा, प्रसूतिका।
सूत्र· [स] तागा, किंकिणी कटिभूषण, सूत्रवाक्य नीति। गुन शब्द—दोहा। गुन राजत गुन पुत्र पुनि, गुन कमान की जेह। गुन चरित्र गोविन्द के, गावहु उर धरि नेह॥१॥
सूत्रधार· सुत्रधार· (स) पुतरी नचवैया, पुतरीनचानेवाला कुंतल, कुंतल शब्द दोहा। सूत्रधार कुंतल कहत, कुंतल कपटी वेस। खंडपानि कुंतल कहैं कुंतल बहुरी केस॥ ॥१॥
सूना· (स) मकरी कोट।
सूत्रामा. (स) इन्द्र, वासव।
सूदन. (स) नाशक, घालक।
सूनु· सुनु (स) पुत्र सन्तान, अनुज, कनिष्ट भ्राता, सूर्य।
सूप· (सं) शूर्प, छगरा, छाज, दाल, छान, पकाहुआ दाल।
सूंट भरना, या मारना, मु॰ चुपचाप रहना।
सूंट मारि जाना, मु॰ चुपचाप चला जाना। [चो·
सूपकार· (स) रसोईया, बावरचं।
सूपकारक· (स) रसोई करनेवाला, रसोईया, बावरची।
सूर· सूर्य्य· (स) रवि, दिवाकर।
सूल, शूल· (स) दुःख, त्रिशूल।
सूरी (स) पंडित, विद्वान, चतुर।
सूर्य्यद्वादशविवरण· (स) श्लोक॥ प्रथमं चादित्यं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः। तृतीयं भास्करं

प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः॥१॥
पञ्चमं स्वाथ गतीति, षष्टं
लैचोचनं तथा। गभस्तिसप्तमी
प्रोक्तंणामिकअष्टमंतथा॥२॥
दिवासौ नवमि प्रोक्तं दशमि
भानुरैवच। विजयैकादशे
प्रोक्तं व्रतुलं द्वादशं तथा॥३॥

सूर्य्यपर्णी· (स) वनमूंग, वन
उरिद।

सूर्य्य भक्ता·
सूर्य्यावर्ता· } (स) हरहुआ।

सूर्य्याछा· (स) तामा।

सूक्ष्म· (स) अल्प, क्षीन, चोखी, प-
तला, तीखा, अस्थूल, थोड़ा।

सूक्ष्मपत्र· (स) कुकुरौंधा।

सूक्ष्मा· (स) चोवड़ा इलायची।

सृंग, श्रृंग· सींग· (स·द) सिखर।

सृगाल· (स) जंबुक, गीदड़
शृगाल नाम दो०। भूरि-
माय गोमाय सृग, धूर्त्त
शृगालहु फेर। क्रोष्ठ वंच
जंबुक शिवा, रोवत दिन
पुर घेर॥१॥

सृति· (स) मार्ग, बाट।

सृप· (स) नाग, सर्प्प।

सृष्टि· (स) जगत्, उत्पत्ति, ज-
नम, रचना, स्वभाव।

सेतु· (स) पुल, बन्ध, सांखो,
बांध, मर्य्याद, बरहा।

सेतुक· (स) नागर मोथा।

सेधा· (स) साहिल।

सेन· (स, प) सेना, कटक, नाश,
इशारा, फ़ौज। [सेनापति

सेनप· (स) राजा, सेनापालक,

सैनव· सेना· (स) दल, कटक,
पलटन, फ़ौज। अथ या
सेन नाम—छंदकिरीटी।
नाथ वियोग विदेहसुता
सब गात भयौ ~~अति~~ सूक्ष्म
पुरातन। क्षीरग दुर्बल
क्षोण क्षमं मुनि हीन लुशा
हु मलीन महातन। वेग
चलौ लय सेन चमू बल
चोहिणि दंड वरूथिनि
साधन। सैन्य अनीक स-
हाय दलं ध्वजिनी पृतना
कटकं पुनि वाहनी॥१॥

दोहा—छंद किरीटीभगन

बसू, सदृश लषन रघुबीर। माथनाय कर जोरि मग, मांगत सागर तीर ॥ १ ॥ सेना नाम—दो०। कपट कुटल पुनि बाहनी, चमु ब-रूथ सुपैन। सेन बिना नहिं नृप बनै, नृप बिनु बनै न सेन ॥१॥ कल्प शब्द—दो०। कल्प कुशल और दिवस जो कल्प समर्थ जु होय। कल्प कटक तजि हरिभजो, कल्प हन्न भ्रम सोय ॥१॥ कल्प नाम—दो०। तुल्य अल्प बसु दस मतन, निपट किसोदर तौर। बहु बलि तेमानस मनहिं, सचि राख्यो केहि ठौर ॥ २॥ [दलवादल।

सेनानी· (स) कार्त्तिक, सेनापति,

सेल. सेला· (स· प) चद्दर वि-शेष, बाघ, दो धार खांड़ा, बरछी, भाला।

सेवक· (स) दास, टहलु, पुजारी, भृत्य, चाकर, सेवा करने वाला, नौकर, ख़िदमतगार।

सेवा· (स) टहल, पूजा, भजन, आराधन, ख़िदमत।

सेविका. (स) सेवई। [लड्डू।

सेविकामोदक (स) लकटो का

सेवी· (स) सेवा करैया, दास, सेवक, सेवाकरनेवाला।

सेव्य· (स) सेवनयोग्य, खसखस, लामज्ज। [योग्य।

सेव्यमान· (स) सेवा करने के

सेष· (स) शेषभाग, थोड़ा बाक़ी।

सेषु· [द] शेष, थोड़ा, लक्षण, दो०। भरत प्रेम तेहि समय जस, तस कहि सकै न सेषु। कबिहि अगम जिमि ब्रह्म सुख, अह मम मलिन ज-नेषु॥ अर्थात् उस समय जैसा भरतका प्रेम है वैसा शेष नहीं कह सकते तो कवि के लिये ऐसा अगम हुआ जैसे हम और मेरे कहनेवाले मलिन जन ब्रह्म के सुख को नहीं कह सकते इस पदार्थ से यह पाया गया कि उस समय के सुख

को नहीं कह सकते तो और समय के सुख को कह सकते होंगे इसलिये दूसरा अर्थ यह करते हैं कि शेष लक्षण हैं सो वह उस समयका प्रेम यथार्थ न कहेंगे उस के बिपरीत ऐसा कहेंगे कि विरोध करनेको आते हैं।

सैद्दी· (स) कठोर, दुःखित।

सैन· (स) सेना, नटकी, चिन्ह, ईशारा, कल्प, सज्या।

सैन्धव, सैंधव· (स) घोड़ा, पशु, सेंधा नोन, सिंधु देशी, दोहा। अश्व वाह वाजी तुरग, सैंधव हय गंधर्व। सप्तिधुर्य घोटक तरल, हरि तुरंग औ अर्व॥१॥

सैन्य· (स) चमू, सेना।

सैल· (स) पर्बत, गोत्र शब्द—दोहा। गोत्र नाम को कहतकवि, गोत्र सैल सुनियंत। गोत्र बंधु सों धन जहां, विद्यायुत गनियंत॥१॥

अवि शब्द—दोहा। अवि शैल अवि मेष पुनि, अवि सविता को नाम। अवि रच्छक सब जगत को, एकै सुन्दर स्याम॥२॥

सैलजा· (स) पार्बती, गिरिजा, गौरी, गौरी शब्द—दोहा गौरी है अंबा सुता, गौरी-हरिद्री होइ। गौरी गिरिजा सुंदरी, सिव अर्धंगी सोइ॥१॥

सैलराज· (स) हिमालय।

सैव्य· (स) सेवा योग्य, अश्व विशेष कृष्ण रथ। [सरेधा।

सैरेय. (स) सुपेद फूलका कट-

सैचव· (स) तिलकुट।

सैंहिकेय· (स) राहुग्रह।

सैह· (द) सहो, प्र० मिथिला रामायण बाल कांड दो०—यथा जलाशय त्रिविधि नभ, देखि पड़े अकिजेह। महाकाश हृद में तथा, प्रतिबिम्बहु सैं सैह॥१॥

सोचनीय· (द) सोचनेके योग्य।

सोध· सोधन· (स· प) शोध,शोधन, खोज, सन्धान ।
सोन· सोना (स) सोनभद्रनद, लालवर्ण, सोनाद्रव्य, लाल, सोना ।
सोना (द)धातु विशेष, लालरंग ।
सोनित· (प) शोणित, लोहू, रक्त, रुधिर नाम—दो० ।
शोनित रक्त कहीन पुनि, रुधिर क्षतज कत जात । लिङ्ग पीवत पूतना, पूत अङ्ग कूँ गात ॥१॥
सोदर· (स) सगा भाई ।
सोधा· (स) शुद्ध किया ।
सोधि·(स) निर्णय करि,ठहराय ।
सोधिउ· (द), खोजिउ, तलाश किया । [ध्याय,काण्ड ।
सोपान· (स) सीढ़ी,निश्रेनी, अ-
साऽपि· (स) सोभी, सो निश्चय, झूठ भी ।
सोपी· (स) वह भी ।
सोम· (स) चन्द्रमा, अमृत, लता, कर्पूर, कुबेर, यम, वायु, सोमलता, ओषधि ।
सोरा· (द) आवाज़ ।
सोवत· (द) सोता हुआ ।
सोमराजी· (स) बकुची ।
सोमलता· (स) सोमलता ।
सोमवल्ली· (स) सुदर्शन, बकुची, बरंभी, गुरिच, सोमलता ।
सोमवल्कल· (स) कायफल, करंज वृक्ष, पपरी खैर ।
सोमचीरी· (सं) सोमलता ।
सोमा· (सं) गुरिच, बकुची ।
सैना सैनो, मु० आपस में आंख से या अंगुली से इशारा करना ।
सौमिर का होना, मु० बहुत बलवान या मगरा होना, बहुत समझना ।
सोमु, सोष· (स) रवि, दिनकर, सूर्य, कोषविशेष ।
सोंठ· (द) एक दवा का नाम सोंठ नाम—दो० विश्वा नागर जानी जग, महा औषधी नाउ । ए शुठि शुठि तुष पगनतर, कीपल वंक्षि वंक्षि जाउ ॥ १ ॥

सोह· (प) शोभा, प्रकाश, सुहावन। [शित।

सोहत· (प) शोभित, प्रका-

सोहमस्मि. (स) सो मैं हौं, सो हम हौं, वही मैं हूं।

सोहर· [प] शोभित,प्रकाशित, सुन्दर एक प्रकार,कीगीत।

सोहागिनी. [स] अहवातिनी, पुरुषवाली।

सोहाय. [प] सुन्दर, सुभग।

सोंहांई·[द]चौ०। एक,कहहिं ऐसी सौंहाई। शठ तुम्हार दारिद्र न जाई॥ सोहांई अर्थात् मुर्दों को ऐसी अधिकाई में भी तुम्हारा दारिद्र नहीं जाता।

सोंह· [द] शपथ, कसम।

सौच· [स] शुधता, दंडक, वन आदि। [गंधक।

सौगन्धिक· [स] चारो रंग का

सौगन्धो. [स] रोहिस।

सौघाई· [द] सुकाल, मांस-खाई। [विशेष।

सौदास· [स] चन्द्रवंशो राजा।

सौध· [स] अटारी, दो महला मन्दिर, अटारी नाम— दो०। सौध हर्म्य प्रासाद ते, चली जुवती गति मंद। शोभित मुख,जनु गगन तें, अवनिहि उतरत चंद॥१॥

सौभाई. [द] अच्छा समय।

सौन्दर्य्य· [स] सुन्दर, शोभा।

सौभग· [स] शोभित, सुन्दर, ऐश्वर्यवान। [सोहागा।

सौभाग्य· [स]सुन्दर, भागवान्,

सौभागिनी. [स] सुन्दरीनारी, पतिव्रता।

सौभाञ्जन· [स] मुनगा।

सौम्या. [स] सविवन।

सौमित्र·(स) शत्रुघ्न,लक्ष्मण,सु-मित्रापुत्र.सुमित्राका बेटा।

सौम्य· [स] बुधवार।

सौर· [स]सूर्य्य सम्बन्धी, पथविशेष,मक्खीविशेष, तुंबुरु।

सौरज· [स] शूरता।

सौरभ· [स] केशर, सुगन्ध, सुहगरा,सुगंधदान,हरियर, आम्रवृक्ष, आम का पेड़,

तुमुल ।

सौराष्ट्रि· [स] सोरठी माटी ।

सौरि· [स] शनैश्चवार, यम ।

सौवर्च्चल· [स] सोंचर नोन ।

सौवोर· [स] बड़ा बेर, सुपेद सुर्मा ।

सौहार्द्द· [स] अपने तें दूसरे को अधिक मानता ।

स्कन्द·(स) कात्तिकेय, शिवपुत्र, स्कंदनाम—छंद पद्दरी । षरमात षडानन कात्तिकेय । शरजन्मा स्वामी बाहुलेय ॥ शिखिवाहन तारक जित कुमार । सेनानि अग्नि भूशक्ति धार ॥ १॥ गुहकौंच भेद गिरिजाकुमार । महसेन विशाखा ब्रह्मचारि ॥ यह नाम अंक दिग सह स्कंद ॥ षोड़श मत्ता पद्दरी छंद ॥ २ ॥ दोहा—सेतु बांधि सानुज सदल, उतरे रघु कुल दीप । गिरि निवास करि वालिसुत, पठयो शत्रु समीप ॥१॥

स्कन्दफला. (स) नारिअल, गूलर, छोहारा ।

स्कन्दग· [स] बरगद ।

स्कन्ध· [स] कांधा, कन्धा, कांध, शाख, डाल, मूर्द्ध ।

स्खलन· [स] पतन, झरन, गलन । [छाती ।

स्तन. [स] कुच, पयोधर,

स्तब्ध· [स] रुका, अटका, कुण्ठित । [हाथी ।

स्तम्बेरम. [स] हस्ती, शुण्डाल ।

स्तम्भ. [स] खम्भ, रुकाव, अटकाव । [थावन ।

स्तम्भन, (स) रुकावट, अट-

स्तय· [स] चोरी, तस्करी ।

स्तयकर· [स] चोर जन, तस्कर, चोट्टा ।

स्तव· [स] स्तुति, प्रशंसा, बड़ाई ।

स्तावक· [स] स्तुतिकरनेहारा ।

स्तुति· (स) सराहन, बड़ाई, भजन, स्तव, प्रशंसा ।

स्तेय· [स] चोरी ।

स्तोकक· [स] पपीहा पच्छी ।

स्तोक. [स] थोड़ा ।

स्तोच. (स) सराहन, बड़ाई ।

स्त्री.(स) नारी वनिता,लोगाई अबला, योषा औरत, प्रशंसा सखी वचन स्त्री नाम दो० । इस्त्री ललनी श्री मती, निर्मा वनिता वाम । अबला बाला अंगना, प्रमदा कान्ता नाम ॥ १ ॥ तरुनी रमनी सुन्दरी, तन उदरा पुनि सोय । तिय तोसी तिहुं लोक में, रची विरंची न कोय ॥ २ ॥ छंद गगन—वधू सुंदरी अनितनूदरी योषा कामिनी । प्रमदा तरुणी मुग्धा ललना बाला भामिनी ॥ भीरु अंगना वामलोचना युवति गेहनी । नारि भारजा अला योषिता जाया भामिनी ॥१॥ वनिता महिला दारा अविला निमानितंवनी [ॅ कुल्या- भामा कलत रामा श्री सो मंतिनी । कामुकि वामा कैतिस नामा सहित विलासिनी । छंद मगन वरवमु वसु नवधर कल अभिरामिनी ॥ २ ॥ नारीभेद कुलटा नाम—छंद प्रगीत । मलोचनाकुलटा अवा अभिसारिका कुलवैरिनी । अलभ्य चंडी कर्कशा मुक्ता पुनर्भू स्वैरिनी । सबंधुषी सफला अधर्मा पुंश्चलीदुष्टा खला । कुनारि षोडश नाम छंद प्रगीत सत्ताइसकला ॥१॥

स्त्रीदूषण (स) स्त्री के आठ दोष हैं उत्तलड़ी१ झूठ २ चंचलता ३ छल ४ भय ५ अज्ञान ६ अपिवित्रता ७ निर्दयता । ८ ॥

स्थल. (स) स्थान । सूखी भूमि थल, जलशून्य, अकृतिम भूभाग ।

स्थाणि. (स) तिमिर अन्धकारि ।

स्थान. (स) घर, ठौर, भवन,

अवकाश, सादृश्य, स्थिति, आश्रय, गृह, जगह।

स्थाने· (स) अव्ययं, युक्त, एक पद्भावम्।

स्थालाधान्य. [स] बावगधान।

स्थालीवृक्ष· (स) बेलियापीपर।

स्थाली· [स] बटुवा, हांड़ी, पाक पात्र।

स्थावर. [स] अचल, वृक्षादि, अचंचल, स्थिर, वृक्ष, भूमि, पर्वतादि।

सृष्ठि· (स) संसार, उत्पत्ति।

स्थिति· (स) टिकाव, वास, रहाइस।

स्थिर·(स)अटल, अचल, शान्त, चलनरहित, वृक्ष, पर्वतादि, अवकृष्ट। [अचल।

स्थिरता·(स) दान युद्धादि विषै

स्थिरा· (स) सरिवन।

स्थिरायु· (स) सिम्बर।

स्थूल· (स) मोटा, फुला, बड़ा।

स्थूलदर्शी· (स) सिरकी।

स्रुक· (स) मुठरिया सीज।

स्थूलवल्कघन·(स)पेठानी लोध।

स्थूला· (स) बड़ी इलायची।

स्थूलैला· (स) बड़ो इलायची।

स्थैर्य· (स) धीमापन, स्थिरता।

स्थौणेयक· (स) थनेर।

स्थौल्य· (स) मोटाई, मोटापा।

स्नान· (स) नहान, अवगाहन, शोधन, मज्जन, न्हाना।

स्निग्ध· (स) स्नेहयुक्त, चिक्कण।

स्नेह· (स) प्रेम, प्यार, तेल, घृत, चिकनाई, प्रीति, घीव, तैलादि चिकना द्रव्य तैलादि रस। सनेह शब्द—

दोहा। तेल सनेह सनेह घृत, बारो प्रेम सनेह। सो निज चरनन गिरधरन, नंददास कह देह ॥१॥

स्पर्द्धा· (स) द्वेष, विरोध, हिंस्का, तुल्य।

स्पर्श· (स) छूना, रसोटना, कुहावट, ग्राह्यगुण भेद, त्वगिन्द्रिय।

स्पष्ट. (स) खुला, सहज, प्रकाश, व्यक्त, स्फुट, प्रकट, असंदिग्ध, साफ।

स्पृक्का. (स) स्पृक्का ।

स्पृह·स्पृहा· [स] चाह, वाञ्छा, इच्छा, ख्वाहिश ।

स्नेह· (स) मोह, प्रीति ।

स्फटिक· (स) स्वच्छ, पाषाण विशेष, फटिक ।

स्फटिका· (स) फिटकिरी ।

स्फुट· (स) खुला, खिला, व्यक्त, प्रगट, दोना पात्र वाचक, भिन्न व्यक्त, शुक्ल, विकाशित ।

स्फुटध्वनि· (स) सुपेद पंडुक ।

स्फुर· (स) प्रकाश, उज्ज्वल ।

स्फुरत· स्फूरत· (स) प्रकाशत, उज्ज्वलताई, चंचल, चमकता हुआ ।

स्फूरित· स्फूर्त्ति. (स) चंचल, डोल, धड़धड़ाहट ।

स्फूर्ज्जक. (स) तेंद वृक्ष ।

स्फोता. [स] सुपेद पकवन ।

स्फोटक. [स] व्रणविशेष, फोड़ा ।

स्मदीय. [स] हमार, मम, मेरा ।

स्मय. (स) गर्व्व, अहङ्कार ।

स्मर· [स] कामदेव, शम्बरारि ।

स्मरण· (स) चेत, सुध, जाप, याद, चिन्तन, स्मृति, अनुध्यान ।

स्मरामहे· [स] स्मरण हम सकैं करतु हौं, हम ध्यान करते हैं ।

स्मारक· [स] स्मरण जो करावे, बोधक ।

स्मृति· [स] धर्म्मशास्त्र, स्मरण, वेदऋच, संस्कार, जन्यज्ञान ।

स्यन्दन. [स] रथ, जल, चित्र, तुरङ्ग, स्यंदन शब्द—दो० ।

स्यंदन जल कह कहत कवि, स्यंदन चित्र तुरंग ।
स्यंदन रथ चढ़ि रुक्मिनी, ले भाये श्रीरंग ॥१॥

स्यामवरण· (स) स्यामरंग, काला रंग । स्यामवरण नाम—दो० । कोटि काम दुतिहा वरणं, स्यामल मेचक स्याम ।
कृष्ण नील धूमल असित, काल सिती नव नाम ॥१॥

स्यामा· [स] स्त्री, सोलहवर्षकी स्त्री, एक चिड़ियाविशेष । चौ०

सोभा धाम रामअस नामा। तिन्ह के संग नारि एक स्यामा ॥ अर्थात् स्यामा मधुरभाषिनी वा सा नहीं है स्या स्याह गोरांगी अर्थात् शुद्ध सत्व प्रधान आद्याभिव्यक्ति वा स्या: थिथिलाङ्गी सा लक्ष्मी आव श्री हु नें ऐसी श्री नहीं। वा शोभा के धाम हैं मन के रमाने वाले, इस से रामनाम है स्यामा सोलहवर्षकी स्त्री। और चौ०। छेमकरी कह छेम बिशेषी। स्यामा बाम सुतरु पर देषी ॥ अर्थात् छेमकरी सपेद मुख वाली चील्ह जाको दरशन बिशेष कल्यान करत है सो काले मुंह वाली चील्ह बाम दिसा में सुंदर वृक्ष के ऊपर देखी वा स्यामा छोटी पक्षी बोलनेवाली है सो जाउ स्यामा भुजंगा की कहत हैं तेहि की बामा कहैं पत्नी ताको सुंदर तरु पर देखी।

स्यूत. [स] विस्तीर्ण, पसार।

स्यानाक. [स] सोनपत्ता।

स्रक्, स्रग्. [स] मालापुष्पादि, डोरी, फूल की माला।

स्रक, स्रग. (स फूल की माला हार।

स्रृगाल. (स) सियार।

स्रजत. [स] रचत, गढ़त, बनाता हुआ। [थकाजाना।

स्रम, श्रम. (स. द) मेहनत,

स्रमबिंदु. (द) पसीना।

स्रमित, श्रमित. (द) थका

स्रवण, श्रवण. (द, स) कान, सुनना।

स्रवत. (स) गिरत, टपकत, बहत, चुवत, गिरता हुआ, बहता हुआ।

स्रष्टा. (स) ब्रह्मा, कमलज।

स्री, श्री. (द, स) सीता, लक्ष्मी, धन, शोभा।

स्रीपति, श्रीपति. (द, स) विष्णु।

स्रीफल श्रीफल. (द, स) नारि-

घर, देव । [चिन्ह ।

स्रीवत्स, श्रीवत्स, (स) लक्ष्मी का

स्रीरंग, श्रीरंग, (द, स) लक्ष्मी-

पति । [सुनना ;

स्रुति, श्रुति, [द, स] वेद कान,

स्रुवा, [स] काष्ठरचितहस्त हो-

मकरण अर्थात् जाहि तें

आहुत उठाय कै अग्निम-

ध्यदेत हैं, होमि गुं का एक

काष्ठ । [पांती, समूह ।

स्रेनी, श्रेणी, [द, स] पंक्ति,

स्रोतस्, [स] नदी, आपगा,

प्रवाह । [आपगा ।

स्रोतस्वती, [स] तटनी, नदी,

स्रोताञ्जन, [स] श्याम सुर्मा ।

स्रोभी, [स] अखरोट ।

स्व, [स] निज, अपना, आत्मा,

प्रातःकाल, धन । [काल ।

स्वः, [स] नाक, स्वर्गलोक, प्रातः

स्वकं, [स] निजमुखं । [नतैत

स्वकीय, [स] अपना, सगा,

स्वच्छ, [स] शुक्ल, उज्ज्वल,

पवित्र, अति निर्मल, सुन्दर

साफ ।

स्वपच, [स] चांडाल ।

स्वच्छता· [स] निर्मलता, पवि-

त्रता, सफाई ।

स्वच्छन्द· [स] उज्ज्वल, अर्थ-

मोधी, स्वाधीन, स्ववशे,

पराधीन नहीं ।

स्वच्छपत्र· [स] अभ्रक ।

स्वजन· [स] अपनालोग, नतैत ।

स्वतः [स] आप सें, स्वभाव सें,

सनातन ।

स्वतन्त्र· [स] आपवशी, स्वेच्छा,

स्वाधीन, भिन्न, स्वुन्सुख-

तार । [दूसरी वह ।

स्वति· (स) स्वतीर्गि, पति की·

स्वधर्म· (स) अपनाधर्म, स्वभाव ।

स्वधा, स्वहा, (स) उभय नारी

बड़वानल की, जाकी कथा

है । स्वधा, स्वहा, उभय

नारी बड़वानल की, अरु

समुद्र की उभय भगिनी,

अरु वृषा की दोनों पुत्री,

जा वृन्दा श्री राधाजु की

दासी गोपीकदासी रह्यो,

एक समय श्री राधा जू नें

श्री कृष्ण जू को वृन्दा के साथ विहार करत देखो, वाको श्राप दिई, वा श्राप सें वृन्दा श्राप अरु चारउ पुत्र, क्षीरनिधि, दधिनिधि घृतनिधि, मधुनिधि। अरु उभय पुत्री स्वधा, स्वहा, गढ़ो हो के संसार मों ब-ढ़ने लग्यो। अरु एक स-मय कल्पान्त को कथा है कि समुद्र अति अपार भयो तब बड़वानल विष्णु की आज्ञा मानि भारी कह्यो अति प्रतापी होके जल स-मुद्र को शोष गयो समुद्र विकल भयो। पश्चात् स्वधा, स्वहा, के भ्राता पच्चरोदन किएतें जल नयन के बहितें पुनि समुद्र जलमयधारा भयो। इति ब्रह्म वैवर्त्तपुराण श्री कृष्णखंड प्रमाण वाही वार्त्ता श्री तुलसीकृतरामा यण लङ्का काण्ड मों क-थित है। प्रथम चौपाई।

प्रभुप्रताप बड़वानल भारी। शोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी ॥१॥ तब रिपुनारी रोदन जल धारा। भरो बहोरि भयो तेहि खारा ॥२॥

स्वनत. (स) शब्द. बोल।

स्वप्न. (स) निद्रावस्था, निन्द में दर्शन, सुपना, ख्वाब।

स्ववस. स्ववसें. (स) अपराधीन, पराधीन नहीं, अपने बस।

स्वभाव. (स) प्रकृति, बान, चरित्र मिज़ाज।

स्वयं. स्वंभू: (स) विष्णु, चक्रधर, आप से हुवा, स्वतन्त्र, आपई, आपही।

स्वयम्. [स] आप, निज, आ-त्मना, अपने, आप।

स्वयम्बर. [स] विवाह, आप से बरलेना।

स्वयंभू. [स] ब्रह्मा, आप से हुवा।

स्वयंभुमनु. [स] एक राजा का नाम।

स्वयंसिद्ध. [स] आप ही सिद्ध।

सोरठा। स्वयंसिद्ध सब

काज, नाथ मोहि आदर दयउ। अस बिचारि जुब- राज, तन पुलकित हर्षित भयउ॥ स्वयंसिद्ध अर्थात् आप का काम आप ही सिद्ध है।

स्वयंसिद्ध परिभाषा· (स) ये बातें ऐसी हैं कि इन्हें सब जा- नते हैं और इसी से इनमें कोई संका भी नहीं करता स्वयंसिद्ध परिभाषा रेखा- गणित में बारह हैं।

स्वर· [स] शब्द, आकारादि नव स्वर।

स्वरु [स] कुलिश, वज्र।

स्वरूप, [स] प्रकृति, व्यक्ति, अप- ना रूप, छवि, स्वभाव, पंडित मनोज्ञ, अव रूप, निज स्वरूप द्विप्रकार एक सहज स्वरूप कही शुद्ध स्वरूप जो ईश्वर के निकट रहै अरु जातें समाधि सिद्धि होत, दूसरी प्रकृति स्वरूप जा स्वरूप तें जगत् में अवतिर्ण होत।

स्वरूपवैराग्यनिर्णय, [स] विषय अनायासहूं आगें लावे वा के स्वरूप को त्याग करण।

स्वर्ग, स्वर्ग· (स) आकाश, इन्द्र- स्थान, लोक विशेष जहां क्षुधा पिपासा जरादि दुःख नहीं, बहिश्त, स्वर्ग नाम—दोहा। स्वर्ग त्रिवि- ष्टप त्रिदिवदौ, त्रिदशा- लय सुरधाम। स्वरसुरपुर गोनाक दिव, गे नृप विकु- रत राम ॥१॥ भूप दाह करि भरत पुनि, गे सानुज प्रभु पास। पाय पादुका पुनि अवध, आये विकल उदास ॥२॥

स्वर्ज्जिका· (स) सज्जी।

स्वर्ण· (स) कनक, सुवर्ण, सोना धातु, कनक शब्द—दो०। राजत वृष जू रहे सदा, बहुरो कनक खजूर। कनक धतूरे सो कहत, कनक स्वर्ण सुख मूर ॥१॥

स्वर्णजाती· (स) पीला चमेली का फूल।

स्वर्णभूषण· (स)
सवर्णाङ्ग } अमलतास।

स्वर्णमाक्षिक (स)
स्वर्णोपधातु } सोना-मक्खी।

स्वर्णयूथि. (स) पीला जूही का फूल।

स्वर्णवल्ली· (स) सवर्णवल्ली।

स्वर्णचौरी· (स) चोक।

स्वर्णकाय· (स) गरुड़।

स्वल्पसर्पोला· (ट) छोटा सांप

स्वर्लोक· (स) स्वर्गलोक।

स्वल्पकश्चीरी·(स)कश्चीरीभेद।

स्वल्पयव· (स) छोटायव।

स्वल्प· (स) अत्यन्तछोटा,थोड़ा, छोटा, अत्यल्प, क्षुद्र, बहुतथोड़ा।

स्वश्व· (स) सुन्दर घोड़ा।

स्वसन· (स) वायु, पवन।

स्वसा· (स) भगिनी, बहिन।

स्वसेव्य· स्वसैव्य. (स) आत्मरूप सेवन योग्य, अपने रूप से सेवा करनेयोग्य।

स्वसृ. (स) भगिनी, बहिन।

स्वस्ति· (स) मङ्गल, कल्याण, तथास्तु, आशीर्वाद, पुण्याहि, क्षेम।

स्वस्तिक· (स) मिरिआरी।

स्वस्तिवाचन· (स) मङ्गलाचार, शान्ति। [वाङ, सवांग।

स्वांग· (स) भांड़ेती, खिल·

स्वांगी· (अ) भांड़, कौतुक।

स्वागत· (स) आदर, मान, आवभाव, कुशल से आया, कुशल पूछना।

स्वाति· स्वाती· (स) पन्द्रहवां नक्षत्र, नक्षत्र विशेष।

स्वाद· (स) सवाद, रस, चाट, जायका, रसानुभव, प्रीति, लेहन, जायका।

स्वादु· (स) मिष्ट, मीठा, सुरस, स्वादयुक्त वस्तु, मधुर, मनोज्ञ। [इक्षुविकार।

स्वादुकंटक· (स) कण्टाई,

स्वादुकन्द· (स) इक्षुविकार।

स्वादुदधि· (स) बिदारीकन्द।

स्वादुनिम्बू· (स) मीठा दही।

स्वादुपर्णी· (स) दुधिया, मीठा लेमू।

स्वादुपुष्प· (स) करही।

स्वादु फला· (स) दाख।

स्वादुमस्तिष्क· (स) क्षुद्रखजुर।

स्वादम्ल· (स) खट मधुर।

स्वाद्वी· (स) क्षुद्र खजूर।

स्वाधीन· (स) स्वतन्त्र, आप बशी, स्ववशी, जो अपने आधीन हो।

स्वान· (स) कुत्ता, कुक्कुर।

स्वानुकूल· (स) प्रसन्न।

स्वाभाविक· (स) जो स्वभाव से हुवा। [प्रभुता

स्वामित्व· (स) अधिकार,

स्वामिन्· (स) स्वामी, ईश्वर, अधिपति, नृप, परमहंस।

स्वामी·(स) राजा, प्रभु, पति, गुरु, पोषक, मालिक।

स्वामीधर्म· स्वामिधर्म. [स राज्यपालन, जनपालन, दासपालन, तत्पर, स्वामी का काम।

स्वायंभुमनु· [स] नाम राजा को ब्रह्मा के अङ्ग तें फटि के एक पुरुष स्वायंभुमनु, अरु एक स्त्री सतरूपा नामि उत्पन्न भयो। इति श्री भागवत ३ स्कन्धप्रमाण।

स्वायंभू· [स] विष्णु, आपुए हुआ, राजा। [पाककर्त्ता।

स्वार· स्वारा· [स] रसोइया,

स्वारथ· स्वार्थ. [स] सेवा, अपना काम, अपने अर्थ, स्वप्रयोजन, स्वभिधेय, स्वधन। [चक।

स्वार्थी. (स) आत्मपालक, स्वर-

स्वीकार· (स) अङ्गीकार, हामि, मंजूर। [श्चिलक्का।

स्वेदकन्द. (स) पसीने का

स्वेच्छा· (स) अपनी इच्छा, स्वाधीनता, साहस, हठ।

स्वेद· (स) प्रचंद, पसीना, ताप, उष्म।

स्वेदज· (स) जूं, मशकादि, गरमी से जो जन्मा, दंशादि जंतु जो पसीने से उत्पन्न हो, गोबरखाता।

स्वैरण· (स) लम्पट, पारदारिक।
स्वैर· स्वैरी·स्वैरम्· (स) स्वाधीन, स्वच्छन्द, स्ववश।

ह

ह· (स) कष्ट, क्लेश।
हई· (द) नाश, नष्ट।
हए· (द) मारे, पीटे। [स्लाइट
हंकार· (स) हांक, पुकार, चि
हंसवंशअवतंस. (स) राम, हंस, सूर्य तिन के वंश में अवतंश शिरोभूषण रूप हैं।
हंसवंश· हंसवंस· (स) सूर्यवंश, दो॰। हंसवंस दसरथ जनकु, राम लखन से भाइ। जननी तू जननी भई, विधि सन कछु न बसाइ॥ अर्थात् विधि से कछु न बसाया याको यह भाव कि सूर्यवंश सो ताहू में महाराज दशरथ पिता सो ताहू में श्रीराम लखन ऐसे भाई भए हे जननी तहां तू जननी भई अर्थात् ऐसे सब उत्तम संबंध देके सो तेरे ऐसे कुलनाशिनी जननी बनाई वा हे जननी तू अपनो जननी सम भई भाव जैसे तुम्हारे जननी ने पति को मार डारी तस तहूं भई यह अर्थ प्रसंगके विरुद्ध है।
हंडाफोड़ना· मु॰ भेदखोलन।
हंस, हंसा· (स. द) तुरङ्ग, रवि, मरालपक्षी, स्वच्छन्द परात्मा, जीव, गोविन्द, हंस नाम—दो॰। श्वेत गरुत चक्रांग पुनि, द्विजनायक विधि जान। हंस नाम सो-खान॥१॥ हरि अनुसासन पाय विधि, रचन लग्यो ब्रह्मांड। स्वर्ग मृत्यु पाताल युत, सृष्टि सकल सो कांड॥२॥ प्रथम प्रजा जोगी भये, सृष्टि कहां ते होय। तब बिरंचि मन ते सृज्यो, नाम काम है सोय॥३॥ हंसशब्द। दो॰ हंस तुरंगम हंस रवि, हंस मराल

मुकुंद। हंस जीव को कहत कवि, परमहंस गोविन्द॥१॥

हंसपदि. हंसपादी· (स) हंसपदी। [सिमरिख।

हंसपादक· हंसपाद· [स] सुर्खं

हक़. [फ़] ईश्वर, सत्य, यथार्थ।

हक. [स] छीलना, छोलना।

हकारावा. [द] बोलाया, पुकारा।

हक्कारी· हकारी· [प] बुलाइके, बोलाय के।

हट· [स] हाट, गुदरी, दूकान।

हटविलासिनी. [स] हलदी, छोटी नखी।

हड़ा· [स] अनार, बाण विशेष।

हठकरना· हठ को टेकपरहोना· } मु० भगराई से किसीबात को नहीं मानना।

हड्डा· (स) बरैरा, बरैरी, बिरनीकीट, डंसक।

हत· हतन· (स) हनन, मारन।

हतभाग्य·(स) नष्टभाग्य, अभागी।

हति· हतेउ· (स· प·) मारेव, नष्ट किए, मारिसला।

हत्या· (स) बध, घात, हिंसा।

हत्यार· हत्यारा· (स) बधिक, घातक।

हथ· (प) हस्त, हाथ।

हथवासहु· (प) डांड़ा, ढोवा।

अस बिचारि गुह ग्याति सन, कहेउ सजग सब होहु। हथवासहु बोरहु तरनि, कीजिअ घाटा रोहु॥ अर्थात् हथवासहु कहैं हाथ करहु अर्थात् खेवना छोड़ि देहु औ नौका को बोरो औ घाट का रोक करो।

हथफेर· मु० अदलाबदली, हेराफेरी, छल, फरेब, खोटे रुपये को चलाकी से अच्छे रुपये से बदललेना।

हन· हनत· हनन· (स) नाश, बध, हिंसा, मारि, मारत, मारताहुआ।

हनु. (स) छोटीनखी।

हनुमान्· हनू· (स) प्रधान बांदर। हनुमाननाम—छंद· अच्छीधर। कालनेमी रिपु

अंजनीनंदनं। मारुती वायु सूनुं अछे कंदनं ॥ वीर बज्रांग पिंग। सभी मानहू। श्री महावीर दूतं हनुमान हू ॥ १ ॥ सत्य रामिष्ट श्री रावणं दर्पहा । नाम से पापहा सर्प ज्यौं सर्पहा ॥ मातुसंबाद कौ भस्म लंका करं । चारि रंगान को छंदनछोधरं ॥ २ ॥ दो० । सीता धीर धराय कपि, राम निकट पुनि आय । माथ नाय करजोरि जुग, कहत सदुख समुझाय ॥ १ ॥

हनि· (सं प·) मारिसक्ता, मारेउ, बजाएव, बजाये, मारना, हनना ।

हन्त· (स) हतन, हर्ष, आनन्द ।

हन्तत·(स)बोधन,ज्ञापन,दया।

हन्ता· (स) वधकारी, हिंसक, घातक ।

हवि. हवी·(स)तस्मय चोर का।

हविष· हविष्य· (स) होमकाल का भाग, घृत, निरामिष।

हबुषा· (स) होहबेर ।

हव्य· (स) देवभाग, तस्मय चोर का ।

हमन· (स) मारण, मारना ।

हमिव· (स) अहङ्कार, मद ।

हय· (स) अश्व, तुरङ्ग, घोड़ा ।

हयगृह· हयशाल. (स) घोड़शाल, अश्वतबल, घोड़सार ।

हयपुच्छिका· (स) बनउरिद ।

हयशाला· (द) घोड़साल, चौ० । बलि जीतन एक गयउ पताला । राखा बांधि सिसुन हयसाला ॥ अर्थात् अंगद कहते हैं कि एक रावण वह जो राजा बलि के यहां गया था उसे लड़कों ने घुड़साल में बांध रक्खा था ।

हयावहय· (स) अश्वगन्ध ।

हये.(द) घोड़ा, हन्यो, काटेउ, लेकाना, काटना, मारिगये, है। छंद—ढायेमहीधर शिखिर कोटिन विविध बिधि गोला चले। घहरात जिमि पवि

पात गर्जंत प्रलय के जनु बादले ॥ मरकट विकट भट जुटत ते करत तन जर जर भये । गहि शैल ते गढ़ पर चलावहिं जहं सो तहं निशिचर हये ॥ अर्थात् विविध अनेक प्रकार के जैसे बंब गोला आदि, पविपात, गाज गिरना, जहं निशिचर हये के दो अर्थ एक जहां राक्षस थे वा जहां राक्षस मारेगये। [टेगी, मारा।

हयो· (द) मारियो, पीटेयो, का-

हर. (स) महादेव, शिव, हल, चोर, चोरी, हारक, संहार, फाटना।

हरखाई· (स) हलकाई।

हरविग्रहा· (स) जवासा, दुरालभा। [स्थान।

हरगिरि· [स] कैलास, शिव

हरगुणी· [स] प्रवीण, निपुण।

हरण. [स] चोरी, लूट।

हरता· हरति· [स. प] नाशक, संहारता है, मारता है, संहारतीहुई। [हदो।

हरद· [स] हरदी, पीलाड-

हरहाई· [प] खेतखौकी गी, हरहट गौ आदि।

हरही· [प] पार्वती, गिरिजा, खेतखौकी।

हरशा· हरिसा· [द] बानरों का स्वामी।

हरा· (प) सबुज़, हरियरङ्ग।

हरास· हिरास·(फ)डर, कल्पित, थरथराहट, दुःख, शोक।

हरि· (स) चन्द्र, सूर्य, भानु, राम, अहि, सर्प, सागर, कपि, घोड़ा, पौन—वायु, पवन, हर, ब्रह्म, मृग, मयूर, कोकिल, हंस, शुक-पक्षी, शुक, इन्द्र, पिंगल वर्ण, हरिद्वर्ण, विष्णु, गन्धर्व, अलि, सिंह, कंचन, काम, कुरङ्ग, यम, भेक, लोकान्तर, नरेन्द्र, हाथी, चन्दन, किरण, धर्म्मशूर ॥२२॥

हरि शब्द—दोहा। इन्द्र

चन्द्र अरबिंद अलि, कवि-केहरि आनंद। कांचन काम कुरंग अस, धनुष दंड रवि चन्द ॥१॥ पानी पावक पवन पथ, गिरि गज नाग नरिंद। जे हरि इनके मुकुट मनि, हरि ईश्वर गोविन्द ॥ २ ॥ कृतान्त शब्द—दो०। आगम शास्त्र कृतान्त सब, पुनि सिद्धान्त कृतान्त। जम कृतान्त के त्रास तें, राखहु कमलाकांत ॥१॥ कर शब्द—दोहा। करगज सुण्ड अरु हस्त कर, करजु किरन कर दान। कर विष जैसे लगि विषय, भजि हरि कृपानिधान ॥ १ ॥

हरिचन्द (स) राजाविशेष, जो सत्य के कारण श्री विश्वामित्र के दान निमित्त शोक कहो चाण्डाल के हाथ काशी मध्य आपु बिके, अरु पूर्व रानी अरु पुत्र को महाजन दोसरे के हाथ बेच्यो, इति श्री भागवत अरु महारामायण प्रमाण। [तक।

हरिचन्दन (स) कल्पवृक्ष, सुर।

हरिण (स) मृग, हरिणा, पशुविशेष, शिव, विष्णु, कुरंग, सारंग हंस शुक्लवर्ण तामा के रंग का हरिन। [पीलना।

हरिणहृदय (स) भीरु, डर-

हरिणी (स) मृगा, कुरंगी, सारङ्गी, हरिनी शब्द—दोहा ॥ हरिनी प्रतिमा हेम की, हरिनी मृग की तीय। हरनी जूथो बाज को, फूलमाल हर होय ॥१॥

हरित (स) सामान्यदिग्, हरियरवर्ण, हरा।

हरित् (स) हरा, हरे रंग का, हरारङ्ग, हरियाला।

हरितमुद्ग (स) हरा मूंग।

हरिताल (स) हरताल।

हरिदश्व (सु) सूर्य, भास्कर, नृपनाम।

हरिद्रा. (स) हलदी, पीतवर्ण, हरिद्रानाम—दो॰। पीत गौर पुनि कांचनी, रजनी पिंडा नाम। हरदी चूनो परत जिमि, इमि देखतअइ श्याम॥१॥ हरिद्रा शब्द। हरिद्रा कहिय बन थली, सोसा हरिद्रा होय। मंगल बहुरि हरिद्र है, हरद हरिद्रा सोय॥१॥

हरिद्वार. (स) नगरविशेष।

हरिद्रु (स) दारहलदी।

हरिश्चन्द्र (स) नृप विशेष।

हरिमन्थ· (स) चना।

हरिबालुक· (स) एलिबालुक।

हरिनखी· (स) हरैं। [प्रकार।

हरिषा· (स) पकाया मांस का

हरेणुक· [स] रेनुका।

हल्दी· [द] हलदी।

हरिद्राभ· [स] पीतवर्ण पीला।

हरिनख· [स] व्याघ्र के नख का भूषण बालकों को रूपादि में जड़ायके गले में देत हैं।

हरिप्रिया. [स]लक्ष्मी, सिन्धुसुता।

हरियान, हरिजाना· हरियाना [स.द] विष्णुवाहन, खगेश, गरुड़। [नदी।

हरिरूपा· [स] सुरसरी, गङ्गा।

हरिहय· [स] वासव, इन्द्र।

हरी· [प चोराई, हरना।

हरीतक· (स) हरड़े औषध, हड़।

हरीश· [स] बानर का ईश, सुग्रीव, बाली।

हरू, हरुअ. (द) हलुका, हलका

हरुआई, हरुाई. (द) हलुकाई, हलकापन।

हर्म्य· [स] अटारी, प्रासाद।

हर्ष· [स] आनन्द, मङ्गल, मोद खुशी।

हर्षत, हरषत· [स] खुशी, प्रसन्न।

हर्षित· [स] आनन्दित, रोमांच युत आनन्दयुत, प्रसन्न आनन्दित, खुश।

हल. (स) खेत जोतने का अस्त्र हलनाम—दो॰। सहस्र बदन अवतार वल, शुभ स्वरूप रणधीर। आयुध ताको हल गिनो, लांगल आइलगीर॥१॥

हलकाकरना, मु० बोझ उतारना, घटाना, कमकरना, बेप्रावरू करना, हेठा करना, पानीउतारना, बेइज़्ज़त करना।

हलका जानना, मु० तुच्छ समझना, अयोग्य जानना।

हलधर. (न) बलभद्र, सुभद्री, हलायुध, बलदेवजी।

हलरावै. (स) हिलावै, डोलावै।

हलायुध· (स) बलभद्र, सुभद्री, बलदेव। [ज़हर।

हलाहल. (स·फ़) विष, माहुर,

हली· (स) बलभद्र, बलराम।

हवन· (स) होम, आहुत, यज्ञ, होम मन्त्रपूर्वक अग्नि में घृतादि पदार्थ का डालना।

हवाले· (फ़) सपुर्द, सौंपना।

हवि· (स) होम की सामग्री, खीर, पिण्ड, हव्य।

हव्य. (स) देवभाग, नैवेद्य, उपहार। [अन।

हव्यवाहन· (स) अग्नि, हुताशन, हसा· (स) हंसी, किल-किलाव।

हस्त· (स) गजशुण्ड, नक्षत्र सुभाव, हाथ, हस्तनाम—छंद भुजंगप्रयात। मृदुंकंज से स्याम के हस्त पानी। सजेकंकनं वेणुपीयूष पानी। सबै गोपिका मोह मे सैन सातो। कह्यो चारि यज्ञा भुजंग प्रयाती ॥१॥ भुजा नाम—छंदसेनिका। करी कर समान दीह बाहु। भुजा प्रवेष्ट दोष भूषणाहु। बलं अमोघ कृष्ण देव माह। धुजा पंचं लघू ससेनिकाहु ॥ १ ॥ गज शुंड नाम—दो०। प्र प्रशुंड पुष्कर महज, कर हस्तो हस्ताग्र। विदित नाम षट वेद मति, कहत सकल कल्याग्र ॥ १ ॥ हस्त शब्द। हस्त कहत गज सुण्ड सो, हस्त नक्षत्र सुभाइ। हस्त हाथ हैं डारिये, हरि हीरा लग पाइ ॥१॥

हस्तगतहोना, मु॰ प्राप्त होना।
हस्ताग्र· [स] अंगुल,अंगुरीनाम
दो॰। कर शाखा हस्ताग्र
पुनि, करंगुली नन्दलाल।
अंगुलीय रतनग जटित,
सोभित परम विशाल ॥१॥
हस्तामलक होना, मु॰ हाथ में
होना, हाथ में पानी या
अंवले के तरह होना।
हस्तिन्· [स] हस्ती,गज हाथी।
हस्तिनापुर· [सं] नगर विशेष,
युधिष्ठिर की राजधानी,
हस्तिनापुरजाना—सो॰।
हरषि चले अक्रूर, हरि
अनुशासन सीसधरि। जाय
हस्तिनापूर, पांडुसुतु भेंटे
सबै ॥ १ ॥
हस्तिनी· [स] करिणी,हथनी,
नारीविशेष। [शीवान्।
हस्तिपाल· [स] महावत, हा-
हस्तिपर्णं· [स] नेनुआं।
हस्तिवारुणी· [स] शराव।
हस्त्यालुक·[स] कन्द का भेद।
हस्तिघोषा [स] नेनुआं।

हस्ती· [स] करी, गज, हाथी
हस्तीदंत· [स] हाथीका दां
हस्तीसुत·[स] हाथी का बच्
कलभ शब्द—दो॰। कल
कहत कवि साथ क
कलभ बहुरि उत्ताल। क-
लभ कलुष कवि लोस ते,
काढ़हु दीनदयाल ॥१॥
हहरि· [प] घबराइ के।
हा· [स]दुःखबोधकशब्द,नाश
भेद, शोक,विषाद,पीड़ा
हांती· [प] नाश कियो।
हाट· [द] बजार, चौ॰।
बाट घर गली चा
कहहिं परसपर लो
गाई ॥ अर्थात् हाट
बाट सड़क चथाई बैठ
लोगाई स्त्री।
हाटक· [स] स्वर्ण,सुवर्ण,सोना
हाटकनाम—छंदविजय।
हेमहाटक हिरन हमें
कधौत पुट पुरट तपनी
स्वरवर्ण चामीकरं। का
अष्टापदं रुक्म कंचन म

रजत गांगेय सौवर्ण का-तस्वरं। जातरूपं कनक शात कुंभ स्वरण चंद्र जां-बूनदं अर्जुनं कर्बुरं। नाम अमरादि मति सप्तविंशति कहे छंद विजयान चा-लीश कथ विस्तरं॥१॥

हाटकघट. [स] सोने का घड़ा।

हाटकलोचन. [स] हिरण्याक्ष दैत्यविशेष।

हायन. [अ] लाल धान।

[illegible]ती. [द] नाश।

[illegible]स. (स) हंस, मराल।

[illegible]. [प] हंसी, हास्य, मसखरी।

[illegible]ारना. मु॰ ज़ोर से पु-कारना, चिल्लाना, ललकारना।

हाथआना, हाथ में आना. मु॰ अपने अधिकार में आना कबज़े में आना, मिलना, हाथलगना, मिलजाना।

हाथउठाना. मु॰ छोड़देना, किसी काम के करने से रुक जाना, हाथ सिर पर लगा के सलाम करना, मारना, भीखदेना, खैरात बांटना।

हाथकमरपररखना. मु॰ बहुत निबलहोना, बहुत कमज़ोरहोना।

हाथ कानों पर रखना. मु॰ अचंभे में होना, झटपट इनकार कर जाना।

हाथखैंचना. मु॰ छोड़ना, मुंह फेरना, दूर भागना, कि-नारे होना, अलग होना।

हाथचाटना. मु॰ किसी अच्छे खाने का बहुत स्वाद लेना, या अच्छे खाने को बहुत खुशी से खाना।

हाथजोड़ना. मु॰ बिनती कर-ना, घिघिआना।

हाथडालना. मु॰ किसी काम में अपना अधिकार करना, दस्त अंदाज़ी करना, दबा-ना। [नाउम्मेद होना।

हाथधोना. मु॰ निरास होना,

हाथपड़ना. मु॰ अपनेअधिकार

में आना, कब्जे में आना, हाथ लगना।

हाथपत्थरतलेदबना· मु॰ बेबस होना, कुछ नहीं करस कना। [चाहना।

हाथपसारना· मु॰ मांगना,

हाथपांवफूलजाना· मु॰ घबराजाना।

हाथ पांव मारना· मु॰ मिहनत करना, कोशिश करना, घबराजाना।

हाथफेंकना· मु॰ पटा या लकड़ी चलाना।

हाथफेरना· मु॰ प्यार करना, दुलार करना, छोहकरना, गलेलगाना, फुसलाना, शाबाशी देना।

हाथबन्दहोना· मु॰ काम में बहुत लगारहना, कुछ फुर्सत नहीं पाना, गरीब होना।

हाथबढ़ाना· मु॰ किसी चीज़ के मिलने के लिये कोशिश करना, दूसरे आदमी के माल असबाब पर दखल करना।

हाथबैठना· मु॰ हाथ जमना किसी हुनर में खूब अभ्यासहोना।

हाथभरना· मु॰ हाथथकजाना।

हाथमलना· मु॰ पछतावा करना, सोचकरना, फिकिर करना।

हाथमारना· मु॰ वचनदेना, तालीमारना, पाना, लेलेना, छीनलेना, लूटलेना, तलवार से घाय करना, वारकरना।

हाथमिलाना· मु॰ बराबरी करना, कुश्ती लड़ने को तैयार होना।

हाथ में रखना· मु॰ अपने अधिकार में रखना, अपने अख्तियार में रखना, बस में होना।

हाथलगना· मु॰ हाथआना, मिलना, पाना, हासिल होना।

हाथलगाना, मु॰ हाथ रखना, छूना, भिड़कना, सत्ता देना, किसी काम में लगना, किसी काम को शुरू करना। [को रोकलेना।

हाथसमेटना, मु॰ देने से हाथ

हाथापाईकरना, हाथबाहीं करना, मु॰ धक्कमधक्का, क॰ धौलधप्पा चलाना, लात मुक्की मारना, आपस में लड़ना। [कि करना।

हाथोंहाथकरना, मु॰ सब मिल

हाथोंहाथ, मु॰ तुरन्त, झटपट, तुरतफुरत।

हाथोंहाथलेजाना, मु॰ झटपट लेजाना, झपटलेना।

हान, [प] टोटा, घटी।

हानि, [स] कटाकटी, घाटा, टोटा, घटी, नाश, नुकसान, क्षति।

हाय, (प) दुःखबोधक शब्द।

हायमारना, मु॰ पछताना, दुख करना, आहमारना।

हायहाय करना, मु॰ रोना, पीटना। [साल।

हायन, [स सम्वत्सर, वर्ष, बरस

हार, [स प] माला, झुण्ड, घटी, हार शब्द—दोहा। हार कुसुम मोतियान को, हार छेत्र बिस्तार। हार बिरह कागन कहैं, रजराम माया हार ॥१॥ कातर शब्द—कातर कागन को कहत, कातर कहिये हार। कातर कहि दुरभिच्छ पुनि, आस्तुति करी बिचार ॥१॥

हारमानना, हारमानलेना, मु॰ निरास हो के छोड़देना।

हारहूरा, [स] दाख।

हारित, [स] हारितपक्षी।

हारिद्र, [स] हारिद्रनामादिक

हार्द, [स] स्नेह, माया, छोह, कोमल।

हार्य, [स] हरणयोग्य, बहेड़ा।

हाला, [स] मदिरा, सुरा, मद्य, शराब।

हालाहल, [स] विष।

हाव, [स] छेड़ा, केलि, स्त्रियों

की भङ्गी, झावली।

हावभाव, [स· प] आकर्ष, चोचला, क्रीड़ाभाव।

हास· हास्य· [स] हंसी, खिलखिलाव, हंसी, हसन।

हाहा, [स· प] देवगन्धर्व,सुरगायन विनती, कोलाहल।

हाहाहीहीकरना, सु० हंसना

हाहाकार· [प] घबड़ाहट, कोलाहल।

हिम· [स] पाला।

हिमकर, [स] चंद्रमा। [हृ।

हिमगिर (स) हिमालय पहा·

हिय, (द) हृदय। [हृदय।

हि, [स] निश्चयबोधक शब्द,

हि· (प) कर्मकारक का चिन्ह, ब्रजभाषा में और छंद में आता है परंतु इसके पहले का दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है यथा। दो०। अब विनती मम सुनहु सिव, जो मोपर निज नेहु। जाय विवाहहु सैलजहि, यह मोहि मांगे देहु ॥१॥

हिंगु, (स) हींग।

हिङ्गुपत्री· (स) हिंगुपत्री।

हिंगुल, (स) सिंगरिफ।

हिंस, (द· स) घोड़ा का शब्द वध,जीवमारना [रक्ष-

हिंसक, (स) वधिक, हिंसाका

हिंसा, [स] प्राणवियोग करण, स्वार्थहित,घात,वध,चोर्यादिकर्म। [रक्षा

हिंस्रक, [स] वधिक,हिंसाका

हिंहिनाती·[द]हिनहिनाती है

हिके, (प) हृदय को।

हिचकिचाना, सु· संदेह ड़ना,दुबधा में होना पीड़ाकरना,हक ड़बड़ाना।

हिज्जर· (स) हिंजर।

हित· (स) स्नेह, प्रेम, का मित्रता, निमित्त, मि दीप्त, भला, अच्छा, इष्टसाधन। [उपकार

हितकार· हितू, (स)

हितकारिन्· (स) हितक शुभकारक।

हितैषिन्·(स) हितैषी,हितेच्छु, हा भलाचाहनेवाला ।

म.(स)सामान्य पाला,शीत, ओस, ऋतुविशेष, पाला, कोमल, पाला का पानी। कर्पूरनाम—दो० । घन-सारं कर्पूर हिम, हिमवा-लुका सितचन्द्र । पुनि सि-ताभ्र हरि यजन करि, स्वर्ग गये सुरहन्द ॥ १ ॥

हिमउपल. (स) बनौरी ।

मकर· (स) शशी, चन्द्रमा।

जल·(स) पाला का पानी।

इमा· (स) कपूर ।

हती· (सं) चौक ।

हवत्(स) हिमाचलपर्व्वत ।

मबालुक· (स कपूर ।

नरोग.(स) सोम,चन्द्र.इन्दु।

मशैल.(स)हिमाचलपर्व्वत ।

शु.(स) ऋतुमास अगहन पूस.।

कपा.हिमाभ्र.(स)कपूर।

नी. (स) समूह पाला ।

म्बु.(स) पाला का पानी।

हिमालय· (स) धौलागिरि, हिमालयपर्वत ।

हिमोपल.[स]बनौरी शिव को।

हिय. [द] हृदय. छाती।

हियमान. [द] प्रेमी, निन्दित, दोषी । [माधातु।

हिरण्य. [स] स्वर्ण, सुवर्ण, सो-

हिरण्यकशिपु· [स] स्वर्णतुल्य बाल जिस का,दैत्यविशेष, काश्यपमुनि पुत्र दिती नारीपत्र ।

हिरण्यगर्भ· [स' विरञ्चि,ब्रह्मा।

हिरण्यरेत·[स] अनल, अग्नि।

हिरण्यानु· (स) दैत्य विशेष।

हिरण्याक्षि· (स) हिरण्य क-शिपु भ्राता दैत्यविशेष, विजय अवतार, काश्यप मुनि पुत्र दिती नारी पत्र, सुवर्णवत् नेत्र होय जिस-का । [छाती।

हिरद· (स) हृदय. अन्तष्करण,

हिलमोचिका· (स) हरहुरा।

हिलमिलजाना· मु० मिलाजु-लारहना,मिलजुलजाना।

हिलामिला सु० मिलाजुला।
हिसिषा (फ़) बराबरी।
ही (स) निश्चयबोधक शब्द, विस्मय, दुःख, विषाद, शोक। [द्रव की।
हीछे (द) हटिके, हटिके,
हीन [स] रहित, बिनु, दीन, त्यक्त, नीच, लघु, ऊन, निंदित, अधम।
हीनकला [स] मुलेमानी।
हीनता [स] न्यूनता, घटी।
हीर (स) गंभार।
हीरक हीरा, (स) रत्न विशेष। हीरारत्न, विद्रुम, प्रवाल
हीरावलि,(स)योगी का कम्बल।
हुड [स] भेड़ा।
हुतभुक (स) अनल, अग्नि।
हुताश. हुताशन, (स) आगानु, अग्नि, ज्वलन, अनल, त...
हुनर (फ़) चतुराई।
हुलना हुने (प,द) होमकिया, होमकरना। [पना।
हुमकना (द) उछलनी, तर-
हुमकि. हुमगि, (द) कूदि के, फांदिके, हुमकि के।
हुलसी (स) सुखी, आन-न्दी, श्री तुलसीदासजी की माता। [आनन्द,मोद।
हुलास हुलासू (द) खुशी;
हूहू (स,प) देवगन्धर्व, बोली बानर की।
हूकहूक के रोना, सु० सिसक भर के रोना, असक २ के रोना।
हृ (स) हरण।
हृत. हृद, (स चित्त, मन, ... नुपर्याक्षमें मित्र, हरि... वर्ण।
हृत्य हृत्वा,(स) हरण।
हृदय (स) चित्त, मन, छाती, उर, वक्षस्थल, दिल, उर या उदर नाम दोहा। वत्स भुजांत क्रोड उर, भृगुपद प... वेष। तुंद कुच उदर ... नाभि पिचंड सुवेष ॥ १
हृदयगन्धा [स] धमैली। [देव
हृदयनिकेत (स) अनङ्ग, का...

हृदयनेत्र हृदयेशा (स.द) ज्ञान, वैराग्य।

हृदयेश (स) अन्तर्यामी, अन्तर्भेदी, हृदयक।

हृदिनी (स) सरीता, नदी।

हृषीक (स) सामान्य इंद्री।

हृषीकेश (स) विष्णु, लक्ष्मीपति, मन। [प्रमद।

हृष्ट (स) मुदित, हर्षित,

हृष्टपुष्ट (स) स्थूलदेह, मोटा ताजा।

. (द) सम्बोधन सूचक शब्द।

(स) कारण, अर्थ, काज।

(स) अग्नि की शिखा, इति, हा यह।

हे.. [स] के लिये, कारण, प्रकरण, प्रयोजन, सबब, प्रेम, काम, निमित्त, ऐसो सता वर।

तु वैराग्य (स) विषय सो .. से अधिक जानव।

म (स) [स] कनक, सुवर्ण, सोना धातु, सुवर्ण, केतकी।

मकर [स] पारसमणि।

हेमगोर [स] किंकिरात।

हेमदुग्ध [स] गूलर।

हेमन्त [स] ऋतु विशेष, जड़काल, मार्गशिर, पौषमास।

हेमपुष्प [स] चम्पाफूल, पीले फूल की जूही, अशोक वृक्ष।

हेमपुष्पिका [स] जूहीपुष्प।

हेमचीरी [स] चोक।

हेमाह्व (स) चोक।

हेमाद्री [स] सुमेर पर्वत।

हेय [स] त्यक्तयोग्य, त्याग योग्य, त्याज्य।

हेरम्ब (स) गणेश, गजानन।

हेरि [प] विचारि, खोजिके, देखिके।

हेल [स] पढना, अमान, हला, हेला हेला का दो अर्थ एक खेल दूसरे अनादर।

हेलन [स] अपराध, अवगुण, आगस, अनादर, तुहुल।

हेला [स] पुन, अवज्ञा, क्रीड़ा, अनादर, निन्दा, अनायास, बेकाम, हला।

क्षेत्र. (स) शरीर, देहस्थान, चौका, खेत, पुण्यभूमि, भूमि- खण्ड, भूमि, शरीर, गृह सिद्ध स्थान, स्त्री।

क्षेत्रज्ञ. (स) शरीरज्ञाता, आत्मा, जीव, चतुर, निपुण।

क्षेप. (स) फेंकना, बिताना, समय बिताना, फूलों का गुच्छा।

क्षेम. (स) कल्याण, शुभ, कुशल, खेरियत। [कार।

क्षेमकर. (स) शुभकर्त्ता, मङ्गल-

क्षेमकरी. [स] क्षेमकारिणी, पक्षी विशेष, शुभकारिणी।

क्षेमतर. (स) बहुतप्रसन्न।

क्षेमा. [स] कृपा, माफ।

क्षोभ. [स] सन्देह, क्रोध, रोक, बन्द, मोह, कैद, हर्ष, उतमन, उक्करण, हिलना, चलायमानहोना, कोपकर, चलायमान। [ती, पृथ्वी।

क्षोणि-क्षोणी. [ह-स] क्षिति, धर

क्षोणीप. [स] नृप, राजा।

क्षौद्र. [स] मधु, मदमाखी. मोध। [काम, हजामत।

क्षौर. [स] मुण्डन, नाई का

क्ष्मा. [स] मेदिनी, धरती।